VĀNMAYĀRṆAVAḤ

by

MAHĀMAHOPĀDHYĀYA PĀNDEYA RĀMĀVATĀR SARMĀ

VARANASI (I d)
JNANAMANDAL LIMITED

ज्ञानम ल ग्र थमाल क १ ६वा ग्रन्थ

श्रीविश्वविद्यापराभिध

वाङ्मयार्णव

महामहोपाध्यायपाण्डेयश्रीरामावतारशर्मविरचित

वाराणसी
ज्ञानमण्डल लिमिटेड

मू य रूप्यकशतकम्—१)

प्रथम सस्करणम् सवत् २ २

प्रकाशक ज्ञानमण्डल लिमिटेड कबीरचौरा वाराणसी

मद्रक ओमप्रकाश कपूर ज्ञानमण्डल लिमिटेड वाराणसी—६३ २ २१

प्रकाशकीय वक्त य

सन १९५९ म ज्ञानमण्डल लिमिटडके प्रब धकारी सचालक श्री स य प्रकुमारजी गुप्तन मुझसे कहा कि सुना है कि महामहोपाध्याय पाण्डय रामावतार शर्माका बनाया हुआ कोई सस्कृत कोश अभीतक अप्रकाशित पडा है, यदि वह मिल तो आप उसे अपन यहाँसे प्रकाशित कराइय। कुछ दिनोके बाद पटनाम म महामहोपाध्यायजीके सुपुत्र हि दी जगत्के ल धप्रति आलोचक और निब धकार विद्वद्वर आचाय नलिनविलोचन शर्मासे मिला और उक्त ग्र थ प्रकाशित करनकी इ छा प्रकट की। आचाय नलिनजी मेरे अभिन्न मित्र थ। उ होन मेरी प्राथना स्वीकार करते हुए कहा कि यदि ज्ञानमण्डलसे यह ग्रन्थ प्रकाशित हो तो मझ अपार हष होगा। क्योकि पिताजीन एक बार मझसे कहा था कि यह सस्कृतका वाङमयाणव नामक विश्वकोश स्वनामधन्य स्वर्गीय श्री शिवप्रसादजी गप्त (ज्ञानमण्ड लिमिटडके सस्थापक) के आग्रहसे तयार किया गया है। बिहार सरकारन इसे प्रकाशित करनका निश्चय किया है और इसके प्रकाशनका भार मिथिला सस्कृत प्रतिष्ठान दरभगाको सौपा गया है। कि तु कई वष बीत गय अभी उक्त ग्र थम हाथ नही लगाया गया। मैं तो अब निराश हो गया हू।

सन् १९६ में जब म फिर पटना गया तो श्री नलिनजीन जि द बधी हुई पाण्डलिपि दिख लायी और कहा कि इसम इतना अधिक गिचपिच लिखा गया है कि इससे कम्पोज कराना असम्भव है। म अपनी देख रेखम इसकी सुपाठ्य प्रतिलिपि कराकर और उसका सशोधन करके आपके पास भज दूगा। इस काममें एक वष अवश्य लगगा।

म सन्तुष्ट होकर काशी वापस आया। श्री नलिनजीन अपन वचनके अनुसार अपन विश्वासी शिष्य श्री रजनजीसे प्रतिलिपि कराना शुरू करा दिया। किन्तु उसके कुछ ही दिन बाद श्री नलिनजीका १२ सितम्बर १९६१ ई मे निधन हो गया। उनके निधनका समाचार पाकर मझ बहुत दु ख हुआ और मनम निराशा हुई कि अब उक्त पाण्डलिपि प्रकाशनाथ शायद ही मिल। किन्तु पटनम जब म श्री नलिनजीकी विदुषी धमप नी श्रीमती कुमुद शर्मासे मिला तो उन्होन कहा कि आप श्री रजनजीसे मिलकर प्रतिलिपिके साथ मूल प्रति ल और उसे प्रकाशित करानेका प्रब ध करें। यह सुनकर मुझ सन्तोष हुआ। श्री रजनजीन अस्वस्थ रहनपर भी आठ नौ महीनम प्रतिलिपि तैयार करके मुझ सौंप दी।

मूल पाण्डलिपि सहित प्रतिलिपि तो मुझे प्राप्त हो गयी किन्तु श्री नलिनजीके न रहनसे म विषम स्थितिम पड गया। यह प्रतिलिपि किससे शुद्ध करायी जाय यह एक भारी समस्या उपस्थित हो गयी। क्योकि पाण्डलिपि एसी है जिसे पढ़नम यत्रतत्र भूल होनकी पूरी सम्भावना है। दूसरे नलिनजीन यह कहा था कि पाण्डलिपिके अनुसार ही ग्रन्थ छपना चाहिय। बहुत सोच

समझकर यह काय डॉ रामचन्द्र पाण्डय (प्रधानाचाय संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय) को सौंपा गया। श्री पाण्डयजीन बड परिश्रमसे लगभग एक वषम प्रतिलिपिका संशोधन मूल पाण्डुलिपिसे मिलाकर किया किन्तु बहुतसे स्थलोपर सन्दिग्धात्मक चिह्न लगाकर छोड दिया। इसके बाद पण्डित राधारमण पाण्डय आदि तीन चार अधिकारी विद्वानोको दिखलाया। इसस बहुतसे सन्दिग्धात्मक पाठ तो मूल प्रतिके अनुसार ही ठीक सिद्ध हुए फिर भी कुछ स्थल शष रह गय। इसी प्रकार ग्रन्थके प्रूफ शोधनम भी बडी कठिनाइयोका सामना करना पडा। किसी शब्दको कुछ विद्वान तो कहते थ कि अशुद्ध है किन्तु उसे अन्य विद्वान् शुद्ध सिद्ध कर देते थ। इस ग्रन्थके प्रूफ रीडर पोष्टाचाय प गोमतीप्रसाद मिश्रस काशीके मानिन्द विद्वान् स्वामी महश्वरानन्दजी (पूवनाम श्री महादेव शास्त्री) न कहा था कि यह ग्रन्थ बहुत बड विद्वान्का लिखा हुआ है तुम कही भी अपना पाण्डित्य न दिखलाना नही तो अथका अनथ हो जायगा। अस्तु इस प्रकार किसी किसी फामका प्रूफ १ १२ दिन विद्वानोके ही पास घूमता रह जाता था उसके बाद निष्कर्ष पर पहुचनकी नौबत आती थी। यही कारण है कि प्रस्तुत ग्रन्थ प्रकाशित करनम कल्पनातीत व्यय और समय लगा। हष है कि ग्रन्थ तयार होकर विद्वज्जनोके समक्ष हम उपस्थित कर रह ह।

पाण्डुलिपिमें ग्रीक लैटिन जमन तथा फ्रचके बहुतसे शब्द ह जो नही दिय जा सके। बहुत प्रयत्न करनपर भी उक्त भाषाओंके ज्ञाता हमे नही मिल। एसी दशाम उन्ह छोड देना ही उत्तम समझा गया। क्योकि एन की जगह य और यू के स्थानपर एन पढ जानपर भारी अनथ हो जाता। अशुद्ध छापनकी अपेक्षा उसे न छापना ही श्रयस्कर प्रतीत हुआ। इसी प्रकार ग्रन्थकारन आरम्भम चित्र देनका उल्लख किया है और वे चित्र पाण्डुलिपिम बन भी ह किन्तु कई अनिवाय कारणोसे व चित्र नही दिय जा सके। जो हो ग्रन्थ प्रकाशित हो गया इतनसे ही हम परम सन्तोष है। विद्वानोका मत है कि यह ग्रन्थ संस्कृत वाङ्मयका एक अमूल्य रत्न है। इसम बहुतसे शब्द और शब्दाथ एसे ह जो अन्य किसी भी कोशम नही मिलत। भारतके प्रथम राष्ट्रपति डा राजन्द्रप्रसाद इस महाग्रन्थको प्रकाशित करानके लिए बहुत चिन्तित रहा करते थ। उन्ह भय था कि कही इस ग्रन्थकी पाण्डुलिपि इसी तरह नष्ट न हो जाय। खद है कि वह इसका प्रकाशित रूप नही देख सके। हम हर्ष है कि उनके सामन इस ग्रन्थका प्रकाशन प्रारम्भ हो गया था और इसकी सूचना उन्हें दे दी गयी थी।

अन्तमें हम डा रामचन्द्र पाण्डयके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते ह जिन्होन आद्योपान्त प्रतिलिपिका संशोधन किया। प गोमतीप्रसाद मिश्र प राधारमण पाण्डय तथा श्रीकृष्ण पन्तन प्रूफ संशोधन तथा अनुक्रमणिका बनानका काय सम्पन्न किया है एतदथ हम उक्त तीनो विद्वानोके अनुगृहीत है। काशीके मानिन्द विद्वान् स्वामी महश्वरानन्दजी (पूर्वनाम प महादेव शास्त्री) ने ग्रन्थके थोडसे अशका शुद्धिपत्र तयार करनकी कृपा की है। स्वामीजीन कहा कि शर्माजी तो मेरे गुरु थ। अत मैं इस ग्रन्थका संशोधन यथावकाश कर दूँगा किन्तु वह द्वितीय संस्करणमे काम आ सकेगा। क्योकि इस कार्यमें पर्याप्त समय लगगा। ग्रन्थके एक एक शब्दपर गम्भीर विचार करना पड़ता है। स्वामीजीकी इस महती कृपाके लिए हम किन शब्दोमें उनके प्रति आभार प्रदर्शित कर समझम नही आता। शुद्धि पत्रसे पाठकोको मालम हो जायगा कि इस ग्रन्थम किस तरहकी

टियाँ अधिक रह गयी ह । आचाय हजारीप्रसाद द्विवेदीके भी हम चिर ऋणी ह जि होन अपन
यस्त जीवनम महीनो परिश्रम करके सारगर्भित भूमिका लि खी है ।

हम ग्रथकारकी पुत्रवधू (आचाय नलि विलोचन शर्माकी धमपत्नी) श्रीमती कुमद शर्माको भी ध यवाद दिय बिना नही रह सकते जि होन बडी श्रद्धा भक्तिसे प्रेरित होकर परिश्रम और लगनके साथ ग्रन्थकारकी जीवनी लिखनके लिए प्रामाणिक सामग्रा जुटाकर दी । उ हीकी दी हुई सामग्रीके आधारपर म शर्माजीकी तथा उनके सुपुत्र (श्रीमती कुमद शर्माके पति) आचाय नलि नविलोचन शर्माजीकी जीवनी लिखकर इस ग्र थम दे सका हू ।

घना ायण द्विवेदी
यवस्थापक
(प्रकाशन विभाग)



महामहोपाध्याय पाण्डेय
श्रीरामावतारशर्मा

तदात्मज



आचायनलिन
विलोचनशर्मा

ग्र थकारका परिचय

म मिहोपाध्याय पाण्डय रामावतार शर्मा ससारके उन नर रनोम ह जिनकी प्रतिभा और अलौकिक योतिसे सम्पूण भूमण्डल आलोकित होता आ रहा है । उनके निधनके बाद किसी लखकन लिखा था आप साहि यम पण्डितराज जगन्नाथके समान याकरणम बाल्शास्त्रीके समान यायम गदाधरके समान वेदान्तम शकराचायके समान धमशास्त्रम हारातके समान योतिषम भृगमनिके समान पुरात वा वषणम भण्डारकरके समान गद्य लखन शलाम बाणभट्ट के समान वाद विवादकी तर्क पद्धतिमें डाक्टर जानसनके समान सूक्ति कथनम शुकदेवके समान स्मरणशक्तिकी प्रबलताम मकालके समान विज्ञान महत्ता प्रतिपादनम बकनके समान कविताम कालिदासके समान वेदाथ त व विवेचनम यास्क और सायणाचायके समान जा यभिमानम लोकमान्य तिलकके समान सामाजिक क्रा तिम लथरके समान विधवा विवाह समथ म विद्या सागर और महा मा गाधीके समान पुनज म खण्डनम चार्वाकके समान मर्न वताम शिवाजाके समान और दयालताम गोखलके समान थ । इस उद्धरणसे यह बात सहज ही जाना जा सकती है कि शर्माजीकी सर्वतोमखी प्रतिभा थी और अनकानक विषयोम अद्भुत जानकारी थी । जिन लोगोको उनके घनिष्ठ सम्पकम रहनका सुयोग मिला था व जानते ह कि ससारका शायद ही कोई एसा विषय होगा जिसका ज्ञान उ हें नही था । डाक्टर काशीप्रसाद जायसवालन कहा था कि शर्माजीके साथ रहनपर जान पडता है कि सचमुच महर्षि कपिल कणादके साथ ह ।

प्रकाण्ड विद्वान् होते हुए भी शर्माजीम देहाती किसानकी सी सादगी थी । शर्माजी साधारण धोती और मोट कपडका कुर्ता पहनते थ । प्राय नग पाँव गगास्नान करन जाते थ । आपका ज म ६ माच सन् १८ ई म सरयूपारीण ब्राह्मण परिवारम हुआ था । इनके पिताका नाम प देवनारायण शर्मा था । व छपराके निवासी थ । प्रार भिक शिक्षा आपन घरपर ही अपन पिता तथा पण्डित रामद्वार ओझासे पायी । वहीसे आपन सन् १८८९ ई म सस्कृतकी प्रथमा परीक्षा दी और प्रथम श्रणीमें उत्तीण हुए । उस समय शर्माजी केवल बारह वषके थ । बाकीपुर पटनासे आपको छात्रवत्ति भी मिली । उसके बाद आप काशी आय और क्वी स कालजम नाम लिखाया । १८९ ई म आपन प्रथम श्रणीम मध्यमा की । आपको क्वी स कालज वाराणसीसे छात्रवृत्ति भी मिली । सन् १८९१ म बाँकीपुर पटनासे मध्यमाकी परीक्षा दी और पदक तथा छात्रवृत्तिके साथ प्रथम श्रणीम उत्तीण हुए । सन १८९३ में आपन कलकत्ता सस्कृत कालजसे प्रथम श्रणीम काव्यतीथ किया । इसम इन्हें अथराशि पुरस्कार भी मिला । सन् १८९५ म आपन कलकत्ता विश्वविद्यालयसे एन्ट्र स द्वितीय श्रणीम पास किया । उ होन पुन उसी साल इलाहाबाद विद्यालयसे एट्र स प्रथम श्रणीम पास किया । इससे उन्ह छात्रवृत्ति भी मिली । १८९ म आपन

काशीसे साहि्याचाय किया और उसके बाद याकरणाचायके प्रथम खण्डका भी पराक्षा दी। सा्ि्याचायम आप सवप्रथम आय। १८९८ में आपन पजाब यनिवर्सिटीसे एफ ए पास किया। सस्कृतम सवप्रथम आनके कारण इह पुरस्कार भी मिला। १९ म कल्कत्ता विश्वविद्याऽय से प्रथम श्रणीम बी ए किया। इस परीक्षाम उ्होन सस्कृत सम्मान के साथ छात्रवत्ति तथा आर के स्वण पदक प्राप्त किया। १९ १ म एम ए किया। इसम वह सवप्रथम रह औ कलकत्ता विश्वविद्यालय स्वर्ण पदक तथा अनक पारितोपिक उह प्राप्त हुए।

१९ १ में आप सेन्टल हि्दू कालज वाराणसीम सस्कृतके अध्यापक नियक्त हु। १९ ५ तक आप उस पदपर रह और काशाके प्रमख विद्वानोमे सवप्रमख सभा प डत मान गय। १९ ६ म आप पटना कालजके प्रोफसर नियक्त हुए और अपन जीवनके अ ततक (१९२९ ई तक) उस पदपर बन रह। बीचम दो बार छुट्टी लकर आप बाहर भी रह। क बार १९ से १९ ९ तक कलकत्ता विश्वविद्यालयम वसु म लिक याख्याता होकर और दूसरी बार महामना पण्डित मदनमोहन मालवीयके विशष अनरोधसे १९१९ से १९२२ तक काशी हि्दू विश्वविद्यालयम ओरियण्टल कालजके प्रि सिपल होकर। आप पी एच ी के सवमा य परीक्षक समझ जाते थ। अनक विश्वविद्यालयोके परीक्षक भी थ। सन १९१६ म जबलपुरम आयोजित अखिल भारतीय हि्दी साहि्य सम्मेलनके सप्तम वार्षिक अधिवेशनम सभापति थ। १९११ म प्रयागम आयोजित सम्मेलनके द्वितीय वार्षिक अधिवेशनम हि्दीके अपूण अगाकी पूर्तिके विषयम एक निब ध प्रस्तुत किया था। जिसम लखकोके पथ प्रदशनके अभिप्रायसे एक सौ विपया की एक सूची सम्मिलित की गयी थी।

शर्माजीको सन् १९१९म महामहोपाध्यायकी उपाधि मिली थी। इस उपाधिके अतिरिक्त जगम विश्वकोश सप्तम दशन सस्थापक स्वत त्र बुद्धि विद्वान् प्रतिपक्षिभयक र आदि भी कहा जाता था। आप अनक भाषाओके ज्ञाता थ जसे सस्कृत पालि हि्दी बगला अग्रजी जमन लैटिन फ्रच ग्रीक आदि। इनम अधिकाश भाषाओम उनकी रचनाए पायी जाती ह। दशन का य साहि्य याकरण इतिहास पुराण पुरात व नशास्त्र शिक्षा धम सभ्यता सस्कृति भाषा विज्ञान भूगोल खगोल ज्योतिर्विद्या गणित आदि बहुतसे विषयोंका आपका अच्छा ज्ञान था। आपन ब तसे विदेशी श दोका सस्कृतीकरण किया था। जैसे—नवजीवन भूमि (यूजीलण्ड) औष्ट्रालय द्वीप (आस्ट्रलिया) कम्बोज (कम्बोडिया) आरण्य (अ बिया) अजपुत्र (इजिप्ट) भ यलनपुर (वबिलोनिया) अलीकच द्र (अलक्जडर) उक्षप्रतर (औक्षफार्ड) न दन (लन्दन) कात (काट) साक्रतीज (सौक्रटीज) श यक (स युकस) ीनकु सत (क्रौम विवक्सौट) आदि। शर्माजीके सम्ब धम किंचित् परिवर्तनके साथ ही दो श्लोक कह गय है

भारतस्य न भा भाति विहारोहारपजित।
रामावतारे स्वयति मूर्च्छितैव सरस्वती॥

पलायध्व पलायध्व भो भो तार्किकदिग्गजा।
रामावतार आयाति सिद्धान्तवनकेसरी॥

यो तो आपकी अगणित रचनाएँ है किन्तु जिन ग्रन्थोके नाम प्राप्त हो सके ह व रचनाकालके अनुसार क्रमश नीचे दिय जा रह है

(क) सस्कृत—

१ विविध गद्य पद्य रचनाएँ—रचनाकाल १९ ३ ६ ई । काशीकी मित्रगो ी एव सक्तिसूधा नामक मासिक पत्रिकाओम प्रकाशित।

२ सदुक्तिकर्णामृत—रचनाकाल १९ ३–१ । एशियाटिक सोसाइटी आव बगालके लिए। प्राचीन पाण्डुलिपिके आधारपर सम्पादित।

३ प्रियदर्शिप्रशस्तय —१९१ ई । मूल पालि लखका सस्कृतानवाद अग्रजी अनुवाद भी। कलकत्ता विश्वविद्यालयके लिए।

४ परमार्थदशनम्—१९११ १३ ई म काशीसे प्रकाशित। सूत्रबद्ध दशन ग्रन्थ पद्यमय वार्त्तिक सहित भाष्यका प्रथम अध्याय सस्कृत सजीवन नामक सस्कृत मासिक पत्रम १९४३ ई म प्रकाशित। (सप्तम दशनके रूपम स्वीकृत)

५ वाङ्मयाणव—श्लोकबद्ध सस्कृत विश्वकोश। रचनाकाल १९११ से जीवन पय त।

६ मुद्गरदूतम् —(व्यग्यकाव्य) कालिदासके मेघदूतकी व्याकृति (पराडी) शारदा पत्रिकाम प्रकाशित। पुन पुस्तक रूपम प्रकाशित।

भारतीयमितिवृत्तम्—सस्कृतम भारतवषका इतिहास।

८ सरस्वत्यष्टकम् उद्बोधनम् सस्कृत शिक्षा कथयुपयक्ता भवेत् ? इ यादि सस्कृत गद्यपद्या मक रचनाए १९२३ से १९२५ म सुप्रभातम् सस्कृत पत्रिकाम प्रकाशित।

९ प्रकीर्ण प्रब धा निधनान्तर १९५६ म प्रकाशित।

(ख) हि दी—

१ यूरोपीय दशन १९ ५ ई प्रथमत काशी नागरी प्रचारिणी सभासे प्रकाशित द्वितीयत १९५२ ई म बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटनासे प्रकाशित।

२ हिन्दी भाषा-त व (या यान रूपम) १९ ५ ई काशी नागरी प्रचारिणी सभासे प्रकाशित।

३ हि दी याकरण १९ ई कलकत्ताके देवनागर नामक मासिकपत्रम प्रकाशित। हि दी याकरण और रचनाकी शिक्षण पद्धति १९१ ई बगालके शिक्षा विभागके लिए प्रस्तुत।

५ मुद्गरान दचरितावली १९१२ १३ ई नागरी प्रचारिणी पत्रिका काशी।

६ भारतवर्षका इतिहास दिसम्बर १९१२ जनवरी १९१३ नागरी हितैषिणी पत्रिका आरा।

पौरस्त्य और पाश्चा य दशन १९१५ ई पाटलिपुत्र के विशषाङ्कम प्रकाशित।

८ शिक्षाविषयक भारतीयोका सम्प्र कत्तव्य शिक्षाका स मेलनाङ्क ख २ स १।

९ साहसाङ्क चरित चर्चा १९१३ प्रभा।

१ भारतोत्कष (कविता) मारवाडी अग्रवाल आषाढ़ सवत् १९ ९।

११ पद्यमय म‍ाभारत ।

१२ कालिदासक समयका निरूपण १९ ९ ई सरस्वती म प्रकाशित ।

१३ श्रीरामावतार शर्मा निबन्धावली
(निधनान्तर प्रकाशन) १९५ ई बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्। म ग्र थम सङ्कलि त निबन्ध है

१ ज्योतिर्विद्या । २ भूगोलविद्या । ३ भगर्भ विद्या । ४ हिन्दीकी वर्तमान दशा । ५ हिन्दीमे विश्वकोषकी अपेक्षा । ६ हिन्दीम उच्च शिक्षा । हिन्दीकी उन्नति और प्रचार । ८ हिन्दी भाषा विज्ञान । ९ सभ्यताका विकास । १ शाश्वत धर्म प्रश्नोत्तरावली । ११ उपोद्घात । १२ हिन्दी व्याकरणसार । १३ पील विजय । १४ हमारा सस्कार । १५ पुराण न व । १६ अथ श्रीसत्यदेवकथा । १ मुद्गरानन्दचरितावली । १८ काना वकरीयम् । १९ धर्म और शिक्षा । २ पौरस्त्य और पाश्चात्य दर्शन । २१ खुली चिट्ठी । २२ परमार्थ सिद्धान्त । २३ भारतवर्षका इतिहास । २४ शिक्षा विषयक भारतीयोंका सद्य कर्त्तव्य । २५ शाश्वत धर्म प्रश्नोत्तरावली । २६ साहसाङ्क चरित चर्चा । २ ग्नतव्लौ कीय धर्मशास्त्रम् (हिन्दी अनुवाद सहित) । २८ भारती कष । २९ जगत्म विज्ञानका विकास । ३ भूगर्भ विद्या । ३१ नरशास्त्र । ३२ सरस्वत्यष्टकम् । ३३ सरस्वत्यष्टकम् हिन्दी । ३४ उद्बोधनम् सस्कृत । ३५ उद्बोधन हिन्दी । ३६ सस्कृत शिक्षा कथमुपयुक्ता भवेत् सस्कृत । ३ सस्कृत भाषा कैसे उपयुक्त हो सकती है ? हिन्दी । ३८ परिशिष्ट ।

१४ वैज्ञानिक निबन्ध सरस्वतीम समय समयपर जीवन कालम ही प्रकाशित ।

(ग) अंग्रजी

१ Ph l sophy f th P (पुराणदर्शन) १९ २ ई B oh M t phys s P द्वारा पुरस्कृत ।

२ Chapte s f om Ind n P y h lo y (भारतीय मनोविज्ञानक कुछ अध्याय) १९ ४ ई B oh Met phy P i e द्वारा पुरस्कृत ।

३ G p l V Mall k L ct res Veda t m (वेदान्तपर व्याख्यान) १९ ८ ई कलकत्ता विश्वविद्यालयसे प्रकाशित ।

४ A thes s o th f K l d (कालिदासक समयका निरूपण) १९ ९ ई H d th Rev ew म प्रकाशित ।

५ El m t y T t Bo k of Ete al L v (परमार्थ दर्शनकी अंग्रेजी भूमिका) ।

उपर्युक्त कृतियोक अतिरिक्त शर्माजीकी बहुत-सी रचनाए ऐसी ह जिनमें अधिकाश अप्रकाशित ह । शर्माजीन कामन्दकीय नीतिसार का अंग्रजीम और रघुवश का लैटिनम अनुवाद किया था ।

शर्माजी ३ अप्रल १९२९ ई म केवल ५२ वर्षकी अवस्थाम स्वर्गवासी हुए ।

आचार्य नलिनविलोचन शर्मा

प्रस्तुत महाग्र यम आचाय नलिनविलोचन शर्माका सक्षिप्त परिचय देना आवश्यक प्रतीत हो रहा है क्योकि उन्हीकी महती कृपासे यह ग्र थ प्रकाशित करनका अधिकार मिला था। आचाय नलिनजी महामहोपाध्यायक सुपुत्र थ। इनका ज म १८ फरवरी १९१६ म बहरधा पटना शहरम हुआ था। इन्ह आरम्भिक शिक्षा पितासे प्राप्त हुई। १९३१म पटना कालजिएटसे मट्रिक १९३८ म पटना विश्वविद्यालयसे सस्कृत एम ए पास किया। १९ २ म हि दीसे एम ए किया। श्री अनन्तप्रसाद बनर्जीके निदशनम कौटि यक अथशास्त्रम दण्ड विधान पर शोध-काय किया।

आचाय नलिनजीन जन कालज आराम प्राध्य पनक समय रगमच तथा नाटक पर शोध काय किया। १९४२ म सबसे पहल हरप्रसाद जन कालज आराम सस्कृत विभागम प्राध्यापकके रूपम आपकी नियक्ति हुई। सितम्बर सन् १९४६ तक ये वही रहे। उसक बाद आप पटना कालेजम नियुक्त हुए। १९४ म आपका राँची कालजम स्थाना तरण हुआ। १९४८ म आप फिर पटना कालजम आ गय। १९५९ म पटना विश्वविद्यालयम हि दी विभागाध्यक्ष हुए और अ ततक उसी पदपर काय करते रहे। इनके लिख हुए मौलिक ग्र थ य ह —

१ दृष्टिकोण (साहि य कला मनोविज्ञान सम्ब धी आलोचना) प्रकाशन १९ ७ ई।
२ विषक दात (कहानी सग्रह) प्रका शन १९५१ ई।
३ सत्रह असग्रहीपूण छोटी कहानियाँ। प्रका १९६ ई।
४ जगजीवनराम (जीवनी अग्रजीम) प्रका १९५४ ई।
५ नकनके प्रपद्य (प्रपद्य सग्रह) प्रका १९५६ ई।
६ साहि यका इतिहास दशन (साहि यतिहासका दशनालोचन) प्रका १९६ ई।
मानदण्ड (निब ध सग्रह)

सम्पादित ग्र थ—

१ लोक कथा कोश प्र १९५९ ।
२ लोक साहि य आकर साहि य सूची प्र १९५९ ई।
३ लोक गाथा परिचय प्र १९५९ ई।
४ प्राचीन हस्तलिखित पोथियोका विवरण प्र १९५९ ई।
५ सवल मिश्र ग्रन्थावली प्र १९६ ई।
६ लालचदास कृत हरिचरित्र अपूण (साहि य और परिषद् पत्रिकाम प्रकाशित)।
७ गोस्वामी तुलसीदास प्र १९६१ ई।
८ भारतकी प्रतिनिधि कहानियाँ—

९ हि्दीकी उत्तम कहानियाँ ।
१ उप्यास कथाकुञ्ज
११ निब्ध मानस ।

स्‍ सम्पादित ग्र्थ

१ स्त पर परा और साहि्य (धम द्र अभिन्दन-ग्र थ) प्र १९६ ई ।
२ आयोध्याप्रसाद खत्री स्मारक-ग्र थ प्र १९६ ई ।
३ हि्दीके प्रतिनिधि कथाकार ।
४ पढो और सीखो ।
५ रूपक-कथाकुञ्ज ।
६ भारतक महापुरुष प्र १९५८ ई ।
राष्ट्रभाषा साहि्य-सग्रह प्र १९५६ ई ।
८ राष्ट्रभाषा साहि्य सरिता प्र १९५६ ई ।
९ पद्माभरण प्र १९५९ ई ।
१ स्वण म्जूषा प्र १९५५ ई ।
११ हि्दी रचना कोश प्र १९५९ ई ।
१२ दि वर्किग मन प्र १९५४ ई ।
१३ भारतीय साहि्य परिशीलन तथा अ्वेषण प्र १९६ ई ।
१ हि्दी साहित्य परिशीलन तथा अ्वषण ।

सम्पादित पत्रिकाएँ

१ साहि्य त्रमासिक पटना ।
२ दृष्टिकोण ।
३ कविता ।
पटना कालज पत्रिका वार्षिक पटना ।
५ परिषद पत्रिका त्रमासिक पटना ।

सस्था-सम्बद्धता—

प्राचाय—बदरीनाथ सवभाषा महाविद्यालय पटना ।
प्रधान मत्री बिहार हि्दी साहि्य सम्मे न पटना ।
निदशक—शोध विभाग बिहार राष्ट्रभाषा परिषद ।
सदस्य भारतीय हिन्दी परिषद् ।
निर्णायक मगलाप्रसाद पारितोषिक ।
सस्थापक—सदस्य—अखिल भारतीय हि्दी शोध मण्डल ।
सभापति—सारन जिला हिन्दी साहि्य सम्मेलन ।
अध्यक्ष रेलवे स्टाल बुक सेलक्शन बोड ।

अ यक्ष शोध-गोष्ठी व लभविद्यानगर आन द (भारतीय हि दी परिषदक अ ादश वार्षिक अधिवशन) ।

अध्यक्ष—हिन्दी विभाग पटना कालज ।

अध्यक्ष—हिन्दी विभाग पटना विश्वविद्यालय ।

अध्यक्ष—हिंदी साहि य पारिषद् प न काऊज ।

सदस्य—कार्यसमिति पटना जिला हि दी साहि य स मे न ।

विशष—

१ हिन्दीम वेश्म नाटय (Ch mb d m) क प्रथम प्रयोक्ता तथा भाष्यकार ।

२ हिन्दीकी विशिष्ट पद्यविधा प्रपद्यवाद के प्रवतक तथा प्रयोक्ता ।

३ लक्ष्यकचक्षष्कताके आधारपर मनोग्र थिमूलक छोटी कहानियाके लखक ।

४ सूत्र समीक्षा पद्धतिके प्रयोक्ता ।

आपका निधन १२ सितम्बर १९६१ ई म पटनाम हुआ । शर्माजी हि दी-जगत्के क ध प्रतिष्ठ आलोचक और निब धकार थ । आपक निधनसे बिहार प्रा तको बहुत बडी क्षति पहुची जिसकी पूर्त्ति नही हो सकी ।

भूमिका

स्वर्गीय महामहोपाध्याय प रामावतार शर्मा विलक्षण प्रतिभाशा ी विद्वान् थ । उनका ज्ञान भाण्डार बहुत विस्तीण और समद्ध था । उनकी स्मरण शक्ति अद्भत थी उनके समान मनीषी विद्वान् क्वचित् कदाचित् ही ससारम आते ह । व स्वत त्र विचारक थ और विभिन्न शास्त्रोपर उनका व्यापक अधिकार था । सस्कृत हि दी अग्रजी जमन फ्रच टिन ग्रीक आदि कई भाषाओके ज्ञाता थ और भारतवषकी विभिन्न भारतीय भाषाओसे भी परिि त थ । यद्यपि उन्ह केवल ५२ वषकी आयु मिली थी कि तु फिर भी उनकी कीर्ति देश देशा तरम फ न गयी थी । सस्कृत भाषापर नका विलक्षण अधिकार था । सस्कृत भाषाके मा यमसे उ होन आधनिक ज्ञान विज्ञानको सस्कृतशोतक पहुचाना चाहा था । वाङ्मयाणव नामक प्रस्तुत कोश ग्रन्थ उनके दीघकालीन अध्ययन मनन और चि तनका फल है । दुर्भाग्यवश उनक जीवनकालम यह प्रकाशित नही हो पाया । अब ज्ञानमण्डल न इस ग्र थका प्रकाशन किया है । व जिस रूपम इसे प्रकाशित करना चाहते थ उस रूपम इसका प्रकाशन तभी हो सकता था जब वे स्वय इसके प्रकाशनको देखते । फिर भी ज्ञानमण्डल न यथासाध्य प्रय न किया है कि पुस्तक अधिकसे अधिक निर्दोष और उपयोगी होकर प्रकाशित हो ।

शर्माजीन इस कोशको विश्वविद्या (इसाइक्लोपीि या) कहा है । इसके ि ए ह न वदिक और लौकिक सस्कृत साहित्यका तथा आधि क कालकी या याओ और आल चनाओ का म थन किया था । इसम कोई स देह नही कि य कोश अबतकके सस्कृत कोशोकी तु नाम सर्वाधिक वज्ञानिक और उपयोगी है । कोश के उपक्रमम न्होन बताया है कि इस कोशका निर्माण ह क्यो आवश्यक जान पडा । सस्कृतके अनकानक मह वपूण कोश ग्र थ क्या पह से ही विद्यमान नही ह ? और फिर आजकलके विद्वानोन क्या मह वपूण श दकोशोका निर्माण ही किया है ? शर्माजीने इन नये और पुरान कोशोका गम्भीर अध्ययन किया था । पर तु उन्ह दोनो प्रकारके कोशोम कुछ त्रुटियाँ दिखी थी । पुरान कोश पद्य बद्ध ह पर तु उनम न तो प्रयोग और उदाहरण ही दिय गय ए और न आधनिक ढगकी वण क्रम पद्धति को ही अपनाया गया है । वण क्रमकी नयी पद्धतिसे श ोके खोजनम आसानी होती है । पुरान कोशोम यह पद्धति नही अपनायी गयी । जहाँ अपनायी भी गयी है वहाँ वह केवल आद्य वणके निदशतक सीमित है । शर्माजीन देखा था कि पुराने कोशोकी इस कमीके कारण जिज्ञासुके लिए अपरिचित शब्दोका खोजना कठिन हो आता है । फिर आधुनिक युगके निर तर स्फीयमान वाङ्मयके श द भी नम नही मिलते । नय कोशोम उदाहरण और स दभ दनकी जो प्रथा है वह तो उनम है ही नही । इसि ए उन कोशोसे आधुनिक कालके जिज्ञासुका काम नहीं चलता । इधर नये कोशोम श द वर्णानुक्रमसे सजाये जाते

कोश शर्माजीक अभिमत थ । उन्होन ग्रन्थके पन्द्रहव श्लोकम जिम कोशोको कोश रचनाके लिए अत्यन्त आवश्यक बताया है उनम शम य मग्रहो की चर्चा है । इस श वस वे प्रसिद्ध सस्कृत जमन काश स पिटसबग डिक्शनरी जस सग्रन्थोकी बात व त जान प त ह । परन्तु इन कोशोम भी उन्ह दो बात खटकी । एक तो व बहुत विस्तीण ह फिर उनक दाम इतन अधिक होते ह कि सस्कृतके विद्यार्थीकी पहुचक बाहर होते ह । फिर पद्य बद्ध होनके कारण पुरान कोशोको जिस प्रकार कठस्थ कर लिया जा सकता है उस प्रकार इ ह नही किया जा सकता । इस प्रकार उन्होन वर्णानुक्रमके अनसार पद्य बद्ध कोशका आवश्यकता अनुभव की । इस प्रयोजनके लिए उन्होन वदिक तथा लौकिक साहित्य धमशास्त्र आयवद ज्योतिष न्याय विज्ञान आदि विभिन्न शास्त्रोके शब्द भी समेट । उन्ह पद्य बद्ध किया परिशिष्ट म नक प्रयोगोके उदाहरण दिय तथा सस्कृतकी सजातीय प्राचीन भाषाओके समानरूप शब्दोक साथ तुलना भी की और इस विश्वविद्या' को पूर्णाङ्ग बनाया ।

आधुनिक कालम सस्कृत साहित्यका अध्ययन केवल भारतवषतक ही सीमित नही है । अन्यान्य सभ्य देशोम भी इसका पठन पाठन हो रहा है और वदिक साहित्यक अनक शब्दोकी नयी व्याख्याए सुझायी जा रही ह । नय विद्वानोक सुझावके आधार कई प्रकारके ह —(१) ग्रीक, लटिन अवेस्ता आदिके शब्दोक साथ तुलना (२) वद परवर्ती कि तु नवाद्धारित ब ह्म दि शास्त्र म या परवर्ती कालके स्मृति पुराण आदिम प्राप्त प्रयोगोक साथ तुलना (३) प्राचीन शिला लेखोम पाये जानवाल शब्दोके साथ साम्य (४) पाश्ववर्ती और समकालीन आयतर भाष ओसे शब्दोके ग्रहण किय जानकी सम्भावना और (५) भाषा शास्त्रीय नियमोकी छान बीनसे परिकल्पित शब्दोक साथ सम्बन्ध इत्यादि । इनम बहुतसे सुझाव तो अटक से अधिक महत्वके अधिकारी ही ह । परन्तु कुछ ग्रहणीय भी ह । शर्माजी जसा अधिकारी विद्वान ही यह निणय कर सकता है कि कौन सा सुझाव ग्राह्य है और कौन-सा अटकलपच्चू कल्पनामात्र । इसीलिए कोश के प्रारम्भम ही उन्होन अतन्द्रित भावसे व्याख्या सहित समाम्नायके मनोयोगपूवक अध्ययनपर जोर दिया है । वे ठीक ही कहते ह कि जो ऐसा नही कर सकता वह कोश रचनाका अधिकारी भी नही है ।

मूल वदिक-सहिताओ ब्राह्मण और उपनिषद ग्रन्थोके विशाल शब्द भाण्डारके अतिरिक्त परवर्ती सस्कृत साहित्यका और भी विपुल शब्द भाण्डार है । फिर शव शाक्त व णव बौद्ध आदि आगमोकी शब्द राशि है जो शोध कायम लग हुए विद्वानोके प्रयत्नोसे लगातार बढती जा रही है । बौद्ध जन आदि अवदिक सम्प्रदायोक साहित्य ह और पुराणो दशनो व्याकरण ज्योतिष अथशास्त्र कामशास्त्र आयुर्वेद आदि शास्त्रोम प्रयुक्त होनवाली विशाल शब्दावली है । कभी कभी पालि प्राकृत अपभ्रश और लोक भाषाओम बच हुए ऐसे अनक शब्द मिल जाते है जो मूल सस्कृत शब्दोकी याद दिलाते ह । इस प्रकार सस्कृत कोशका निर्माण बहुत ही श्रम साध्य दुस्तर काय है । ग्रन्थके आरम्भम शर्माजीन सामान्य रूपसे शब्द चयनके इन विभिन्न स्रोतोकी चर्चा कर दी है ।

इस देशम कोशोकी परम्परा बहुत पुरानी है । विद्वानोन इनका आरम्भ यास्कके निरुक्त मे पायी जानवाली निघण्टु शब्दावलीसे माना है । वदिक शब्दोके अथ बोधके लिए इनका बहुत

महत्व है। परन्तु परवर्ती कालके कोशोंका उद्देश्य इनसे भिन्न था। वे काव्योंके अध्ययनके लिए भी उपयोगी बनाये जाते थे और कवियोंको श्लेष युक्त काव्य रचनामें सहायता पहुंचानेके लिए भी। साधारणतः वे श्लोक (अनुष्टुप्) बद्ध होते थे पर कभी कभी आर्या छन्दमें भी लिखे जाते थे। पुराने कोशोंको दो वर्गोंमें विभाजित किया जा सकता है (१) समानार्थक (२) नानार्थक। प्रायः प्रसिद्ध समानार्थक कोशोंमें एक अध्याय नानार्थका भी जोड़ दिया जाता था। विषय विभाजन सर्वत्र एक ही सिद्धान्तपर आधारित नहीं हुआ करता था। कई कोशोंमें शब्दोंको वाच्यार्थके अनुरूप सामान्य वर्गोंके अनुरूप सजाया जाता था। जैसे देव वर्ग मनुष्य वर्ग नदी वर्ग आदि। कुछ कोशोंमें यह वर्गीकरण अक्षर-संख्याके अनुसार भी किया गया है। कभी आद्य वर्णके अनुसार और कभी अन्त्य वर्णके अनुसार उन्हें सजा दिया जाता था। परन्तु पूर्ण रूपसे वे आधुनिक वर्ण क्रमके अनुसार नहीं होते थे। निघण्टुओंमें नाम और धातु दोनों दिये जाते थे परन्तु परवर्ती कोशोंमें केवल नाम और अव्ययका ही समावेश होता था। शर्माजीने अपने कोशमें विशुद्ध आधुनिक पद्धतिके वर्णानुक्रमको अपनाया है। शब्दोंके विभिन्न अर्थ एक ही स्थानपर मिल जाते हैं। इसीलिए उन्होंने कहा है कि यह कोश सपर्याय भी है और नानार्थघटित भी। उन्होंने पुराने कोशोंकी अर्थ निर्देश पद्धतिको अपनाया है अर्थात् जिन शब्दोंका अर्थ बताना है वह प्रथमा विभक्तिमें दिये हुए हैं और उनके अर्थ सप्तमी विभक्तिमें। यथा प्रसङ्ग लिङ्ग निर्देश भी पुराने कोशोंके बराबर ही दे दिया है। इस प्रकार उन्होंने नयी और पुरानी पद्धतिका सामञ्जस्य किया है।

यद्यपि इस देशमें कोश निर्माणकी परम्परा बहुत प्राचीन है किन्तु दुर्भाग्यवश सभी कोश उपलब्ध नहीं होते नाममाला (कात्यायन) शब्दार्णव (वाचस्पति) संसारावर्त (विक्रमादित्य) उत्पलिनी (व्याडि) आदि कोशोंका विभिन्न ग्रन्थों या टीकाओंमें उल्लेख तो मिल जाता है पर वे अब लुप्त ही हो गये हैं। काशगरसे प्राप्त बवरके हस्तलेख-संग्रहमें एक कोशका त्रुटित अंश भी प्राप्त हुआ है पर यह निश्चित नहीं हो पाया कि वह किसका लिखा है और पूरे कोशका नाम क्या था। अमरसिंहका प्रसिद्ध कोश नाम लिङ्गानुशासन जो अमरकोश नामसे अधिक प्रसिद्ध है कदाचित सबसे पुराना उपलब्ध कोश है। अमरसिंह बौद्ध थे इस विषयमें किसीको बहुत सन्देह नहीं है। पर उनके आविर्भाव कालके सम्बन्धमें पण्डितोंमें मतभेद है। यह कोश तीन काण्डोंमें विभाजित है। जिन्हें हमने ऊपर समानार्थक कोश कहा है यह उसी श्रेणीका है। इसपर अनेक टीकाएं लिखी गयी थीं जिनमें क्षीरस्वामी (११वीं शताब्दी) वन्द्यघटीय सर्वानन्द (११५९) और राय मुकुटमणि (१४३१) की टीकाएं प्रसिद्ध हैं। पुरुषोत्तमदेवने इसके परिशिष्ट रूपमें त्रिकाण्डशेष की रचना की थी जिसमें अमरकोशमें न आये हुए शब्द दिये गये हैं। शाश्वतका अनेकार्थ समुच्चय भी काफी पुराना है। यह नानार्थक वर्गका कोश है। इसकी विभाजन पद्धति निराली है। पहले उन शब्दोंको लिया गया है जो पूरे श्लोकमें अटते हैं। फिर आधे श्लोकवाले और फिर एक चरणवाले। यह कोश भी पुरानी टीकाओंमें बहुत उद्धृत किया जाता है। हलायुध (९५० ई०) की अभिधान रत्नमाला भी काफी लोकप्रिय रही है। शर्माजीके समकालीन पण्डित समाजमें मुख्य रूपसे अमरकोशका प्रचलन रह गया था। शाश्वत

ह ायुध मदिनी आदिकी भी थो ी बहुत पूछ थी । एसा जान पडता है कि शर्माजीक मनम कुछ क्षोभ सा था कि जो लोग कोश निर्माणका काय करते ह वे वहुत थोडसे स तुष्ट ह । जव वे कुछ वि ाष ग्र योका नाम लते ह तो उनका तात्पय यही जान पडता है कि जो लोग उनक समयम कोश रचनाका दावा करते थ वे प्रचलित ग्र थोसे ही सन्तोष कर ते थ । ह उन महान काशाकी जान कारी नही थी जो अनक नय श दा और उनक अर्थोंको दनम समर्थ ह । अ यधिक परिचित और प्रचलित कोशो का नाम दना आवश्यक नही था । जो कोश उ ह आव यक जान प उनम वजय ती का नाम उ होन पहल ि या है । यादवप्रकाशके इस वृहदाकार ग्र थका स पादन जी आपटन किया था । उसका प्रकाशन सन १८९३ म मद्रासमे हो चुका है । इसग श दाको प्रारम्भिक वर्णोके अनसार सजाया गया है । इसकी रचना ११ वी शता दीम हुई थी ।इसके बाद उन्होन मख का नाम लिया है । य १२ वी शता दीके कोशकार ह । इनका अनकाथ कोश १८९ ई म वियनासे प्रकाशित हुआ । इसपर इनकी स्वयकी वहुत अच्छी ीका (अनकाथ करवाकरकौमुदी) है । मख न अपन पूववर्ती कोशाकारोसे सामग्री सग्रह की है ।

केशव स्वामीका नानार्थार्णव सक्षप १२वी शता दीका ग्र थ है । शर्माजीन इसका भी विशष रूपसे उल्लख किया है । पर तु कदाचित उन दिनोके लिख गय कोशोम हेमच द्रका अभिधान चि तामणि सर्वो कृष्ट है । इसकी टीका भी स्वय उ हीकी ि खी है । यह छ का डोम लिखा गया समानार्थक वगका कोश है । इसके परिशिष्ट रूपम निघ शष लिखा गया है जिसम वनौषधियोके नाम ह ।

ऐसा जान पडता है कि शर्माजी जब एसा लिख रहे थ तो नक सामन सस्कृतके दा प्रसिद्ध कोशोकी बात थी—श दकल्पद्रुम और वाचस्प य । सर राजा राधाका तदेव बहादुरके ि ख्यात कोश श दक पद्रुम म जिन २९ कोश-ग्रन्योसे श द सग्रह किय गये थ उनम वैजयन्ती (याम्व प्रकाश) अनकाथ कोश (मख) अनकाथकरवाकर कौमुदी (मख) नानार्थार्णव सक्षप (केशव स्वामी) के नाम नही ह । अभिधान चि तामणि (हेमच द्र) का नाम अव य है । तारानाथ तकवाचस्पतिके वाचस्प य कोश म विलसनकी सस्कृत इग्लि श ि यशनरी और राजा राधाका तदेवक शब्दक पद्रुम से सहायता ली गयी थी पर उ होन अ य शास्त्रीय श दोका सग्रह किया था जो इन दोनो कोशोम नही ह । उनका अधिक बल पाणिनि स मत व्यु पत्तिपर था । उन्होंन उन प्राचीन कोशोक नाम नही गिनाये जिनसे अतिरिक्त श द सग्रह किय गय थ । विषय सूची उन्होन अवश्य दी है । उस सूचीम बौद्ध जन शास्त्रोके नाम नही ह । यद्यपि इन कोशोम अलङ्कारशास्त्र और नाटयशास्त्र की चर्चा है पर मूल का य ग्र थाका उ ख ही है । प्रारम्भ म शर्माजीन इन कोशकारोकी इस प्रकारकी त्रुटियोका परिगणन कर दिया है ।

शमण्य-सग्रहा कहकर शर्माजीन जर्मन विद्वानो और कदाचित् वि सन मानियर विलियम्स आदि विग्नानोके प्रति आदर प्रकट करना चाहा है । दो महान् जमन विद्वान् ओटो बोर्तलिक (Ott b htl gk) और रु ोफ राथ (Rud lf Roth)ने अ य अनेक जमन विद्वानोके सहयोगसे जिनम सुप्रसिद्ध सस्कृत विद्वान् ए वेबर (A wetbcı) भी थ एक महान् सस्कृत-जमन शब्दकोशका निर्माण किया था जो सात जि दोम छपा था । प्रसिद्ध अग्रज कोशकार मोनियर विलियम्सक श दकोशकी योजना इस कोशसे भिन्न थी फिर भी

उन्होंने उक्त महान कोशसे सहायता ली थी । मोनियर विलियमसकी संस्कृत इंगलिश डिक्शनरी का दूसरा परिवर्द्धित संस्करण १८९९ ई० में प्रकाशित हुआ था । यूरोपियन पंडितोंके ये कोश बड़े ही परिश्रमसे लिखे गये हैं । शर्माजीने अत्यंत गौरवके साथ इनका स्मरण किया है जो उचित ही है । परंतु इन कोशोंके प्रणयनके समय बहुत सा साहित्य और कोश-ग्रंथ प्रकाशित नहीं हो सके थे । इन विद्वानोंको बहुत बार हस्तलिखित ग्रंथोंकी भी सहायता लेनी पड़ी थी । शर्माजीने उसके बादके प्रकाशित कोशों और बौद्धादि शास्त्रोंसे अनेक नये शब्दोंका भी चयन किया है ।

इन कोशोंके अतिरिक्त शर्माजीने चार ग्रंथकारोंका विशेष रूपसे उल्लेख किया है । ये हैं रत्नाकर, मंखक, सोमदेव और भारवि । इनमें रत्नाकर सम्भवतः 'हरविजय' काव्यके रचयिता हैं । इनका समय नवम शताब्दीका मध्य भाग है । इन्हें राजानक वागीश्वर रत्नाकर कहते थे । हरविजय पचास सर्गोंका महाकाव्य है । कवित्वकी दृष्टिसे तो यह बहुत उच्च कोटिका ग्रंथ नहीं कहा जा सकता, पर अनेक विरल शब्दोंके प्रयोगके कारण कोशकारके लिए यह बहुत उपयोगी है । इस काव्यपर माघ और बाणका प्रचुर प्रभाव है । मंखसे आशय वात्स्यायन नागमल्ल का जान पड़ता है । निस्सन्देह इनके कामसूत्र में अनेक विरल प्रयोग शब्दोंका संधान मिलता है । सोमदेव 'कथासरित्सागर' नामक प्रसिद्ध कथा ग्रन्थके लेखक हैं । यह ग्रंथ गुणाढ्य की 'बृहत्कथा' पर आधारित ग्रन्थोंपर आधारित होना चाहिये । सोमदेवने जालंधरकी रानी सूर्यमतीके शोकाकुल चित्तको बहलानेके लिए ११वीं शताब्दीके अंतिम चरणमें इस ग्रंथकी रचना की थी । कोशकारके लिए यह ग्रंथ भी एक निधि ही है । भारवि तो कालिदासके बाद संस्कृतके सर्वाधिक प्रसिद्ध कवि हैं । इनका 'किरातार्जुनीय' काव्य भारत प्रसिद्ध हो रहा है ।

जहाँतक शब्दोंके संग्रह और उनके अर्थ लिखनेका प्रश्न है कोई भी कोशकार एकदम मौलिकताका दावा नहीं कर सकता । अधिक से अधिक कुछ अधिक शब्द और कुछ नवीन प्रयोग और सन्दर्भ प्राप्त अर्थ देनेका ही दावा कर सकता है । पर फिर भी कोश निर्माण एक विशिष्ट कला है और प्रत्येक उल्लेख योग्य कोशकार कुछ मौलिकताका परिचय दे सकता है क्योंकि जैसा कि मोनियर विलियम्सने लिखा है शब्दोंके अर्थ बतानेकी पद्धति और उनके क्रम विन्यास और सजावटसे कोशकारकी वास्तविक मौलिकताका पता चल सकता है । शर्माजीने नये शब्दोंके सङ्कलन, उनके क्रम विन्यास, सन्दर्भ प्राप्त अर्थ और व्युत्पत्ति आदिमें विशिष्ट मौलिकताका परिचय दिया है । फिर शब्दों और अर्थोंको प्राचीन पद्धतिसे श्लोकबद्ध करके और सन्दर्भ आदिका पृथक् विचार करके एक बिलकुल नयी पद्धतिका प्रवर्तन किया है । जिसमें प्राचीनता और नवीनताके उत्तम पक्ष समा गये हैं ।

इस प्रकार प्रचुर अध्ययन मननके पश्चात् यह अपूर्व कोश लिखा गया है । इसके प्रकाशनमें बहुत विलम्ब हो गया था । ज्ञानमण्डल के अधिकारियोंने इसके प्रकाशनका निश्चय करके बहुत उत्तम कार्य किया है । वे संस्कृत साहित्यके अध्येताओंके विशेष धन्यवादके पात्र हैं ।

चण्डीगढ़
११.१२.६६

हजारीप्रसाद द्विवेदी

अथ

वाङ्मयार्णवः

उपक्रम

सूर्याच द्रावतसा जलधरमलिना कालिकाविश्रता या
निस्त द्रां विष्णुमूर्त्तिं शरदि निजगदुर्यां शशाङ्काकनेत्राम् ।
रौद्री यस्याश्च मूर्त्ति शिशिरकरकलामात्रविश्रा ततताया
वैराजी सत्समष्टिजयति भवमयी सा शिवा च स्वभूश्च ॥१॥
या शि पशास्त्रादिपयोमहार्हं स दुह्यते योजितबुद्धिव सै ।
वैज्ञानिकैर्विश्वहिताय भूय सा भारती कामदुघा ममास्तु ॥२॥
गोविन्ददेवीश्रीदेवनारायणसमाख्ययो ।
पित्रो स्मरन्गुरोश्चैव श्रीगङ्गाधरशास्त्रिण ॥३॥
आ ऋषेरा च विपुला लोका साम्प्रतिकादपि ।
निर्मथ्य वाङमयाब्धि श्रीविश्वविद्या समारभे ॥४॥
नानार्था अर्थपर्याया ये दृष्टा लोकवेदयो ।
वणक्रमेण ते सर्वे पद्यैर्ह धा न कुत्रचित् ॥५॥
उपयुक्तोदाहरणै पद्यकोषा न भूषिता ।
विस्तीर्णा अतिमूल्याश्च न यकोषा न सुस्मरा ॥६॥
वर्णानुक्रमविन्यस्तैर्लोकवेदोभयोद्धृतै ।
पद्यबद्धै सपर्यायैर्नानार्थैर्घटितो महान् ॥ ॥
विशेषशास्त्रायुर्वेदप्रभृतीना पदैर्युत ।
सोपयुक्तोदाहृतिभिष्टिप्पणै समलङ्कृत ॥८॥
सचित्र प्रचुरार्वाच्यवैज्ञानिकपदोच्चयः ।
परिशिष्टैश्च बहुभि कोष एष परिष्कृत ॥९॥

प्रारम्भ

मनसा न समाम्नायो य सन्यार्योऽनुशीलित ।
श्रुतिभ्य शब्दमणयो नोच्चिता यस्तद्वित ॥१ ॥
स्मृतौ तन्त्र पुराणेषु दर्शने व्याकृतावपि ।
ज्योतिषे प्राकृते बौद्धजैनसाहित्यकानने ॥११॥
पदप्रसूनाञ्जलयो नाऽटद्भिर्यैरुरीकृता ।
वैजयन्ती न दृष्टा यैर्नैव मङ्खोऽवलोकित ॥१ ॥
नेक्षिता यैरनेकार्थकैरवाकरकौमुदी ।
नानार्थार्णवसंक्षेपो नैवाभ्यस्त परिश्रमात् ॥१३॥
सन्यार्यो नैवाऽभिधानचिन्तामणिरपीक्षित ।
न च राजनिघण्टूना विहित चावगाहनम् ॥१४॥
नैव केशवकल्पद्रु कम्पितो हृदये मुहु ।
शर्मण्यसङ्ग्रहा नैव कृता ग्रहणगोचरा ॥१५॥
रत्नाकरस्य मल्लस्य सोमदेवस्य भारवे ।
नेक्षिता कृतयो यैश्च कोश किं कुयु रीदृशा ॥१६॥

---

१ जर्मनीदेशीय संग्रहा ।

अ

अंशुः सूत्रादिसूक्ष्मांशेऽप्येकदेशे लतादिनः ।
चन्द्रे सूर्ये पुमान्द्वे तु मयूखे च द्युतावपि ॥१॥
अंशुकं श्लक्ष्णवस्त्रे स्याद्वस्त्रमात्रोत्तरीययोः ।
अंशुमांस्तु पुमान् सूर्ये चन्द्रे चाद्यमहीपतौ ॥२॥
दिलीपाख्यस्य नृपतेस्तातेऽथांशुमती स्त्रियाम् ।
पृश्निपर्णीशालपर्ण्योरंशुयुक्तं तु भेद्यवत् ॥३॥
अः स्यादभावे स्वल्पार्थे निषेधे च नञर्थकम् ।
अव्ययं चानुकम्पायामिदमर्थे त्वनव्ययम् ॥४॥
अः स्याद्विष्णौ विरिञ्चे च प्रथमे च स्वरे (तथा) पुमान् ।
अकं पापे च दुःखे च तथैव प्रत्ययान्तरे ॥५॥
अकनिष्ठा बौद्धदेवविशेषेषु नृभूमनि ।
केषांचित्पुंसि बुद्धेऽपि वाच्यवन्नकनिष्ठके ॥६॥
अकल्कं कल्कहीने त्रिरकल्का कौमुदी स्त्रियाम् ।
अकूलं स्यान्जले पोते कुलहीने तु वाच्यवत् ॥७॥
अकुलः पुंसि शम्भौ स्यात्स्त्री गौर्यामकुला मता ।
अकूपारः पुमान् सर्पे कूर्मराजेऽ (म्बुधावथ) दिग्धकूर्मयोः ॥८॥
त्रिगम्भीरेऽप्यपारेऽथाकूपाराङ्गिरसः स्त्रियाम् ।
अकूवारः कूवरे नाऽकूवारा स्यात्स्त्रिया भुवि ॥९॥
अकृतं त्रिष्वजनिते क्लीबं त्वकृतमिष्यते ।
यवव्रीह्यादि सतुषहविष्ये परिकीर्त्तितम् ॥१० ॥
अक्तः प्रेते द्वयोरक्ता निशि त्रिम्रक्षितादिषु ।
अक्तुर्ना केशवे शक्ते प्रकाशे स्त्री तु दिङ्निशा ॥११॥
अक्षः पुमानामलके द्यूतभेदे वराटके ।
आधारे व्यवहारे च शकटे च विभीतके ॥१२॥
रथादिचक्रे कर्षाख्यमानद्यूतशलाकयोः ।
चतुःशताङ्गुले मानभेदे चैव रथादिनः ॥१३॥

चक्रधारकदण्डे च रुद्राक्षे द्राक्षयोरही ।
अक्ष नपुसक तुत्थ स्या सौवचल इन्द्रिये ॥१४॥
नित्येऽपि कैश्चिदुक्तोऽय तत्र स्यादभिधेयवत् ।
अक्षजस्तु पुमा वज्रे विष्णौ च परिकीर्त्तित ॥१५॥
अक्षत तण्डुले धान्ये लाजेषु क्लीबयोषितो ।
अहिंसिते त्रि षण्डे तु न द्वयोर्ना यवे स्मृत ॥१६॥
स्त्रीत्वे त्वक्षतयो र्या सा कन्यायामक्षता मता ।
अक्षमाला च सूत्रेऽरुन्धत्यां वत्सस्य मातरि ॥१७॥
अक्षयो विष्णुवासे वा क्षयहीने त्रिलिङ्गक ।
अक्षया तिथिभेदेऽपि स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥१८॥
स्यादक्षयगुण पुसि शिवे योगे तु वाच्यवत् ।
अक्षरस्तु शिवे विष्णौ खड्गे वेधस्यथाक्षरा ॥१९॥
वाच्यना क्ली विधौ धर्मे वर्णेऽम्बुतपसो क्रतौ ।
अक्षराख्ये सामभेदे खे मोक्षे मूलकारणे ॥२ ॥
परमाणौ ब्रह्मणि च प्रणवे तु नृषण्डयो ।
त्रिनिक्षरे चाग्निनाशि यपि चापरिणामिनि ॥२१॥
स्त्रियामक्षरपङ्क्ति स्याच्छन्दोभदे त्रियौगिके ।
स्त्री स्यादक्षवती द्यूतक्रीडाया त्रि तु यौगिके ॥२२॥
अक्षि नेत्रे तथेक्ष्वादे काण्डस्यावयवान्तरे ।
इन्द्रियोपनिषद्भेदद्विसख्यासु नपुसकम् ॥२३॥
अक्षित क्षितभिन्ने त्रि क्ली लक्षप्रयुते जले ।
अक्षीब वशिरे शिग्रौ ना त्रिलिङ्गस्तु निर्मदे ॥२४॥
अक्षु पुमान्समुद्रे च वप्रे च परिकीर्त्तित ।
अक्ष्ण नेत्रेऽक्ष्णा तु रजौ रोगेऽक्ष्णास्त्रि वखण्डिते ॥२५॥
अखात देवखाते स्यात्त्रि तु खातेतरे मतम् ।
अखिल वाच्यवत्कृत्स्ने गर्ह्येऽपि परिकीर्त्तितम् ॥२६॥
अगः सूर्याद्रिकुम्भाऽहिपादपेषु पुमा मत ।
तथैव सप्तसख्याया त्रि तु स्यादगतिक्षमे ॥२७॥

अगमो ना गिरौ वृक्षे गतिहीने तु भेद्यवत् ।
अगस्त्य कुम्भज वङ्गसेनद्रौ तारका तरे ॥२८॥
प्रसवे त्वस्य वृक्षस्यागस्त्य गस्य नपुसकम् ।
अगस्तिवद्वङ्गसेनफलादौ तु नपुसकम् ॥२९॥
अगाढोऽनवगाढे चाप्यभृशे चाभिधेयवत् ।
अगाध विवरे क्लीब त्रिस्तलस्पशवर्जिते ॥३ ॥
अग्निभदे त्वगाधोऽय पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।
अगुरु क्ली शिशपाया जाङ्गके पुनपुसकम् ॥३१॥
त्रिलिङ्ग तु लघु यत्रागुर्वी चैवागुरु स्त्रियाम् ।
अगौका शरभ द्वे स्यात्पक्षिपश्वास्ययोरपि ॥३२॥
अग्नायी स्त्री भवत्स्वाहादेव्या त्रेतायुगेऽपि च ।
अग्निर्वैश्वानरेऽपि स्याच्चित्रकारयौषधा पुमान् ॥३३॥
अग्निग घो वह्निग धे कणजीरणनाम्नि च ।
सूक्ष्मजीरकभदे ना त्रिस्त्वग्निसमग धके ॥३४॥
अग्निज्वाला धातकीद्रा वह्नि वाले तु सा द्वयो ।
अग्निम थो म थनेऽग्नेना श्रीपणतरावपि ॥३५॥
भल्लातकेऽग्निमुख्युक्ताऽग्निमुखा देवविप्रयो ।
क्लीबमग्निशिख प्रोक्त कुसुम्भे कुङ्कुमेपि च ॥३६॥
विशल्यालाङ्गलिक्यग्निज्वालास्वग्निशिखा स्त्रियाम् ।
अग्निष्ठ पुस्युपस्थायसञ्ज्ञयूपद्वया तरे ॥३७॥
स्थितयूपे वाच्यवत्तु पावकावस्थिते भवेत् ।
अग्निहोत्रन्त्वाहिताग्नेर्नित्यहोमे नपुसकम् ॥३८॥
अग्निहोत्री होमधेनावग्निहोत्राऽग्निह ययो ।
अग्नौ हुते वग्निहोत्र वाच्यवत्परिकीर्त्तितम् ॥३९॥
अग्र पुरस्तादुपरि पलमानेषु सहतौ ।
आलम्बनाधिक्यश्रैष्ठ्यग्रा तेषु स्यान्नपुसकम् ॥४ ॥

१ ढ्ढे पि

अधिके तु प्रधाने च प्रथमे चाभिधेयवत् ।
अग्रजन्मा विरिञ्च ना द्वयोस्त्वग्रजविप्रयो ॥४१॥
अग्रत प्रथमे चाग्रे लिङ्गहीनमुदाहृतम् ।
स्त्री त्वग्रेदिधिषू रूढाऽनूढा स्याज्ज्यायसी यदि ॥४२॥
नात्वग्रेदिधिषूरग्रदिधिषुश्चानुजो मत ।
यो ज्यायस प्रमीतस्य परिगृह्णाति योषितम् ॥४३॥
स च द्विज पुनर्भ्वार्या द्वि र्यूढा य कुटुम्बिनी ।
अघ तु व्यसने द खे दुरिते च नपुसकम् ॥४४॥
अघपानोऽस्त्रिया बाहौ ऋषिभेदे पुमान्स्मृत ।
अङ्को रूपकभेदाङ्कचिह्नरेखाजिभूषण ॥४५॥
रूपकांश शान्तिकोत्सङ्गापराधस्थानवक्षसि ।
अङ्कतिर्नाऽनिले ब्रह्मण्युक्तो वह्न्यादिषु स्त्रियाम् ॥४६॥
अङ्कपालि परीरम्भे धात्रीवैदिकयो स्त्रियाम् ।
अङ्को नपुसक सा त सयुगे स्वाङ्कभिद्यपि ॥४ ॥
अङ्कुरस्त्वस्त्रियां बीजप्ररोहे किं च शाखिनाम्
प्रतानभेदे क्लीब तु रुधिरे रोम्णि वारिणि ॥४८॥
अङ्कुरी तु वस ते ना वृक्षे च त्रि तु साङ्कुरे ।
अङ्क्य स्यादङ्कनीये त्रिस्स्यान्मृदङ्गा तर पुमान् ॥४९॥
अङ्ग शरीरावयवे शरीरापायपागुणे ।
वैयाकरणसङ्ज्ञायां प्रदेशे च नपुसकम् ॥५ ॥
नीवृद्भेदे च पुभूम्नि तद्राज तु पुमानयम् ।
अ तिकेऽङ्गवति त्रि स्यादथाऽङ्गेत्य यय मतम् ॥५१॥
सम्बोधने च हर्षे च सम्भ्रमासूययोरपि ।
अङ्गज रुधिरेऽथाङ्गज केशे कामरोगयो ॥५२॥
स्यात्त्रिलिङ्गोऽङ्गसञ्जाते द्वे अपत्येऽङ्गजोङ्गजा ।
अङ्गतिर्ना हरौ ब्रह्मण्यग्निहोत्रिणि पावके ॥५३॥

१ चित्रयुद्ध पि

अङ्गदो बालिपुत्रे स्यात्केयूरेऽङ्गदमिष्यते ।
अङ्गदा वामनभस्य प त्या च द्रकलान्तरे ॥५४॥
अङ्गन प्राङ्गणे याने कल्याण्यामङ्गना स्त्रियाम् ।
स्यादङ्गनाप्रियाऽशोकाम्रयोस्त्रिषु तु यौगिके ॥५५॥
अङ्गहारोऽङ्गविक्षेपे नृ यतोऽङ्गहृतौ तथा ।
अङ्गारस्तु पुमा भौमे स्यादुष्णा गुण एव च ॥५६॥
त्रिस्तु तद्वति निर्वाण बाले वह्नौ नृशण्डयो ।
अङ्गारोऽङ्गारमि येतन्निर्वाणाग्नावपी धने ॥५ ॥
अङ्गारक कुरण्टे चाल्मुकाश ना खग द्वयो ।
तथा करञ्जमदेऽङ्गारव लरिरुदीरिता ॥५८॥
अङ्गारवल्ली भाङ्गीति प्रसिद्धे भषजा तरे ।
भवेदङ्गारिका त्विक्षुकाण्डे किंशुककोरके ॥५९॥
अङ्गारिणी ह्यसन्त्यां च भास्करव्यक्तदिश्यपि ।
अङ्गारित तु दग्धे च पलाशकलिकोद्गमे ॥६ ॥
वासन्त्या तु लतामात्रेऽङ्गारिताप्यापगान्तरे ।
शरीरिशेषिणोरङ्गी वाच्यवच्चाङ्गवत्यपि ॥६१॥
अङ्गिरा ऋषिभेद ना सकारा तो बृहस्पतौ ।
तद्वश्येषु तु पुभूम्नि स्युरङ्गिरस इ यमी ॥६२॥
अङ्कुद्वयो पक्षिणि स्याद्विसार्थे तु पुमानयम् ।
अङ्कुलोऽस्त्री तिर्यगष्टयवमाने पुमास्तु स ॥६३॥
पक्षिलस्वामिनि तथाऽङ्कुष्ठऽश्वत्थद्रु मेऽङ्कुलो ।
का यायने च चाणक्ये केचि पुस्यङ्कुल जगु ॥६४॥
अङ्कुलि स्यादङ्कुलीवच्छाखासु करपादयो ।
कराग्रे कणिकार यऽपि करिण स्त्री वमिष्यते ॥६५॥
अङ्कुलीय तूर्मिकाया त्रिषु त्वङ्कुलियोगिनि ।
अङ्कुषस्तु पुमान्हस्ते पक्षिमदेऽङ्कुषी द्वयो ॥६६॥

1 सार्वभौमस्य

अङ्घ्रिर्ना पादतुर्यांशतरूमूलेषु नाऽङ्घ्रिवत् ।
अचलो विष्णुकीलाद्रिष्वथ भुव्यचला स्त्रियाम् ॥६७॥
देव्या च काञ्चिकस्थानस्थिताया त्रिस्तु निश्चले ।
अच्छ स्यात्स्फटिके पुंसि द्वे भल्लूके त्रि निर्मले ॥६८॥
अच्छाव्यय चाभिमुख्येऽच्छा दीर्घे सहिताकृते ।
अच्युतस्तु पुमान्विष्णौ स्यात्स्थिर त्वभिधेयवत् ॥६९॥
अजो हरी द्रब्रह्मेशकामे समपितामहे ।
अजन्य क्लीबमुत्पाते त्र्यनुत्पाद्यविजन्ययो ॥ ॥
अजपस्त्रिपुरध्यतर्यजपाले च निजपे ।
अजपा तु स्त्रियामेषा हंसमन्त्रे प्रकीर्त्तिता ॥ १॥
अजमोदा यवान्या स्यान्निर्यासे शाल्मलेरपि ।
अजा स्त्रिया स्यात्प्रकृतो छाग द्व त्रि त्वजन्मनि ॥ २॥
अजितस्तु पुमान्विष्णौ दूर्वायामजिता स्त्रियाम् ।
अजिन जिनहीने त्रि क्लीबे पापेऽपि चर्मणि ॥ ३॥
अजिर पवनेऽथ क्ली शरीरविषयाङ्गणे ।
शीघ्रये पुरेऽजिरा तु स्त्री पार्वत्या न सरित्यपि ॥ ४॥
त्रिलिङ्गोऽजर्जरे शीघ्र द्वे मृगान्तरभकयो ।
अजिष्णुस्तु पुमानग्रावुदके तु नपुंसकम् ॥ ५॥
अजिह्मग शरे पुंसि त्रि तु स्यादृजुगामिनि ।
अज्ञो जडे च मूर्खे चाप्यभिधेयवदिष्यते ॥ ६॥
अञ्चतिर्नाऽनिलेऽग्नौ च स्त्रिया बह्वादिषु स्मृत ।
अञ्चन त्वचने तद्वद्गतावपि नपुंसकम् ॥ ॥
अञ्जन कज्जले चाक्तौ सौवीरे च रसाञ्जने ।
क्ली स्त्रियोस्त्वञ्जयत्यर्थे त्रिषु त्वञ्जनसाधने ॥७८॥
पुंसि ज्येष्ठादिग्गजयोरञ्जना तु हनूमत ।
जनन्यामपि जन्तौ च हालाहलसमाह्वये ॥ ९॥
ईदन्तस्त्वञ्जनीश दो लेप्यनार्यां भवेत्स्त्रियाम् ।
अञ्जलिस्तु पुमान् हस्तसपुट कुडवेऽपि च ॥८ ॥

अञ्जले कर्तरि प्रोक्ता त्रिलिङ्गाऽञ्जलिकारिका ।
क्षुद्रजन्तुविशेषे तु गजायुर्वेदभाषिते ॥८१॥
नमस्कारीसमाख्ये च क्षुद्रवल्ल्यन्तरे स्त्रियाम् ।
अञ्जसेत्यव्ययं प्रोक्तं तत्त्वतूर्णार्थयोरपि ॥८ ॥
अञ्जिः 'शफः पुमान्नागकेसराह्वयपादपे' ।
त्रिस्त्वृजा व्यञ्जके शुक्ले पषण्या तु स्त्रियामियम् ॥८३॥
अट्टो नातिशये घाते क्षौमसङ्गगृहान्तरे ।
शुष्कस्फुटितभूभागे त्रिषु पक्वौदने तु नप् ॥८४॥
अट्टनं त्वतियोगं स्याच्छस्त्राणां च निवारणं ।
वेत्रादिरचिते खेटभेदे तत् क्लीबलिङ्गकम् ॥८५॥
अणिरक्षाग्रकीले द्वे सीम्न्यथ क्ल्यश्रिरूप्ययोः ।
'वर्द्धमानतिथिप्रायपक्षेप्याणिवद्वना । ॥८६॥
'चिक्रोडाख्ये प्राणिभेदे पुंस्त्रियोरणिरुच्यते ।'
अणीचिस्तु पुमान्विष्णौ त्रिषु शाकटिके मतः ॥८ ॥
अणुः पुमान्धान्यभेदे परमाणौ समीरणे ।
क्लीबं त्वम्भोधिलवणं स्यात्सूक्ष्मे त्वभिधेयवत् ॥८८॥
तत्र स्त्र्यर्थेऽणुरण्वी वा रश्मौ त्वण्व्यङ्गुला तथा ।
अणुको निपुणे चाल्पे त्रिलिङ्गः परिकीर्तितः ॥८९॥
अण्डमण्डो विहङ्गादेः पेशीकोशे च मुष्कके ।
अण्डजोऽहौ द्वयोर्मत्स्ये सरटे विहगे तथा ॥९ ॥
अण्डजा मृगनाभौ स्यादण्डाज्जातेऽण्डजस्त्रिषु ।
अण्डीरमण्डीरा डीरस्त्रिषु शक्तिमति स्मृतम् ॥९१॥
अण्डीरः पुरुषे पुंसि सज्जने मुष्कवत्पशौ ।
अण्डुकः पुंसि मुष्केऽथ द्वयाष्टिङ्क्ष्भिभेकयोः ॥९२॥
अततिस्तु पथि स्त्री स्यादतधातौ पुमान्मतः ।
अतसो ना वनस्पत्यन्तरे स्यादतसी स्त्रियाम् ॥९३॥
उमाख्ये धान्यभेदे क्ली त्वतसं वनमुच्यते ।
अत्यव्ययं प्रशंसायां प्रकर्षे लङ्घनेऽपि च ॥९४॥

निता तासप्रतिक्षेपवाच्यप्येतत्प्रयु यते ।
अतिगण्डो योगभदे बृहद्गण्ड तु वा यवत् ॥९५॥
अतिथि कुशपुत्र स्यात्तथव गृहमागत ।
अब धौ भोक्तुकामे च यागार्थे तु यथायथम् ॥९६॥
प्रबलेऽतिबल प्रोक्ताऽतिबला भषजान्तरे ।
त्रनि सञ्ज्ञ ऽतिमुक्तोऽथ वास या तिमिश च ना ॥९ ॥
अतिवेलो भृश वेलामतिक्रा तेऽपि वा यवत् ।
अतिसजनमुक्त क्ली दानेपि न वधपि च ॥९८॥
अत्ता श्वश्र्या मातरि च स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ।
नाट्योक्त्या वृद्धवेश्याया येष्ठाया च स्वसर्यपि ॥९९॥
अ तुर्वायावा मनि च पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।
अत्ययोऽतिक्रमे दण्डे विनाशे दोषक ङ्र्यो ॥१ ॥
अत्याकारस्त्वधिक्षेपेऽवज्ञाया च पुमान्मत ।
अत्याकृतिमति वेष भद्यवत्परिकीर्त्तित ॥१ १॥
अत्यारूढ समारूढेऽभ्यधिकेऽपि च वा यवत् ।
अत्याहित महाभी या प्राणानाकाङ्क्षकर्मणि ॥१ २॥
अत्यूहो गजमह ना त्रि वत्यर्थोहनादिषु ।
अत्यूहा नीलिकाया स्त्री नीलकण्ठखग द्वयो ॥१ ३॥
अत्वरस्तु वराहीने त्रि द्वे तु महिषे स्मृत ।
अथाथो सशये स्यातामधिकारे च मङ्गले ॥१ ४॥
विक पानन्तरप्रश्नकात्स्न्यारम्भसमु चये ।
अथर्वणिर्नाऽथवज्ञब्राह्मण च पुरोधसि ॥१ ५॥
अथर्वा ॠषिभेदे स्याद्वेदभेदे तथा पुमान् ।
अथर्वभदमन्त्रेषु तदध्येतर्यपि स्मृत ॥१ ६॥
अद शब्द त्रिषु प्राहुरत्र तत्र परत्र च ।
अदिति स्त्री भवान्यां स्यात्पृथि या देवमातरि ॥१ ॥

१ अतीकाश ङ्कारम् (विश्वतीकाशा न् करोति—साय Int to ऋ)

सुरभौ वाचि होमाथ समिद्रक्षणकर्मणि ।
द्यावापृथिव्योरदिती इत्यथ त्रिषु निर्दिता ॥१ ८॥
अदृष्ट वह्नितोयादि दवभीतौ महीभुजाम् ।
धर्माधर्मावदृष्ट स्यात्त्रि वदृष्टमवीक्षिते ॥१ ९॥
असौम्येक्षण्यदृष्टि स्त्री दृष्टिहीने तु भद्यवत् ।
अद्धाऽयथ स्या प्रत्यक्षे सत्येपि च तथामतम् ॥११ ॥
अद्भुतो वैश्वदेवाग्नौ त्रित्वाश्चर्ये महत्यपि ।
अद्भुतारये रसे त्वेष पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥१११॥
अद्मनिस्तु पुमानग्ना जयहस्तिन्यथ स्त्रियाम् ।
पशूना भक्षण द्रोण्या तथा तालुनि कीर्त्तिता ॥११२॥
अद्रि पुमान्स्मृत शैले रवावम्बुधर द्रुमे ।
अद्रिजा तु भवान्या स्त्री क्ली शिलाजतुनि स्मृतम् ॥११३॥
अधमो गर्हणीये स्यान्नीचे चाप्यभिधेयवत् ।
ओष्ठेऽधरो नाऽनूर्ध्वे तु त्रिर्हीने दीनवादिनि ॥११४॥
अधि स्यादधिकारे चापीश्वरेप्यधिकेपि च ।
अथाधिकरण द्रव्य आधारेऽधिकृतौ च नप् ॥११५॥
अधिके कुरण न स्त्री बहुव्रीहौ तु भेद्यवत् ।
अधिकाङ्ग सारसनसज्ञे कवचधारिभि ॥११६॥
मध्यबद्धेऽधिके चाङ्गे क्ली त्रि त्वन्यपदार्थकम् ।
अध्यक्षेऽधिकृतस्त्रिश्च स्वरितेनानुवर्त्तिते ॥११ ॥
अधिक्षिप्त प्रणिहिते कुत्सिते भर्त्सिते त्रिषु ।
त्रिर्नाथेऽधिपति पुसि मूर्धस्थावर्त्तविप्रयो ॥११८॥
अधिरोहणमारोहे नि श्र या त्वधिरोहणी ।
अधिवासो निवासेऽपि ग धधूपादिसस्कृतौ ॥११९॥
क्लीबेऽधिश्रयण पक्तु स्थाल्यादे परिकीर्त्तितम् ।
स्त्री त्वधिश्रयणी चुल्ल्या चु यामारोपण पुन ॥१२ ॥
अधिष्ठान तु नगरे रथचक्रप्रभावयो ।
अध्यासने च काश्मीरप्रसिद्धनगरान्तरे ॥१२१॥

कश्चिच वारोपणप्याह यवस्थापन एव च ।
अधीरो वाच्यवद्भीरौ चञ्चलेपि प्रकीत्तित ॥१२२॥
अधृष्या तटिनीभदे प्रग भप्यभिधेयवत् ।
अध्यक्षोऽधिकृत चैव प्र यक्षे चाभिधेयवत् ॥१ ३॥
अध्यण्डा वा मगुप्तायामामलक्यामपि स्त्रियाम् ।
पुमानध्यवसाय स्यादुत्साहे निश्चयेपि च ॥१२४॥
अध्यायोऽध्ययनेपि स्यादग्र थावच्छेदभिद्यपि ।
अध्यातरि तथा ध्यायहीने वा यत्रदिष्यते ॥१ ५॥
अध्यारूढ समारूढेऽभ्यधिके चाभिधेयवत् ।
अध्यूढा कृतसापत्यनार्यामध्यूढ ईश्वरे । ।१ ६॥
अध्वा ना पथि सस्थाने स्यादवस्कन्दकालयो ।
अध्वरस्त्रि सावधाने वसुभिद्यज्ञयोस्तु ना ॥१२ ॥
आकाशे त्वध्वरमिति नपुसकमुदीरितम् ।
अनघो निर्मलापापमनोज्ञेष्वभिधेयवत् ॥१ ८॥
अनघो नाशिवे साध्य ग धव मनुजान्तरे ।
अनङ्गो मदनेऽनङ्गमाकाशमनसोरपि ॥१२९॥
अङ्गहीने त्वनङ्गस्त्रिरङ्गभिन्ने नपुसकम् ।
अनञ्जन तु क्ली व्योम्नि त्रि तु स्याद्विगताञ्जने ॥१३ ॥
अनडवाश्चावृषेऽध्न्यायामनडवाह्यनडुह्यपि ।
अनन्त केशवे शषे बलदेवे च वासुकौ ॥१३१॥
विश्वेदेवा तरे सि दवारेऽर्हे नृपभेदया ।
क्ली त्वभ्रके खेऽन ता तु पौणमास्या महद्दिशि ॥१३२॥
भूगुडूच्योर्विशल्याया शारिवादूर्वयोरपि ।
कणादुरालभापथ्यापार्वत्यामलकीपु च ॥१३३॥
लाङ्गल्यामग्निम थे च तारादव्यामपि स्त्रियाम् ।
जनमेजयपत्न्यां चाथा तेनरहिते त्रिषु ॥१३४॥
अनपालिस्तु धात्र्यां स्त्री तथा पाल्या गदद्रुहि ।
अनयो यसनानीतिदैवाशुभविपत्सु च ॥१३५॥

अनलश्चित्रके वह्नौ पुमान्वस्वन्तरेपि च ।
अनोऽन्ने शकट सा त क्लीबमम्बुनि चौदने ॥१३६॥
भवेदनिमिषो दव मस्ये चाप्यनिमेषवत् ।
द्वय तु तत्त्रिलिङ्ग स्यान्निमिषण विवर्जिते ॥१३ ॥
अनिरुद्ध पुमा प यावुषायास्त्रित्ववारिते ।
अनिल पुसि पवने स्मृतो वस्व तरेपि च ॥१३८॥
अनीकोऽस्त्री रण सैन्ये वृन्दे बाणाङ्गभिद्यपि ।
अनीकस्थो रणगते हस्तिशिक्षा विचक्षणे ॥१३९॥
राजरक्षिणि चिह्ने च वीरमदनकेपि च ।
अनीकिनी सैन्यमात्रेऽक्षाहिण्या दशमेशके ॥१४ ॥
अनु हीने सहार्थे च पश्चा सादृश्ययारपि ।
लक्षणे थभूतमाषाभागवीप्सास्वनुक्रमे ॥१४१॥
आयामे च समीपे च समुदाहृतम ययम् ।
अनु प्राणे पुमानुक्तो मनुष्ये तु द्वयोर्मत ॥१४२॥
अनुकर्षो रथाध स्थदारुण्यप्यनुकषण ।
अनुक्रोश कृपाया ना स्यादनुक्रोशनेपि च ॥१४३॥
सामान्तरे त्वनुक्रोश नपुसकमुदाहृतम् ।
अनुगो वाच्यव प्रोक्तोऽनुगामिनि च सेवके ॥१४४॥
भवेदनुचरो वाच्यलिङ्गाऽनुगसहाययो ।
अनुजीवी सहाये च सेवके चाभिधयवत् ॥१४५॥
अनुतर्षस्तु चषके मद्ये तृष्णाऽभिलाषयो ।
उपयुदीच्यश्रेष्ठाना विपरीते यनुत्तर ॥१४६॥
श्रेष्ठे च विपरीते तु प्रतिवाचो नपुसकम् ।
बहुव्रीहावीदृशाना प्रयोगस्त्रिषु समत ॥१४ ॥
अनुदात्तो निघातारयस्वरे तद्वति तु त्रिषु ।
भि नेप्युदात्तादतस्य प्रयोगस्त्रिषु समत ॥१४८॥
अनुद्वेषो द्वेषमात्रे दीघद्वेषानुब धयो ।
पश्चात्तापे तथा देशमदेपि च पुमान्मत ॥१४९॥

याच्ञोपतापैश्वयाशी ष्मनुनाथनमि यते ।
भवेदनुपमा सुप्रतीकि या त्रिषु तूत्तमे ॥१५ ॥
अनुब धस्तु ब धे स्याद्दोषोत्पादे विनश्वरे ।
मुख्यानुयायिनि शिशौ प्रकृतस्यानिवत्तने ॥१५१॥
अनुब धी तु हिक्काया तृष्णायामपि योपिति ।
अनुभाव प्रभावे स्यान्निश्चये भावबाधके ॥१५ ॥
अथानुमतिराम्ले स्यादनुज्ञायामपि स्त्रियाम् ।
पूर्णिमाया कलाहीनच द्रायामपि सोच्यते ॥१५३॥
अनुरूपस्तु सदृशे भयव परिकीर्त्तित ।
स्याद्बहिष्यवमानस्य द्वितीये सतृच पुमान् ॥१५४॥
अनुवत्सर इत्युक्तो व सरे व सरा तरे ।
अथानुवासन स्नेहबस्तिधूपनयोर्मतम् ॥१५५॥
भवेदनुशयो द्वेषे पश्चात्तापानुब धयो ।
अनुषङ्गस्तु कारुण्ये प्रकृतस्यानुवत्तने ॥१५६॥
अनुष्टुप छ दसि द्वात्रिंशद्वर्णे वाचि च स्त्रियाम् ।
अनूक तु कुले शीले कण्ठाभ्यर्णाङ्गभिद्यपि ॥१५७॥
अनूकस्तु गते जन्मन्येष पुसि प्रकीत्तित ।
अनूचानो विनीते च साङ्गवेदपटौ त्रिषु ॥१५८॥
अनूपो महिषे द्रे स्यात्त्रिस्त्वम्बुप्रायदशके ।
अनृत तु कृषौ क्लीबमसत्ये च त्रिषु त्वद ॥१५९॥
असत्ययुक्तेप्यनृतम्प्युसत्वेप्यनृता स्त्रियाम् ।
अनेडमूक स्याद धे वक्तु श्रोतुमशिक्षिते ॥१६ ॥
त्रिलिङ्ग एष कथित शठ च श्रुतिवजिते ।
अनेधास्तु पुमानग्नौ वाते च त्रिस्त्वनि धने ॥१६१॥
अनेहा काल इ द्र च पुमान्सान्तादनेहस ।
अन्तोऽवसाने मरण स्वरूपे निश्चयेऽ तिके ॥१६२॥
धर्मे प्रधाने च पुमान्केषाचि पुनपुसकम् ।
कोटेरारम्य दशमे स्थाने दशगुणोत्तरे ॥१६३॥

सरयाभदे समुद्रारयसख्याया वपरे विदु ।
सा च सख्याष्टम स्थान कोटरारभ्य कीर्त्तिता ॥१६४॥
एतयो पूर्वसख्यायां विक पेनाभ्यधुस्त्रिषु ।
छान्दोग्योपनिषद्युक्त सर्वेष्व तेष्वितीदृशम् ॥१६५॥
तत्रार्थश्चिन्तनीयोऽन्य पदार्थो मन्वते परे ।
अ ता तु नृस्त्रियोर्व धे घन्याकारेपि चा तते ॥१६६॥
अन्तनाया तु पुल्लिङ्गो भेद्यवत्तु पचाद्यचि ।
अ तर ययमेत च स्वीकारे मध्य उच्यते ॥१६ ॥
अ तर तु मत प्रत्यासत्तौ मध्यावकाशयो ।
तादर्थ्येऽवसरे कालभद म व तराह्वये ॥१६८॥
विशेषविवरान्तर्धिष्ववसानविनाथयो ।
अवधौ च त्रिषु पुनस्तुल्येऽ पपरिधानयो ॥१६९॥
बाह्ये स्वीये प्रतिश्रुवि नृनपोस्वन्तरात्मनि ।
अन्तरिक्ष तु गगने क्ली साम्नोरुभयोरपि ॥१ ॥
वैरूपाष्टकवर्गस्य ये साम्नी उपरिस्थिते ।
वास्तुदेवविशष तु पुसि स्या सवदक्षिणे ॥१ १॥
कोष्ठ यो वर्त्तते प्रा य कोष्ठपङ्क्तेर्हि वास्तुन ।
अ तरीप भवेद्द्वीपे तथान्तर्वारिणस्तट ॥१ २॥
अन्तरेणा यय विद्याद्विनामध्यार्थयोराप ।
अन्तर्गत विस्मृतेऽ त प्रविष्टेऽपि च वाच्यवत् ॥१७३॥
अन्तशय्या मृतौ भूमिशय्याया पितृकानने ।
अ तरस्था तु स्त्रिया प्रोक्ता यरयोलवयुक्तयो ॥१ ४॥
तथाच्छ दो विचित्यां च द्व्यक्षरप्रभृतिष्वपि ।
षड्विंशतौ च छन्द सु चतुर्वृद्धेषु दृश्यते ॥१७५॥
प्रयोगे ब्राह्मणोपस्थानीयाजीयके तथा ।
त्रिष्वन्तावस्थिते चापि तथैवान्तरवस्थिते ॥१ ६॥
अन्तावसायिन्य तावसायी द्वे नापिते तथा ।
चाण्डालेपि चाण्डालाभिषादी श्रुवि सकरे ॥१ ७॥

मुनिभेदे तु पुल्लिङ्गोऽन्तावसायी प्रकीर्त्तितः ।
अन्तिका निकटे त्रिष्वन्तिका स्त्री शीतलौषधौ ॥१७८॥
चुल्ल्यां ज्येष्ठभगिन्यां तु नाट्योक्त्या कथ्यतेऽन्तिका ।
अन्तेवासी त्रिषु शिष्ये चण्डालेऽन्तेवासिनी द्वयोः ॥१७९॥
अन्त्यस्तु पुंसि मुस्तायां त्र्यन्तोद्भूतेऽधमेऽपि च ।
अन्दू पद्भूषणभिदि करिणो निगडे स्त्रियाम् ॥१८०॥
अन्धं स्यात्तिमिरे क्लीबं चक्षुर्हीने तु मद्यवत् ।
अन्धको दैत्यभेदे ना नृभूम्नि क्षत्रभिद्यपि ॥१८१॥
अन्धकीर्तिः स्त्रियां रूपं नर्क्यां प्राप्यते दिशि ।
अन्धिका द्यूतभेदे स्त्री रजन्यामपि कीर्त्तिता ॥१८२॥
अन्धुरुद्वसि कूपेऽपि व्रणेऽपि च पुमान्मतः ।
अन्ध्रस्त्वयनवपूर्वायां निषाद्यां जनिते द्वयोः ॥१८३॥
वैदेहनाथे पुंभूम्नि नीवृद्भेदेऽथ तन्नृपे ।
ना तद्देशनिवासे तु जनेऽन्ध्रोऽन्ध्री भवेद्द्वयोः ॥१८४॥
अन्नं भोज्ये जले भक्ते भुक्ते त्वन्नं त्रिषु स्मृतम् ।
अन्नादो ना व्रतान्ताग्नावन्नस्यात्तरि तु त्रिषु ॥१८५॥
मनुष्ये तु द्वयोरन्नादाऽन्नादीति प्रकीर्त्तितम् ।
अन्यस्त्वसदृशे भिन्नेऽन्याय्ये च त्रिषु स्मृतम् ॥१८६॥
अन्यथा वितथेऽपि स्यात्परार्थेऽप्यव्ययं मतम् ।
अन्वयस्त्वन्ववाये स्यात्सम्बन्धेऽनुगमे तथा ॥१८७॥
अन्वासनं स्नेहबस्तावुपास्तावनुशोचने ।
अन्वाहार्यममावास्याश्राद्धमिष्टेश्च दक्षिणा ॥१८८॥
अप् स्त्रियां बहुत्वाप्सु सलिलेच्छन्दसोरपि ।
शताक्षरेऽष्टनवति स्वरे ह्रीबेर एव च ॥१८९॥
भूमेरधस्ताल्लोकेषु मुस्ते व्योमनि च क्वचित् ।
अप स्यादपकृष्टार्थे वर्जनार्थवियोगयोः ॥१९०॥
विपर्यये च विकृतौ चौर्ये निर्देशहर्षयोः ।
अपकारोऽन्यपीडायां तथा स्यादन्यतः कृतौ ॥१९१॥

अपकृष्टोऽधमेपि स्यात्त्रिषु चैव पृथक्कृते ।
अपक्रम कुक्रमे निर्गोऽपगत्या पलायने ॥१९२॥
स्त्रियामपचिति पूजानिष्कृत्योश्च व्यये क्षये ।
एकाहयज्ञयोरप्यपचिति सम्प्रयुज्यते ॥१९३॥
अपटी स्त्री काण्डपटे निष्पटे त्वपटा त्रिषु ।
अपत्य तु भवेत्तोके सामगानां च विश्रुते ॥१९४॥
आरण्यके सामभदे उच्चतेजत्यृचि ।
अपदान कर्मणि स्यादितिवृत्तेऽवखण्डने ॥१९५॥
अपदेश पुमा लक्षे निमित्तव्याजयोरपि ।
अपध्वस्त धिक्कृते चाप्युज्झितप्यवचूर्णिते ॥१९६॥
निन्दिते कैश्चिदेत च वाच्यलिङ्ग प्रकीर्त्तितम् ।
अपभ्रंशस्तु पतने भाषाभेदापशब्दयो ॥१९ ॥
अपर गजपश्चार्द्धे सिद्धा तेऽथापरा स्त्रियाम् ।
जरायामितरस्मिंस्तु त्रि पूर्वप्रतियोगिनि ॥१९८॥
अथापराजित पुंसि हरे विष्णौ स्त्रिया पुन ।
छान्दोग्यकीर्त्तितब्रह्मपुरि योक्ताऽपराजिता ॥१९९॥
तथैवासनपर्ण्याख्यक्षुद्रवृक्षे जये द्वयो ।
गिरिकर्णी लताया चाप्यशान्त्या दिशि च त्रि तु ॥२ ॥
अजिते राजित यस्मादपेत तत्र यस्य च ।
गर्हित राजित तत्र राजिते गर्हितेऽप्यथ ॥२ १॥
गर्हिते राजने क्लीबमपराजितमुच्यते ।
अपर्णा गिरिजाया स्यात्पर्णहीने तु मद्यवत् ॥२ २॥
अपलाप प्रेमणि स्यात्तथैवायमपह्नवे ।
अपवर्ग क्रियासाध्यफलाप्तौ त्यागमोक्षयो ॥२ ३॥
अपवर्जनमित्युक्त क्ली दान यागमुक्तिषु ।
अपवादस्तु निन्दायामाज्ञाविस्रम्भयोरपि ॥२ ४॥

१ [अवदानं अवदानकल्पलता उदीच्यानाम्—अपदान दाक्षिणात्यानाम्]

उत्सगस्य निषेधेऽपि पुलिङ्ग परिकीर्त्तित ।
ननाऽपवारणाऽन्तर्धा त्रिषु निर्वारण मता ॥२ ५॥
त्रिषु त्वपशदो नीचऽथ स्यादपशदो द्वयो ।
वर्णानामानुलोम्येन षटसु जातासु जातिषु ॥२ ६॥
अपष्ठो नाङ्कुशाग्रे स्यात्पष्ठहीने तु वा यवत् ।
अपष्ठु पुसि कालेऽथ वामे स्याद यलिङ्गक ॥२ ॥
अपसजनमाख्यात परिवजनदानयो ।
अपसर्पश्चारभेदे कीर्त्तितोऽप्यपसर्पण ॥ ८॥
अपेतसपके वेष वा यलिङ्ग प्रकीर्त्तित ।
अपस य स्रुतकाग्नौ पुलिङ्ग परिकीर्त्तित ॥२ ९॥
प्रतिकूले दक्षिणे च तनोरेष त्रिलिङ्गक ।
अपस्नान मृतस्नाने तथा तत्स्नानवारिणि ॥२१ ॥
अपह्नवस्तु पुलिङ्ग स्मृत स्नेहापलापयो ।
अपागमस्तु पुलिङ्गो वह्नौ वाते च कीर्त्तित ॥२११॥
अपाङ्गस्त्यङ्गहीने थ नेत्रा ते तिलके च ना ।
अपादान तु विश्लेषावधावपहृतौ तथा ॥२१२॥
अपान तु गुदे क्लीब वृषणपि पुमा पुन ।
आरण्यके सामभदे शारीरपवना तरे ॥२१३॥
अपायस्त्रिर्गतामे ना विश्लेषे विद्रवे यये ।
अपारस्तु समुद्रे ना त्रिषु पारविवर्जिते ॥२१४॥
अपावृतस्तु पिहिते स्वतन्त्रेपि च वाच्यवत् ।
अपाश्रयस्तु ना मत्तवारणेऽपाश्रितावपि ॥२१५॥
अपेताश्रयके वेष त्रिलिङ्ग परिकीर्त्तित ।
अपासन निरसने वधे क्ली त्रिगतासने ॥२१६॥
अपि सभावनाप्रश्नशङ्कागर्हासमुच्चये ।
तथायुक्तपदार्थेऽपि कामचारकृतावपि ॥२१ ॥
अपुष स्यात्पुमानग्नौ ना सा रुज्यपुषा त्रिषु ।
अपूप पिष्टकभिदि मधुच्छत्रे तथा पुमान् ॥२१८॥

अपोगण्डस्तु बलिभे विकलाङ्गे शिशावपि ।
अम्र सा त क्ली क्रियाया रूपेऽपत्ये च कीर्त्तितम् ॥२१९॥
अप्तु पुमान्याचके च कालेऽपि परिकीर्त्तित ।
अप्पतिवरुणे चैव समुद्रे च प्रकीर्त्तित ॥२२ ॥
त्रिष्वप्रतिरथो योग ऋषिभदे तु पुस्ययम् ।
आशु शिशान इत्यादि सूक्तेऽप्रतिरथ मतम् ॥२२१॥
अप्रहृष्टस्तु काके द्वे त्रित्वप्रमुदिते भवेत् ।
अप्वा नद्या भये रोगे स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ॥२२२॥
अबद्ध ब धनाभावे नपुसकमुदीरितम् ।
अन यब धे तु भवेत्रिनिरर्थकवाचि च ॥२२३॥
अबलो बलहीने त्रिर्ना तु भार्याग्रजन्मनि ।
स्त्री तु चर्विततताम्बूलरसे योषिति चाबला ॥२२४॥
अबलोर्णं तु चूर्णे क्ली ताम्बूलस्यापि चर्विते ।
अबलोण पुमान्वाच्यस्फुटाया परिकीर्त्तित ॥२२५॥
अबालो वा यव प्रौढे नालिकेरद्रुमे पुमान् ।
अ ज क्ली लवणे पद्मे ना तु शङ्खशशाङ्कयो ॥२२६॥
धन्व तरौ च निचुले त्रिस्वब्जो जलसम्भवे ।
अब्ज सा त भवेत्क्लीब रूपे चैव सरोरुहे ॥२२७॥
अब्द पुमा वारिदे स्याद्वत्सरे मुस्तके तथा ।
ऋषिभेदे पुरोडाशभेदे चावयवे तरो ॥२२८॥
अ ध कूपे पुमान धा स्त्रिया सरिति कीर्त्तिता ।
अ धि समुद्रेपि पुमास्तथा सरसि कीर्त्तित ॥२२९॥
कोटस्तथाष्टमे स्थाने सरया स्यादधिनामिका ।
अ धिजा तु स्त्रियां लक्ष्म्या मेद्यवत्तु समुद्रज ॥२३ ॥
अ धिमण्डूक्यधिजाया शुक्तौ द्वे त्वधिदर्दुरे ।
अब्रह्मण्यमवध्योक्तौ ब्रह्मण्यात्वितरे त्रिषु ॥२३१॥
अभक्तो भक्तहीनेपि निर्विभागेपि वाच्यवत् ।
अभक्तस्यविभक्तासबद्धभक्तोज्झितेष्वपि ॥२३२॥

अभक्ष्य तु क्षभो येप्यशक्यभक्ष्येपि वाच्यवत् ।
अभङ्गुरत्वविषमभङ्गशीलान्ययोस्त्रिषु ॥२३३॥
अभया तु हरीतक्या पार्वत्या च शिवेऽभय ।
धर्मपुत्रे बिम्बिसारे पारस्त्रैणयकेपि च ॥२३४॥
उशीरे वभय क्लीब भयहीने तु वाच्यवत् ।
स्याद्भावस्त्वसत्ताया विष्णोर्भावे तथामृतौ ॥२३५॥
अभी थम्भूतकथने चाभिमुख्याभिलाषयो ।
अभिक्रमोऽभिक्रमण पुमानारोहणपि च ॥२३६॥
शताक्षरच्छन्दसि चाभिकारे भिद्यति स्त्रियाम् ।
अभिक्रमोऽभिगमनास्क दारम्भषु कीर्तित ॥२३७॥
अभिक्रोशोभिशापेपि विलोपपि प्रकीर्तित ।
अभिक्षेप स्यादभिप्रेरणेऽप्यभिभवेपि च ॥२३८॥
अभिख्याकीर्तिविर यातिप्रज्ञासञ्ज्ञाद्युतिष्वियम् ।
ज्ञानेप्यभिगमो ग्राम्यधर्मपैशु ययोरपि । ॥२३९॥
गोमयेनोपलेपार योपासनाङ्गाभियानयो ।
अथाभिगमन देवमूर्त्युपासनवर्त्मनि ॥२४ ॥
ऋत्विक प्रोत्साहनाया तत्कर्त्तर्यभिगर पुमान् ।
अभिगान तु गानेभिलक्ष्य स्यान्मोहनेपि च ॥२४१॥
अभिग्रहोऽभिग्रहणेऽभियोगेऽपि च गौरवे ।
अधिकारेऽपि शपथ घषणास्कन्दलुण्ठने ॥२४२॥
घर्षणेऽपि तथा प्रेताद्यावेशष्वभिघषणम् ।
अभिघात प्रतिहतौ ताडनेपि क्षतावपि ॥२४३॥
अभिगृह्योच्चारण च क्ली घादे कादिभिद्यु तौ ।
अभिघाती तु शत्रौ नाऽभिहन्तरि तु वाच्यवत् ॥२४४॥

---

१ (वीप्सायामपि) ।

२ [मैत्रास काव्या f भयगर] [on h t ng]

३ (अभिघात स्या पूर्व वेद् क्लिन्यभिधवर्णाश्चेत् । नानावर्गाणां परतो धरणीच न्न क्रियामाख्या) ॥ (केर) (Comb at on of 4th w th 1 or 3 d 2nd w th 1 t 3rd w th 2 d of th s mo ol s)

अभिघारो घृतेपि स्यात्सेकेपि च घृतादिभि ।
अभिचक्षणमाक्रोश आह्वानेप्यवलोकने ॥२४५॥
सानुग्रहावलोकश्च शकुनेक्षाभिचक्षणम् ।
अथाभिचरण द्रोहे चापाये मोहने गमे ॥२४६॥
ख्यातावभिजनो जन्मभूकुलघ्नजयो कुले ।
कुलजे पूर्वजे कीर्त्तौ कुलीनेपि प्रकीर्त्तित ॥२४ ॥
अथाभिधेयवच्चैष प्रवीणाभिजनो मत ।
अभिजात कुलीने स्यान्न्याय्यपण्डितयोस्त्रिषु ॥२४८॥
जन्मलब्धेऽथाऽभिजातमभिरूपे [तु वाच्यवत्] ।
अभिजित्क्रतुभेदे च स्यान्मुहूर्त्तान्तरे पुमान् ॥२४९॥
नक्षत्रभेदे तद्युक्तकालमात्रे च कीर्त्तित ।
अभिजिन्नक्षत्रजाते त्वभिजिद्वाच्यवद्भवेत् ॥२५ ॥
अभिज्ञा तु स्त्रिया स्मृत्या निपुण त्वभिधेयवत् ।
अभिज्ञा तु भवेज्ज्ञानेऽङ्गीकारे स्मरणेपि च ॥२५१॥
पञ्चात्मके बुद्धगुणे यत्र स्यात्कामरूपता ।
सवश ब्दश्रुति सर्वदृष्टिरन्यमनोग्रह ॥२५२॥
भूतभव्यजनुर्ज्ञानपञ्चभिघटिता च सा ।
अभित शीघ्रसाकल्यसमुखोभयतोऽन्तिके ॥२५३॥
अभितापस्तु तापेपि ज्वरेप्यश्वस्य कीर्त्तित ।
अभिधा तु भवेदुक्तौ सज्ञायामपि च स्त्रियाम् ॥२५४॥
अभिधान नामवचोबन्धनेषु नपुसकम् ।
अभिधानी तु रज्जो स्त्री पशूनां परिकीर्त्तिता ॥२५५॥
व्यञ्जकोभिनयो यस्तु स्वार्थाभिनय स च ।
वणमात्रे विसर्गे चाभिनिष्टान प्रकीर्त्तित ॥२५६॥
अभिनीत त्रिषु न्याय्ये सस्कृतामर्षिणोरपि ।
अभिपन्नोपराद्धेभिग्रस्ते चापद्गते त्रिषु ॥२५ ॥
अभिप्लवस्त्वनुचरे त्रिलिङ्ग परिकीर्त्तित ।
पुमांस्त्वभिमुखप्लुत्यक्रतोश्चाहर्गणान्तरे ॥२५८॥

भवेदभिमरो युद्धे वधे स्वबलसाध्वसे ।
अभिमदस्तु पुंसि स्यात्सपरायेऽवमदने ॥२५९॥
अभिमानो भवेद्दर्पाज्ञानप्रणयहिंसने ।
अभियुक्त परिचिते चाप्ते रुद्धे परैरपि ॥२६ ॥
व्यवहारप्रवृत्तानां तथवोत्तरवादिनि ।
अभियोक्ता विवादेषु पूर्ववादि यपि द्विष ॥२६१॥
परिक्षेप्तरि सैन्यैश्च सम्प्रयुक्तोभिधेयवत् ।
अभियोग पृतनया यानेप्यन्यायधर्षित ॥ ६२॥
वेदने प्राडविवाकाय पुमा परिचयेपि च ।
अभिरूपो बुधे तद्वद्रमणीयेभिधेयवत् ॥२६३॥
अभिशस्तोऽभिशप्ते त्रिर्विवाद्युत्तरवादिनि ।
अभिशस्ति प्रार्थनायामभिशापे च दूषणे ॥२६४॥
अभिषङ्ग पुमान् दु खे शापे सङ्गे पराभवे ।
आक्रोशेपि तथैवाभि वणपि प्रयुज्यते ॥ ६५॥
स्नानेऽभिषवो मद्यसधाने सवने पुमान् ।
अभिषिक्तो द्वयोर्विप्रक्षत्रियाव्यभिचारजे ॥२६६॥
कृताभिषेके शब्दोय वा यवत्परिकीर्त्तित ।
काञ्जिकेऽभिषवे चाभिषुत त्रि वस्य कर्मणि ॥२६७॥
अभिष्यन्दोऽतिवृद्धौ स्यादास्रावेऽक्षिगदेपि च ।
अभिसधानमुदितमभिसधिशरार यये ॥ ६८॥
अभिसारक इत्येष स्यात्त्रिलिङ्गोभिगन्तरि ।
कान्तार्थिनी तु या याति सकेत साऽभिसारिका ॥२६९॥
देवरे च नियुक्ताया यात्यन्य साऽभिसारिका ।
अभिहार सनहने चौर्ये वैराभियोगयो ॥२ ॥
गजशायनकालेपि पुंलिङ्ग परिकीर्त्तित ।
पुमास्तु ऋषिभेदे स्यात्सामगेपि कवौ तथा ॥२७१॥
अभीक्ष्णस्तु भृशे नित्यतद्युक्तक्रिययोस्त्रिषु ।
अभीक्ष्ण मुहुरश्रान्ते प्रकर्षे त्वरितेऽव्ययम् ॥२७२

अभीतोऽभिगतेपि स्याभिभयप्यभिधेयवत् ।
अभीसु प्रग्रहे रश्मा बाह्वा ना थाऽङ्गुलो स्त्रियाम् ।।२ ३।।
अभ्यग्राऽभिमुखे नव्ये समीपऽप्यभिधेयवत् ।
सामीप्ये पुनरभ्यग्र नपुसकमुदीरितम् ।।२ ४।।
अभ्यागमो विरोधाभिघाताभ्युद्गमनान्तिके ।
अभ्याधानमभि यासे वह्न्यर्थे चेध्मसग्रहे ।।२ ५।।
स्यादभ्यारूढमारूढे सातिरेके च सपदा ।
अभ्याशो व्यसने पुसि सामीप्येप्यन्तिकेपि च ।।२ ६।।
अभ्यासा गुणने घातो द्वित्वे पूर्वत्र च स्मृत ।
पुस्यभ्युपगम स्वीकारऽन्तिकोपगमेपि च ।।२ ।।
लाजेषु क्लीबमभ्योष नाऽऽज्याम्भ पेयसक्तुषु ।
अभ्र मुस्ताम्बुद योमकाञ्चनाभ्रकधातुषु ।।२७८।।
अभ्रि स्त्री काष्ठकुद्दाले स्यात्कूपे तु पुमानयम् ।
ग्रावाणो ये च सुत्यार्थमभयस्ते प्रकीर्त्तिता ।।२ ९।।
अम्वा तु गमने चैव सलिले च स्त्रिया मता ।
अमत पुसि मृत्या स्याद् द्वे मर्त्ये त्रिर्मतेतरे ।।२८ ।।
अमतिस्त्वभिघाते ना द्वयोश्छागे च चातके ।
अज्ञानलिङ्गरूपे च प्रावृषि त्रिस्तु निर्मता ।।२८१।।
अमति पुस्त्रियोरग्ना रोगे च परिकीर्त्तित ।
अमनि पशुवङ्क्ण्या जलपात्रे च दारवे ।।२८२।।
अमरस्त्वस्थिसहारकुलिशद्रुमयो पुमान् ।
देवाना कमचे मेकलाद्रौ चामरकण्टक ।।२८३।।
अमरा स्त्र्यमरावया स्थूणादूर्वाजरायुषु ।
गुडूच्या चामरी तु स्त्रीपुसयोर्देव इष्यते ।।२८४।।
अमल त्वभ्रके लक्ष्म्या वमला त्रिस्तु निर्मले ।
अमाऽव्यय सहार्थे च समीपार्थे च कीर्त्तितम् ।।२८५।।

१ अमरकण्टक संप्रति मेकल उच्यते ।—लें

अमा य स्याद्धि सचिवे राज्ञोऽथ त्रिष्वमाभवे ।
अमावास्या स्त्रिया दर्शे जाते त्वत्र त्रपु स्मृता ॥२८६॥
अमृत याम्नि दवा ने यज्ञशप रसायने ।
अयाचिते जले जग्धो मोक्षे हेम्नि च गोरसे ॥२८७॥
धारोष्णदुग्धप्यमृतौ दुग्धमात्रे नपुसकम् ।
अमृतस्तु द्वयार्देवे पुसि धन्वन्तरा स्मृत ॥२८८॥
अमृता मागधी पथ्या गुडूच्यामलकीषु च ।
स्या सुरामिक्षयो सूर्यरश्मिभित्स्वमृता स्मृता ॥२८९॥
आनन्दनाथ मेध्याश्च नूतना पूतना इति ।
शत शत वृष्टिवहा आख्याता याश्चिर तन ॥२९ ॥
अमृतोद्भवमेतत् क्ली लशुन त्रि सुधाद्भवे ।
अमोघ सफले वाच्यलिङ्ग स्या स्त्री तु पाटला ॥२९१॥
पथ्याविडङ्गयोश्चैवाऽमाघा ग्राहे त्वय द्वयो ।
अम्बक नयने क्लीबमम्बिका मातरि स्मृता ॥ ९ ॥
पावत्या मातुलान्या च कनिष्ठाया स्वसर्यपि ।
अम्बर वाससि व्योम्नि सुगन्धिद्रव्यकान्तर ॥ ९३॥
अम्बरीषोनुतापऽश्वसाधके निरया तरे ।
आम्रातके तैलपर्ण्यां सूर्ये राजान्तरे पुमान् ॥ ९४॥
क्ली रण तृणभदे च वर्षे रोधसि वाससि ।
चु ल्या भ्राष्टमहाभ्राष्टे कुले द्वे तु किशोरके ॥२९५॥
अम्बष्ठो देशमदे नाम्बष्ठनम्बष्ठा द्वयोभवेत् ।
विप्रोढवैश्याजे किं वा विप्रोढक्षत्रियाभवे ॥२९६॥
सवणनाम्नि महिष्याख्ये वैश्याज च हस्तिपे ।
अम्बष्ठा शार्ङ्गष्ठिकायां पाठायूथिकयोभवेत् ॥ ९ ॥
चाङ्गेरी चुक्रिकाकाकीमयूरविदलासु च ।
अम्बा मातरि चाप्युक्ता ज्येष्ठस्वसरि च स्त्रियाम् ॥२९८॥

---

१ अम्बष्ठ हस्तिपे अपश्य कुवलयापीड कृष्णोम्बष्ठप्रणोदितम् ।
उव च हस्तिप वाचा—इत्यादि । भाग एक १ पृ ४३।२ ६ ।

वाचा मध्यमिकाना च सप्तानामेकवाचि च ।
अम्बुच्छन्दोविशेषे क्ली नवत्यक्षरलक्षित ।। ९९।।
लग्ना चतुर्थराशौ च ह्रीबेर सलिलेपि च ।
अम्बुक काकनासायामरण्डेपि पुमान्मत ।।२ ।।
अम्बुज कमले क्लीबे काटेदशगुणोत्तरे ।
सख्याभदे सप्तमेऽथ पुमान्निचुलशङ्खयो ।।२ १।।
स्यादम्बुजोम्बुजा तु स्त्री कमलाया प्रकीर्त्तिता ।
अम्बुप्रियो वेतसेना त्रिलिङ्ग साललप्रिये ।।२ ।।
अम्भ सा त भवेत् क्लीब ह्रीबेरे सलिलेपि च ।
द्व्यशीतिस्वरके छन्दस्यष्टाशीत्यक्षरेपि च ।।२ ३।।
अम्भसी इति तु द्यावा पृथि व्योर्द्विवचा तकम् ।
अम्ली स्त्री चुक्रिकाया त्रि साम्लेऽम्लो ना रसान्तरे ।।२ ४।।
अम्लानोऽम्लानिम येष भेद्यव परिकीर्त्तित ।
महासहाया वम्लानोऽम्लान तु प्रसवेस्य च ।।२ ५।।
अम्लिका ति तिडीकाम्लोद्गारचाङ्गेरिकासु च ।
अय शुभावहे दैव द्यूतऽक्षपतने गतौ ।।२ ६।।
पुमा ग तरि तु प्रोक्तोऽयश दोऽय त्रिलिङ्गक ।
अयतेरप्ययेरेतेरीयतेश्च पचाद्यचि ।।२ ।।
अयतिस्तु पुमानुक्तश्च द्रे काल तथैव च ।
अयन निलये मार्गे सूर्योदग्दक्षिणागता ।।२ ८।।
स्या साव सरिकाद्येषु सत्याख्यक्रतुकर्मसु ।
एषा प्रयोगभद च गतिमात्रे च दृश्यते ।।२ ९।।
अयोऽगरुणि लोहे च पपटे मरिच च नप् ।
अयि प्रश्नानुनययोस्तथा सबोधनेपि च ।।३१ ।।

---

१ अम्लिष्टकोमलपदावलिमञ्जुलेन प्रत्यक्षरक्षरद म वसुधारसन ।
सव्य समस्तजन णंरसायनेन नाहारि कस्य हृदय हरिभाषितेन ॥
(अम्लिष्ट स्पष्टोच्चारित जीवगो) (भक्तिरस दक्षि १ २)
क्षु ध स्वान्तध्वान्त कृतम्लिष्टविरि धफाण्ट याद निम थमनस्तम
सत्ताविस्पष्टस्वरानायासमृशेषु पा

अयुत दशसाहस्रे क्लीब त्रिषु युतेतरे ।
अय क्रोधे विषादे च सभ्रमे स्मरणपि च ॥३११॥
अयोगो ना वियाग त्रिविं धुराश्लिष्टलोहगे ।
अयोमयस्त्वयस्का ते रत्ने त नाम्नि पुस्त्रियो ॥३१२॥
अर तु चरिते मघवदसत्त्वऽत्र नप्स्मृतम् ।
चक्रनमेस्तु विष्कम्भकाष्ठेऽर पुसि कीर्त्तित ॥३१३॥
अरणिर्वह्निम थपि ना मुकुलपनेपि च ।
यज्ञाग्निम थकाष्ठे तु पुस्त्रियोररणिर्मत ॥३१४॥
अथानिवाह्यक याया निस्पृहाया स्वत स्त्रियाम् ।
अरतिस्तु स्त्रिया क्रोधे चाऽसुखे त्रिस्तु नीरतो ॥३१५॥
अरत्नि पुस्त्रियोह स्ते सप्रकाष्ठतताङ्ग लौ ।
चतुर्विंशत्यङ्ग ले च माने कीले च कूप रे ॥३१६॥
अरर सोममङ्गे स्याद्यज्ञाङ्गऽग्नौ रणे पुन ।
पुल्लिङ्गक्लीबयोस्तद्व लोहलोहशलाकया ॥३१ ॥
अथारर्यरर चेति कवाटे स्त्रीनपुसके ।
आरायामरगस्त्र्येव शीघ्रे स्याद्व चलिङ्गकम् ॥३१८॥
अररुस्त्वसुरे द्वे च म थनेऽथायुधे नपि ।
अरविन्द जले प्रोक्तमम्बुजेपि नपुसकम् ॥३१९॥
अरालो यक्षधूपार्ययनिर्यासे पुस्यय तथा ।
नटाना हस्तविन्यासभदे भुग्ने तु मघवत् ॥३२ ॥
अतिप्रमाणकाये तु गजभेदे द्वयोरयम् ।
अरिर्ना खदिरे शत्रौ द्वे म र्येऽथ त्रिरीश्वरे ॥३२१॥
अरिष्टस्तु पुमान्निम्बे फेनिलाख्ये महीरुहे ।
लशुने दै यभेदे च कृष्णेन विनिपातिते ॥३२२॥
स्याद्देशब धने चाथ क्लीब मरणलाञ्छने ।
अप्यारण्यकयो साम्नो पवित्रे तक्रगुत्थयो ॥३२३॥
अशुभे च शुभे वर्णविकारेऽञ्जनसंनिभे ।
वर्णे निकारे मद्ये च सूतिगेहे स्त्रियां पुन ॥३२४॥

अरिष्टनेमिर्विष्णौ ना बहुव्रीहौ तु वाच्यवत् ।
अरिष्टा कटुकानागबलयोरस्त्रिया विदम् ॥३२५॥
तक्रौषधद्रवमिदोर्द्धे तु काके त्रिषु त्वयम् ।
अरुणा स्त्री विषायां च मञ्जिष्ठात्रिवृतोरपि ॥३२६॥
क्ली तु ताम्रे पुमास्तु स्या सूर्ये सूर्यस्य सारथौ ।
शशिजे चाप्युषसि च काण्डर्षिष्वपि केषुचित् ॥३२७॥
अव्यक्तरागवर्णे च सध्यारागे च लोहिते ।
कपिले चाथोक्तवणव सु त्रिष्वपि नीरवे ॥३२८॥
अरु धद्वाच्यवदरोधके स्यात्स्त्री त्वरू धती ।
वचाया च वसिष्ठस्य भार्यायामपि कीर्त्तिता ॥३२९॥
अरुल सलिलेपि स्या पोतेपि च नपुसकम् ।
अरुषस्तु पुमा सूर्ये वर्णेपि त्रिस्तु निष्क्रुधि ॥३२ ॥
रूपवत्यप्यथाश्वे द्वे अरुषीत्युषसि स्त्रियाम् ।
अरुष्कर पुमा भ लातके त्रिर्व्रणकारिणि ॥३३१॥
अरूषस्तु यवे त्रिस्तु रूढभिन्नेप्यरोहणे ।
अरेऽव्ययमसूयाया तथैवापाकृतावपि ॥३३२॥
अरोचकस्त्रिष्वरोचि तदिनात्यरुचौ मत ।
अक सूर्ये च ताम्रे च च द्रे चे द्रे च पावके ॥३३३॥
येष्ठे भ्रातरि वज्रेऽश्मे स्फटिके स्तुतिमन्त्रयो ।
अघ्नर्युक्रममदेकपर्णसज्ञ च गु मके ॥३३४॥
वसिष्ठजमदग्न्यादिसामभेदेषु केषुचित् ।
नपुसके त्वर्कपर्णगुल्मस्य फलपुष्पयो ॥३३५॥
अर्कपुष्प वकपुष्पे न स्त्री साम्नोर्द्वयोरपि ।
अर्गला चार्गल द्वारकवाटद्वयब धने ॥३३६॥
क्लीब तु द्वारपटले विदण्डे तु त्रिलिङ्गिका ।
अघ पुमा भवेन्मूल्ये तथा पूजाविधावपि ॥३३ ॥
अ र्य त्रिषु जलेऽर्घार्थेऽर्घार्हे च बहुमूल्यके ।
क्लीबमापाण्डुतिक्ते स्यान्मद्येऽर्घ्या तु स्त्रियां गवि ॥३३८॥

अर्चा तु प्रतिमायां स्त्री पूजायामपि कीर्त्तिता ।
अर्चिर्न ना भासि शस्त्र ज्वालायामपि कीर्त्तिता ॥३३९॥
अर्जकस्त्र्यजयितरि पुमान्सितकठिञ्जरे ।
अर्जुनस्तु पुमान्कार्त्तवीर्ये मध्यमपाण्डवे ॥३४ ॥
मातुरेकसुते शोक्त्ये यमेपि ककुभद्रुमे ।
क्ली वर्जुन तृण रूपे हेम्नि दृष्टिरुजान्तरे ॥३४१॥
अर्जुनी बाहुदा नद्यां कुट्टिन्यां सुरभावपि ।
रात्रावुषस्यथ स्यात्त्रिष्वग्रे शुक्लेपि चार्जुन ॥३४२॥
मयूरे वर्जुन स्त्रीपुंसयोरप प्रयुज्यते ।
अर्णश्छन्दस्यष्टसप्ततिस्वरे क्ली जलेपि च ॥३४३॥
अर्णवोऽब्धौ षण्णवतिस्वरेच्छन्दोन्तरेपि च ।
अर्त्तिर्ना ऋच्छतौ धातौ स्त्री धनुष्कोटिपीडयो ॥३४४॥
अर्थ फले धने शास्त्रे वस्तुमात्र प्रयोजने ।
हृदये साधने मोक्षे कायश्वर्यनिवृत्तिपु ॥३४५॥
वाच्ये हेतावभिप्राये याचने विषये तथा ।
अर्थवाद परार्थोक्तौ वेदांशे च विधीतरे ॥३४६॥
अर्थी ना याचके दासे व्यवहाराभियोक्तरि ।
अर्थ्यस्त्रिष्वनपेतेऽर्थाद्विद्वदात्मवतोरपि ॥३४ ॥
न्याय्ये कुकणारये तुर्यक्षभेदे द्वयोरयम् ।
शिलाजतुनि तु क्लीबमर्थ्यमित्यतदिष्यते ॥३४८॥
अर्दो गतौ याचनेऽथ वैराग्येर्दं नपुंसकम् ।
अर्दनं तु गतौ क्लीब याचनाहिंसयोर्न ना ॥३४९॥
अर्दित याचने गत्यां हिंसने वातजामये ।
त्रिलिङ्ग तु गते चैव हिंसिते याचिते तथा ॥३५ ॥
अर्दिति स्यात्पुमानग्नौ शब्दभेदे च याचने ।
अर्ध पुमान्स्यात्शकले समांशे तु नपुंसकम् ॥३५१॥
रूपकार्धेप्यर्धमेतत्क्लीब रूढित उच्यते ।
अर्धचन्द्र क्षुरप्रेषौ गलहस्तेर्धचन्द्रके ॥३५२॥

अधचन्द्रा लताभेदे मसूरविदलाह्वये।
अधजाह्नव्यधगङ्गाकावेर्यो परिकीर्त्तिता ॥३५३॥
अधपारावतश्चित्रकण्ठ तित्तिरिपक्षिणि।
अधसूचीति सू यर्धे चासने यत्र सहतौ ॥३५४॥
मुखा पाणितलावूर्ध्वक्षौ प्रदेशान्तरस्थितौ।
अर्धहस्ता पञ्चहस्तमानेनाधकरे नृनप् ॥३५५॥
अर्धेन्दु स्याद्तिप्रौढस्त्रीयो यङ्गुलियोजने।
अर्पिष बालवत्साया दुग्धे स्यादग्रमांसके ॥३५६॥
अर्पिषश्चार्पिषी चेति प्राहुर्द तावले द्वयो ।
अर्बुदो स्त्री मासकीलरोगे चाक्षिरुजान्तरे ॥३५ ॥
ना शैलभेदे क्लीकोटौ कोटीना दशकेपि वा।
अर्भोऽल्पके बालके च वा यवत् सम्प्रयुज्यते ॥३५८॥
अममस्त्रीस्थले ग्रामे नेत्रे रोगा तरेपि च।
अमक कथितो बाले मूर्खेपि च कृशेपि च ॥३५९॥
अर्यो महाशास्तरि ना द्वयोर्वैश्ये यदा वयम्।
वैश्यजातिस्त्रियामर्या स्यादर्याणी च सा तदा ॥३६ ॥
यदा तु वृत्ति पुयोगात्तदार्यी त्रिषु तु प्रभौ।
अवती कुम्भदास्या च वडवायामपि स्त्रियाम् ॥३६१॥
अर्वा ना त कुत्सितो त्रि पुसि वज्रे मुनावपि।
अर्शो दुर्नाम्नि च व्याधिमात्रे सा त नपुसकम् ॥३६ ॥
अशसा यशसानो द्वे विप्रेऽग्निमनसो पुमान्।
अर्शोघ्न सूरणे पुसि तक्र तु स्यान्नपुसकम् ॥३६३॥
अर्शोघ्नी मुसलीस्तम्बे स्त्र्यथ त्रिर्घातकेऽशस ।
अर्हो योग्ये त्रिरर्हा तु नृ स्त्रियोरहणे मता ॥३६४॥
अर्हस्तु क्षपण बुद्धे पुसि मान्योऽन्यलिङ्गक ।
अर्हन्त सुगते पुसि क्षपणेऽपि प्रयुज्यते ॥३६५॥
अल वृश्चिकपुच्छस्थकण्टके हरितालके।
अलका पू कुबेरस्यालका स्युश्चूर्णकुन्तला ॥३६६॥

अलङ्कारस्तु हारादावुपमादावलङ्कृता ।
अलम्भूषणपर्याप्तिवारणष्व न्यय स्मृतम् ॥३६७॥
तथा निरथकत्वपि प्रयु वपि प्रयु यत ।
अलम्बुस प्रहस्ते च छदने राक्षसा तर ॥३६८॥
अलबुसा तु मुण्डीर्या स्वर्गवाराङ्गनान्तरे ।
अलर्को गाथनृपतौ रोमारो च सिताकके ॥३६९॥
अलर्कं प्रसवे त्वस्य शाकमदेपि कीर्त्तितम् ।
द्वयोरलर्कोऽलकाति प्रयुक्त रोहिते शुनि ॥३७ ॥
अलसो न्वर उष्ट्रस्याङ्घ्रिरुग्भदे द्रुमदया ।
असाध्यजिह्वा रुग्भदेऽथालस्यवति वा यवत् ॥३७१॥
अलसा तु स्त्रिया हसपाद्यामेषा प्रयु यते ।
अलातमुल्मुके क्लीबमना त त्वभिधयवत् ॥३ ॥
अलि सुरापुष्पलिहो पु लिङ्ग परिकीर्त्तित ।
अलिङ्ग क्ली प्रधाने स्यात्सख्यानां त्रिविलिङ्गके ॥३ ३॥
अलि यली वृश्चिकेऽलौ ना राशा मेपताष्टमे ।
अलिन्दो भोजनस्थाने गृहाङ्गे प्रघणाह्वये ॥३७४॥
द्वयोरलिपको भृङ्गे कोकिले चापि हस्तिनि ।
अलिप्रिय पुमाश्चूते काकजम्बूकदम्बयो ॥३ ५॥
अलिनस्तु प्रियाया स्त्री त्रि प्रियालि यली प्रिये ।
द्वयोरलिमको भके पिकेपि भ्रमरेप च ॥३७६॥
क्लीब तु पद्मकिञ्जल्के मधूकेलिमक पुमान् ।
अलीक त्वनृतेऽपि स्याल्ललाटेप्यप्रियेपि नप् ॥३ ॥
अलुमोऽग्नौ नापित च तथा पुसि प्रसाधने ।
भग्नेदवकर पुस्यवकीर्णित्वेवचूर्णिते ॥३ ८॥
समार्जनीनिरस्तस्य तृणपास्वादिवस्तुन ।
राशावुल्कककटाभिर ये कीर्त्तितोऽवकरो बुधै ॥३ ९॥
अवकाऽम्बुतृणे चिश्चोटिकार ये शैवले तथा ।
वैवाहिकप्रतिसरग्र थौ च परिकीर्त्तिता ॥३८ ॥

अवकीर्णमवज्ञानेऽप्यवाकीर्णोऽपि वाच्यवत् ।
भवेदवक्रयो मूल्ये सूत्रनिर्दिष्टावक्रये ॥३८१॥
क्रयभदेऽप्यदत्तार्घाधिकमूल्ये च हाटके ।
स्त्री त्ववक्षेपणी घोटकुशाया क्ली तु भर्त्सने ॥३८२॥
अवखातस्तु खाते त्रिर्ना शूर्पारण्यजलाशये ।
अवगाथोऽवगथवद्रथयाने तथा पथि ॥३८३॥
स्यात्प्रातः सवनेऽप्यक्षसघातेऽपि नृलिङ्गकः ।
अवगाहो जलद्रोण्यां तलाम्ब्वाद्यवगाहने ॥३८४॥
निर्वादे क्ल्यवगीतं त्रिमुहुर्दृष्ट च गर्हिते ।
अवग्रहो वृष्टिरोधे प्रतिबन्धे गजालिके ॥३८५॥
अवग्रहणमित्येतत्प्रतिरोधेऽप्यनादरे ।
अवज्ञाऽनादरेऽपि स्यात्तथैवापह्नवे मता ॥३८६॥
अवटः स्यात्खिले गर्त्ते कूपे कुहकजीविनि ।
पक्षिपोते चतुर्विंशत्यङ्गुलेऽपि च मानके ॥३८७॥
कृकाटिकायामवटुः पिण्डारीति प्रकीर्त्तिता ।
अवतंसो स्त्रियामुक्तः कर्णपूरे च शेखरे ॥३८८॥
अथावतरणं भूतादिग्रहे वसनाञ्चले ।
प्रयुज्यतेऽवतीर्णो च शब्द एष नपुंसके ॥३८९॥
अवतारोवतरणे तीर्थे भूतादिके ग्रहे ।
भूतादिग्रहवस्त्राञ्चलाचनेष्ववतारणम् ॥३९ ॥
निवेशने गायिकानां न पुमानवतारणम् ।
अवदातः सिते पीते शुद्धे मुख्ये च वाच्यवत् ॥३९१॥
अवदातः सिते वर्णे पुंल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
अवदानं कर्मणि स्यादितिवृत्तेऽवखण्डने ॥३९२॥
अप्रधानेऽद्भुते कर्मण्यपि स्यादपदानवत् ।
ननाऽवदारणाभेदे क्ली खनित्रेऽवदारणम् ॥३९३॥
अवदाहस्तु दहनेऽथोशीरे स्यान्नपुंसकम् ।
अवद्यमपशब्दे च गर्ह्ये चाप्यभिधेयवत् ॥३९४॥

अवधिस्त्ववधाने स्यात् नीलिकाले विले पुमान् ।
अवध्यमवधार्हे स्यादनर्थकवचस्यपि ॥३९५॥

अवध्वस परित्यागे निन्दने चावचूर्णने ।
अवध्वस्त परित्यक्ते निन्दिते चूर्णिते त्रिपु ॥३९६॥

अवन रक्षणे तृप्तौ प्रीतौ याच्ञादिषु स्मृतम् ।
अवनिस्त्ववनीव स्यात्प्रियङग्वाञ्च क्षितावपि ॥३९७॥

अवन्तिर्ना राजभेदे नीवृद्भेदे तु भूम्नि च ।
स्त्रियां त्ववन्तिराजस्य स्यादवन्तीस्त्र्यपत्यके ॥३९ ॥

नगरेष्वुज्जयिन्यां चान्येष्टस्वसरि चेष्यते ।
अवपातस्तु हस्त्यर्थे गर्त्ते छन्ने तृणादिना ॥३९९॥

गर्त्तमात्रे विपतने प्रपातपि गिरे पुमान् ।
अथाऽव्यय इत्येष एकदेशाऽप्रधानयो ॥४ ॥

पृथग्भावे पृथग्भूते तथा पुंसि प्रयुज्यते ।
अवर त्र्यप्रशस्तेऽन्त्ये जङ्घान्ते तु गजस्य नपु ॥४ १॥

अवरोधस्तिरोधाने राजदारेषु तद्गृहे ।
तथैव स्वीकृतावेष पुल्लिङ्ग परिकीत्तित ॥४ २॥

अवरोहोऽवतरण पादपस्य लतोद्गमे ।
मूलादग्रे गतायां च लतायां किं च शाखिनाम् ॥४ ३॥

शाखाजातशिफायां च पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।
अवलग्नोऽस्त्रियां मध्ये त्रिषु स्याल्लग्नमात्रके ॥४ ४॥

अवलेपो भूषणे च लेपे गर्वे तिरस्कृतौ ।
निरीक्षिते त्रिलिङ्गो ना लोकनाथेऽवलोकित ॥४ ५॥

अवश्यमव्यय नित्ये प्रधाने च प्रकीर्त्तितम् ।
अवश्यायस्तु नीहारेप्यभिमानेपि पुस्ययम् ॥४ ६॥

अवष्टब्धस्त्रिर्विदूरेप्याक्रान्ते चावलम्बिते ।
अवष्टम्भ समालम्बे स्तम्भे स्तब्धौ च हेमनि ॥४ ७॥

पुमांस्तथैव प्रारम्भे स्तम्भादौ षस्तु नोचित ।
अवस क्ली भवेच्चापे ना पाथवाशनीयके ॥४ ८॥
भवेदवसर पुंसि प्रस्तावे वर्षणे क्षणे ।
उपलादौ मन्त्रभेदेप्यय शब्द प्रयुज्यते ॥४ ९॥
अवसा तु वसाहीने वाच्यवत्परिकीर्त्तिता ।
अवसानस्तु शेषेपि समाप्तौ निश्चयेपि च ॥४१ ॥
ऋद्ध ज्ञाते समाप्ते चावसित वाच्यवत्स्मृतम् ।
निश्चिते स्यादवसित समाप्त उषितेपि च ॥४११॥
अवस्कन्दो नगर्यादेरपहारे च सौप्तिके ।
विशेषवाचि भाषायामङ्गीकृत्य च कीर्त्तित ॥४१२॥
अवस्करस्तु विष्ठायां तथा गुह्यरहस्ययो ।
मलप्रक्षेपणस्थानेप्यय पु लिङ्ग इष्यते ॥४१३॥
अवस्कार पुमा गुह्ये वर्चस्केपि प्रकीर्त्तित ।
अवघातेऽवहनन मुसले हृदयेपि च ॥४१४॥
अवहार पुमांश्चौर्ये द्यूतयुद्धादिविश्रमे ।
निमन्त्रणोपनेतव्यद्रव्ये ग्राहाख्ययादसि ॥४१५॥
अवाच्य त्रिरगर्ह्ये नाऽवाच्यमप्यकथ्यके ।
अवि पुस्यवतौ सूर्ये शैलमूषिककम्बले ॥४१६॥
प्राकाराद्रिमरुद्धा सु स्त्री तु पुष्पवतीभुवो ।
अविद्धकर्णी पाठायां त्रित्वविद्धश्रुतौ भवेत् ॥४१ ॥
अविन पावकेऽध्वर्जौ विधाने वचिन मतम् ।
गुप्तौ चाप्यथ भासारव्यविहगे च मृगे द्वयो ॥४१८॥
अविनीतस्तूद्धते त्रिरविनीताभिसारिका ।
अविलम्बितमुच्च डे शीघ्रे च परिकीर्त्तितम् ॥४१९॥
अविषो नाऽम्बुधौ शैले द्वे तु दिव्यविषो विषा ।
अविषा निर्विषे त्रि स्यात्स्त्रीभूमावविषी मता ॥४२ ॥

---

१ अवष्ट भस्तु सौष्ठवम् वै

अविष्ठसे द्वयोरश्वे पुंल्लिङ्गस्त्वपहोतरि ।
अवीरा पतिपुत्राया स्त्रीसत्त्वराहते त्रिषु ॥४ १॥
अवेल पुस्यपालापे स्त्र्यवेलापूगचूर्णके ।
अन्यत्र चैव वेलाया वेलाहीने तु भद्यवत् ॥४ ॥
अव्यय स्यात्पङ्कजे पुंसि तथा रम्ये च नाविके ।
अव्यक्तस्तु पुमान्विष्णौ परमात्मनि शङ्करे ॥४ ३॥
क्ली तु प्रधाने सांख्याना त्रिस्त्वस्पष्ट च बालिशे ।
अव्यथ स्यादद्वयो सर्पे निर्व्यथ त्वभिधेयवत् ॥४ ४॥
पुमान्कुरवके स्त्री तु चारटी पथ्ययोर्भवेत् ।
सुखाध्यक्षी अव्यथिषा अव्यथिष्या निशाक्षिणी ॥४ ५॥
अव्ययोऽस्त्री स्वराद्यर्थेष्वीश्वरे च दशस्वपि ।
ज्ञान वैराग्यमैश्वर्यं तप सत्य धृति क्षमा ॥४ ६॥
स्रष्टृत्वमात्मसम्बोधो ह्यधिष्ठातृत्वमित्यपि ।
एतेषु त्रि तु यस्यास्ति नान्यथस्तत्र वस्तुनि ॥४ ॥
अशनं भोजनेपि स्यादोदनेपि नपुंसकम् ।
अशित्रोऽग्नौ पुमानुक्त क्लीरश्मिहविषोर्भवेत् ॥४ ८॥
अशिरोऽग्नौ पुमानुक्तो राक्षसे भास्करेपि च ।
अशोक पुंसि कङ्केलितरौ मौर्यनृपान्तरे ॥४ ९॥
अशोका कटुरोहिण्यामशोक पारदे मतम् ।
वीतशोकेत्यशोकोय भद्यवत्परिकीर्त्तित ॥४३ ॥
अश्नोऽभ्र भूधरे चैव पुंल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।
अश्मज त्वश्मजाते त्रि क्ली शिलाजतुनि स्मृतम् ॥४३१॥
ना सोमाभिषवग्राणि पाषाणेश्माऽम्बुदेपि च ।
अश्मन्तमशुभे चुल्यां क्षेत्रेप्यनवधौ मृतौ ॥४३ ॥
स्यादश्मन्तकमुद्धाने मल्लिकाच्छादनेपि च ।
अश्रिस्तु स्त्री मता कोट्यां धारायामपि कीर्त्तिता ॥४३३॥
अश्वो विष्ण्ववतारे ना पुंजातावश्वकन्दके ।
तुरङ्गे च द्वयोरश्वस्तथाऽश्वा चेति कीर्त्यते ॥४३४॥

भवेदश्वतरो वेसरके नागा तरेपि च ।
अश्वत्थ पिप्पलेऽश्विन्या स्या मुहूर्त्तान्तरेपि च ॥४३५॥
पौणमास्या त्वाश्वयुज्यामश्वत्था स्यात्स्त्रियामियम ।
अश्वयुक त्वश्विनी नक्षजाते स्यादभिधयवत् ॥४३६॥
अश्वारोहाऽश्वग धाम्या त्रिष्वश्ववाहके तथा ॥
अश्वी त्वश्ववति स्त्री स्याद्धनू राशौ तु पु स्ययम् ॥४३ ॥
दस्रयोश्चाश्विनी तु स्त्री नक्षत्रेऽश्वयुगाह्वये ।
अश्वीयमश्ववृन्दे स्यात्त्रिस्त्वश्वस्य हिते भवेत् ॥४३८॥
अश्वीया तु स्त्रियामश्वलाञ्छने परिकीर्त्तिता ।
अषाढाऽब्दैवते तद्भनक्षत्रे वैश्वदेवके ॥४३९॥
तद्युक्ते कालसामान्ये ताम्या यज्ञद्विज मनाम् ।
अग्नि येष्टकाभेदप्यथ स्यादुभयलिङ्गकम ॥४४ ॥
असोढरि तथाषाढा युक्तकालजवस्तुनि ।
अष्टका स्त्री मागशीर्ष्यो कृष्णाष्टम्या परत्र या ॥४४१॥
तिस्रस्तासु च कत्त ये चासुश्राद्धेप्यसञ्ज्ञके ।
अष्टावयवके क्लीबमथाष्टावयवस्य च ॥४४२॥
सद्वस्याध्येतरि न्यष्टावृत्तिकाध्ययनस्य च ।
अष्टमङ्गलश दो द्वे घोटमदऽस्य लक्षणम ॥४४३॥
पुच्छोर खुरकेशास्यं सितघोंटोष्टमङ्गल ।
क्लीब नक्ष्मगमरयाते पूणकुम्भादिके भवेत् ॥४४४॥
द्विगौ तु प्राप्तलिङ्ग स्या समास इति निणय ।
अष्टमी तु तिथौ रुद्रस्याष्टानां पूरणे त्रिषु ॥४४५॥
अष्टापदोऽस्त्रीकनके शारीपाफलकेपि च ।
अष्टापदी च द्रम ल्या द्वयोस्तु शरभे कपौ ॥४४६॥
स्त्री त्वष्ठी स्या फलस्यास्थ्नि जानुकूपरकास्थ्नि च ।
अस सांख्यप्रधाने क्ली त्रिस्तु सत्तातियोगिनि ॥४४७॥
पुंश्चल्यां त्वसतीत्येषा स्त्रीलिङ्गे सम्प्रयुज्यते ।
असनो ना पीतसालवृक्षे क्ली वसन मतम ॥४४८॥

क्षेपणेऽपि गता दीप्ता तथैव ग्रहणेपि च ।
असपृक्तस्तु रहसि श्लिष्टभिन्ने पुनस्त्रिपु ॥४८ ॥
असिक्न्यत पुम्प्रेष्या नदीभद्रास्त्रिपु स्त्रियाम ।
असित कृष्णपक्ष स्यादक्ष्वाके च नृपान्तर ॥४५ ॥
मध्वासवे शनौ कृष्णऽथ त्रि तद्वयसयते ।
असु पुमान्स्या प्रज्ञायामसवो भूम्नि जीविते ॥४५८॥
असुरस्तु पुमान्मघे वास्तु वान्तर न य ।
कोष्ठपङ्क्तौ पश्चिमाया कोष्ठे पष्ठ हि दक्षिणात ॥४५ ॥
विडारयलवणे चैव कृत्रिमाद्यपराभिधे ।
द्व तु दये गज च क्ली पुन कास्यारयलोहके ॥४५३॥
असुरा रजनीराख्या स्त्रीलिङ्गे पारकीर्त्तिता ।
असृक स्याद्योगभेदे ना रक्त तु स्यान्नपुसकम ॥४५४॥
अस्त न्यवसिते क्षिप्रेऽप्यस्ताद्रौ ना ग्रहे तु नप् ।
अस्तु स्यादभ्यनुज्ञानेऽप्यसूयापीडयोरपि ॥४५५॥
प्रतिक्षेपे प्रशसायां प्रकर्षे लक्षणेऽपि च ।
असप्रत्यथ एतच्चाव्यय सपरिकीर्त्तितम ॥४५६॥
अस्त्र प्रहरण चापे करवाले नपुसकम् ।
अस्थान तु त्रिषु प्रोक्त स्थानहीने जलाश्रये ॥४५ ॥
अगाधे शून्यमूले तु सैन्ये स्थानात्परे च नप् ।
अस्थिमास्त्र्यस्थिसयुक्ते नाऽस्थिसघातवीरुधि ॥४५८॥
अस्थिसहनन क्ल्यस्थिसनाहे ना लतान्तरे ।
अस्रोऽङ्कुशे कचे कोणे पुसि क्ली रुधिरेऽश्रुणि ॥४५९॥
अस्रपा तु जलौकायां डाकिन्यां राक्षसे तु ना ।
अह्न प्रशसाक्षिपयोर्नियोगे च विनिग्रहे ॥४६ ॥
अहत वान्यवदर्हिसिते चाभिनवे पटौ ।
अहिंसायां पुन क्लीबमहत सप्रकीर्त्तितम ॥४६१॥
अहतिर्मांसदानव्याधिषु स्त्री नाऽहिधातुके ।
अहल्या तु सरोभेदे भार्यायां गौतमस्य च ॥४६२॥

न हन्यत इति व्युत्पत्त्याऽहल्या स्यादुषस्यपि ।
अहहेत्यद्भुते खेदे परिक्लेशप्रकर्षयो ॥४६३॥
तथा सबोधनार्थेऽपि प्रयुक्तमिदमव्ययम ।
अहार्य पुसि शैले स्यादहृत्त-ये पुनस्त्रिषु ॥४६४॥
अहिजिह्वा हरौ शक्रे त्रिलिङ्गस्त्वहिजतरि ।
अहितो ना भवेच्छत्रावपथ्ये त्वभिधेयवत् ॥४६५॥
अहिद्विड गरुडे पुसि शक्रे च नकुले पुन ।
द्व मयूरे त्रिषु पुनरहद्वेषस्य कारिणि ॥४६६॥
भवेदहिभय भीतौ स्वपक्षजभयेऽपि नप् ।
अहिभुग्गरुडेऽथ द्वे मयूरे शहिभोजिान ॥४६ ॥
यज्ञेष्वहीन पुलिङ्ग प्राक त्रयोदशरात्रत ।
द्विरात्रादप्यथ त्रि स्याद यूनेऽहीश्वरे तथा ॥४६८॥
अह्नला स्यादस्खलने भल्लातक्यामपि स्त्रियाम ।
अहो प्रश्ने वितर्के च परिकीर्त्तितमव्ययम् ॥४६९॥
अहो बतानुकम्पायां खेदे सबोधने तथा ॥४६९$_{\text{ह}}$॥

आ

आ शिवे स्यात्पुमानातु स्त्रिया लक्ष्म्या प्रकीर्त्तिता ॥४ ॥
आ प्रगृह्य स्मृतौ वाक्येऽनुकम्पाया समुच्चये ।
आकर श्रेष्ठनिवहोत्पत्तिस्थानेषु कथ्यते ॥४७१॥
आकष शारिफलके घते च द्यूतपाशके ।
आकृष्टाविन्द्रिये पाश्वे कोदण्डाभ्यासवस्तुनि ॥४ २॥
ये सप्तभागा करिण ऊध्वदशे वराङ्कुले ।
द्वितीयेप्याधतस्तेषामाकर्षेऽपि नृपान्तरे ॥४ ३॥
आकर्षकस्त्रिष्वाकषकुशले चुम्बके तु ना ।
बृहत्कथाप्रसिद्धे वाकर्षिका नगरान्तरे ॥४७४॥
अनाप्याकलना बन्धे सख्यानज्ञानयोरपि ।
शब्दने तु समूहे च क्लीबमाकलन मतम् ॥४ ५॥

आक प क पने पुसि वेपे च परिकीत्तित ।
आक पकस्तमोमोहग्र थावुत्कलिकामुदो ॥४७६॥
स्यादाक पनमाकाङ्क्षा परिसरयानब धने ।
आकाङ्क्षा वभिलापेऽपि स्त्रीलिङ्ग परिकीत्तिता ॥४७ ॥
प्रतीतिपर्यवसिते विरहेपि तथष्यते ।
आकार इङ्गिताकृत्योराह्वानात्मविकारयो ॥४ ८॥
आवर्णेपि पुमानेष आकार परिकीत्तित ।
आकालिकी स्त्रियामेषा विद्युदर्थे मताऽथ च ॥४ ९॥
अह्नो वा रजनेर्वापि भागमारभ्य कचन ।
आ तस्मात्परतो भागाद्भवेऽकालभवे त्रिपु ॥४८ ॥
आकृतिस्त्री शरीरे स्यादाकार यक्तिजातिपु ।
अष्टाशीत्यक्षरछन्दोभदे च पुरुपान्तरे ॥४८१॥
आक्रन्दो रुदिताह्वानारावेषु नृपतौ प्रभौ ।
मित्रे दारुणयुद्ध च त्रातर्यपि पुमान्मत ॥४८२॥
आक्रीड क्रीडने पुसि कुरुत्थामसुतेपि च ।
अस्त्रिया वयमाक्रीड क्रीडोद्याने प्रकीर्त्तित ॥४८३॥
आक्षारितस्त्रिलिङ्गोऽयमनिशस्ते प्रकीर्त्तित ।
विवादेष्वभियुक्तेऽपि तथैवास्त्रावितेपि च ॥४८४॥
आक्षिक स्यात्पुमा व्याधौ त्रिलिङ्गस्वक्षदेविनि ।
आक्षेपो भ सना नि दा तथा काषरग तरे ॥४८५॥
काव्यालङ्कारभेदेऽध्याहारे वर्णगुणान्तरे ।
आक्षेपकोऽनिलव्याधौ याधौ नि दाकरेपि च ॥४८६॥
द्वयोस्त्वाखनिकश्चौरसूकराम्बुखगाखुषु ।
तटाककारे तु त्रिष्वाखनिकी परिकीत्तिता ॥४८ ॥
आखुर्मूषिकमात्रेपि सूकरेपि द्वयोर्मत ।
तथा मूषिकजातेश्च भेदेपि क्रमसञ्ज्ञके ॥४८८॥

---

१ आकालिकेप्सा (आकालिके विप्रकृष्टकालभव स्वर्गादि साय I t)

आख्यातं वाच्यवत्प्रोक्तोऽथ तिङन्ते नपुंसकम् ।
आख्यानं तु कथायां च वचनेऽपि प्रकीर्त्तितम् ॥४८९॥
आख्यानं क्ली वृत्तभेदे क्लीबं तु स्यात्कथानके ।
आगोऽपराधे पापेऽपि रहस्येऽपि नपुंसकम् ॥४९०॥
पुंस्याग्निमारुतोऽगस्त्यमुनौ त्र्यग्नामरुग्घुजि ।
आग्नीध्र ऋत्विग्भेदे स्यादग्निधिष्ण्यन्तरेपि नप् ॥४९१॥
अग्निकार्ये तथाग्नीध्री स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ।
आग्नेयः पुंस्यगस्त्यर्षौ द्वापराख्ययुगेपि च ॥४९२॥
संवत्सरे च क्लीबं तु रुधिरेऽप्युत्तरायणे ।
दशाहकार्यश्राद्धे च त्रेतायां च युगे स्त्रियाम् ॥४९३॥
आग्नेयी भद्यवस्त्वग्नियोगि यषा प्रकीर्त्तिता ।
आघाटः सीम्नियानेऽपामार्गे वाद्यान्तरे घटे ॥४९४॥
आघातस्ताडने घाते वधस्थाने पुमान्मतः ।
आघारणं स्रुवे पुंसि न तु ना क्षारणं मतः ॥४९५॥
आघ्रातं शिङ्घिते क्रान्ते क्लीभावे त्रि तु कर्मणि ।
आङ् सीमायामभिव्याप्तौ क्रियायोगेषदर्थयोः ॥४९६॥
आचामः ओदनस्य स्यान्निस्रावे मासराह्वये ।
तथाचातिक्रियायां च पुंल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥४९७॥
आचारः पुंसि चारित्रेऽथाचारा स्त्रीहरेर्भवेत् ।
नव याः शक्तयस्तासामेकस्यामिति सूरयः ॥४९८॥
आचार्य उपनीत्यादिमन्त्रव्याख्याकृतौ पुमान् ।
व्याख्याता या स्वयमाचार्या चार्यान्याचार्ययोषिति ॥४९९॥
आचितं शकटोन्मेये पलानामयुते द्वये ।
वाच्यवन्निश्चिते छन्ने सगृहीतेऽथ नप्स्मृतम् ॥५००॥
तुलाविंशतिरूपाणां भाराणां दशके बुधैः ।
आच्छादनं सपिधाने वस्त्रेपप्तृतिमात्रके ॥५०१॥
स्यादाच्छुरितकं हासनखराघातभेदयोः ।
आजिः स्त्रियां क्वचित्पुंसि युद्धे सममहीतले ॥५०२॥

आजीरस्तु क्षपणके जीनिकायां च कीर्त्तित ।
आज्य श्रीवष्टनिर्यासे घृते युद्धे नपुसकम् ॥५ ३॥
पलारयोन्मानभदेऽपि स्तोत्रेषु च चतुष्त्रपि ।
स्थुबर्हिष्पवमानाद्या यूष्णा यष्परकर्मणाम् ॥५ ४॥
आज्ञा तु स्त्री महापादे शासने लग्नराशित ।
राशौ च दशमे वेस्याविशपपि महीपते ॥५ ५॥
यस्याज्ञागणिकेत्यारयाऽऽज्ञी तु स्यार यज्ञयोगिनि ।
न्याञ्जनमञ्जनसम्बधिन्यरत्नौ त्वञ्जने पुमान् ॥५ ६॥
तथा सप्तदशारत्ने यूपस्याद्या चतुथके ।
आडम्बरोऽस्त्री सरम्भे गजगर्जिततूर्ययो ॥५   ॥
युद्धवादिमनिर्घोष आभोगक्रोधयो पुमान् ।
आढकोऽस्त्री चतुष्प्रस्थ तुवर्यामाढकी मता ॥५ ८॥
आणि स्त्रीपुसयोयुद्ध रथाद्यक्षाग्रकीलके ।
जङ्घामर्मणि नि श्रे या नि श्रणिद्वारि चो यते ॥५ ९॥
आतङ्को रोगस तापशङ्कासु मुरजध्वनौ ।
आतञ्चन प्रतीवापजवनाप्यायनेपु नप् ॥५१ ॥
आतति स्याद धकारे विस्तारे पथि च स्मृता ।
आतपण प्रीणने स्यान्मङ्गलाऽऽलेपनेपि च ॥५११॥
आतिथ्यो नाऽतिथावुक्तो तिथ्यर्थे तु त्रिलिङ्गक ।
आत्मज पुसि कामेऽप्यात्मजमुक्त मनोसुजो ॥५१२॥
द्वे त्वपत्ये त्रिषु त्वेष स्वस्माज्जाते प्रकीर्त्तित ।
आत्माकच द्रवाताग्निजीवेषु परमात्मनि ॥५१३॥
देहे यत्ने धृतौ कीर्त्तौ बुद्धौ मनसि च श्रुते ।
धर्मे स्वभावे पुत्रेऽर्थे परस्य प्रतियोगिनि ॥५१४॥
आत्मनीन सुते स्याले द्वयोस्त्रिष्वात्मनो हिते ।
वि,षके प्राणधारे वंशगस्त्वाहदूषके ॥५१५॥

---

१ आढकोऽस्त्री चतु प्रस्थपरिमाणे प्रयुज्यते ।
आढकी तुवरीसञ्ज्ञाख्ये स्त्री परिकीर्त्तिता ॥

आ मभूर्मन्मथे चैव विरिञ्चेपि पुमान्मत ।
आत्मयोनि पुमा कामे शिवे ब्रह्मणि मारुते ॥५१६॥
आत्मवीर प्राणवति श्यालक्त्र विदूषक ।
आत्माश्यात्माशिनी मत्स्ये त्रि तु स्यादात्मभक्षिणि ॥५१ ॥
आत्मीयस्तु निजेऽपि स्या मित्रे चाप्यभिधेयवत् ।
आत्रेयी ऋतुम या च नदीभदे च कीर्त्तिता ॥५१८॥
क्ली तु सामविशेषे स्याद्द्वयोर वत्ररप यके ।
अबहु वेव बहुषु नत्रयाऽप यवाचिन ॥५१९॥
आथर्वणस्समूहेऽथवणामाम्नाय र्मयो ।
तेषां शा तिगृहेऽपि स्या सामभदेप्यथवणाम् ॥५२ ॥
शना देरीरिति ह्यस्यामृचि दृष्टे नपुसकम् ।
वा यलिङ्गे तु सम्ब धिमात्रेऽपि स्यादथवण ॥५ १॥
आदर्शा दपणे टीकाप्रतिपुस्तकयोरपि ।
आदानमश्वालकारे ग्रहणे चोत्तरायणे ॥५ २॥
आदि योऽर्केप्युपे द्रेऽथ द्वयार्देवेऽपि चादिते ।
अप यआदि यस्य त्रि वा या ऽऽदित्ययोगिनि ॥५२३॥
आदिष्टमादेशिते त्रिराज्ञप्तोच्छिष्टयोस्तु नप ।
आदीनव पुमा दोषे परिक्लेशदुर तयो ॥५२४॥
आदृत सादरेऽपि स्यादर्चितेप्यभिधेयवत् ।
आदेष्टाऽदशके त्रि स्याम्भाऽध्वरव्रतिनि स्मृत ॥५२५॥
आद्या स्त्रियां शक्तिदे यां याद्य पूत्रप्रधानयो ।
अदनीये च पु लिङ्गस्त्याद्यो वेधसि कीर्त्तित ॥५२६॥
आधान तु विधाने स्या त्रेताग्न्याधान एव च ।
आधार आलवालेऽम्बुब धेऽधिकरणपि च ॥५२ ॥
आधिर्मानसपीडाया व्यसने ब धकेपि च ।
प्र याशायामधिष्ठाने पु लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥५२८॥
आधेयमग्न्याधाने त्रिस्त्वाधारस्यनिधेययो ।
आध्मात शा दते दग्धे त्रिषु वातरुग तरे ॥५२९॥

आबद्धो दृढबन्धे स्यात्प्रेमालङ्कारयोक्त्रयो ।
आबन्धस्तु पुमान्योक्त्रे बन्धने च प्रकीर्त्तित ॥५४४॥
आभील कष्टरजसोस्त्रि तु तद्वति भीषणे ।
आभोगो वारुणच्छत्रे परिपूर्णत्वयत्नयो ॥५४५॥
आभ्यन्तर तु त्रिष्वभ्यन्तरजादावथो नपि ।
रसभावाङ्गहाराद्यैर्नर्त्तने रूपकाश्रये ॥५४६॥
आमन्यय मत ज्ञान निश्चये स्मरण तथा ।
आमो रुक्तद्भिदो पुसि स्यादपक्वे यलिङ्गक ॥५४ ॥
आमन्त्रणामन्त्रण चाह्वानेऽनुज्ञापनेऽपि च ।
कामचाराभ्यनुज्ञानेऽपीद द्वयमुदीरितम् ॥५४८॥
आमन्त्रितस्त्वनुज्ञात त्रिरनुज्ञापितेऽपि च ।
सम्बोधनविभक्तौ तु भवेदामन्त्रिता न ना ॥५४९॥
आमन्त्रित पुन क्लीब स्यादामन्त्रणकर्मणि ।
आमिष त्वस्त्रिया मासे सभोगे भोग्यवस्तुनि ॥५५ ॥
उत्कोचेऽथ स्त्रियां मास्याऽऽरये गन्धद्रव्य आमिषी ।
आमोदस्तु पुमान्हर्षेऽतिनिर्हारिणि चोच्यते ॥५५१॥
विमर्दोत्थ परिमले गन्धे जनमनोहरे ।
आम्नाय उपदेशेऽपि सम्प्रदायेपि कीर्त्तित ॥५५२॥
पाठाभ्यासे च वेदे च पुंलिङ्ग सम्प्रयुज्यते ।
आय पुसि धनोत्पत्तौ स्वामिभागे तथागतौ ॥५५३॥
आगतौ च तथा राशौ लग्नादेकादशे मत ।
अयसम्बन्धिनी त्वायी त्रिलिङ्गा परिकीर्त्तिता ॥५५४॥
त्रिरायत स्यादाकृष्टे दीर्घवस्तुन्यथायतौ ।
क्लीबमाकर्णकर्षे च शराकर्षेऽङ्गुलाधिके ॥५५५॥
आयतस्तु पुमान्कश्चिच्चत्वारिंशत्वाचष्टे ब्राह्मणे द्वयो ।
भवेदायतन देवालये गेहे च तोरणे ॥५५६॥
शरण्ये स्थानमात्रे च लिङ्ग चास्य नपुसकम् ।
आयतिर्दीर्घतायां स्त्री प्रभावागामिकालयो ॥५५ ।

आयत्तिस्तु स्त्रिया स्नेहे वशित्वे वामवे बले ।
आयस त्वयसि क्लीबमय सम्बन्धिनि त्रिपु ॥५५८॥
आयस्त कुपिते क्षिप्ते क्लेशते तनिते हते ।
आयान वश्वभूपायामागतौ च प्रकीर्त्तितम् ॥५५९॥
आयाम इति शब्दोऽय पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।
दैर्घ्ये रज्जुपटादीनाममितश्च विक्षण ॥५६ ॥
आयासस्तु प्रयत्नेऽपि क्लेशेऽपि परिकीर्त्तित ।
आयुशब्दो मनुष्ये द्वे शकटे तु पुमानयम् ॥५६१॥
स्यात्पुरुरवउवश्यो पुराणप्रथिते सुते ।
आयुध वारिण क्लीब शस्त्रे त्वायुधमस्त्रियाम् ॥५६ ॥
आयुर्नपुसक सात्त धने वत्सरनीरयो ।
जीविते विश्वतो दानमित्यारण्यकसामनि ॥५६३ ॥
तथा जीवितकालेऽपि क्रतुमेदेऽपि पुनपो ।
आयुष्मान्योगभेदे ना वाच्यवच्चिरजीविनि ॥५६४॥
आयोगो व्यापृतौ बोधे गन्धमाल्याद्युपाहृतौ ।
आयोगवो द्वे वैश्यायां शूद्राज्जाते निषादत ॥५६५॥
शूद्रायामपि जातेऽथ त्रिष्वयोमयपत्त्रिण ।
सम्बन्धिन्यायोगवश्चायोगव्यायोगव तथा ॥५६६॥
आयोधन वधे युद्धे नपुसकमुदाहृतम् ।
आरस्त्वङ्गारके गत्यामागतौ च शनैश्चरे ॥५६७॥
आरा चर्मप्रभेदिन्यामथार पित्तले नृ नप् ।
अरसम्बन्धिनि त्वारमारश्चारी च वाच्यवत् ॥५६८॥
आरक्षो गजकुम्भाध प्रदेशे चापि रक्षिणि ।
आरट्टा देशभेदे पु भूम्न्यारट्टस्तु तद्भवे ॥५६९॥
आरट्टी च द्वयोरुक्तौ विशेषात्तज्जघोटके ।
आरम्भस्तु त्वरायामप्युद्यमे वधदर्पयो ॥५७ ॥
उपक्रमे च निर्माणे पुँल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।
आराग्र स्यादिषोरग्रेऽप्यारायाश्चाग्रभागके ॥५७१॥

आलिङ्ग्य पटहे मध्यम स्त्रिस्त्वालिङ्गनीयकः ।
आलीढ स्थितिभेदे ध्वन्विना स्यात्स्थीयते यदा ॥५ ॥
वाममाकुञ्च्य चरण दक्षिण प्रतत ग्रत ।
क्लीवमास्वादने चैतत्त्रिपु त्वास्वादित भवेत् ॥५८७॥
आलु श्लेष्मातक श्लष्मण्यपि पुसि प्रयुज्यत ।
नपुसक भलके च मूले चाप्यथ नप्स्त्रिया ॥५ ८॥
चक्रोष्ट-सज्ञके कन्दे ककया तु स्त्रियामियम् ।
आल स्त्रीटिट्टिभ योनिव्याधावपि वनस्पता ॥५८९॥
आलेप पुनरालिप्तावनुलपनवस्तुनि ।
आलोकस्तु नृलिङ्ग स्यादुद्योते दर्शने तथा ॥५९ ॥
आवन्त्योऽवन्तिराटपुत्रे मर्यजात्य तर पुन ।
विप्रपूर्वकविप्रस्त्रीजाते व्रात्याद्द्वयाभवेत् ॥५९१॥
आवर्त्तोऽम्भोभ्रमे रोमप्रभृतेर्वलिते चये ।
आवर्त्तनायामावृत्ता चिन्तने च पुमान्मत ॥५९ ॥
अथावर्त्तनमावृत्तौ नपुसकमुदाहृतम् ।
आवर्त्तना स्यादभ्यासे सूत्रस्य वलने स्त्रियाम् ॥५९३॥
आवसथ्यस्त्वावसथ्योऽप्यग्नौ चाहवनीयत ॥
प्राग्देशस्थे प्रयुक्तोऽसौ पुलिङ्गे शब्दवेदिभि ॥५९४॥
आवाप आलवाले च प्रक्षेपे न्यसने तथा ॥
परिक्षेपे च वपने भाण्डे चापि पुमान्मत ॥५९५॥
आवापक पारिहार्ये स्यादावसरि तु त्रिषु ।
आविक त्र्यविवियुक्ते क्लीत्वविरोमजकम्बले ॥५९६॥
आविद्ध कुटिले क्षिप्ते वाच्यवच्च पराहते ।
आविल कलुषेऽपि स्याद्वा यवच्चाप्यनुज्ज्वले ॥५९७॥
आवृत्स्त्रियामावृ तथा यागादिकर्मणाम् ।
कल्पे च परिपाट्यां च साम्नो गायत्रसाज्ञिन ॥५९८॥

---

१ आवर्तकालको पु सि ताल्द्वरश्च जलभ्रम । हरविजये अभिधाधि ।

द्वितीयपादगीत्या च तृतीयार्चिकपर्वणो ।
आवेशन शिल्पिशाले भूतावेशप्रवेशयो ॥५९९॥
आवेष्टको वष्टके त्रिर्वाटे पुल्लिङ्ग उच्यते ।
समीपेऽप्यथ भुक्तौ च व्याप्तावाश पुमान्मत ॥६ ॥
आशङ्का तु भये सम्भावनायामपि च स्त्रियाम् ।
आशयस्तु पुमान्स्थानेऽभिप्रायाधारयोरपि ॥६ १॥
कोष्ठागारे जलस्थाने वासनायां च चेतसि ।
विभव पनसे सघेऽथ त्रि कृपणजीर्णयो ॥६ २॥
आशरो राक्षसे द्वे ना त्वग्नौ ञ्यशरयोगिनि ।
आशा स्त्री दीर्घतृष्णाया दिग्यवान्तरदिश्यपि ॥६ ३॥
आशाबन्ध समाश्वासे तथा मकटजालके ।
त्रिराशिन भवस्तत्र करणे नौदनादिना ॥६ ४॥
येनाशितो भवेद्भावे वाशितस्याश्रिया मत ।
आशिरस्तु पुमान्वह्नौ विष्णो सूर्ये च भोजने ॥६ ५॥
तथा क्षीरविकारे स्यादथ बह्वाशिनि त्रिषु ।
आशीरिच्छा हिताशसा सपदष्ट्रास्वपि स्त्रियाम् ॥६ ६॥
आशु पाटलसज्ञे ना व्रीहिभदे दिवाकरे ।
अलकारसुवर्णे तु क्ली भृङ्गीकनकाह्वये ॥६ ॥
अस न्वगामिचच्छीघ्रेऽव्यय सत्त्वे पुनस्त्रिषु ।
आशुराश्वीति चाप्यश्वे पुस्त्रियो परिकीर्त्तितम् ॥६ ८॥
आशुशुक्षणिराख्यात पुमान्वह्नौ रवावपि ।
आशौचनि पुमानग्नौ चन्द्रऽपि परिकीत्तित ॥६ ९॥
आश्रमोऽस्त्री मुनिवने ब्रह्मचर्यादिके मठे ।
आश्रयाश पुमान्वह्नौ त्रिषु चाश्रयनाशके ॥६१ ॥
आश्रवोऽङ्गीकृतौ क्लेशे [पुसि] त्रि तु स्याद्वचनस्थिते ।
आश्राणा स्त्री यवाग्वा स्यात्पक्वे त्वन्यत्र मद्यवत् ॥६११॥
क्षीराच हविषश्चाथाश्रृत क्षीरे हविष्यपि ।
आश्लेषासर्पभे स्त्री स्यादाश्लेषस्तु पुमानयम् ॥६१२॥

रसारव्यधातौ शारीरं स्त्रीणा चालिङ्गने मत ।
स्त्रियामाश्वयुजी पौर्णमासी भदेऽश्वयुग्युते ॥६१३॥
ना तु मास्याश्विने त्रिस्तु जात अश्विन्याख्यकालके ।
आश्वास आख्यायिकांश आशुक्षेपे च नि गम ॥६१४॥
आश्विनो मास्याश्वयुजे क्ली तु शास्त्रा तरे क्रतौ ।
सम्बन्धिनि त्वश्विनोश्चाश्विन्याश्च त्रिषु कीर्त्यते ॥६१५॥
आश्विनी स्त्रीष्टकासु स्यादग्निचित्यगतासु च ।
अश्विनीनक्षत्र क्ते तथा स्या पूर्णिमान्तरे ॥६१६॥
आषाढ शुचिमासेऽपि व्रतिदण्डे नगान्तरे ।
प्रलये पूर्णिमाया वाषाढाऽऽषाढक्ष भा यसा ॥ १७॥
आष्ट्र नपुसके प्रोक्तमाकाशे किरणेऽपि च ।
आस्स्मृतौ कोपस तापावाकृतिष्वपि चाव्ययम् ॥६१८॥
आस स्यात्क्षेपणे चापे चेक्षुपक्षिभिदो पुमान् ।
कैवर्तीमुस्तकाख्ये तु स्या ास मुस्तका तर ॥६१९॥
आसक्तम धकारे क्ली त्रि यास जनकर्मणि ।
आसत्तिस्तु स्त्रियां लाभे सानिध्ये सगमेपि च ॥६२ ॥
आसन गात्रविन्यासभेदे पद्मासनादिके ।
यात्रानिवृत्तौ पीठ च गजस्क धे नपुसकम् ॥६२१॥
आसना चासन चेति क्रियायामास्तितो न ना ।
आसनी विपणौ स्त्री स्यादासन पुसि जीरके ॥६२२॥
आसन्दस्तु पुमान्विष्णावासन्दी वेत्रनिर्मिते ।
स्त्रियां स्यादासने कैश्चिदुक्तैषाऽऽसनमात्रके ॥६२३॥
आसत्रो मद्यभेदेऽप्यपक्वेक्षुरससाधिते ।
आसुत्याख्ये तथा मद्यस धाने पूगपादपे ॥६२४॥
आसारी स्त्री स्थले सार्थे त्वासा श्चण्डवर्षणे ।
गाढां सुहृद्बले सैन्यप्रसरे प्रसृतावपि ॥६२५॥
त्रिगासुतीबल कल्या[1] पाले ना सोमयाजिनि ।
आस्कन्दन तिरस्कारे रणे सशोषणेपि च ॥६२६॥

---

१ कल्या पा श्री ।

स्यादास्तरणमास्तीर्य्ये कुशे चास्तीणवस्तुनि ।
आस्था त्वालम्बनास्थानयत्नापेक्षास्विय स्त्रियाम् ॥६२ ॥
प्रतिज्ञाया च तात्पर्ये गोष्ठ्या चापि प्रयुज्यते ।
आस्थायना प्रतिज्ञाया सदस्याक्रमणे तु नप् ॥६२८॥
आस्पद तु भवेत्कृत्ये स्थाने चापि नपुंसकम् ।
आस्फोटनी वेधन्या स्त्र्यास्फोट वास्फोटना न ना ॥६२९॥
आस्फोतो नाऽर्कपर्णेऽपि पलाशे कोविदारके ।
आस्फोता गिरिकर्ण्यां च वनमल्ल्यामपि स्त्रियाम् ॥६३ ॥
आस्या स्यादासनायां स्त्री मुखे त्वास्य विलेऽस्य च ।
त्रि तु तद्भवतत्साधुतद्धितक्षेप्यवस्तुषु ॥६३१॥
आस्यप्रिया निष्पावास्यधान्ये त्रि तु मुखप्रिये ।
आस्र क्ली रुधिरे वाष्पे कचे ना त्र्यस्रयोगिनि ॥६३२॥
आह क्षेपेऽतियोगे च परिकीर्त्तितमव्ययम् ।
आहतस्त्वानके क्ली तु वस्त्रयो प्रनननूत्नयो ॥६३३॥
मृषार्थवाक्ये तु हते गुणिते ताडिते त्रिषु ।
आहतिस्स्त्री हतौ यज्वस्तुगासादनकर्मणि ॥६३४॥
आहार ओदनेपि स्यादानीतौ भोजनेऽपि च ।
आहार्यमाहर्तव्ये यभिनेये भूषणादिभि ॥६३५॥
आहो धिगर्थे शोके च करुणार्थविषादयो ।
सबोधने प्रशसाया विस्मये पादपूरणे ॥६३६॥
अस्त्रियामाह्निको ग्रन्थाऽवच्छेदे भेधव पुन ।
अह्नानिर्वर्तनीयादौ क्लीब स्यान्नैत्यकेऽशने ॥६३ ॥
आह्ला स्त्री नाम्नि कण्ठे च कथायामपि कीर्त्तिता ॥६३७३॥

---

१ आहत भत्न स्त्रे क्ली नववस्त्रेपि ताडने ।
गुणनेप्यथ पुल्लिङ्ग आनके परिकीर्त्तित ॥

इ

इ खेदे परयोक्तौ चापाकृतानुकम्पने ॥६३८॥
इ पुमांस्तु मत कामे ।
इक्षुकाण्डोऽस्त्रिया मुञ्जे काशे चम्बन्तरपि च ॥६३९॥
इक्षुगन्धा स्त्रियामुक्ता काकिलाश्च इति श्रुत ।
आनूपे कण्टकिस्तम्ने निदारीकाशगोक्षुरे ॥६४ ॥
इक्षुर कोकिलाक्षे च काशे गोक्षुरकेऽपि च ।
पुमानिक्षुरस काशे योगाऽर्थे च प्रकीर्त्तित ॥६४१॥
इक्ष्वाकुर्मदनद्रौ ना वैवस्वतमना सुते ।
तिक्तालाबां पुनरियमिक्ष्वाकु स्त्री प्रकीर्त्तिता ॥६४ ॥
इङ्गोऽद्भुते जङ्गमे च ना ज्ञानेङ्गितयोर्मत ।
इङ्गुदी तापसतराविङ्गुदोऽपि द्वयोर्मत ॥६४३॥
योतिष्मत्या स्त्रियामेवेङ्गुदीय परिकीर्त्तिता ।
इज्या दाने च यज्ञे च पूजायां सङ्गमे स्त्रियाम् ॥६४४॥
जनन्यां गवि कुट्टिन्या श्रेष्ठे तु त्रिगुरौ तु ना ।
इडीट च त्रिषु नाथे स्याद्वसुधायां स्त्रियामिमे ॥६४५॥
बुधपत्न्यामिडेलानश्नाडीभेदे च कीर्त्तिता ।
जनन्यां देवताभेदे भा भूगोस्त्वर्गवाक्ष्वपि ॥६४६॥
इत स्मृते गतेप्येतद्वाच्यवत्परिकीर्त्तितम् ।
इतर पामरेऽन्यस्मिन्ना यवत्परिकीर्त्तित ॥६४७॥
इति हेतौ प्रकारे स्यात्परकृत्यनुकर्षयो ।
निदर्शने प्रकरणे समाप्तौ च प्रकाशने ॥६४८॥
भवेदितिकथाऽपार्थवाच्यश्रद्धेयनष्टयो ।
इत्या स्त्रियां गतौ चैव शिविकायां च कीर्त्तिता ॥६४९॥
इत्वर्यसत्यां स्त्री त्रिस्तु गन्वरे क्रूरनीचयो ।
इदानीं वाक्यभूषायां सम्प्रत्यर्थेऽपि दृश्यते ॥६५ ॥
इद्ध स्यादातपे क्लीबं दीपिते त्वभिधेयवत् ।
इध्मवाहो दृढच्युन्नाम्न्यृषौ त्रि त्विध्मवाहके ॥६५१॥

इनो नृपात्मसूर्येषु त्रि तु स्वाम्याढ्ययोर्मत ।
इन्दीवरा शतावर्यां स्त्री क्ली कुवलये भवेत् ॥६५२॥
इ दुर्ना यज्ञशशिनो स्त्रीकपूरेऽप्सु च स्मृतम् ।
स्त्रियामि दुकलाश द कविभि परिकीर्त्तित ॥६५३॥
गुडूचीसामलतयोर्यवानाच द्रलेखयो ।
इ दुका तश्च द्रका ते थे दु का ता निशि स्त्रियाम् ॥६५४॥
इ दुजा नर्मदानद्यामि दुज स्याद्बुधग्रहे ।
राकाभोजस्वसृनदीभेदेष्वि दुमती मता ॥६५५॥
इ दुलेखा स्मृता सोमलताशशिकलासु च ।
इ द्र पुरन्दरे सूर्ये सूर्येषु द्वादशस्वपि ॥६५६॥
स्याद्विशेषत एकस्मिन्योगभेदेऽन्तरात्मनि ।
विषभदेऽश्मन्तके च पत्यौ स्यान्नामपूर्वक ॥६५ ॥
इ द्रकोशो गृहस्याङ्ग स्यात्तमङ्ककनामनि ।
इ द्रस्य कोशेऽपि स्पष्ट पु लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥६५८॥
स्यादि द्रमह इ द्रस्योत्सवे ना द्वे पुन शुनि ।
इ द्रवृक्षस्तु ककुभ कुटजे देवदारुके ॥६५९॥
इ द्रवृद्धिस्तु निष्कहये ना स्त्री द्रसम्पदि ।
इ द्रा तु कविभि प्रोक्ता स्त्री फणिज्झकभेषजे ॥६६
इ द्राणी रतब धे स्त्री पौलोमी सि धुवारयो ।
सूक्ष्मैलाया तथा स्थूलैलायामेषा क्वचि मता ॥६६१॥
क्लीबमि द्रायुध शक्रचापइ द्रायुधा पुन ।
अचिकित्स्यविषाया स्यात्सविषाणा जलौकसाम् ॥६६२॥
षण्णामेकजलूकाया स्त्रियामश्वा तरे पुन ।
कृष्णनेत्रसमायुक्ते द्वयोरि द्रायुधो मत ॥६६३॥
इ द्रिय चेतसि धने हृषीके रेतसि स्मृतम् ।
अथाभिधेयव चैतदि द्रसम्ब धिनि स्मृतम् ॥६६४॥
इ धन त्वग्न्यथकाष्ठे दीपनेऽपि नपुसकम् ।
इभ्य आढ्ये त्रिष्वथेभ्या हस्तिवात्तिज्ञने भवेत् ॥६६५॥

तथा करेणुश्च लम्योस्त्रियामत्र प्रयुज्यते ।
इरा दिनि च दत्यान्ने तथा भूवाक्सुराम्बुषु ॥६६६॥
इरावा निरयायुक्ते वाच्यवत्स्त्री त्विरावती ।
नदीमात्रेऽपि बाह्लीकब्रह्मादितटिनीष च ॥६६ ॥
इरिण त्रिषु शून्ये स्यादूषर मिम्नतागनि ।
क्लीब त्विरिणमेतत्स्याद्दुर्गे तद्वद्वनेऽपि च ॥६६८॥
बुधपत्न्यामिलेडावबाडीभेदे च कीर्त्तिता ।
जनन्या देवताभेदे भाभूगास्वर्गवाक्ष्वपि ॥६६९॥
इन्वक सामभेद क्ली न्यापके त्वभिधेयवत् ।
इल्वका मृगशीर्षर्क्षे स्त्रिया काले च तद्युते ॥६७ ॥
इल्वल पुंसि यूपे द्वे त्विल्वलो मत्स्यरक्षसा ।
मृगशीर्षशिरस्तारास्त्विन्वला कीर्त्तिता स्त्रिय ॥६७१॥
इषिराग्नाविषा साम्नश्चपिरात्यस्य द्रष्टरि ।
नपुंसक तु यवस इषिर परिकीर्त्तितम् ॥६ २॥
इषीकास्तु नृभूम्नि स्युर्दक्षिणापथवर्त्तिनि ।
नीवृद्धद तृणस्तम्बे तूलिकायां त्विय स्त्रियाम् ॥६७३॥
इषु स्त्रीपुंसयोर्बाणे क्रतुभेदे तु पुंस्ययम् ।
विष्कुत्योस्तूभयो स्त्रीत्व इषुरेषा प्रकीर्त्तिता ॥६७४॥
इष्ट त्रि वाशसितेऽपि पूजितेऽपि प्रियेऽपि च ।
यागक्रियाकर्मभूते पर्याप्तेऽपि प्रकीर्त्तितम् ॥६७५॥
अथच्छायां च यजने यज्ञदाने नपुंसकम् ।
इष्टगन्ध सुगन्धौ स्यात्त्रिषु क्लीब तु बालुके ॥६७६॥
इष्टिर्मताऽभिलाषे स्त्री सग्रहश्लोकयोगयो ।
कलत्रे त्वपरेऽथन्व पुंस्याऽऽचार्याभिलाषयो ॥६७७॥
इष्वा स्त्री पुत्रसन्तत्यां कुटुम्बे चेति केचन ।
इष्वासस्त्वस्त्रियां चापे क्ली त्विषोरासने भवेत् ॥६७८॥
इषो क्षेसर्य्यय शब्दो वाच्यवत्परिकीर्त्तित ॥६७८ब॥

ई

ई विषादेऽनुकम्पायां लक्ष्म्यां पुनरनव्ययम् ॥६ १॥
ईक्षण नयने क्लीब दृग्व्यापारेऽपि कीर्त्तितम् ।
ईडो ना देवताभेदे स्तुतौ त्वक्षो स्त्रियां क्षितौ ॥६८ ॥
ईतिर्डिम्बे प्रवासे षटस्वतिवृष्ट्यादिषु स्त्रियाम् ।
ईरिण स्यादिरिणवत्त्रिषु शून्ये तथोषरे ॥६८१॥
सिकतावत्यपि क्लीब तु स्याद्दुर्गे वनेऽपि च ।
ईश शिवे प्रभौ च स्यात समर्थे चापि वाच्यवत् ॥६८२॥
ईशान ज्योतिषि क्लीबमीशानस्तु शिवे पुमान् ।
ईशाना स्वयमीशित्र्यामीशानी पुयुजि स्त्रियाम् ॥६८३॥
ईश्वरस्त्रि प्रभौ चाढ्ये ना शण्डे शिवकामयो ।
ईश्वरा स्वयमीशित्र्या पुयोगे त्वीश्वरी मता ॥६८४॥
ईश्वरप्रिय एष द्वे तित्तिरौ त्रीशवल्लभे ।
ईषको ग तृह्विंसितृद्रष्टृयुक्ताऽभिधेयवत् ॥६८५॥
ईषा स्त्री रथसीरादिदण्डके परिकीर्त्तिता ।
उक्ता प्रमाणभेदेऽपि चाष्टाशीतिशताङ्गुले ॥६८६॥
ईषिका हास्तिनो नेत्रकूटे स्त्री परिकीर्त्तिता ।
ईष्मो वायौ वसन्ते च पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥६८ ॥
ईस दु खभावने कोपे चाव्यय परिकीर्त्तितम् ।
ईहा स्त्रियामुद्यमे च वाञ्छायामपि कीर्त्तिता ॥६८८॥
ईहामृगो वृके द्वे स्यात्पुंसि स्याद्रूपकान्तरे ॥६८८३॥

उ

उ सम्बोधनरोषोक्त्योरनुकम्पानियोगयो ।
पदस्य पूरग पादपूरणे चाव्यय स्मृतम् ॥६८९॥
उ पुमानुच्यते विष्णौ शिव्योष्ठ्यस्वरे तथा ।
उक्ता स्त्र्येकाक्षरच्छन्दस्युक्त स्याद्भाषिते त्रिषु ॥६९ ॥

उक्थ नपुसक प्रोक्त सामस्तोत्रेषु च त्रिषु ।
परेष्वग्निष्टोमसाम्न आक्थिकये सामलक्षण ॥६ १॥
शस्त्रारण्ययागमन्त्रेषु सामवेदे न साम्नि च ।
उक्षा पुंस बलीवर्दे त्रिषूक्ष्णी महति स्मृता ॥६५२॥
उख पुंसि स्फिजि परे कणपार्श्वेऽप्यधीयते ।
ओखीयान्त च शाखायामृषिभेदे प्रवक्तरि ॥६ ३॥
स्त्री तु स्थाल्यामुखा यज्ञविदा मुख्याऽग्निसभृते ।
साधने चतुरस्रे च मृत्पात्रेऽग्निनयोचिते ॥६५४॥
उग्र शिवे ना द्वे स्त्रोढशूद्राया क्षत्रियात्सुते ।
विप्रात्सुपे च स्वोढायां शूद्रायामप्यथ स्त्रियाम् ॥६९५॥
उग्र नपुसके प्रोक्त घटिकालवण तथा ।
कालशये च रौद्रे तु त्रिलिङ्ग परिकीर्त्तितम् ॥६९६॥
उग्रगन्धाऽजमोदायां वचायां छिक्किकोपधौ ।
ना सिते लशुने चीर्णावृन्ताग्र्यफलरीरुधि ॥६ ७॥
उग्रा वचा खराश्वार्याजमोदाभेदयोर्मता ।
उचितन्तु स्वभावे क्ली निश्चिताभ्यस्तयो पुन ॥६९८॥
योग्ये चिरानुयाते च त्रिषुक्तेऽनुमतेपि च ।
उच्चयो वस्त्रनीव्या स्याद्धस्तादाने च चौर्यत ॥६९९॥
अध स्थितस्य पुष्पादेरुच्चय परिकीर्त्तित ।
उच्चल स्त्युच्चलितरि क्ली चापान्तरचेतसो ॥७ ॥
उच्चिङ्गटस्तृणगडमत्स्ये द्वे कोपने त्रिषु ।
उच्चैश्रवास्तु नेन्द्राश्वे घोटमात्रे तु स द्वयो ॥ १॥
उच्चकर्णे तु लिङ्गादिप्रयोज्यमभिधेयवत् ।
उच्छीतष्टिट्टिभे द्व स्यात्स्वप्ने पुंसि प्रकीर्त्तित ॥ २॥
उच्छीर्षमुपबर्हे क्ली त्रिषु तूच्छिरसि स्मृत ।
उच्छुन पुंसि वैशाखे त्रि तूद्धतशुनादिके ॥७ ३॥
उच्छ्रित त्रिषु सजातप्रवृद्धोत्थापितोन्मते ।
उच्छ्वास आख्यायिकांशे प्राणनेऽपि पुमानयम् ॥७ ४॥

उञ्झट शून्यदशे त्रिस्तूर्ध्वीभूतजटादिषु ।
उज्जृम्भित त्रिषूत्फुल्ले चेष्टायां तु नपुंसकम् ॥ ५॥
उज्ज्वलो दीप्तविशदविकाशिष्वभिधेयवत् ।
शृङ्गारे तु रसे प्रोक्तो नित्यं पुंलिङ्ग उज्ज्वल ॥ ६॥
उज्झक स्नेहशून्ये स्यादुज्झितर्येपि वाच्यवत् ।
उटजोऽस्त्री पर्णगृहे गृहमात्रेऽपि कीर्त्तित ॥ ॥
उडुर्विप्रे द्वयोरुक्तो नक्षत्रे नपस्त्रियोर्भवेत् ।
उडुपोऽस्त्री लवे प्रोक्तश्चन्द्रे पुंसि प्रकीर्त्तित ॥ ८॥
उड्डीशो ग्रन्थभेदे स्यात्पुंसि चण्डीपतावपि ।
उत्प्रश्ने च वितर्के चाप्यव्ययं परिकीर्त्तितम् ॥ ९॥
उताऽप्यर्थे विकल्पे च तर्के प्रश्ने समुच्चये ।
उताहो इति सप्रोक्त परिप्रश्नविचारयो ॥ १ ॥
उत्कटस्तूद्भटे मत्त तीव्रेऽपि त्रिषु कीर्त्तित ।
उत्कट तु भवेत्क्लीब योगिनामासनान्तर ॥ ११॥
उद्भटक्षीबयोस्त्वेतदुत्कटं त्रिषु कीर्त्तितम् ।
क्लीबमुत्कलिकं चित्ते भवेदुत्कम्पिते त्रिषु ॥ १२॥
कथितो कलिकोत्कण्ठाहेलासलिलवीचिषु ।
उत्कीर्ण स्यादुल्लिखिते ना पुर्यारण्ये जलाशये ॥ १३॥
उत्कृष्टस्तु प्रकृष्ट स्यादूर्ध्वं नीते च वाच्यवत् ।
उत्क्षेपण तूत्थिसे स्याद्व्यजने धान्यमर्दने ॥ १४॥
उत्तस कर्णपूरेऽपि शखरेऽपि च न स्त्रियाम् ।
उत्तप्त शुष्कमासे क्ली त्रिष्वेतत्तु प्रदीप्तयो ॥ १५॥
उत्तमस्तिङ्विभक्तीनामन्तिमत्रितये त्रि तु ।
उत्कृष्टे दुग्धिकाया तु स्त्रियामेवोत्तमा मता ॥ १६॥
उत्तर प्रतिवाक्ये क्ली ना विराटसुते तथा ।
निम्नादुच्चारणेऽथ स्त्री स्नुषायामर्जुनस्य च ॥१७ ॥

१ उत्कलितम् इति पा भे । २ उत्कण्ठिते ।

उदीच्ये तूत्तमे चोर्ध्वे पुरे चैवोत्तरस्त्रिषु ।
स्यादुत्तराङ्ग द्वारस्य तिर्यङन्यस्तोर्ध्वदारुणि ।। १८।।
यौगिकेऽर्थेऽस्य लिङ्गादि परिज्ञेय प्रयोगत ।
उत्तान त्रिष्वनिम्ने स्यादूर्ध्वीकृतपुरोऽशके ।।७१९।।
उत्ताल तु त्रिषूत्तान उन्नताचण्डयोरपि ।
उत्त्रासस्तु भये सप्त-शारत्नेररत्निके ।।७२ ।।
यूपस्य मूलादारभ्य द्वितीयेऽपि पुमा मत ।
उत्थानमुद्गमे वास्तौ त न्त्रहापौरुषेषु च ।।७२१।।
रणाऽङ्गणे च हर्षे च मलरोग च पुस्तके ।
उत्थित प्रोद्यते जाते वृद्धिम यपि वा यवत् ।।७ २।।
स्यादुत्पतनमुत्पत्ता तथोर्ध्वगमनेऽपि च ।
उत्पलोऽस्त्री कुवलये क्लीब कुष्ठारण्यभपजे ।।७२३।।
उत्पली तुषचपत्या स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ।
उत्पात पुस्यजन्ये स्यात्तथोत्पतनकर्मणि ।। २४।।
उत्पिबो द्वे चकोरारण्यपक्षिण्युत्पातरि त्रिषु ।
उत्प्रेक्षाऽनवधानेपि का यालङ्करणा तरे ।। २५।।
उत्फुल्ल करणे स्त्रीणा त्रिषूत्ताने विकस्वरे ।
उत्सो न्योम्न्यम्बुधौ कूपे जलाधारान्तरे पुमान् ।।७२६।।
उत्सङ्गोऽङ्क वारणस्य पूर्वाग्रेर्यवख्या परम् ।
पिण्डिकान्त विभक्तस्य सप्तधास्य चतुर्थके ।। २७।।
अथ प्रारभ्य भागे चाग्न्याधानेऽपि प्रकीर्त्तित ।
उत्सर्ग पुमि सामान्यन्याये च त्यागदानयो ।।७२८।।
उत्सर्जन तु दाने च परित्यागेऽपि कीर्त्तितम् ।
उत्सवो मह उत्सेकामर्षेच्छाप्रसरेषु च ।।७२९।।
उत्सादना नत्रोच्छेदोन्नत्योरुद्वर्त्तनेऽपि च ।
उत्साहोऽध्यवसाये ना सूत्रे च परिकीर्त्तित ।।७३ ।।
उत्साहनाऽङ्काथवाद्यघोषे प्रोत्साहने न ना ।
उत्साहा तु स्त्रियामारकूटलोहे प्रकीर्त्तिता ।।७३१।।

उत्सृष्ट त्रिषु दत्ते च त्यक्तेऽथो देवमारिषे।
मारिषाख्यस्य शाकस्य भेदप्युत्सृष्ट एष ना ॥७३२॥
उत्सेधो मकरच्छत्रध्वजोष्णीषतनूषु च।
प्रसोमदेववर्गस्य चतुर्थे साम्नि चोन्नतौ ॥ ३३॥
उद्भिभागे प्रकाशे च प्राबल्यास्वास्थ्यशक्तिषु।
प्राधान्ये बन्धने भावे मोक्षे लाभोध्वकर्मणो ॥ ३४॥
उदक्त्रिषूत्तरे दिग्देशकालविषये मतम्।
उदङ्मुखेऽप्युदीच्ये स्त्री तूदीची यक्षराडदिशि ॥ ३५॥
प्रथमा पञ्चमी सप्तम्यथक त्वेषु वाऽव्ययम्।
उदकं तु भवेत्तोये ह्रीबेरेऽपि नपुंसकम् ॥ ३६॥
छन्दोभेदेऽपि तत्प्रोक्तं तथैव द्विशतस्वरे।
उदक्या ऋतुमत्यां स्त्री त्रि स्यादुदकसाधुनि ॥७३ ॥
उदकार्हे प्रियाचारशूद्रे तु स्याद्द्वयोरयम्।
उदञ्चस्तु पुमान्वाद्यदण्डे परभृते द्वयो ॥ ३८॥
उदञ्चनं क्ली स्यान्यादिपिधाने स्यात्तथोद्गमे।
स्त्रीनपुंसकयोस्तूर्ध्वं गमने स्यादुदञ्चना ॥७३९॥
उदन्त पुंसि साधौ स्याद्वार्त्तायामप्युदीरितः।
उदयस्तूदयाद्रौ स्याद्धनोत्पत्तौ तथोद्गमे ॥ ४ ॥
उन्नतावुपरिस्थेऽपि पूर्वराजान्तरेपि च।
क्ली तूद्गतावुदयनं वत्सशागस्त्ययोस्तु ना ॥ ४१॥
क्लीबं तूदयनीयं यत् यज्ञकर्मान्तरे स्मृतम्।
तद्योगादाहरादिष्वप्यय शब्द प्रकीर्त्तित ॥ ४२॥
उदरं तु न ना ज्ञेय जठरे क्ली तु संयुगे।
भवेदुदरथिः पुंसि समुद्रे च रवावपि ॥७४३॥
उदर्क एष्यत्कालीनफले मदनकण्टके।
अन्तिमेऽवयवे चापि पुमानेष प्रकीर्त्तित ॥ ४४॥
उदाचरग्नौ त्रिपुनरुद्गतार्चिषि कीर्त्तित ।
उदात्तो वागलकारभेदे चोच्चस्वरे पुमान् ॥७४५॥

त्रिस्तूच्चै स्वरयुक्ते स्याद्दयात्यागादिमत्यपि ।
उदानस्तूदरावर्त्ते वायुभदे भुजङ्गमे ७४६॥
उदारो दातृमहतास्त्रिषु दक्षे च विश्रते ।
उदार एष कङ्गा ना त्रिष्वग्राम्यमहात्मना ॥७४७॥
दानशौण्डे तथतेषु स्त्र्यर्थे वृत्तिर्यदा तदा ।
उदारा चाप्युदारी चैतद्रूपद्वय भवेत् ॥ ४८॥
उदास्थित पुमाभिक्षुवेषधारिचरे मत ।
शूरा तरेऽपि द्वा स्थ तु त्रिलिङ्ग परिकीर्त्तित ॥७४९॥
उदित कथितेऽपि स्यादुद्गतेप्यभिधेयवत् ।
उदीच्य त्रिरुदग्जादा ह्रीवेरे तु नपुसकम् ॥७५ ॥
उदुम्बरो जन्तुफले देहल्यां कुष्ठभिद्यपि ।
पण्डके तु पुमानेषाऽथ नृभूमन्युदुम्बरा ॥ ५१॥
नीवृत सालसङ्गस्यावयवे क्षुद्रनीवृति ।
उदुम्बर तु हेमाक्षे क्लीब ताम्र च कीर्त्तितम् ॥ ५ ॥
उदूखल गुग्गुलौ स्यात्तथा क्लीबमुलूखले ।
उदूढ विपुले स्थूल ऊढे चाप्यभिधेयवत् ॥७५३॥
उद्गता विषमे वृत्तविशेष स्त्री त्रि तूदिते ।
भावे क्तप्रत्यये त्वेतदुद्गमे स्यान्नपुसकम् ॥७५४॥
उद्गातो चैर्गातरि त्रि पुमा स्यादृत्विग तरे ।
उद्गीथ ऊर्ध्वास्यशुनां विरावे सामजातके ॥७५५॥
द्वितीयभक्तौ साम्नश्च पञ्चधा स्यात्कृतस्य स ।
उद्ग्राहितमुपन्यस्ते त्रिर्बद्धे ग्राहितेपि च ॥७५६॥
उद्घ शस्ते देहपुटे देहवायावगौ तथा ।
उद्घनो यत्र निक्षिप्य काष्ठे काष्ठस्य तत्क्षणम् ॥७५७॥
तत्रोद्गतघनादौ तु त्रिलिङ्गोऽय प्रकीर्त्तित ।
उद्घातो मुद्गरेऽपि स्यात्कुठके समुपक्रमे ॥७५८॥
चरणस्खलने चापि तथोद्धननकर्मणि ।
गजस्यमू कर्णला च चूलिकासङ्गकात्परे ॥७५९॥

प्रदेशे मानभेदे च प्राणायामस्य कालत ।
यस्य लक्षणमित्युक्त योगशास्त्रविशारदै ॥ ६ ॥
चोटिकात्रि परामृश्य जानुस्फोटक्रियाऽथ ता ।
षटत्रिंशन्मन्द उद्धातो द्विगुणत्रिगुणै पुन ॥ ६१॥
मध्यमश्चोत्तमश्चैव प्रथमो द्वादशैव वा ।
उद्दण्डपालो न क्ली स्या सपमत्स्यप्रभेदयो ॥७६२॥
उद्दन्तुरस्त्रिषूत्तुङ्ग करालो कटदन्तयो ।
उद्दामो वरुणनाऽथ त्रिरबद्धे विशृङ्खले ॥ ६३॥
उद्दालस्तु भवेद्वृक्षे श्लेष्मातक इति श्रते ।
उन्नते मुकुलाकारे मत्स्यग्रहणसाधने ॥ ६४॥
स्यादुद्धननमुत्खातौ क्लीब स्त्रीशण्डयो पुन ।
स्फ्यनामधेये कुद्दाले भवेदुद्धननीत्यसौ ॥ ६५॥
स्यादुद्धरणमुद्धारे वा ताऽन्नेप्यशितोज्झिते ।
उत्पाटनक्रियाया च नपुसकमिद मतम् ॥ ६६॥
उद्धर्षस्तु मह्हे पुसि त्रिषु तु कटहृषके ।
उद्धानमुद्गते त्रि स्यात् क्ली चुल्ल्यामुद्गमेपि च ॥७६ ॥
उद्धार उद्धतावुक्त ऋणे चाधृद्धिके पुमान् ।
उद्धृत स्यात्त्रिषूत्क्षिप्ते परिभुक्तोज्झितेपि च ॥ ६८॥
उद्ध्य खनकाज्जाते क्षत्रियायां द्वयोर्मत ।
उद्बन्धने ना तर्वादेर्विशेषाद्बन्धकारणे ॥ ६९॥
उद्बुद्धस्तु भवेत्फुल्ले प्रबुद्धेऽप्यभिधेयवत् ।
उद्भित्तु सामभेदे वली स्यादुद्भिज्जे तु स त्रिषु ॥७ ॥
एकाहक्रतुभेदे तु पुमानुद्भित्प्रकार्त्तित ।
उद्भिद कूप्यलवणे क्लीब ना तु जलोद्गमे ॥ १॥
कूपादस्त्रिषु तूद्भिज्जे तरुगुल्मादिवस्तुनि ।
उद्यान सग्रहोद्गत्योर्वनमदे प्रयोजने ॥७ २॥
तथा निस्सरणत्येतन्नपुसकमुदीरितम् ।
उद्र उद्री जले तौ द्वे ऋषिभेदे तु पुस्ययम् ॥ ३॥

उद्वर्तन न नाऽङ्गस्य मलोन्मदनकर्मणि ।
उद्वर्त्तिहेतुव्यापारे क्लीबे तद्वर्त्तिवाचकम् ॥ ७४॥
उद्वान्तो निर्मदगजे पुमानुच्छर्दिते त्रिषु ।
उद्वासना वधेऽन्यत्र न्यासेऽन्यत्र स्थितस्य च ॥७ ५॥
आवाहितस्य देवादरुत्सजनविधावपि ।
उद्वाह ऊर्ध्ववहने विवाहे तनये पुमान् ॥७७६॥
उद्वाहन प्रणीते स्याद्र्वामुद्वाहनी मता ।
उद्वेग क्ली पूगफले पुमानुद्वेजने भवेत् ॥ ७ ॥
त्रिषु तूद्धतवेगादावुद्वेग परिकीर्त्तित ।
उन्न स्यात्सुरते क्लीब त्रिषु क्लिन्न प्रकीर्त्तितम् ॥७७८॥
उन्निद्रस्तु भवेत्फुल्ले निद्राहीने च वाच्यवत् ।
उन्नेतो हितरि युन्नायेना त्विग्न्तरे ॥ ९॥
उन्मत्त पुंसि धत्तूरमुचुकुन्दारग्वधवृक्षयो ।
फले तु क्लीबमनयोस्त्रि तून्मादवति स्मृत ॥ ८ ॥
उन्मदस्तु पुमाञ्छूर्पे कच्छपे तु द्वयोरयम् ।
उन्माथ पुंसि हिंसायां कूटयन्त्रे च कीर्त्तित ॥ ८१॥
उन्मार्गे च ध्रुवे चायं त्रिलिङ्ग परिकीर्त्तित ।
स्यादुन्मिषितमुन्मेषे त्रिस्तु सोन्मेषफुल्लयो ॥ ८२॥
उन्मीलन स्यादुन्मेषे विकासे कुसुमस्य च ।
उन्मीलित त्रि सोन्मेषे फुल्ले चोन्मीलने तु नप् ॥७८३॥
उप स्यादधिकाऽर्थे च हीनार्थासन्नयोरपि ।
उपकण्ठन्तु सामीप्यगुण चास्कन्दिताभिधे ॥७८४॥
अश्वस्य गतिभेदेऽथ त्रि तद्वति समीपगे ।
उपकारस्तूपकृतौ विकीर्णकुसुमादिषु ॥ ८५॥
त्रिषूपकारक प्रोक्त उपकारस्य कर्त्तरि ।
स्त्री तूपकारिका राजाऽऽवासे पिष्टान्तरेपि च ॥ ८६॥
उपकार्या राजसद्मन्युपकारोचितेऽन्यवत् ।
स्मृतोपकुञ्चिका सूक्ष्मैलायां कृष्णे च जीरके ॥७८७॥

ना तूपकुर्वाणो ब्रह्मचारिभेदे त्रि यौगिके ।
उपक्रमश्चिकित्सायामुपधारम्भयोरपि ॥७८८॥
उपायपूर्वेऽप्यारम्भे शरेपि परिकीर्त्तित ।
अङ्गीकृतावुपगम समीपगमनेपि च ॥ ८९॥
उपग्रह पुमा व धा ग्रहणऽप्यनुकूलने ।
स्यात्परस्मैपदेऽप्येष आत्मनेपद एव च ॥ ९ ॥
उपग्राह्यमुपादये त्रि क्लीब प्राभृते मतम् ।
उपचर्या चिकिसाया पूजाया च स्त्रिया मता ॥ ९१॥
उपचार उपास्तौ च प्राभृतऽपि पुमा मत ।
विसजनीयस्य स्थाने सकारो यश्च तत्र च ॥ ९२॥
भवेदुपचित दग्धे ममृद्धऽपि तथा त्रिषु ।
उपचित्रा पृश्निप र्या यग्राधीसज्ञगु मक ॥ ९३॥
स्त्रीलिङ्ग नागद या च यागार्थे वभिधेयवत् ।
स्मृतोपजिह्विका वम्र्या जिह्वारोगा तरेऽपि च ॥७९४॥
उपतापा रोगतापत्वरासु परिकीर्त्तित ।
उपदशो विदशे च मेढरोगा तरेपि च ॥७९५॥
उपद्रवश्चतुर्थ्यां सामभक्तावप्युद्रुतौ ।
मुरयरोगानुगे रोगे उपाते च त्रिषु वयम् ॥७९६॥
उपयाते द्रव क्ली तु द्रवस्य स्यात्समीपग ।
उपधाऽ यादल पूर्ववर्णे च सुपरीक्षणे ॥ ९ ॥
उपधानक्रियाया च छ दनायामपि स्त्रियाम् ।
उपधानमुपष्टम्भ उपष्टम्भन ाधने ॥ ९८॥
उ छीषकार यगण्डौ च प्रणये च विष तथा ।
उपधि स्याद्रथस्याङ्ग औषधेयाभिधे पुमान् ॥ ९९॥
उपधानक्रियाया च व्याजे चाऽय प्रकीर्त्तित ।
उपधूपित आसन्नमरण त्रि च धूपिते ॥८ ॥
उपनाहस्तु वैरानुब धे वीणानिब धने ।
पक्ष्मलोचनसा धिस्थरागभेदे च कीर्त्तित ॥८ १॥

व्रणादेर्भेषजे बीजेऽप्यथ पुसि प्रकीत्तित ।
पुमानुपनिधिर्न्यासे धने च त्रि तु यौगिके ॥८ २॥
पूये तनौ तथा साम्नोर्यद्गान यज्ञकर्मणि ।
तत्र गोपनिमन्त्रपि नप् स्त्री चोपनिबन्धना ॥८ ३॥
रहस्यार्थे तूपनिषद्धर्मवेदान्तया स्त्रियाम् ।
रहसीत्यपरे प्राहु प्रथमर्त्ता च योषिताम् ॥८ ४॥
उपप्लवो निप्लवे चोपरागोत्पातराहुषु ।
अथोपमानमौपम्ये सादृश्यविषयि यपि ॥८ ५॥
अथोपयमन प्राक्त विवाहे स्वीकृतावपि ।
उपर पुसि मद्ये स्यादुपरा तु दिशि स्त्रियाम् ॥८ ६॥
यूपस्य त्वक्षते मूल उपर स्यान्नपुसकम् ।
उपरक्तो भवेत्पुसि राहुग्रस्ते तु सूर्ययो ॥८ ७॥
त्रि पुनर्व्यसनार्त्ते च जपापुष्पादिवस्तुन ।
प्रभोपरञ्जिते द्रव्ये स्फटिकादौ च कीर्त्तित ॥८ ८॥
उपरागस्तु राहौ च सकन्यारत्य यसनेऽपि च ।
सूर्यचन्द्रग्रहेऽपि स्यादुपरक्त च कीर्त्तित ॥८ ९॥
उपलो नाम्बुदे रत्नाश्मनो स्यादुपल नपि ।
उपलब्धिर्मतौ प्राप्तौ विज्ञानेऽपि स्त्रिया मता ॥८१ ॥
उपला शर्करायां स्त्री दृषत्पुंस्या तथा दिशि ।
उपलिङ्ग तु उमरे त्रिस्तु लिङ्गोपगादिपु ॥८११॥
उपवर्त्तनमित्येतद्राष्ट्रेऽश्वलुठनेपि च ।
अथोपवसथ पुसि मतो ग्रामोपवासयो ॥८१२॥
भवेदुपशय स्थाने यत्रावस्थाय लुब्धका ।
गूढात्मानो मृगा घ्नन्ति तत्र यूपे च याज्ञिका ॥८१३॥
एकादशकपक्षे य शेते दक्षिणतो भुवि ।
दशानामपि यूपानां तत्रायुर्वेदिन पुन ॥८१४॥
औषधान्नविहाराणामुपयोगे सुखावहे ।
व्याधे सात्म्यमितीद च तत्पर्यायमधीयते ॥८१५॥

समीपशयने चापि विदन्ति विदितागमा ।
उपसग्रहण पादग्राहणे नाऽभवादने ॥८१६॥
उपेत्यसग्रहे चापि नपुसकमुदाहृतम् ।
उपसत्ति सङ्गमात्रे सेवनेऽपि स्त्रियां मता ॥८१ ॥
वाच्यवत्तपसपन्न प्रमीतप्राप्तयोस्तथा ।
सुसस्कृतौदनाद्ये च पयासे च प्रकीर्त्तितम् ॥८१८॥
उपसर्ग क्रियायुक्तप्रादौ ससर्ग एव च ।
उत्पाते रोगभदे च पु ल्ङ्ग परिकीर्त्तित ॥८१९॥
उपसज नमित्येतद्यत्स्या प्रथमयोदितम् ।
उपसृष्टौ तथाद्याह निदाने च शिवस्तवे ॥८२ ॥
समासशास्त्रे तत्र स्यादप्रधानेपि तत्तथा ।
उपसर्या तु सामान्यजनसेवन इष्यते ॥८२१॥
प्रजनप्राप्तकालाया गवि चैव प्रकीर्त्तिता ।
उपस्थोऽस्त्री भवेन्मेदे क्रोडे मदनमदिरे ॥८२ ॥
उपस्पर्शस्तु सस्पर्शे स्नानाचमनयोरपि ।
स्यादुपस्पर्शन स्पर्शे स्नानाचमनयोरपि ॥८२३॥
उपह्वरोऽस्त्री रहसि समीपेऽपि प्रकीर्त्तित ।
उपाकृतोऽध्वरहतपशौ नोपद्रुते त्रिषु ॥८२४॥
उपधिधर्मचिन्ताया कुटुम्बे व्यापृतेऽपि च ।
कार्यावयव्यवच्छेत्तर्यपि साध्येन या भवेत् ॥८२५॥
ससाधनाव्यापकत्वासमव्याप्तकताऽत्र च ।
उपाध्यायोऽध्यापकेऽस्य पत्न्यां रूपद्वयम्भवेत् ॥८२६॥
उपाध्यायान्युपाध्यायी या त्वध्यापयति स्वयम् ।
उपाध्यायाऽप्युपाध्यायी द्विधा सा परिकीर्त्तिता ॥८२७॥
उपाय पवभेदे स्यात्पूर्वस्मिन्सामपवणाम् ।
निधनात्कर्मणा सिद्धलघुमार्गणसाधने ॥८२८॥
राज्ञा च सामदानादौ विशेषा चोपसपणे ।
उपांशुर्जपभेदे स्यादुपांशु विजनेऽव्ययम् ॥८२९॥

उपासना न ना सेवाशराभ्यासा तिकासने ।
उपाहितो नलोत्पाते पुमानारोपिते त्रिषु ॥८३ ॥
उपेन्द्र पु सि निष्णा स्यात्त्रिष्विन्द्रोपगते मत ।
उपोह ऊने निकट वा यव परिकीर्त्तित ॥८३१॥
उपादका स्त्रियां शाकन लीभदे सुताह्वये ।
अभिधेयवदेतच्च भवेदुपगतोदके ॥८३२॥
उभक्षि पेलवे चोद्घ्रस्थिते पु सि तु नारिदे ।
उम् रोषेऽङ्गीकृतौ चापि प्रश्नेऽप्य ययमुच्यते ॥८३३॥
उमा शिवाऽतसीलक्ष्मीहरिद्राकीर्त्तिका तिषु ।
उरो वक्षसि मुख्ये च भवेत्सा त नपु सकम् ॥८३४॥
उरस्यो ना स्तने द्व यौरसाप ये त्रिषु वयम् ।
उरोभवादावुरसा चैकदिक्के प्रकीर्त्तित ॥८३५॥
उर्यूमुरर्युरुयूरर्यङ्गीकारे च विस्तृते ।
उरु त्रिषु स्या महति स्त्रियामुर्वीति तत्र वा ॥८३६॥
उर्वी पृथि या नद्या च स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ।
उरुक्रम पुमान्विष्णौ त्रिलिङ्गस्तु महाक्रमे ॥८३७॥
उरुगाय पुमा विष्णौ बहुगीते त्रिलिङ्गक ।
उवरा तूर्वरीवत्सर्वसस्याढ्यक्षितौ क्षितौ ॥८३८॥
उर्वारुश्चिद्भटे ना स्त्री कर्कट्या क्ली तयो फले ।
उलपोऽस्त्र्यादिसगस्थभूतानामन्नमिधयम् ॥८३९॥
गुमि या सलिले काष्ठेऽप्यूर्ध्वमूलाह्वये पुन ।
स्तम्बभेद कलापारयमुने शिष्यान्तरे च ना ॥८४ ॥
उलूको द्वे काकशत्राविन्द्रभरतयोधिनि ।
उलूखल तु सधौ क ी कक्षाया वङ्क्षणस्य च ॥८४१॥
उलूखला स्त्री त्वश्वस्य दन्तच्छिद्र उलूखली ।
पुमांस्तु व्रतिनो दण्ड उदुम्बरतरूद्भवे ॥८४२॥
उल्बो गर्भाशये न स्त्री शुल्वे तू ब नपुसकम् ।
भूभेदे रजते सामभेद यज्ञे तु पुस्ययम् ॥८४३॥

सख्याज्ञाने विरहिते भवेदेष त्रिलिङ्गक ।
उन्मुक स्यादलाते स्त्री पूवराजान्तर तु ना ।८४४॥
उल्लाघस्तु शुचौ कृष्णे दक्षनीरोगयोस्त्रिषु ।
त्रिरुल्लिखितमुत्कीर्णेऽनुषक्ते च तनूकृते ॥८४५॥
उल्लेखनीय कतकद्राक्षुल्लेख्ये तु वाच्यवत ।
उल्लोल पुसि कल्लोले भृशलोले तु भद्यवत ॥८४६॥
उशिक पुमान्गौतमर्षौ पावकेऽपि पुमान्मत ।
उशिक स्त्रियामुशीरेऽथ स्यान्मेधाविन्युशिक त्रिषु ॥८४ ॥
उष प्रस्थचतुर्भागे कल्ये कामिनि गुग्गुलौ ।
स्यात् क्षारमृत्तिकाया चन्दनाद्रौ श्रवाबिले ॥८४८॥
रन्ध्रमात्रे स्त्रिया तृषाऽनिरुद्धस्य भवेत्स्त्रियाम् ।
सौरभेय्या निशाया च निशान्तेऽप्ययमप्युषा ॥८४९॥
उषवस्तु मतो दाहे रवावपि तथा पुमान् ।
उषो नपुसक सान्त स्त्री च सध्याप्रभातयो ॥८५ ॥
उषित न्युषिते दग्धे वाच्यवत्परिकीर्त्तितम् ।
उष्ट्रिका मृत्तिकाभाण्डभेदऽपि करभा स्त्रियाम् ॥८५१॥
उष्ट्री स्त्रियां स्यात्ककर्यामुष्ट्र स्यात्करभे द्वयो ।
उष्ण पुसि हुताशे स्यादग्रीष्मे शिग्रुमहीरुहे ॥८५२॥
क्ली तु वह्निगुणे त्रिस्तु तद्युक्ते चतुरेऽपि च ।
उष्णवीर्यो जलकपी द्वे योगार्थे तु लोकवत् ॥८५३॥
उष्णिका स्त्री यवाग्वां स्याद्दक्षे त्रिर्मत उष्णक ।
उष्णीषोऽस्त्री शिरोवेष्ट किरीटे लक्षणान्तरे ॥८५४॥
उष्मको ना निदाघे स्यान्यातुरे क्षिप्रकारिणि ।
उस्रो वृषे च किरणेप्युस्राऽर्जुन्युपचित्रयो ॥८५५॥

ऊ

ऊ वाक्यारम्भरक्षानुकम्पास्वप्ययमुच्यते ।
ऊ स्त्रियां रक्षणे तृप्तौ प्रीतावगतौ गतौ ॥८५६॥

वृद्धाववासौ तृप्तौ च प्रवेश श्रवणच्छयो ।
स्वाम्यसामर्थ्ययाच्ञासु क्रियाया भावहिंसयो ॥८५७॥
आलिङ्गने च दहनेऽप्यर्थेष्वेकान्तविंशतौ ।
ऊक किलिञ्जके राशौ राशिस्थाने पुमानयम् ॥८५८॥
ऊक ऊकीतिमिथुन कीर्त्तित पक्षिवाचकम् ।
ऊका तु जतौ प्रोक्ता स्त्री स्वेदजेऽस्थिविवर्जिते ॥८५९॥
ऊध क्ली सान्तमापीने निशाया च प्रकीर्त्तितम् ।
पादभेदे च सामारयसाम्न ऊध उदाहृतम् ॥८६ ॥
ऊधस्य तु नपि क्षीरे त्रिषु तूधोभवादिके ।
ऊम् रुषोक्तौ च पृच्छायामव्यय परिकीर्त्तितम् ॥८६१॥
ऊमोऽस्त्रियां पुरयोम्नो प्राणि येष त्रिलिङ्गक ।
ऊर यश्वोरुजे वैश्ये द्वयोरूरुभवे त्रिषु ॥८६ ॥
ऊर्गभाभरसो साहबलेषु स्या चतुर्ष्वपि ।
ऊर्जस्तु कार्त्तिकोत्साहबलेषु प्राणनेपि च ॥८६२॥
ऊर्जस्वती स्त्री नद्यां स्यात्त्रिपु तूजस्वले भवेत् ।
ऊर्णा स्त्रियां कदल्यादेस्तन्तौ मेषादिलोम्नि च॥ ६४॥
प्रशस्तरोमावर्त्ते च भ्रु मध्यस्थेऽथ हिंसिते ।
ऊणस्त्रि हिंसने तूण क्लीवलिङ्ग प्रकीर्त्तितम् ॥८६५॥
ऊर्णायु स्याद्द्वयोर्मेषल्लूतयोर्ना तु कम्बले ।
मेषलोमकृते तद्वद्ग धर्वे श्रुतिवर्णिते ॥८६६॥
ऊदर स्यादावपने भेद्यलिङ्ग तु दुबले ।
ऊर्ध्वस्त्रितुङ्गोपर्यर्थोत्थितेष्वृष्यन्तरे तु ना ॥८६७॥
ऊर्ध्वमूलस्तम्बभेद उ लूकारये पुमान्मत ।
ऊर्ध्वाङि घ्रवृक्षादौ त्वेष वाच्यवत्सप्रयुज्यते ॥८६८॥
ऊर्ध्वरूपक इ येष हरिम थारयमुद्रके ।
प्रयोगमनुसृत्यास्य लिङ्गाधर्थे च यौगिके ॥८६९॥
ऊर्मिद्वयोस्तरङ्ग ऽपि वेगवीचिप्रभासु च ।
वस्त्रसकोचरेखायां वेदनोत्पीडयोरपि ॥८७ ॥

क्षुत्पिपासाशोकमोहजरामृत्युषु चोच्यते ।
ऊर्मिका त्वङ्गुलीये स्याद्भ्रमभङ्गतरङ्गयोः ।।८ १।।
ऊवध्यं गुदवाते क्ली शुष्कादेश्च गदान्तरे ।
ऊषणो ना कटुरसे विज्ञेयस्त्रिषु तद्वति ।।८ २।।
क्लीबं तु मरिचं शुण्ठ्यावूषणाख्ये च कर्मणि ।
ऊषणा तु स्त्रियामेषा पिप्पल्यां परिकीर्त्तिता ।।८ ३।।
ऊषा रुजि स्त्रियामूषं लवणं क्लीबमौषरे ।
ऊषस्तु क्षारमृद्भेदे पुंलिङ्गः परिकीर्त्तितः ।।८ ४।।
ऊष्मा त्वौष्ण्यगुणे ग्रीष्मे बाष्पे शषसहेषु ना ।
ऊहा न क्ली विचारे स्यात्सामग्रन्थान्तरे तु ना ।।८ ५।।

ऋ

ऋः शब्दः स्त्र्यादितौ स्वर्गेऽथाव्ययं वाक्यगर्हयोः ।
ऋक् स्त्रिया पद्यमात्रेऽपि भारत्यामपि कीर्त्तिता ।।८७६।।
ऋक्षो द्वयोरच्छभल्ले ना गुडद्रौ च शोणके ।
इन्द्रिये तु मतं क्लीबं नक्षत्रे पुनपुंसकम् ।।८ ।।
निर्लोम्नि तु त्रिऋक्षं स्यात्तथैव कृतवेधने ।
ऋक्षगन्धा तु शुक्लायां विदार्यां वृद्धदारके ।।८७८।।
ऋक्षरः कण्टकेऽपि स्यात् जलस्थाने तथर्त्विजि ।
ऋक्षरं वारिधारायां नपुंसकमुदाहृतम् ।।८ ९।।
ऋच्छरा वल्गुलौ ज्ञेया वेश्यायामपि च स्त्रियाम् ।
ऋजीकं क्ली भवेद्वज्रं ऋजीकऋषिमे पुमान् ।।८८ ।।
ऋजीषं पिष्टपचनसाधनेऽग्नौ च वैद्युते ।
ऋजुस्त्रिरव्युपन्ने त्रिगुणे वक्रेतरे बुधे ।।८८१।।
अशौ ऋजुः पुमानेष कैश्चिदेव प्रयुज्यते ।
ऋज्जसानः श्मशाने च वारिवाहमहेन्द्रयोः ।।८८२।।

---

१ ऋजीषमेतद्वाच्यो थ संस्कारहीन शब्दः—पक्षराज वाक्य १।१२

A उज्ज्वल उणा ।

ऋत नपुसक तोये शिलोञ्छे प्राप्तियज्ञया ।
गतौ सत्ये तद्वति तु त्रिपु प्राप्ते तथा ऋपौ ॥८८३॥
ऋतुवसन्तादिषट्के पुमान्मासि च कीर्त्तित ।
गर्भग्रहणयोग्ये च काले स्त्रीणा रजस्यपि ॥८ ४॥
ऋ मावसिते धान्ये समृद्ध क्ली समर्धने ।
ऋद्धि स्वनाम्नि वृद्ध्याख्ये चौषधे स्त्री च सपदि ॥८८५॥
ऋभुद्वयो सुरेऽथैष विदुषि स्यान्नलिङ्गक ।
पुमास्तु ब्रह्मपुत्राणां सनकादिकयोगिनाम् ॥८८६॥
ज्येष्ठे नारायणे चैव किरण जलदेऽपि च ।
ऋश्य पुस्यृषिभेदे स्यान्मृगजात्यन्तरे द्वयो ॥८८ ॥
ऋश्यजिह्व तु कुष्ठाख्यव्याधिभेदे नपुसकम् ।
समासे त्वस्य लिङ्गादि समुन्नेय प्रयोगत ॥८८८॥
ऋषभो वृषभे कर्णरन्ध्रे षडजादिमध्यगे ।
सगीतस्वरभेदे च मोभे च जिनान्तरे ॥८८९॥
एकाहक्रतुभेदे च सामभेदेषु केषुचित् ।
सूकरस्य च नक्रस्य पुच्छे भृङ्गाख्यभेषजे ॥८९ ॥
ऋषभध्वज एष स्याच्छङ्करे चाहदन्तरे ।
श्रेष्ठे च ऋषभा तु स्त्री स्यान्नराकारयोषिति ॥८९१॥
शूकशिम्ब्या शिरालायां विधवायां तथा मता ।
ऋषिर्वेदे वसिष्ठादौ चक्षुरादीन्द्रियेषु च ॥८९२॥
ज्ञानवृद्धे क्षपणके दीधितौ च पुमानयम् ।
ऋषिसृष्टा ऋद्धिनाम्नि भेषजे त्रि तु यौगिके ॥८९३॥
ऋष्यप्रोक्ता शतावर्यामृद्धिसज्ञे च भेषजे ।
आत्मगुप्तातिबलयोरोषध्योश्च स्त्रियामियम् ॥८९४॥
ऋष्वो महति हिंस्रे च त्रिररातौ तु पुस्ययम् ॥८९४क॥

ॠ

ॠ वाक्योपक्रमत्राणे वक्ष स्मृत्योस्त्वनव्ययम् ॥८९५॥

लृ

लृकारो देवताम्बायां भुवि कुभ्रे च कीर्त्तित ॥८९५२॥

ॡ

ॡकारो देवनार्यां स्यादामयपि च मातरि ॥८९६॥
देवाम्बाया दनौ चापि भैरवे दनुजे गतौ ॥८९६२॥

ए

ए स्मृतावप्यसूयानुकम्पामन्त्रणहूतिषु ॥८९ ॥
एक त्रि मुरयप्रथमसमाना याऽल्पके बले ।
नि यैकवचनस्त्वाद्यसख्यासरयेययोरयम् ॥८९८॥
पुस्येककुण्डल प्रोक्तो बलभद्रे धनाधिपे ।
प्रयोगमनुसृ यास्य लिङ्गयोगार्थ इष्यते ॥८९९॥
एकदण्ड ना यमे काके तु द्वयोस्त्रिस्तु काणके ।
एकदेशस्त्ववयवे यौगिके तु स लोकवत् ॥९ ॥
स्त्रियामेकपदी मार्गे यौगिकाऽर्थे तु लोकवत् ।
एद त वव्यय सद्योऽर्थे स्यादेकपदे इति ॥९ १॥
एकाक्षो वाच्यवत्काणे वायसे तु द्वयोर्मत ।
एकाक्षीला तु पाठाया शिवम ल्यां तु पुस्ययम् ॥९ २॥
एकाग्रमेकताने ना कुले स्वार्थे च वाच्यवत् ।
एकाङ्ग एकावयवे त्रि पुसि तु बुधग्रहे ॥९ ३॥
एकादश पूरणे येकादशी तु हरेस्तिथौ ।
तथैकादशतन्त्रीके वीणाभेदऽपि कार्त्तिता ॥९ ४॥
एकायन त्रिष्वेकाग्रेऽथ स्यादेतन्नपुसकम् ।
शास्त्रे भागवताना य कर्म्मारेष्वेव विश्रुतम् ॥९ ५॥
एकायनगतस्तु स्यादेकाग्रेऽप्येकमार्गके ।
एकाहमेकदिवसे क्लीब पुस्यध्वरेऽव्ययम् ॥९ ६॥

ज्योतिष्टोमादिकेष्वेकदिनसाध्येषु कीर्त्तित ।
त्रि कुत्सितादिवधिरे स्यान्मेषे चेडकाद्वयो ॥९ ॥
एडमूकोऽन्यलिङ्ग स्या छठ वाकश्रुतिवर्जिते ।
एणीकृतो वणदोप पुसि तद्वति तु त्रिषु ॥९ ८॥
आपादितणभावे च क्ली चेणीकरणे स्मृतम् ।
एत स्यात्कर्बुरे पुसि त्रि त्वेनी तद्वति स्मृता ॥९ ९॥
आगते तु त्रिलिङ्गैता क्लीब स्यादतमागते ।
एतश पुसि च द्रे द्रत्विक्षु द्वे तु तुरङ्गमे ॥९१ ॥
एतशास्त्वश्मनि द्वे ना वग्ना ब्रह्मणि होतरि ।
एधतुस्तु स्त्रिया लक्ष्म्या ना त्वग्नौ पुरुषऽपि च ॥९११॥
एधितो ना गिरिसरिद्वाहे क्लीब वने भवेत् ।
एधितु पावके शैले सागरेऽपि पुमा मत ॥९१२॥
एन पापेऽपराधे च सान्त क्लीबमुदाहृतम् ।
एलकस्त्वेलितयुक्त पुमाभारङ्गपादपे ॥९१३॥
एवौपम्ये नियोगे चावधारे वाक्यपूरणे ।
भवेद यमाचारनियोगे च विनिग्रहे ॥९१४॥
एवप्रकारे निर्लिङ्गमङ्गीकारऽवधारण ।
अनुप्रश्ने परकृतावुपमाप्त च्योरपि ॥९१५॥
एषण पुसि नाराचे नाराच्या त्वेषणी स्त्रियाम् ।
व्रणमार्गानुसारिण्या विशेषात्परिकीर्त्तिता ॥९१६॥
कुस्तुम्बुर्यामेषणाऽथैषणमप्येषण छते ।
ण्यन्तादक त्वेषण तदि छाया परिकीर्त्तितम् ॥९१७॥

ऐ

ऐशब्दो दृश्यते हूतौ स्मृत्यामन्त्रणयोरपि ।
ऐन्द्रिरिन्द्रसुते कृष्णकाकेऽपि कथितो द्वयो ॥९१८॥
ऐन्द्री पूर्वदिशि स्त्री स्याद्विशालानाम्नि भूरुहि ।
त्रि त्विन्द्रयागिनि पुमान्सर्वयज्ञ क्रतुष्वयम् ॥९१९॥

ऐम पुमान्हस्तिकर्कोटकवल्ल्या प्रकीर्त्तित ।
तत्फले क्लीबमेनी तु त्रिषु स्यादिभयोगिनि ॥९२ ॥
ऐरावतोऽभ्रमातङ्ग नारङ्गे लकुचद्रुमे ।
नागभद च पुसि स्या क्लीनारङ्गफलेऽपि च ॥९२१॥
लकुचस्य फले तद्वदृजुदीर्घे द्रकार्मुके ।
अश्विन्याद्यृक्षनवककलसवीथीत्रयात्मन ॥९२२॥
देवयानाध्वन खस्थ स्थानेऽथैरावती स्त्रियाम् ।
वीथ्यां पुनवस्वाद्यैश्च क्लसायामुड्डुमिस्त्राभ ॥९२३॥
विद्युत्सङ्घदयोश्चापि योगार्थे वभिधेयवत् ।
ऐश्वर क्ली चतुहस्तप्रमाणे श्रीश्वराश्रिते ॥९२४॥

ओ

ओ सबोधन आह्वाने सारण चानुकम्पने ।
ओक सान्त जलौकाया क्लीब मन्दिर आश्रमे ॥९२५॥
ओघ परम्पराया स्याज्जलस्रोतसि सचये ।
महाजलसमूहे च वाद्यादिद्रुतवर्त्तने ॥९२६॥
ओजो दीप्ताववष्टम्भे प्रकाशबलयोरपि ।
जले नपुसक सा त का यस्य च गुणान्तरे ॥९२ ॥
अद तमपि सान्त वा राश्यादौ विषमे त्रिषु ।
ओड्रस्तु तरुभेद ना प्रसवेऽस्य नपुसकम् ॥ २८॥
ओड्रा औड्राश्च पुभूम्नि भवेयुर्नीवृद तरे ।
ओतुर्द्वया स्यान्मार्जारे क्लीब सामा तरे स्मृतम् ॥९२९॥
ओदनोऽस्त्री भवेद ने क्ली मेघे काञ्जिके पुमान् ।
ओदनीति स्त्रियामेषा बलायां परिकीर्त्तिता ॥९३ ॥
ओम्मङ्गले च प्रणवेऽपाकृतावप्युक्रमे ।
तथाभ्युपगमे चैतदव्यय चेशवाचकम ॥९३१॥
ओलकस्तु पुमाञ्छाके काणमारिषसञ्ज्ञके ।
सितोपलाविशेषे च करकाया च कीर्त्तित ॥९३२॥

ओलिका धान्यभदे स्यादिय नीवारसज्ञके ।
ओ लस्तु स्मरणे पुसि स्यादार्द्रे वा यलिङ्गक ॥९३३॥
ओषो दाहे भवे पुसि क्षिप्रे तु त्रिषु कीर्त्तित ।
ओष्ठी रक्तफलाव यामोष्ठो द त छद पुमान् ॥९३४॥

औ

औ त्वेतत्कथित हूता तथा सबोधनेऽ ययम ।
स्त्री तु विश्रम्भराया स्यान्नि स्वने पुसि कीर्त्तित ॥९३५॥
औचि यमुचित वे स्या सत्यऽपि च नपुसकम ।
औजस का चने क्लीबमोज सम्ब धिनि त्रिषु ॥९३६॥
औदुम्बर कुष्ठरोगभद ताम्रऽपि नप्यथ ।
यमे च वानप्रस्थ ना तस्मिन्यस्तुर्यकालभुक ॥९३ ॥
षण्माससग्रही चाऽपि योगाऽर्थे त्वभिधेयवत् ।
औदुम्बरायणस्त्वाषभित्क्रतोद्वाहविप्रयो ॥९३८॥
औपरिष्टकमि येतत्कामशास्त्रक्रियान्तरे ।
ऊर्ध्वजे तु त्रिलिङ्गोऽय श द सपरिकीर्त्तित ॥९३९॥
औरभ्रो मेषसबद्धे त्रि पुमान्मेषकम्बले ।
औरसो द्वे निजे पुत्रे पुल्लिङ्ग सूक्ष्मनीरके ॥९४ ॥
उर सम्ब धिनि त्वौरसी लिङ्गत्रितये मता ।
और्वो ना वडवाग्नौ स्यादूवसम्ब धिनि त्रिषु ॥९४१॥
और्वशेयोऽगस्त्यमुनौ द्वयोस्तूर्वश्यपत्यके ।
औशीर चामरे शय्यासने दण्डेऽप्युशीरजे ॥९४२॥

क

को ब्रह्मणि समीरात्मयमदक्षेषु भास्करे ।
किं सर्वनाम्न क इति रूप प्रश्नादिवाचकम् ॥९४३॥
पतत्रिपार्थिवे पुसि कामग्रन्थौ च चक्रिणि ।
मयूरेग्नौ नगे देहे शब्दबुद्धिमन स्वपि ॥९४४॥

क तु क्लीब सुखशिर सलिलेषु प्रकीर्त्तितम् ।
ककुद क युन्नते श्रेष्ठ राजलक्ष्मवृषांसयो ॥१४५॥
स्त्री तु दक्षस्य पुत्र्या स्याद्भार्या धर्मस्य याऽभवत् ।
ककुदो स्त्री बलीवर्दस्कन्धयोर्मध्य उन्नते ॥१४६॥
प्रधाने राजाचिह्न च हस्तिमद्रेऽश्वकान्तरे ।
ककुदी तु पुमा षण्डे ककुदेन युते त्रिषु ॥१४७॥
ककुद्मान्वृषभे षण्डे पर्वते ऋषभौषधे ।
ककुद्मती स्त्रीश्रोण्या च छन्दोमदे च कीर्त्तिता ॥१४८॥
ककुद्मी वृषभ षण्डे गुरौ विष्णा नृपान्तरे ।
ककुद्वा वृषभे प्रद्युम्नपत्न्यां तु ककुद्वती ॥१४९॥
ककुबुष्णिग्दिशषे स्त्री भूभृत शिखरे दिशि ।
तथा प्रवेण्या शाभाया भार्या चम्पकस्रजि ॥१५ ॥
स्यादथैकान्नपञ्चाशद्रात्रे सत्रे च भूमनि ।
शास्त्रे च रागणीभेदे दक्षस्य दुहितर्यपि ॥१५१॥
ककुभोऽर्जुनवृक्षेऽपि रागभेद प्रसेवके ।
कक्खटी खटिकाया स्त्री कक्खट कठिने त्रिषु ॥१५२॥
कक्ष स्पर्धापदे बाहुमूले दर्गे तृणे वने ।
कच्छे वीरुधि कक्षा तु स्य तरीयपराञ्चले ॥१५३॥
केचित्त बाहुमूलेऽपि कक्षा स्त्रियमधीयते ।
कक्ष्या बृहतिकायां स्यात्काञ्च्या मध्येभव धने ॥१५४॥
अविशेषाद्वरत्राया साम्ये गेहप्रकोष्ठके ।
पार्श्वाद्यङ्गसमुद्भूतरोगभेदेऽङ्गुलावपि ॥१५५॥
कक्ष्यापालस्त्वौपरिके शूरपाले भवेत्त्रिषु ।
कक्ष्यावेक्ष्यक इत्येष शुद्धान्तोद्यानपालयो ॥१५६॥
रङ्गाजीवे कवौ षिङ्गे द्वा स्थे चैव प्रकीर्त्तित ।
कङ्को यमे छद्मविप्रे ना द्वयोर्लोहपृष्ठके ॥१५ ॥
कङ्कट पुसि कवचे चाऽङ्कुशेऽपि प्रकीर्त्तित ।
कङ्कण करभूषायां सूत्रे भूषणमात्रके ॥१५८॥

कङ्कणी तु स्त्रियां क्षुद्रघण्टिकायां प्रकीर्त्तिता ।
कङ्कणीका प्रतिसरे घण्टाजाले तु पुस्त्ययम ॥९५९॥
कङ्कती तु त्रिलिङ्गेऽय केशमाजनके भवेत् ।
द्वे त्वेकस्या तासा याश्वतस्त्र काकजातय ॥९६ ॥
कङ्कपत्रो वाणभेद योगिके लिङ्गमथत ।
ना सदशे कङ्कमुखो यागिके लिङ्गमथत ॥९६१॥
नियुताना शत तक्रे कङ्कर त्रि तु कुत्सिते ।
कङ्गु प्रियङ्गुके कङ्गुधान्ये ना कससोदरे ॥९६ ॥
कच केश गुरो पुत्रे बन्धे शुष्कव्रणेऽपि ना ।
नृजातिभद शतकीक्षत्रियप्रभवे द्वयो ॥९६३॥
कचपोता तिले पत्रे तथा शाकपलालयो ।
कचा करिण्या शोभाया स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥९६४॥
कचाकुस्तु दुराधर्षे दु शीले च बिलेशये ।
कच्चर कुत्सिते वाच्यलिङ्ग तक्रे नपुसकम ॥९६५॥
कच्चित्प्रश्ने मङ्गले च हर्षे कामप्रवेदने ।
कच्छोऽनूपे तुन्नकद्रौ पार्श्वे गुह्याम्बरे तथा ॥९६६॥
नान्दीवृक्षे च नौकाङ्गे कूर्माङ्घ्रौ स्थावरान्तरे ।
स्त्री वाराहीचीरिकयोर्नाषृङ्क्षेदे नृभूमनि ॥९६७॥
कच्छपो द्वे भवेत्कूर्मे मल्लबन्धान्तरे निधौ ।
स्त्री कच्छपी सरस्वत्या वीणायां क्षुद्ररुग्भिदि ॥९६८॥
कच्छघ्नी तु पटोले स्त्री तथैव हपुषान्तरे ।
कच्छरा स्त्री यवासे च तथा शाव्यात्मगुप्तयो ॥९६९॥
पामाभिस्तु युते तद्वत्पुश्चले कच्छुरस्त्रिषु ।
कज नपुसक पद्मे पीयूषे च प्रकीर्त्तितम् ॥९७ ॥
कज्जल त्वञ्जने कसोत्पलाख्ये च वनोत्पले ।
कज्जल स्यात्पुमान्मेघे कज्जली तु पराञ्जने ॥९७१॥
गन्धके मिश्रितरसे तथा स्त्री परिकीर्त्तिता ।
कज्जला कज्जलीत्येतद्द्वय मीनान्तरे मतम् ॥९७२॥

कञ्चुकोऽस्त्री वारवाण निर्मोके करभेऽपि च ।
वर्धापकगृहीताङ्गस्थितवस्त्रे च चालके ॥१ ३॥
स्त्रियामोषधिभेदे च क्षीरीशद्रौ च कञ्चुकी ।
कञ्चुकी तु द्वया सर्पे त्रिस्तु कञ्चुकसयुते ॥१ ४॥
ना विटेऽन्त पुराध्यक्षे जोङ्गके चणकेपि च ।
कञ्ज केशे विरिञ्चे ना कञ्ज वमृतपद्मयो ॥१ ५॥
कञ्जन कामदवे ना द्वयोर्मदनपक्षिणि ।
कञ्जरो जठरे सूर्ये विरिञ्चे वारणे मुनौ ॥१ ६॥
कञ्जारस्तु गृहे गूढे मणौ ना त्रिस्त्वशोभने ।
कटो ग्रामादिपर्य त किलिञ्जगजगण्डयो ॥१ ॥
शवे शवरथे श्रोणिफलके कालकूटक ।
वलये समये नाऽथ लवणऽधिभवे नपि ॥१ ८॥
स्त्री कटी श्रोणिपिप्प योश्चापाग्रेऽथ भृश त्रिषु।
कटकोऽस्त्री नितम्बेद्रद तिनां दन्तमण्डने ॥१ १॥
सामुद्रलवणे राजधान्या मलयसै ययो ।
हस्तमुष्टौ तु पुसि स्यात्स्त्रिया तु कटिका कृते ॥१८ ॥
सूत्रस्यूतशलाकाभिरायुधस्य निवारणे ।
परिमण्डलसस्थानद्रव्ये सपरिकीर्त्तिता ॥१८१॥
कटखादक इत्येष बलिपुष्टे च जम्बुके ।
खादके काचकलशे पुल्लिङ्ग परिका र्त्तित ॥१८२॥
कटप्रूर्ना शिवे विद्याधरराक्षसभेदयो ।
तथाक्षदेवने स्त्री तु भवेत्खेलगतावियम ॥१८३॥
कटभङ्गस्तु सस्याना हस्तच्छेदे नृपात्यये ।
कटभी वृक्षभेदेऽपि ज्योतिष्मत्यामपि स्त्रियाम ॥१८४॥
कटम्बो वाद्यभदेऽपि शरेऽपि च पुमानयम ।
कटम्भर स्यात्श्योनाके कटम्भ्यामपि चेष्यते ॥१८५॥
कटम्भरा प्रसारण्या रोहिण्या गजयोषिति ।
कलविङ्कया च गोलाया वर्षाभूमूवयोरपि ॥१८६॥

कटह्ट कणवति ना कालायसविनिर्मित ।
जलपात्रे तथवाऽय पज र्येऽपि प्रकीर्त्तित ॥१८७॥
कटाहो द्वीपभेदेऽपि तैलादे पाकभाजने ।
तिर्यच्छृङ्गे च महिपी तर्णके कर्मकपरे ॥१८८॥
कटि श्रोणा कटी च स्त्री पिप्प या चो यते कटी ।
कटित्र रशनाया च दन्तमूले च दा तनाम ॥१८९॥
कटु स्त्री कटुरोहिण्या लताराजिकयोरपि ।
कटुस्तु गुग्गुला पुसि लशुने टङ्कने तथा ॥१९ ॥
ऊषणार ये रसे चापि ग धे सारभ्यनामनि ।
त्रिस्तूक्तग धरसयारेकयुक्ते समत्सरे ॥१९१॥
तीक्ष्णकार्यप्रियेपु क्ली शुण्ठो च मरिचेपि च ।
कटुका कटुरोहि या योष तु कटुक मतम ॥१९२॥
कटकन्द पुमान् शिग्रौ शृङ्गबेररसानयो ।
कटुग्र थिर्भवे छृङ्गबेरपिप्पलिमूलयो ॥१९३॥
कटुतिक्तस्तु भूनिम्बे शोणऽपि च पुमान्मत ।
कटुतुम्ब्या स्त्रियामेषा कीत्तिता कटुतिक्तिका ॥१९४॥
कटूत्कट तु क्ली व्योषेऽप्यार्द्रके त्रि तु यौगिके ।
कटवङ्ग पक्षिभेदे द्रु ना टुण्टुद्दिलीपयो ॥१९५॥
कठो मुनौ तदार यातवेदाध्येतृकयो स्वरे ।
कठारस्तु भवेत् पिङ्गे शिल्पि यपि च पुस्त्रियो ॥१९६॥
कठिन निष्ठुरे स्त धे त्रिषु स्था यां तु नप् स्मृतम ।
कठिनी खटिकाया स्त्री कठिना गुडशर्करा ॥१९ ॥
कठि लक कारवे लफले ना तु कठिञ्जरे ।
पुनर्नवायां रक्तायां कारवेल्ले कठिल्लक ॥१९८॥
कडत्रवत्त क्लीबे स्यात्कलत्र श्रोणिभार्ययो ।
कडत्र तु नृपादीनां दुर्गस्थानेऽपि कीर्त्तितम् ॥१९९॥
कडम्बो यञ्जनीभूतशाकनाले द्रुमान्तरे ।
कदम्बे तु मत्त क्लीब प्रसवे तस्य शाखिन ॥१ ॥

कड्डार तु जले क्लीब रूक्षताशूलयोस्तु ना।
तथा कपिलवर्णे च तद्युक्ते त्वभिधेयवत ॥१ १॥
विषमीभूतदशने नि सारे द्व तु दासके।
कणोऽतिसूक्ष्मे बाण च तण्डुलावयवे च ना ॥१ २॥
अपसक्तुषु पुभूम्नि तदेकावयवेऽन्यथा।
कणा जीरककुम्भीरमक्षिकापिप्पलीषु च ॥१ ३॥
सूक्ष्मे च जीरके द्वे तु निषादादुद्रमिडीसुते।
कणप शरभदे च क्रतुभदे पुमा मत ॥१ ४॥
कणिका तिलमण्डे च गोधूमे तस्य चूर्णके।
कणे चैवाऽग्निमन्थ च स्त्रियामषा प्रकीर्त्तिता ॥१ ५॥
कणिक पटवासे ना कणिका स्त्री वनस्पते।
बीजेऽथ सा भवेद्भिन्नतण्डुलावयवे द्वयो ॥१ ६॥
कणीचि स्त्री लतायां च मनस्यश्वे तु सद्वयो।
कणीची पुष्पितलतागुञ्जयो शकटे स्त्रियाम् ॥१ ॥
कण रेम्या च वेश्यायां कणेर कणिकारके।
कणेरु कर्णिकारे च करिणीवेश्ययो स्त्रियाम ॥१ ८॥
कण्टकोऽस्त्री वृक्षसूचौ रोमाञ्चे क्षुद्रविद्विषि।
नैयोगिकादिदोषोक्तौ वेणौ म स्यादिकीकसे ॥१ ९॥
कण्टकद्रुम इत्येष शाल्मलौ कण्टकिद्रुमे।
कण्टका कण्टकमुखे स्त्रिया कीटान्तरे मता ॥१ १ ॥
कण्टकिन् तु त्रिलिङ्गो य कीर्त्तित कण्टकान्विते।
स्या कण्टकिफल पुसि पनसे गोक्षुरेपि च ॥१ ११॥
कण्टकी नारिमेदाख्ये मदनाख्ये च पादपे।
कण्टिका वत्तुवाकाख्ये ग्र थस्याशे स्त्रियां मता ॥१ १ ॥
कण्ठो गलेऽन्तिके पुसि ध्वनौ मदनपादपे।
कण्ठाला तु द्वयोर्द्रोणाग्रभेदे ना क्रमेलके ॥१ १३॥
कण्डार रक्तपद्मे क्ली नावर्णे सितकाचरे।
त्रिस्तु तद्वति वर्णश्च काचर कृष्णधूमल ॥१ १४॥

क ण्डुर कुन्दरकणे कारवे ल्ले च सूरण ।
कण्डुरा ऽत्यम्लपर्ण्या चात्मगुप्तायामपि स्त्रियाम ॥१ १५॥
कण्डूघ्न आरग्वधेऽपि तथा स्याद्गौरसर्षपे ।
कण्डूल सूरण पुंस त्रि तु कण्डूप्रयोजके ॥१ १६॥
कण्व पर्वणि भूपाया पापे मुन्य तरे तु ना ।
बधिरे तु त्रिलिङ्गोऽय मेधाविनि च कीर्त्तित ॥१ १७॥
कतस्तु कतके ऋष्यन्तरे चाथ कत जले ।
कत्तृण तृणभित्पुंस्यो कुत्स्या चैव नपुसकम ॥१ १८॥
कथ कथाप्रकारार्थे हर्षे प्रश्ने च सम्भ्रमे ।
सभावनाया गर्हाया चाऽव्यय परिकीर्त्तितम ॥१ १९॥
कथाऽऽख्याने च कथनेऽव्यय तु कथमथकम् ।
कथाप्रसङ्गो वार्त्ताया पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥१ २ ॥
कथाप्रसङ्गस्तु भवेद् वैद्यवातूलयोस्त्रिषु ।
कथर शकुनौ द्वे त्रि कथके कुहकेपि च ॥१ २१॥
कदन मदने पापे क्लीब स्यान्मारणे रणे ।
कदम्ब सर्षपे नीपे माक्षिके देवताडके ॥१ २॥
क्ली तु वृन्दे देवदालीलताया तु कदम्ब्यपि ।
कदम्बक समूहे क्ली ना सर्षपकदम्बयो ॥१ २३॥
कदर श्वेतखदिरे क्रकचे ना रुजान्तरे ।
कदला कदलश्चेति पृश्न्या स्त्रीपुसयोर्मतम् ॥१ २४॥
कदला डिम्बिकायां स्त्री शाल्मली भूरुहेपि च ।
कदल कदलीत्येतद्रम्भाया पुस्त्रियोर्भवेत् ॥१ २५॥
कदली करिकेतौ स्त्री चर्मयोनिमृगान्तरे ।
कदली तु बिले शेते मृदुरूक्षोच्चकर्बुरे ॥१ २६॥
नीलाग्रै रोमभिर्युक्ता सा विंशत्यङ्गुलायता ।
कद्रुर्नागजनन्या च भूमौ च स्त्री प्रकीर्त्तिता ॥१ २७॥
पुमांस्तु पिङ्गले वर्णे स्यात्तद्वति तु भेदवत् ।
कद्वर तु दधिस्नेहे तक्रे चापि नपुसकम् ॥१ २८॥

कनक काञ्चनारे च धुर्धूरे नागकेसरे।
किंशुके चम्पके चैव कालीये च बृहस्पतौ ॥१ २९॥
कनक प्रसवे प्रोक्त द्रुमाणा हेम्नि च स्मृतम्।
कनका सप्तजिह्वानामग्नेर्यैकात्र कीर्त्तिता ॥१ ३ ॥
छन्दोभेदे महा योतिष्मत्या च कनकप्रभा।
कनिष्ठोऽवरजेऽप्य पतमे युवतमे त्रिषु ॥१ ३१॥
कनिष्ठ कूप्यलवण कनिष्ठाऽल्पतमाङ्गुलौ ।
अवरोढानतिमभार्ययोश्च स्त्रियां मता ॥१ ३२॥
कनिष्ठक कनिष्ठे त्रि क्लीब शूकतृण मतम्।
कनिष्ठिका स्त्रियाम पतमायामङ्गुलौ स्मृता ॥१ ३३॥
कनीनस्तु त्रिलिङ्गोऽय तरुणे परिकीर्त्तित ।
कनीनको बालके स्यात्क यायां तु कनीनका ॥१ ३४॥
अक्ष्णस्तु तारकाया स्या पुंल्लिङ्ग ऽपि कनीनक ।
स्त्रिया कनीनकाऽप्येषा तथैव स्या कनीनिका ॥१ ३५॥
कनीनिका कनिष्ठायामप्यङ्गुल्यां स्त्रियां मता।
कनीयानतिपूति स्यादल्प पेऽवरजे त्रिषु ॥१ ३६॥
कनीयस क्ली ताम्रेऽथ स्यात्कनीयसि वाच्यवत्।
क तु पुसि कुसूलेऽपि कन्दर्पे च प्रकीर्त्तित ॥१ ३ ॥
कशब्दार्थवति त्वेष वाच्यलिङ्ग प्रकीर्त्तित ।
क था ग्रामे च मृद्भित्तौ बहुचीरकृताम्बरे ॥१ ३८॥
क थारी भेषजे स्थानभेदेपि परिकीर्त्तिता।
कन्दोऽस्त्री सूरणे मूलसस्यमात्रेऽम्बुद तु ना ॥१ ३९॥
कन्दरा त्रिर्गिरे र त्र स्त्युष्मजातुमृगान्तरे।
अङ्कुशे कन्दरस्त्वेष पुंल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥१ ४ ॥
कन्दरालोऽक्षोटगदभाण्डप्लक्षद्रुमेषु ना।
कन्दलस्त्रिकपाले चाप्युपरागे नवाङ्कुरे ॥१ ४१॥
कलध्वनौ गुल्मभेदे जिनयोनिमृगे स्त्रियाम।
कन्दली सा श्यामवर्णा हस्तायामा महोदरी ॥१ ४२॥

स्त्रीत्वे कपि कपी चात्र बभ्रुवर्णे तु वाच्यवत् ।
कपिञ्जलो द्वे चटके तथा पक्ष्यन्तरेऽप्यथ ॥१ ५७॥
ना पुण्डरीकामित्रेऽथ सरिद्ध्रदे कपिञ्जला ।
कपित्थस्तु दधित्थेऽपि तथा मुद्रान्तरेऽपि च ॥१ ५८॥
स्यावर्त्ते द्रुमे रक्तापामार्गे कपिपिप्पली ।
केचित्तु करिपिप्पल्यामप्याहु कपिपिप्पलीम ॥१ ५९॥
कपिप्रिय कपित्थाम्रातकयो प्रसवे तु नप ।
तयो कपिप्रिया तिन्त्रिणीके याग तु लोकवत् ॥१ ६ ॥
पुमान्कपिरथो रामऽप्यर्जुनेऽपि प्रकीर्त्तित ।
कपिलो मुनिभेदऽग्नौ वासुदेवे कडारके ॥१ ६१॥
कडारवर्णयुक्त तु त्रि स्त्री तु कपिला द्रुमे ।
स्याद्गङ्गाया च कपिलधारा तीर्थान्तरेऽपि च ॥१ ६२॥
वर्णे तुरुष्कनिर्यासे बभ्रवर्णे ककुभति ।
शिंशपासज्ञके बभ्रुवर्णाया सुरभावपि ॥१ ६३॥
हरेण्डभषजे विद्यग्निदिग्वासहस्तिन ।
करिण्यां पुण्डरीकस्य ब्रह्मरीत्यारयलोहके ॥१ ६४॥
जातिभेदे तथैकस्मि द्वा शाना जलौकसाम ॥
मन शिला रञ्जिताभ्या पार्श्वाभ्यामिव लक्षिता ॥१ ६५॥
पृष्ठे स्निग्धा दुग्धवर्णेयेव य लक्षण निदु ॥
द्वयोस्तु कुक्कुरोऽकप्यन्तरे मूषिकभेदयो ॥१ ६६॥
कपिलाक्षस्त्रियोगे स्त्री कीर्त्तिता शिंशपान्तरे ।
कपिश श्यावर्णे ना सिंहकेऽर्के तथा शिव ॥१ ६ ॥
कपिशा कपिशीत्येतन्माधव्या द्वितय मतम् ।
मध्यासवे तु कपिश कपिशा तु नद्याभिदि ॥१ ६८॥
जन या च पिशाचाना स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ।
कपिशीर्ष कपेर्मूर्ध्नि प्राकारशिखरेऽपि नप् ॥१ ६९॥
कपीतनो गर्दभाण्डप्लक्षे चाम्रातके तथा ।
शिरीषाश्वत्थयो पुसि क्लीबे तत्प्रसवे स्मृतम् ॥१ ॥

कपी यस्तु कापश्रेष्ठ क्षीरकापादपऽपि च ।
कपीन्द्रो जाम्बवद्विष्णुसुग्रीवहनुमत्सु च ॥१ ७१॥
कपीवान्नृषभदे नद्यन्तरे तु कपीनती ।
कपीष्ट स्यात्कापत्थऽपि पुमान्राजादनोप च ॥१ २॥
सुवाग्रे काकपक्षेपि कपुच्छल कपु सले ।
कपूत्तु पुसि मन्ऽपि रूप्य द्र यक्षु दृश्यत ॥१ ३॥
कपोत पक्षिमात्रेऽपि द्वया पारावत तथा ।
कुञ्ज्य लड्कतिभदे तु कग्मुद्रा तरे पुमान् ॥१ ७४॥
कपोतसदृश वर्णे स्या सौवीराञ्जनोप च ।
कपोतक कपोताऽर्थे पाराव या कपोतका ॥१ ५॥
कपोतकी स्त्री श्यामाया क्ली कपोताञ्जने मतम् ।
कपोतपाको योगार्थे नृभूत्वद्रिनृजातिपु ॥१ ६॥
कपोतवर्णी सूक्ष्मलाया योगे तु यथायथम ।
कपाताङिघ्र स्त्रियां विद्रुमवल्ल्या यागिके तु ना ॥१ ७॥
कपोल पुसि गण्डे स्त्री कपोली सक्थिचक्रके ।
कफघ्नी हपुषाभेदे योगे तु स्याद्यथायथम ॥१ ८॥
पिण्डी तगरवृक्षेपि योगार्थे कफवर्धन ।
मरिचे स्यात्कफविरोधि पिप्पल्याश्च तथा नपि ॥१ ९॥
कुलत्थस्त्री कफहरि श्लमघ्ने तु त्रिपु स्मृत ।
कफी द्वयोगजे स्त्रीवे कफिनी स्यान्नदीभिदि ॥१ ८ ॥
कफेलू श्लेष्मातके नाच्छादिषेय तृणे स्त्रियाम ।
कबन्धोऽस्त्र्यप्सु काये च क्रियायुक्तेऽपमूर्धके ॥१ ८१॥
उदरेऽप्यथ ना राहौ तथा रक्षोन्तरे मत ।
सांख्यमेद्योदरकृतू राहुरक्षोन्तरेष्वपि ॥१ ८२॥
केतूनां या षण्णवतिवराहोक्ताऽत्र च क्वचित् ।
ना तु गन्धवभेदेऽप्याथर्वणेऽपि कश्चिन्मत ॥१ ८३॥
कबन्धी कात्यायने स्यान्मरुतस्तु कबन्धिन ।
कपशुमायां तुङ्गर्यां च पृथ्व्यां स्त्रीवाष्पिकौषधौ ॥१ ८४॥

केशविन्यासभेदेऽथाम्ले चित्रे लवणे च ना।
कबरस्तु त्रिलिङ्गः स्यादुक्तवर्णरसान्विता ॥१८५॥
कम् सुखार्थेऽपि सुष्ठवर्थे कुत्सामायशिरोम्बुषु।
वागलकरणे चापि प्रयुक्तं मान्तमव्ययम् ॥१८६॥
कमठः कच्छपे शल्ये द्वयोस्त्रिषु तु वामने।
अस्त्री भिक्षाभाजनेऽथ ना वेणा कूर्मकर्परे ॥१८ ॥
कमण्डलुः स्यात्करके न स्त्री ना प्लक्षपादपे।
चतुष्पाज्जातिभेदे तु द्वयोरेषा कमण्डलूः ॥१८८॥
कमनो ना स्मरब्रह्माऽशोके त्रीरम्यकामिनो।
कमनीयश्चम्पकद्रौ त्रिस्तु कामयितव्यके ॥१८९॥
कमरः कामुके चैव तथा मूर्खेऽभिधेयवत्।
कमलः पद्मताम्राम्बुस्थौणेये रक्तपङ्कजे ॥१९ ॥
क्लोम्नि चर्मणि हेमाद्यैश्चित्रते छुरिकादिन।
नक्षत्रसंख्यान्तरयोर्भेषजेऽपि नपुंसकम् ॥१९१॥
अथ द्वयोः सारसे च कमलः स्यान्मृगान्तरे।
नागरङ्गे तु कमला लक्ष्म्यां चैव वरस्त्रियाम् ॥१९२॥
पुमांस्तु ब्रह्मणि तथा संगीतध्रुवकान्तरे।
न तु ना कमली छन्दोभेदेऽपि कमले तथा ॥१९३॥
विरिञ्चौ पुंसि कमलगर्भो यागे यथायथम्।
नाऽम्भोजपत्रं कमलच्छदो द्वे कङ्कपक्षिणि ॥१९४॥
पद्मासने स्यात्कमलासनं ब्रह्मणि पुंस्ययम्।
कम्पनं तद्द्वयोः कम्पे कम्प्रे स्यादभिधेयवत् ॥१९५॥
कम्बलस्तूत्तरासङ्गे गोसास्नायां तथा कृचित्।
पार्वताभक्तभिन्नागभेदयोः क्लीबमम्बुनि ॥१९६॥
कम्बली करिणि सञ्जनायां स्यात्त्रिस्तु रल्लके।
कम्बिरंशे च वंशस्य खजाकायामपि स्त्रियाम् ॥१९ ॥
क्लीबं स्यात्पण्डके न स्त्री वान्यलिङ्गस्त्वविक्रमे।
कम्बुर्गजे द्वे त्रिषु तु शङ्खे संख्यान्तरेऽपि च ॥१९८॥

वलये तण्डुलकण शम्बूके च प्रकीर्त्तित ।
कम्बू स्त्री कुरुचि द स्यात्कृपण च त्सरावाप ॥१ ९९॥
कम्बाजास्तु नृभूनि स्तुर्देश ना त्वस्य राजनि।
शङ्खऽप्यये वस्य राज्ञो द्वयास्तद्वङ्गजान्तर ॥१८ ॥
कम्रा कशाया कम्रस्तु रम्ये त्रि कमितयपि।
करो वर्षोपले रश्मा पाणावश च शासतु ॥११ ॥
मुद्राविक्षपार्हसेभशुण्डाघ्रलशालिषु ।
प्रत्याये थ कर क्लीब मधकार्मुक इ यत ॥८ ॥
करकस्तु कमण्डल्वा वर्कया चास्त्रिया मत ।
करङ्क तु पुमाश्चाम्र दाडिमऽप्यथ त फले ॥११ ३॥
क्लीब द्वयोस्तु करका पक्षिभेदऽम्बुदापले ।
करङ्को मम्त केशस्य नारिकेलफलास्थनि ॥११ ४॥
पु लङ्गो मासरहिते ताम्बूलादव भाजने ।
करच्छदा तु सि दूरपुण्या शाखोटके तु ना ॥११ ५॥
करजो ना नख चव करञ्जारयतरावपि ।
करज क्ली तत्प्रसवे तथा व्याघ्रनखापधा ॥११ ६॥
करञ्जो वृक्षभेदऽपि दत्यभदऽपि कीर्त्तित ।
करञ्जिका करञ्ज द्वे भृङ्गराजे करञ्जक ॥११ ॥
करटो गजगण्डे ना बिल्वे श्राद्धे च नूतने ।
वाद्यभेदऽथ करट कुङ्कुमे क्लाबमुच्यते ॥११ ८॥
द्वयोस्तु काके त्रिददुरूटे ब्रात्यसतजीवने ।
करटा तु स्त्रिया दु खदोह्याया स्मर्यते गवि ॥११ ९॥
करण कारण काये साधने कमणीन्द्रिये ।
क्षेत्रेऽपि साधकतमे नाट्यगीतिप्रभदयो ॥१११ ॥
रतबन्धे तथा योति शास्त्रज्ञानाश्च कुत्रचित् ।
ग्रहवारर्क्षयागषु तथा पद्मासनादिषु ॥१११९॥
स्पृष्टाद्युच्चारणभिदि द्वे तु शूद्रविशो सुते ।
करण्डो मधुककोशासिसमुद्गषु दलाढके ॥१११२॥

स्त्री करण्डी पुटीसञ्ज्ञपात्रे द्रु विहगान्तरे ।
करपत्र क्लो क्रकचे करपात्रेऽपि कीर्त्तितम् ॥१११३॥
करपर्णो भवेद्रक्तैरण्डे भिण्डाद्रुमेऽपि च ।
करप लव उक्तो ना बाह्यवस्त्री मृदौ करे ॥१११४॥
करपालो मत खड्गे करस्य त्रिषु पालके ।
करपाली स्त्रियामीलीसञ्ज्ञ शस्त्रे पुमा पुन ॥१११५॥
करभो मणिब गादिकनिष्ठा ते करस्य ना ।
आतपे धा यपवने द्वे बालोष्ट्रे च गद्भ ॥१११६॥
कपि थे पीलुवृक्षे च भवे करभव लभ ।
करभी स्यादुष्ट्रप यां वृश्चिका यामपि स्त्रियाम् ॥१११७॥
करमद कृष्णपाकवृक्षे त प्रसवे तु नप ।
करमर्दी स्त्रिया कृष्णपाकजात्य तरेऽल्पके ॥१११८॥
करम्ब सेक्रमिश्रान्ने ना त्रि मिश्रे सुमे तु नप् ।
करम्भी पात्रभेदे स्या करम्भो दधिसक्तुषु ॥१११९॥
करवीर कृपाण ना दै यभेदाश्वमारयो ।
करवीयदितिश्रेष्ठगवी पुत्रवतीषु च ॥११२ ॥
मन शिलायां तु भवे करवीरा स्त्रिया तथा ।
आढकीसञ्ज्ञधा येऽश्वमारद्रुप्रसवे तु नप् ॥११२१॥
करहाट पद्मशिफाक दे च मदनद्रुमे ।
पुष्पजातौ देशभदे नृभूम्नि प्रसने तु नप् ॥११२२॥
करालो द तुरे तुङ्गे विशाले निकृतेऽपि च ।
कडारगण युक्ते च भीषणे चाभिधेयगत् ॥११२३॥
ससर्जरसतले तु कालमाले गुण च ना ।
कडारारयेऽथ त क्लीब मत कु णकुठेरके ॥११२४॥
चर्मकोशे कराली तु दष्ट्राभेदे च भोगिन ।
अग्निजिह्वाविशेष च पाव यां च स्त्रिया भवेत् ॥११२५॥
करालिको द्रुभेदेऽसौ दुर्गायां तु करालिका ।
करी गजे मनुष्ये च द्वयो कत्तरि तु त्रिषु ॥११२६॥

करीर कवुराख्ये ना वृक्षे वशाङ्करे घटे।
करीरी चीरिकाया स्त्री दन्तमूले च दन्तिन ॥११२ ॥
अरके तु गजस्यप करीरो वान्यन्मत ।
करुणा क्लेशव लोकालोकन तु भवे मुने ॥११ ८॥
करुणो रसभदे च छागवृक्षे पुमान्मत ।
द्न्य तु करुण क्लीव करुणाविषये त्रिषु ॥ ११२९॥
करूशस्तण्डुलकण कुशूले क्षत्रियान्तरे।
नीवृद्भेदे तु पुभूम्नि करूशा इति कीर्त्तिता ॥११३ ॥
करूषको मनोर्वैवस्वतस्य तनया तरे।
करूषक क्लीबलिङ्ग फलभेदे प्रकीर्त्तितम् ॥११३१॥
करेणु कर्णिकारद्रौ गजेऽपि च पुमान्मत ।
करेणुरभ्या स्त्री प्रोक्ता तथव स्या त्लता तरे ॥११३ ॥
करोट वस्त्रकोशेऽथ द्वयोर्भृत्ये प्रयुज्यते।
करोट च करोटी च कपाले शिरसो भवेत् ॥११३३॥
करोटी स्त्री घनाम्लायाञ्चाकुन्या परिकीर्त्तिता।
कक कर्के राशिभेदे शुक्लाऽश्वे दपणे घटे ॥११३४॥
कर्को नाऽग्नौ सितेऽश्वस्य वर्णे द्वे तु सिते हये।
ककटो द्वे कुलीरे स्या कङ्कसज्ञे च पक्षिणि ॥११३५॥
कर्कटी देवदाल्यां स्त्री वाल्क्या शान्मलीफले।
राशौ तु मेषतस्तुर्ये ऽपि ङ्ग कर्कटो मत ॥११३६॥
आरोह्यायास्तुलायाश्च तथैवावयवान्तरे।
कर्कटाह्वा कर्कटशृङ्ग्यां बिल्वे त पुमानयम् ॥११३७॥
कर्कन्धू पुंस्त्रियो क्रोष्टुकदर्याम्परिकीर्त्तिता।
व्रणे बदर्यां विष्टम्भे रथादीनां युगे तथा ॥११३८॥
स्त्री तु मध्वाज्यससिक्तयवलाजजतर्पण ।
कर्करो भाण्डभेदेऽस्थ्नि पाषाणे दर्पणेऽपि ना ॥११३९॥
दृढे तु भेद्यलिङ्गोऽथ कर्करी करके स्त्रियाम्।
कूष्माण्डकालिङ्गयोर्ना कर्करुस्तत्फले तु नप् ॥११४ ॥

कर्कश काशमर्दासिकाम्पिल्येक्षुपटोलके ।
कर्कशी बदरीभेदे नरकोलीति विश्रुते ॥११४१॥
त्रि तु क्रूरे खरस्पर्शे दये साहसिके दृढे ।
पटोले कर्कशफलो दुग्धावृक्षे स्त्रियामसौ ॥११४२॥
कर्कोटो नवनीते ना मिश्रे नवविलोलिते ।
तक्रे महीरुहे चैव पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥११४३॥
कर्कोटो नागभदेऽपि सविषौषधभिद्यपि ।
कर्कोटक स्या मालूरका वेयप्रभद्यो ॥११४४॥
कर्कोटकी पीतघोषा तथा कटुफला स्मृता ।
कर्ण क्षेत्रा तरे श्रोत्रे क्षुद्रे नि श्रोत्रके पशो ॥११४५॥
नौकापृष्ठस्थिताऽरित्रे राधेये कनकावली ।
कर्णपूर तु कथित क्ली सौगन्धिक उत्पले ॥११४६॥
शिरीषतिलकाशोककर्णालकरणेषु ना ।
कर्णपूरणमुक्त क्ली मुस्ते च श्रोत्रपूरणे ॥११४ ॥
अर्थे पूरयते कर्णपूरणा क्लीस्त्रियोर्मता ।
कर्णा धूरुक्षिप्तिकाय्ये कर्णालङ्करणा तरे ॥११४८॥
तथैव कर्णपाल्यामप्येषा स्त्रीलिङ्ग इष्यते ।
कर्णिका मध्यमाङ्गुल्यां कर्णालङ्करणेऽपि च ॥११४९॥
करिहस्ताङ्गुलौ वप्रबीजकोश्यामपि स्त्रियाम् ।
क्रमुकादि छटाशे स्त्री रोगभेदेऽपि कीर्त्तिता ॥११५ ॥
कर्णिकार पुमानारग्वधद्रौ च द्रुमोत्पले ।
कर्णी तु पशुबन्धार्था रज्जुभेदे स्त्रियां मता ॥११५१॥
कर्त्तन छेदनेऽश्वस्य लुठने सूत्रनिर्मितौ ।
नापितस्योपकरणे कर्त्तनी कर्मिकाभिधे ॥११५२॥
स्यात्क्रियायां कर्त्तयते कर्त्तन कर्त्तनेति च ।
कर्त्तरी स्त्री कृपाण्यां च बाणपुङ्खे च कीर्त्तिता ॥११५३॥
कर्त्ता ब्रह्मणि भव्यद्रौ ना स्वतन्त्रेऽपि कारके ।
कारके तु त्रिषु प्रोक्त कर्त्त भव्यफले नपि ॥११५४॥

कर्दट करहाटे स्या पङ्कपङ्कारयोरपि ।
कर्दनी चैत्रपूर्णाया कदन कुत्सित रने ॥११५ ॥
कर्दमोऽस्त्री मन पङ्क पङ्कारेऽप्ययमिष्यते ।
कर्परो ना घटादीना शकले च शिराऽस्थनि ॥११५६॥
कपालाख्ये कटाहे च क्षुपाङ्ग चायुधान्तरे ।
रजाञ्जने कर्परीति स्त्रियामपि प्रयुज्यते ॥११५७॥
कबुदार काञ्चनारे नीलझिण्ट्या तथा पुमान् ।
कर्बुर क्ली जले हेम्नि ना तु चित्र हरित्सिते ॥११५८॥
पापे रक्षसि शट्या च त्रि तु तद्वर्णयोगिनि ।
तथा तद्वर्णसुरभौ पुन स्त्री कर्बुरा तथा ॥११५९॥
जलौकाजातिभेदे च सविष यस्य लक्षणम् ।
या छिन्नोन्नतकुक्षि स्याद्वर्मिमत्स्यवदायता ॥११६ ॥
सविषा कर्बुरा नाम जलौका सा प्रकीर्तिता ।
अथ कर्मकरो भृत्ये वेतनाजीविनि त्रिषु ॥११६१॥
ना कीनाशेऽथ मूर्वाया बिम्बिकायामपि स्त्रियाम् ।
कर्मण्या स्त्री भृतौ कर्मसाधुसपादिनोस्त्रिषु ॥११६२॥
कर्मास्त्र्यथप्रयोगे च क्रियाया तनये मखे ।
शिल्पे पापे च पुण्ये च कर्त्रीप्सिततमादिके ॥११६३॥
कारके भव्यथूक्षे च फले वस्य नपुसकम् ।
अथ कर्मफल कर्मरङ्गकर्मविपाकयो ॥११६४॥
कर्मारा ना कर्मरङ्गे तथा वेणावयस्कृति ।
कर्मी हाटकपुत्र्यां स्त्री तथा शालापलालयो ॥११६५॥
कव कामे पुमानुक्तो निष्पत्रिक्षेत्र एव च ।
कर्वटोऽस्त्री भवेत्क्षुद्रग्रामे द्रोणमुखाभिधे ॥११६६॥
कवरी स्त्री शिवाभूम्यो कर्वर शबले त्रिषु ।
द्वे व्याघ्ररक्षसोर्ना तु देशे पापेऽञ्जलावपि ॥११६७॥
कर्शनो नाशने त्रि स्यादग्नौ पुसि प्रकीर्तित ।
कर्षोऽस्त्री पलतुर्येऽथ कर्षणे ना बिभीतके ॥११६८॥

कषकोऽङ्गारके ना त्रि कष्टर्येपि कृषीवले।
बिभीतके कषफलोऽथामलक्यां स्त्रियामियम् ॥११६९॥
कर्षी त्रि कषके चैव हारिण्यपि च वाच्यवत्।
कृषके द्वे कार्षिणौ तु क्षीरिण्या कर्षणी तथा ११ ॥
कर्षू पुमान्करापाग्नौ स्त्रिया कु येष्टिखातयो ।
कलस्त्वस्फुष्ठसस्पर्शे वीणात त्रीषु सौ॰मे ॥११ १॥
पुष्पस्थ तिलकस्याथ त्र्य यक्तमधुरध्वनौ।
मूकेप्यजीर्णे शुक्रे तु कल क्लीबमुदीरितम् ॥११ २॥
कलकण्ठ पिके हसे कपोते द्व त्रियौगिके।
कोलाहले कलकल सालनिर्यासके शिवे ॥११ ३॥
कलक्वाणस्तु दा यूहे भ्रमरे द्वे त्रि यौगिके।
कलङ्कष स्या सिहऽप करता या तथा पुमान् ॥११ ४॥
कलङ्गो ना तमाखो च दिग्धबाणाहते पशौ।
कलत्र दुगदेशे भूपादेश्च श्राणिभार्ययो ॥११ ५॥
कलधौत सुवर्णे च रजते च नपुसकम्।
कलध्वनि पुमा पारावते पिकमयूरयो ॥११ ६॥
कलभ करिपोते च करमेऽपि द्वयोर्मत ।
स्त्रिया तु कलभी प्रोक्ता धुस्तूरे चव्युभेषजे ॥११ ७॥
कलम शालिभि चौराङ्कुरलेखनिकासु ना।
कलम्ब शाकनाले च बाणे चाऽपि पुमा मत ॥११ ८॥
कलम्बी शाकभेदे यस्त्रीस्तम्बे शतपर्वणि।
पिके कलरव पारावते च द्वे त्रियौगिके ॥११७९॥
कलल चर्मकोशेऽस्थि क्लीबमस्त्री वयामले।
उ बे ताम्रघटे किट्टे गर्भावस्था तरेऽपि च ॥११८ ॥
कलविङ्को द्वे चटके तद्वदे पीतमुण्डके।
कलश कलशी कुम्भे द्वे ना द्रोणाख्यमानके ॥११८१॥
स्थाल्या तु दधिमन्थ या कलशी परिकीर्त्तिता।
कलशिर्भेषजस्तम्बे पृश्निपर्णीति विश्रुते ॥११८२॥

दधिमन्थनगगयोमपि स्यात्कलशि स्त्रियाम् ।
कलशादक इत्येष पुमानम्लानसञ्ज्ञिन ॥११८३॥
स्तम्बस्य भदे स्या छोणपुष्पे झाटाक्रतावथ ।
कलशस्य जले क्लीब कलशोदकमिष्यते ॥११८४॥
कलहसस्तु कादम्बे राजहसेऽपि च द्वयो ।
कलहसस्तु पुल्लिङ्गश्छन्दाभद्राजहसयो ॥११८५॥
कलहो युधि च द्वन्द्वे खड्गकोप च भण्डने ।
कलहप्रिय इत्येष नारद स्त्री तु सारिका ॥११ ६॥
कले दो षोडशाशे चाप्यशेऽन्ययवमात्रके ।
वैशिके कलनाया च देहधात्व तरे तनौ ॥११८७॥
त्रिश काष्ठाप्रमाणे च काले वृद्वा णस्य च ।
कुड्यच्छादि सधिमन शिलयोर्गीतिशि ल्पयो ॥११८८॥
कलाङ्कुरस्तु कसेऽपि पक्षिभेदेऽपि कीर्त्तित ।
कलाचिक पुमान्दव्र्या प्रको‌ष्ठ स्त्री कलाचिका ॥११८९॥
कलाधर शशाङ्केऽपि शिवेऽपि परिकीर्त्तित ।
कलाऽनुनादी रोलम्बे कलविङ्क कपिञ्जले ॥११ ॥
कलाप सहतौ बर्हे काञ्च्या भूषणतूणयो ।
चन्द्र विदग्धे प्रत्नाङ्गिरसे व्याकरणान्तरे ॥११९१॥
कलापको ना कलमशालौ क्ली विश्वभेषजे ।
कलापक चतुर्णा च पद्याना साद्धमन्वये ॥॥११९२॥
कलापी द्वे मयूरेऽथ ना पकट्या शिवेऽपि च ।
कलापिनी स्त्री पार्वत्या कलापवति तु त्रिषु ॥११९३॥
कलापी कणिशे स्त्री स्यात्तथाकणिशपूलके ।
कलापूर्णस्त्रिकलया तुर्ये चन्द्रे तु पुस्त्ययम् ॥११९४॥
कलाया गण्डदूर्वाया कलाय कालपुष्पके ।
कलालापो द्वयोरुक्तो भ्रमरे त्रि तु यौगिके ॥११९५॥
कलिर्नेषौ रणेऽनर्थे कलघातौ बिभीतके ।
तत्फलेऽन्त्ययुगाऽलक्ष्म्योर्विवादे स्त्री तु कोरके ॥११९६॥

कलिकारस्तु धूम्याटे करञ्जे पीतमस्तके ।
नारदे कलिकारी तु लाङ्गल्या परिकीर्त्तिता ॥११९ ॥
कलिङ्ग पूतिकरजे नृपभदे च पुस्ययम् ।
अपत्येषु बहुष्वस्य भूम्नि चैषा च नीवृति ॥११९८॥
द्वे तु धूम्याटविहगे स्यात्कलिङ्गा तु नप्स्त्रियो ।
फले कुटजवृक्षस्य महिलाया तु योषिति ॥११९९॥
कलित श्याप्तविहितसख्यातज्ञातसयते ।
कलिन्दोऽक्षद्रुमे सूर्ये चाऽद्रिभेदे पुमान्मत ॥१२ ॥
कलिन्दी तु स्त्रियामेषा यमुनाया प्रकीर्त्तिता ।
कलिप्रयो नारदे ना वानरे तु द्वयोमत ॥१२ १॥
कलिल गहने त्रिर्ना समूहे कायपापयो ।
गाम्भीर्ये सगतेऽप्या माऽधष्ठिते शुक्रशोणिते ॥१२ २॥
कलुष स्यादघे क्लीब कलुषो महिषे द्वयो ।
सूक्ष्मलायां तु कलुषी स्त्री त्रिषु त्वाविले भवेत् ॥१२ ३॥
कृष्णे तु वर्णे कलुष पुसि तद्वति मेघवत् ।
कलेवर तु कायेऽपि शवेऽपि च नपुसकम् ॥१२ ४॥
नवानां शम्भुशक्तीनामेकस्यां स्या कलेवरा ।
कल्कोऽस्त्री घृततैलादिशेषे दम्भे बिभीतके ॥१२ ५॥
पापे चौषधपिष्टे च तथा स्या किट्टविष्ठयो ।
कल्कस्तुरुष्कनिर्यासे ना त्रि पापाशये मत ॥१ ६॥
क पो देवद्रुमे न्याये सवत्तब्रह्मणो दिने ।
बिभीतके विक ्पे च सामर्थ्ये वर्णने विधौ ॥१२ ७॥
कारणौपम्याऽधिवासच्छेदशास्त्राऽन्तरेषु च ।
चिकित्साक्रमभदे च क्वचिज्जन्मा तरेऽपि च ॥१२ ८॥
कल्पन तु मत क्लीब क्लृप्तौ च छेदनेऽपि च ।
कल्पना स ्जनाया स्त्री कारिण परिकीर्त्तिता ॥१२ ९॥
क पना तु क्रियाया सा न ना कल्पयतेर्भवेत् ।
कल्मष किल्बिष क्लीब पुसि स्या नरका तरे ॥१२१ ॥

कल्माषो यातुधाने च वर्णे स्यात्कृष्णपाण्डुरे ।
कृष्णे च शबले वर्णे तद्वति त्वभिधेयवत् ॥१२११॥
क्लीबं त्वारण्यके साम्नि कयानश्चित्र इत्यृचि ।
सर्पसामाह्वये गीते कल्माषं परिकीर्त्तितम् ॥१२१२॥
कल्यस्तु नीरुजि त्रि स्याद्दक्षे कल्याणवाचि च ।
सज्जे च क्ली त्वतीतेऽह्नि लग्ने चाहर्मुखेऽपि च ॥१२१३॥
स्त्री सुरायां क्वचित्त्वेष त्रिषु वाक्श्रुतिवर्जिते ।
कल्याणं तूत्सवे क्लीबमक्षयस्वर्गरुक्मयोः ॥१२१४॥
मङ्गले स्वर्णपत्रे च श्वेतां च परिकीर्त्तितम् ।
कल्याणी क्ष्मागिरिजयोर्वाच्यवत्त्वक्षये शुभे ॥१२१५॥
कल्याणा चापि कल्याणो स्त्री चेऽयाथद्वये भवेत् ।
कल्याणकं शुभं कल्याणिका तु स्यान्मनःशिला ॥१२१६॥
कल्याणिनी बलायां स्त्री कल्याणी त्रि शुभान्विते ।
कल्लोलः पुंसि हर्षे स्यान्महोर्मौ च रिपावपि ॥१२१७॥
कवचः पटहे चैव नान्दीवृक्षे तथा पुमान् ।
पुंनपुंसकयोस्त्वेतत्संनाहे कवचं मतम् ॥१२१८॥
कवटः कवटी च द्वे पुंल्कमी शूद्रसम्भवे ।
कवटं क्लीबमुच्छिष्टं भक्ताद्ये ऽन्ने च कीर्त्तितम् ॥१२१९॥
कवारं पाक्षभेदे स्यात्कवारं कमले मतम् ।
कविः शुक्रे च वाल्मीकौ कृतकोटिमुनौ च ना ॥१२२०॥
स्त्र्यङ्गुलित्रे खलीने च विद्वत्का यकृतोस्त्रिषु ।
स्यात्कव्यवाहनोऽग्नौ ना विशेषात्पितृपावके ॥१२२१॥
कशा स्त्री वाजिताड्यां द्वे तु लोमशपुच्छके ।
नकुलस्य प्रभेदेऽपि डिंभि कीवैश्यजे सुते ॥१२२२॥
कशिपुः शयने वस्त्रेऽन्ने चाऽस्त्री तदूद्वये कुथे ।
कशेरुः स्त्रीनपो पृष्ठस्यास्थनि क्लीबकं पुनः ॥१२२३॥
स्तम्बप्रभेदे सजले पङ्करूढे कशेरुवथ ।
वशावेश्याकर्णिकारे कशेरू परिकीर्त्तिता ॥१२२४॥

कश्मल मलिने त्रि स्या क्लीब मोहपुरीषयो ।
कश्मीरज कुङ्कुमे स्यान्त्रि तु कश्मीरसम्भवे ।१२ ५॥
कश्य त्रिषु कशाऽर्हे स्या क्लीब मद्याऽश्ववध्ययो ।
कश्यपो मुनिभदे ना द्वे कूर्मे त्रिस्तु मद्यपे ।१२ ६॥
कशाकुरग्नौ सूर्ये च पु लङ्ग परिकीर्त्तित ।
कषायस्तु वराभिरयरस क्वाथरसे तथा ॥१२२ ॥
निर्यास सौरभ च स्यादनुगङ्गरागयो ।
रागद्रव्ये रक्तवर्णे रक्तपीतद्वया मक ॥१२२८॥
मिश्रवर्णे तथा क्राधलाभादौ मद्यव पुन ।
रक्तवणयुते रक्तपीतवर्णद्वयान्वित ॥१२२९॥
सुरभौ तु वरारयन रसन च समन्विते ।
कषायी शालखजूरी लकुचे ना त्रियोगिके ॥१२३ ॥
कषिनिकषपाषाण धातो स्यात्कषतावपि ।
अश्वकणारयवृक्षे च काष्ठऽपि च तथा पुमान् ॥१२३१॥
कषीका मक्षिकाया स्त्री कषीक क्ली खनित्रके ।
कषुस्तु ना करीषाग्नौ स्त्री कुल्यातुषकोष्ठयो ॥१२३२॥
कष्ट तु गहने कृच्छ्र त्रिष्वसत्त्वे नपुसकम् ।
कसो ना पूर्वभूपालमदे कृष्णस्य मातुले ॥१२३३॥
पानपात्राऽन्तरे वस्त्री लोहे घोषारय आढके ।
हसे स्त्रीपुसयारेष कस सपरिकीर्त्तित ॥१२३४॥
कस्वर तु धने क्लीब त्रि स्या कसनशीलके ।
कांस्योऽस्त्री वाद्यभित्पानपात्रघोषारयतजसे ॥१२३५॥
काको द्वे वायसे ना तु वृक्षभित्पाठसर्पिणो ।
शिरोऽवक्षालने लौ ये मानभिद्द्वीपभेदयो ॥१२३६॥
काक क्ली रतव धाऽन्तरेऽपि स्या काकसहतो ।
काकजङ्घा षडस्रेतिप्रसिद्धस्थावरान्तरे ॥१२३ ॥
गुडासमारयवल्ल्या स्त्री जङ्घाया करटस्य च ।
काकणी मानदण्डस्य माषस्य च पणस्य च ॥१२३८।

काकिणी क किनी वा ।

तुर्येऽश पादुकायां च कपर्दानां च विंशता ।
एकांसश्च कपर्दे स्यात्कृष्णलेऽपि स्त्रियामियम् ॥१ ३९॥
काकतुण्डी तु तापिञ्छे काकतुण्डाऽगुरौ पुमान् ।
काकनासा पुष्पगुल्मे वसुभद्राभिधे स्त्रियाम् ॥१ ४ ॥
काकाङ्गवल्ल्यां काकस्य नासिकायां च कीर्त्तिता ।
काकपीलुस्तु काकेन्दौ ना गुञ्जायां स्त्रियामियम् ॥१ ४१॥
त्रिलिङ्ग एष कथितः काकपीलु स्वरान्तरे ।
काकभाण्डी काकतुण्ड्यां तथा हस्तिकरञ्जके ॥१ ४ ॥
भवेत्काकरुको भीरौ घूकेऽस्त्री निनेऽपि च ।
नग्ने दम्भे तथा निम्बपादपेऽपि पुमानयम् ॥१२४३॥
काकली तु कले सूक्ष्मे शब्दे स्त्री काकलः पुनः ।
ग्रीवाया उन्नते देशे क्लीं कण्ठमणिसञ्ज्ञके ॥१२४४॥
काकशीर्षस्तु ना पुष्पस्तम्बभेदे शिवाप्रिये ।
वसुभद्र इति ख्याते क्लीं तु काकस्य मूर्धनि ॥१२४५॥
काकाण्डं वायसाण्डे क्लीं कृष्णशिम्ब्यां तु पुंस्ययम् ।
काकी स्त्री काकनासायां काकालीकाकजङ्घयोः ॥१ ४६॥
रक्तिकामलपूकाकमाचीतुवरिकासु च ।
काकोदरस्तु द्वे सर्पमात्रे सर्पान्तरे तथा ॥१२४७॥
षड्विंशतेरन्यतमे दर्वीकरफणाभृताम् ।
काकोलो द्वे कुलाले च द्रोणकाके प्रकीर्त्तितः ॥१२४८॥
काकोलोऽस्त्री विषभिदि कालोलः नरकान्तरे ।
काकोली तु पयस्यारण्यवल्लीजातौ स्त्रियां मता ॥१२४९॥
काक्षी तुवरिकायां च स्त्रियां सौराष्ट्रमृद्यपि ।
काचः शिक्येऽक्षिरुग्भेदे मृद्भेदे च शिलान्तरे ॥१२५ ॥
स्त्री काचमालिका मद्ये काचस्रजि च कीर्त्तिता ।
काचिकस्तु पुमान्क्षय कश्मुण्डे द्वत्तु मूषिके ॥१२५१॥
काचिघः काञ्चनेऽपि स्याच्छ्लेष्मण्डे मूषिकेऽपि च ।
काचूकः कृकवाकौ स्यात्पीतमस्तककोकयोः ॥१२५२॥

काञ्चन काञ्चनारे स्याच्चम्पके नागकेसरे।
उदुम्बरे च धुधूरे हारद्रायां तु काञ्चनी ॥१२५३॥
क्ली त्वब्जकेसरे हेम्नि ब्रह्मरीतौ तु न स्त्रियाम्।
काञ्ची स्त्री मेखलादाम्नि दाक्षिणात्यपुरान्तरे ॥१२५४॥
काठ पुमान् स्यात्पाषाणे कठसम्बन्धिनि त्रिषु।
काण काके द्वयोस्त्रिर्विकृतेऽक्ष्णि विकृताक्षके ॥१२५५॥
काणकस्त्रिषु हिंस्रे स्यात्काणक वक्षिजे मले।
काणूक कुक्कुमे हसाभदि पक्ष्यन्तरे द्वयो ॥१२५६॥
अस्त्री काण्डो जले बाणे दण्डे नाले च कुत्सिते।
शक्तिसञ्चबलेऽध्याये स्तम्बेऽवसरवर्गयो ॥१२५७॥
इक्ष्वादग्रन्थिमदे च द्रुमस्कन्धे रहस्यपि।
काण्डकारो बाणकारे गुवाके तु नपुंसकम् ॥१२५८॥
काण्डी रोगजपिप्पल्या त्रिस्तु काण्डवति स्मृत ।
काण्डी तु हस्तिपिप्पल्या स्त्रीलिङ्ग पारकीर्त्तिता ॥१ ५९॥
कातर पण्डके पुंसि भीरौ त्रिर्द्वे क्षषान्तरे।
कात्यायनो वररुचौ तथा मुन्यन्तरे पुमान् ॥१२६ ॥
काषायवस्त्राविधवार्द्धजरत्युभयो स्त्रियाम्।
कादम्ब कलहसे द्व बाण ना त्रि तु यौगिक ॥१२६१॥
कादम्बरो ना दध्यग्रे क्ली तु मद्यान्तरे मतम्।
स्त्रीवारुणीपरभृताभारतीशारिकासु च ॥१२६२॥
कादम्बिनी स्त्रियां मेघमालाया च नवाम्बुदे।
कानक कलकोऽपूते तथा स्याज्जैपालरेचक ॥१२६३॥
कानन विपिने गेहे परमेष्ठिमुखेऽपि च।
कानीन पुंसि कर्णे च व्यासे त्रिषु तु लोभिनि ॥१२६४॥
पितृगेहेऽप्यनूढाज कानीन त्वञ्जने स्मृतम्।
कान्ता प्रियङ्गौ रामाया स्त्री कान्तस्तु धवे पुमान् ॥१२६५॥
नान्दीवृक्षे चम्पकद्रौ क्ली तु तत्प्रसवे भवेत्।
तथा दमनके त्रिस्तु कान्त प्रियमनोज्ञयो ॥१२६६॥

चन्द्राथ सूर्यपर्यायपर पुंसि शिलायसा ।
कान्तारोऽस्त्री महारण्य दुर्गमार्गे च कीर्त्तित ॥१ ६ ॥
वनमात्रे च कान्तारस्मिन्नक्षुभेद पुमानयम् ।
कान्तारकस्त्विक्षुभेद जनपद तु भूम्नि ना ॥१ ६ ॥
कान्तारिका तु कथिता स्त्रिया सा मक्षिकान्तर ।
कान्ति स्त्रिया स्यादिच्छायां शोभायां च प्रयुज्यते ॥१ ६९॥
कान्तिदा वाकुची प्रोक्ता कान्तिद पित्तमुच्यते ।
कान्तिदायकमुक्त त्रियांगे कालीयके तु नपु ॥१ ७ ॥
पुमान्कापटिकश्छात्रवेषधार स्पशान्तर ।
सस्थाचराणा पञ्चानामेकस्मिंस्त्रिस्तु दाम्भिके ॥१ ७२॥
कापथ कुत्सितपथऽप्युशीरे क्लीबमिष्यते ।
कापोतो रुचके क्ली तु कपोताद्यञ्जनान्तरे ॥१ ॥
काम काम्यस्मरेच्छासु गुग्गुलावपि रेतसि ।
क्लीब निकामे काम स्यात्तस्यादनुमतेऽव्ययम् ॥१२७३।
कामकूटस्तु वेश्याया प्रियविभ्रमयो पुमान् ।
पुमान्कामगुणो रागे विषयाभोगयोरपि ॥१ ४॥
कामचार स्वतन्त्रे त्रि स्वेच्छायां तु पुमान्मत ।
कामचारी ना गरुडे कलविङ्के द्वयोर्मत ॥१२७५॥
वाच्यवत्कामचार्युक्त स्वच्छन्दे कामुकेऽपि च ।
कामदा कामधेनौ स्त्री कामदातरि वाच्यवत ॥१२७६॥
कामध्वजो ना वादित्रनिर्घोषे च स्मरोत्सवे ।
कामस्य तु ध्वजे ज्ञेय पुनपुकसयोरयम् ॥१२७७॥
क्लीब कामपद योनौ कामस्य च पदे तथा ।
कामपाल शिवे चैव बलदेवे पुमान्मत ॥१२७८॥
कामप्र कामपूर्त्तौ स्यात्कामप्र कामपूरके ।
कामप्रद कामदे श्रीरतबन्धान्तरे तु ना ॥१२७९॥
काम प्रकामासूयानुगमनानुमतिष्वपि ।
कामरूपास्तु पुभूम्नि स्यु प्राग्ज्योतिषनीवृति ॥१२८ ॥

योगार्थे वर्थवशतो लिङ्गाद्य तस्य तर्क्यताम् ।
कामरूपी द्वयोर्नानावर्णे च कृकलासके ॥१२८१॥
बिम्बार्ये यौगिके त्वथवशतो लिङ्गमुन्नयेत् ।
कामला द्व रुजाभदे कामुके कामलस्त्रिषु ॥१२८२॥
कामलस्तु पुमानेष मतो मरुवस तयो ।
कामवान्कामिनि मतस्तस्य लिङ्गाद वाच्यवत ॥१२८३॥
कामव युदिताादारुहरिद्राया स्त्रियामियम् ।
कामवृद्धिलताभदे योगार्थेऽपि स्त्रिया मता ॥१२८४॥
भवे कामशर कामवाण चाम्रतरावपि ।
अथ कामसखश्चैत्रवस ताम्रतरुष्यपि ॥१२८५॥
कामाङ्कुशा नखे चैव मेहनेऽपि प्रकीर्त्तित ।
कामाङ्गश्चूतवृक्षे ना कामाङ्ग तु स्मराङ्कके ॥१२८६॥
कामा धा स्त्री मृगमद कामा घ कोकिले द्वयो ।
कामायुधो महाराजचूते मेढ्रे तु नप्स्मृतम् ॥१२८ ॥
कामिर्न्ना कामुके रया स्त्री कामि परिकीर्त्तिता ।
कामिका त तु माध्वीकमद्य क्ली त्रि तु यौगिके ॥१२८८॥
कामी द्व सारसे चक्रवाके पारावतेऽपि च ।
वाच्यवत्कामुके स्त्री तु कामिनी भीरुवन्दयो ॥१२८९॥
पुष्पवृक्षविशषेऽपि कामिनी कीर्त्तिता स्त्रियाम् ।
कामुक कमनेऽशोकपादपे चातिमुक्तके ॥१२९ ॥
कामो सव पुमा कामहर्षे चापि स्मरो सवे ।
काम्पल्या दशभदे च पुमा वृक्षा तरेऽपि च ॥१२९१॥
काम्बोज श्वेतखदिरे पुमा पु नागपादपे ।
काम्बोजी माषपर्ण्यां स्त्री द्वे तु कम्बोजवाजिनि ॥१२९२॥
काम्य ताम्रे त्रिस्तु कामसाधुकामयित ययो ।
काय शरव्ये निवहे स्वभावे च तनौ च ना ॥१२९३॥
काय प्राजापत्यतीर्थे क्लीब त्रिस्तु कदैवते ।
कायस्थो लेखकारये स्या नरजात्यन्तरे द्वयोः ॥१२९४॥

स्त्री कायस्था हरीतक्या चित्रगुप्ते मनास्तु ना ।
कायका प्रत्यह देहे ऋग वृद्ध्यन्तरे स्मृता ॥१ ९५॥
कायेन तु कृते चतत्कायिक स्यात्रिलिङ्गकम् ।
कार पुंसि क्रियाया च नृपभाग प्यथ स्त्रियाम् ॥१ ९६॥
कारक कर्त्तरि तथा हिंसकेप्यभिधेयवत् ।
क्रियानिवर्त्तके तु क्ली कर्मादौ कारक मतम् ॥१२ ७॥
कारण करण हेतौ स्त्रीनपोस्त्वपि कारणा ।
क्रियाया स्या कारयतेघाते च परिकीर्त्तिता ॥१२९८॥
कारणा तु स्त्रिया नीव्रवेदनाया प्रकीर्त्तिता ।
कार धमी कास्यकारे धातुवादरतेऽपि ना ॥१ ॥
कारवी वाष्पिकासञ्ज्ञपजे कृष्णजीरके ।
खराश्वारयाजमोदायां शतपुष्प्यापधानपि ॥१३ ॥
कारवी कीर्त्तिता क्षुद्रकारवेल्यामपि स्त्रियाम् ।
कारस्करो द्वयो राजवृक्षे क्ली नगरान्तरे ॥१३ १॥
पुमांस्तु गिरिभेदेऽथ नृभूम्नि स्युर्जनान्तरे ।
कारा प्रसेविकाया च तथा बन्धनवेश्मनि ॥१३ ॥
अक्ली तु बन्धने कारा कारी त्रि करयोगिनि ।
कारालिको वृक्षमात्रे पुंलिङ्ग खङ्गिखङ्गयो ॥१३ ३॥
कारि क्रियायां स्त्री कारि स्याच्छिल्पिन्यभिधेयवत् ।
कारिका नटभार्यायां शिल्पयातनयोरपि ॥१३ ४॥
कृतौ विवरणश्लोकेऽग्निनिष्ठाया च कीर्त्तिता ।
कारिता स्यात्स्वय दृष्टे ऋणवृद्ध्यन्तरे स्त्रियाम् ॥१३ ५॥
कारित्वेऽप्यथ निर्मापितेऽसौ स्यात्कारितस्त्रिषु ।
कारुरिन्द्रे विश्वकर्मण्यपि पुंसि प्रकीर्त्तित ॥१३ ६॥
द्वयोरपूर्वपुयोगवैश्याया व्रात्यत सुते ।
शिल्पिकारकयोस्त्वेष कारु स्यादभिधेयवत् ॥१३ ७॥
कारुज कलभे फेने वल्मीके नागकेसरे ।
गैरिके शिल्पिनां चित्रे स्वयज्ञाततृणेऽपि ना ॥१३ ८॥

कारुज कारुतो जाते त्रिलिङ्ग परिकीर्त्तित ।
कारोत्तर सुरामण्डे कूपे चापि पुमान्मत ॥१३ ९॥
सुरास्रावणपात्रेऽपि वैदले चर्मवेष्टिते ।
कार्त्तिकी कृत्तिकायुक्तपौणमास्या स्त्रिया मता ॥१३१ ॥
तत्पौणमासीयुक्ते तु मासे ना कार्त्तिको मत ।
कापटस्तु पुमानेष कीर्त्तितो जतुकार्षिणो ॥१३११॥
कार्मण मूलकर्माख्ये क्लीब मन्त्रादियोजने ।
कार्मणस्तु त्रिलिङ्गोऽय कथित कर्मकारिणि ॥१३१२॥
कार्मिकस्तु भवेद्राज्ञा शुल्के वधिकृते त्रिषु ।
कर्मणां तु समूहे क्ली कार्मिक परिकीर्त्तितम् ॥१३१३॥
कार्मुक चापमात्रेऽपि चापभेदे नपुसकम् ।
ना वेणौ त्रि प्रभवति कर्मणे कार्मुको मत ॥१३१४॥
कार्यं प्रयोजने क्लीब कर्त्तव्ये त्रिषु कीर्त्तितम् ।
स्यात्कार्यपुट उन्मत्तकृपणाऽनर्थकारिषु ॥१३१५॥
कार्षापणोऽस्त्रीपणषोडशके कार्षिकेऽपि च ।
कार्ष्णमिध्मप्रोक्षणे क्ली कृष्णसम्बन्धिनि त्रिषु ॥१३१६॥
क्ली तु कालायसे काल कालस्तु समये यमे ।
मृत्यौ चापि महादेवे कार्ष्ण्ये त्रिषु तु तद्वति ॥१३१ ॥
कालकस्तु पुमान्कायविकारेपि प्लुसञ्ज्ञके ।
रक्ते तु कालद्रव्येण पटादौ भद्यलिङ्गक ॥१३१८॥
कोपादिना च काले स्यान्मुखादौ कलतिर्यपि ।
तथैव कालपितरि कालको वाच्यवन्मत ॥१३१९॥
कालकण्ठस्तु दात्यूहे कलविङ्के च खञ्जने ।
मयूरे पीतशाले च द्वयो स्यात्त शिवे पुमान् ॥१३२ ॥
कालकाऽङ्गारकारयस्य शकुनेर्योषति स्त्रियाम् ।
कालकुण्ड स्तु ना विष्णौ यमे चापि द्वयो पुन ॥१३२१॥
मनुष्यजातिभेदे च क्षत्रियाया निषादज ।
कालकूटो वोलविषयमनीवृज्जना तरे ॥१३२२॥

---

१ कालकुण्ठो वा ।

कालञ्जरो योगिचक्रमल्के भरवे गिरा ।
कालञ्जरी तु दुगायान्तथा कालञ्जरा भवेत् ॥१३२३॥
कालधर्मस्तु कालस्य धर्मऽपि मरणऽपि च ।
कालपुच्छस्तु चमरमृग ह यागिके त्रिषु ॥१३ ४॥
कालपृष्ठ कर्णचापे पुसि कङ्कानहङ्गम ।
कालमेघ कृष्णमेघे तथा भषजभिद्यपि ॥१३ ५॥
स्त्रियां तु कालमेषी स्यान्मसूरविदलाह्वय ।
लताजात्यन्तरे सोमराजिमञ्जिष्ठयोरपि ॥१३२६॥
द्राक्षायां च द्वयोस्त्वेषा काले मष प्रकीर्त्तिता ।
कालशेय गोरसे क्ली कलशीसम्भवे त्रिषु ॥१३२७॥
कालसार कृष्णसार तथा स्यात्पीतचन्दने ।
कालस्कन्धस्तमाले च तिन्दुके जीवकद्रुमे ॥१३२ ॥
तथा स्याच्छ्यामखदिरे यागिके लिङ्गमथत ।
काला मनःशिला मञ्जिष्ठा कृष्णात्रिवृतासु च ॥१३२९॥
कालानुसार्यं शैलेये जावकाख्ये विलेपने ।
कालिका स्विति सौराष्ट्रीसञ्ज्ञके भषजे भवेत् ॥१३३ ॥
प्रशान्ताग्नौ दग्धकाष्ठे मृगमदेऽस्य लक्षणम् ।
कालिका त्वसिता यद्वा कपोता पिङ्गबिन्दुका ॥१३३१॥
इत्येवमविवाह्याना कन्याना कन्यकान्तरे ।
अस्योक्त लक्षण कुब्जा दुदशा कालिका च सा ॥१३३२॥
अश्वस्य दन्तरेखाया सूक्ष्मजीरक एव च ।
मनोविकारप्रभवकायवैवर्ण्य एव च ॥१३३३॥
मेघजाले च चिक्रोडसञ्ज्ञप्राण्यन्तरेऽपि च ।
क्रयदेये वस्तुमूल्ये काञ्चीवृश्चिकपत्रयो ॥१३३४॥
धूसर्यां चणिकाभेद योगिनीभिन्नवाब्दयो ।
पटोलशाखारोमालीमांसीकाकाशिवासु च ॥१३३५॥
कालिकी तु स्त्रियां मासि मासिदेयेऽधमर्णके ।
ऋणवृद्धिविशेषेऽथ प्राप्तकाले त्रि कालिकी ॥१३३६॥

कालिङ्गो भूमिकर्कारौ द तावलभुजङ्गयो ।
कालिन्दी यमुनानद्यां कृष्णभार्या तरेऽपि च ॥१३३७॥
काली मृद्धा यामेकस्या शम्भोनवसु शक्तिषु ।
प्रसद्वार यवृद्ध यां भ्रकुटौ कृष्णनवाम्बुदे ॥१३३८॥
सप्तानामग्निहेतीनामेकस्यामेकमातरि ।
सप्तानामपि मातृणा याश्च शासनदेवता ॥१३३९॥
अहत्तीर्थकराणां तास्वेकस्या क्षीरकीटके ।
पिप्पलीवृश्चिका योश्च नील्यां कृष्णे तु जीरके ॥१३४ ॥
कालेय कालखण्डे स्या कलीना च कदम्बके ।
कलिना साम्नि दृष्ट च रागद्रव्ये च जापके ॥१३४१॥
कालेयो दै यभदे ना दार्व्यां च परिकीर्त्तित ।
कालेयस्तु त्रिलिङ्गो य कालसम्बाधिनि स्मृत ॥१३४२॥
काश्चक कृकवाकौ द्वे पीतमस्तककोकयो ।
कावेरी स्या सरिद्भेदे पुण्यनारीहरिद्रयो ॥१३४३॥
काव्य शुक्रे क्ली रसवद्वाक्ये स्त्री पूतनाधियो ।
काशो नस्त्रीक्षुग धायां काशा स्त्रीपुसयोस्त्विषि ॥१३४४॥
काशिर्ना काशतौ धानौ मुष्टौ काशाह्वये तृणे ।
भूम्नि नीवृद्विशेषेऽथ काशी वाराणसी स्त्रियाम् ॥१३४५॥
काश्मीरकुङ्कुमेऽपि स्याट्टङ्कपुष्करमूलयो ।
काश्मीरी कृष्णवर्णायां वचाया स्यास्त्रियामियम् ॥१३४६॥
काश्यपो मुनिभेदे च च द्रे चेक्ष्वाकुवशजे ।
द्वितीयनृपतौ पुत्रे मरीचेरपि पुस्ययम् ॥१३४ ॥
कश्यपस्य तु पुत्रे च मृगभेदेऽपि च द्वयो ।
काश्यपी तु स्त्रियां भूमौ मासे तु नपि काश्यपम् ॥१३४८॥
काष्ठा स्त्री कालभेदे स्यादष्टादशनिमेषके ।
स्थितौ दारुहरिद्रायां दिशि चाप्युपदिश्यपि ॥१३४९॥
दक्षिणोत्तरयोर यतरस्मिन्नयने रवे: ।
आदित्ये परमावस्थोत्कर्षयोराजिसञ्ज्ञिन ॥१३५ ॥

क

समप्रदेशस्याग्नेऽप्सु भूम्नि क्ली तु दारुणि।
कासिका छेदनद्र ये स्त्री वनस्पतिभिद्यपि ॥१३५१॥
त्रिस्तु कासयितर्येप कासक कासितर्यपि।
कार्मुर्गाग्विकले त्रि स्त्री याधौ शक्त्यायुध धियाम् ॥ १३५२॥
काहली स्त्री वाद्यभद सुपिरे परिकीर्त्तिता।
रथ्यावादे नपि त्रि स्याद्वाक्ये निष्ठुर आकुल ॥१३५३॥
किंशारुर्ना शस्यशूके विशिखे कङ्कपक्षिणि।
किंशुकस्तु पलाशे स्यादिङ्गुदे तत्फले तु नप ॥१३५४॥
किकीदिविस्तु ना वर्णे द्वे तु चापाह्वये खगे।
किखिरल्पकोष्टुजातौ कालमात्रान्तरे स्त्रियाम् ॥१३५५॥
किङ्करो ना रथांऽशऽथ द्वे दासे राक्षसे जने।
किङ्किणी घण्टिकाया स्त्री विकङ्कततरावपि ॥१३५६॥
किङ्किरोऽश्वे पिके भृङ्गे द्वे स्मरे तु पुमान्मत ।
किङ्किरात स्मरे पुसि द्वे शुके कोकिलेऽपि च ॥१३५ ॥
ना कुरण्टान्तरेऽशोके क्लीब तु प्रसवे तयो ।
किञ्जा पुभूम्न्युदीच्ये स्यान्नीवृद्भेद त्रि किम्भवे ॥१३५८॥
किञ्जल्क केसरे क्ली तु स्यादाकाशे च लाञ्छने।
किट्टालो वा लोहगूथ स्यात्ताम्रकलशेपि च ॥१३५९॥
किणो रूढव्रणस्थाने पुमान्स्याद्धासनान्तरे ।
किणिही स्यादपामार्गे गिरिकर्ण्यामपि स्त्रियाम् ॥१३६ ॥
किण्व स्यान्नग्नहूनाम्नि शीधुबीजे नपुसकम्।
तथैव पापे पिण्याके षण्डेऽन्यवदविक्रमे ॥१३६१॥
कितवो मत्तधुर्धूरवञ्चकद्यूतकृत्सु ना।
फले धुर्धूरवृक्षस्य क्लीब कितवमुच्यते ॥१३६२॥
किन्नर्यश्वमुखी चण्डालवीणापिङ्गलासु च।
किम्प्रश्नाक्षेपकुत्सासु तर्के कात्स्न्येंऽथ निश्चये ॥१३६३॥
किमु सभावनायां स्याद्वितर्के चापि दृश्यते।
किम्पाकः स्यान्महाकालफले चाज्ञे तथा पुमान् ॥१३६४॥

अथ किम्पुरुषो द्वे स्यात्किन्नरे क्ली तु भारतात् ।
उत्तरेऽनन्तरे वर्षे हेमकूटापराह्वये ॥१३६५॥
किरणस्त्वश्वरश्मौ च रश्मौ चापि पुमान्मत ।
किराटो म्लेच्छभेदेऽपि द्वयोर्वणिजि च स्मृत ॥१३६६॥
किरात स्वपकाये त्रिर्भूनिम्बे तु पुमानयम् ।
स्त्रिया चामरवाहिन्या कुट्टिनीदुगयोरपि ॥१३६ ॥
मर्यजात्यन्तरे तस्मिन्म्लेच्छभेदेऽपि च द्वयो ।
किरिर्द्वे सूकरे ना तु किरतावप्यनेहसि ॥१३६८॥
किरीटी नाऽर्जुने त्रिस्तु किरीटवति कीर्त्तित ।
किर्मी पलाशे शालाया हेमपुत्र्या च योषिति ॥१३६९॥
किर्मीरो नागरङ्ग च कर्बुरे राक्षसान्तरे ।
त्रि तु तद्गुणवति निष्ठाया तु नपुसकम् ॥१३ ॥
किलाऽव्यय स्यादतिथ्ये सभाव्यानुनयार्थयो ।
शिवे किलकिलो हर्षध्वनौ किलकिला मता ॥१३ १॥
किलासी तु पृषत्या स्त्री किलास पुसि सिध्मनि ।
किल्विषी वारनार्यां किल्विष पापरुगागसो ॥१३ २॥
किशोरस्तरुणाऽवस्थ त्रिषु द्वे त्वश्वशावके ।
सूर्ये तु तैलपर्ण्या च किशोर पुसि कीर्त्तित ॥१३७३॥
किष्किन्ध शैलभेदे ना किष्किन्धा त्वस्य कन्दरे ।
किष्कु प्रमाणभेदे स्याद्द्वादशाङ्गुलसम्मिते ॥१३७४॥
वितस्त्याख्ये चतुर्विंशत्यङ्गुले हस्तनाम्नि च ।
मानद्र्व्ये ना तपे च कुठारादित्सरौ द्वयो ॥१३ ५॥
किष्कुपर्वा पुमानिक्षौ वेणौ पोटगलेपि च ।
कीकटस्तु द्वयोरश्वे मेधवत्तु मितम्पचे ॥१३ ६॥
नीवृद्भेदे त्वनार्याणा निवासे पुसि भूमनि ।
कीकस त्वस्थनि क्लीब कृमिषु त्वणुषु द्वयो ॥१३ ॥
कीचको नाऽनिलरणद्वेणौ स्याले च भूपते ।
विराटस्याऽथ पूर्वोक्तवेणो क्ली प्रसवे मतम् ॥१३७८॥

कीटक कृमिजाता द्वे निष्ठुरे पुनरन्यवत् ।
कीनाशोऽग्नौ यमे पीतहरिते मिश्रवणके ॥१३ ९॥
पीतप्रधाने पुंसि स्याद्राक्षसे तु द्वयोस्त्रिषु ।
कदर्याऽनार्यभृतकृकृतघ्नेषु कृषीवले ॥१३८ ॥
पूर्वोक्तवणवद्द्रव्येऽप्यामममासाशकऽपि च ।
कीरा पुंभूम्नि कश्मीरेष्वथ द्वे तज्जने शुके ॥१३८१॥
कीरक आपण वृक्षभेदे क्षपणके पुमान् ।
कीरेष्ट स्याच्चूतजलमधूकाखोटशाखिषु ॥१३८ ॥
कीणश्चुरीनाम्न्यप्स्थाने त्रि दत्ताक्षिप्तहिंसिते ।
कीर्त्ति प्रसादयशसो स्त्रिया कीर्त्तयतौ तु ना ॥१३८३॥
द्व कीलोऽर्चिर्दा कफोणिशङ्कुस्तम्भ शिवे तु ना ।
कीलालमप्सु पक्वान्ननिष्यन्देऽन्नेऽमृतेऽसृजि ॥१३८४॥
कीशो दिगम्बरे पुंसि कपौ त्वेष द्वयोर्मत ।
कु पापे चेषदर्थे च कुत्सायां च निवारण ॥१३८५॥
कुकुन्दर कुक्कुरद्रौ नितम्बस्य च कूपके ।
कुकूल शङ्कुभि कर्णे श्वभ्रे ना तु तुषानले ॥१३८६॥
कुक्कुट्यनृतचर्य्यायां द्वयोस्तु चरणायुधे ।
भासेऽपि कुक्कुभे शूद्रान्निषादीतनयेऽपि च ॥१३८७॥
शूद्रायां मागधापत्ये निषादीवैश्ययो सुते ।
सुनिषण्णारण्यशाके तु तृणोल्कायां च कुक्कुट ॥१३८८॥
कुक्कुटाक्षोऽल्पतुम्ब्यां ना यौगिकाऽर्थे त्वय त्रिषु ।
कुक्कुरो द्वे सारमेये ग्रन्थिपर्णे नपुंसकम् ॥१३८९॥
कुक्षि पार्श्वेऽन्तरुदरे तुन्दे चेक्ष्वाकुसम्भवे ।
कुचन्दनोऽस्त्रिया पीतचन्दने रक्तचन्दने ॥१३९ ॥
कुचरस्तु कुवादे स्यात्कुचरे चाऽभिधेयवत् ।
कुचेल कुत्सिते वस्त्रे तद्वति त्वभिधेयवत् ॥१३९१॥
अविद्धकर्णीपाठाद्याख्ये कुचेला लतान्तरे ।
कुजो नाऽङ्गारके वृक्षे तथैव नरकासुरे ॥१३९२॥

कुजा कात्यायनीदेव्या भूमिज तु कुजस्त्रिषु ।
कुञ्चिका वङ्कुरारये स्या कपाटोद्घाटय त्रके ॥१३९३॥
तूलीस्लाचकयोर्भीरुभीषणे साधनेऽप्यथ ।
कीर्त्तित कुञ्चकश्चैव कुञ्चितयभिधेयवत् ॥१३९४॥
कुञ्चित तगरे क्लीब कुटिले वभिधेयवत् ।
कुञ्जोऽस्त्री गह्वरे द ते हनावपि लतागृहे ॥१३९५॥
ऋषिभदे तु पु लिङ्ग कुञ्ज एष प्रकीर्त्तित ।
कुञ्जरा पाटलाधातक्योर्ना केशे द्वयोर्गजे ॥१३९६॥
कुञ्जरारातिरुक्तो ना सिंहे च शरभेऽपि च ।
कुञ्जिका कुञ्जव लर्यां तथा स्यात्कृ णजीरके ॥१३९७॥
कुटस्तु पुसि कलशे गृहे तु द्वे कुटी कुट ।
कुटजो वृक्षभदे स्यादगस्त्यद्रोणयोरपि ॥१३९८॥
क्लीबलिङ्ग तु वृक्षस्य प्रसवे तस्य कीर्त्तितम् ।
कुट नटस्तु ना गुण्डुसञ्ज्ञवृक्षे नपि त्वद ॥१३९९॥
गोनदसञ्ज्ञके मुस्ताभदे प्रोक्त कुटन्नटम् ।
कुटपो ना मुनौ मानभेदे कुडवसञ्ज्ञके ॥१४ ॥
निष्कुटे चाथ कुटप कमले क्लीबमुच्यते ।
कुटरो मृगभेदे च वधकौ ना द्वयो खगे ॥१४ १॥
कुटल स्यादाभरण कुटला गात्रकृ यर्षौ ।
कुटिर्गृहेऽतिकुटिले नृस्त्रियो परिकीर्त्तिता ॥१४ २॥
कुटिल कुञ्चिते त्रि स्यात्क्लीब तु तगरे स्मृतम् ।
अथ स्त्रिया च तगरपाद्या स्यात्कुटिला स्त्रियाम् ॥१४ ३॥
स्त्रिया कुटिलिकाऽङ्गारापकषण्या च शिल्पिनाम् ।
कर्मारनाम्ना धान्य च कषकाणा प्रसृद्रताम् ॥१४ ४॥
पूलोत्क्षेपणवेणौ स्यात्परिव्राजां च भूतले ।
निधानस्य निषिद्ध वादण्डाना धारणाय यत् ॥१४ ५॥
स्यात्कम्बिग्रहणन्तत्र तथा चोरजनस्य च ।
यष्टयग्रप्रतिबद्धेऽन्यनिलयारोहणाय य ॥१४ ६॥

लोहककूटकस्तत्रापीय कुटिलिका मता ।
कुटी तु कुम्भदास्या स्त्री मुराया त्रिनगुच्छके ॥१४ ७॥
प न्यारये क्षुद्रगहे च द्वयोस्तु क्षत्रियात्सुते ।
कुक्कुटीसङ्गभार्यायामश्मकुट्टनवृत्तिके ॥१४ ८॥
कुटीरस्तु पुमा क्षुद्रागारे द्वे तु सकृकन् ।
कुटुम्ब नामनि तथा बा धने सन्तताविपि ॥१४ ५॥
ज्ञाता च पोष्यवर्गे च पुनपुसकयोर्मतम् ।
कुट्टि कुट्टयता पुमि स्त्रिया कुट्टि स्मृता यसि ॥१४१ ॥
शम्भल्या कुट्टनीच्छदकुत्सयो कुट्टना मता ।
कुट्टिमाऽस्त्री निबद्धाया भूमावपि कुटीरके ॥१४११॥
कुठारु पुमि वृक्षे स्याद्वानरे तु द्वयोमत ।
कुठि पुमा भवे वृक्षे पापे च वृपलालये ॥१४१२॥
कुठे रोगे तमारे त्रिना तु स्तम्बे कठिञ्जरे ।
कुडस्तु ना वैश्रवणे स्त्री घटे लाङ्गले कुडम् ॥ ४१३॥
द्वयो कुडी कु कुति शिशावपि च सकरे ॥
पलितीसङ्गयोषायामुत्पन्ने शूद्रपूरुषात् ॥१४१४॥
कुडङ्गोऽस्त्री निकुञ्जे च तथैव स्याच्छादिष्यपि ।
कुडुब पक्षिनीडेऽपि परिमाणान्तरे पुमान् ॥१४१५॥
कुडुम्बी सकुटुम्बे त्रिर्द्वयोस्तु स्यात्कपीवले ।
कुड्मलोऽस्त्री स्या मुकुले कुड्मलनरकान्तरे ॥१४१६॥
विद्यादासनभेदे च लक्षण यस्य कीर्तितम् ।
नागदन्तकमूर्ध्वज्ञोर्जानुस्थौ प्रसृतौ भुजौ ॥१४१७॥
सूचीमुखमिद पाणितलौ चेत्सहतौ मिथ ।
अर्धसूची तु तौ द्वौ चेत्प्रादेशान्तरितौ मुखात् १४१८॥
कुड्मल मुकुलीभूतौ तौ चेदूर्ध्वमुखौ स्थितौ ।
कुड्य विलेपने भित्तौ क्लीबं कौतूहलेऽपि च ॥१४१९॥
कुणपोऽस्त्री शवे द्वे तु कृमौ त्रिषु तु कुत्सिते ।
विटसारिकायां कुणपी क्ली पूये दोहदाम्बुनि ॥१४२ ॥

कुणाल कृतमाले ना पुत्रे चाशोकभूभुज ।
अथ क्लीब पुरभिदि कुणालमिति कीर्त्तितम् ॥१४२१॥
कुणिस्तु नान्दीवृक्षे च विकले च करे पुमान् ।
त्रिलिङ्गस्तु कुणिस्तस्मि यस्यास्ति विकल कर ॥१४२२॥
कुण्ठो मूर्खेऽथ कर्मण्ये चाऽतीक्ष्णोपि त्रिषु स्मृत ।
कुण्ड नपुसक स्थाल्या काञ्जिके वह्निगत्तके ॥१४२३॥
जलाशये च देवादे कुम्भे मानान्तरेऽपि च ।
कुण्डी कमण्डलौ स्त्री स्या कुण्डा तु जनिते मता ॥१४२४॥
जारेण पतिव न्या द्वे अविवाह्यासुतेपि च ।
कुण्डकीटस्तु चार्वाकव नाऽभिज्ञपूरुषे ॥१४२५॥
पतितब्राह्मणीपुत्रदासीकामुकयोरपि ।
कुण्डली चित्रलमृगे मयूरे भुजगे द्वयो ॥१४२६॥
पुमांस्तु वरुणे प्रोक्तस्त्रि तु कुण्डलवत्यसौ ।
कुण्डली स्त्री गुलू यां च काञ्चनद्रौ भवेदथ ॥१४२ ॥
पाशके वलये क्लीब कणवेष्टे त्रिकुण्डलम् ।
कुण्डी त्वश्वे द्वयोस्त्रिस्तु कुण्डवत्ययमिष्यते ॥१४ ८॥
कुतनुस्तु कुबेरे ना त्रि तु स्यात्कुत्सिताङ्गके ।
कुतप सूर्यवह्न्योर्ना वृषभेऽप्यतिथावपि ॥१४२९॥
भागिनेयेऽथ विप्र द्वे पुन्नपुसकयो पुन ।
दर्भेऽप्यह्नोऽष्टमे भागे तिलेच्छागजकम्बले ॥१४३ ॥
वाद्यवादकसामग्र्या नाट्यस्यास्तरणेऽपि च ।
सायमास्तरणे वाद्यवि यासे देहलावपि ॥१४३१॥
कुतली शाकभेदे स्त्री कुतलोऽस्त्री भुवस्तले ।
कुतूहल कौतुके स्या प्रशस्तेऽपि च दृश्यते ॥१४३२॥
कुत्राण तु भवे कुण्डे शिक्ये चैव नपुसकम् ।
कुत्सा स्त्रियां स्यान्निन्दाया पुस्यरर यमिधानके ॥१४३३॥
प्रमाणेऽपि च वज्रेऽपि तथा ऋष्यन्तरेऽप्यथ ।
तदपत्येषु बहुषु गोत्रारयेषु द्वयोरयम् ॥१४३४॥

स्यात्कुत्सित पर्युषिते निन्दिते त्राऽभिधयवत् ।
नपुंसकं तृण कुष्ठभेषजेऽपि च कुत्सितम् ॥१४३५॥
कुथः पुमान्कुशे वर्णकम्बले तु कुथा स्त्रियः ।
कुद्दालोऽस्त्री मतो गोदारणाख्ये खानसाधने ॥१४३६॥
पुमांस्तु कोविदारद्रौ क्लीबं तद्भ्रमणे मतम् ।
कुद्रः पुमान्समुद्रे च पर्वते च प्रकीर्तितः ॥१४३७॥
मनःशिलायां कुनटी नैपाल्यां द्वे तु कुनटी ।
कुनालिका पक्षिशाले कुनाल्यां च स्त्रियां मता ॥१४३८॥
कुन्तो गवेधुकायां स्यात्तथा प्रासायुधे पुमान् ।
कुन्ती तु स्त्री पृथायां स्यात्शल्लक्यामपि गुग्गुलौ ॥१४३९॥
कुन्तलश्चषके काले यत्रे केशे पुमान्मतः ।
कुन्तला तु नृभूम्नि स्यद्दक्षिणापथवर्तिनि ॥१४४० ॥
नीवृद्भेदे तथा मध्यदेशस्थे कुन्तलस्तु ना ।
तद्राजे तदपत्येषु कुन्तलाः स्युर्नृभूमनि ॥ १४४१॥
बहुष्वथ स्त्र्यपत्ये तु कुन्तली स्त्री प्रकीर्तिता ।
कुन्तिर्ना नृपभेदे तन्नीवृद्भेदे नृभूमनि ॥१४४२॥
राज्ञस्त्वस्य स्त्र्यपत्ये स्त्री कुन्ती कुन्तिरिति द्वयम् ।
कुन्तूसञ्ज्ञे स्नेहपात्र एलायां च प्रकीर्त्तिता ।१४४३॥
कुन्दः पुमान्मुकुन्दे स्यान्निधिभेदे भ्रमाभिधे ।
शस्त्रमार्जकयन्त्रे च शुक्लपुष्पाख्यपादपे ॥१४४४॥
माध्याख्यनाम्नि पुष्पे तु फले चास्य नपुंसकम् ।
कुन्दरस्तु भवेद्विष्णौ ना तृणे कण्डुराभिधे ॥१४४५॥
कुन्दुः पालङ्क्याख्यशाके पुंस्यथो मूषिके द्वयोः ।
कुन्दुमस्तु पुमान्मुञ्जे मार्जारे तु द्वयोर्मतः ॥१४४६॥
कुफाकुर्द्दे कपौ नाम्नि ख्योक्षि परतापिनि ।
कुबेरः पुंसि यक्षेशे नान्दीवृक्षे च कीर्त्तितः ॥१४४७॥
कुब्जो निखर्वे गङ्कुले त्रिर्ना वृक्षान्तरे गडौ ।
कुभ्रं गृहे कर्मणि क्ली कुभ्र कुम्भी गजे द्वयोः ॥१४४८॥

---

१ कुथा । २ कुर्वं ।

फ गुसङ्कटयो कुत्रस्त्रिलिङ्ग परिकीर्त्तित ।
कुमारो युवराजेऽश्वचारके वरुणद्रुमे ॥१४४९॥
कुत्सितायां मृतौ चाथ द्वयोर्बाले शुकेऽपि च ।
जम्बूद्वीपेऽथ त क्लीब कुमार जात्यकाञ्चने ॥१४५ ॥
कुमारी शैलतनया नवमाल्योर्नदीभिदि ।
सहापराजिताकुस्तुम्बुरीक यासु च स्त्रियाम् ॥१४५१॥
हिमामे मृगभेदे च नीवृत्तन्नृपभद्यो ।
मारस्तु कुत्सिता यस्य कुमारस्तत्र वा यवत् ॥१४५२॥
कुमुख कु सिताऽऽस्ये त्रि सूकरे तु द्वयोर्मत ।
कुमुद् क्ली कैरवे स्त्री तु कुमोदे कृपणे त्रिषु ॥१४५३॥
कुमुदोऽस्त्री रक्तपद्मे कैरवे च प्रकीर्त्तित ।
ना दिग्गजा तरे नागा तरेऽपि कपिभिद्यथ ॥१४५४॥
कुमुदा कटफले स्त्री स्याद्गम्भार्यां कुम्भिकौषधा ।
कुमुद्वा कुमुदप्राये देशे स्यादभिधेयवत् ॥१४५५॥
कुशपत्न्या तु कुमुदस्तम्बेऽपि स्त्री कुमुद्वती ।
कुमुल पु पहेम्ना क्ली का ते त्रिषु शिशौ द्वयो ॥१४५६॥
कुम्बा तु गहनाया स्त्री वृतौ स्याद्विदल तु नप ।
कुम्भ पुसि घटे हस्तिमूधपिण्डे महत्तरे ॥१४५ ॥
वेश्यापतौ सोमदत्ते राशौ च शनिदैवते ।
रक्षोभित्काभिल याज्योर्द्रोणार्यपरिमाणके ॥१४५८॥
तस्य द्वये विंशता च खारीण पञ्चविंशतौ ।
स्त्री तु स्था यन्तरे कुम्भी वारिपर्ण्यां च कटफले ॥१४५९॥
दधिम थनगर्गर्यां पृश्निकाया च पाटलौ ।
कुम्भा तु स्त्री त्रिवृद्वल्लौ कुम्भ तु नपि गुग्गुलौ ॥१४६ ॥
कटफलादेश्च मूलेऽपि प्रसवे च नपुसकम् ।
कुलत्थिकौषधौ कुम्भकारी द्वे तु कुलालके ॥१४६१॥
कुम्भयोनिरगस्त्ये स्याद्वसिष्ठ ोणयो पुमान् ।
कुम्भिक शालमीने च चौरश्लोकार्थचौरयो ॥१४६२॥

कुम्भी तु कुम्भव येष वाच्यवत्परिकीर्त्तित ।
कुम्भिनी वसुधाया स्त्री द्वयोस्तु गजनक्रया ॥१४६३॥
कुम्भीक पुसि पु नागवृक्षे त प्रसवे पुन ।
प्रसवे कुमुदस्यापि कुम्भीक स्यान्नपुसकम् ॥१४६४॥
कुम्भीनस सपमात्र द्वयोदर्वीकरा तरे ।
कुम्भीनसी स्त्रियामेषा लवणासुरमातरि ॥१४६५॥
कुम्भीरस्तु द्वयोर्मस्ये चौरे तु त्रिपु कीर्त्तित ।
कुम्भीलास्त्रषु चौरे च श्लाक छायादिहारिणि ॥१४६६॥
पुमास्त्वय स्या कुम्भीलो मत्स्ये स्यालाभिधानके ।
कुरङ्गो वानरेऽपि स्याद्वद्दे महाहरिणऽपि च ॥१४६ ॥
कुरङ्गको द्वे हरिण मुद्गपर्ण्यां कुरङ्गिका ।
कुरङ्गी तु स्त्रिया भोजतनयायाम्प्रकीर्त्तिता ॥१४६८॥
कुर टक पीतपुष्पाम्लानझिण्टोकयोर्मत ।
कुरण्डो मुष्टिवृद्ध्यारय रोगभदे पुमा मत ॥१४६९॥
स्तम्बे च किङ्किराताख्ये मत्स्ये त्वेष द्वयोर्मत ।
कुररी स्त्री भवेन्मेष्यामुत्क्रोश कुररो द्वयो ॥१४ ॥
गाजिह्वाया तु कुरसा स्त्रिया स्याद्विरसे त्रिषु ।
कुरीरस्तु पुमा मालाविशषे कम्बलेऽप्यथ ॥१४७१॥
कुरीर मैथुने पद्म जालेऽपि स्यान्नपुसकम् ।
कुरुस्तु प्रोच्यते पुसि ऋत्विग्राजर्षिभदयो ॥१४ ॥
नीवृद्भदे तु पुभूम्नि वर्षे चाप्युत्तराभिधे ।
कुरु टो दाहपुत्र्याम्भा झि टीम्लानप्रभेदयो ॥१४७३॥
भने कुरुबक शोणम्लाने कुरवकेऽपि च ।
भिण्ट्योश्च पीतारुणयो क्ली त्वेषा प्रसवे भवेत् ॥१४७४॥
कुरुमस्तु द्वयो कारौ भाजने तु पुमानयम् ।
कुरुली धन्विनां लक्षवेधे स्यात्कुरुलोलके ॥१४७५॥
कुरुविन्दो रत्नभदे मुस्तके हिङ्गुलेऽपि च ।
अर यक्षुद्रधा याना सप्तानामेकधा यके ॥१४ ६॥

---

१ वक ।

कुरूस्तु कुरुराजस्य स्यपत्ये स्त्री प्रकीर्त्तिता ।
कुर्वाणस्त्रिषु भृत्येऽपि कारकेऽपि प्रकीर्त्तित ॥१४ ॥
कुली स्याद्बदरीकण्टकार्यो र्येष्ठस्वसर्यपि ।
भार्याया स्त्रीकुल त्वेतद्दषीणाञ्जलतपण ॥१४७८॥
निकेतने सजातीयगण जनपदेऽन्वय ।
शैवसङ्घा तरे द्वे तु मार्जारे स्या कुला कुली ॥१४ ९॥
कुलको ना कुरवके व मीके काकात दुके ।
सपभेदे कुलाग्रयऽथ पञ्चादिश्लोकसहतौ ॥१४८ ॥
पटोलव या कुलक सयुक्ते तु त्रिषु स्मृतम् ।
कुलक्षया शूकशिम्ब्या कुलनाश कुलक्षय ॥१४८१॥
कुलात्थका कुला थारये भेषजे नृस्त्रियो पुन ।
कुल थधान्ये द्व तु स्यादेष दर्वीकरा तरे ॥१४८२॥
कुलाय पक्षिनीड च गृहे चापि पुमान्मत ।
एकाहक्रतुभदेऽथ त्रि कुलस्यायके भवेत् ॥१४८३॥
कुलाल कुम्भकारेऽपि कुक्कुमेपि द्वयोर्मत ।
चक्षुष्यारयौषधौ तु स्त्री कुलाली परिकीर्त्तिता ॥१४८४॥
कुलिको नागभेदे स्याद्द्रुभेदे कुलसत्तमे ।
कुलिशन्त्वस्त्रियां वज्र मत्स्यभेदे तु स द्वयो ॥१४८५॥
कुल्माष काञ्चिके क्लीब कुरुवि दमणौ पुमान् ।
व्रीह्यन्तरे सूपभक्त विदले च यवा तरे ॥१४८६॥
यवपिष्ट यावकारये पक्वमुद्गादिपिण्डके ।
वर्णे च शबले कु माषस्त्वेष त्रिषु तद्वति ॥१४८ ॥
कुल्य स्यात्कीकसेऽप्यष्टद्रोणीशूर्पामिषेषु च ।
रसे तु ना कटोश्चापि कषायस्य च मिश्रणात् ॥१४८८॥
गाढे तद्वति तु त्रि स्या कुलीने च नृभूम्नि तु ।
नीवृद्भेदेषु मध्योदग्दाक्षिणात्येषु कीर्त्तित ॥१४८९॥
कुल्या स्त्रिया स्या सरिति कृत्रिमाऽल्पसरित्यपि ।
जीव तिकाकण्टकारीकुलस यम्बुप्रणालिषु ॥१४९ ॥

कुव स्यादुत्पले क्लीब कुव स्त्रीपुसयो पशौ ।
अथात्पले कुवलय यौगिके र्थे तु लोकवत् ॥१४९१॥
कुवली स्त्री बदर्यां स्यात्तत्फलोत्पलयोस्तु नप ।
कुवेलमु पले क्लीब त्रिस्तु कुत्सितवेलके ॥१४९२॥
कुश ह्रीवेरजलया क्ली दर्भे तु कुशोऽस्त्रयाम ।
कुशस्तु रामपुत्रेऽपि योक्त्रे द्वीपान्तरे च ना ॥१४९३॥
कुशा निष्कृतिकाष्ठे स्त्री व गार जा च वाजिन ।
अयोनिकारे तु कुशी फालाख्ये च हलाग्रके ॥१४९४॥
पापिष्ठमत्तयास्त्वेष कुशो वाच्यवदिष्यते ।
कुशल त्रि क्षमे क्षमे निपुणे मङ्गलान्विते ॥१४९५॥
दीक्षितेऽप्यथ तत् क्लीब पणपर्याप्तिमङ्गले ।
कुशस्थल का यकु जम त्रवेदी कुशस्थली ॥१४९६॥
कुशिको ना मुनौ सर्पे द्वयोस्तु क्रोष्टुघूकयो ।
कुशलवो द्व वैदेहा लक्ष्मनप्लवनादिना ॥१४९ ॥
वर्त्तमाने सुतेऽम्बष्ठया नटानामपि विश्रुते ।
चारण च कुशीसज्ञाऽयोविकारलवे तु ना ॥१४९८॥
वाल्मीकौ च द्विवचने तूक्तौ रामस्य पुत्रयो ।
कुशेशय तु कमले विष्णौ तु स्या कुशेशय ॥१४९९॥
कुषा कु कपिवक्ष्यर्के ना परोत्तापिनि त्रिषु ।
कुषित क्ली भवेत्पापे निष्कृष्ट वभिधेयवत् ॥१५ ॥
कुष्ठोऽस्त्री परिभाव्याख्यग धद्रव्यौषधान्तरे ।
व्याधिभेदेऽप्यभूमिष्ठे कुष्ठ स्यादभिधेयवत् ॥१५ १॥
कुसीदमृणवृद्धौ क्ली ऋणवृद्धया च जीवने ।
मेघव वलसे वृद्धिजीविन्यपि च कीर्त्तित ॥१५ २॥
पुयागाच्च स्त्रियां वृत्तौ कुसीदायी प्रकीर्त्तिता ।
कुसुमोऽस्त्री फले नेत्ररोगे स्त्रीपुष्पपुष्पयो ॥१५ ३॥
कुसुम्भ कुङ्कुमे हेम्नि क्ली महारजनेऽपि च ।
स्त्रियां कुसुम्भी तत्स्तम्भे वरधान्ये कमण्डलौ ॥१५ ४॥

1 ककाः ।

कुसृतिस्तु कुमार्गे स्या कुगतौ शाठ्य एव च ।
कुहन पुसि व मीके त्रिरीर्ष्यालौ च मायिनि ॥१५ ५॥
कुहना स्त्री दम्भचयादम्भशीलत्वयोर्मता ।
मायाया त्वि द्रजाले च कुहन ङ्के तु मूषिके ॥१५ ६॥
कूच्युदश्विद्विकारे स्त्री नार्यां कूचस्त्विमे द्वयो ।
कूचिका सूचिकाया च तूलिकाया च कुडमले ॥१५ ॥
कपाटाङ्कुरके क्षीरविकृतावपि याषिति ।
कूटोऽस्त्री पुञ्जमायाद्येष्वद्रिशृङ्ग शरा तरे ॥१५ ८॥
अथ शलाकारये तुच्छे सीराङ्गे फालसञ्ज्ञके ।
अयोघने नृते दम्भ योम्न निश्चलय त्रयो ॥१५ ९॥
कूपो भूषितक यायां ना तु ग र्त्तोदपानयो ।
गुणवृक्षेऽपकूपे तु स्त्रिया कूपी प्रयु यते ॥१५१ ॥
कूप्य क्ली पाशुलवणे कूपसाधौ तु मेद्यवत् ।
कूबरु वस्त्रियां ग त्रीसमारये स्याद्रथा तरे ॥१५११॥
त्रिषु चारौ द्वयो कु जे नृलिङ्ग स्याद्यग धरे ।
कूच पशौ भग्नशृङ्गे त्रिरस्त्रीश्मश्रुपीठयो ॥१५१२॥
भ्रमध्ये क थने दर्भे तन्तुवायपरि छदे ।
तथा यतिपवित्रे च पादाङ्गुष्ठा तरेऽपि च ॥१५१३॥
स्त्री तु चित्रकराणां स्या कूर्ची लेखनसाधने ।
कूचिका मस्तुपिण्डे च सूचितूलिकयोरपि ॥१५१४॥
कपाटस्याङ्कुरे चापि स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ।
कूर्परस्तु कफोणौ च जानु यपि पुमान्मत ॥१५१५॥
कूर्म कूर्मी कच्छपे स्त्रीपुसयो परिकी र्यते ।
गजाङ्घ्रिदेशे तु नखात्परे कूर्म पुमा मत ॥१५१६॥
कूल तीरे चमूकक्ष्यां तटाके स्तूप एव च ।
कूलक न स्त्रिया स्तूपे पुसि स्यात्कृमिपर्वते ॥१५१ ॥
कूलङ्कषा स्त्रिया नद्या त्रि तु कूलस्य काषके ।
कूष्माण्डस्तु पुमा विघ्नराजस्य प्रियभृत्यके ॥१५१८॥

गणभदे शालिजातिभेदे अश्वा तरेऽप्यथ ।
फलवल्ल्य तरे तु द्वे कूष्माण्डी क्ली तु त फले ॥१५१९॥
अवतेहेड इत्यादिष्वृग्विशेषेषु नप्स्त्रियो ।
कूष्मा तु पुंसि श ये च वाताभावे च कीर्त्तित ॥१५२ ॥
कृकस्तु मृगभेदे स्याद्द्वयोरडग्रौ त्वय पुमान् ।
कृकरस्तु पुमांश्च ये वाते च परिकीर्त्तित ॥१५२१॥
कृकवाकुर्द्वे सरटकेकिकुक्कुटखञ्जने ।
कृ च्छ्र कष्टेऽप्यधर्मे क्ली तद्वति त्रिष्वथाऽस्त्रियाम् ॥१५२२॥
तपोमात्रे तथा प्राजाप यसा तपनादिषु ।
कृणकोऽय कृणयितर्यभिधेयवदिष्यते । १५२३॥
वीणावशशलाकाया कृणिका स्यास्त्रियामियम् ।
कृत हते निर्मिते त्रिभक्ताऽवस्थितकिङ्करे ॥१५ ४॥
क्लीब चादियुगेऽन्नादि पक्वह येऽक्षदविनाम् ।
अक्षवातप्रभेदे च स्तोम छ द प्रभदयो ॥१५ ५॥
अलमर्थे क्रियायाश्च कृतमेत प्रयु यते ।
कृतज्ञ कुक्कुरे द्व स्यादपकारविदि त्रिषु ॥१५२६॥
कृतमाल पुमा ग धद्रव्ये तक्कोलनाम्नि च ।
आरग्वधेऽथ द्वे कृष्णमृगभिद्धूकभेदयो ॥१५२ ॥
कृतवेधन इत्येष कोशातक्यन्तरे पुमान ।
भवे पृथुफले स्व पफले जात्य तरेऽस्य च ॥१५२८॥
कृता तो यमसिद्धा तदैवाकुशलकर्मसु ।
कृति स्त्रियां स्या करणे हिंसनेऽपि कृतेऽपि च ॥१५ ९॥
चतुरक्षरकच्छन्दोभेदेऽशी यक्षरेऽप्यथ ।
धात्वो कृणति कृन्त यो पुंल्लिङ्ग कृतिरीरित ॥१५३ ॥
कृती स्यात्पण्डिते योग्ये कुशले चाभिधेयवत् ।
कृत्त तु वेष्टिते छि नेऽप्यभिधेयवदिष्यते ॥१५३१॥
कृत्यन्तु मेधवत्क्रुद्ध लु धे भीतेऽवमानिते ।
विद्विष्टेपि च सर धे कर्त्तव्यप्रश्चित ययो ॥१५३ ॥

कृत्तनीये कृतिकृतकृत्यसाधौ च कीर्त्तितम् ।
प्रयोजने तु क्ली कृत्य स्यात्कृत्या त्वभिचारजे ॥१५३३॥
दवते च क्रियाया च स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ।
कृत्रिम कृतिनिवृत्ते त्रि क्ली कास्याख्यलोहके ॥१५३४॥
कृत्रिमो धूकधूपाख्यनिर्यासे पुसि कीर्त्तित ।
तुरुष्काख्ये च निर्यासे लवण च विडाह्वये ॥१५३५॥
कृत्स्न स्यात्क्लीबमुदके निखिले तु त्रिलिङ्गकम् ।
कृदरस्त्रिषु हिंस्रे स्यात्पुमास्तु खदिरे सिते ॥१५३६॥
कृन्तत्रो नाऽन्तरिक्षे च लाङ्गलाऽग्रे च लाङ्गले ।
द्व तु स्वर्णाभिघातार्थसाधने मशकेऽपि च ॥१५३ ॥
कृन्तरो वृक्षभेदे ना मक्षिके कार्ये एव च ।
आलोचने तु त्रिष्वेष कृन्तर परिकीर्त्तित ॥१५३८॥
कृपस्तु पुसि द्रोणस्य स्यालके परिकीर्त्तित ।
कृपणस्तु कृमौ द्वे स्यान्मन्दकुत्सितयोस्त्रिषु ॥१५३९॥
कृपा दयाया पत्न्या तु कृपी द्रोणस्य कीर्त्तिता ।
कृपाणी छुरिकाया स्त्री कर्त्तन्या सैनिकस्य च ॥१५४ ॥
अथ खड्गे कृपाणोऽसौ पुंल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।
कृपीटमुदरेऽपि स्यात्तोयेऽपि च नपुसकम् ॥१५४१॥
कृपीटपाल उद्दिष्ट केनिपातसमुद्रयो ।
कृमिघ्नी कृमिवत्कीटे लाक्षाया कृमिले खरे ॥१५४ ॥
कृवि पुमास्तु तुवायद्रव्ये रूपे द्वयोस्त्वसौ ।
कुविन्दे कर्त्तिकाख्य तु स्त्रिया नापितभाण्डके ॥१५४३॥
कृशस्तनौ वा यव स्यात्पुमान्केतुग्रहेष्वियम् ।
कृषको लाङ्गलाख्ये ना कूटाख्ये त्रि कृषिवले ॥१५४४॥
कृषि स्त्री कृषिभूमौ च कर्षणे च प्रकीर्त्तिता ।
धातौ तु कृषतावुक्त कर्षणे च पुमान् कृषि ॥१५४५॥
कृषिकस्तृणजातौ ना कृषिक लाङ्गले मतम् ।
कृष्ट त्रि सामगानस्य रीत्या यतमयान्विते ॥१५४६॥

प्राप्त च कृष्टिक्रियया कषण तु नपुसकम् ।
कृष्टि पुमा बुधे स्त्री तु कषण च जनेऽपि च ॥१५४ ॥
कृष्णान्नपुसक सीसे मरिच दारतेऽयसि ।
करमद फले चाथ पुमाविष्णौ च पावके ॥१५४८॥
ध्वान्तपक्षे व्रीहिभेदे व्यासे शुक्रे तथाऽर्जुने ।
मेघे कलियुगे चापि करमदद्रुमेऽपि च ॥१५४९॥
नीलवर्णेऽप्यथो न यथुक्ते चकितचेतसि ।
वा यलिङ्गो द्वयोस्तु स्या छुद्र व ये मृगप्ययरा ॥१५५ ॥
काककोकिलयोराखुजातिभदऽप्यथ स्त्रियाम् ।
कृष्णा स्याद्राजकाधा यपि पत्नीद्रापदीषु च ॥१५५१॥
जलूकाजातिभदषु द्वादशस्वपि प स्मृता ।
सविषास्तेषु चैकस्मि द्राक्षातिविपयोरपि ॥१५५२॥
हिरण्याद्याश्च या प्रोक्ता सप्तजिह्वा शिवागमे ।
अग्नेस्तास्वपि चैकस्या या दक्षिणदिशि स्थिता ॥१५५३॥
कृष्णवर्णस्तु सवर्त्ते वातुलेऽपि चलेऽपि ना ।
कृष्णव र्मा दुराचारे त्रिर्ना च द्रे च पावके ॥१५५४॥
कृष्णवृ ता तु पाटल्या माषपणाह्वयापधौ ।
कार्ष्मर्ये च स्त्रियां ना तु कृष्णवृन्त कुलत्थके ॥१५५५॥
कृष्णसपस्तु कृष्णोऽहौ द्वयोदर्वीकरा तरे ।
कृष्णसारा शिंशपाया ना स्नुह्या द्वे मृगा तरे ॥१५५६॥
कृसरस्त्विक्षुदितरौ मिश्रवर्णान्तरे पुमान् ।
त्रिस्तद्वति कशेर्वार ये तु क्लीब वारिगुल्मके ॥१५५७॥
सिततण्डुलमाषस्तु यवाग्वां कृसरा त्रिषु ।
केत पुमा स्यादिच्छाया तथा चिह्ननिवासयो ॥१५५८॥
केतन तु ध्वजे गेहे चापे चोपनिम त्रणे ।
अकार्यकृत्यदेहेषु सकेतस्थान एव च ॥१५५९॥
केतुर्ध्वजे च चिह्ने च ना अशो पातरश्मिषु ।
केतुमान्केतुयुक्ते त्रिश्छन्दोभेदे स्त्रियां मता ॥१५६ ॥

केतुमत्युदिता छन्दोन्तरे त्रिस्तु सकेतुके ।
केतुमाला नृभूदेशभदे तीर्था तरे स्त्रियाम् ॥१५६१॥
पुमानाग्नीध्रतनये क्लीब वर्षा तरे भवेत् ।
केद्रो वृक्षभदेऽथ त्रिषु स्यादेषके करे ॥१५६२॥
केदारो ना शिवेऽथाऽस्त्री शालिक्षेत्रालवालयो ।
पुण्यस्थानविशेषे च क्षेत्रे भूम्य तरेऽपि च ॥१५६३॥
केनार कुम्भिनरके शिर कापालसधिषु ।
केरलास्तु नृभूम्नि स्युदक्षिणापथवर्त्तिनि ॥१५६४॥
नीवृद्भेदऽथ तद्द्शसम्भूतेषु नृषु द्वयो ।
तद्राजे तु पुमा ज्ञेय केरल स्त्री तु केरली ॥१५६५॥
तद्राज यस्न्यपत्ये स्यात्तथा स्याद्भेषजा तरे ।
त्रिषु केलिकिल क्रीडाशीले ना तु विदूषके ॥१५६६॥
कूष्माण्डारये शिवगणे हेरम्बस्य प्रियङ्करे ।
केवलस्तु त्रिरेकाकिकृत्स्नयोरवधारिते ॥१५६ ॥
ज्ञाने तु पूर्णे क्लीब स्यान्निणये चाऽवधारणे ।
केवलस्तु पुमानेष कुहने परिकीर्त्तित ॥१५६८॥
केश स्यात्पुसि वरुणे ह्रीबेरे कुन्तलेऽपि च ।
केशपाशी तु चूडार्थे स्त्री ना केशकलापके ॥१५६९॥
केशरस्तु हरौ पुसि द्वे छागे त्रिषु तूत्कटे ।
केशव केशिनि त्रि स्याद्वि णुपुन्नागयो पुमान्॥१५ ॥
त्रि केशवप्रियो योग पुसि वेङ्कटपर्वते ।
स्त्री केशवानुजा दुर्गादे यां योगे यथायथम् ॥१५७१॥
क्ली केशवायुध विष्णवायुधे च रथचक्रके ।
केशी केशवति त्रि स्या पु लिङ्गो दानवा तरे ॥१५७२॥
कशिनी तु भवेच्चोरपुष्पीस्तम्बे स्त्रियामियम् ।
केशी स्त्रियां स्या चूडायां केश पुसि शिरोरुहे ॥१५ ३॥
किरणे च भगे चैव ह्रीबेरे च नपुसकम् ।
केसरस्त्वस्त्रियां पुष्पकिञ्जल्केऽप्यश्वसिंहयो ॥१५७४॥

सटे च मातुलुङ्गाख्यफलस्या तद्गवास्पदे ।
सूक्ष्मकेशे रामठऽथ वकुले नागकेसरे ॥१५ ५॥
पुन्नागे वेङ्कटाख्ये ना पवते केसरा पुन ।
कार्पास्यां स्यात्स्त्रियां क्ली तु प्रसवेऽप्रोक्तभूरुहाम् ॥१५७६॥
केसरी तु पुमान्सिहे मातुउङ्गे तुरङ्गमे ।
पुन्नागे चाप्यथो भेद्यलिङ्ग केसरवत्यसौ ॥१५ ७॥
कैटभोऽसुरभदे स्याद्दुर्गादेया तु कैटभी ।
कैडर्यस्तु पुमान्निम्बे कटफलाख्ये च पादपे ॥१५ ८॥
मदनाख्ये द्रुमेऽथैषान्तरूणाम्प्रसवे नपि ।
कैतव कपट द्यते नपुसकमुदीरितम् ॥१५७९॥
कैरव कितवे शत्रौ तथा पुल्लिङ्ग इष्यते ।
कैरव कुमुदे क्लीव चन्द्रिकाया तु कैरवी ॥१५८ ॥
किरातसम्बन्धिनि तु कैरात त्रिषु कीर्त्तितम् ।
कैराती तु स्त्रियामूर्ध्वाऽधोगतौ क्षिप्रपत्रिण ॥१५८१॥
कैवल्य केवलत्वे च मोक्षे चाऽपि नपुसकम् ।
कौशकी नाट्यवृत्यन्तरे स्त्री क्ली केशवृन्दके ॥१५८२॥
कोकश्चक्रे वृके ज्येष्ठ्यां खजूरीद्रुमभेकयो ।
कोक कोकीवृके भेके चक्रवाकेऽपि च द्वयो ॥१५८३॥
पुमांस्तु कोक आदाने ज्येष्ठ्यां खेजूरिकातरौ ।
क्लीव कोकनद रक्ताऽब्जे रक्तकुमुदेऽपि च ॥१५८४॥
कोकिल पक्षिभदे द्व ना तु तूले प्रकीर्त्तित ।
कोटक कुञ्चितरोष त्रिलिङ्ग परिकीर्त्तित ॥१५८५॥
कोटि स्त्री चापमात्रेऽश्रौ प्रकर्षे शकलेऽपि च ।
चापाग्र च तथा सख्याभेदे लक्षशतात्मनि ॥१५८६॥
स्त्री कोटिका भवेत्कृष्णे मण्डूके श्वेतवक्त्रके ।
कोटिर पुसि नकुले शक्रगोपकशक्रयो ॥१५८७॥
कोटिवर्षम्पुरे देवीकोटनाम्नि नपुसकम् ।
स्त्री कोटिवर्षा स्पृक्कायां योगार्थे तु यथायथम् ॥१५८८॥

कोट्टङ्क स्याद्द्वयो क्षुद्रे मृगे जन्तुघराऽभवे ।
इन्द्रकोशाख्याऽवयवे पुस्यथ वेश्मनो मत ॥१५८९॥
कोट्टारो नरके कूपे पुष्करिण्याश्च पाटके ।
कोणो वाद्यप्रभेदे स्यादेकदेशे गृहादिन ॥१५९ ॥
शनैश्चरे चौलगुडे श द कोणा तु नप्स्त्रियो ।
नाव्यवादनभदे द्वे कोण कोणीति सैरभे ॥१५९१॥
कोणिका तु स्त्रिया नीडे कोणितर्येष भेद्यवत् ।
कोथो ना नेत्ररोगस्य भेदेऽथ शठिते त्रिषु ॥१५९२॥
कोदण्ड वेणुचापे च चापे चतुररत्निके ।
धनुर्मात्रेऽपि च क्लीब पुसि स्यान्नोवृद तरे ॥१५९३॥
कोमल क्ली जले स्वर्गे ना मृदु येष वाच्यवत् ।
कोरो वृक्षाङ्कुरे बालकसुमे च पुमा मत ॥१५९४॥
कोरकोऽस्त्री कुडमले स्या कक्कोलकमृणालयो ।
अथाभिधेयव प्रोक्त श द्कारणि कोरक ॥१५९५॥
कोल व्योषेऽधकर्षे च तक्कोले बदरीफले ।
शुण्ठ्यां चव्य तु कोला पिप्पल्यां शस्त्रे पुरा तरे ॥१५९६॥
कोल प्लवेशनोशित्रेऽङ्कपालौ भेलकौषधे ।
द्वे त्वाखा सूकरे चाथ खञ्ज कोलस्त्रिषु स्मृत ॥१५९ ॥
कोलकम्मरिचे क्लीब कक्कोले चाथ कोलिका ।
द्रुतद्रुमारोहशीले जन्तौ मूषिकसन्निभे ॥१५९ ॥
निर्विषाहिप्रभेदे च स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ।
कोशोऽस्त्री कुडमले पात्रे दिव्ये खड्गपिधानके ॥१५९९॥
जातिकोशेऽर्थसङ्घाते पेश्या शब्दादिसग्रहे ।
पुस्तके वेष्टकद्रव्ये शस्त्रे प्रजननेऽपि च ॥१६ ॥
वृषणे कृमिनीडे च कौशेयप्रकृतावपि ।
कृताकृते हेमरूप्ये पद्मव्रज्यावलावपि ॥१६ १॥
अरन्ध्रे चापिरन्ध्रे च स्त्री तु कोश्यल्पकोशके ।
वारिवाहे तु न पुमानेष कोश प्रकीर्त्तित ॥१६ २॥

कोशकस्तु पुमानेष कीर्त्तित पत्रता तरे।
क्ली तु कोशफल जातिफले तक्कोलकेऽपि च ॥१६ ३।
स्त्री तु कोशफला राजकोशातक्या प्रकीर्त्तिता।
कोशातक्या तथा तिक्तकाशातक्यामपीष्यते ॥१६ ४॥
कोशिका तु स्त्रिया दीपाधारे स्या मल्लिकाभधे।
कोष्ठो न स्त्री कस्थलेऽ त कुक्षाव तगृहेऽपि च ॥१६ ५॥
कोसला मध्यदशस्थे नीघृद्भेदे नृभूमनि।
मुनौ ना कोसल श्यामपाण्डरे त्र तु तद्वति॥ ६ ६॥
कोहली तु स्त्रियां ज्ञेया कूष्माण्डारयलता तरे।
भृश मुखरकन्यायां कूष्माण्डप्रसवे तु नप् ॥१६ ७॥
आवेशमाजि तु गृहशुनके कोहलो द्वयो ।
मर्त्यजात्य तरऽम्बष्ठया वैश्याज्जाते तथा मत ॥१६ ८॥
कोहलो वाद्यभदे ना नाट्यशास्त्रप्रवक्तरि।
काकिलोऽक्ली विधिभिदि त्रिस्तु कोकिलयोगिनि॥१६ ९॥
कौकूटिको दाम्भिके त्रि स्या चादूरेरितेक्षणे।
कौक्कृ यमनुतापे स्यादयुक्तकरणऽपि च ॥१६१ ॥
कौक्कट क्लीबमायासे त्रि तु कुक्कुटयोगिनि।
कौणपो नरके ना द्वे राक्षसे त्रि तु यौगिके॥१६११॥
कौतुकम्मङ्गले क्लीब हषनर्मोत्सवेषु च।
विवाहसूत्रे विषयभोगे कामे कुतूहले॥१६१२॥
कौन्तो हरेणौ स्त्री कु तसम्बन्धिनि तु भेद्यवत्।
कौपीन क्ली गुह्यकीराकार्यकक्षापुटेष्वपि॥१६१३॥
कौमुद कार्त्तिके ना स्यात्पूर्णिमायाश्च कौमुदी।
स्त्रीलिङ्गे चन्द्रिकाया चाथ त्रि कमुदयोगिनि॥१६१४।
कौम्भ कुम्भाश्रिते त्रि स्यात्कौम्भन्त्वा ये दशाब्दिके।
कौलटेय कौलटेरो नृस्त्रियोर्बन्धकीसुते॥१६१५॥
सुतस्तु सत्या भिक्षुक्या अटन्त्या स्यात्कुलानि य ।
तस्मिन्कौलटिनेयारये कुलटायास्सुतेऽपि च॥१६१६॥

कौलीन लोकवादे च युद्धे पश्वहिपक्षिणाम् ।
अपवादे कुलीनत्वे गुह्यज मककर्मसु ॥१६१ ॥
कौलेयक शुनि द्वे स्यात्कुलीने तु त्रिषु स्मृत ।
कौश कुशस्थलपुरे वा यवत्त कुशाश्रिते ॥१६१८॥
कौशिको गुग्गुलौ चेन्द्रे ना द्व तु कुशिकात्मजे ।
यालग्राहिण्युलूके च नकुले च प्रकीर्तित ॥१६१९॥
कौशिक क्ली मज्जधातौ कौशिकी तु स्त्रियामियम् ।
पावर्त्यां लि छविस्थे च कीर्तिता सरिद तरे ॥१६२ ॥
कौसला स्यादयोध्याया त्रिस्तु कोसलयोगिनि ।
कौसुम्भ तु कुसुम्भाञ्जने कुसुम्भेऽप्यरण्यजे ॥१६२१॥
क्रकच करपत्रेऽस्त्री ग्रथिलाख्यतरौ पुमान् ।
क्रकरस्तु करीरद्रौ दीनक्रकचयोश्च ना ॥१६२२॥
द्वयोस्तु पक्षिभदऽसौ क्रकर परिकीर्तित ।
क्रतुमु य तरे यज्ञधीसक पक्रियासु ना ॥१६२३॥
क्रन्दन क्ली क्रन्दितवद्रोदनाह्वानयोर्मतम् ।
क्रमोऽङ्घ्रौ परिपाट्यां च वेदपाठा तरे विधौ ॥१६२४॥
क्रान्तौ स्थानकभदे च द्वे वारवाह्वयमूषिके ।
क्रमणश्चरणे क्रा त क्रमणो द्व तुरङ्गके ॥१६२५॥
क्रमुक पट्टिकालोध्रे ब्रह्मदारुद्रुमेऽपि च ।
पूगद्रुमे भद्रमुस्ते क्रमुक तु नपुसकम् ॥१६२६॥
प्रसवेऽप्युक्तवृक्षाणान्तथा कार्पासिकाफले ।
क्रमेलको द्वयोरुष्ट्रे नि व्यादुग्रीसुतऽपि च ॥१६२ ॥
क्रव्याद प्रेतदाहाग्नौ त्रिर्मांसादे द्वि राक्षसे ।
क्रिमिर्ना भूचरे क्षुद्रज तुभेदे च लाक्षिके ॥१६२८॥
द्वे तूणनाभे करणीवैदेहकसुतेऽपि च ।
क्रिमिघ्नो ना विडङ्गे त्रि क्रिमिह तर्यमानुषे ॥१६२९॥
क्रिमिज स्यादलक्तेप्यगुरौ क्ली त्रिस्तु यौगिके ।
क्रिमिरो ना भवेद्वर्णे सितलोहितमिश्रिते ॥१६३ ॥

त्रि तद्वति स्त्री क्रिमिरा मृगभदे बिलेशये ।
क्रिया स्त्री निष्कृतो शिक्षाचिकित्सापायकर्मसु ॥१६३१॥
करणारम्भपूजासु चेष्टायां सम्प्रधारणे ।
प्रतिष्ठायां च राशौ तु मेषाख्ये ना क्रियो मतः ॥१६३२॥
क्रियाकारः सारादि च क्रियाया करणे पुमान् ।
क्रीडा नर्मणि लीलायामज्ञानेऽपि मता स्त्रियाम् ॥१६३३॥
क्रुश्वा द्व क्रोष्टुवकयोः शिराया क्रुश्वरी स्त्रियाम् ।
क्रुष्ट सामस्वराणा स्यात्सप्तानामादिमे पुमान् ॥१६३४॥
रुदिते क्ली त्रि तु क्रुष्टिक्रियायाः कर्मता गते ।
क्रूरोऽभिधेयवत्क्रुद्धे दारुणे कठिनोष्णयोः ॥१६३५॥
घोरेऽपि च नृशंसे च गुणमात्रे तु पुंस्ययम् ।
क्रूरा स्त्री बदरीकण्टकार्यां क्रूरं तु कौरुसे ॥१६३६॥
क्रूरदृक् पिशुने वाच्यलिङ्गः पुंसि शनैश्चरे ।
क्रयिणि स्त्री विक्रये काले क्रियतां चित्त च तव्रते ॥१६३७॥
क्षेत्रादे फलभोगाय दत्त्वा किञ्चित्परिग्रहे ।
क्रोड कर्षे तथो सङ्गे क्रोड क्रोडी च सूकरे ॥१६३८॥
क्रोड क्रोडा चोरसि स्यात्क्रोडो ना शनिरक्षसो ।
क्रोधनो द्वे शुनि त्रिस्तु कोपे शीले नपि क्रुधि ॥१६३९॥
क्रोश सामान्तरे क्रोशो योजनार्धे च क्रोशने ।
क्रोष्टा क्रोष्ट्री शृगाले द्वे क्रोष्ट्री तु स्यात्स्त्रियामियम् ॥१६४० ॥
लाङ्गल्याख्यौषधे क्षीरविदार्याख्ये च भेषजे ।
क्रौञ्चो द्वीपे तृतीयेऽस्य जम्बूद्वीपस्य ना गिरौ ॥१६४१॥
तन्नाम्न्यथ क्ली स्यात्सामान्तरेऽथ क्रुङ खगे द्वयोः ।
सम्बन्धिमात्रे तु क्रुञ्च क्रौञ्चं स्याद्वाच्यलिङ्गकः ॥१६४२॥
क्रौञ्चादनं तु पिप्पल्यां चिञ्चाटकमृणालयोः ।
क्लीतकं क्ली करञ्जस्यैकबीजे मधुरौषधे ॥१६४३॥
क्लीतकी तु स्त्रियामेषा नीलिसञ्ज्ञौषधे स्मृता ।
क्लीबोऽस्त्रियां मतः षण्ढे त्रिर्निर्वीर्ये च निष्फले ॥१६४४॥

क्लेदो मुखप्रसेक च स्यात्पुस्योषधिच द्रयो ।
क्लेदु क्षेत्रे शरीरे च भङ्ग च द्र पुमा मत ॥१६४५॥
क्लेशो दु खेऽपि कोपेऽपि व्यवसायेऽपि दृश्यते ।
क्लेशक्रस्तु यमे नाऽथ क्लेष्टरि क्लेशितर्यपि ॥१६४६॥
तथा क्लेशयितर्येन मेघलिङ्ग प्रचक्षते ।
क्वथ स्यादतिदु खेऽपि निष्पाकेऽपि द्रवस्य च ॥१६४ ॥
क्ष सवर्त्ते राक्षसे च नरसिंहे च विद्युति ।
क्षेत्रे नाशे क्षेत्रपाले पुमानेष प्रकीर्त्तित ॥१६४८॥
क्षणस्त्ववसरे मध्ये पारतन्त्र्ये तथोत्सवे ।
मुहूर्त्ते षष्ठभागे च नाड्या कालेऽतिसूक्ष्मके ॥१६४९॥
निर्व्यापारस्थितौ पुंसि व्यापारे चाऽप पर्वणि ।
क्षणदो गणके रात्रौ क्षणदा क्षणदञ्जले ॥१६५ ॥
क्षणिक क्षणमात्रस्थायिनि त्रि क्षणव यपि ।
क्षणिका तु स्त्रियामेषा सौदाम यामुदीरिता ॥१६५१॥
क्षत व्रणे क्ली क्षणने लग्ना षष्ठे च राशके ।
त्रिलिङ्ग पुनरेतत्स्या खण्डिते च हते तथा ॥१६५२॥
क्षत्ता ना सारथौ द्वा स्थ दूते मुसलरुद्रयो ।
वेधस्यथ क्षत्रियाया पारशैनुकसञ्ज्ञक ॥१६५३॥
शूद्राज्जातो योऽत्र केचिद् ये वायोगवाह्वये ।
वैश्याया जनिते शूद्रादन्ये पारशवाह्वये ॥१६५४॥
ब्राह्मणादूढशूद्राया जाते प्रेष्यासुते द्वयो ।
वाच्यवत्तु निवृत्तेप्यविनीतेऽपि मृते तथा ॥१६५५॥
क्षत्र तु स्याद्धने तोय क्षात्रये च नपुसकम् ।
द्वे क्षत्रिय स्याद्राज ये क्षत्रिया क्षत्रियाण्यपि ॥१६५६॥
जातौ स्त्री वेऽथ पुयोगे क्षत्रियीति स्त्रियां भवेत् ।
क्षपा स्त्रियां भवेद्रात्रौ धान्यस्तम्बे तु ना क्षप ॥१६५ ॥
गोऽजाऽविमहिषाणाङ्क्वात्याद्रच्छगणके जले ।
क्षमा क्षान्तिपृथिव्यो स्त्री त्रिषु योग्यसमर्थयो ॥१६५८॥

१ नियुक्ते वा ।

नाग्ये हिते च क्लीबे तु क्षम युक्ताथकम्मतम् ।
क्षयस्त्वपचये कक्षो क पा त राजयक्ष्मणि ॥१६५९॥
मन्दिरे च निवासे च हिंमाया गमनेऽपि च ।
क्षरो धाराधरे पुसि सलिले तु नपुसकम् ॥१६६ ॥
क्षता प्रानटसमाख्ये स्त्री क्षरी क्षरितरि त्रिषु ।
क्षव क्षुते राजिकाया कासे चापि पुमान्मत ॥१६६१॥
क्षवथुस्तु क्षुते कासे पु लिङ्ग परिकीर्त्तित ।
क्षामस्तृणाग्नौ ना क्षीणे त्रिषु क्षामा स्त्रियाम्भुवि ॥१६६२॥
क्षार स्या स्वर्जिकाक्षारे गुडे काचाख्यमृद्यपि ।
क्षरणे भस्मनि तथा धूर्त्ते च लवणे पुमान् ॥१६६३॥
सजाते मिश्रणात्त्रिस्तु तद्वत्येष प्रकीत्तित ।
रसे च तिक्तलवणयोगो थ त्रि तु तद्वति ॥१६६४॥
क्षारक पक्षिम स्यादिपिटके पुष्पजालके ।
क्षारतृक्षारयित्रोस्तु भेद्यव क्षारको मत ॥१६६५॥
क्षारित स्राविते क्षारे चाऽभिशस्तेऽपि च त्रिषु ।
क्षालनोऽरत्निके षष्ठे यस्य यूपस्य सप्त च ॥१६६६॥
दश चारत्नयोर्मान तस्य स्त्रीक्लीबयो पुन ।
क्षालन क्षालना चेति कृतौ क्षालयतेर्भवेत् ॥१६६ ॥
क्षितिजने निवासे स्त्री कालभे च क्षये भुवि ।
क्षित्वा ना केशवे वायौ क्षित्वरी स्त्री सरिन्निशो ॥१६६८॥
क्षिपण्युस्तु पुमान्देहे सुरभौ वाच्यलिङ्गक ।
क्षिपण्युस्ताडिति स्त्री ना वस तार्थायुधेऽनिले ॥१६६९॥
क्षिप्र तु पादाङ्गुष्ठस्य तर्ज याश्चान्तरे न पुम् ।
असत्त्वेऽपि च शीघ्रार्थे त्रि तु स्यात्सत्त्वगामि चेत् ॥१६७ ॥
क्षियाक्षये तथाचाराऽतिक्रम च स्त्रिया मता ।
क्षीर क्ली सलिले दुग्धेऽ येर्धर्चादिष्वधीयते ॥१६ १॥
क्षीरशुक्ला विदार्यां स्त्री ना तु शृङ्गाटकाह्वये ।
क दार्थजलजस्तम्बे यौगिके लिङ्गमथत ॥१६ ॥

क्षीराब्धिजं तु सामुद्रलवणे मौक्तिकेऽपि च ।
पुमांस्तुषारकिरणे कमलायां तु योषिति ॥१६७३॥
क्षीराशस्तु द्वयोर्हंसे क्षीरस्य त्वाशके त्रिषु ।
क्षीरिको राजिलाहौ द्वे क्षीरका तु स्त्रियामियम् ॥१६७४॥
दुग्धिकासञ्ज्ञकस्तम्बे फलेऽप्यक्षारव्यपादपे ।
क्षुणास्त्रिषु स्यादु मत्ते क्षोभक्रोधरुजासु ना ॥१६७५॥
क्षुद्रो दरिद्रे कृपणे त्रि क्रूरेऽपनिकृष्टयोः ।
क्षुद्र इत्येष पुंलिङ्ग उत्सवे परिकीर्त्तितः ॥१६७६॥
क्षुद्रकम्फाणिताख्यायां गुडस्य विकृतौ मतम् ।
तथैव कूप्यलवणे द्वयोस्तु क्षत्रियान्तरे ॥१६७७॥
क्षुद्रा व्यङ्गानटीकण्टकारिकासरघासु च ।
चाङ्गेरीवेश्ययोर्हिंस्रामक्षिकामात्रयोरपि ॥१६७८॥
क्षुप्रं कण्टकिगुल्मे च तुहिने च नपुंसकम् ।
क्षुमाऽतसीनीलिकयोः स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ॥१६७९॥
क्षुरो नापितशस्त्रे ना कोकिलाक्षे च गोक्षुरे ।
क्षुरकः कोकिलाक्षे च गोक्षुरे तिलकद्रुमे ॥१६८०॥
क्षुरप्रो नाऽर्धचन्द्राख्यशस्त्रेऽथाश्वान्तरे द्वयोः ।
क्षुल्लकोऽल्पे च नीचे च दरिद्रचाभिधेयवत् ॥१६८१॥
क्षेत्रं तीर्थे क्षितौ व्योम्नि शरीरे योनिवन्द्ययोः ।
केदारदारागारेषु नक्षत्रे पुरि राशिषु ॥१६८२॥
क्षेत्रज्ञ आत्मन्यथ स दक्षक्षेत्रविदोस्त्रिषु ।
क्षेत्रिको ना तुरुष्काख्यनिर्यासे क्षेत्रिणि त्रिषु ॥१६८३॥
क्षेत्रिया क्षुद्रधान्ये स्याद् गवीधुरिति विश्रुते ।
त्रिस्त्वथ दुष्प्रतीकारव्याधादौ धान्यवप्रजे ॥१६८४॥
निराकार्यतृणे पारदारिके यत्पुनर्विषम् ।
देहान्तरे सङ्क्रमय्य चिकित्स्यं तत्र चोच्यते ॥१६८५॥
क्षेम्यं त्रि क्षत्रसाधौ स्याल्लवणे क्ष्यूषरोद्भवे ।
क्षेपो विलम्बावहेलानिन्दाप्रेरणलेपने ॥१६८६॥

क्षेपणी जालभिन्नौकादण्डयो प्रेरण तु नप ।
पादाङ्गुष्ठाङ्गुलीमध्ये क्षपणम्पुन्नपुसकम् ॥१६८७॥
क्षेपणीया भिण्डिपाले ना क्षेमन्ये त्वय त्रिषु ।
क्षेमश्चण्डौषधौ क्षेमा चण्ड्या क्षेम त्रि निर्भये ॥१६ ८॥
अस्त्री क्षेम शुभे मुक्तौ तथा प्राप्तस्य रक्षणे ।
क्षोणी तु मेखलाया स्त्री माञ्च्या भुवि च कीर्त्तिता ॥१६ ९॥
द्यावापृथ योस्तु क्षोणी इति द्वित्वे प्रयुज्यते ।
क्षोदो जले चूणने च रजस्यपि पुमामत ॥१६९ ॥
क्षोभ्यन्नपुसके वज्रे क्षोभणीये तु भेद्यवत् ।
क्षौद्रम्मधुनि पानीये क्षुद्रयागिनि तु त्रिषु ॥१६९१॥
क्षाममस्त्री दुकूलेऽट्टे क्षाम तु स्यान्नपुसकम् ।
अतसीजे च शणजे तथा व कलजऽशुके ॥१६९ ॥
क्ष्माशब्दो भुवि नद्या च स्त्रीलिङ्ग परिकीर्त्तित ।
क्ष्वेड कर्णामये राजकोशातक्या ध्वनौ विष ॥१६९३॥
क्ष्वेड रक्तार्कपणस्य फले घोषसुमेऽप्यथ ।
दुरासदे च कुटिले क्ष्वेड स्यादभिधेयवत् ॥१६९४॥
क्ष्वेडा वशशलाकाया योधसिंहध्वनावपि ॥१६९४इ ॥

ख

खमिन्द्रिये पुरे क्षेत्रे शून्ये बिन्दौ विहायसि ।
सवेदने देवलोके नक्षत्रे छिद्रगेहयो ॥१६९५॥
अभ्रके ब्रह्मणि क्ली स्या खा तु कूपे भवेत् स्त्रियाम् ।
खकणीनी तु दुर्गाया चिह्नपक्षिस्त्रियामपि ॥१६९६॥
खग पुसि रवौ वायौ ग्रहे देवे शरे रणे ।
चातके पक्षिमात्रे च द्वे त्रिर्व्योमादिगामिनि ॥१६९ ॥
खगवक्त्रस्तु लकुचे खगाऽस्ये तु यथायथम् ।
खगासनस्तु विष्णौ च तथा स्यादुदयाचले ॥१६९८॥

खगेन्द्रो गरुडे गृध्रे तथा राजान्तरे मत ।
खचरो ना रवौ मेघे वायौ स्याद्द्रूपका तरे ॥१६९९॥
द्वे तु विद्याधरे रक्ष पक्षिणोर्वेसरेऽपि च ।
खचित तु मणौ लोहविद्धे स्यादभिधेयवत् ॥१ ॥
तथा स्यादुद्धृतस्नेहे घृतहीने च दध्नि नप ।
खजस्तु मन्थने क्षोभे दर्वीमन्थानयो पुन ॥१ १॥
खजस्तु पुसि म थाने त्रिषु व्योमादि खाऽथजे ।
खजक स्यादुघृते चापि मन्थानेऽपि पुमानयम् ॥१ २॥
खजक खजिका चेति द्वयोस्स्याद्रसपाचके ।
खजा द्वे मरणे तु स्त्री करे च प्रसृताङ्गुलौ ॥१ ३॥
खजाको ना मन्थदण्डे द्वे खगे क्ली विहायसि ।
शरीरे च खजाका तु स्त्री दव्यामसतीस्त्रियाम् ॥१ ४॥
खञ्जा छन्द प्रभेदे स्त्री खञ्ज खञ्जी च विप्रत ।
अपत्येऽन्तावसायिन्या खोडे त्रि लशुने तु ना ॥१ ५॥
खञ्जनम्पङ्गुगमने खञ्जरीटे पुनद्वयो ।
खञ्जनी खञ्जरीटे द्व स्त्री सपप्याङ्गतौ तु नप ॥१ ६॥
खञ्जरीटी गतिभिदि स्त्री द्वे खञ्जनपक्षिणि ।
खटोऽन्धकूपकफयो प्रहारान्तरटङ्कयो ॥१ ॥
हले छदिस्तृणे चापि स्यात्सुगन्धितृणान्तरे ।
खटको घटके स्त्री तु कठिन्यां खटिका मता ॥१७ ८॥
तृणभित्कर्णशष्कुल्यो खटिकाऽ(र्ध)मुद्रिते करे ।
करे मुद्राविशेषे च द्वयो स्या कगनिमिते ॥१७ ९॥
खटखादक एष द्वे काकजम्बुकज तुषु ।
काचपात्रे पुमानेष घस्मरे तु मतस्त्रिषु ॥१ १ ॥
खटी तु खटिकाधातौ स्त्रियामेव प्रकीर्त्तिता ।
खट्टिक सैनिके द्वे ना महिषी क्षीरफेनके ॥१७११॥
खटवा पर्यङ्क आचार्यासने दोलौषधीभिदो ।
आयुर्वेदप्रसिद्धे च व्रणबन्धनयन्त्रके ॥१ १२॥

---

१ खजकी वा ।

खटवाङ्गोऽस्त्री वृक्षभेदे पृष्ठास्थनि चिते धने।
दिलीपनृपतौ पुंसि खटवाङ्गी तु लतान्तरे ॥१ १३॥
खडस्तु खण्डने तक्रशाकेऽथाऽस्त्री तृणान्तरे।
खडक वगले क्लीब कठिया खडिका मता ॥१ १४॥
स्त्रियां तु कठिनीधातौ खडीति परिकीर्त्तिता।
खड्गस्त्री मृतखटवायां तथा स्याद्भूषणान्तरे ॥१७१५॥
खड्गो गण्ड कभृङ्गासिबुद्धभदशरेषु ना।
द्वे गण्डकमृगे यादोभेदे च मकराभिधे ॥१ १६॥
खड्गकोश पिधानेऽसे खड्गाधारोऽपि कथ्यते।
खड्गधेनु स्त्रियामुक्ता छुरिका गण्डकस्त्रियो ॥१७१ ॥
खड्गारीटस्तु फलकाऽसिधाराव्रतधारिणो।
खड्गारीट खड्गफले तथा स्या खड्गनर्त्तके ॥१ १८॥
खड्गिको माहषीक्षीरफेनासिधरसैनिके।
खड्गी द्वे गण्डके मञ्जुघोषऽथाऽसिधरे त्रिषु ॥१७१९॥
खण्डोऽस्त्री शकले नेक्षुविकारमणिदोषयो।
खादुपानान्तरे भेदे क्लीब तु लवणेऽधिजे ॥१ २ ॥
खण्ड तु खण्डिते भेद्यलिङ्गमेतत्प्रकीर्त्तितम्।
अर्धे गुडविकारे च कश्चित्स्वादुद्रवेऽभ्यधात् १ २१॥
खण्डको लास्यभदे ना नखहीननरे द्वयो।
खण्डधारा नृत्यभेदे कर्त्तर्यञ्च प्रकीर्त्तिता ॥१७२२॥
खण्डना क यकार्यां स्त्री स्फुटवैधव्यलक्ष्मणि।
शास्त्रोक्तेरविराद्ध्यायामपुम् खण्डयते कृतौ ॥१ २३॥
विसर्गे वञ्चने राजद्रोहादावपि सा मता।
ना खण्डपरशु खण्डे परशौ च महेश्वरे ॥१७२४॥
खण्डपर्शु पर्शुरामे शङ्करे चूर्णलेपिनि।
खण्डामलकराह्वोश्च भग्नद तगजे च ना ॥१७२५॥
अस्त्री तु खण्डलं खण्डे चीरवस्त्रे च कीर्त्तितम्।
खण्डाभ्रमभ्रलेशे स्यात्तथा द तक्षतान्तरे ॥१७२६॥

खण्डिकस्तु हरेण्वाख्ये कलायाख्ये च धान्यके।
भुजकक्षे गुडकृतिखण्डाख्येतर्यपीष्यते ॥१ २ ॥
खण्डिका काष्ठखण्डे स्त्री कण्डिकायामपीष्यते।
खण्डिता तु स्त्रिया प्रावृड्रात्रौ शकलिते पुन ॥१ २८॥
वा यलिङ्गो विरहिते तस्य वाक्ये च खण्डित ।
खण्डी खण्डवति त्रि स्याद्वनमुद्गे तु पुस्ययम् ॥१७२९॥
तथा खण्डनकारे श्रीहर्षे भूमौ तु खण्डिनी।
खनमालो भवे पुसि धूमे चापि बलाहके ॥१ ३ ॥
खदतिर्भक्षण स्थैर्ये हिंसायां च प्रकीर्त्तित ।
खदिरस्त्वृषिभदे च गायत्रीतरुशक्रयो ॥१७३१॥
द्वे तु वृश्चिकभेदेऽय दश्चिकि स्यनिषे मत ।
स्त्रिया खदिरका लाक्षा गिरिभेदे पुमानयम् ॥१ ३२॥
खदिरी स्त्री नमस्कारीसञ्ज्ञ व ल्यन्तरेऽपके।
खदिरी शाकभदे स्त्री ना च द्रे दन्तधावने ॥१ ३३॥
शमीफला समाख्ये च जलशाकलता तरे।
खद्योतोऽर्केऽग्निकीटे तु खद्योताऽक्ष्ण्यदक्षिणे ॥१ ३४॥
खनको मूषिके द्वे स्या मर्त्यजात्य तरे तथा।
राज्ञीमागधसम्भूते त्रि तु स्यादवदारके ॥१७३५॥
भूमिसचितवित्तज्ञे सन्धिचौरे तथैव च ।
खनि खनति धातौ ना स्त्री गर्त्ते चाऽऽकरे निधौ ॥१ ३६॥
क्लीब खनित्र कुद्दाले खनित्री तु तपस्विनाम्।
स्त्रियां विशाखिकासञ्ज्ञ दण्डभेदे प्रकीर्त्तिता ॥१ ३७॥
खपरस्तस्करे धूर्त्ते भिक्षाभाण्डकपालयो ।
खपुरो ना पूगवृक्षे पूगपट्टे घटे तरो ॥१७३८॥
निर्यासे भद्रमुस्तेऽथ बालाख्ये ग धवस्तुनि।
पुनपुमकयोरेत क्ली तु पूगफले स्मृतम् ॥१७३९॥
खर शराख्यस्तम्बे ना ककुभाह्वयपादपे।
रक्षोभेदे दशास्यस्य प्रवीरे दण्डनायके ॥१ ४ ॥

१ खदिरा वा।

हविर्धानारयदेशस्य पुरस्ताद्दक्षिणस्य या ।
वितर्दिर्यज्ञभूमिष्ठा तस्यामुष्णगुणऽपि च ॥१७४१॥
कठिनत्वे च काकश्ये रसभेदे च मिश्रणात् ।
जाते रसाना तिक्ताम्लकषायलवणात्मनाम् ॥१७४२॥
त्रिस्त्वेषामुष्णतादीना गुणाना द्रव्य आश्रये ।
एकैकस्य रसान्तानाञ्चतुर्णामपि म वते ॥१७८३॥
बाहस्पत्ये पञ्चविंशे वर्षे स्याद्रासभे द्वयो ।
वेसरे कुररे देत्ये बके काके खर खरी ॥ ७८८॥
शुष्कपूगफले तु क्ली देवताडे स्त्रिया खरा ।
खरकुट्यपि शालाया वपनस्यापि यौगिके ॥१७४५॥
भवेत् खरगृह रासभागारपटवेश्मनो ।
खर छ्दो यौगिके त्रिर्नोर्ध्वमूलाह्वये तृणे ॥१७४६॥
खरच्छदो भूमिसहे कुन्दरेऽपि कटे पुमान् ।
स्त्रिया तु क्षुद्रघोल्यारयलताया स्यात् खरच्छदा ॥१७४७॥
द्वित्वे रक्षोभिदोरैक्ये धत्तरे खरदूषण ।
खरपत्रो मरुवके वेणुभेदे कुशान्तरे ॥१ ८८॥
खरपत्रा तुलस्याञ्च शाखोटे शाकपादपे ।
क्लीब खरमुख भृङ्गवाद्ये त्रिषु तु यौगिके॥१ ४९॥
खराङ्गस्तु द्वयोर्भेके ककशाङ्गे तु भेद्यवत् ।
ग्रामणीभण्डिनाराचेऽप्युपधाने खरालिक ॥१ ५ ॥
खरुर्हये स्मरे दर्पे नीतिभेदे रदे हरे ।
द्वयोर्मनुष्ये दसे तु श्वेते मूर्खे खरे त्रिषु ॥१७५१॥
कार्मुकेऽपि खरुस्तु स्त्री कयायां या पतिंवरा ।
खर्जति र्यथने चैव पूजने मार्जनेऽपि च ॥१ ५२॥
खजनी यज्वना कृष्णविषाणायां स्त्रियां मता ।
खर्जनन्तु नपि ज्ञेय क्रियायां खर्जतेरिदम् ॥१७५३॥
खजु कण्डवाञ्च खर्जूरीद्रुमे कीटान्तरे स्त्रियाम् ।
खर्जुर रजते क्लीब खर्जूरद्रौ तु खर्जुर ॥१७५४॥

खर्जूर्विंद्युति कण्डवां च स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ।
खर्जूर्नोऽक्रद्रुमे चक्रमर्द्धत्तरयोरपि ॥१ ५५॥
खर्जूरो ना परूषद्रौ खर्जूर्यस्याल्पभेदके ।
क्ली तु तत्प्रसवे चापि रजते हरितालके ॥१ ५६।
खर्जूरन्नारिकेलास्थिगर्भसारेऽपि कीर्त्तितम ।
द्वयोस्तु वृश्चिके प्रोक्तो मेद्यवत्तु खले मत ॥१ ५ ॥
खपरस्तु कपालाशे कपाले धूर्त्तचौरयो ।
भिक्षापात्रे तथा छत्रे धातुभेदे तु खपरी ॥१ ५८॥
खबर स्यात्कपालेऽपि भिक्षापात्रे करे पुमान् ।
खर्म तु पौरुष क्लीव तथा स्यात्कोषजाशुके ॥१ ५९॥
खर्व सरया तरे नप् ना निधौ त्रि लघुनीचयो ।
खर्विका पूणक पे दुपूर्णिमायाम्परे त्रिषु ॥१ ६ ॥
खलम्भूस्थानयोस्तक्रविशेषे क्वथिते च नप् ।
निष्पीडितरसे कल्के पिण्याकादावथ त्रिषु ॥१७६१॥
नीचे क्रूरे दुजने च पुश्चल्या तु स्त्रिया खला ।
फलग्रहणदेश तु क्षेत्रस्यास्त्री रणे तु ना ॥१ ६२॥
धत्तरेऽपि तमालेऽपि तयोस्तु प्रसवे नपि ।
कुलत्थ ना खलकुल खलस्य तु कुले नपि ॥१ ६३॥
खलतिस्त्रिषु ख वाटे ख लिटे चै द्रलिम्रिके ।
सूर्ये खलतिकश्चाद्रिभेदे त्रिषु तु च द्रिले ॥१७६४॥
खलिघनद्रवे द्र यभेदे च जलपाचिते ।
स्त्रियां खलीवत् पिण्याके तथोक्त पिष्टतण्डुले ॥१७६५॥
खलिनी खलवृन्दे स्यात्तालपर्ण्यामपि स्त्रियाम् ।
खलीनोऽस्त्री तुरङ्गाणा मुखसयमने तथा ॥१ ६६॥
छिद्राकाशादिलीने तु खलीन वाच्यवन्मतम् ।
खलु वाक्यविभूषाया जिज्ञासायाञ्च सान्त्वने ॥१७६ ॥
वीप्सामाननिषेधेषु पूरणे पदवाक्ययो ।
खल्या तु खलवृन्दे स्त्री खलाय तु हिते त्रिषु ॥१७६८॥

खलश्चर्मादिभस्त्रा स्यात्तथैवाषधिपेषणी ।
वस्त्रान्तरे चर्मचर्मपात्रगर्त्तेऽथ चातके ॥१६९॥
द्वयोः खलोऽथ खली स्त्री रुग्भदे परिकीर्त्तिता ।
खल्लिका स्त्री मजीषं स्यात्खल्वाटे खल्लकस्त्रिषु ॥१७०॥
खल्ली वस्त्रप्रभेदे स्याद्गर्त्ते चर्मणि चातके ।
खली तु हस्तपादावमर्दनाख्यरुजि स्त्रियाम् ॥१७१॥
खल्वो भेषजपेषण्यां धान्यभेदे तथा पुमान् ।
खशयस्तु द्वयोर्भेके त्रिस्तु खे शयितर्यसौ ॥१७२॥
खष खषी व्रात्यसुतशूद्रौढक्षत्रियाभवे ।
डोम्ब्यां चाण्डालतश्चापि जाते द्वे सकरान्तरे ॥१७३॥
खष्प कोपे बलात्कारे ना दुर्मेधसि तु त्रिषु ।
खसस्तु खर्ज्वाम्पुम्भूम्नि तु नृजात्यन्तरे खसा ॥१७४॥
तेषां जनपदेऽथ स्त्री गन्धद्रव्यान्तरे खसा ।
अथ खस्फटिकं सूर्यकान्तचन्द्राश्मनोर्मतं ॥१७५॥
खाटिस्त्वसदवग्रहेऽपि स्यात्किणे शवरथे स्त्रियाम् ।
खाण्डवं पिप्पलीशुण्ठी मुद्गयूषे रसे तथा ॥१७६॥
मधुराम्लकयोगोत्थ कुरुक्षेत्रवनान्तरे ।
मधुराम्लकयोगोत्थरसभाजि तु वाच्यवत् ॥१७७॥
खाण्डिकः स्याद्गुडवणिग्यपि छात्रे तथा पुमान् ।
खाण्डिकं तु समूहे स्यात्खण्डिकानां नपुंसकम् ॥१७७८॥
खातं क्ली खनने पुष्करिण्यां त्रिस्त्ववदारिते ।
क्वचित्खाता तडागेऽपि स्त्रियामेषा प्रयुज्यते ॥१७९॥
खातकः खातिकश्चिति परिखायां न ना भवेत् ।
खात्रश्चोरकृते रन्ध्रे सरः कुद्दालतन्तुषु ॥१८०॥
महाभयेऽप्यरण्येऽपि नपुंसकमुदाहृतम् ।
खादस्तु भक्षणे भोज्येऽथोत्तरस्थस्त्रिभक्षके ॥१८१॥
खादको भक्षकेऽपि स्यादधमर्णे तथा त्रिषु ।
खादनस्तु पुमान्दन्ते क्लीबं भक्षणभोज्ययोः ॥१७८२॥

खाद्यस्तु खदिरे पुंसि भक्षणीय तु वाच्यवत ।
खान क्वचिद्भक्षण स्यात्तुरुष्कनृपतौ तु ना ।।१ ८३।।
खानकस्तु पुमाश्चौरे परिखाया तु खानिका ।
खारिकस्तु त्रिषु क्रीते खार्या क्ली तु फला तरे ।।१७८४।।
खारिका तु स्त्रिया खारीपरिमाण प्रकीर्त्तिता ।
खिङ्खारस्तु द्वयो क्रोष्टौ ना खटवाङ्गे किखीरके ।।१७८५।।
खिङ्खिरो ना वारिवाहे खटवाङ्ग च द्वयो पुन ।
शिम्बाभदे खिङ्खिरा तु बलभृत्ये च खिङ्खिर ।।१ ८६।।
खिदिरस्तापसे दीने त्रिर्भये ने द्रच द्रयो ।
खिद्र शशाङ्क खिद्र तु भवेद्विम्नोपतापसो ।।१ ८ ।।
खिद्रस्तु दीने याधौ च खिद्र स्याद्भदय त्रके ।
खिलोऽस्त्र्यप्रहते स्थाने परिशिष्ट खिलम्मतम् ।।१७८८।।
पुरणीयावकाशेऽपि दरूहगणितेऽप च ।
दुराग्रहे वेधसि च वाच्यवत्त सदोषके ।।१ ८९।।
खिल्य पुञ्जे खिलक्षेत्राश्मनोस्त्रिस्तु खिलोद्भवे ।
खुण्डको ना ह्रस्वनालिकेरे ह्रस्वा पयोस्त्रिषु ।।१ ९ ।।
खुर शफे शुक्तिसञ्ज्ञभेषजेऽपि पुमा मत ।
खटवाङ्गाऽवयवे बह्वादिपाठाद्विष्यते खुरी ।।१ ९१।।
खुरको वङ्गभेदेऽपि नृत्यभेदे तिलेऽपि च ।
खुरप्रस्तु क्षुरप्रेऽपि बाणभेदे प्रकीर्त्तित ।।१ ९२।।
खुल्लस्त्रि क्षुल्लव क्षुद्रे ना तु स्या छुक्तिभेषजे ।
खेचरो द्वे दुश्चिकि सनिषे स्याद्वृश्चिका तरे ।।१ ९३।।
विद्याधरे च त्रिषु तु वियच्चरसपक्षयो ।
राक्षसे खेचर प्रोक्तो ग्रहपारदयोस्तु ना ।।१ ९४।।
तथैव नवसख्यायां खेचरा मूर्च्छना तरे ।
खेचरी सिद्धिभेदेऽङ्गुलिमुद्रादुर्गयोरपि ।।१ ९५।।
तथैव कणवलये स्यात्त थार्थे तु खेचरम ।
खेटोऽस्त्र्य पपुरे चर्मण्यद्रिनद्यन्तरस्थिते ।।१ ९६।।

पुरेऽथ ग्रामभदे ना ग्रामधानाह्वये कफ।
मृगन्येऽप्यथ खेट स्याकुत्सिते वान्यलिङ्गक ॥१७९७॥
बलरामगदायाङ्क्ली ना ग्रहे शस्त्रिणि तृण।
खेटकोऽस्त्री मत खग खेन्क वसुन दके ॥१७९८॥
खेटकम्फलके ग्रामधानेऽथोत्त्रासके त्रिपु।
खेटी तु नागर चैव कामिन्यपि पुमान्मत ॥१ ९९।
खेद पीडास्मरालस्ये खेदा वेध युदीरिता।
खेदिस्तुग्ङ्गरश्मौ च किरणऽपि पुमान्मत ॥१८ ॥
खेयन्तु परिखाया क्ली खनितन्ये त्रिपु स्मृतम्।
खेलो वेणौ पुमा खेला लीलाया स्त्री प्रकीर्त्तिता ॥१८ १॥
खेलन खेलना क्रीडा शार्यां स्त्री खेलनी मता।
खलिरर्केषुगीते ना स्त्री खेले द्व मृगे खगे ॥१८ ॥
खोटास्त्रपङ्गौ खोटी तु स लक्ष्या स्त्रीन्व दृष्यते।
खोडस्त्रिपुटके ना कुलाये ख ज त्वयन्त्रिपु ॥१८ ३॥
खोलस्त्रिपङ्गौ खोल तु शिरस्त्र छत्रयोर्मतम्।
खोलको ना पाकभदे पूगकोशशिरस्त्रयो ॥१८ ४॥
वन्मीक चाथ काञ्च्या स्त्री गीतसत्या च खोलिका।
खोल्कस्तु धूमकेतौ च ग्रहेऽपि च पुमान्मत ॥१८ ५॥
ख्याति ख्यारूपयोर्धात्वोर्नाऽथ कीर्त्तिधियो स्त्रियाम्।
सम्मतौ नाम्नि च क्रौञ्चद्वीपस्थसरिदन्तरे ॥१८ ६॥

ग

ग पुसि गरुडे नक्ली गान्धारगुरुवर्णयो।
स्युत्तरस्थो गन्तृमात्रे न ना गतिप्रभेदके ॥१८ ७॥
गगन क्लीबमाकाशे सपर्याय तथाभ्रके।
गङ्गापुत्रस्तु भीष्मे ना स्यात्काशीघट्टपूजके ॥१८ ८॥
द्वयो सकरभेदेऽपि शवनिर्हारिणि स्मृत।
गच्छो वृक्षे कुटुम्बेऽपि श्रेढीसख्यान्तरेऽपि च ॥१८ ९॥

गजो द्व वारणेऽथाऽष्टस्वपि हस्तयुगायतौ ।
वास्तुस्थानान्तरे पुंसि पार्श्वयो प्रवणे गज ॥१८१ ॥
सूर्यानुगासुरभिदोगर्ते गजपुटाभिधे ।
तालमदऽप्यथ गजा गजी वीथ्याम्प्रकीर्त्तिता ॥१८११॥
रोहिण्यादित्रिका मा या पुनर्वस्वादिकाऽपि वा ।
गजच्छाया स्त्रिया सूर्यग्रहे योगान्तरे तथा ॥१८१२॥
कृष्णात्रयोदशीहस्तस्थिते सूर्ये मघायुते ।
इति लक्षणके चेभच्छाये तु क्लीस्त्रियोभवेत् ॥१८१३॥
गजता तु गजत्वेऽपि समूहे चाऽपि हस्तिनाम् ।
गजदन्तो हस्तिरदे गणेश नागदन्तके ॥१८१४॥
करमुद्राविशेषेऽपि पुंल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।
गजप्रिया तरौ रम्भाभदेऽपि गजवल्लभा ॥१८१५॥
गजस्कन्धो हस्तिसैन्ये चक्रमर्दे तथा पुमान् ।
गजारिस्तु पुमान्सिहे शिवे वृक्षान्तरेऽपि च ॥१८१६॥
गजाशनोऽश्वत्थवृक्षे स्त्रिया तु स्याद्गजाशना ।
सल्लक्याम्पद्मकन्देऽपि केचिदेताम्प्रचक्षते ॥१८१ ॥
गजाह्वा गजपिप्पल्यां गजाह्व हस्तिनापुरे ।
गजाह्वय हास्तिनपुर्यथ नृम्वस्य वासिषु ॥१८१८॥
गञ्जो ग्वनौ सुरागेहे कोशे चाप्याकरेऽपि च ।
गञ्ज स्यान्पुसि रीढायाम्भाण्डागारे तु न स्त्रियाम् ॥१८१९॥
ना पल्ल्यापणयो क्वापि गञ्जाकिन्याम्पुन स्त्रियाम् ।
गडो मीनेऽन्तराये च वृतौ खाते नृलिङ्गक ॥१८२ ॥
गडु स्यान्पृष्ठगग्रन्थौ वैश्योरस्स्थकिणे तथा ।
घाटामस्तकयोर्मध्ये मांसपिण्डेऽप्ययम्पुमान् ॥१८२१॥
कुब्जे तु गडुपृष्ठान्यनाम्नि स्याद्वाच्यवद्गडु ।
गडेरस्तु प्रस्रवणशीले स्यादभिधेयवत् ॥१८२२॥
अथ पुसि प्रस्रवणभूमावेष प्रकीर्त्तित ।
गणो बहुत्वे गणने धूनौ च प्रमथ व्रज ॥१८२३॥

गु मतस्त्रिगुण सं ये चण्डायामृषिभिर्द्यपि ।
गणक पुसि दवज्ञ गणनाकृत्तरि त्रिपु ॥१८ ४॥
स्याद्गणाधिपात पुसि शङ्करे च गजानने ।
गणिका यूथिकावैश्यातकारीभीपु कीत्तिता ॥१८ ५॥
गणरु कर्णिकारद्रौ करिणीनश्ययो स्त्रियाम् ।
गण्ड कपोले गर्वे च वीथ्यङ्गे पिटकेऽपि च ॥१८२६॥
चिह्ने वीरे बुदबुदे च हयकण्ठविभूषणे ।
योति शास्त्रषु ये योगा सप्तविंशातरीरिता ॥१८२७॥
विष्कम्भप्रीतिरि याद्यास्तेषाभ यतमेऽप्यसौ ।
चतुष्टये कपर्दाना द्वे तु खङ्गाह्वये मृगे ॥१८ ॥
गण्डकस्तु द्वयो खङ्गमृग ना शिशुभूषणे ।
अवच्छेदे तराये च सख्यानिद्याप्रभदयो ॥१८ ९॥
अस्त्रिया तूपधानेऽथ गण्डकी सरिद तरे ।
गण्डशैलो ललाट स्याच्च्युतस्थूलोपले गिरे ॥१ ३ ॥
गण्डीरस्तु पुमा क दजातिभदे समष्ठिला ।
इति सज्ञा तर यस्य बहुभेपजसाधिते ॥१८३१॥
उपयोग्यद्रवद्र ये क्ली तु स्यात्तण्डुलीयके ।
च ये च स्त्री तु गण्डीरी निपत्रायां स्नुहि स्मृता ॥१८३२॥
गण्डूषा द्वे वक्त्रपूर्त्ता तथोक्ता करिपुष्करे ।
आस्यरोध्रद्रवे तद्वत्प्रसृतो मितवस्तुनि ॥१८३३॥
गण्डोलस्तु पुमा पिण्डे गजस्य मुखपार्श्वयो ।
ऊर्ध्वप्रदशयोश्चापि क्रिमिभेदे तु स द्वयो ॥१८३४॥
गत तु क्ली गतौ ना तु प्रकारेऽथ च ढौकिते ।
ग्रामादौ ढौकितवति तथाऽतीतेऽपि वाच्यवत् ॥१८३५॥
गीतिप्रकृतिश देषु ये ताल या स्थिता अच ।
तेषामपीति श दोऽय विकारो यत्र गीयते ॥१८३६॥
गीतिकाले स श दोऽयकच्छन्दोगैरुच्यते गत ।
गतिर्नाडीव्रणे मार्गेऽपि श द सामगीतिगे ॥१८३७॥

उपायदशयोर्ज्ञाने प्रस्थाने शरणेऽपि च ।
ग त ये पुण्यपापाभ्या प्रागूर्ध्वादिक्रिया गति ॥१८३८॥
गद कृष्णाऽनुजे रोगे गदा स्यादायुधा तरे ।
गदयित्नु स्मरे मेघे ना त्रिज पककामिनो ॥१८३९॥
गद्गदस्वर इत्येष कीर्त्तितो महिष द्वयो ।
गद्य त्वपादे ग्र थेऽथ गदित ये त्रिलिङ्गकम् ॥१८४ ॥
ग तु स्यादतिथा चापि पथिके चाभिधेयवत ।
ग ता तु ग तरि त्रि स्याद्गन्त्री स्त्री शकटा तरे ॥१८४१॥
ग ध पुमाश्च दनादौ लेशे सम्ब धगवया ।
ग धके घ्राणविषये भूगुणे प्रतिवेशिनि ॥१८४२॥
ग धन ग धनाऽयस्यात्साहनेऽपि प्रयुज्यते ।
न ना प्रकाशने चाप हिंसाय सूचनेऽपि च ॥१८४३॥
अथ ग धफली पृथ्व्याञ्चम्पकस्य च कोरके ।
प्रियङ्गौ गिरिकर्ण्याश्च विशषासिततच्छिदि ॥१८४४॥
द्वे ग धमादनो भृङ्ग ग धके तु कपौ च ना ।
स्त्री सुराया शैलभेदे न स्त्रिया ग धमादन ॥१८४५॥
ग धवस्तु द्वयोर्गोलपुसनाम्नि मृगा तरे ।
अ तरार्णवसत्त्वेऽश्वे गायने दि यगायने ॥१८४६॥
पुमास्तु पुस्कोकिलके वासुदेवा तरेऽपि च ।
कोष्ठपक्तौ दक्षिणस्याम्प्रोक्त षष्ठपदस्थिते ॥१८४ ॥
ग धवास्त्रिग धयुते स्त्रिया ग धवती मता ।
भुवि योजनग धाया सुराया च पुरान्तरे ॥१८४८॥
स्त्री तु ग धवहा घ्राणे ना तु वायौ मृगे द्वयो ।
ग धवाहस्तु ना वायौ योगार्थे तु त्रिषु स्मृत ॥१८४९॥
ग धाली तु स्त्रिया भद्राशढ्योरेषा प्रकीर्त्तिता ।
गभस्तिरशौ द्वे स्त्री तु स्वाहाया ना रवौ भुजे ॥१८५ ॥
गभीर त्रिषु निम्नेऽथ गभीरा वाच्यसौ स्त्रियाम् ।
गभीर तु जले क्लीब गभीरे इति रोदसी ॥१८५१॥

गमो नाऽक्षविवर्त्ते स्यादपर्यालोचनेऽध्वनि ।
गमथस्तु पथि ज्ञेयो जलधाने तथा पुमान् ॥१ ५ ॥
गम्भीरो नाऽग्नने काम जम्बीरे च तमस्यपि ।
क्लीब तु जम्बीरफले गम्भीर सलिलेऽपि च ॥१ ५३॥
द्यावापृथि योगम्भीरे गम्भीरा वा यसा स्त्रियाम् ।
निम्ने दुरवगाहे च गम्भीरमभिधेयवत् ॥१८५४॥
गय स्यात्पशुराजर्ष्योर्भेदे दत्या तरेऽपि च ।
गया तीर्था तरे द्व वपत्ये ना सुगृहे धने ॥१८५५॥
गरो निगरणे चर्विभदे क्ल्युपविपावप ।
गर तु क्ली जले देवताडव या गरी गरा ॥१८५६॥
गरी करणभेदऽपि स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ।
गरल तृ ।पूले च ।वप माने नपुसकम् ॥१८५७॥
मदनद्रौ तु गरल पुसि तत्प्रसवे तु नप ।
गरुड क्ष्वेडम त्रे ना वैनतये हरि मणौ ॥१८५८॥
द्व तु पक्ष्य तरे स्त्री तु जटाया गरुडा मता ।
गरुत् तेजसि सघात पक्षिपक्षे जने पुमान् ॥१८५९॥
गरुत्मास्तु पुमान्वैनतेये तु पक्षिणि द्वयो ।
गर्गरी दधिम थ या क्षेत्रपल्ल्यामपि स्त्रियाम् ॥१८६ ॥
द्वे तु मीना तरे चोग्रीवैदेहजनरा तरे ।
गर्जो द्वयोगजेगर्जा त्वक्ली गजनवाचिनी ॥१८६१॥
गजनो ना गृञ्जनारण्यपलाण्डुभिदि कीर्त्तित ।
गर्जन गर्जना चेति न ना गजित उच्यते ॥१८६ ॥
गर्जित स्तनिते क्लीब गजितो मत्तकुञ्जरे ।
गत्तस्तु स्यात्सभास्थाणौ मन्दिरेऽप्यवटेऽपि च ॥१८६३॥
त्रिगर्त्तभेदेऽपि पुमांस्तथैव स्या कुकुन्दरे ।
गर्दोऽस्त्री द्रवधाराया धमनीषु च वाचि ना ॥१८६४॥
गर्दभ पशुभेदे द्वे रासभारव्येऽथ गर्दभम् ।
कुमुद श्वेतकुकुदे रूप्ये च स्यान्नपुसकम् ॥१८६५॥

गद्भस्तु पुमा गधभदेऽयम्परिकीर्त्तित ।
गद्भी स्त्री क्षुद्रराग कीटभ े च कीर्त्तिता ॥१८६६॥
गर्भोऽपवरकागारेऽन्नेऽग्नौ पनसक टके ।
शिशावपत्ये शुक्र च समूहे साग्वीजयो ॥१८६ ॥
कुक्षौ कुक्षिस्थज तौ च स धौ चापि पुमा मत ।
गरुत्तु गरुडे सूर्ये तेजस्यपि पुमानथ ॥१८६८॥
द्वयो स्या मक्षिकाभदे पक्षिमात्रेऽप्यथ स्त्रियाम् ।
तृणधा यविशषेऽथ का चने स्या नृशण्डयो ॥१८६९॥
गमुदी गमुदाख्ये स्त्री तृणधान्या तरे मता ।
श्वपाक्या तु निषादेन जनिते गमुदो द्वयो ॥१८७ ॥
गर्व पुस्यभिमाने चाऽवलेप च प्रकीर्त्तित ।
गवर पुस्यहङ्कारे महिष तु द्वयोर्मत ॥१८ १॥
गवरी तु स्त्रियामेषा स ध्याया परिकीर्त्तिता ।
गल सजरसे तद्व कण्ठ चापि पुमान्मत ॥१८ २॥
ककर्यां स्त्री गल ती त्रि भुञ्जानच्यवमानयो ।
गलस्तनी तु छाग्या स्याधोग लिङ्गादि चाथत ॥१८७३॥
गवल माहिष भृङ्गऽथारण्यमहिष द्वयो ।
गवाक्षो जालके पुसि सुग्रीवसचिवेऽप्यथ ॥१८७४॥
गवाक्षी गिरिकर्णी द्रवारुणीम लिकासु च ।
गवादनी स्त्री गिरिकर्ण्यभिधानलता तरे ॥१८७५॥
यौगिके त्वर्थवशतो लिङ्गादिकमिहो नयेत् ।
गवीधुका तु स्त्री क्षुद्रधा यभेदे पुरे तु नप ॥१८ ६॥
गव्य रागद्रव्यभदे मौर्व्यां ग या तु गोगणे ।
ग यू याख्याऽध्वमानेऽथ त्रि दुग्धादौ च गोहिते ॥१८७ ॥
गहन क्ली जलेऽरण्ये दु खगह्वरयोर्मतम् ।
दुष्प्रवेशे तु गहना वाच्यवत्सम्प्रयु यते ॥१८ ८॥
गह्वर तु गुहादम्भरहोवारिषु नप् स्मृतम् ।
त्रिदुष्प्रवेशे भीष्मे च निकुञ्जे तु पुमानयम् ॥१८ ९॥

गाधातुगमने गाने पुत्तरस्थ सगन्तरि ।
गाङ्गस्तु गङ्गासम्भूते त्रि भीष्मे तु गुहे च ना ॥१८८ ॥
गाङ्गेयस्तु पुमान्स्कन्द भीष्मे चाथाभिधेयवत् ।
अपन्यमाने गङ्गाया क्ली तु हेमकशरुणो ॥१८८१॥
गाढमुष्टि कृपाण ना कृपणेऽवभिधेयवत् ।
गाण्डीवो गाण्डिवश्चाऽस्त्री कार्मुकेऽर्जुनकार्मुके ॥१८८२॥
गातुर्द्वे कोकिले भृङ्गे गन्धर्वे त्रिषु रोषणे ।
पुमांस्तु गातुरन्ने स्याद्वसुधायामपि स्त्रियाम् ॥१८ ३॥
गात्र गजाग्रजङ्घादिभागेऽङ्गे च कलेवर ।
द्वयोस्तु गात्रसङ्कोची जाहकारयेषु जन्तुपु ॥१८ ४॥
गाथा तु वान्यामार्यायाम्पिङ्गलानुक्तनामसु ।
वृत्तेष्वनुष्टुबाद्यपु यानि वृत्तानि पञ्चसु ॥१ ८५॥
पादैश्चतुर्भि षड्भिर्वा तेष्वप्य षिकृतेष्वसौ ।
गान गीतौ च शब्देऽथ गानी भाद्रस्य पूर्णिमा ॥१८८६॥
गान्धर्वस्तु द्वयोरेष गन्धर्वे खे तु नप्यद ।
गीतभेदेऽथ वाचि स्त्री गान्धर्वी परिकीर्त्तिता ॥१८८७॥
गान्धारन्नपि सिन्दूरे राजदेशभिदोस्तु ना ।
गान्धिको लेखके त्रिश्च सुगन्धिन्यवहारिणि ॥१ ८८॥
गायत्री त्रिपदा देन्यां स्त्री तथा खदिरद्रुमे ।
स्त्रीनपोस्तु चतुर्विंशत्यक्षरप्रभृतिष्वसौ ॥१८८९॥
छन्दस्स्वार्षादिष्वथ ना गायत्री ब्रह्मचारिणि ।
उपकुर्वाणनाम्न्येव प्रगाथेषु च तेष्वपि ॥१८९ ॥
गायत्रीसञ्ज्ञक छन्दो येषामादेऋचो भवेत् ।
गारित्रस्तु पुमानुक्त आचार्ये गहने तु नप् ॥१८९१॥
गारुड स्यान्मरकतनाम्नि रत्ने च हेम्नि च ।
विषशास्त्रप्रभेदे चाऽथ त्रिर्गरुडयोगिनि ॥१८९२॥
गार्भिण गर्भिणीना सम्बन्धिनि त्रिर्व्रजे तु नप् ।
सीमन्तोन्नयनाख्ये च स्त्रीणा सस्कारकर्मणि ॥१८९३॥

गार्हपत्य पश्चिमाग्नौ नप्तु स्याद्भावकर्मणो ।
गालो मदनवृक्षे स्याद्गालनेऽपि पुमानयम् ॥१८९४॥
गाल मदनवृक्षस्य फलेऽपि वडिशेऽपि च ।
गालवो मुनिभेदे च पुंसि लोध्रतरावपि ॥१८९५॥
गिर् शब्द स्त्री सरस्वत्याम्भाषायामपि कीर्त्तित ।
गिरिर्गरीयकक्रीडागुडके कन्दुके नगे ॥१८९६॥
गोरुभेदेऽम्बुद लक्षे गृणातौ गिरतावपि ।
नेत्ररोगे तथा गीर्णो त्रि तु पूज्ये गिरिर्मत ॥१८९७॥
गिरिजस्त्वभ्रके लोहे शिलाजतुनि चापि नप ।
गिरिजा तु नदीगौरीमातुलुङ्गीष्विय स्त्रियाम् ॥१८९८॥
गिरिणो जलदे ग्रामे तथा चार्ये पुमान्मत ।
गिरिप्रिया स्त्रिया क्षुद्रफलवातिङ्गना तरे ॥१८९९॥
स धानीसज्ञकेऽर्थात्तु लिङ्गाद्य यौगिके मतम् ।
गिरिसार पुमाल्लोहे वङ्गे मलयपर्वते ॥१९ ॥
गिरीशोऽद्रिपतौ वाचस्पतिशङ्करयो पुमान् ।
गिरेरीशे त्रिलिङ्गोऽय गिरीश परिकीर्त्तित ॥१९ १॥
गीतन्नपुसक गाने त्रि तु गानस्य कर्मणि ।
गीता कृष्णादिगीतासु योगपट्टेऽपि च स्त्रियाम् ॥१९ २॥
गीतिश्छन्दोविशेषे च गाने चापि स्त्रियाम्मता ।
स्यावगुच्छस्तबके धा यस्तम्बे वीरुत्सु सप्तसु ॥१९ ३॥
एकस्या हारभेदे च द्वात्रिंशद्यष्टिके पुमान् ।
गुच्छा स्त्री माषधान्ये च गवीथौ च प्रकीर्त्तिता ॥१९ ४॥
गुञ्जोऽकली गुञ्जने गुञ्जा कृष्णलावाद्यभेदयो ।
गुड इक्षुविकारे च वकुले पिण्डगोलयो ॥१९ ५॥
पुमास्तु हस्तिनादेऽथ स्नुहीगुलिकयोर्गुडा ।
गुडूची स्यमृतानाम्न्यां व ल्यां कुस्तुम्बुरुण्यपि ॥१९ ६॥
गुणो मौर्व्यामप्रधाने रूप्यामपि पुमान्मत ।
उपकारे सूपकारे त तुरज्ज्वि द्रियेषु च ॥१९ ७॥

सत्त्वादौ भाग आवृत्तौ सङ्ख्यादौ द्रव्यमाश्रिते ।
महाभूतेषु शौर्यादौ दोषस्य प्रतियोगिनि ॥११०८॥
स्त्रियां गुणनिका नृत्यशून्याङ्के पाठनिश्चितो ।
प्रधानतत्त्वे साङ्ख्याना गुणसाम्यमिष्यते ॥११०९॥
गुण्डको मलिने धूला कलोक्तिस्नेहपात्रयो ।
गुन्द्रा फलिन्या स्त्री भद्रमुस्तके क्षुद्रधायके ॥१११०॥
गवेधुसञ्ज्ञे ना त्वेष स्तम्बभेदे शराह्वये ।
गुप्त तु रक्षितेऽपि स्यान्निगूढेऽप्यभिधेयवत् ॥११११॥
गुप्ति स्त्र्यवकरस्थाने कारागारे च रक्षण ।
गुम्फो ना गुम्फने बाहोरलङ्कार च कीर्त्तित ॥१११२॥
गुरुबृहस्पतौ बुद्धमुनौ पित्रादिके तथा ।
पुरोहिते च गोधूमेऽप्युपनीत्यादिकारिणि ॥१११३॥
स्त्री तु मातृप्रभृतिषु गुर्वी दम्भिन तु तत्रापि ।
लग्नान्नवमराशौ च प्राहु सावत्सरा इदम् ॥१११४॥
नीलिकासञ्ज्ञलोहे च त्रिषु तु स्यान्चतुष्वपि ।
दुजरे बृहति रयाते लघुन प्रतियोगिनि ॥१११५॥
एष्वर्थेषु यदास्त्र्यथस्तदा गुर्वीति वा गुरु ।
गुल स्यादैक्षवे पुसि स्नुह्या तु स्त्री गुला स्मृता ॥१११६॥
गुली तु गुटिकायाञ्च रोगभिद्यपि कीर्त्तिता ।
गुल्मोऽस्त्रियां हृद्ग्रन्थ्यारण्ययाधा सम्येऽपि वीरुधि ॥१११७॥
रक्षिस्थाने सैन्यभदे घट्टेऽपि बलसञ्ज्ञने ।
गुल्केऽथ गुल्म्यामलक्येलावतीवस्त्रवेश्मसु ॥१११८॥
गुह स्कन्दे निषादे च शृङ्गिवेरपुरेश्वरे ।
गुहा तु पृश्निपर्ण्याञ्च गर्त्ते गिर्यादिगह्वरे ॥१११९॥
गुहाशयो द्व ऋक्षाखुसिहकूर्मे त्रियौगिके ।
गुह्य त्रिगोप्यरहसो स्त्र्युपस्थे कमठे द्वयो ॥११२०॥
गूर्मले पुसि गूरेषा गुदे स्त्री परिकीर्त्तिता ।
गूढ रहसि गुह्य च न द्वयो सघृते त्रिषु ॥११२१॥

गृञ्जनो मधुशिग्र्वारये शिग्रुभेदेऽथ न स्त्रियाम् ।
भदे पलाण्डुजातीनान्देशानामपि कुत्रचित् ॥१९ २॥
विषदिग्धपशोस्त्वेत मांसे क्ली गृञ्जनम्मतम् ।
गृसो द्व कुक्कुरे विप्र त्रिस्तु मेधाविनि स्मृत ॥१९२३॥
गृधुर्द्वयो पशौ पुास त्वभिलाषे प्रकीर्त्तित ।
गृध्र खगान्तरे पुसि वाच्यलिङ्गस्तु लोभिनि ॥१९२४॥
गृष्टि सकृ प्रसूतायां गवि काष्मर्यपादपे ।
विष्वक्सेनप्रियासज्ञस्थावरे बदरे स्त्रियाम् ॥१९२५॥
गृह गृहाश्च पुभूम्नि कलत्रेऽपि च सद्मनि ।
पुमा गृहपतिर्गार्हप याग्नावपि मन्त्रिणि ॥१९ ६॥
कृषीवले छद्मवेषस्पशे स्या सत्रयाजिनाम् ।
प्रधाने यजमाने च गृहस्य वधिपे त्रिषु ॥१९ ७॥
गृहपूनस्तु बलिभुग्वायसे चटकेऽपि ना ।
पुमा गृहमणिर्दीपे न तु क्ली गेहभूषणे ॥१९२८॥
गृहस्थो ना द्वितीयाश्रमस्थे त्रिषु गृहस्थिते ।
मेधादौ त क्लीबमेव लग्नात्तुर्ये विशेषत ॥१९२९॥
भवेद्गृहे च शैलेयऽप्यौपासनहुताशने ।
गृहिणी गृहकार्यारये कीटभेदे द्वयोस्तथा ॥१९३ ॥
गृहस्थेऽथ गृहपतौ गृही स्यादभिधेयवत् ।
गृहोदक काञ्जिकेऽपि गृहसम्बन्धिवारिणि ॥१९३१॥
गृह्य स्मात्तग्र थभेदे गुदे त्रिस्तु स्वतन्त्रके ।
पक्ष्ये च गृहसक्तेषु मृगपक्षिषु वाऽथवा ॥१९३२॥
औपासनाग्नौ गृह्या तु शाखानगरबाह्ययो ।
गेय गाने क्लीबमथ गातव्ये गातरि त्रिषु ॥१९३३॥
गेष्ण पुमा साममात्रे चोभयोरङ्गयोस्तनो ।
रङ्गोपजीविनि पुनर्गेष्णा स्यादभिधेयवत् ॥१९३४॥
गेष्णु पुमान्गायनेऽपि नटेऽपि परिकीर्त्तित ।
गैरिकन्तु भवेत्क्लीबम्पीतधातौ च हेम्नि च ॥१९३५॥

शिलाजतुनि गैरयञ्चा तु पूगेऽद्रिसम्भवे ।
गौर्नाऽऽदि-ये बलीवर्दे क्रतुभेदर्षिभेदयो ॥१९३६॥
स्त्री त स्यादिशि भारत्याम्भूमौ च सुरभावपि ।
नृस्त्रियो स्वर्गवज्राम्बुरश्मिदृग्बाणलोमसु ॥१९३ ॥
मौर्या रवे सुषुम्णाख्यरश्मौ च प्रग्रहऽन्त ।
द्वयोस्त्वश्वे त्रिषु स्तोत्रे दग्धस्याऽभिषवेपि च ॥१९३८॥
अथ श्लेष्माख्यनिकृतौ चर्मणो गोनरस्त्रियो ।
गोकण्टको गोक्षुरके स्थपुटे च गवां खुरे ॥१९३९॥
गोकर्णोऽन्यतरे सर्पे मृगभेदे तथा द्वयो ।
गोकण इति विख्याते पुल्लिङ्गस्त गणान्तरे ॥१९४ ॥
शिवतीर्थविशेषे चाऽनामिकाङ्गुष्ठविस्तृते ।
माने चाप्यथ गोकर्णी मूषिकौषधिदूर्वयो ॥१९४१॥
गोकीलकस्त वलिरे वाच्यवत्परिकीर्त्तित ।
उपेक्षमाणे पङ्कस्था गां च गोकीलकस्त्रिषु ॥१९४२॥
गोग्रन्थिर्ना करीषे स्याद्गोष्ठे गोजिह्विकौषधौ ।
गोजिह्वा रसनायां गो स्थान्तरे दार्विकाऽभिधे ॥१९४३॥
मन शिलायामपि च गनीथुक्षुद्रधान्यके ।
गोडुम्ब क्षीणवृत्ते ना गवादिन्या तु योषिति ॥१९४४॥
गोण्ड पामरभेदे त्रि भारवाहककर्मणि ।
गोण्डो नाभौ पुमानेष त्रि तु तद्वति कीर्त्तित ॥१९४५॥
गोतमञ्चापभेदे क्ली जडे तु ऽथ गोतमी ।
रोचनीदुर्गयोर्ना तु शाक्यसिंहर्षिभेदयो ॥१९४६॥
गोत्रा भूगव्ययोर्गोत्र पुन शैले वलाहके ।
गोत्र कुले बले नाम्नि काननच्छत्रवर्त्मसु ॥१९४ ॥
सम्भावनीयबोधे च लोके याने च कुत्सिते ।
अथ गोत्रो गवा त्रातर्यभिधेयवदुच्यते ॥१९४८॥
गोदा गोदावरीनद्यां गोदो गोदातरि त्रिषु ।
ना क्रीडायां ह्रदौ गोदाग्रामौ चापि तदन्तिके ॥१९४९॥

गोदारण लाङ्गलेऽपि कुद्दालेऽपि नपुसकम् ।
गोधुक पुसि सुमेरौ त्रि गोपाले गोश्च दोग्धरि ॥१९५ ॥
गोधा जन्तौ धनिवनाञ्च हस्ते ज्याघातवारणे ।
गोधूमो नागरङ्गे स्यादोषधिव्रीहिभेदयो ॥१९५१॥
गोनद अक्षिणि मत सारसाख्ये द्वयोरयम् ।
गोनर्दं क्ली वा[न] मुस्ते कैवर्तीमुस्तकेऽपि च ॥१९५२॥
गोनासस्तु तिलित्सारसपजातौ द्वयोमत ।
गोर्नासिकाया गोनासा स्त्रियामषा प्रकीर्त्तिता ॥१९५३॥
गोपो गोष्ठाधिपे गुप्तौ बहुग्रामाधिकारिणि ।
भूपेऽथ त्रिषु गोपाले मनुष्ये तु द्वयोमत ॥१९५४॥
गोपी तु स्त्री सारिवाख्यभेषजे समुदाहृता ।
गोपतिर्ना रवौ षण्डे शिवे भूतपतावपि ॥१९५५॥
गोपालस्तु पुमात्राज्ञि गो पातर्यभिधेयवत् ।
गोपीथो गोनिपाने च तीर्थे कालान्तरेऽपि च ॥१९५६॥
गोपुच्छो हारभेदे च यष्टिके पुसि कीर्त्तित ।
पुनपुसकयोस्त्वेतद्गोलाङ्गले च कीर्त्तितम् ॥१९५ ॥
गोपुर द्वारि पूर्द्वारि कैवर्त्तीमुस्तकेऽपि च ।
गोमत् गोस्वामिनि त्रि स्यान्नदीभेदे तु गोमती ॥१९५८॥
गोमत तु परिज्ञेय गव्यूतिरिति विश्रुते ।
क्रोशद्वयात्मके मार्गपरिमाण नपुसकम् ॥१९५९॥
गोमुख कुटिलागारे त्रि तु वाच्यवदिष्यते ।
ना तु मातलिपुत्रेशगणयोर्नक्रके द्वयो ॥१९६ ॥
गोमेदकम्पीतमणौ काकोले पत्रकेऽपि च ।
गोरक्षो नागरङ्गे ना गवां तु त्रातरि त्रिषु ॥१९६१॥
गोरक्षजम्बू गोधूमधान्ये नागबलाह्वये ।
गोरक्षा तण्डुलाख्ये भेषजे त स्त्रियाम्मता ॥१९६२॥
गोरङ्कु स्यात्पुमान्पक्षिभेदे नग्नकवन्दिनो ।
गोरस कालशेयेपि तथा दध्नि पुमानयम् ॥१९६३॥

गोरुत तु भव क्लीब ग यूता न गवा रुत ।
गोलका जारसम्भूते वैधवेयेऽपि कम्बले ॥१९६४॥
पिण्डे गुडे च गाले च मणिके स्त्री तु गोलिका ।
वेष्टनद्रव्यके प्राणिभेदेऽपि परिकीर्त्तिता ॥१९६५॥
गाला गोदावरीसरय्यो कुनटीदुगयो स्त्रियाम् ।
पत्राञ्जनेऽलिञ्जरे च बालक्रीडनके तथा ॥१ ६६॥
क्लीब तु काञ्जिके गोल पिण्डगाल पुमान्मत ।
गोलाङ्गलस्तु गोपु छे वानरे च पुमान्मत ॥१९६ ॥
गोलोमी सितदूर्वायां स्याद्व्रा भूतकेशयो ।
गोव दनी फलि या स्त्री योगे गोव दना मता ॥१९६८॥
गोविन्दो गोरधिपतौ त्रिर्ना कृष्ण बृहस्पता ।
गोशीर्षं चन्दन ताम्रसारे मूर्ध्नि गवामपि ॥१९६९॥
गोष्ठमस्त्री गवा स्थाने गोष्ठस्सामा तरे पुमान् ।
गोष्ठी तु स्त्री सभायाञ्च सलापे न प्रकीत्तिता ॥१९ ।
गोष्पद गोखुरे श्वभ्रे गवाश्च गतिगोचरे ।
गोसो बालेऽपि पुल्लिङ्गस्तथगोषसि कीर्त्तित ॥१९ १॥
सरय्यायामथ गोयुद्ध गोसरय्यम्पुन्नपुसकम् ।
गोसग स्यात्प्रभातेऽपि पुल्लिङ्ग सर्जने गवाम् ॥१९७२॥
गोस्तनो ना चतुर्यष्टिहारभदे स्तने गवाम् ।
गोस्तनी तु स्त्रिया द्राक्षाभेद एषा प्रयु यते ॥१९७३॥
गोस्वामी राजपुत्रे स्यान्नाव्योक्तौ त्रि तु गोमति ।
गौतमो ना शाक्यमुनावृषिभेदे च कीर्त्तित ॥१९७४॥
स्त्रिया तु दुर्गारोच योगादावर्याश्च गौतमी ।
मेदोजे गौतम क्ली च कुक्कुरे तु द्वयोरयम् ॥१९७५॥
गौरो धवेऽसने शुक्लसर्षपे नभ्रच द्वयो ।
श्वेतपीतारुणगुणेष्वेतद्यक्तेषु तु त्रिषु ॥१९७६॥
शुद्धे च प्रसवे तु क्ली धवासनमहीरुहो ।
उशीरे चाब्जकिञ्ज के द्वयोस्तु स्या मृगा तरे ॥१९७ ॥

गौरी शिवासरस्वत्या प्रियाया वरुणस्य च ।
असञ्जातरज कन्या गौरी च सरिदन्तरे ॥१९ ८॥
रोचनीरजनीपिङ्गाप्रियङ्गुवसुधासु च ।
बुद्धस्य शक्तौ रागिण्या तीक्ष्णाजकहरिद्रयो ॥१९ ९॥
ग्रथित गुम्फिते क्रान्ते हिंसते नाभिधेयवत् ।
ग्र थ शास्त्रे धने चैव ग्र थनायां तथा पुमान् ॥१९८ ॥
द्वात्रिंशद्वर्णवृ दे च वचस्यप्ययमिष्यते ।
ग्रन्थि स्यादिक्षुवेण्वादिकाण्डस धौ रुग तरे ॥१९८१॥
ग्रन्थिवर्णे रज्जुवस्त्रादिग्र थनपदे पुमान् ।
ग्रन्थिक पिप्पलीमूले गुग्गुलुग्रन्थिवणयो ॥१९८२॥
वाच्यवत्तु ग्रन्थिनि ना सहदेवारयपाण्डवे ।
ग्रन्थिलस्तु पुमान्ज्ञय करीरद्रौ विकङ्कते ॥१९८३॥
अथ ग्रन्थिलमेत स्याद्ग्रन्थिम यभिधेयवत् ।
ग्रस्त त्रिवेष्टिते भुक्ते लुप्तवणपदादिते ॥१९८४॥
ग्रह आदान निब धोपरागाऽनुग्रहेषु च ।
रणोद्यमे च कथितो राहौ चापि बुधादिषु ॥१९८५॥
उलूखलनिभ सोमपात्रभेदे तथा पुमान् ।
द्वयोस्त्वेष पिशाचादौ ग्रहश द प्रकीर्त्तित ॥१९८६॥
ग्रहणम्प्रत्यये क्लीबलिङ्ग स्या च द्रसूर्ययो ।
उपरागे चोपल धौ ब धादानादरेषु च ॥१९८ ॥
ग्रहणी तूदरव्याधिविशेषे मृ युमेढयो ।
ग्रहराजस्तु विज्ञयो भास्करे च द्रमस्यपि ॥१९८८॥
ग्राम सवसथ वृन्दे तथा गीतिस्वरा तरे ।
ग्रामणीर्नापिते पुसि तथैवाधिकृते मत ॥१९८९॥
नायकोत्तमयोस्त्वेष ग्रामणीर्वा यव मत ।
ग्रामणीकुलमि येतत्क्षुद्राणा भारताम्बुधे ॥१९९ ॥
प्राग्दक्षिणस्थद्वीपानामेकस्मि परिकीर्त्तितम् ।
ग्राममद्गुरिका ग्रामयुद्धे भृङ्गिझषे स्त्रियाम् ॥१९९१॥

ग्रामीणा नीलकाया स्त्री ग्रामोद्भूतेऽभिधेयवत् ।
अथ काके च शुनके द्वयोर्ग्रामीण इष्यते ॥१९९२॥
ग्राम्य स्त्रीकरण क्लीब त्रिरश्लीलेऽपि कीर्त्तितम् ।
ग्रामीणेऽथ स्त्रिया ग्राम्या चाषसञ्ज लतान्तरे ॥१९९३॥
ग्रावा शैलशिलाभ्रेषु नान्त पुसि प्रकीर्त्तित ।
ग्राहा द्वे अवहारे स्यान्निब घे नु पुमान्मत ॥१९९४॥
ग्राहकस्तु त्रिषु ज्ञयो ग्रहीतर्यथ पक्षिणि ।
पुसि स्याद्येन गृह्यन्ते पक्षिणोऽन्ये च लुब्धकै ॥१९९५॥
ग्राहि पुमान्कपित्थे स्याद्धान्यवत्तु ग्रहीतरि ॥१९९५ ॥

घ

घस्त मात्रे निश्चयऽपि परमाथविशेषयो ॥१९९६॥
घान्यय निश्चये तावन्यमृषार्थनिशषयो ।
घ उत्तरस्थस्त्रिह तर्यथ घा ताडने तथा ॥१९९ ॥
किङ्किण्या घस्तु घण्टायां तथा स्याद्घर्घरारवे ।
घट समाधिभदे ना शिर कटकुटेषु च ॥१९९८॥
स्तम्भभागे तथा प्रासादाकारान्तरसीमयो ।
कुम्भराशौ तथा प्रोक्तो माने द्रोणाह्वये पुमान् ॥१९९९॥
घटकस्त्रि घटयितर्यपि चावयवे स्मृत ।
वशवेदिनि चोद्वाहसाधकेऽथ वनस्पतौ ॥२ ॥
पुमान्द्वयोस्तु वार्यादिकुम्भे स्याद्घटिकाऽथ सा ।
स्त्रियां मुहूर्त्ते घण्टान्यवाद्ये गुल्फे च कीर्त्तिता ॥२ १॥
घटजन्मा पुमान्द्रोणे वसिष्ठागस्त्ययोरपि ।
घटना घटनश्चापि निर्मित्यायोजनादिके ॥२ २॥
स्त्रियां तु घटनेत्येषा गजादिन्यूह इष्यते ।
घटा घटनसघातगोष्ठीभघटनासु च ॥२ ३॥
अपि स्यात्स्वादुजम्बीरे तथैव पणवान्तरे ।
घटिक क्ली नितम्बे स्याद्घटेन तरति त्रिषु ॥२० ४॥

घटी तु दोहपात्रे च काले नाडीद्वयात्मके ।
घण्टावादनभाण्डे च स्यात्तथैवो सरा तरे ॥२ ५॥
घटी पुमाञ्शिवे कुम्भराशौ घटवति त्रिषु ।
अरघट्ट घटीयन्त्र य त्रे समयसूचके ॥२ ६॥
घटो कचो दै यभेदे सुते भीमहिडिम्बयो ।
तथा समुद्रगुप्तस्य नृपते स्यात्पितामहे ॥२ ॥
घट्टजीवी द्वयोर्वैश्यानिर्णेजकसुतेऽथ च ।
घट्टेन जीवति पुनर्घट्टजीवी त्रिषु स्मृत ॥२ ८॥
घट्टन तु हिमे क्लीब द्व तुरङ्गोपजीविनि ।
अनासवरणे चापि चलने चापि घट्टना ॥२ ९॥
घट्टिता पणगावातभेदे त्रिषु तु यौगिके ।
घण्ट शिवे लेह्यभेदे वाद्यभेदे पुनस्त्रियाम् ॥२ १ ॥
कांस्यताला तरे चैव बलाया पाटलावपि ।
घण्टक पाटलौ पुसि घण्टाकोऽपि प्रयुज्यते ॥२ ११॥
घण्टाताडस्तु योगार्थे तथा स्यात्सकरा तरे ।
घण्टारवस्तु घण्टाया श दे रागान्तरेऽपि च ॥२ १२॥
घण्टारवा तु शणपर्ण्योषधौ यौगिकेऽथवत् ।
घण्टाली कर्कटीभेदे घण्टापङ्क्तावपि स्त्रियाम् ।२ १३॥
घण्टास्वन तु क्ली लौहे यौगिके लिङ्गमर्थवत् ।
घण्टिका क्षु घण्टायामवटौ च स्त्रियाम्मता ॥२ १४॥
अपामार्गे विघण्टी तु क्षुद्रघण्टार्थिका मता ।
घण्दुरूष्मणि कण्ठस्थघण्टाया करिणोऽपि ना ॥२ १५॥
घनो ना मुस्तके मेघे सघाते लोहमुद्गरे ।
मुद्गरेऽपि च काठि ये कफे ग धेऽभ्रके तथा ॥२ १६॥
भिक्षाया परिमाणे च हस्तकाण्डद्वया मके ।
विस्तारे कठिने तु त्रिर्विपुले मूर्त्तसा द्रयो ॥२ १ ॥
कायस्थग धयुक्ते च कांस्यतालादिके तु नप ।
मुखे मध्यमनृत्यादौ लोहे मरकताङ्कये ॥२ १८॥

भवेद्घनरस सान्द्रनिर्यासे मोरटाम्बुनि ।
कर्पूरे पीलुपर्ण्याश्च सम्यक्सिद्धरसेऽपि च ॥२ १९॥
शक्रे धातुकमत्तभे वधुकाऽभ्रे घनाघन ।
घर्घरो ना चलद्वारिध्वाने घूके नदान्तरे ॥ २ ॥
स्यादस्त्री पुनरट्टादेरधोद्वारकपाटके ।
अथ स्त्री घघरी क्षुद्रघण्ट्यां वीणान्तरेऽपि च ॥२ २१॥
स्वरान्तरे तथा वाद्यलगुडे घघरा पुन ।
सरय्वशान्तरे द्वे तु रन्ध्रीवैश्यात्मसम्भवे ॥२ २२॥
अथ घघरिका वाद्यभदे वादित्रकोणके ।
घर्म स्वेदजले ग्रीष्म उष्णे दिवस आतपे ॥ २३॥
यज्ञे हविर्विशेष च महावीरमतेऽश्विनो ।
घस्रस्तु दिवसे पुसि हिंस्रे स्यादभिधेयवत् ॥२ २४॥
घात काले प्रहरण पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।
घासिर्नाऽग्नौ रण गर्त्ताऽग्नौ बह्वाशिनि त्रिपु ॥२ ५॥
घुटिकोऽश्वगजादीना पादादीनाञ्च बन्धके ।
शङ्कावपि च गुल्फे च पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥२ २६॥
घृणा स्त्रिया जुगुप्साया दयाया च प्रकीर्त्तिता ।
घृणिरस्त्री निदाघेऽह्नि ज्वालादीधितिवीचिषु ॥ २ ॥
घृतमान्याम्बुनोर्न स्त्री प्रदीप्ते त्वभिधेयवत् ।
घृतवद्घृतयुक्ते त्रि घृतवत्यौ तु रोदसी ॥ २८॥
घृताची त्वप्सरोभेदे निशायाञ्च प्रकीर्त्तिता ।
घृष्टि स्त्री वषणस्पर्द्धाविष्णुकान्तासु ना किरौ ॥२ २९॥
घोण पुमान्धूनने स्यादित्वरे त्वभिधेयवत् ।
घोणा तूक्ता हयप्रोथे नासिकायामपि स्त्रियाम् ॥ ३ ॥
कुम्भीरमक्षिकारण्ये च कीटेऽम्बुपरिसर्पिणि ।
घोण्टा तु बदरीपूगवृक्षयो कीर्त्तिता स्त्रियाम् ॥२ ३१॥
घोर पुमाञ्शिवे त्रिस्तु कष्टे च स्याद्भयानके ।
घोरो द्वयो सृगाले स्याद्घोर क्ली कुङ्कुमे मतम् ॥२ ३२॥

घोल पुंसि कपालेऽथ क्लीं दण्डाहतके भवेत् ।
द्वयोस्तु घर्घरीवैश्यसम्भूते स्यान्नरान्तरे ॥२३३॥
घोष आभीरपल्ली ना शब्दे वाचि स्वरेऽपि च ।
ब्रह्मबालुकसंज्ञे च विषभेदे लतान्तरे ॥२३४॥
कोशातक्याह्वये शब्दवणघर्मेऽम्बुदेषु च ।
कंसारयलोहे त्वस्त्री स्त्री घोषा मधुरिकौषधौ ॥ २३५॥
घोषयित्नुस्तु विप्रे च कोकिलेऽपि पुमान्मत ।
घोषवांस्त्रिर्घोषयुक्ते वीणाया घोषवत्यसौ ॥ २३६॥
घ्राणघ्राणे च नासाया त्रिर्घ्राते घ्रातिवाचिनि ॥२३६॥

ङ

ङ पुमान्विषये स्यात स्पृहाया विषयस्य च ॥२३७॥

च

चश्चण्डीशे पुमानुक्तः कच्छपे च द्रचौरयो ।
चक्को ना सर्पसत्रस्य सर्पभेदेऽपि यष्टरि ॥२३८॥
तर्पणे चिक्कणे तु स्यात्क्लीब पूगतरो फले ।
चकोरस्तु द्वयो पक्षिभेदे गिर्यन्तरे तु ना ॥२३९॥
चक्रमस्त्री रथाङ्गे च ससारे सैन्यराष्ट्रयो ।
जलावर्त्ते चये वृत्त मण्डले घनलोहयो ॥२४ ॥
काव्यालङ्कारभेदे च विषमे माक्षिकेऽपि च ।
दद्रुसंज्ञव्याधिभेदे यूहदम्भप्रभेदयो ॥२४१॥
धर्मचक्रादिके कुम्भकारोपकरणान्तरे ।
अस्त्रान्तरे द्व तु चक्रश्चक्रवाकखगे मत ॥२४२॥
हरौ चक्रधरो नाऽहौ द्वे त्रिषु ग्रामजालिनि ।
चक्रपादो द्वयोर्हस्तिन्यथ पुंसि रथे मत ॥२४३॥
चक्रवर्त्ती पुमान्सार्वभौमे स्त्री चक्रवर्त्तिनी ।
स्थावरे जन्तुतत्संज्ञे योगे वथवदिष्यते ॥२४४॥

१ आभीरपल्ल्या घा ।

चक्रवाट क्रियारोहे पर्यन्ते च शिखातरौ ।
चक्रवाडम्मण्डले क्ली लोकालोकागरौ पुमान् ॥२ ४५॥
चक्राङ्गीकुकटश्रृङ्ग्या चक्राङ्क शाङ्गधविनि ।
चक्राङ्गी कटुरोहि या चक्राङ्गो हसपक्षिणि ॥२ ४६॥
चक्राटो विषवैद्ये द्वे ना दीनारे त्रि धूत्तके ।
चक्री जालिककोकाऽजकुलालगृहिषु द्वयो ॥२ ४ ॥
विष्णौ तु ना त्रिषु वेष चक्रव चक्रयायिनो ।
चक्षु य सुभगे त्रि स्यात्तथा स्या चक्षुषो हिते ॥२ ४८॥
ना पुन पीतमुद्ग च पुण्डरीकतरावपि ।
कतकद्रौ सक्तुषु च चक्षुष्या तु भवेत्स्त्रियाम् ॥२ ४९॥
कुलालीभषज चाप द्रोणपुष्पार यश्चाटके ।
चक्षुरस्तु द्वयोर्दैये ना रथ च भगाङ्कुरे ॥२ ५ ॥
चङ्क्रम सङ्क्रमे नाऽथ चङ्क्रमश्चङ्क्रमोऽप च ।
भवे चङ्क्रमणे तच्चाप्य पेऽध्वनि गतागतम् ॥२ ५१॥
चङ्गस्तु शोभने दक्षे त्रिलिङ्ग परिकीर्त्तित ।
चञ्चत्क स्यान्मणौ नातिभास्वरे त्वभिधेयवत् ॥२ ५२॥
भवेद्‌द्वयोस्तु चञ्चत्क खद्योते दर्दुरेऽपि च ।
चञ्चला स्त्री तडि लक्ष्म्योश्चञ्चल पवने पुमान् ॥२ ५३॥
वा यवत्कर्मवति च लेखने तु द्वयोर्मत ।
चञ्चा तु नलनिर्माणे तृणनिर्मितपूरुषे ॥२ ५४॥
चतुर कीर्त्तितो दक्षे बुद्धिमत्यभिधेयवत् ।
चतुरा हस्तिशालाया तथाल्पभ्रुकुटावपि ॥ ५५॥
मृगभेदे तु चतुरा स्त्री तस्या लक्षण विदु ।
चतुरा स्याद्घनास्निग्धरोमा श्यामा सबि दुका ॥२ ५६॥
चतुरङ्गुल इत्येष पुमानारग्वधद्रुमे ।
माना तरे शरारये च योगे त्वर्थवदिष्यते ॥२ ५७॥
चतुर्थन्तु चतुर्णां त्रि पूरणेऽथ चतुर्थ्यसौ ।
तुरीयायां विभक्तौ स्त्री विनायकतिथावपि ॥२ ५८॥

चतुद्शी स्त्री वीणायां यस्यास्तन्त्र्यश्चतुदश ।
तथा शिवतिथौ त्रिस्तु पूरण स्याच्चतुदश ॥२ ५९॥
चतुवर्ग पुमानर्थधर्मकामविमुक्तिषु ।
चतुष्क स्याच्चतु सद्म भवने यष्टिकान्तरे ॥२ ६ ॥
अक्षे तु ना चतुष्की तु स्त्रिया यवनिकान्तरे ।
मशकहारि यारये पुष्करिण्यन्तरेपि च ॥२ ६१॥
चतुष्पथ क्ली श्रृङ्गाटे ब्राह्मण ना चतुष्पथ ।
चतुष्पदी स्त्री पद्ये ना पशौ क्ली करणान्तरे ॥२ ६ ॥
चतुष्पाद्रावणे पुसि चतुरङ्घ्रौ तु वान्यवत् ।
चतुष्षष्टि कलासरयादेवीभि सु ऋचि स्त्रियाम् ॥२ ६३॥
चतुस्सम यौगिकेऽपि क्लीब तु परिभाषितम् ।
चन्दनागुरुकर्पूरकुङ्कुमै कदमे कृते ॥२ ६४॥
चत्वर वङ्गणे स्थण्डिले क्ली ना चतुष्पथ ।
स्त्री तु स्याद्दवताभेदे रथ्यायामपि चत्वरी ॥२ ६५॥
चत्वालो हमकुण्डे च पुसि दर्भेऽपि दृश्यते ।
चदना चदनी च स्त्री नदीभदे प्रयुयते ॥२ ६६॥
चन्दनोऽस्त्री मलयजे भद्रकाल्यान्नपुसकम् ।
चन्दिर क्ली जले ना तु चन्द्रे हस्तिनि तु द्वयो ॥२ ६ ॥
चन्दिल पुसि वास्तूकशाके स्यान्नापिते भगे ।
चन्द्रो वारिणि कर्पूरे शशाङ्क बर्हिमेचके ॥२ ६८॥
कम्पिलवृक्षेऽपि पुमान्सुन्दरे तु त्रिषु स्मृत ।
क्ली त्वारण्यकसाम्नि स्यात्त्रि त्वाह्लादक इष्यते ॥२ ६९॥
कुमुदे रजतेऽपि स्यात्कनके तु नृशण्डयो ।
अर्घ्यायां तु स्त्रियां चन्द्रा नतु स्त्री सूर्यरश्मिषु ॥२ ७ ॥
शतत्रय सहस्रे ये हिमोत्सर्गाय कीर्त्तिता ।
चन्द्रको बर्हिपक्षाग्रेऽम्सुतैलप्रसरे पि ना ॥२ १॥
चन्द्रकान्तस्तु पुसि स्यान्मणिभेदे च कैतवे ।
चन्द्रकी ना मयूरे स्यादथ याग्र द्वयोर्भवेत् ।२ ७२॥

चन्द्रभागस्तु ना शैलान्तरे काश्मीरसंस्थिते ।
स्त्रियां तु देवताभेदे चन्द्रभागा प्रकीर्त्तिता ॥ ७३॥
चन्द्रभागा चन्द्रभागी नदीभेदे द्वयं मतम् ।
चन्द्रहासः खड्गमात्रे विशेषाद्रावणस्य च ॥ ७४॥
चन्द्रहासोऽधचन्द्राऽग्रे खड्गमात्रेऽपि कीर्त्तितः ।
चन्द्रिका चन्द्रभागाख्यनद्याञ्चन्द्रातपेऽपि च ॥ ७५॥
चन्द्रिप्रिय इत्येष चकोराख्ये खगे द्वयोः ।
चन्द्रोदयः स्यादुल्लोचे शशाङ्कस्योदयेऽपि च ॥२७६॥
चपलश्चञ्चले शीघ्रे द्रुतनीतेऽनवस्थिते ।
अतले चैव चारे च वाच्यवत्पारदे तु ना ॥ ७७॥
तुरुष्काख्ये च निर्यासे द्वे तु वानरमत्स्ययोः ।
चपला करिपिप्पल्यां पिप्पल्यामपि विद्युति ॥२७८॥
पुंश्चल्यां च सुरायाञ्च तथा लक्ष्म्यामपीष्यते ।
चप्पटस्तु चपेटे च पर्पटे च पुमान्मतः ॥ ७९॥
चप्पटं स्फारविपुले वाच्यवत्परिकीर्त्तितम् ।
चमकं यजुरध्यायभेदे हीबेरकेऽपि न ॥ ८०॥
चमरं चामरे स्त्री तु मञ्जर्यां द्वे मृगान्तरे ।
चमसो यज्ञपात्रे चाऽस्त्रीकर्णावयवान्तरे ॥२८१॥
मेघे तु चमसः पुंसि चमसी तु स्त्रियामियम् ।
मुद्गादीनां कृते पिष्टे यज्ञने परिकीर्त्तिता ॥२८२॥
चमूः सेनाविशेषे च सेनामात्रेऽपि च स्त्रियाम् ।
चम्पस्तु तरुभेदे ना चम्पा स्त्री नगरीभिदि ॥२८३॥
चयः समूहे प्राकारमूलबन्धे समाहृतौ ।
चरोऽक्षद्यूतभेदे च भौमे वारे च पुंस्ययम् ॥ ८४॥
वाच्यवत्तु स्पसे चापि चलेऽथ युवतौ चरी ।
चरितं क्लीबमाचारे गते वृत्ते च भक्षणे ॥२८५॥
गते तु भक्षिते चैव चरितो वाच्यवन्मतः ।
चरुः स्थाल्यां हव्यपाके तथा मेघे पुमान्मतः ॥२८६॥

चचरी चमटिरितिप्रसिद्धे हास्यवाक्यके।
उक्ता कापटिकानाञ्च गीतभेदे स्त्रियामियम् ॥२ ८७॥
चचरीको महाकाले केशवि यासशाकयो ।
चर्चा मार्जारकण्यां स्त्री मार्ष्टौ चर्चिक्यचिन्तयो ॥२ ८८॥
पुश्च या तिलके गौर्याश्चर्चो वेदविदि त्रिषु।
चर्मकार पादुकृतिमत स्त्रीपुसयोरयम् ॥२ ८९॥
स्त्री तु चर्मकारीति मता चर्मकषौषधौ।
चर्मण्वती स्त्री कदली द्रुमेऽपि सरिद तरे ॥२ ९ ॥
चर्म क्लीब वचि तथा फलकारयेऽस्त्रवारणे।
चर्मी भूजद्रुमे पुसि तथा भृङ्गरिटावपि ॥२ ९१॥
अथो फलकपाणौ च चमवत्यपि वा यवत्।
चवणश्चर्वणाऽऽस्वादे चवणा नीलमक्षिका ॥२ ९२॥
चवणिर्नाऽनले स्त्री तु यवसायेतरे धियाम्।
चलश्चलाचले त्रि स्त्री पुश्चलीविद्युतो श्रियाम् ॥२ ९३॥
अथ कम्पे तुरुष्कारयनिर्यासे चानिले पुमान्।
चलनम्भ्रमणे कम्पे भूषणे वस्त्रघघर ॥२ ९४॥
पादे तु चलन पुसि पुश्चल्या चलना स्त्रियाम्।
चलनी वस्त्रघघर्यां वारिभेदेऽपि च क्वचित् ॥२ ९५॥
च या स्त्रिया वचायां स्याच्चविके च यमि यते।
चषकोऽस्त्री सुरापात्रे पाने मद्या तरेऽपि च ॥२ ९६॥
चाक्रिको घाण्टिके चापि तलिकेऽपि द्वयोमत ।
चाटो ना चटने चार्थोपजीविभिदि च स्मृत ॥२ ९ ॥
चौरे वर्णे कृष्णहरि सिते च त्रि तु तद्वति।
चाटु पशुपिचण्डे ना प्रियवाक्ये तु ना च नप् ॥२ ९८॥
नृपादिस्तुतिवाक्ये तु चाटु स्यात्स्त्री नपुसकम्।
चाटुकारस्तु ना हारभेदे हेमगुडे कृते ।२ ९९॥
यष्टिमात्रेऽपि च त्रिस्तु विज्ञेयोऽ्य प्रियवदे।
चातुर शकटे चक्रगण्डौ दाक्ष्ये तु चातुरी ॥२१ ॥

चाटुकारिनियन्त्रोस्तु दृष्टेरपि च गोचरे।
तथा चतुरसम्बन्धियाशुकारिणि च त्रिषु॥ १ १॥
अथ चातुरकश्चक्रगण्डौ पुस्यभिधेयवत्।
गोचरे लोचनस्यापि चाटुकारे नियन्तरि॥२१ ॥
चान्द्रभागस्तु ना शैलविशेषभिदि शीतगो।
चान्द्रभागा चान्द्रभागी नदीभेदे द्वय मतम्॥ १ ३॥
चन्द्रभागस्य सम्बन्धि येत स्यादभिधेयवत्।
चान्द्री स्त्री पूर्णिमाया स्याच्चन्द्रसम्बन्धिनि त्रिषु॥ १ ४॥
चामर तु भवेत्क्लीब ह्रीबेरे च प्रकीर्णके।
अथो चमरसम्बन्धि यथवच्चामरम्मतम्॥२१ ५॥
पुमाश्चामरपुष्प स्यात्पूगकाशाम्रकेतके।
चामीकरन्तु कनके चामरेऽपि नपुसकम्॥२१ ६॥
चाम्पेयो हेम्नि किञ्जल्के तथा चम्पकपादपे।
नागकेशरवृक्षे च ना क्ली तु प्रसवेऽनयो॥२१ ॥
चार प्रियालवृक्षे ना बन्धे चैव स्पशे गतौ।
चार तु स्यात्प्रियालस्य प्रसवे चाङ्गणेऽपि नप्॥२१ ८॥
चारक पालकेऽश्वादे स्यात्सचालकबन्धयो।
चारण चारणाद्यर्थे न ना चारयतद्वयम्॥२१ ९॥
देवजात्यन्तरे तु द्वे चारणोऽपि कुशीलवे।
चारि पशुमुखन्याधौ लक्षणीयेऽपि च स्त्रियाम्॥२११ ॥
चारी तु स्त्री नाट्यनान्धागतावभस्य सेवने।
चारुबृहस्पतौ पुसि शोभने त्वभिधेयवत्॥२१११॥
चित्राखुपर्णीमोड्डुम्बा सुभद्रान्वन्तिकासु तु।
मायायां सवनक्षत्रनदीभेदेषु च स्त्रियाम्॥२११२॥
चारुनाल रक्तपद्मे योगे त्वर्थवदिष्यत।
चालनी चालन च स्त्री पुसोस्तितउनि स्मृतम्॥२११३॥
अथ चालयतेरर्थे चालन चालना नना।
चिकुर पादपे केशे पुसि स्यात्पादपान्तरे॥२११४॥

द्वयोस्तु गृहबभ्रा स्याद्विहगे च सरीसृपे।
चञ्चले तु त्रिषु ज्ञेय युवतीनां च लोचन ॥२११५॥
ईषन्निमीलिते च क्ली चिकुर परिकीर्त्तितम्।
चिक्कण कथितो वा ये मसृण तु त्रिषु स्मृतम् ॥२११६॥
चित्स्त्रियामुच्यते ज्ञाने ज्ञातरि वेष भद्यवत्।
चित छन्न त्रिषु चिता स्त्रिया सा चितिचित्यया ॥२११ ॥
चि याया स्त्री चिता क्ली तु चये त्रिश्चितिकर्मणि।
चितिस्तु स्त्री समूहे स्याच्चितायां चयनेऽपि च ॥२११८॥
ज्ञाने च चेततौ त्वेष धातौ पुॅ लिङ्ग इष्यते।
चित्तन्नपुसक बुद्धौ हृदयेऽपि प्रकीर्त्तितम् ॥२११९॥
चि य मृतकचैत्ये स्याच्चित्या मृतचितौ स्त्रियाम्।
चित्र नपुसक पुण्ड्रे स्या ालेरयेप्यथ त्रिषु ॥२१२ ॥
आश्चर्ये कबुराभिरयवणयुक्ते यथो पुमान्।
देवतानुक्रमे प्रोक्त आखुराजे चिर तने ॥२१२१॥
कबुरारयगुणेऽथ स्त्री चित्रा हेम तरा त्रिषु।
पशुकामेष्टिभेदे यप्रोष्या क णात्रघ्न यपि ॥२१२२॥
गोदुम्बाख्यलताजातौ सुभद्राधुनिभेदयो ।
वेदशालिमुखे चापि नक्षत्रे च द्रदैवते ॥२१२३॥
तद्युक्ते कालमात्रे च त कालो पभयोषिति।
द्वयोस्तु चित्र पाठीननाम्न मत्स्या तरे मत ॥२१२४॥
चित्रकस्तु पुमा वह्निसज्ञायाम्भषजौषधौ।
त मूले च तथैरण्डे द्वे तु राजिलभोगिनाम् ॥२१२५॥
त्रयोदशाना भेदानामेकसि व्याघ्र एव च।
अथ क्लीब चित्रक नत्तिलके सम्प्रपुज्यते ॥२१२६॥
चित्रगुप्तस्तु पुसि स्याद्यमे तस्य च लेखके।
चित्रपक्ष पक्षिभेदे द्वे कपिञ्जलसज्ञके ॥२१२ ॥
चित्रपर्णी पृश्निपर्णीलतायां त्रि तु यौगिके।
चित्रभानु पुमान्सूर्ये पावकेऽपि प्रकीर्त्तित ॥२१ ८॥

अथ चित्ररथ सूर्ये चन्द्रे गन्धवभिद्यपि ।
चित्रलः कालिङ्गवन्या छाग्या स्त्री चित्रला मता ॥२१२९॥
चित्राङ्गो द्वे न्याघ्रभेदे पिण्ारकसमाह्वये ।
अथ चित्रशरीरे च चित्राङ्गो वाच्यवन्मत ॥२१३ ॥
चिपिट पृथुके पुसि त्रि तु पिान्छतविस्तृत ।
चिरजीवी द्वयो काके पुमारतु ब्रह्माण स्मृत ॥२१३१॥
चिरण्टी त्ववम तव्या सा द्वितीयवयास्त्रयाम् ।
सुवासिनीति प्राथते स्त्रीविशेषऽपि कोविद ॥ १३ ॥
चिरमेही गदभ द्वे यौगिके त्वथव मत ।
ग्रीवाभदेऽतसीविद्युन्खद्योते चिलमीलिका ॥ १३३॥
मत्स्यभेदे चिलिचिमो द्वयोह मवते तु ना ।
वृक्षभेद च तस्यैव प्रसवे क्लीबमिष्यते ॥ १३४॥
चिल्ल क्लिन्नेऽक्षिण ना त्रिस्तु क्लिन्नाक्षे द्वे खगान्तरे ।
आतापिसञ्ज्ञ चिल्ली तु स्त्रुवि शाके च मारिप ॥ १३५॥
चिह्ननपुसक प्रोक्तम्पताकायां च लक्ष्मणि ।
चीनो ना पीतमुद्गे च तन्तावप्यशुकान्तरे ॥२१३६॥
काककङ्गौ च मदनद्रुमे चोदी यनीवृति ।
भूम्नि तद्देशराजेषु तु द्वयोर्मृगयोराप ॥ १३७॥
व्यवस्थया तु मृगयोर्लक्षण चवमुच्यते ।
ताम्रवर्णो मृगो य स हरिण स्यात्स एव च ॥ १३८॥
सितक्रोड स चोन स्यादित्येक प्रोक्तलक्षण ।
अ थ कपोतवर्णो यस्त्रिंशदङ्गुलमानक ॥२१३९॥
इत्युक्त क्लो तु मदनफले चीनमयस्यपि ।
चीर क्ली छिन्नवस्त्रे च रेखालिखनभेदयो ॥२१४ ॥
गोस्तने वल्कले चाऽथ चीरी झिल्लारण्यकीटके ।
चीर्णपर्णस्तु निम्बेऽपि खजूरद्रौ तथा पुमान् ॥ १४१॥
चुक्रोऽम्लवेतसे बीजपूरे चाऽऽम्लरसे पुमान् ।
विमन्त्रणे गुञ्जिकायां सुन्दरे तु द्वयोर्मत ॥२१४२॥

चुक्र तु यच्छुचौ भाण्डे सक्षौद्रगुडकाञ्जिके ।
त्रिरात्र धा यराशिस्थ भवेमस वादि तत्स्मृतम् ॥२१४३॥
स्त्री चुक्राथ चाङ्गेर्यां चुक्री त्र्यम्लरसा विते ।
चुम्बकञ्चुम्बनपरे धूर्त्तोऽयस्का तयोरपि ॥२१४४॥
बहुग्र थैकदेशज्ञ घटस्यार्ध्वावलम्बने ।
चुम्रस्तु स्यात्पुमाम्नाशे नाशव यभिधेयवत् ॥२१४५॥
चुलुकी शिशुमारे स्या कुण्डीभदे कुलान्तरे ।
चुलुको भाण्डभेदे ना द्वीपारये व्याघ्रके द्वयो ॥२१४६॥
नृस्त्रियोस्तु द्रवाधारप्रसृते परिकीर्त्तित ।
चुलुम्पो गमने प्रोक्तश्चुलुम्पा छागयोषिति ॥२१४ ॥
चु ल क्लिन्नाक्षज तौ च क्लि ने चाक्षणि वा यवत् ।
चु ली चितायामुद्धानेऽपि स्त्रियाम्परिकीर्त्तिता ॥२१४८॥
चूचुद्वयो किरात्याञ्च शम्बरादपि पु कसात् ।
वैदेहाद्वापि सम्भूत सङ्करस्तत्र कीर्त्तित ॥२१४९॥
चूडा शिखावलम्भ्यो स्त्री मूर्ध्नि बाहुविभूषणे ।
चूडामणि स्त्री गुञ्जाया पुस्त्रियोस्तु शिरोमणौ ॥२१५ ॥
चूडारभा तूष्चटाया स्त्री चूडावति पुनस्त्रिषु ।
चूतक कूपके पुसि तथाम्रे परिकीर्त्तित ॥२१५१॥
चूणमस्त्री नासयोगे धूलौ क्षाग तरेऽप्यथ ।
कपदके तु चूर्णी स्त्री चूर्णी दग्धेऽभिधेयवत् ॥२१५२॥
चूर्णिश्चूणयतौ ना स्त्री ग्र थभेदकपद्यो ।
चूलिस्तु पिष्टकेऽपि स्याच्चापस्याप्यटतौ स्त्रियाम् ॥२१५३॥
चूलिकस्तु तिले ना स्या चूलिकी कुक्कुट द्वयो ।
चूलिका तु स्त्रिया जातिश्छ दोभेदे गजस्य च ॥२१५४॥
कर्णमूले तथा नाटकाङ्गेऽपि परिकीर्त्तिता ।
चूषा गजवरत्राया स्त्री चूष चूषणे न ना ॥२१५५॥
चेत् कुसितेऽथ साक ये स्तुतौ पक्षा तरेऽव्ययम् ।
चेतना सविदि स्त्री स्या चतन प्राणिनि त्रिषु ॥२१५६॥

चलोऽधमे भद्यवत्स्याच्चल वस्त्र नपुसकम् ।
चष्टित तु गता क्लीब चष्टाया च तथष्यते ॥ १५७॥
चैत्य चिताङ्के बुद्धाऽण्डे याज्ञिकायाधिवासने ।
देवालये च क्लीब स्यादस्त्री तूद्दशपादपे ॥२११८॥
चैत्र पुसि वस तस्य प्रथमे मास्यथ स्त्रियाम् ।
चैत्र मृते देवकुले ना भूभृमासभदयो ॥२१५९॥
तत्स्थाया पौणमास्या स्याचैत्री भत्ता तु चित्रया ।
नक्षत्रेण युते कालभेदे चित्राह्वये पुन ॥२१६ ॥
काले जाते स यदि स्यादस्त्यथश्च ततश्च स ।
पारिशेष्याद्यथायाग्य विज्ञेयो नपि पुसि वा ॥ १६१॥
क्लीब चैत्ररथ यक्षराजोद्याने प्रकीर्त्तितम् ।
अहीनक्रतुभेदे तु द्विरात्रे मन्मथ च ना ॥ १६२॥
चैद्याश्चेदिषु पुभूम्नि द्वे तु चेदीशपुत्रयो ।
चोक्षो गीता तरे नाऽथ त्रिदक्षशुचिचारुषु ॥२१६३॥
चोच तरु वचि तथा भृङ्गारये गन्धवस्तुनि ।
चोड प्रावरणे पुसि देशभेदे नृभूमनि ॥२१६४॥
चोदना वेदवाक्ये स्त्री ककव्या चोदनी मता ।
प्रेषणे तु विरोधोक्तावपि स्याचोदना नना ॥२१६ ॥
चोद्य स्यादद्भुत प्रश्ने चोदनीये तु वाच्यवत् ।
आश्चर्यविषये चैव प्रश्नस्य विषयेऽपि च ॥२१६६॥
चोलस्तु पुसि कूर्पासे करमदद्रुमेऽप्यथ ।
तत्फले क्ली दाक्षिणात्यनीवृद्भेदे तु भूम्नि ना ॥ १६७॥
तद्राजे तु पुमानस्य सन्ताने तु द्वयोरयम् ।
गृहच्छदिषु वस्त्री स्याच्चोलो जानपदेष्ययम ॥२१६८॥
चोलकी तु त्रिषु ज्ञेयश्चोलकेन समन्विते ।
पुमांस्तु नागरङ्ग च करीरे किष्कुपर्वणि ॥२१६९॥
चौरिको ना पुराऽध्यक्षे द्यतकारे तु स द्वयो ।
चौरिका तु स्त्रियामेव स्तेये सम्परिकीर्त्तिता ॥२१७ ॥

चौलन्तु चूडाकरणे त्रि तु स्या चोलयोगिनि।
च्यवनो मुनिभद स्या यवन प्र युतौ मतम ॥२१ १॥
च्युतादान क दुकादानदण्डेऽपि च्युतग्रहे।
च्युति स्त्री च्यवने योनौ वायौ च च्योततौ तु ना ॥२१ २॥
यूप पुमान् रवौ वाते युद्धेऽपि च पुमा मत ॥२१ २॥

छ

छो निर्मलेऽन्यवच्छा तु स्त्रिया छादन इष्यते॥२१ ३॥
छगण पशुविष्ठाया नपुसकमुदीरितम्।
छगनुस्तु पुमानुक्तो ज तौ वैश्वानरेऽपि च ॥२१ ४॥
छगल नीलवस्त्र क्ली छागली वृद्धदारके।
द्वयोस्त्वज स्याच्छगलो मुनिभेदे तु ना मत ॥ १ ५॥
छत्रो द्वेऽसावतिच्छत्रे कुस्तुम्बुरु शिली ग्रया।
आतपत्र त्वय छत्र पुनपुसकयोर्मत ॥२१ ६॥
छत्रभङ्गस्तु वैध ये स्वात त्र्यनृपनाशयो।
छत्राक स्यादाहच्छत्र रास्ना छत्राक्युदीरिता ॥२१ ७॥
छ वरो ना निकुञ्जेऽथ क्लीब निष्कुब्यमा दिरे।
शय्योत्तरच्छदे चाऽथ कु सके भ सक त्रिषु ॥२१ ८॥
छद स्या पक्षिपक्षेऽपि वृक्षपत्रेऽपचारणे।
ग्रन्थिपर्णे तमालेऽपि पुमानेष प्रकीर्त्तित ॥२१ ९॥
छदन तरुपत्रेऽपि पिधाने पक्षिपक्षके।
छदिस्तु पटले गृहे सा त क्लीब प्रकीर्त्तितम् ॥२१८ ॥
छद्म (न) प्राक्त कैतवे च सद्म यपि नपुसकम्।
छन्दो वशेऽप्यभिप्राये वा छायामपि पुस्ययम् ॥२१८१॥
छन्द श्रुतीच्छापद्येषु सामगानां विशेषत।
अनुष्टसामग्र थे च स्वैराचारे नपुसकम् ॥२१८२॥
छन्न तु रहसि क्लीब छादिते वाच्यलिङ्गकम्।
छदनो मदनद्रौ ना निम्बवृक्षेप्यलम्बुषे ॥ १८३॥

शुनामपि ज्वरेऽथ स्याच्छदनी त्रपुसे स्त्रियाम् ।
छदन तु छदना च ननोद्धा तौ पदद्वयम् ॥२१८४॥
छल स्यात्स्खलिते चेत्र छद्म यपि नपुसकम् ।
छल्ली वीरुधि स ताने वल्कले कुसुमा तरे ॥२१८५॥
छविश्चर्मणि शाभाया दीप्ता य त्वद्विजन्मनाम् ।
वेद्यामास्तरण तद्वा यत्रप्रतिकृतौ स्त्रियाम् ॥ १८६॥
छागा ना करुणाभरण्यपादपे छगले द्वयो ।
गणो ना करीषाग्नौ त्रि तु छगणयोगिनि ॥२१८ ॥
छात्र शिष्ये पुमांश्छात्र मधुभदे नपुसकम् ।
छा दस श्रोत्रिये पुसि छ द सम्बन्धिनि त्रिपु ॥ १८८॥
छाया प्रोक्ताऽऽतपाभावे प्रतिबिम्बाकयोषितो ।
पालनात्कोचयोर्दीप्तिस ्शोभागेहपङ्क्तिषु ॥२१८९॥
छायाकरश्छत्रधारे योगार्थे त्वथव मत ।
छिगुरस्तु द्वयो गृहबभ्रौ च कीर्त्तित ॥ १९ ॥
छिदुक्ता छेदने स्त्रीत्वे छत्तरि वभिधेयवत् ।
छित्वर स्याच्छरे पुसि शठ तु त्रिपु कीर्त्तित ॥ १९१॥
छिदिरस्त्र्यायुधे ना तु रज्ज्वग्न्योर्मूषिके द्वयो ।
छिदुरश्छेदके धूर्त्ते भङ्गुरे वैरिणि त्रिषु ॥ १९२॥
छिद्र त्रिच्छिद्रिणि क्ली तु र ध्रे दोषे तथाऽऽगसि ।
छिन्ना गुलूच्या वृक्ये तु त्रि क्ली दधनि नि शरे ॥२१९३॥
छुप क्षुपे स्पशने च पुंल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।
छुरित सोत्प्रासहासे त्रि तु छिन्ने प्रयु यते ॥२१९४॥
छेको गृहाश्रितमृगपक्षिणोस्त्रि तु नागरे ।
छेदन त्रश्चने क्लीब कनकस्य फलेऽपि च ॥२१९५॥
साधने तु त्रिषु छिन्ने रथ छेदयते कृतौ ।
छेदन छेदना चेति क्लीबेऽपि स्यात्स्त्रियां तथा ॥२१९६॥

---

१ छिदिरस्तु पुमानग्नौ छत्रे क्ली मूषिके द्वयो ।
असी स्वायुधसामान्ये वभ्रवा द प्रयोगवान् ॥
छेदनं छेदना चेति क्ली स्त्रियो सम्प्रयु यते ।

ज

जो ना मृत्युञ्जये तात जन्मन्यपि जनार्दने ।
जवे भोगे विषे दीप्तौ पिशाच देवरे स्त्रियाम् ॥२१९ ।
अपि मध्यगुरौ जा तु जातो त्रिस्तूत्तरस्थित ।
जाते जतरि भुक्त च रहस्त्रिगनि तथा मत ॥ १९८॥
जकुटो मलये पुंसि शुनके तु द्वयोर्मत ।
जगच्च जगती चेति लोके स्त्रीक्लीबयोर्मतम् ॥ १९९॥
छन्दःसु स्त्री जगन्यष्टाचत्वारिंश स्वरादिषु ।
सुरभौ च पृथिव्या च जने वेतद्द्वयोर्भवेत् ॥२ ॥
वायौ तु ना त्रिषु त्वेष त्रसे च स्याच्चराचरे ।
जगलम्मेदके पिष्टमद्येथ कितने त्रिषु ॥२२ १॥
जघन स्त्रीकटे पूर्वभागेऽपि कटिमात्रके ।
कस्यापि वस्तुन पश्चाद्भागेऽपि च नपुंसकम् ॥२२ २॥
पनसे ना स्त्रिया काकोदुम्बर्याञ्जघनेफला ।
जघन्य गर्ह्यगहनजघनस्थाऽन्तिमे त्रिषु ॥२२ ३॥
नपुंसक तु विज्ञय जघन्य रक्तचन्दन ।
जघन्यजो द्वयो शूद्रे त्रि तु नीचेऽनुजेऽपि च ॥२२ ४॥
जङ्गल त्वस्त्रिया मासेऽथ स्थाने निर्जने त्रिषु ।
जङ्घनन्तु स्त्रिया श्रोणिपुरोभाग कटावपि ॥२२ ५॥
जटा स्त्रीकेशसदर्भभद मासार्यभषजे ।
तरो शिफाया च जटी त्वेषा प्लक्षे स्त्रिया तथा ॥ २ ६॥
द्रोणार्यपरिमाणस्य चत्वारिंशत्यथ त्रिषु ।
जटी जटावति भवेत्संहतेऽपि तथा मत ॥२२ ॥
जटायु पुंसि सम्पाते कनीयसि च गुग्गुलौ ।
जटिला तु वचा मासी पिप्पलीषु स्त्रिया मता ॥२२ ८॥
ह्रीबेरे जटिल क्लीब जटावति तु वाच्यवत् ।
जठर कठिने जीर्णे त्रिषु कुक्षौ तु न स्त्रियाम् ॥२२ ९॥

जडस्तु स्तब्धनिबुद्ध्यो शीतेऽनालोच्यकारिणि।
जडा स्त्रिया शूकशिम्ब्या पङ्कगन्धिजले जडम् ॥ ११ ॥
जडस्त्वेष गुण शीते पुल्लिङ्ग परिकीत्तित ।
जतुका जिनपत्राया तथैव स्थावरान्तरे ॥ २११॥
चक्रवर्त्तिन्यारण्यकेऽथ जतुक हिङ्गुलाक्षयो ।
गवथौ स्याज्जतुफला पुसि तूदुम्बरद्रुमे ॥ १२॥
जत्वसस्त्वावसाने क्ली ना धर्ममेधयो ।
जन स्याज्जनताया च जनने मनुजेऽपि च ॥ १ ॥
राजन्यबन्धावप्राज्ञे प्रतिवेशविवाहयो ।
महर्लोकात्परे लोकेऽथ स्याद्दमनके जनम् ॥ १४॥
जनको जन्मदे त्रिर्ना ताते सीतपितर्यपि ।
जनक्षयस्तु सग्रामे जनस्यापि क्षये पुमान् ॥ १५॥
जननी करुणामात्रोर्जनन वशजन्मनो ।
भवेज्जनपदो जानपदोऽपि जनदेशयो ॥ १६॥
जनयित्री जनयिता पित्रोर्द्वे जन्मदे त्रिपु ।
जनिर्ना जायतौ स्त्री तु पत्न्या जन्मवरस्त्रियो ॥ २१७॥
जनित्र सामभदेऽथ जानत्री मातरि स्त्रियाम् ।
जनित्व तु कुले द्यावापृथिव्योरोदसोरपि ॥ १८॥
जनिमा पुसि पित्रो स्यादुत्पत्तौ तनयेऽपि च ।
प्राणिघ्नतेप्यथ जनी स्नुषातिबलयोरपि ॥ १९॥
उत्पत्तौ जतुकृद्वल्ल्या सीमन्तिन्या च कीर्त्तिता ।
जन्तुनरे पुमान् प्राणिमात्रेऽपि परिकीर्त्तित ॥२ २ ॥
अथ जन्तुरथ क्षुद्रमृगे कोद्रङ्गनामके ।
योगे तु तस्य लिङ्गादि तर्कणीय यथायथम् ॥२२२१॥
जन्मोत्पत्तो च तोये च नान्त क्लीबमुदीरितम् ।
जन्योऽपवादे न स्त्री स्यात्क्ली युद्धजनितन्ययो ॥२२ ॥
हट्टे चाथोत्पादनीये जनितर्यपि वाच्यवत् ।
तथा वरस्य स्निग्धेषु नवोढाज्ञातिभृत्ययो ॥२२ ३॥

विगीतेऽपि द्वयोस्त्वेष मातृवाहककीटके ।
जया मातृवयस्यायां जयस्तु जनके पुमान् ॥२२२४॥
जयुर्द्वयोरपत्ये च जतौ चाऽथ पुमानयम् ।
जयुरग्नौ च पितरि प्रादुर्भावे प्रजापतौ ॥२ २५॥
रक्तपुष्पे जपा शब्द उपांशूच्चारणे जप ।
जपापुष्प कुङ्कुमे स्याज्जपाया कुसुमेऽपि च ॥२२२६॥
जभ्र स्त्रीपुंसयोर्भेके विप्र च परिकीर्त्तित ।
जम्बाल शैवले पङ्क न स्त्रियामयमिष्यते ॥२२२ ॥
जम्बीरो जम्भलद्रौ च स्तम्बे मरुवकाऽभिधे ।
जम्बुर्द्रुमद्वीपभिदो स्त्रिया मरुसरित्यपि ॥२२२८॥
जम्बुको वरुणे ना त्रिर्नीच द्व तु सृगालके ।
जम्बूजम्बूटवृक्षे स्त्री तफले जम्बु नस्त्रियो ॥२ २९॥
चतुष्पाज्जातभेदे तु जम्बु स्त्रीपुंसयोर्मता ।
जम्बूक फेरवे नीचे पश्चिमाशापतावपि ॥ २३ ॥
जम्बूलस्तु पुमाञ्जम्बूविटपे क्रकचच्छदे ।
जम्भस्तु दंष्ट्रापार्श्वस्थद ते ना भ्रात्तपादयो ॥२२३१॥
दैत्यभेदे च जम्बीरतरौ क्लीब तु तत्फले ।
विदारणे तु वक्त्रस्य जम्भा स्त्री पारकीर्त्तिता ॥२२३२॥
जम्भला यक्ष्मभेदे च बुद्धदेवा तरेऽपि ना ।
तथा जम्बीरवृक्षेऽपि क्ली तु तत्प्रसवे मतम् ॥ २३३॥
जयस्तु पीतमुद्र ना नान्दीवृक्षे पुरदरे ।
जयते भारत जित्यां होमभेदे युधिष्ठिरे ॥२२३४॥
जयन विजयऽश्वादिसनाहेऽप्यश्वचर्मणि ।
जयतो जेतरि त्रिर्ना भीमे शक्रसुते शिवे ॥२२३५॥
जयती तिथिभिद्वोरीतर्कारी द्रसुतासु च ।
जया तु गौरीतत्सख्यो स्त्रिया देयन्तरेष्वपि ॥२२३६॥
अर्हच्छासनदेवीनामेकस्यां च प्रकीर्त्तिता ।
जयस्य हेतुभूतायां विद्यायामपि कुत्रचित् ॥२२३ ॥

तृतीयाया तथाष्टम्या त्रयादश्यातिथिष्वपि ।
शमीद्रुमे हरीतक्यामग्निम थारययादपे ॥ २३८॥
वचाया नीरके चापि तर्कार्या च जया मता ।
जरठ कर्कशे पाण्डौ कठिनेऽप्यभिधेयवत् ॥२२३९॥
जर ता महिषे द्व स्यात्स्थविरे वभिधेयवत् ।
जराय्वारण्यके सामभेदे गर्भाशये तु ना ॥ ४४ ॥
जरूथोऽग्नौ शरीरे च मासे सवत्सरऽपि ना ।
जजरस्त्वस्त्रिया शक्रध्वजे वाग्व तरे तु ना ॥ २४४॥
दण्डिकासंज्ञके चैव शैवले द्वे तु कोकिले ।
अथ जीर्णे च भिन्ने च जजर वाच्यव मतम् ॥ ४२॥
जजरीक बहुच्छिद्रे जराग्रस्तेऽपि वा यवत् ।
जर्णो नेन्दौ द्रुमे कर्वे खगे तु द्वे त्रि जीणके ॥२ ४३॥
जण्डश्च द्रे च वृक्षे च पुंल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।
जर्त्त प्रजननारयेऽङ्के चाभीरे योनिरोम्णि च ॥२ ४४॥
जर्त्तिलो मुनिभेदे चाप्यरण्यजतिले पुमान् ।
जल गोकलने नीरे ह्रीबेरेऽथान्यवज्जडे ॥ ४५॥
अथो जलकरङ्कोऽजे नारिकेलफलेऽपि च ।
शङ्खे जललतायाश्च वारिवाहे च कीर्त्तित ॥ २४६॥
जलकूपी कूपगर्त्ते पुष्करिण्यान्तथा स्त्रियाम् ।
जलगुल्मो जलावर्त्ते कच्छपे जलचत्वरे ॥२२४ ॥
जलज कमले ना तु शङ्खे द्व मत्स्यकूर्मयो ।
जलतापिक इल्लीसे काके चीत्रपयोश्च ना ॥ ४८॥
जलदो मुस्तके मेघे जलदा विद्युति स्त्रियाम् ।
जलप्रियो वराहे स्याद्योगार्थे त्वर्थवन्मत ॥ ४९॥
जलबिल्व ककटे स्यात्पश्चाङ्गे जलचत्वरे ।
जलरुण्डो जलावर्त्तपयोरेणौ भुजङ्गमे ॥२ १ ॥
जलसूचि कङ्कमोटिमत्स्ये शृङ्गाटकेपि च ।
शिशुमारे च पुंल्लिङ्गो जलौकायां तु योषिति ॥ २५१॥

जलाञ्जल स्वतो वारिनिगमे शैवलेऽपि च ।
जलाटनो लोहपृष्ठे जलौकाया जलाटनी ॥२ ५२॥
जला मा महिषे द्व स्याद्वाच्यवत्तु जडात्मनि ।
जलाशयमुशीरे क्ली जलाधारे तु पुस्ययम् ॥ ५३॥
जडाऽभिप्रायक त्वेतदभिधेयवदिष्यते ।
जलेश पुसि वरुण जम्भले च महोदधौ ॥२२५४॥
जवा स्यादोड्रपुष्पेऽथ जवा वेगे त्रि तद्वति ।
जवनो वेगयुक्ते त्रिर्गतौ तु जवनम्मतम् ॥२२५५॥
गतिहेतौ च वेगेऽपि वायौ तु जवन पुमान् ।
जवी वेगवति त्रि स्याद्द्व तु वातप्रमीमृग ॥ ५६॥
जसुरिस्त्वरणौ पत्रे वह्नावपि पुमान्मत ।
जहक पुसि कालेऽथ स्यात्क्षुद्रत्यागिनोस्त्रषु ॥ २५७॥
जह्नुस्तु पुसि राजर्षिभेदे विष्णावपि स्मृत ।
जागृविर्नृपतावग्नावपि पुल्लिङ्ग उच्यते ॥ ५८॥
जाघनी तु स्त्रिया जङ्घाया त्रिर्जघनयोगिनि ।
जाङ्गल क्लीबमगुरौ त्रि तु जङ्गलयोगिनि ॥२ ५९॥
द्वयो कपिञ्जले स्त्री तु शूकाशम्ब्या हि जाङ्गली ।
जाङ्गली विषविद्याया जाङ्गल जालिनीफले ॥ ६ ॥
जात कदम्बके न स्त्री त्रिषूत्पन्ने जनौ तु नप् ।
जातरूप सुवर्णे च रू ये चापि नपुसकम् ॥ २६१॥
जाति समूहे माल्या सामा ये गोत्रज मनो ।
अश्मन्तिकामलक्योश्च तथा जातीफले स्त्रियाम् ॥ ६२॥
ब्राह्मणादिषु वर्णेषु वेदार्थे सवज तुषु ।
स्वभावे प्रभवे छन्दोभेदेष्वार्यादिके वपि ॥ २६३॥
कदाचिदर्थे जातु स्याद यय गहणेपि च ।
जात्यो मुख्ये कुलीने च सुन्दरेऽप्यभिधेयवत् ॥ ६४॥
जानु स्यादस्त्रियामूरुजङ्घास धौ तथैव च ।
द्वात्रिंसदङ्गुले मानभेदे जानु, प्रकीर्त्तित ॥ २६५॥

जापक त्रिर्जपकृति क्ली तु कालयके स्मृतम् ।
जाबाला द्वे अजाजीवे जबालापत्यके त्रिषु ॥ ६६॥
जामाता दुहितु पत्यौ तथा श्वेततिले धवे ।
तथेव सूर्यावर्त्तेऽपि पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥ ६ ॥
जामि कुलस्त्रिया स्त्री स्यात्तणे स्वसरि चाङ्गुलो ।
नीवृच्छेदे जले वेतज्जामि क्लीबमुदाहृतम् ॥ ६८॥
आलस्ये चतसोम्यासात्समानगुणवस्तुन ।
जाम्बवानृक्षराजेऽस्य सुताया जाम्बवत्यपि ॥ ६९॥
जायानुजीवी पुसि स्याभटे च बकपक्षिणि ।
जायु पत्ते भेषजेऽपि पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥ ॥
जार पुमानुपपता भास्करे च प्रयुज्यते ।
अविवाह्यासु कयासु या स्यात्कया प्रसूतिजा ॥ १॥
कया तस्या स्त्रिया जारी पावत्यामपि चष्यते ।
ओषधीभिदि जार तु क्ली रक्तकुमुदे मतम् ॥ ॥
जारद्रव तु स्त्रीयोगियानमागस्य दक्षिणा ।
या वीथिस्तत्र मागस्य पुनस्तस्या तरिक्षगे ॥ २॥
स्थाने जारद्रव क्लीब त्रिजरद्रवयागिनि ।
जाल गवाक्षे दन्ते क्ली पुष्पक्षारकट्टन्दयो ॥ २७४॥
आनाये कपट चापि भारताद्दक्षिण क्वचित् ।
वर्षात्स्यादन्तरे द्वीपे विप्रावैदेहजे पुन ॥ ५॥
द्वयारथ पटोल्या स्त्री जाली नीपद्रुमे तु ना ।
जालक क्षारके दम्भे कलाया नाययोरपि ॥ ६॥
गवाक्षभदेऽथ तिल नाभौ च कफले न ना ।
जालिका त्वथवाया च वदना वृतिवाससि ॥ २७७॥
गिरिसारजलौकायोमयकङ्कटके स्त्रियाम् ।
द्वे तु कीट मकटारये जालक परिकीर्त्तित ॥२२ ८॥
जालपादो द्वयोर्हंसे राजहसेऽम्बुकुक्कुटे ।
कुक्कुटेऽपि त्रिषु त्वेष जालाकारपदे मत ॥२२७९॥

जालिको वाच्यवद्ग्रामे जालिजालोपजीविनो ।
धूर्त्ते च द्वे तु लूतारयक्षुद्रज व तरे मत ॥२ ८ ॥
जाली जालवति त्रि स्याद्वयोर्दाश प्रकीर्त्तित ।
जालिनी चित्रशालाया पिप्पल्या च स्त्रिया मता ।।२ ८१।।
जाल्मो नीचे त्रि निबुद्धौ स्त घेऽनालोच्यकारिणि ।
जाहको घोङ्कमार्जारखटवाकारुण्िकासु च ॥ २८२॥
जाह्नव तु भवे जन्तुवाचक त नपुसकम् ।
गङ्गाया जाह्नवी जह्नुयोगिनि त्रिषु जाह्नवम् ॥ ८३॥
जिर्वाच्यवत्स्याज्जयिनि पिशाच तु पुमान्मत ।
जिगत्नुस्तु पुमा प्राण शीघ्रग वा यव मत ॥ २८४॥
जिगीषा जतुमिच्छाया व्यवसायप्रकषयो ।
जिघासुह तुमिच्छो त्रर्ना तु शत्रौ प्रयुज्यते ॥२२८५॥
जिङ्गी स्त्रियामिय प्रोक्ता मञ्जिष्ठासङ्गमषजे ।
तथा दीघफलायां च काशातक्या प्रयु यते ॥२२८६॥
जितस्त्रिषु स्वीकृते च युद्धभग्नाभिभूतयो ।
जये तु जितमि येतन्नपुसकमुदीरितम् ॥ २८ ॥
जिति स्त्रियां स्याद्विजये सामभदे तथा मता ।
जित्यो हलौ पुमाञ्जित्या विजये स्त्रीत्व इष्यते ॥२२८८॥
जित्वति जयशीले त्रि काश्या स्त्री जि वरी मता ।
जिनाऽर्हति च बुद्धे च विष्णौ स्याज्जित्वरे त्रिषु ॥ ८९॥
जिप्री द्वे शकुनौ जिप्र पुसि स्यात्क्रोधकालयो ।
जिष्णुरग यजुने द्रेषु विष्णौ ना त्र तु जित्वरे ॥ २९ ॥
जिह्म वगरवृक्षे च तथा पापे नपुसकम् ।
जिह्म सर्पे द्वयोरेष त्रिलिङ्ग कुटिलेऽलसे ॥२२९१॥
जिह्मगस्तु द्वयो सर्पे म दगामिनि वाच्यवत् ।
जिह्वा तु वाचि ज्वालाया रसने च स्त्रिया मता ॥२२९२॥
जिह्वापस्तु द्वयोरुक्तो मार्जारे च तथा शुनि ।
जिह्वालो द्व सारमेये तथैव पृषदशके ॥ २९३॥

जीमूतोऽद्रौ भृतिकरे देवताडे पयोधरे ।
जीरोऽन्ने पावके खड्गऽजाज्यां त्वेष नृशण्डयोः ॥ १४॥
जीरो द्वयाभवेदश्वे जीरः क्षिप्रेऽभिधेयवत् ।
जीविर्द्वये पुमाष्टङ्के गुल्मे च शकटेऽप्यथ ॥ १५॥
द्वयोः पशौ च मद्गौ च चटके च प्रयुज्यते ॥
जीलं तु करपल्या स्यात्कोशे चर्मपुटे न्तौ ॥ १६॥
जीवो ना गीष्पतौ जन्तौ क्षेत्रज्ञे वृक्षभिद्यपि ।
जीवा मौर्व्यां वचाभूम्योर्जीवन्त्यां शिञ्जितेऽपि च ॥ १ ॥
जीवं द्विषष्टिस्वरके छन्दोभेदे नपुंसकम् ।
जीवकः स्यात्क्षपणके तथवासनपादपे ॥२ १८॥
कूर्मशीर्षे च पुंल्लिङ्गस्तथा स्यादहितुण्डिके ।
त्रि तु श्रेष्ठ प्राणितरि वृद्धयाजीविनि सेवके ॥ १९॥
कृपणे च स्त्रियां त्वेषा जीवन्त्याख्यलतान्तरे ।
आजीवे जीवने चापि जीविका परिकीर्त्तिता ॥ २ ॥
अथ च प्राणवत्येष जीवत् स्यादभिधेयवत् ।
जीवथो द्वे मयूरे च कूर्मे च परिकीर्त्तित ॥२२ १॥
जीवदस्तु पुमाञ्छत्रौ वैद्ये चापि प्रयुज्यते ।
मेघवत्त्वेष जीवस्य छत्तर्यपि च दातरि ॥२२ ॥
जीवनं जीविकायाञ्च प्राणनेऽम्भ च वारिणि ।
विष्णुशक्त्य तरे तु स्त्री जीवन्त्यामपि जीवनी ॥ २ ३॥
स्याज्जीवना स्त्री मेदायामनाजीवतये क्रतौ ।
जीवनीया तु जीवन्तीशाकसज्ञलतान्तरे ॥ २ ४॥
काकाङ्गीसज्ञके च स्त्री जीयितव्याऽम्बुनोस्तु नप् ।
जीवन्त ऋषिभेदे ना स तु स्याज्जीवतादिति ॥ २ ५॥
आशिषो विषये चैव जीवितर्यपि वाच्यवत् ।
जीवन्ती तु स्त्रियां जीवासज्ञशाकलतान्तरे ॥२२ ६॥
ज्योतिष्मतीगुडूच्योश्च सा शमीवन्दयोरपि ।
पुनर्नवौषधौ जीवबोधनी कथिता स्त्रियाम् ॥ २ ७॥

जीवबोधन इत्यस्य योगे लिङ्गादि तर्क्यताम् ।
जीवला स्त्री वचाया स्या मुनिभेद तु जीवल ॥२३ ८॥
जीवातुरस्त्री जीने च द्रव्येऽने सलिले तथा ।
औषधेऽपि विशषण कीर्त्तितो जीवनौषधे ॥२३ ९॥
जीवित प्राणने क्लीब प्राणषु च तथा मतम् ।
त्रि तु प्राणिनव येव जीवेर्ण्यन्तस्य कर्मणि ॥२३१ ॥
जीवितेश प्राणनाथ दयिते द्रविणागमे ।
जुगुप्सा तु घृणाया च नि दाया च स्त्रिया मता ॥२३११॥
जुङ्गितस्तु द्वयाहींनवर्णे पूर्वे प्रकीर्त्तित ।
वर्जिते जुङ्गित त्रि स्याद्वजने तु नपुसकम् ॥२३१ ॥
जूजवे स्त्री गतो रा ता हस्वादी राक्षसे द्वयो ।
जुष्ट तु क्लीबमुच्छिष्ट सेवते त्वभिधेयवत ॥ ३१३॥
जुहुराणस्तु ना वह्नावध्नर्यावनडुह्यपि ।
अथ द्वयोहये त्रिस्तु कुटिले परिकीत्तित ॥ ३१४॥
जुहू स्त्रिया पुरोडाशे स्तुग्विशेषे च कीत्तिता ।
जूस्त्वरागमने प्रोक्ता सामान्यगमने स्त्रियाम् ॥२३१५॥
जूराकाशसरस्वत्या पिशाच्या जवने स्त्रियाम् ।
जूटो ना निकुरम्बे स्यात्केशवि यासभिद्यपि ॥२३१६॥
जूण पुमान् यावनाले तथा वज्जे प्रकीर्त्तित ।
वृद्धे तु भेद्यव जूर्णे जूर्णा स्त्री बल्बजेष्वियम् ॥२३१ ॥
जूर्णि स्त्रिया वरे क्रोधे शरीरे च प्रकीर्त्तिता ।
जूर्णिर्नाग्नौ रवौ वायो ब्रह्माण त्रिस्तु सत्वरे ॥ ३१८॥
जम्भित करण स्त्रीणा जृम्भणे च विचेष्टिते ।
उत्फुल्ले तु विवृद्धे च जृम्भित वा यचन्मतम ॥२३१९॥
जैत्र क्ली जयने धृते जयशीले तु भेद्यवत् ।
जैत्र्या स्फोताख्यव ल्या स्त्री विष्णुक्रान्तान्यनामनि ॥ ३२ ॥
जैवातृको ना परिघे परिखाच द्वयोरपि ।
शुके तु द्वे घने त्वेत क्लीबे जैवातृक मतम ॥२३२१॥

त्रिस्तु स्याद्विषगायु मत्कूषीबलकृशण्ययम ।
जो ताल पुसि वर्णे स्या नीललोहितामश्रके ॥ २ ॥
त्रि तद्व यथ जो ताला यात्रनाल्गारयधानके ।
जोष प्रीतौ च सवायामपि पुास प्रकीत्तित ॥ ३ ३॥
जोष सुख प्रशसाया मौने स्याल्लङ्घनेऽययम् ।
ज्ञो ज्ञातार त्रिष्वथ नात्मनि चा द्रमसावनौ ॥ २ ४॥
ज्ञातिस्ताते सगोत्रे चैक्ष्वाकराजा तरे पुमान् ।
ज्ञानी स्यात्पुसि दज्ञे ज्ञानयुक्तऽयलिङ्गक ॥ २ ५॥
याशब्दस्तु स्त्रिया भूमौ मौ या मातरि चो यते ।
यानिस्तु हानौ बुद्धौ च जीणत्व च सरिद्धुजो ॥ २ ६॥
याया वृद्धतरे चातिप्रशस्ते पूवज त्रिपु ।
येष्ठस्तु पूर्वज वृद्धतमे शस्ततमे त्रिपु ॥ ३ ॥
त्रपुह्रीबेरयोस्तु क्ली नीलकारये च लोहके ।
द्वयोस्तु हसेऽपि येष्ठो ज्येष्ठा स्त्री शम्भुशक्तिपु ॥ ३ ॥
नवस्वेकत्र चालक्ष्मीगृहगोधिकयोरपि ।
इ द्रदैवतनक्षत्रेऽपि येष्ठा स्त्रीत्व इष्यते ॥ ३ ९॥
यैष्ठ पुमाञ्छुक्रमासे येष्ठसम्ब धिनि त्रिपु ।
यैष्ठी येष्ठायुतायां च पौणमास्या स्त्रिया मता ॥ ३ ३ ॥
योतिरात्मनि सूर्ये च हविर्होमाचिदीप्तिषु ।
ग्रहनक्षत्रतारासु नक्षत्रेऽपि विशषत ॥ ३ २ १॥
विलोचने धने पुत्रे साममेदेषु चापि नप ।
योतिष्टोमारययाग च तथाग्नौ योतिरस्त्रियाम ॥ ३ ३ ॥
योतिषाम्पतिरर्के च च द्रे चापि पुमा मत ।
ज्योतिष्मज्ज्योतिषा युक्त त्रिषु ज्योतिष्मती पुन ॥ २ ३ ३ ॥
पिण्ड्यारयस्थावरे क्षुद्रधा ये यस्याह्वयान्तरम् ।
गवीधुरिति तत्र स्याज्ज्योतिषो मासि कुत्रचित् ॥ ३ ३ ४॥
योति सम्ब धिनि त्वेतन्त्रिलिङ्ग परिकीर्त्तितम ।
ज्योत्स्ना च द्रातपेऽपि स्याज्ज्योत्स्नायुक्तनिशि स्त्रियाम ॥ २ ३ ३ ५॥

ज्यौत्स्नी तु स्त्री पटोल्या स्याज्ज्योतिष्मद्रजनावपि ।
ज्योत्स्नावति त्वथ ज्यौत्स्नस्त्रिलिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥ ३३६॥
ज्वरो व्याधौ हरक्रोधाज्जूटाया च महारुजि ।
ज्वरघ्नस्तु गुडूच्यां स्याच्छाकभेदे च वास्तुके ॥२३३ ॥
ज्वलनोऽग्नावथ क्लीबे ज्वलनं दीपने स्मृतम् ।
ज्वलनं ज्वलना चेति न ना ज्वलन इष्यते ॥ ३३८॥
ज्वलितं वाच्यवद्दग्धेप्युज्ज्वलेऽपि प्रकीर्त्तितम् ॥ ३३८क॥

झ

झा झञ्झीशे सुरगुरौ दैत्यराजेऽध्वनावपि ॥२३३९॥
झटा झटितरि द्वे तु शूद्रामैत्रेयजे नरे ।
झरा स्त्री झरणे नद्यां झरी ना निर्झरे झरः ॥ ३४ ॥
झर्झरः स्यात्कलियुगे वाद्यभेदे नदान्तरे ।
विशीर्णे तु त्रिलिङ्गः तज्झर्झरं परिकीर्त्तितम् ॥ ३४१॥
झला स्यादातपस्योर्मौ दुहितर्यपि च स्त्रियाम् ।
झल्लरी वाद्यभेदे च छत्रान्तालम्बिवाससि ॥२३४ ॥
झल्लिकोद्वर्त्तनपटे स्त्रिया द्योते च कीर्त्तिता ।
झषो ना विपिने तापेऽथ द्वे मकरमत्स्ययोः ॥ ३४३॥
झषा नागबलासञ्ज्ञभेषजे स्यात्स्त्रियामियम् ।
झाण्टो निकुञ्जे कान्तारे व्रणादीनां च मार्जने ॥ ३४४॥
पुमान्स्थावरभेदेऽपि सघातेऽपि प्रकीर्त्तितः ।
झिल्लिका स्त्रीमता झिण्ट्यामातपस्य रुचावपि ॥२३४५॥
झिल्ली चीर्यारण्यकीटे स्यादातपस्य रुचौ स्त्रियाम् ।
तथा दग्धौदनेऽपि स्याद्वर्त्यामुद्वर्त्तनांशुके ॥२३४६॥

ञ

ञः पुमान्स्याद्बलीवर्दे शुके वामगतावपि ॥२३४६ ॥

ट

ट पुमा वामने पादे नि स्वनेऽपि पुमा मत ॥ ३४ ॥
टङ्कोऽस्त्री परशा शलभृङ्गे पाषाणदारण ।
मुद्रितोन्मानभेद च टङ्कणे गाथ नृस्त्रिया ॥ ३४ ॥
मृगभेदेऽप्यवस्थान ना तु कश्मीरविश्रुत ॥
महीरुहान्तरे नीलकपित्थ क्ली फले तया ॥ ३४९॥
टङ्कारा विस्मये पुसि प्रसिद्धा शिञ्जिनीध्वना ।
टट्टरी लम्बभदे स्या लम्बापटहसञ्ज्ञके ॥ ३५ ॥
मिथ्यावादेऽपि च स्त्रीत्वे भेरीनादे तु टट्टर ।
टागरष्टङ्कणक्षारे ककरारये च वीक्षिते ॥ ३५१॥
अथ केकरनत्रे त्रिष्टागर स्या छरीरिणि ।
टारो लङ्के तुरङ्ग च पुल्लिङ्ग परिकीत्तित ॥ ३५ ॥
टुण्टुकाऽ पे त्रिलिङ्ग स्या ना तरा शाणकाभिधे ॥ ३५ ॥

ठ

ठा मण्डले च द्रबिम्बे श् य चालोकगाचरे ॥ ३५३॥

ड

ड पुमा नाडवाग्ना स्याड्डा डाकिया स्त्रियां मता ।
डिङ्गरस्तु भवेत्क्षेप्ये गङ्गरेऽप्यभिधेयवत् ॥ ३५४॥
डिम्बो भयध्वनावण्डे फुप्फुसे प्लीह्नि विप्लवे ।
डिम्बिका जलबिम्बे स्यान्मोणके कामुकस्त्रियाम ॥२३५५॥
डिम्भ शिशौ बालिशे च त्रिलिङ्गः परिकीर्त्तित ॥ ३५५ ॥

ढ

ढो ढक्कायां पुमानुक्त शुनि पुच्छे तथा शुन ॥ ३५६॥

ण

ण पुमान्ब दुदेवे स्याद्भूषणे गुणवर्जिते ।
पानीयविलयेऽपीति केचिदूचुर्विपश्चित ॥२३५७॥

त

तश्चौरामृतपुच्छेषु क्रोडे म्लेच्छे च कुत्रचित
पुमांस्तु तरणे पुण्ये कथित श ब्दवेदिभि ॥२३५८॥
तक्षकास्त्वस्तक्षितरि ना तु तक्ष्ण्युरगा तरे ।
तक्षा ना वर्द्धकौ द्वे तु विप्रीकरणज नरे ॥२३५९॥
आयोगवे च वृश्चिश्चत्तक्षण तस्य ना पुन ।
तक्षा दीप नरे सूर्य आतपे क्ली तु पुत्रयो ॥ ३६ ॥
तगर तु नतारये स्याद्ग न्धद्रव्ये नपुसकम् ।
नन्द्यावर्त्तस्य पुष्पेऽथ तद्रु गु मे तगर पुमान् ॥ ३६१॥
तङ्क सम्भावनायाञ्च भीतावपि पुमान्मत ।
तटस्तटी तटश्चति त्रिषु तीरेऽद्रिसानुनि ॥२३६ ॥
तथा जलाशयप्रा ते क्षेत्रे तु क्ली तटम्मतम ।
तटिस्तटतिधातौ ना स्त्रनाया तु स्त्रियाम्मतम ॥२३६३॥
तडागोऽस्त्री जलाधारविशष यन्त्रकूटके ।
तण्डक खञ्जने फने समासप्रायवाचि च ॥२३६४॥
देवदारुतरुस्क धमायाबहुलकेष्वपि ।
तण्डुलस्तु नृलिङ्ग स्याद्व्रीह्यादिफलबीजके ॥२३६५॥
विडङ्ग च स्त्रिया त्वेषा पिप्प या तण्डुला मता ।
तण्डुलीय शाकभेदे विडङ्गतरुताप्ययो ॥ ३६६॥
तण्डुवीण कीटमात्रे बर्बरे तण्डुलोदके ।
तण्डूद्रोणिप्लवे चैव तथा द र्या स्त्रिया मता ॥२३६ ॥
तत व्याप्त विस्तृते च वाच्यवत्परिकीर्त्तितम ।
क्लीब वीणादिवाद्येऽथ ततो वायौ पितर्यपि ॥२३६८॥

त न स्वरूप परमात्मनि भूत रहस्यके ।
विलम्बितारयन्नत्ये च नपुसकमुदीरितम ॥ ३ ९॥
तथाभ्युपगमे पृष्टप्रतिवाक्यसमुच्चय ।
सदृशे निश्चयेऽप्येतन्यय परिकीर्त्तितम ॥ ३ ॥
तनुवपुषि लग्ने चासृग्धरायामपि स्त्रियाम ।
तन्वी स्त्रिया स्यात्पिप्प या ना दीवृक्षे तनु पुमान्॥ २ ॥
तनुस्तु विरलेऽपे च भद्यलिङ्ग प्रकीर्त्तित ।
तनुस्तु सा त क्लीव च स्याद्विस्तारशरीरया ॥ ३ ॥
तनूनपात्तु पुंलिङ्ग आ ये चाग्ना न कीत्तित ।
तनूरुह तु लोम्न स्यात्पतत्र च नपुसकम् ॥ २ २॥
त तुस्तु सूत्रे ना यज्ञसस्थाया चाऽथ स द्वयो ।
एकत्र भेदे भदानाम्मण्डलाह्वयभोगिनाम ॥ ३ ४॥
ग्राहारययादोभदे च सामभन्ने पुननाप ।
सर्वाग्निचित्याया पुच्छे पक्ष्याकारस्य वस्तुन ॥ ३७५॥
छुरिकाया च खड्गादि मुष्टौ चाप्यस्त्रिया मत ।
त नुवाय कुविन्देऽपि तथा लूताक्रिमौ द्वयो ॥ २ ६॥
तन्त्रस्वराष्ट्रव्यापारे तन्तुवायपरिच्छदे ।
शास्त्रौषधान्त्रमुख्येषु प्रयोगेऽब्वरकर्मणाम ॥ २ ७॥
एकस्यैवोभयाथत्वे कुटुम्बव्यापृतावपि ।
सेनाया सामसूत्रे च सिद्धान्तेऽन्यकुटुम्बके ॥ ३७ ॥
क्रतुकामाभिवादानामृक्सामाना समागमे ।
अथ तन्त्री स्त्रियामेव वीणाया गुण इष्यते ॥ ३७९॥
तन्त्रक नववस्त्रे स्याद्गुडूच्या तन्त्रिका मता ।
तपोऽर्केऽपि च वीतसनाम्नि ना पक्षिबन्धने ॥ ३ ॥
तपनोरुष्करतरौ रवौ धर्मे पशावपि ।
चन्द्रे नरकभेदे ना तपन तापकर्मणि ॥२३८१॥
तपनीय त्रि तप्त ये क्ली स्वर्णे शालिभिद्यपि ।
तपस्तु नपि कृच्छ्रादौ धर्मसन्तापयोरपि ॥ ३८२॥

लग्नान्नवमराशौ च शिशिरर्त्तौ तथा त्वचि ।
लोकभेदेऽप्यथ तपा न स्त्रिया माघमास्ययम् ॥२३८३॥
तपसस्तु पुमांश्चन्द्रे वायवन्महति स्मृत ।
तपस्या व्रतचर्यायां तपस्य फाल्गुने पुमान् ॥२३८४॥
तपस्वी शिशिरर्त्तौ च चन्द्रे च त्रिस्तु तापसे ।
शौर्येऽथ मास्या कटुरोहिण्यां च स्त्री तपस्विनी ॥२३८५॥
तपोधनस्तापसे स्यान्मुण्डियांन्तु तपोधना ।
तप्ता स्याद्भास्करे पुंसि भद्यलिङ्गस्तु तापके ॥२३८६॥
तम क्ली नरके शोके पापे ध्वान्ते वलत्यपि ।
अज्ञाने प्रकृते सत्त्वरजोभिन्न गुण निशि ॥२३८ ॥
तमास्तु राहावुदित पुनपुसकयोरयम् ।
तमसा स्त्री नदीभेदे नारूपाऽव्यवसाययो ॥२३८८॥
तमालस्तिलके खडगे तापिच्छे वरुणद्रुमे ।
तमालपत्र तापिञ्छे तिलके पत्रकेपि च ॥२३८९॥
तमिस्रम ध्वतमसे तमोमात्रक्रधोरना ।
तमिस्रा ध्वान्तराशौ च रात्रिमात्रेऽपि च स्त्रियाम् ॥ ३९ ॥
तमोनुत्पुंसि चन्द्राकपावकेषु प्रकीर्त्तित ।
तमोनुदस्तमोनुद्वत्पुंसि चन्द्राकवह्निषु ॥२३९१॥
तमोऽपह पुमान्सूर्ये चन्द्र चाग्नौ जिनेऽपि च ।
तरोऽग्नौ तरणे पुंसि पेटके तु तरी स्त्रियाम् ॥२३९२॥
तरङ्गिणी हरिद्रायां नद्यां सोर्मिणि तु त्रिषु ।
तरणि सूर्यवार्ग्योर्नां स्त्री सरित्सौरयेष्वियम् ॥२३९३॥
पुष्पस्तम्बे कुमार्यारये व्रजस्तम्भे च सोप्ययम् ।
गवास्थापने काष्ठे पतितानां त्रि तु द्रुते ॥२३९४॥
तरण्डो वडिसीसूत्रबद्धकाष्ठादिके प्लवे ।
नौकायामथ न स्त्री स्यात्तितडीडिम्भचिञ्चयो ॥२३९५॥

---

१ तमाकाख्यस्य वृक्षस्य भस्मादेरथ विशेषके ।

तरत् स्त्रिया प्लवेपि स्या कारण्ड च विहङ्गमे ।
तरत्र क्ली प्लवे त्रिस्तु घासहारिणि तन्मतम् ॥ २९६॥
तरन्तस्तु द्वयोर्भेके ना यवत्स्यात्तरी तरि ।
तरल त्रिश्चञ्चले च भास्वरे तरलस्तु ना ॥ ३९ ॥
हारमध्यगरत्ने च हारे च तरल तु नप ।
चर्मकोशेऽथ तरला यवागूसुरयो स्त्रियाम् ॥२३९ ॥
तरवारिः सायके ना स्त्री यष्टधार यायुधान्तरे ।
तरो बले च वेग च सान्त क्लीबमुदीरितम् ॥ ३९९॥
तरस्वी द्वे याघ्रकप्योस्त्रिशूरबलिनेगिषु ।
तरिश द समारयात पुसि वैश्वानरानले ॥ ४ ॥
स्त्री चर्मवृतपेडाया नावि चैव तरिर्मता ।
तरीष शोभनाकारे भलेऽधि यवसाययो ॥२४ १॥
तरुजस्तु पुमानग्नौ भेद्यलिङ्गस्तु वृक्षजे ।
तरुण यूनि भ ये त्रिनरण्डे कुब्जपुष्पके ॥२ ॥
तर्क काङ्क्षावितर्कोहहेतुशास्त्रेषु कथ्यते ।
तर्कार पादपे तक्रे नवनीतेन सयुते ॥२४ ३॥
स्यात्सद्योमथिते वैजयन्त्यां तर्कार्युदीरिता ।
तर्कु पुमान्सूत्रवेष्टशलाकायाम्प्रकीर्त्तित ॥ ४ ४॥
अनलाधारपात्रेऽपि तथा शेफस्यपीष्यते ।
तर्तरीक वहित्र त्रि पारणे तु त्रिषु स्मृतम् ॥ ४ ५॥
तर्पणन्तु गुडा याढ्यलाजसक्तुषु च धने ।
तृप्तौ तर्पयतेस्त्वर्थे तर्पण तर्पणा न ना ॥२४ ६॥
जलोद्भवे तु भृङ्गारस्तम्बे तर्पण एष ना ।
तर्ष पुमा पिपासाया लिप्साया च प्रकीर्त्तित ॥२४ ॥
तलश्च पेट तालाख्यद्रुमे शीतगुणे च ना ।
त्रि तु तद्वति शण्डे तु तालसञ्ज्ञतरो फले ॥२४ ८॥
पाताले समदेशे च चतुर्भागे पलस्य च ।
पाणिना दक्षिणेनैव वीणात न्त्याश्च ताडने ॥२४ ९॥

अथ स्वरूपयोस्त्वस्त्री तलमेत प्रकीर्त्तितम् ।
धने स्तरौ कार्यबीजे हस्तघ्ने तु तला तलम् ॥ ४१ ॥
तलित विरले स्तोके तुच्छ चाप्यभिधेयवत् ।
अट्टालिकायान्तु स्त्रीत्वे तलिन्येषा प्रकीर्त्तिता ॥२४११॥
तलिम कुट्टिमे त पे च द्रहासे वितानके ।
तलुन पवने यूनि युवत्या तलुनी स्मृता ॥२४१२॥
त प शय्याऽट्टदारेषु सग्राम नौशिरस्यपि ।
तल्ली तरुण्या तल्लस्तु जलाधारान्तरे पुमान् ॥२४१३॥
तविषस्त्वर्णवे स्वर्गे बले ना तविषी भुवि ।
वा यायां देवक यायामि द्रपु यामपि स्त्रियाम् ॥२४१४॥
ताडो ना ताडने ताडी स्त्री तालीपादपे मता ।
ताडिस्त्री तरुभेदेऽपि तथैवाभरणा तरे ॥२४१५॥
ताण्डस्तु ताडने घोषे मुष्टिमेयतृणादिषु ।
यवद्रुमे तथैवाऽयम्पु लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥२४१६॥
ताण्डवस्त्वस्त्रिया नृत्त तृणभदे च कीर्त्तित ।
तातस्तु जनके चाऽनुकम्प्येऽपि च पुमा मत ॥२४१ ॥
तातगु क्षुद्रताते ना ताताय तु हिते त्रिषु ।
तातलो रुजि पाके च लोहकूटे पुमानथ ॥ ४१८॥
स्या मनोजवसे तसे तातल सोऽभिधेयवत् ।
तान तु गीतिधर्मे स्याद्विस्तारे तान इष्यते ॥ ४१९॥
तान्तस्तु मासे ना श्रा तिमति तु त्रिषु कीर्त्तित ।
तापिस्तापयतौ दै यभेदे ना स्त्री नदीभिदि ॥ ४२ ॥
तापिच्छस्तु तमालद्रौ काकतुण्ड्याञ्च पुस्ययम् ।
तापी नद्य तरे ताप पुमा स तापक च्छ्रयो ॥२४२१॥
क्लीब तामरस पद्मे ताम्रकाञ्चनयोरपि ।
तामस तमसायुक्त त्रि खले सतमोगुणे ॥२४२ ॥
प्रावृण्निशि तु दुर्गायां निद्राया निशि तामसी ।
ताम्बूल वृक्षपत्रेऽपि नागव लीदलस्य च ॥२४२३॥

---

१ तरि वा

शुक्तिचूर्णस्य पूगस्य वीत्या पूगफलेऽपि च ।
ताम्बूली तु स्त्रियामेषा नागवल्याम्प्रकीर्त्तिता ॥ ४ ४॥
ताम्रा स्त्री कृष्णलावल्ल्या ताम्र क्ली शुल्वरूपयो ।
ना शुल्ववर्णसदृशे वर्णे तद्वति तु त्रिष ॥ ४ ५॥
ताम्रचूडो रक्तचूडे त्रिद्वयो कुक्कुटे मत ।
ताम्रवृन्त कुलत्थ ना रक्तवृन्ते तु वाच्यवत् ॥२४ ६॥
तारस्तु शुद्धयुक्ताया मुक्ताशुद्धौ च तारणे ।
रदे वानरभेदेऽपि तारा तु स्यान्नरस्त्रियो ॥ ४ ७॥
नक्षत्रे नेत्रमध्ये च रजते तु नृशण्डयो ।
स्त्री बुद्धदेवताभेदे बालिगीष्पतिभार्ययो ॥२४ ८॥
त्रि तूच्चशब्दे विशदे क्लीव तु प्रणवेऽम्बुजे ।
तारका त्वपुमानक्षितारानक्षत्रयोरथ ॥२४ ९॥
कर्णधारे दत्यभेदे पुसि स्यात्प्रणवे तु नप् ।
तरीवृतारयित्रोस्तु त्रिर्देवीभिदि तारिका ॥ ४३ ॥
तारण सौरसक्रा त्यवधिके मासि पुस्ययम् ।
तारणी त्वस्त्रिया गोष्ठया त्रि तु सम्बन्धिनि स्मृत ॥२४३१॥
तरणेस्तारणस्याथ चार्थे तारयतेरना ।
तार्क्ष्यो ना गरुडे विष्णौ विष्णोर्वामनविग्रहे ॥ ४३२॥
शैलजे च रथे चापि गरुडस्य तथाऽग्रजे ।
तार्क्ष्यं रसाञ्जने सौवर्चले च क्ली द्वयोर्हये ॥२४३३॥
तार्णं भारतवर्षस्य द्वीपभेदे नपुसकम् ॥
तृणसम्बन्धिनि त्वेतत्तार्णं स्यादभिधेयवत् ॥२४३४॥
ताल कालक्रियामाने चपेटे त्रपुसेत्सरौ ।
तृणराजे करास्फालेऽङ्गुष्ठमध्यमयोर्मितौ ॥२४३५॥
इक्षुभेदे च नाऽथ स्त्री ताली दृढदलाह्वये ।
तृणद्रुमे तामलकी सौराष्ट्रीमुसलीषु च ॥२४३६॥
प्रतिताल्यामथ क्लीव हरिताले फलेषु च ।
अत्रोक्तस्थावराणां स्यात्कांस्यस्थाल्यान्तु तत्र ये ॥२४३ ॥

तालक द्रारयन्त्रे च कर्णभूषणभिद्यपि ।
पुमास्तूणगुणे त्रिस्तु तद्वत्ययमुदीरित ॥२४३८॥
तालपत्री स्त्रिया वाद्यभेदे स्यात्तालसञ्ज्ञके ।
तथा मूषिकपर्ण्यां न तु ना ताडङ्कभूषणे ॥२४३९॥
तालित तूलितपट गुणवादित्रभाण्डयो ।
तालीशपत्र भूम्यामलकीतालीशयो स्मृतम् ॥२४४ ॥
तावत्तत्परिमाणे त्रिरन्यय त्ववधारण ।
सभ्रमे च परिच्छेदे तथा कास्न्योधिकारयो ॥२४४१॥
ताविष खगवारिध्योस्ताविषी भूसरिद्भिदो ।
वात्याया देवकन्याया क्ली तु तेजास ताविषम् ॥२४४२॥
तिक्तस्तु पर्पटे पुसि पटोले गुग्गुलावपि ।
विरसान्यरसे षण्णा रसाना कटुकेऽपि च ॥२४४३॥
गन्धे च सुरभावे तदगुणत्रययुते त्रिषु ।
तिक्तपर्वा गुडूचीहिलमोचीयष्टिषु स्त्रियाम् ॥२४४४॥
तिक्तशाकस्तु वरुण खदिरे पत्रसुन्दरे ॥
तिक्ता तु कटुरोहिण्या स्त्रीलिङ्गया परिकीर्त्तिता ॥२४४५॥
तिग्मो वज्रोष्मणो त्रिस्तु तीक्ष्णतेजसि सोष्मसु ।
तित्तिरो द्वे खरक्वाणखगे ऋष्यन्तरे तु ना ॥२४४६॥
तिन्तिडीकाऽम्लिकाचिञ्चाद्यान्य वृक्षे त्रिषु स्मृता ।
तिन्तिडीक तु वृक्षाम्लाख्ये फलेऽथाम्बुवेतसे ॥२४४ ॥
तिन्त्रिणो दैत्यभेदे स्याच्चिञ्चायां तिन्त्रिणी मता ।
तिमिरन्त्वन्धकारेऽपि न स्त्री नेत्ररुजान्तरे ॥२४४८॥
तिमिरा तु स्त्रियामेषा वाद्यभदे प्रकीर्त्तिता ।
तिरोऽन्तर्धौ तिर्यगर्थेप्यव्ययम्परिकीर्त्तितम् ॥२४४९॥
तिरस्करणमित्येतच्छादनेऽनादरेपि नप् ।
भवेद्यवनिकाया तु सा तिरस्करिणी स्त्रियाम् ॥२४५ ॥
तिरस्कारः परिभवेऽप्यन्तर्धानेऽपि कीर्त्तितम् ।
तिरीटस्तु पुमान्रक्तलोध्रे स्यात्कर्कटे तु नप ॥ ४५१॥

तिरीटी तु स्त्रियामेषा बदर्याम्परिकीर्त्तिता ।
तिर्यक् तु साचिभेदे त्रि पश्चादौ तु पुमान्मत ॥२४५ ॥
तिर्यग्गामी त्रि योगार्थे पुंसि शुक्रग्रहे स्मृत ।
तिलक पुण्ड्रके न स्त्री पुमा रोगा तरे तथा ॥ ४५३॥
क्षुरकद्रौ क्षुद्रतिले तिलकालकमज्ञके ।
पिप्लुभेदे कुरवके क्ली तु सौवचले तथा ॥ ४५४॥
त्रिशलोक्या क्लोम्नि जठरस्थिते द्वे तु हया तरे ।
तिलित्सो गोनस चैव तरक्षौ च द्वयोर्मत ॥२४५ ॥
ति य तु त्रिषु तैलीने तिलसाधुहितादिषु ।
तिष्यो वह्नो कलियुगे शिवे मरुति पुष्यभ ॥ ४५६॥
तद्युक्त कालसामान्ये तज्ञाते तु भवेत्त्रिषु ।
आमलक्याम्पुन स्त्रीत्वे तिष्येति परिकीर्त्तिता ॥२४५ ॥
तीक्ष्णो न स्त्री विषे तीक्ष्ण गरे कालायसे रण ।
मुष्के सामुद्रलवण तीक्ष्णस्तु स्या जवाग्रजे ॥ ४५८॥
तीक्ष्णार्जकाह्वयस्तम्भे हिंस्रा कुशतृण तरे ।
सूर्ये च स्त्री तु तीक्ष्णेति वचायाम्परिकीर्त्तिता ॥ ४५९॥
अथात्मत्यागिनि शिलोष्णपु तीक्ष्णोऽभिधेयवत् ।
तीर त्रपुणि कूले च तीर्यल्पेऽतिजवे शरे ॥ ४६ ॥
तीरितम्पारिते तीर नीते तीरीकृतेऽपि त्र ॥
सत्ये वा सत्कृते सभ्यैवा यवव् यवहारग ॥ ४६१॥
तीर्थमस्त्री पुण्यजले पुण्यक्षेत्रेऽध्वरे भगे ।
जलावगाहमार्गे च मन्त्राद्यष्टादशस्वपि ॥२४६ ॥
शास्त्रे निदाने योग्ये च स्त्रीपुष्पे दर्शनेष्वपि ।
उपाध्यायेऽप्युपाये च नद्यां गुरुकुलेऽपि च ॥२४६३॥
तीवर क्ली बले द्वे तु धीवरीब्राह्मणात्मजे ।
तीव्रा तु कटुरोहिण्या राजिकामण्डदूर्वयो ॥२४६४॥
क्लीवसत्त्वे निता ते तु तीव्रोऽत्युष्णे कटौ त्रिषु ।
तु पादपूरणे पक्षान्तरे भेदेऽवधारणे ॥२४६५॥

१ विदार्याम्

सम्मुच्चये नियोग च प्रशसाया विनिग्रहे ।
तुग्रो यवे वरिष्ठ तु त्रिरत्नाकाशयोस्तु नप ॥२४६६॥
तुङ्गो नग च पुन्नागे ना प्राशौ तु त्रिषु स्मृत ।
निशाऽजग धयोस्तुङ्गी तुङ्गा स्याद्वशरोचना ॥ ४६ ॥
तुङ्गीशस्तु पुमाश्च द्र शिन च परिकीर्त्तित ।
तुच्छन्तु त्रिषु शून्य स्यादसुख तु नपुसकम् ॥२४६८॥
तुञ्जस्तु दाने वज्र च बलादानादके च ना ।
तुञ्जा तु रक्षण स्त्री स्याद्धिसाया तु नरस्त्रियो ॥ ४६९॥
तुटिद्वयोर पकालभदे वाद्या तरे लवे ।
सूक्ष्मैलाया सशये च ना वेष तुटतौ मत ॥२४ ॥
तुण्डिकेरी कण्ठरुग्भिद्बिम्बीकार्पासिकासु च ।
तुण्डी नास्ये तथा शूननाभौ चैव स्त्रिया मता ॥२४ १॥
तुत्थ रसाञ्जने तुत्था नीली सूक्ष्मलयो स्त्रियाम् ।
तु नस्तु व्यथिते त्रि स्यान्नान्दीवृक्षे तु पुस्ययम् ॥२४ २॥
तुमुल सकुलरणे तुमुलो व्याकुले स्वरे ।
अथ त्रिलिङ्गस्तुमुलो विभीतकमहीरुहे ॥२४ ३॥
तुम्बा तु रथचक्रस्य नाभौ स्त्रीत्वे प्रकीर्त्तिता ।
तुम्ब्यला वाम्मता स्त्रीत्वे तत्फले तुम्बमिष्यते ॥२४७४॥
तुम्बुरी कथिता स्त्रीत्वे ध याके कुक्कुरस्त्रियाम् ।
तुम्बुरुस्ति दुकीवृक्षे तत्फले तु नपुसकम् ॥२४ ५॥
ग धर्वाऽधिपभेदे तु तुम्बुरु पुसि भाषित ।
तुरगी त्वश्वग धाया चित्ते ना द्वे तुरङ्गमे ॥ ४७६॥
तुरसत्र षोडशाहोपवासेऽपि प्रकीर्त्तितम् ।
तुरनाम्नो देवमुने सत्रेऽपि स्या नपुसकम् ॥२४ ॥
तुरि स्त्री तन्तुवायोपकरणान्तर इष्यते ॥
तुतोर्तिधातौ त्वेष स्याद्वारिधौ च तुरि पुमान् ॥२४७८॥
तुरुष्क सिल्हनिर्यासे राजभेदेऽस्य तु स्त्रियाम् ॥
तुरुष्काऽपत्यके देशे तुरुष्का स्युर्नृभूमनि ॥२४ ९॥

तुला तून्मानदण्डेऽपि सादृश्येऽपि स्त्रिया मता ।
स्तम्भपीठ पलशते तथा राशौ च सप्तमे ॥ ४ ॥
तुलाकोटिस्तुलाना द्वे कोटौ स्यान्नूपुरे तु ना ।
तुलाधारस्तुलाराशौ पुंसि वाणिजके त्रिषु ॥ ४८१॥
स्यात्तुलापुरुष पुंसि त्र्यहमक्कभोजनात् ।
पिण्याकाचामतक्राम्बुसक्तुना च व्रतान्तरे ॥ ४८ ॥
तुवरो ना कषायाख्यरसे त्रिषु तु तद्वति ।
तुवरी तु स्त्रिया धान्य आढकीसञ्ज्ञके तथा ॥२४८३॥
सुराष्ट्रिकाह्वये चापि भेषजे परिकीर्त्तिता ।
तुषो धान्यत्वचि स्वर्णादिखण्डेऽपि च तत्समे ॥२४८४॥
विभीतकतरौ च स्यात्तत्फले तु तुष नपि ।
तुषार शीकरे शैत्ये प्रालेये च हिमान्तरे ॥ ४८५॥
शैत्यधर्मवति त्वेष तुषारो वान्यवन्मत ।
तुष्टस्तु नान्दीवृक्षे ना तुष्टौ क्ली तद्वति त्रिषु ॥२४८६॥
तुस्त प्रदीपने चैव जटायामपि कीर्त्तित ।
तूक पर्वतजातौ स्यादुपस्थेऽपि तथा पुमान् ॥ ४८७॥
तूणी नील्यां स्त्रियामुक्ता निषङ्ग तूण एष ना ।
तूबरो प्रौढश्रृङ्गे स्याद्व्यश्मश्रौ च पूरुषे ॥२४८८॥
पुरुषव्यञ्जनत्यक्ते स्यात्कषायरसेऽपि च ।
तूय नपुसक तोये वाच्यवत्तु द्रुते मतम् ॥२४८९॥
तूरा गतिस्त्वराहिंसयोस्तूरो वाद्यनिस्वने ।
तूर्ण त्रिषु स्यात्त्वरिते हिंसिते क्ली तु हिंसने ॥२४९ ॥
तूर्योऽस्त्री वाद्यनिर्घोषे वाद्ये तूर्यं नपुसकम् ।
तूलोऽस्त्री स्यात्पिचौ क्ली तु ब्रह्मदारुविहायसो ॥२४९१॥
तूलपुष्पो बकद्रौ स्याद्यौगिके तु यथायथम् ।
तूलि शय्यान्तरे चित्रकूर्चिकायामपि स्त्रियाम् ॥२४९२॥
तूलिका कूर्चिकाया च शय्योपकरणेऽपि च ।
तूष वासोदशायां क्ली तूषा तुष्टौ द्वयोर्मता ॥२४९३॥

तृण स्यान्मल्लिकाभेदे सुरूपारयेऽथ न स्त्रियाम् ।
दूर्वायवेशुप्रमृतिक्षुद्रस्थावरजातिषु ॥२४९४॥
तृणगोधा चित्रकोले कृकलासेऽपि च स्त्रियाम् ।
तृणता तु स्त्रियामुक्ता तृणत्वे च शरासने ॥२४९५॥
तृणराजस्तु हि ताले तालेऽपि च प्रकीत्तित ॥
तृणशून्य म लिकाया तथा स्या केतकीफले ॥२४९६॥
तृतीया स्त्री तृतीयस्यां विभक्तौ च तथा तिथौ ।
गौर्याश्चाथ त्रयाणा तु तृतीय पूरण त्रिषु ॥२४९ ॥
तृप समुद्रे च द्रे च तृणभूमौ तथा पुमान् ।
तृप्त तु तृप्तौ षटषष्टिस्वरे छन्दोऽ तरे च नप ॥२४९८॥
प्रीते तु सुहिते चैव तृप्त स्यादभिधेयवत् ।
तृप्त पुमा पुरोडाश क्ली तृप्त पापदु खयो ॥२४९९॥
तृप्ति सुखे च तोय च सौहित्ये च स्त्रिया मता ।
तृफल शुष्कपर्णे च क्लीब शुष्कतृणऽपि च ॥२५ ॥
तृफला तु स्त्रियामेषा लतायाम्परिकीर्तिता ।
तृट स्त्री कान्ता कामपुत्र्या स्या लिप्सादन्ययोरपि ॥२५ १॥
तृषा तृष्णावदिच्छाया पिपासायामपि स्त्रियाम् ।
ते शब्द क्रीडने स्त्री स्या क्रीडके तु त्रिषु स्मृता ॥२५ २॥
तेजनो ना शरस्तम्बे वेणौ स्यात्स्त्री तु तजनी ।
तृणपूले च मूर्वाया योतिष्मत्या तथाऽसृजि ॥ ५ ३॥
आकणकषणाच्चापि यदर्धाप्यधिकाङ्गुलम् ।
आकषणमथाकृष्टधनुष्कैर्यदिषोर्भवेत् ॥२५ ४॥
स धान तेजना तत्र निशाने च तथास्त्रियाम् ।
तेजोबलाम्बुधर्माग्निरेतार्चि योतिरात्मसु ॥२५ ५॥
प्रभावे नवनीतेऽन्ने सत्त्वे ज्वलति पौरुष ।
तेमन यञ्जने क्लेदेऽपि क्लीब परिकीत्तितम् ॥२५ ६॥
तेर कतकवृक्ष स्यात्तर त फलवक्त्रयो ।
तेवन स्यात्केलिवने क्रीडायाश्च नपुसकम् ॥ ५ ७॥

तैतिलो गणके पुंसि तैतिल करणान्तरं ।
ज्योतिःशास्त्रप्रसिद्धं स्यात्तथान्नं तिलपिञ्जके ॥ ५०८॥
तैतिलास्तु कलिङ्गाख्ये नीवृद्भेदे नृभूमनि ।
तैलो न स्त्री तिलस्नेहे त्रि तु स्यात्तिलयोगिनि ॥२०९॥
तैलपर्णी सिह्लकेऽपि श्रीवेष्टे श्वेतचन्दने ।
तोकं पुत्रे च पुत्र्यां च नपुंसकमपत्यवत् ॥ ५१०॥
तोक्मं कर्णमले पुंसि हरिते च हरिद्यवे ।
तोग्मो हरिद्यवे पुंसि हरिद्वर्णेऽथ तद्वति ॥ ५११॥
त्रिषु क्लीबं तु तोग्मं स्यात्कर्णमूलाम्रयोरिदम् ।
तोडोऽपनयने पुंसि तोडं सशिखमुण्डने ॥ ५१२॥
तोत्रं नपुंसकं प्रोक्तं प्राजने वेणुकेऽपि च ।
तोदकस्तोत्तरि त्रि स्यात्पुमांस्तु सितसर्षपे ॥ ५१३॥
तोदनं व्यथने क्लीबं तोत्रेऽपि परिकीर्त्तितम् ।
तोयदो मुस्तके मेघे तोयदं घृतराज्ययोः ॥ ५१४॥
अथ तोयधरो मुस्ता सुनिषण्णौषधीघने ।
तोयप्रसादनं पुंसि कतके तत्फले तु नपु ॥ ५१५॥
तोरणं वस्त्रियां गेहबहिर्द्वारे नपि त्वदः ।
तरुप्रभेदेऽस्य फले चरायामपि तोरणम् ॥ ५१६॥
तोषणी स्त्री हरिद्रायां तुष्टौ क्ली तोषणं मतम् ।
तोषणं तोषणेत्येते अर्थे तोषयतेर्मते ॥ ५१७॥
त्यागः समुज्झने पुंसि दानेऽपि परिकीर्त्तितः ।
त्यागी दातरि शूरे च वाच्यवत्परिकीर्त्तितः ॥२५१८॥
त्रपा तु कुलटायां च लज्जायां च स्त्रियां मता ।
त्रपुर्वङ्गे च सीसे च नपुंसकमुदीरितम् ॥ ५१९॥
त्रयी त्रिवेद्यां स्त्र्यपुमांस्त्रिष्वद्दे त्रितये त्रिषु ।
त्रयोदशी पूरणे त्रिरथ कामतिथौ तथा ॥२५२०॥
स्त्री त्रयोदशतन्त्रीके वीणाभेदे त्रयोदशी ।
त्रासस्त्रिजङ्गमे स्त्री तु त्रसी दिग्भ्रमदे भये ॥२५२१॥

त्रसरो वर्णकौशेयसूत्रके स्या पुमानथ ।
शलाकामण्डने सूत्रवेष्टने त्रसरोऽस्त्रियाम् ॥२५२२॥
त्रसरेणु प्रभाख्याया सूर्यपत्न्या स्त्रिया मता ।
त्रसरेणुस्त्रि रजसि जालान्त सूर्यरश्मिगे ॥२५२३॥
त्राक शरणदे शौर्ये त्रिधर्मे तु पुमान्मत ।
त्राण तु त्रायमाणाया रक्षणे त्रि तु रक्षिते ॥२५२४॥
त्राता त्रि पातरि पुमांस्त्वथ स्यात्सितसर्षपे ।
त्रापुष रजते क्लीब विकारे त्रपुणस्त्रिषु ॥२५२५॥
त्रायमाणस्त्रिरक्षितृरक्ष्ययोर्वार्षिके स्त्रियाम् ।
त्रास पुमा मणेर्दोषे भयेऽपि परिकीर्त्तित ॥२५ ६॥
त्रिक त्रिनिवहे त्रि स्यात्पृष्ठत्रशधरे तु नप् ।
मुन्य तरेषुशालङ्कायनान्येषु नृभूमनि ॥२५२ ॥
त्रिका तु नेमा कूपस्य स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ।
त्रिककुत्पुंसि विष्णौ च त्रिकूटाख्ये च पर्वते ॥२५२८॥
त्रिकण्टका निपत्राया स्नुह्यामपि च गोक्षुरे ।
त्रिकूटो ना सुवेलाद्रौ क्ली सि धुलवणे स्मृतम् ॥ ५ ९॥
त्रिकेतुस्तु शुके ना त्रि केतुत्रयसमन्विते ।
भवेत्त्रिग धमेलात्वकपत्राणा क्ली समु चये ॥२५३ ॥
त्रिगर्त्तास्तु नृभूम्नि स्युर्देशे ना गणिता तरे ।
स्यात्त्रिगर्त्ता घुर्घुरिकाकामुकाङ्गनयोस्त्रियाम् ॥२५३१॥
त्रिदिवो योम्नि च स्वर्गे पुनपुसकयोर्मत ।
त्रिदिवा तु नदीभेद एलायां च स्त्रिया मता ॥२५३२॥
त्रिधामा वासुदेवे च पुल्लिङ्ग पावकेऽप्यथ ।
त्रिलिङ्गोऽय यौगिकार्थे त्रिधामा परिकीर्त्तित ॥ ५३३॥
त्रिपक्षी श्राद्धभेदे स्याद ते पक्षत्रयस्य य ।
पक्षत्रये च स्त्री त्रिस्तु बहुव्रीहौ प्रकीर्त्तिता ॥ ५३४॥
त्रिपदी गजपट्ट ध रज्जावपि पदत्रये ।
पदत्रयवति त्वेष त्रिपदो वाच्यवन्मत ॥२५३५॥

त्रिपुटा त्रिपुटी च स्त्री त्रिवृद्वल्ल्या प्रकीर्त्तिता ।
सूक्ष्मलाया मल्लिकाया ना तु तीरसतीनया ॥ ५३६॥
त्रिपुरी त्रिपुर चन क्ली स्त्रियो स्यात्पुरत्रये ।
त्रिपुरी मदमत्तारयधूधरे परिकीर्त्तिता ॥ ५३ ॥
आद ता त्रिपुरा स्त्रीत्ने पुरभेदे प्रकीर्त्तिता ।
त्रिमार्गा त्रिर्वन्त्रीहौ गङ्गाया स्त्री प्रकीर्त्तिता ॥ ५३ ॥
त्रिरेखस्तु पुमाञ्छङ्खे चिक्रोडाख्यौ पुनद्वयो ।
त्रिवर्गो धर्मकामार्थे त्रिफलाया कटुत्रिके ॥ ५३५॥
वृद्धिस्थानक्षये स वरजस्तमसि चेष्यते ।
त्रिवणक गोक्षुरके त्रिफलायां कटुत्रये ॥ ५८ ॥
त्रिग धेऽपि तथवेतन्नपुसकमुदीरितम् ।
त्रिवलीकमपाने क्ली वालत्रययुते त्रिपु ॥ ५४१॥
त्रिविक्रमोऽवतारा तरे हरेस्त्रि तु यौगिके ॥
त्रिवृत्स्त्री त्रिवृतासज्ञलताभेदेऽथ पुसि स । ५८ ॥
नवसख्यात्मके स्तोमे त्रि तु स्तोत्रे च तद्वति ।
तद्युक्तेऽप्यहरादौ स्याद्रज्ज्वादौ त्रिगुणऽपि च ॥ ५४३॥
त्रिवृता श्वेतवल्ल्यां स्त्री त्रिगुणे त्वभिधेयवत् ।
त्रिशङ्कुर्द्वे बिडालेऽपि शलभेऽपि प्रकीर्त्तित ॥ ५४४॥
राजान्तरे तु तार्क्ष्ये च त्रिशङ्कु पुसि कीर्त्तित ।
त्रिशिख तु त्रिशूलेऽपि स्याच्छिरोभूषणान्तरे ॥ ५४५॥
त्रिशिखस्तु पुमानेष कीर्त्तितो राक्षसा तरे ।
त्रिशिरास्तु कुबेरे च पुमान्स्याद्राक्षसान्तरे ॥२५४६॥
त्रिष्टुभा सर्षपे गौरे त्रिष्टुभ सितसर्षपे ।
त्रिसुग ध तु जानीयादेलात्वकपत्रसयुते ॥२५४ ॥
त्रिस्रोतास्तु नदीभेदे गङ्गाया च स्त्रिया मता ।
त्रुटि स्त्री लेशसूक्ष्मैलाधमात्राकालसशये ॥२५४८॥
त्रेताऽग्नित्रितये चैव द्वितीये च युगे स्त्रियाम् ।
त्रैष्टुभ तु नपि योम्नि त्रिष्टुप्छन्दसि च त्रिषु ॥२५४९॥

त्रिष्टुप्सम्बन्धिनि स्याच्च प्रगाथ त्रिष्टुबादिके ।
त्रोटि स्त्री कटफले चञ्च्वा खगे मीनान्तरेऽपि च ॥ ५५ ॥
यङ्कट शिक्यभदेऽपि धौताङ्ग थाञ्च न द्वयो ॥
यङ्कट शिक्यभेदेऽपि विधौ जया च कीर्त्तित ॥२५५१॥
त्र्यश्रा स्त्रिया त्रिवृत्सञ्ज्ञवल्ल्या यश्रौ पुनस्त्रिषु ।
त्वश्च दोऽर्थे पुमांस्त्रिस्तु युष्मदेकार्थयोर्मत ॥२५५२॥
त्वक स्त्री चर्मणि वल्केऽपि चान्ता स्याच्च गुडत्वचि ।
त्वकपत्र क्ली वराङ्गे स्त्री त्वकपत्री वाष्पिकोषधौ ॥२५५३॥
त्वकसार पुसि वेणौ च स्यात्तालादितृणद्रुषु ।
क्ली तु तत्प्रसवे स्त्री तु त्वकसारा वल्लिषु स्मृता ॥ ५५४॥
त्वचा द्व वल्कले क्ली सूत्कटारये गन्धवस्तुनि ।
त्वरितन्तु त्वराया क्ली स्याच्छीघ्र त्वभिधेयवत् ॥ ५५५॥
त्वष्टा प्रजापतौ वह्नौ देवतक्षणि तक्षणि ।
विष्ण्वग्रजे माध्यमिकदेवे दिनकरे च ना ॥ ५५६॥
त्वष्टा तु वक्षितर्येष भेद्यवत्परिकीर्त्तित ।
त्वाष्ट्री तु सूर्यपत्नी भेदे त्वष्टु पुनस्त्रिषु ॥२५५७॥
सम्बन्धिमात्रे यस्यापि त्वष्टा स्याद्देवतात्र च ।
अपत्ये तु द्वयोस्त्वष्टुस्त्वाष्ट्रस्तु क्षपके पुमान् ॥ ५५८॥
अरत्नीना च यूपस्य स्यादरत्नौ चतुर्दशे ।
त्विड बालादीप्तिशोभासु वाचि चैव स्त्रिया मता ॥ ५५९॥

थ

थ रक्षण मङ्गले च साध्वसे च नपुसकम् ।
शिलोच्चये तु थ पुसि क्वचिच्च भयरक्षके ॥ ५६ ॥

द

दशो द्वयोर्मक्षिकाया वन्यायामल्पके पुन ।
तज्जातिभेदे दशी स्त्री वर्मदशनयोस्तु ना ॥२५६१॥

दशित जातदशे च त्रिषु स्यात्करचान्विते ।
दर्भी ग्राहवाराहाखुयाग्राहिषु मता द्वयो ॥ ५६ ॥
द पुमानचले दन्ते स्त्रिया शोधनदानयो ।
छदोपतापरक्षासु पुमान्दो दातरि स्मृत ॥ ५ ३॥
दक्ष प्रजापतिभिदि मुनभदे बले च ना ।
प्राचतमे हरवृष कुक्कुटे तु द्वयोर्मत ॥ ५६४॥
अथ त्रिश्चारुणिपटौ दक्षा तर्वीद्रुभेदयो ।
दक्षकन्या तु पार्वत्यान्तथव दिशि कीर्त्तिता ॥ ५६५॥
दक्षाग्योऽगना च तार्क्ष्ये ना द्वयोगृध्र प्रकीर्त्तित ।
दक्षिणो दक्षिणोद्भूते परच्छन्दानुवर्त्तिनि ॥ ५६६॥
विदग्धे कुशले चैव वामस्य प्रतियोगिनि ।
उदारे सरले च त्रिर्याम्याशायान्तु दक्षिणा ॥ ५ ७॥
स्त्रिया दानेऽपि यज्ञादिविधिदत्ते प्रकीर्त्तिता ।
स्त्रियामृत्विग्भृतौ चापि प्रतिष्ठाया तथा स्त्रियाम् ॥ ५६८॥
दक्षिणस्थ सारथौ ना योगार्थे तु त्रिषु स्मृत ।
दक्षिणाशारतोऽगस्त्यमुनौ पुसि त्रियौगिके ॥ ५६९॥
दग्ध प्लुष्टे न्यलिङ्ग स्यात्स्थिताकदिशि तु स्त्रियाम् ।
दण्डस्तु निग्रहे राजशासने लगुडे नृपे ॥ ५७ ॥
सैन्यमन्थानहिंसाज्ञावृक्षशाखासु चास्त्रियाम् ।
कालमानव्यूहभेदेऽभिमाने कोण एव च ॥ ५७१॥
यमे तु ना प्रकाण्डेऽश्वे चण्डांशो पारिपार्श्विके ।
दण्डकोऽस्त्री समासाढ्यवाक्ये छन्द सु चोत्कृते ॥ ५७ ॥
अधिकेष्वथ पुभूम्नि महाराष्ट्रेषु दण्डका ।
दण्डको दण्डयितरि वान्यवत्परिकीर्त्तित ॥२५७३॥
दण्डयामस्तु कीनाशे दिवसे कुम्भसम्भवे ।
दण्डारो वहने मत्तवारणे शरयन्त्रके ॥२५७४॥
कुम्भकारस्य चक्र च पुँल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।
दण्डाहत कालशेये दण्डेन त्वाहते त्रिषु ॥२५ ५॥

---

१ कोणे भिमाने काले च व्यूहभिन्मानभेदयो

दण्डिकस्त्र्यशशल्ये ना नाराचे दण्डिनि त्रिषु ।
दण्डिका दण्डरूपे च वादित्रेऽपकलस्वने ॥ ५ ६॥
दण्डी ना द्वा स्थयमयोर्द्धे शुके त्रि सदण्डके ।
दत्तोऽर्चितेऽर्पिते च त्रिद त्त तु नपि हेमनि ॥२५७ ॥
स्याद्द्रुनाशिनी हस्तिवातिङ्गन इति श्रुते ।
वातिङ्गना तरे यागार्थे तु लिङ्ग यथायथम ॥ ५ ८॥
दधि क्षीरविकारे क्ली विप्रप्रियमिति श्रुते ।
दधिस्तु पुसि श्रीवाससजेयो परिकीर्त्तित ॥२५ ९॥
दधिपाय्यस्तु पुसि स्यात्पृषत्यपि च सर्पिषि ।
पुमान्दधिमुख कप्य तरेऽपि च कपिमात्रके ॥२५८ ॥
स्त्रिया दधिमुखीकालरा यामेषा प्रकीर्त्तिता ।
द तो रदेऽद्रिकटक ना कुश्वकरिदष्ट्रयो ॥२५८१॥
स्त्रियां तु द ती कथिता नागदन्त्यारयभषजे ।
स्याद् तधावन पुसि करञ्ज खदिरद्रुमे ॥२५८२॥
अरिभेदऽथ न द तकाष्ठे द तस्य शोधने ।
पुसि द तशठो भव्ये जम्बीरे च कपि थके ॥२५८३॥
अम्ले चव रसेऽथाऽम्लरसोपेते त्रिषु स्मृत ।
स्त्रिया द तशठा चिश्चाचाङ्गेर्यो परिकीर्त्तिता ॥२५८४॥
द तिको गृहभित्तिस्थे नागद तेऽथ दन्तिका ।
स्त्रिया निकुम्भसञ्ज्ञे स्यादौषधे दन्तिनि त्रिषु ॥२५८५॥
दन्तुरस्तून्नतरद त्रिषु स्यादु नतानने ।
द दशूको द्वयो सपरक्षसोर्दशके त्रिषु ॥२५८६॥
दभ्र त्र्य पशिशुह्रस्वकुशले नाऽ धिच द्रया ।
दमो दण्डे गृहे पङ्के पुमाश्चे द्रियनिग्रहे ॥२५८ ॥
दमथस्तु पुमान्दण्डे दमे च परिकीर्त्तित ।
दमन कुसुमस्तम्बा तरे धीरे तु स त्रिषु ॥२५८८॥
दमयद्दमयित्रर्थे वाच्यवत्परिकीर्त्तितम् ।
दमय ती ब्रह्मचारिदण्डे भैम्यामपि स्त्रियाम् ॥२५८९॥

दस्रुनास्तु रवौ वह्नौ पुंसि सान्त प्रकीर्त्तित ।
दर शङ्खे भये श्वभ्रे छिद्रमात्रेऽपि न स्त्रियाम् ॥ ५९ ॥
दरी तु कन्दरे स्त्री स्यान्मनागर्थे दराऽव्ययम् ।
दरण क्ली द्विधाभावे शुके तु दरणो द्वयो ॥ ५९१॥
दरत्प्रपातमीविष्ठाहृत्सरिद्गिरिषु स्त्रियाम् ।
तथा तट हिमवतो राजभेदे तु पुंस्ययम् ॥ ५९ ॥
तस्यैव पुमपत्येषु भूम्नि देशस्य भूपते ।
दरथो विवरे भीत्या दिक्षु चापि प्रसारण ॥ ५९३॥
दर्दरस्तु पुमाञ्छैलप्रभदे कलशीमुख ।
इति प्रसिद्धवाद्ये च त्रि वीषद्भग्नवस्तुनि ॥२५९४॥
दर्दरीकोऽनिले चन्द्र वाद्यभेदे च दाडिमे ।
दर्दुरस्तु द्वयोर्भेके पुमांस्तु गजपार्श्वयो ॥ ५९५॥
वारिदे चाऽद्रिभेदे च वाद्यभाण्डान्तरेऽप्यथ ।
दर्दुरा चण्डिकायां स्त्री ग्रामजाले तु दर्दुरम् ॥ ५९६॥
दर्पस्तु पुंसि कस्तूर्यामहङ्कारेऽपि चेष्यते ।
दर्पको ना स्मरे दृप्तदर्पयित्रोस्तु वाच्यवत् ॥ ५९ ॥
पुमान्दर्पण आदर्शे दृप्तौ दर्पणमद्वयो ।
दर्पणन्दर्पणा चेति कृतौ दर्पयतेर्द्वयम् ॥ ५९८॥
दर्वो द्वये राक्षसेऽथ देशभेदे नृभूमनि ।
दर्वरस्तु पुमान्वज्र सेनायां दर्वरी स्त्रियाम् ॥ ५९९॥
दर्वि खजाकायां सर्पफणे स्त्री प्रतिकीलके ।
दर्वीवदिष्यते ना तु दर्विश्चक्रसमुद्रयो ॥२६ ॥
दर्वीकरो द्वयो सर्पे सर्पजात्यन्तरेऽपि च ।
दर्शो दृष्टावमायां च परपक्षान्तकर्मणि ॥ ६ १॥
दर्शको दर्शयितरि प्रवीणे द्रष्टरि त्रिषु ।
प्रतीहाराऽपरार्थे तु द्वा स्थे स्याद्दर्शक पुमान् ॥ ६ २॥
दर्शन स्वप्नवीक्षासु नेत्रे शास्त्रे मते धियि ।
ज्ञाने च दर्पणे धर्मे क्रियायां पश्यतेरपि ॥ ६ ३॥

दशनी तूपरथ्यायां स्त्री पुरादेगदस्य च।
यन्त्रभदे दशनार्थे दर्शना त्वपि दशनम् ॥२६ ४॥
स्यातां दशयतेरर्थे स्त्रीनपुंसकयोरिमे।
दलमस्त्री भवेद्भागेऽथापद्र्ये तरुच्छदे ॥२६ ५॥
शस्त्रीच्छदे तथोत्सेधे दल क्लीबमुदाहृतम्।
दलवो ना प्रहरण विदले च दलान्तरे ॥ ६ ६॥
दलाढक स्वयञ्जाततिले पृश्याश्च गैरिके।
फेनखातकयोर्नागकेसरे च महत्तरे ॥२६ ॥
दलामल मरुवके दमनेऽपि नपुंसकम्।
दल्भो गात्रर्षिभेदे ना दल्भ व के नपुंसकम् ॥२६ ८॥
दवो वने स्मृतोऽग्ना च वनवह्न्युपतापयो।
दशन शिखरे दन्ते क्ली तु दष्टौ च वर्मणि ॥२६ ९॥
दशन कवच दश नपुंसकमुदीरितम्।
दशनोच्छिष्ट उच्छ्वासे चुम्बने दशनच्छद ॥२६१ ॥
क्लीब दशपुरन्देशभेदेऽपि स्यात्त्वेऽपि च।
दशमी स्त्री यमतिथौ त्रिदशाना च पूरण ॥२६११॥
दशमीस्थस्त्रिवृद्धेऽपि नष्टबीजे व्रताशने।
दशा कर्मविपाके स्त्री दशमाशे तथाऽऽयुष ॥ ६१२॥
दीपवर्त्तौ परावस्थावस्थामात्रकयोरपि।
दशास्तु वसनस्यान्ते द्वयोर्भूमनि कीर्त्तिता ॥२६१३॥
दशेर कुक्कुरे सर्पे द्वयोरथ नृभूमनि।
मरुसञ्ज्ञे जनपदे दशेरा परिकीर्त्तिता ॥२६१४॥
दस्मोऽग्निवज्रयो पुंसि दस्युयज्ञकृतोस्त्रिषु।
दस्यु पुंसि रिपौ त्रिस्तु चौरे द्वे तु गजान्तरे ॥२६१५॥
मर्यजातिचतुष्षष्टेरेकस्मिन्गन्धशूक्तिके।
दहनश्चित्रकाऽग्न्युष्णगुणभल्लातकेषु ना ॥२६१६॥
क्ली दाहे त्रि तु सोष्णे च तथा स्याद्दुष्टचेष्टिते।
दहरस्तु द्वयोरल्पमूषिके बालके त्रिषु ॥२६१७॥

---

१ दल्भं नपुंसक वल्के दल्भो गोत्रर्षिभिद्यम्।

दमुनास्तु रवौ वह्नौ पुंसि सान्त प्रकीर्त्तित ।
दर शङ्क भये श्वभ्रे छिद्रमात्रेऽपि न स्त्रियाम् ॥ ५९ ॥
दरी तु कन्दरे स्त्री स्यान्मनागर्थे दराऽव्ययम् ।
दरण क्ली दृढ्धाभावे शुके तु दरणो द्वयो ॥ ५९१॥
दरत्प्रपातभीविष्ठाद्द सरिद्गिरिषु स्त्रियाम् ।
तथा तट हिमवतो राजभेदे तु पुस्ययम् ॥ ५९ ॥
तस्यैव पुमपत्येषु भूम्नि देशस्य भूपते ।
दरथो विवरे भीत्या दिक्षु चापि प्रसारण ॥ ५९३॥
ददरस्तु पुमाञ्छलप्रभदे कलशीमुख ।
इति प्रसिद्धवाद्ये च त्रि त्वीषद्भग्नवस्तुनि ॥ ५९४॥
ददरीकोऽनिले चन्द्रे वाद्यभेदे च दाडिमे ।
ददुरस्तु द्वयोर्भेके पुमास्तु गजपार्श्वयो ॥ ५९५॥
वारिदे चाऽद्रिभेदे च वाद्यभाण्डा तरेऽप्यथ ।
ददुरा चण्डिकायां स्त्री ग्रामजाले तु दर्दुरम् ॥ ५९६॥
दर्पस्तु पुंसि कस्तूर्यामहङ्कारेऽपि चेष्यते ।
दपको ना स्मरे द्दसदर्पयित्रोस्तु वाच्यवत् ॥२५९ ॥
पुमान्दपण आदर्शे द्दसौ दर्पणमद्वयो ।
दर्पणान्दर्पणा चेति क्तौ दपयतेर्द्वयम् ॥ ५९८॥
दर्वो द्वये राक्षसेऽथ देशभेदे नृभूमनि ।
दर्वरस्तु पुमान्वज्र सेनायां दर्वरी स्त्रियाम् ॥ ५९९॥
दर्वि खजाकायां सर्पफणे स्त्री प्रतिकीलके ।
दर्वीवदिष्यते ना तु दर्विश्चक्रसमुद्रयो ॥२६ ॥
दर्वीकरो द्वयो सर्पे सर्पजात्यन्तरेऽपि च ।
दर्शो द्दष्टावमायां च परपक्षान्तकर्मणि ॥ ६ १॥
दर्शको दर्शयितरि प्रवीणे द्रष्टरि त्रिषु ।
प्रतीहाराऽपराख्ये तु द्वा स्थे स्याद्दर्शक पुमान् ॥ ६ ॥
दर्शन स्वप्नवीक्षासु नेत्रे शास्त्रे मते धियि ।
ज्ञाने च दर्पणे धर्मे क्रियायां पश्यतेरपि ॥ ६ ३॥

दशनी तूपरथ्यायां स्त्री पुरादेगदस्य च ।
यन्त्रभेदे दशनार्थे दशना त्वपि दशनम् ॥२६ ४॥
स्याता दर्शयतेऽर्थे स्त्रीनपुसकयोरिमे ।
दलमस्त्री भवेद्भागेऽथापद्र ये तरु च्छदे ॥२६ ५॥
शस्त्रीच्छेदे तथोत्सेधे दल क्लीबमुदाहृतम् ।
दलवो ना प्रहरणे विदले च दला तरे ॥ ६ ६॥
दलाढक स्वयञ्जाततिले पृश्न्याश्च गैरिक ।
फेनखातकयोर्नागकेसरे च महत्तरे ॥२६ ॥
दलामल मरुवके दमनेऽपि नपुसकम् ।
द भो गोत्रर्षिभेदे ना द भ व के नपुसकम् ॥२६ ८॥
दवो वने स्मृतोऽग्नौ च वनवह्न्युपतापयो ।
दशन शिखरे द ते क्ली तु दष्टौ च वर्मणि ॥२६ ९॥
दशन कवचे दशे नपुसकमुदीरितम् ।
दशनोच्छिष्ट उ च्छ्वासे चुम्बने दशनच्छद ॥ ६१ ॥
क्लीब दशपुर देशभेदेऽपि स्यात्त्वचेऽपि च ।
दशमी स्त्री यमतिथौ त्रिर्दशाना च पूरणे ॥२६११॥
दशमीस्थस्त्रिवृद्धेऽपि नष्टबीजे व्रताशने ।
दशा कर्मविपाके स्त्री दशमाशे तथाऽऽयुष ॥ ६१ ॥
दीपवर्त्तौ परावस्थावस्थामात्रकयोरपि ।
दशास्तु वसनस्यान्ते द्वयोर्भूमनि कीर्त्तिता ॥२६१३॥
दशेर कुक्कुरे सर्पे द्वयोरथ नृभूमनि ।
मरुसज्ञे जनपदे दशेरा परिकीर्त्तिता ॥२६१४॥
दस्मोऽग्निवज्रयो पुसि दस्युयज्ञकृतोस्त्रिषु ।
दस्यु पुसि रिपौ त्रिस्तु चौरे द्वे तु गजा तरे ॥ ६१५॥
म र्यजातिचतुष्षष्टेरेकास्मिन्गाह्यवृत्तिके ।
दहनश्चित्रकाऽग्न्युष्णागुणभ लातकेषु ना ॥२६१६॥
क्ली दाहे त्रि तु सोष्णे च तथा स्याद्दुष्टचेष्टिते ।
दहरस्तु द्वयोरल्पमूषिके बालके त्रिषु ॥२६१७॥

---

१ दम्भ नपुंसकं वल्के द भो गोत्रर्षिभिद्यमम् ।

अल्येऽथ भ्रातरि पुमा हृदये तु नपुसकम् ।
दाकस्तु दातरि त्रि स्याद्यजमाने द्वयोमत ॥ ६१८॥
दाक्षस्त्रिदक्षसम्बन्धि यथ दाक्षी स्त्रिया गवि ।
कपिलाया जन याश्च कीर्त्तिता पाणिनेर्मुने ॥ ६१९॥
दाक्षायणी स्त्री पावत्यामश्वि याद्युडुपु क्षितौ ।
अदितौ द्व तु दक्षस्यापत्ये क्लीब तु हेमनि ॥ ६ ॥
दाक्षिणा यो नारिकेल त्रिषु दक्षिणदिग्भवे ।
दाडिम प्रसव क्लीब त्रिष्वेलामुचुलिन्दयो ॥ ६ १॥
दाडिम्येलाकरकयोस्त्रिपु तत्प्रसवे तु नप् ।
दात्यूहो द्वे कालकण्ठखगचातकपक्षिणो ॥ ६ ॥
दात्व आयुक्तके त्रि स्याद्दाने यज्ञे च पुस्ययम् ।
दान हस्तिमदे त्यागे खण्डने लवने क्षये ॥ ६ ३॥
शोधने रक्षण चापि क्लीबलिङ्ग प्रकीर्त्तितम् ।
दानव क्ली दमनके दनुजे दानवो द्वयो ॥ ६२४॥
दानुर्दातरि विक्रा ते त्रिषु द्वे यष्टरि स्मृत ।
समीरणार्कयोर्दानु पु लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥२६२५॥
दा तस्त्रिदमिते दा तियुक्ते दन्तविकारके ।
स्त्र्यर्थे तु पूर्वयोर्दन्तिवा ययोर तिमे पुन ॥ ६ ६॥
स्त्र्यर्थे दा त्यथ दान्त क्ली दा तौ दमनकेऽपि च ।
दायस्तु दातरि त्रि स्यात्पुंसि सोल्लुण्ठभाषिते ॥ ६ ७॥
रक्षणादौ विभक्त यपित्रादिद्रविणेऽपि च ।
यौतकादिधने दाने लवने शोधनेऽपि च ॥ ६ ॥
दायादो दायभाजि त्रि सपिण्डसुतयोर्द्वयो ।
दारको द्वे सुते बाले तरुणे त्रि तु भेत्तरि ॥ ६ ९॥
दारदो ना देशभेदे पारदे हिङ्गुलेऽप्यथ ।
दारदो निषभेदेऽथ पुनपुसकयोर्मत ॥२६३ ॥
दार्वस्त्री पित्तले काष्ठे क्ली पुनर्देवदारुणि ।
दारुको दैत्यभेदे च पुमान्स्यात्कृष्णसारथौ ॥२६३१॥

---

१ दानुर्दैयजमानेत्रिद्सियैर्केमिलेः च ना ।

अस्त्री तु दारुक इति क्रुदावर्थे प्रयु्यते ।
दारुणे रसभदे ना क्ली याधौ भीषणे त्रिषु ॥२६३२॥
द्राक्षाया स्त्री दारुफला योगार्थे वभिधेयवत् ।
दार्वी दारुहरिद्राया स्त्रीलिङ्ग परिकीर्त्तिता ॥ ६३३॥
दावो दवाग्नावग्नौ च दाव तु क्ली वने मतम् ।
दाशो दाशा द्वयोदाने दाशी कवर्त्तभृत्ययो ॥२६३४॥
द्वयोरथ दशायोगि युक्तो दाशोऽभिधेयवत् ।
दासो ज्ञानात्मनि त्रि द्वे भृत्ये शूद्रे च धीवरे ॥ ६३५॥
दासी तु स्त्री नीलाझण्टीषडस्त्रावीरुधोरियम् ।
दासेरो दासिकापुत्र द्वयो पुसि क्रमेलके ॥२६३६॥
दासेरकस्तु करभ दासीपुत्रे च धीवरे ।
दिक्करीषत्प्रौढयोषि यथ योग यथायथम् ॥ ६३ ॥
[1]दिगम्बर क्ली ध्वा ते त्रि नग्ने ना क्षपण शिवे ।
दिग्ध पुसि विषाक्तेषौ त्रिषु लिप्तप्रवृद्धयो ॥२६३८॥
नपुसक तु दिग्ध स्या स्नेहेऽप्युपचये तथा ।
दितिदेत्यजन याञ्च खण्डनेऽपि स्त्रियाम्मता ॥ ६३९॥
दिधिषू परिविन्नाग्रज्ज्येष्ठा चेद्भगिनी स्त्रियाम् ।
कनिष्ठप याम्पुनर्म्वा ना वस्या दिधिषुर्भवे ॥ ६४ ॥
दिधिषूपतिरासक्ते पत्याम्भ्रातुमृतस्य च ।
पुनर्म्वाश्च तथा पत्यौ पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥ ६४१॥
द्यौर्ना सूर्ये स्त्रिया तु स्वर्वियतोर्द्योर्दिव तु नप् ।
दिवाकीर्त्तिर्द्वयोरुक्तश्चण्डाले नापितेऽपि च ॥२६४२॥
दिवाचरस्तु ना शुक्रे त्रिलिङ्गो दिनचारिणि ।
दिवाभीत उलूके द्वे पुमास्तु कुमुदाकरे ॥२६४३॥
त्रिषु चोरे यवहितेऽपि दिवाभीत इष्यते ।
दिवोकाश्च दिवौकाश्च न क्ली देवे च चातके ॥२६४४॥
दिव्य लवङ्गे लशुने व्योम्नि तन्त्रीस्वरेऽपि च ।
प्रत्ययेऽथ स्त्रिया धा या वल्गुधुमवयोस्त्रिषु ॥२६४५॥

---

१ दिगम्बर स्यात्क्षपणे ना ने समसि शङ्करे ।

दि॑ग्लको द्वयोर्भेदे वेकरञ्जारयभोगिन ।
त्रयोदशा भदाना राजिलस्य च कुत्राचित् ॥२६४६॥
दिष्ट काले कृतान्तऽथ दने सनदने च नप ।
दानभूषणयो स्नाने तथा स्यान्मृत्तिकाम्भसा ॥२६४ ॥
दिष्ट तु भाषिते दत्ते त्रिलिङ्ग परिकीर्त्तितम् ।
दिष्टिनाऽष्टाङ्गुले माने स्त्री दानोक्तसुखपु च ॥ ६४८॥
दिष्ट्याऽव्ययम्मङ्गले च हर्षे च परिकीर्त्तितम् ।
दीक्षा स्त्रिया व्रतादेश माण्ड्ये चापनयऽपि च ॥ ६४९॥
नियमे थजने चैव पूजायाञ्च प्रकीर्त्तिता ।
दीदिविस्त्वोदने न क्ली ना स्वर्गेऽग्नो बृहस्पतौ ॥ ६५ ॥
दीधितिस्तु स्त्रिया रश्मावङ्गुलावपि कीर्त्तता ।
दीन पुन्नागकेतक्यो पुमान्दीना तु मूपिका ॥ ६५१॥
दरिद्रकृपणक्षीणष्वयन्दीनस्त्रिपु स्मृत ।
दीपको जीरके दीपे यवान्याञ्चा च पाक्षणि ॥ ६५ ॥
पक्षिणो येन गृह्यन्तेऽथ क्ली वाचामलङ्कृतौ ।
अथ दीपयितर्येष दीपितर्यपि वाच्यवत् ॥ ६५३॥
दीपनी त्रिषु दीप्ते स्यात्साधने क्ली तु दीपनम् ।
दीप्तौ दीपयतेस्त्वर्थे दीपन दीपना न ना ॥२६५४॥
दीपन स्यात्पुसि महाकदम्बारये द्रुमान्तरे ।
दीप्ता विद्युति दीप्त त्रिर्दग्ध ज्वलितभासिते ॥ ६५५॥
दीप्यो जीरे यवान्याञ्चा दीपनीयं तु स त्रिषु ।
दीप्यकस्त्वजमोदाया यवानीबर्हिचूडयो ॥२६५६॥
दीर्घं त्रिष्वायते मात्राद्वयो चार्यस्वरेऽपि च ।
नपुसक तु सीम्नो स्यात्ससु वेवर्गगीतयो ॥२६५ ॥
दीर्घनाद शुनि द्वे स्याद्योगार्थे तु त्रिषु स्मृत ।
दीर्घनिद्रा मृतौ स्त्री स्याद्योगार्थे तु यथायथम् ॥२६५८॥
दीर्घपत्री स्त्रियामेषा कदल्याम्परिकीर्त्तिता ।
दीर्घपत्र पलाण्डौ स्याद्दशाना भेद एकके ॥२६५९॥

१ दीनस्तु पुंसि पुंनाम्नि केतक्याञ्च त्रिषु त्वयम् ।

दीर्घपादो द्वयो कङ्क यागार्थे तु त्रिषु स्मृत ।
दीर्घरोमा तु भ ल्लूके द्वे यागे तु त्रिषु स्मृत ॥ ६६ ॥
दीर्घाध्वगो द्वयोरुष्ट्र लेरयहारे तु वाच्यवत् ।
दीर्घायु शाल्मलीकक्षे पुमाञ्जीवकपादपे ॥२६६१॥
मार्कण्डेये च काके तु द्वे त्रि स्याच्चिरजीविनि ।
दीर्णो भि न्ने च भीते त्रिर्दीर्णा तु स्याद्दिशि स्त्रियाम् ॥२६६२॥
दुकूल सूक्ष्मवसने क्षौमे धवलवाससि ।
दु ख न्यथाया क्लीब स्यात्त्रिलिङ्ग न्वस्य साधने ॥२६६३॥
दुग्ध नपुसक क्षीरे कृतदोहे तु स त्रिषु ।
क्षीरादौ च गवादौ च दुग्धी तु क्षीरकौषधौ ॥२६६४॥
दुग्धतालीय तु दुग्धफेने दुग्धाग्रकेऽपि च ।
दुग्धाशी तु शुके द्वे स्यात्क्षीराशिनि तु भेद्यवत् ॥ ६६५॥
दुच्छको ग धकुट्या स्याद्दिहाराद्यवकाशके ।
दु दुभिर्दै यभेदे च भेर्याञ्च वरुणे पुमान् ॥ ६६६॥
स्त्री तु द्यूतशलाकाया द्व तु कीटा तरे भवेत ।
दुरव्ययम्निषधे च कष्टे च परिकीत्तितम ॥२६६ ॥
दुराश कृकलासे द्वे दुष्टाश न्वभिधेयवत् ।
दुरासद पुमानग्नौ दष्प्रापे तु मतस्त्रिषु ॥२६६८॥
दरित दुगता पापे दुगते तु त्रिषु स्मृतम् ।
दुरोदरो स्त्रीपण क्ली द्यूते द्यूतकरे पुमान् ॥२६६९॥
दुर्ग वनेऽपि नरके दुर्गोऽस्त्री दुर्गम पुरे ।
राष्ट्र तु पुसि दुग स्त्री दुर्गोमाया त्रि दुर्गम ॥ ६७ ॥
दुगति स्त्री दरिद्रत्वे नरके तु द्वयोमता ।
दुर्ग धो ना कुग धे दुग ध सौवर्चले नपि ॥२६७१॥
दुर्गमो भूधरे पुसि दुष्प्रवेशे वय त्रिषु ।
दुर्जात यसने क्लीबमसुजाते तु भेद्यवत् ॥ ६ २॥
दुर्दर्शा ववविवाह्याया कन्यायां कु जतावशात् ।
वाच्यव वेष दुष्प्रेक्षे दुर्दर्श परिकीर्त्तित ॥२६ ३॥

[दुधरस्त्वृषभा]ख्ये ना भषज निरयान्तरे ।
[पारदे राक्षसभिदि दु खधार्ये त्रि] दुधरम् ॥ ६ ४॥
दुर्लभो ना यवासे [त्रिदुष्प्रापातिप्रशस्तयो] ।
दुवर्णं रजते चैलावालुकाख्ये न भषज ॥ ६ ५॥
दुष्टवर्णे तु नृनपावन्त्रीहा पुनस्त्रिपु ।
दुर्वारस्तु यमे पुमि दूरोधे त्वभिधेयवत् ॥ ६ ६॥
दुर्विधो वाच्यलिङ्ग स्यान्नीच दुर्गत एव च ।
दुलि स्त्रिया कमठ्या स्यादथ सु य तर पुमान् ॥ ६ ॥
दुष्कृत कुकृते त्रि स्या पाप तु क्लीबमिष्यत ।
दुरस्थस्त्रिदुगते मूर्खे तथा द खन तिष्ठति ॥ ६७८॥
दुस्स्पर्शो ना यवासे स्याद्दु खस्पर्शे भवे त्रिपु ।
दुस्स्पर्शा कण्टकार्याञ्चात्मगुप्तायामपि स्त्रियाम् ॥ ६७९॥
दूत शुक्रे पुमा द्व तु मत सन्देशहारके ।
सञ्चारिकाया तु स्त्रीत्वमात्रे दूती प्रकीर्त्तिता ॥ ६ ॥
दूत्य दूतस्य भागे च भावे कर्मण्यपि स्मृतम् ।
दूरदर्शी द्वयोर्गृध्रे त्रिदूरेऽक्षिमनीषिणो ॥ ६८१॥
दूषिका स्त्री क्रोधवशकन्याया यागिके त्रिपु ।
दूषिक दूषिका चाऽक्षिमले क्लीबे स्त्रियामपि ॥ ६८ ॥
दूषिका तु स्त्रिया वीणा तरल्लतालतासु च ।
दूष्य पूये स्थले वस्त्रे दूषणीये तु तत्त्रिषु ॥ ६८३॥
न्भू स्त्री स्यात्तरौ सर्पे बिले च द्रोहके कृते ।
[दृढ]त्वयस्युशीरे च श्लेष्मणि वस्त्रिया दृढ ॥ ६८४॥
तथा दृढा त्वामलक्या तालमूल्या दृढा स्त्रियाम् ।
[वा यवत्त्रि दृढ] स्थूले बलवत्यधिके भृशे ॥ ६८५॥
स्त्रियां दृढदला ताली पादपे बल्वजेषु च ।
दृतिर्भस्त्रा चर्मखण्डजिह्वामेघर्षिभिवृक्षषे ॥ ६८६॥
दृतिर्ना [चर्म्मपुटके मेघेऽथ गलकम्बले] ।
दृम्भू स्त्रियां भुजङ्गे च चक्रे च परिकीर्त्तिता ॥२६८ ॥

दृक स्त्री ज्ञानाक्षिधीदृष्टिष्वथ त्रिर्ज्ञातृवीक्षिणो ।
दृशा नो ना रवौ क्ली योतिषि द्रष्टरि तु त्रिषु ॥२६८८॥
दृशीक नयने क्ली त्रिर्दृशीक स्याद्दपुष्मति ।
दृश्या स्त्री सेवन त्रिस्तु द्रष्ट ये क्ली तु भूषणे ॥२६८९॥
दृषन्नि पेषणशिलापट्टप्रस्तरयो पुमान्[1] ।
दृषद्वती नदीभेदे पाव याश्च स्त्रियाम्मता ॥ ६९ ॥
दृष्ट त्रि वीक्षिते ज्ञाने क्लीबन्त्वहिकवस्तुनि ।
उक्त तथैव भूपानाम्भये स्वपरचक्रज ॥२६९१॥
दृष्टा त पुसि शास्त्र च तथोदाहरणे मत ।
दृष्टिश दोऽक्ष्णि बुद्धौ च ज्ञाने दर्शे तथा स्त्रियाम् ॥ ६९ ॥
देव खड्गे नृपे मेघ नृपे नाट्याक्तिगेऽपि ना ।
चक्षुरादीन्द्रियेष्वस्त्री देवी स्त्री मघमूवयो ॥ ६९३॥
महिष्या नृपतेर्नाट्ये राजवश्यनृपस्त्रियाम् ।
गुडूचीस्पृक्कयोर्देवस्तु द्वयोर्देवते मत ॥ ६९४॥
देवताड सैहिकेये जीमूते च हुताशने ।
देवदण्डस्तु नृनपोदण्डाकारायुधा तरे ॥२६९५॥
अरत्तिमात्रे योगे तु लिङ्गाद्यूह्य यथायथम् ।
देवदु दुभिरि द्रऽयम्पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥ ६९६॥
स्त्री तु कृष्णाजके कृष्णवचाया देवदु दुभि ।
देवधान्य यावनाले देवाना धा यकेऽपि च ॥२६९ ॥
देवधूपस्तु देवाना धूपे स्याद्गुग्गुलावपि ।
[2]देवन विजिगीषाया गतिका योधु तौ स्तुतौ ॥२६९८॥
क्रीडाया व्यवहारेऽथ देवना परिदेवने ।
अना देवयतेश्चार्थेऽथ नाऽक्षे देवनो मत ॥ ६९९॥
देवभिन्नो मण्डलारण्यसर्पाणा विंशतिश्च षट ।
ये भेदा एकके तेषा द्वे योगार्थे वय त्रिषु ॥२ ॥

---

१ दृषत्स्त्रिया स्या पेषण्यामश्ममात्र तु नैव नप् ।

२ देवन विजिगीषाया यवहारे द्युतौ स्तुतौ ।
क्रीडायां गतिकान्त्यो क्ली देवना तु स्त्रियाम्मता ।

पुमान्देवमणिर्घाटगलदेशसमुद्भवे ।
रोमावर्त्ते महादवे कास्तुभ च प्रकीत्तित ॥२७ १॥
दवयुस्त्वृत्विाज तथा होमऽपि च पुमानथ ॥
वाच्यवद्दवयु प्रोक्तो धामिके लोकयात्रिके ॥ ॥
नटे देवरथो रामभूमिके देवयानक ।
देवलस्त्वृषिभेदे ना देवाजीवे तथा पुमान् ॥ ३॥
स्त्रिया देववधूर्देनपत्यान्दिशि च कीत्तिता ।
देववृक्ष सप्तपर्णे मन्दारादिषु गुग्गुला ॥ ४॥
स्त्री देवसि धुगङ्गाया योगार्थे तु यथायथम् ।
देवसेना दवचम्वा स्कदपत्नी द्रकयो ॥२ ५॥
नागाञ्जनेभसुदर्या नागयष्टो तथा स्त्रियाम् ।
देवार्ह रसविद्धे क्ली हेम्नि देवोचिते त्रिषु ॥ ७ ६॥
देवाग्नौ देवरे पुसि स्त्री पितृयस्त्रिया मता ।
देशरूपोऽस्त्रिया न्याये योगार्थे तु यथायथम् ॥ ७॥
देशी गुरौ पुमा मार्गोपदेष्टरि तु वा यवत् ।
स्त्री तु प्रदशिनीनाम्न्यामङ्गुल्यान्देशिनी मता ॥ ७ ॥
देष्णो बाहौ पुमा द्व तु यजमाने मतोऽथ च ।
सुरूपे दानशीले च भद्यवद्देष्ण इष्यते ॥२ ९॥
देष्णुस्तु दुर्गमेऽपि स्याद्दातर्यप्यभिधेयवत् ।
ना देहमर्दनो व्याधौ क्ली तु देहस्य मदने ॥ १ ॥
देहयात्रा तु मरणे भोजनऽपि स्त्रियाम्मता ।
दैतिकी स्याद्दिनभृतौ क्लीब तु दिनयोगिनि ॥२७११॥
दैत्यो विभीतके दैत्यपुशीरे दितिजे द्वयो ।
अथ दत्या मुरा चण्डौषधमद्या तरेष्वपि ॥ ७१२॥
दैत्यदेवस्तु वरुणो पवनेऽपि पुमा मत ।
दैत्यारिर्देवमात्रेऽपि पुमाश्च गरुडध्वजे ॥२ १३॥

---

१ दैत्यो विभीतके पुसि क्लीबं दैत्यमुशीरके ।
सुराख्यचण्डौषधयोर्दैत्या स्त्री दितिजे द्वयो ॥

दैनन्त्रिर्दिनसम्बद्ध दन्ये तु स्यान्नपुसकम् ।
दैन्य तु दीनतायां च शोके च क्लीबमिष्यते ॥२ १४॥
दैवो विवाहभेद स्याद्दैवी तेन विवाहिता ।
दैव तु दैवते भाग्ये नपुसकमुदीरितम् ॥२७१५॥
दैवज्ञस्त्रिर्दैवविदि दवज्ञा गृहगोलिका ।
दैशिक नृत्यभदे क्ली देशयोगिनि तु त्रिषु ॥ ७१६॥
आहुर्दैशिकव केचिद्दैशिकञ्चोपदेशकम् ।
दैष्ट क्ली याज्ञिकाना स्यात्प्रोक्ष यासादने तथा ॥२ १ ॥
सम्बधिनि स्याद्दिष्टस्य दिष्टेरपि च वाच्यवत् ।
दोग्धा दोहनकारे ।त्रर्लोभात्कवयितर्यपि ॥२ १८॥
दोग्ध्री तु स्तनपायिया धात्र्या धेनावपि स्त्रियाम् ।
दोधक वृत्तभेदे क्ली त्रि स्वाम्यथापहारके ॥ १९॥
दोरकन्नपि रज्जो स्याद्वीणारु त्र्या तु दोरिका ।
दोल फा गुनशुक्लस्य चतुदश्युत्सवे मत ॥२७२ ॥
दोलकस्यु क्षेसरि स्यादथ दोलकमम्बुजे ।
दोला प्रेङ्ख यानभेदेऽपि स्त्री स्या नीलिकौषधौ ॥ ७२१॥
दोलितो महिषे द्वे स्यात्कम्पिते दोलितस्त्रिषु ।
दोषो वातादिके दुष्टे गुणस्य प्रतियोगिनि ॥ २ ॥
दोषज्ञ पण्डिते वैद्ये त्रिषु दोषस्य बोधके ॥
स्याद्दोषा तु भुजायां स्त्री तथा रात्रौ च त मुखे ॥२७२३॥
रात्र्यर्थे तु निशीत्यर्थे दोषत्याद तम ययम् ।
दोषाकरस्तु चन्द्रे स्याद्दोषाणामाकरेऽपि च ॥ ४॥
दोषिको दोषसम्बद्धे त्रि र्याधौ पुसि कस्यचित् ।
वय स धौ च गर्भे च क्लीबन्दाहदलक्षणम् ॥ २५॥
दोहलोऽस्त्री गर्भिणीच्छाभेदे श्रद्धाभिधे मत ।
देये वृक्षादिपुष्प्यर्थं करीषादात्रपि स्मृत ॥२ २६॥
दौ दुभी वरयात्रायान्दम्भे चैव स्त्रियाम्मता ।
क्लीत्वे कलेरयकेष्टाना लेरयानां यवहारिणाम् ॥२७ ॥

---

१ दैवज्ञो ना योतिषिको दैवज्ञा गृहगोलिका(के) ।

दौर्वीण म्लिष्टपर्णे च दूर्वायाश्च रसे मतम् ।
दा य त स्याद्द्वयोरुग्र मत्स्यघातनजीविनि ॥ ८॥
कक्ष्याजीविनि चाऽम्बष्ठ पु लिङ्गस्तु नृपान्तरे ।
दौहृद तु दुहृ वेऽपि तथा दोहलनामनि ॥ ९॥
इच्छाविशेष गर्भिण्या नपुसकमुदीरितम् ।
द्युरस्त्री गगने ाह्नि पावके तु पुमा मत ॥ ३ ॥
द्युति पुमान्द्योततौ स्त्री प्रभाभिगमकान्तिषु ।
द्युम्न धने यशस्य ने बलेऽपि क्लीबमिष्यते ॥ ७३८॥
द्युवाऽभिग तरि त्रि स्या ना तु स्वर्गाकराजसु ।
द्योश दस्तु स्त्रियामुक्त स्वर्गे चैव विहायसि ॥ ३ ॥
द्योतस्तु द्योतनायाश्च दीप्तौ द्योता त्विय स्त्रियाम् ।
ज्ञेया पिङ्गलकेश्यादिक याया सुरभावपि ॥ ७३३॥
द्योतना तूषसि स्त्री स्याद द्योतन क्ली धनेऽक्ष्णि च ।
द्योतकार्थे स्त्रीनपोस्तु द्योतना स्यात्प्रकाशने ॥ ७३४॥
द्यौत्र क्लीब प्रमाणेऽह्नि प्रतोद योतिषोरपि ।
द्रमिलस्तु द्वयोर्मर्त्ये त्रिराज्यप्रभवे मत ॥ ३५॥
वैश्यपूर्वक्षत्रियाया व्रात्याज्जातेऽपि कीर्त्तित ।
द्रवो नर्मणि निर्यासे द्रवणे ना पलायने ॥ ३६॥
नद्या तु स्त्री द्रवा त्रिस्तु भिन्नेऽपि तरले घने ।
द्रवत्पलायके चैव द्रावकेपि त्रिषु स्मृत ॥२ ३७॥
द्रव ती तु स्त्रियामेषा न्यग्रोधीस्तम्ब दृष्यते ।
द्रविण न द्वयोर्वित्ते काञ्चने च पराक्रमे ॥ ७३८॥
द्र य स्यात्पित्तले वित्ते पृथिव्यादौ विलेपने ।
याग्ये च भेषजे क्लीबमृक्सामेष्विष्टिगामिषु ॥ ३९॥
द्रुविकारे पुनर्द्र यमभिधेयवदिष्यते ।
द्राङ्क्षस्तु सत्वरे प्राशावपि वाच्यवदिष्यते ॥२७४ ॥
द्रावकस्त्रि द्रावयितृद्रोत्रोर्ना मोषकाश्मनो ॥
द्रावको ग्रावभेदे स्याद्विदग्धे मोषकेऽपि च ॥२७४१॥

क्ली तु त प्रसवे द्रावयत्यर्थे तु न ना भवेत् ।
द्रावणस्तु विडारये स्या लवण कतकद्रुमे ॥ ४ ॥
द्रुघणो मुग्दरेऽपि स्याद्द्रुहिणे च परश्वधे ।
द्रुणा द्वयोर्वृश्चिके स्यात्क्लीब तु धनुषि द्रुणम् ४३॥
स्त्रिया द्रुणा स्या कच्छ या मौर्यां तु स्याद्द्रुणी स्त्रियाम् ।
द्रुत विलीने शीघ्रे च विद्राणे चापि वाच्यवत् ॥२७४४॥
द्रुमो ना वृक्षमात्रेऽपि ना दीवृक्षे तथा स्मृत ।
पारिजातद्रुमे राजभदे किम्पुरुषेश्वरे ॥२ ४५॥
द्रुमामयस्तु लाक्षाया स्याद्द्रुमस्यामयेऽप च ।
द्रुमादन स्याच्छिशिर ऋता ना त्रि तु यौगिके ॥ ४६॥
द्रुहिणो ब्रह्मविष्णवोर्ना त्रिक्षुद्रे क्ली तु पद्मनि ।
द्रोणो द्व्यादग्धकाक पुमास्तु स्या कृपीपतौ ॥२ ४ ॥
शाकस्तम्बा तरे चव द्रोणा तु चतुराढके ।
दारुपात्रविशेष स्याद्द्रोणी तु द्रवभाजने ॥ ४८॥
तथा काष्ठाम्बुवाहिया द्रोणपुष्प्या गिरिप्लवे ।
शैलस्य शिलयो स धावपि द्रोणी प्रकीर्त्तिता ॥ ४९॥
द्रोहो द्वेषे पुमा द्वे तु भवेद्विप्रखर्षीसुते ।
द्रोहकस्त्रिषु वैडालवृत्तौ गाथाऽतरे तु ना ॥२ १ ॥
द्रोहाट कथितो गाथाप्रभेदे मृगलुधके ।
द्व द्वोऽस्त्री युधि युग्ये तु रहस्ये मिथुनेऽपि नप् ॥ ५१॥
पुल्लिङ्गस्तु भवेद्द्व द्व समासे चाथचोदिते ।
द्व द्वन्तु भेद्यलिङ्ग स्याद्ग्मावयववस्तुषु ॥२७५ ॥
द्वादशोऽस्त्री विष्णुतिथौ सरयाया पूरणे त्रिषु ।
द्वापर सशयेऽप स्यात्तृतीयेऽपि युगे पुमान् ॥२ ५३॥
द्वार्द्वारे चाप्युपाये च स्त्रिया द्वार तु नस्तयो ॥
द्विकमात्ममनोयुग्मे क्लीब द्वे काककोकयो ॥ ५४॥
त्रिषु तु द्वितयेऽपि स्याद्द्वाभ्यां क्रीतादिकेष्वपि ।
द्विजो द्वे ब्राह्मणक्षत्रवैश्येष्वण्डोद्भवेषु च ॥२ ५५॥

द्न्तेषु पुंसि भार्या तु द्वरेणा च द्विजा स्त्रियाम् ।
द्विजन्मा पुंसि द्न्तेऽथ द्व ब्रह्मक्षत्रविट्खगे ॥ ७५६॥
द्विजपोतो द्वयो शूद्रे तथा स्यात्पक्षिण शिशौ ।
द्विजराजस्त्वन न्तेऽपि चन्द्रे न गरुडे पुमान् ॥ ७५ ॥
द्विजाति पक्षिणि ब्रह्मक्षत्रविट्सु तथा पुमान् ।
द्विजिह्वस्तु द्वयो सर्पे सूचके तु त्रिषु स्मृत ॥ ५ ॥
द्वितीया स्त्री द्वितीयस्या विभक्ता ब्रह्मणस्तिथौ ॥
भार्यायाश्च द्वितीयस्तु द्वयो स्यात्पूरण त्रिषु ॥ ५९॥
द्विपाद्द्वे विहगे मर्त्ये द्व्यङ्घ्रिके तु त्रिषु स्मृत ।
द्विषस्तु पुंसि शनौ स्यात्त्रिलिङ्गो द्वेष्टरि स्मृत ॥ ६ ॥
द्वीपी जलाशयभिदि स्त्री द्वीपोऽस्य तरीपके ।
द्वीपवासि धुनद्योर्द्वीपवत्यापगाभुवो ॥ ७६१॥
द्वीपिस्तु श्वापदे कालेऽपि च न क्लीबमिष्यत ।
द्वप रथ द्वीपिचर्मच्छन्नेऽङ्गे द्वीपिनस्तथा ॥२ ६ ॥
विकारेऽप्यासमुद्रान्तद्वीपसम्बन्धिवस्तुनि ।
अन्यत्र मानुषात्तस्यादभिधेयवदिष्यते ॥ ३॥

ध

धो धर्मब्रह्मधनदधेवतेष्वथ न धने ।
धो धा च ब्रह्मणि ख्यातौ ना धा निर्धारके भवेत् ॥ ६४॥
धटस्तुलाराशिदि यतुलयोश्चीवरे धटी ।
धत्तो द्रुमेऽर्के क्ली गेहव्योमसूत्रे दिवि स्त्रियाम् ॥ ६५॥
धत्तरो मातुले क्ली तु तत्फले हेम्नि चष्यते ।
धत्र गेहव्योमसूत्रे दिवि स्त्री नाऽर्कवृक्षयो ॥ ७६६॥

---

१ धो ना धर्मे कुबेरे च धं तु क्लीब धने मतम् ।
२ धटो दिव्यतुलायां स्याद्धटी चीरे च वासस ।

धन वित्ते गोव्रज द्वितीयर्क्षे स्नेहपात्रयो ।
धनञ्जयोऽर्जुने द्रागिनचित्रकेऽस्यहिभिदया ॥२ ६ ॥
धनदो ना कुबेरे च वृक्षे त्रिस्तु धनप्रदे ।
द्वयोस्तु गुह्यके गेहभेदे तु धनदम्मतम् ॥ ६८॥
धनधारणमित्येत्स्वापतेयस्य धारणे ।
व्यवहारप्रवृत्तानां लग्यभेदेऽपि कीर्त्तितम् ॥२७६९॥
पुमा धनपतिर्यक्षराज आढ्य तु स त्रिषु ।
धनवानम्बुधौ स्त्री तु धानष्ठा धनवत्यपि ॥२ ॥
उाद्भद्भेदे धनहर पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।
नेपालग धद्र ये तु मता धनहरी स्त्रियाम ॥२ १॥
धनाध्यक्ष कुबेरेऽपि स्याद्धनाधिकृतेऽपि ना ।
धनिक साधुधनिनोस्त्रि स्त्री स्या साधुयोषति ॥ २॥
धनिकाऽपि च धा याके क्वचित्तु नृपयोषिति ।
धनी कुबेरे पुल्लिङ्गस्त्रिस्तु वार्द्धुषिकाढ्ययो ॥ ७३॥
धनिष्ठऽतीव धनिकस्त्रिधनिष्ठक्षभिदि स्त्रियाम् ।
धनुधनु प्रियालस्य फले पापे च न द्वयो ॥२ ४॥
पुमांस्तु स्यात्प्रियालद्रौ राशिभेदे शरासने ।
भ लातके चतुर्हस्तमानेऽपि स्याद्धनूरपि ॥२ ७५॥
द्वीपे तु पुलिने नद्यादितटे स्त्री धनुधनू ।
धनुका तु स्त्रियां वध्वा भद्यलिङ्गे तु साधुनि ॥२ ६॥
धनुग्रहस्तु पुल्लिङ्ग प्रमाणेऽष्टाङ्गुले मत ।
चापस्य ग्रहण चाथ त्रिग्रहीतरि धन्वन ॥ ॥
धनुर्दण्डश्चतुर्हस्तप्रमाणे योगिकेऽपि च ।
धनुलता धनुर्व या सोमव ल्यामपीष्यते ॥२ ८॥

---

१ धन गवा व्रजे वित्ते लग्नाद्राशौ द्वितीयके ।

२ धनञ्जयोर्जुने द्रागिननागकायानिलान्तरे ।

३ धनदस्तु कुबेरे न भद्यवत्त धनप्र ।
उक राम्त थान्तश्च ।

धनुर्नृशण्डश्चापे क्ली चतुर्हस्तप्रमाणके ।
धनुष्करश्चापकारे पुष्पभदे धनुष्करी ॥ ९॥
धनुष्कोटिश्चापकोटा स्याद्ग्रामे वरतीथके ।
धनूस्त्रिया धनु र्याया धनुष्यप्युत्तमस्त्रियाम ॥ ८ ॥
मूर्वामहे द्रवारुण्याधनु श्रणी प्रकीर्त्तिता ।
धनेशस्तु कुबेरे ना स्या वाढ्ये मेघलिङ्गक ॥ १॥
धन्यो धननिमित्ते च पुण्यव यपि वा यवत् ।
अनीशवादिनि क्रौञ्चद्वीपवेश्ये पुनद्वयो ॥ ८ ॥
ध या लता बृहतिकाधा याऽऽमलकीषु च ।
धन्वा स्यान्मरुदेशे ना योम्नि चापस्थलेषु नप् ॥ ८३॥
ध व तरि काशिराज भास्करेऽप मत पुमान् ।
धन्वी तु ना धनूराशौ धानु के तु भवेत्त्रिषु ॥२ ८४॥
धमनस्तु नडस्तम्बे पुसि नासापुटेऽपि च ।
धमनी स्त्री सिराहट्टविलासिन्योश्च वाचि च ॥ ५॥
वा यवद्धमन क्रूरे स्याद्भस्त्राध्मापकेऽपि च ।
धर कूर्मेशकार्पासीवसुभृद्गिरितूलके ॥ ८६॥
धरणन्त्वष्टके हेम्न पलाना सप्ततौ तथा ।
ताम्रस्य दशकेऽ येषा रूप्यकर्ष च धारणे ॥५ ८७॥
धारणी तु स्त्रियामेषा वसुधायाम्प्रकीर्त्तिता ।
धरा भूमिगुह्य योश्च स्त्रीगर्भाशयमेदसा ॥ ७८८॥
धराधरस्तु शैलेऽपि शिवेऽपि च पुमान्मत ।
धर्णसिस्तु पुमाञ्छैले सलिले तु नपुसकम् ॥२७८९॥
धर्त्ता ऋदन्त पुल्लिङ्गो धर्मे स्याद्धारके त्रिषु ।
धर्मोऽस्त्री सुकृते साम्ये स्वभावे लग्नराशित ॥२७९ ॥
राशा च नवमे प्राहुर्मौहूर्त्ता ना तु सोमपे ।
न्यायाचारयमाहिंसाखड्गचापेषु राशि च ॥ ७९१॥
प्रधानशेषे सत्ये च श्रुतौ दण्डविनिर्णये ।
सताश्च सङ्गते यज्ञे तथैवोपनिषद्यपि ॥२७९ ॥

धर्मणस्तु प्रमा वृक्षभेदसर्पप्रभेदयो ।
धर्मपाल पुमान्खड्ग त्रिस्तु धर्मस्य पालके ॥२ ९३॥
धर्मराजस्तु बुद्धेऽपि यमेऽपि च युधिष्ठिरे ।
धर्षण क्ली मत धाष्टर्येऽभिभवे सुरतेऽप्यथ ॥ ९४॥
धर्षणी कुलटाया स्त्री धर्षणम्भ सने न ना ।
धवो ना धवने धूर्त्ते प्रभौ पत्यौ च योषिताम् ॥२ ९५॥
धुर धरद्रुमऽथ क्ली तत्फले द्व तु मानवे ।
धवलो वृषभे श्वेते वर्णेऽथ धवला गवि ॥२ ९६॥
वाच्यवत्तु श्वेतवर्णयुते श्रेष्ठे च सुन्दरे ।
धाक पुमानोदनेऽपि कीर्त्तितश्चानडुह्यपि ॥ ९ ॥
धाणकस्तु पुमाश्छिद्रविधाने हविषा ग्रहे ।
धाणका स्त्री पणतृतीयाश सम्परिकीर्त्तिता ॥२ ९८॥
धातुर्धनेऽस्थ्नि लोहे च शरीरे गैरिके रसे ।
स्वर्णे रेतसि पाषाणे स्याद्भूवादिसुबन्तयो ॥२७९९॥
वातादिश दस्पर्शादिगैरिकादित्वगादिषु ।
आकारे च स्वभावे च पाद पश्चाक्षरे तथा ॥२८ ॥
महाभूतेष्विन्द्रियेषु श्लेष्मादौ च पुमानयम् ।
धाता ब्रह्मणि ना त्रिस्तु पिबपालककभत्त षु ॥२८ १॥
।
धात्री द्वयो स्यात्कितवे धात्री तु स्त्र्युपमातरि ॥२८ २॥
जन यामामलक्याञ्च वसुधायाश्च कीर्त्तिता ।
धान तु धारणे पाने दाने च क्लीबमिष्यते ॥ ८ ३॥
धाना भृष्टयवेऽपि स्त्री फलबीज च भूरुहाम् ।
धाना स्त्री भूरुहाम्बीज कुस्तुम्बुरुणि चाप्यथ ॥२८ ४॥
भूम्नि भृष्टयवेष्वेव स्थूले तच्चूर्णकेऽपि च ।
धाम त्वद त तिलकतेजसो क्लीबमिष्यते ॥२८ ५॥

---

१ धो धा च ब्रह्मणि ख्यातौ धा तु स्याद्धारके पि च ।

२ धात्री जन यामलकी वसुमत्युपमातृषु ।

धिष्ण्योल्कायां क्ली तु गेहासनस्थानक्षशक्तिषु ।
धीर्ज्ञाने ज्ञानभेदे च बुद्धौ कर्माणि च स्त्रियाम ।।२८२ ।।
धीता बुद्धौ सुतायां च कन्यायां च स्त्रियां मता ।
धीतिस्तु न्यङ्गुलौ पानेऽप्याधारे च यवस्थितौ ।। ८२१।।
धीमान् बृहस्पतौ पुंसि पण्डिते त्वभिधेयवत् ।
धीरोऽब्धौ मन्थरे तु त्रि ध्यातमद्विदुषोरपि ।। ८२ ।।
धीरं तु कुङ्कुमे धीरा गुडूच्याम्परिकीर्त्तिता ।
धीवा व्याधौ पुमान् धीवा धीवरी सुरमत्स्ययो ।। ८२३।।
धीवधीवाधीवरीति त्रिषु कर्मकरे भवेत् ।
धीवरो नाऽम्बुधौ व्याधे काललोहे तु धीवरम ।। ८ ४।।
द्व तु दाशेऽपि मर्त्ये च कैवर्त्तीवृषलोद्भवे ।
धुतन्तु कम्पिते त्यक्ते भर्त्सिते धूतवत्त्रिषु ।।२८२५।।
धुनी नद्यां स्त्रियामुक्ता धुनस्तु स्यान्नरे पुमान ।
धुन्धुमार शक्रगोपे गृहधूमे पदाऽलिके ।।२८२६।।
धूरङ्गुलौ यानमुखे साम्ना द्रष्टषु केषुचित् ।
भारे विकृतगीतौ स्त्री गायत्राह्वयसामनि ।। ८२ ।।
धुरन्धरो धवद्रौ ना वाच्यलिङ्गस्तु धूर्वहे ।
धूरुद्न्ता स्त्रियामेव धूनने परिकीर्त्तिता ।।२८२८।।
धूका स्त्री कामिलायां स्याद्धूको न्याधौ पुमान्मत ।
धूतं तु कम्पिते त्यक्ते भर्त्सितेऽप्यभिधेयवत् ।।२८२९।।
धूमकेतन इत्युक्त केतुग्रह हुताशयोः ।
धूमकेतु पुमानग्नौ स्यादुत्पातान्तरेऽपि च ।।२८३ ।।
धूमलो ना कृष्णरक्ते वर्णे त्रिषु तु तद्वति ।
देवतार्चनतूर्ये तु धूमलम्पुनपुंसकम् ।।८२३१।।
धूर्त्त शिवे कुरवके ना धुधूरकदम्बयो ।
क्लीब तु खण्डलवणे प्रसवे चोक्तभूरुहाम् ।।२८३२।।
अयोमयेऽपि पत्राङ्गे मेद्यलिङ्गन्तु वञ्चके ।
धूलीकदम्बो वरुणफले नीपान्तरे पुमान् ।।२८३३।।

---

१ आधाने वा ।

धूसरो द्व खरे स्त्री तु धूसरी किंनरीभिदि ।
स्तोकपाण्डुरवर्णे तु धूसरो ना त्रि तद्वति ॥ ८३४॥
धृतराष्ट्र सुराज्ञि स्यान्नागक्षत्रियभेदयो ।
धृतराष्ट्री स्त्रियामेषा हंसपत्न्यामप्रकीर्त्तिता ॥ ८३५॥
धृतिर्धारणसन्तोषधैर्यशौर्यसुखे स्त्रियाम् ।
द्वाभ्यामत्युत्तरच्छन्दोविशेषेऽपि तथा मता ॥ २६॥
धृत्वा विष्णौ गिरावब्धौ यता ना धृत्वरी भुवि ।
धृष्टि पुमान्भवेद्रश्मी स्त्रिया सा धर्षण मता ॥ ८३ ॥
धृष्णु प्रगल्भे चारे त्रिर्ना तु म तापशैलयो ।
धेनु स्त्रिया स्याद्धस्तियान्नवसूतगवीगिरो ॥२८३८॥
नपुसकन्तु धेन्वे तत्सामभेदे क्वचिन्मतम् ।
धेनुका क्षुरिकोमागोकरेणुष्वसुरे तु ना ॥ ८३९॥
धैनुक धेनुसङ्घेऽपि रतबन्धान्तरे तु नप् ।
धोतस्तु मारुते पुसि शठे तु त्रिपु कीर्त्तित ॥२८४ ॥
धोरण वाहनेऽश्वानां धोरिते रथगतौ च नप् ।
त्रिषु त्वेतद्वतियुतेऽथ हसे धोरणो द्वयो ॥२८४१॥
ध्यामन्दमनके गन्धतृणेऽथ श्यामले त्रिपु ।
ध्राजि पिटकजातौ स्त्री वात्यायामपि कीर्त्तिता ॥२८४२॥
ध्रुव शङ्कौ हरे विष्णौ वटे चोत्तानपादजे ।
वसुयोगभिदो पुसि त्रिर्नित्ये निश्चले स्फुट ॥ ८४३॥
ध्रुवा तु स्त्री सालपर्ण्यां गीतिस्रुग्भेदयोर्भुवि ।
ध्वजमस्त्री पताकायाञ्चिह्ने पूर्वदिशो गृहे ॥२८४४॥
खटवाङ्गशिश्नयोर्ना तु तालद्रौ शौण्डिके द्रुमे ।
ध्वजी द्वे शौण्डिके चम्वां ध्वजिनी त्रिर्ध्वजान्विते ॥२८४५॥
ध्वनिताला तु वीणाया वेणुकाहलयोरपि ।
ध्वस्त ग्रासीकृते लुप्ते नयहीनेऽपि वाच्यवत् ॥२८४६॥
ध्वाङ्क्षो ध्वाङ्क्षी बके काके ध्वाङ्क्षा द्वे घोरवाशिते ।
ना भिक्षौ तक्षके ध्वाङ्क्षो ध्वाङ्क्षी कक्कोलिकौषधौ ॥२८४७॥
ध्वाङ्क्षिर्ध्वाङ्क्षतिधातौ ना स्त्री तु स्याद्घोरवाशिते ॥२८४७अ॥

न

न पुमान्सुगते बन्धे द्विरण्डे प्रस्तुतेऽपि च ॥२८४८॥
नकुलस्तु द्वयोर्बभ्रौ सहदेवाग्रजे तु ना ।
ऋषिभेदे बभ्रुवर्णे त्रि तु तद्वणसंयुते ॥२८४९॥
नकुली तु स्त्रियां मांस्यां कुक्कुट्यांश्च प्रकीर्त्तिता ।
नकूबारो देवरे ना त्रिषु तु स्यान्निराश्रये ॥२८५ ॥
नक्तञ्चरो रात्रिचरे त्रि द्व तूलूकरक्षसो ।
नक्रो द्वयो स्यात्कुम्भीरग्राहसञ्ज्ञकयादसो ॥२८५१॥
नक्षत्रनेमि स्त्री रेवत्याम्पुमान्विष्णुच द्रयो ।
नक्षत्रमाला स्त्री प्रोक्ता हारतमस्तकभूषणे ॥२८५ ॥
स्यासकार्ये तथा सप्तविंशत्या मौक्तिकै कृते ।
एकयष्टौ हारभेदे नक्षत्राणां तथाऽवलौ ॥२८५३॥
नखोऽस्त्री नखरे क्ली स्त्री नखी शुक्त्यारव्यभेषजे ।
नखरायुध इत्युक्तो विडाले त्रि तु यौगिके ॥२८५४॥
नगस्तु पर्वते पुंसि तरावप्यगवन्मत ।
नगभूषणमित्येतद्धरितालेऽपि यौगिके ॥२८५५॥
नगौका पुंसि शरभे पक्षिपञ्चास्ययोरपि ।
नग्नो वन्दिक्षपणयोस्त्रित्वनग्ने दिगम्बरे ॥२८५६॥
नग्निका तु कुमार्यांभग्नक क्षपणवन्दिनो ।
नञभावे निषेधे च स्वरूपार्थेऽप्यतिक्रमे ॥२८५ ॥
ईषदर्थे च सादृश्ये तद्विहीनतदन्ययो ।
नटन्दुण्डुद्रुमेऽशोके शैलूषे तु नटो नटी ॥२८५८॥
नटी नल्यपराख्यायां स्त्री विद्रुमलसौरख्यौ ।
नतन्नमस्कृते वक्रे बन्धुरे चाभिधेयवत् ॥ ८५९॥
नपुंसकं तु नमने नगरेऽप्यसुरी मतम् ।
नदी धुन्यान्नदस्तु स्यातस्तोतर्यपि सरस्वति ॥२८६ ॥

नदनुस्तु मृधे मेघे पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।
नदीका त समुद्र ना हि जले सि दुवारके ।।२८६१।।
नदीका ता तु जम्ब्वा स्त्री काकजङ्घौषधावपि ।
नदीभव क्ली लवणे सै धवे त्रिसरिद्भवे ।।२८६२।।
नदीष्ण कुशलेऽपि स्यात्तरा तु कुशले त्रिपु ।
नद्धो बद्धे तथोद्वृत्तेऽप्यभिधेयवादष्यते ।। ८६३।।
ननु स्यादव्यय प्रश्नदुष्टोक्त्योश्च विनिग्रहे ।
अनुप्रश्ने परकृतावधिकारे च सभ्रमे ।। ८६४।।
आमन्त्रणेऽप्यनुनये प्रश्नाऽनुज्ञाऽवधारणे ।
न दक पुसि कृष्णस्य खड्गेऽसौ पारकीर्तित ।। ८६५।।
न दको वा यवत्प्रोक्तो हृषके कुलपालके ।
नन्दनो न दनो पुत्रे दुहितर्यपि च द्वयो ।।२८६६।।
इ द्रोद्याने न दन स्यान्नन्दथो च नपुसकम् ।
न ना न दयतेरर्थे त्रिषु न दयितर्ययम् ।।२८६ ।।
न द तस्तु पुमान्सरयौ नन्द ती स्यात्सखीजने ।
नन्दतामिति यत्राशीन दन्तास्त्रिषु तत्र स ।। ८६८।।
नन्दय त पुमा राज्ञि न दय ती सुखेऽपि च ।
सुवर्णेऽपि च पार्वत्या त्रि तु नन्दयितर्यपि ।। ८६९।।
नन्दा तु प्रतिपत्षष्ठ्येकादशीषु स्नुहीतरौ ।
अलिञ्जरे च पार्वत्यानन्द पूर्वनृपेषु च ।।२८ ।।
निधिभेदे यशोदेशे द्वे तु नन्दनकर्मणि ।
नन्दि स्त्री स्यात्सुखे भेरीवाद्ये द्यूताङ्गभिद्यपि ।।२८ १।।
पुमास्तु नन्दतौ धातौ प्रतीहारे शिवस्य च ।
नन्दी नन्दीश्वरे माषे नाट्यना धाश्च पाठके ।।२८७२।।
वनद्रुमे गदभाण्डे तथा पुल्लिङ्ग इष्यते ।
नन्दिनी पावती गङ्गाधेनुभेदननान्दषु ।।२८ ३।।

१ यशोदाभर्त्तरि द्वे तु नन्दनाख्ये सकर्मणि ।

शस्तवास्तुस्थलेऽप्योध्याहरीतक्युपक्तिषु ।
नन्दिवर्धन ईशाने च द्रवश्यनृपान्तरे ॥२८ ४॥
पुत्रे च पञ्चदश्याञ्च योगार्थे तु यथायथम् ।
न द्यावर्त्तस्तु वेश्मादे स्याद्वियासान्तरे पुमान् ॥२८ ५॥
तगरारण्ये पुष्पगुल्मेऽप्यथ तत्प्रसवे तु नप ।
नपात्द्वयोस्तकारान्त पौत्रान्तरवशजे ॥२८ ६॥
नप्ता द्वे पौत्रदौहित्रत पुत्रादिषु कीर्त्तित ।
नभश्चरो घने वाते द्वे तु विद्याधरे खगे ॥२८ ७॥
नभा धृद्वे त्रि खस्वर्गाम्बुषु तु क्ली नभोऽस्त्रियाम् ।
अभ्रश्रावणवर्षासु घ्राणे सूर्ये पतद्ग्रहे ॥२८ ८॥
विसतन्तावथ द्यावापृथिव्योर्नभसी इति ।
नभसस्तु पुमान्व्योम्नि ऋतावपि सरित्पतौ ॥२८ ९॥
नभाका चक्रवाके स्त्री नभाको वायसे द्वयो ।
नमत पुसि धूमे च तथा दिनकरे मत ॥२८८ ॥
क्लीब तूर्णास्तरणके ह्रस्वे तु नमतस्त्रिषु ।
नमस पुसि वेत्रे च प्रणामे च प्रकीर्त्तित ॥ ८८१॥
त्रिर्नमस्योऽच्चनीये स्त्री नमस्याऽर्चन इष्यते ।
नमस्कारी खदिर्या स्त्री नमस्कारो नतौ पुमान् ॥२८८२॥
नमिनमतिधातौ च जैनतीर्थे करान्तरे ।
विद्याधरेश्वरेऽप्येष कस्मिंश्चि पुसि कीर्त्तित ॥ ८८३॥
नमुचिस्तु पुमान्दैत्यभेदे पुष्पशरेऽपि च ।
नयो नीतौ तथा द्यूतभेदेऽपि च पुमान्मत ॥ ८८४॥
नर पुस्यर्जुने विष्णोरवताराऽन्तरे नये ।
मनुष्यजातौ तु द्वे स्यात्स्त्र्यर्थे नारीति तत्र च ॥२८८५॥
नरन्तु रामकपूरे सलिले च नपुसकम् ।
नरक पुसि निरये तथा स्यादसुरान्तरे ॥२८८६॥
नराङ्ग मेहने क्लीब नराङ्गो ना वरण्डके ।
नरेन्द्रो विषवैद्ये च मन्त्रवादिनि भूमिपे ॥२८८७॥

नरे द्रपत्नी भूमा च राजपत्‍यामपि स्त्रियाम् ।
नत्तकश्चारण पुसि नट पोटगलेऽपि च ॥२ ८८॥
नर्त्तकी लासिकायाञ्च करेण्वा च स्त्रियां मता ।
नर्त्तनप्रिय इत्युक्तो मयूरे त्रि तु यागिके ॥ ८८९॥
नर्मठ पुसि षिड्गे च चूचुके च प्रकीर्त्तित ।
नर्मद केलिसचिवे रेवाया नर्मदा मता ॥ ८९ ॥
नर्मरा नीरज स्त्री भा तुदरीसुरलासु च ।
नर्मर द्रुमकपूरे नाराचे मानवेऽर्जुन ॥२८९१॥
नल पोटगले राज्ञि पितृदेवे कपीश्वरे ।
नल तु कमले क्लीब नलीनद्याम्प्रकीर्त्तिता ॥२८९२॥
नलद स्यादुशीरेऽपि मास्यां पुष्परसेऽपि नप ।
नलिन नलिकाया क्ली पद्मे तु नलिनी त्रिषु ॥२८९३॥
सरसीस्वर्धुनीपद्मस्तम्बेषु नलिनी स्त्रियाम् ।
नव स्तुतौ ना त्रिर्न ये कार्पास्या तु नवा स्त्रियाम् ॥ ८९४॥
नवनीतन्तु योगार्थे घृतस्य प्रकृतावपि ।
नवनम्पूरणार्थे त्रिनवमी स्यादुमातिथौ ॥ ८९५॥
सप्तलायाम्नवायाञ्च मालायान्नवमालिका ।
नश्वर नाशशीलादौ त्रि द याचितवाचि च ॥२८९६॥
नष्ट पलायितमृततिरोभूतेषु वाच्यवत् ।
स्पृष्टमैथुनकन्यायां नष्टा स्त्रीलिङ्ग इष्यते ॥२८९ ॥
नस्तो नासापुटेऽपि स्याद्वृषावपि पुमानयम् ।
नहुषो द्वे मनुष्ये ना नागभदे नृपान्तरे ॥२८९८॥
नाक सूर्ये पुमानस्त्री स्वर्योम्नोर्द्धे तु पुन्नयो ।
दु खाभाववति त्वेष वा यवनाक इष्यते ॥२८ ९॥
नाकुस्तु यन्तरे शैले वल्मीके ना वनस्पतौ ।
नाकुली कुक्कुटीकन्दे स्त्री रास्नाचव्ययोरपि ॥२९ ॥

---

१ सुरलाया दरीभास्तु ीरज स्त्रीषु नर्मरा ।
क्लीबं स्याद्द्रुमकर्पूरे नाराचे मानवे र्जुने ॥

यवतिक्तासपग धानामोषध्योरपि स्मृता ।
ऊर्ध्वज्ञोरुपविष्टस्य भुजाभ्याञ्जङ्घयोर्द्वयम् ॥२९ १॥
बद्धावस्थानरूपे चासने क्ली नाकुलम्मतम् ।
अथो नकुलसम्बधि यप्येतत्त्रिषु नाकुलम् ॥२९ २॥
नागा मघ नागद त्याम्पुन्नागे नागकेसरे ।
देहाऽनिला तरे मुस्ते नागवल याम्पुमा मत ॥२९ ३॥
नागोऽस्त्री सीसके वङ्गे क्ली तु स्त्रीकारणा तरे ।
द्व्योगजे च सर्पे च तथा ग्राहार ययादसि ॥ ९ ४॥
स्थूले तु वा यवन्नाग क्रराचारिणि च स्मृत ।
स्त्रिया तत्र च नागी स्यात् श्रेष्ठे पुस्युत्तरस्थित ॥ ९ ५॥
नागदन्त पुमा भित्तिशङ्कौ नियूहनामनि ।
नागस्य च रदे नागद ती त्वौषधगुल्मके ॥ ९ ६॥
कुम्भानिकुम्भाद्यभिधे श्रीहस्ति यामपीष्यते ।
नपुसके नागद तमासना तर इष्यते ॥२९ ॥
यदूर्ध्वज्ञो प्रसृतयोर्भुजयोर्जानुसस्थयो ।
नागपाश पुमा स्त्रीणा करणे वरुणायुधे ॥२९ ८॥
नागपुष्पस्तु पुन्नागे चम्पक नागकेसरे ।
नागभूषणमित्येतद्धरितालेऽपि यौगिके ॥२९ ९॥
नागर मुस्तके शुण्ठ्याञ्चुक्रे राजकशेरुणि ।
नागरस्तु त्रिलिङ्ग स्याद्विदग्धे नगरोद्भवे ॥२९१ ॥
स्यान्नागवारिकस्तार्क्ष्ये गणस्थे राजकुञ्जरे ।
हस्तिपे च मयूरे तु स द्वयो पारकीर्तित ॥२९११॥
नागोदयुदरत्राण भटाना त्रि तु यौगिके ।
नाटक रूपकभिदि नाटिका तूपरूपके ॥२९१२॥
नाटको नाटयितरि नर्तितर्यपि वा यवत् ।
नाट्य धोषार यलोहे क्ली नृत्त तौर्यत्रिके तथा ॥२९१३॥
अथ नाट्यन्नाटयितव्येऽभिधेयवदिष्यते ।
नाडी नाडीव्रणे ताले धमन्यर्धमुहूर्तयो ॥२९१४॥

सच्छिद्रदीर्घद्रव्येऽपि चर्याया कुहनस्य च।
नक्षत्रे नासिकाया स्त्री नाली नाडिश्च नाटिवत् ॥२९१५॥
नाडीतरङ्ग काकोले हिण्डके रतहिण्डके।
नाथस्त्विन्द्र पुमानेष स्यात्प्रभा त्वभिधेयवत् ॥ ९१६॥
द्वयोस्तु नाथो नाथेति याच्ञैश्वर्यादिके भवेत्।
नाथात उक्त आहारे पुमाश्चैव प्रजापतौ ॥ ९१७॥
नादो ध्वनौ स्तोतरि ना नदसम्बन्धिनि त्रिषु।
नादेयो नागरङ्गे स्यान्नादेयी जलवेतसे ॥ ९१८॥
ककर्याम्भूमिजम्ब्वाञ्च महोदर्यारग्मुस्तके।
कङ्गुष्ठप्यथ नादेय क्ली सि धुलवण मतम् ॥ ९१ ॥
नदीसम्बन्धिनि त्वेष स्यन्नादेयोऽभिधेयवत्।
नानाऽयय विनार्थेऽपि तथाऽनेकोभयार्थयो ॥ ९ ॥
नाना स्त्रिया स्याद्भारत्या जन या दुहितर्यपि।
नान्दि क याणवृद्धौ स्त्री नाट्यारम्भाचनान्तरे ॥२९ १॥
नापितस्तु द्वयोर्विप्रवैश्याजे यभिचारत।
मर्त्यजात्य तरेऽम्बष्ठक्षत्रियासम्भवेऽपि च ॥२९ २॥
नाभिद्वयो स्याञ्ज त्वङ्गे यस्य सज्ञा प्रतारिका।
रथचक्रस्य मध्यस्थपिण्डिकायाञ्च ना पुन ॥ ९ ३॥
आद्यक्षत्रियभेदेऽ त्यमनौ मुरयमहीपतौ।
नाभि क्ली भारते वर्षे स्त्रिया कस्तूरिकामदे ॥२९२४॥
नामाऽव्ययी प्रातिपदिके सज्ञाया क्लो तु वारिणि।
अव्यय त्वभ्युपगमरोषसरणविस्मये ॥२९२५॥
सम्भा यकुत्साप्राकाश्यविकल्पे नाम कीर्त्तितम्।
नायस्त्रि नेतरि प्रासौ ना नायी तु दिशि स्त्रियाम् ॥२९२६॥
नायको नायिका द्वे नेतरि स्त्रीपुसयोर्भवेत्।
नायकस्त्रि प्रभौ श्रेष्ठे हारमध्यमणौ तु ना ॥२९२७॥
नार क्ली भारताद्वर्षाद्दक्षिणे प्रातिजानते।
कस्मिश्चिद तरद्वीपे त्रि तु स्यान्नरयोगिनि ॥२९२८॥

नारी तु योषित्ति तिव्योनारत्तणकतीरयो ।
आपो नारा इति प्रोक्तास्वप्सु लिङ्ग न निश्चितम् ।। ९२९।।
नारको नरके ना त्रिलिङ्गो नरकयोगिनि ।
नारकीटोऽश्वकीट स्यात्स्वदत्ताशाविहन्तरि ।। ९३ ।।
नारङ्गो नारङ्गद्रौ विटे ना पिप्पलीरसे ।
यमजे तु द्वयो क्ली तु नागरङ्गफले मतम् ।। ९३१।।
नारा येषणिकाया स्त्री नाऽयोबाणाम्बुहस्तिनो ।
नारायण पुमान्विष्णौ नरस्य सहचारिणि ।।२९३२।।
तस्यावतारभदे च स्त्री तु नारायणी श्रियाम् ।
पावत्याञ्च शतावर्यां गण्डक्यारयसरित्यपि ।।२९३३।।
सुपार्श्वारयशिवस्थानस्थशिवाया विशेषत ।
नाराशस पुमा यज्ञे चाग्नौ मन्त्रा तरेऽपि च ।।२९३४।।
नाली त्रयी धा यकाण्डे नाला चा जादिदण्डके ।
नालन्तु र ध्रे शेफे च नपुसकमुदीरितम् ।।२९३५।।
नालिका स्त्री चतुर्हस्तप्रमाणे युगसज्ञके ।
नवहस्तप्रमाणे च स्याद्र ध्रे नालकालयो ।।२९३६।।
वेणुपात्रा तरे चुल्लीर ध्रे शाकलता तरे ।
कलम्बीशतपर्वादिशब्दै रयाते जलोद्भवे ।।२९३ ।।
नालीकमम्बुजे क्लीब नालीकस्तु शरे पुमान् ।
नालीकिनी स्त्री पद्मि याम्नालीकवति तु त्रिषु ।।२९३८।।
नाविकस्तारयितरि त्रि तरीतरि नौकया ।
अम्बष्ठाद्ब्राह्मणीजाते मर्त्यजात्य तरे द्वयो ।। ३९।।
नाश पलायनध्वसमरणानुपल धिषु ।
नासा स्त्री नासिकायाञ्च गृहद्वारोर्ध्वदारुणि ।।२९४ ।।
नासिक्यावश्विनौ नासिक्या तु नासाभवे त्रिषु ।
नाहस्तु ब धने पुसि कूटेऽपि परिकीर्त्तित ।।२९४१।।
नि निवेशे भृशार्थे च नित्याऽर्थे सशयेऽव्ययम् ।
क्षेपकौशलसामीप्याश्रयदानेषु ब धने ।।२९४ ।।

राश्यधोभागविन्यासे मोक्षेऽन्तर्भाव एव च ।
निकरो निवहे सारे न्यायदेयधने निधौ ॥२९४३॥
निकषः शाणफलके निकषा यातुमातरि ।
निकायस्तु शरण्ये स्यात्समूहेऽपि सधर्मणाम् ॥२९४४॥
गृहे बहूनामेकत्र करणे परमात्मनि ।
निकारस्तु तिरस्कारे धान्यस्योत्क्षेपणेऽपि च ॥२९४५॥
निकुम्भः कुम्भकर्णस्य तनये दन्तिकौषधौ ।
निकुरुम्बं समूहे चाङ्कुरेऽपि च नपुंसकम् ॥२९४६॥
निकृतो विप्रलब्धेऽपि हते विप्रकृते त्रिषु ।
निकृन्तिर्भर्त्सने क्षेपे शठे शाठ्येऽपि च स्त्रियाम् ॥२९४७॥
निक्षेपस्तु निधाने स्यात्तथैवोपनिधावपि ।
निगमो नगरे वेदे निश्चये च वणिक्पथे ॥२९४८॥
मार्गे वणिज्यपि कटे ग्रन्थभेदेऽर्थशासके ।
भोजने क्ली निगरणं गले निगरणः पुमान् ॥२९४९॥
निग्रहो भर्त्सने पुंसि मर्यादायाञ्च बन्धने ।
निघातस्त्वनुदात्ताख्यस्वरे निहननेऽपि ना ॥२९५०॥
निघातिका लौहकारैर्यत्र निक्षिप्य हन्यते ।
कूटेन लोहं तत्र स्त्री त्रिषु तु स्यान्निहन्तरि ॥२९५१॥
निचुम्पुणस्तु चन्द्रेऽपि समुद्रेऽवभृथे पुमान् ।
निचुलस्तु निचोले स्यादिज्जलाख्यद्रुमेऽपि च ॥२९५२॥
निचोलः प्रच्छदपटे कञ्चुके च प्रकीर्त्तितः ।
निजं त्रि नित्ये चात्मीये क्ली स्वभावेऽथवाऽऽत्मनि ॥२९५३॥
कृत्तिकायान्तृतीयस्यान्दूर्वायां स्त्री नितालिवाक् ।
नितम्बो रोधसि स्कन्धे स्त्रियाः पश्चात्कटावपि ॥२९५४॥
कटके पर्वतस्यापि तथैव कटिमात्रके ।
नित्यं तु सन्ततेऽपि स्यात् शाश्वते चाभिधेयवत् ॥२९५५॥
नित्यशङ्की मृगे द्वे स्यात्रिस्तु स्यान्नित्यशङ्किते ।
निदाघो ग्रीष्मकाले स्यादुष्णस्वेदाम्बुनोरपि ॥२९५६॥

निदानमवदानेऽपि खण्डनेऽप्यादिकारणे ।
पतञ्जलेः सूत्रभेदे कारणे वत्सदाम्नि च ॥२९५७॥
निदिग्धिका स्त्रियामुक्ता कण्टकार्यां तथैव च ।
गिरिप्रियेति विख्याते क्षुद्रवातिङ्गिनान्तरे ॥२९५८॥
निदेशः शासनेऽपि स्यात्कथनोपातन्योरपि ।
निदेशनस्तु पुंसि स्याद्दशहस्तप्रमाणके ॥२९५९॥
क्ली त्वाज्ञायाञ्च दाने च न तु ना ण्यन्तकर्मणि ।
निन्द्रालुः सुनिषण्णाख्यजलशाके पुमान्मतः ॥२९६०॥
निद्राशीले तु निद्रालुरभिधेयवदिष्यते ।
निधनोऽस्त्री सामभक्तौ पञ्चम्या कुलनाशयोः ॥२९६१॥
निधा स्त्रिया निधाने स्यात्तथा पाशकदम्बके ।
भवेन्निधुवनं कम्पे सुरते च नपुंसकम् ॥२९६२॥
निन्दा स्यादपवादेऽपि कुत्सायाञ्च तथा स्त्रियाम् ।
निपातः पुंस्यध'पाते चादिप्रभृतिकेष्वपि ॥२९६३॥
निभं व्याजेऽथ सदृशे स्यादुत्तरपदं त्रिषु ।
निमित्तं लक्ष्यहेत्वोश्च शुभादे' सूचकेऽपि नप् ॥२९६४॥
निमीलनं निमेषे च मुकुलीभाव इष्यते ।
निमेषनिमिषौ काष्ठाऽष्टादशांशे निमीलने ॥२९६५॥
निम्नगा तु स्त्रियान्नद्यान्त्रि तु स्यान्निम्नगन्तरि ।
नियतिर्नियमे च स्त्री दैवे च परिकीर्त्तिता ॥२९६६॥
नियन्ता सारथौ पुंसि भेद्यवत्तु नियामके ।
नियमस्तु प्रतिज्ञायामाज्ञाया च नियन्त्रणे ॥२९६७॥
व्रते च निश्चये चैव पुंल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
नियामकः कर्णधारे पोतवाहे पुमान्मतः ॥२९६८॥
भेद्यलिङ्गस्तु नियमकर्त्तर्येष प्रकीर्त्तितः ।
नियुतं लक्षदशकेऽप्युशीरे लक्ष एव च ॥२९६९॥
निर्निषेधे निर्णये च बहिर्भावेपि चाव्ययम् ।
निरञ्जना पूर्णिमायां विष्णोर्नवसु शक्तिषु ॥२९७०॥

एकस्या कृष्णसारे तु द्वयोस्त्रिनिर्गताञ्जने ।
निष्ठीवने प्रतिक्षेपे वधे निरसनम्मतम् ॥२९७१॥
निरस्तः क्षिप्तबाणेऽपि वचने च द्रुतोदिते ।
निराकृते च निष्ठ्यूते तथा प्रतिहते त्रिषु ॥२९७२॥
निराकृतिनिषेधास्वाध्यायानाकृतिषु त्रिषु ।
निरामयस्तु पुंसि स्याद्‌डिक्के त्रिषु नीरुजि ॥२९७३॥
पदभञ्जनशास्त्रे क्ली निरुक्तं स्यात्त्रिषु त्वदः ।
कृतनिर्वचने शब्दे यातुमन्त्रेऽभिधीयते ॥२९७४॥
इन्द्रादिर्देवता तस्यामुक्तायां स्यात्स्वसंज्ञया ।
तद्देवताके च तथा स्यात्प्रातःसवनादिके ॥२९७५॥
निरुधा तु दिशि स्त्री स्यात्त्रिस्तु पुण्यक्रमे स्मृता ।
[1]निरूपणं नपुंस्यालोकविचारनिदर्शने ॥२९७६॥
निरूहो बस्तिभेदे ना त्र्यूहशून्ये च निश्चिते ।
निर्ऋतिस्तु स्त्र्यलक्ष्म्या त्रिरगतौ निर्गमे पुमान् ॥२९७७॥
निरोधः पुंसि रोधे स्यात्तथा संक्षयनाशयोः ।
निर्गुण्डी नीलशेफाल्यां सिन्दुवारेऽपि च स्त्रियाम् ॥२९७८॥
निर्ग्रन्थो नग्नकेऽपि स्यान्निःस्ववालिशयोरपि ।
निर्ग्रन्थः स्यात्क्षपणके दरिद्रे ग्रन्थवर्जिते ॥२९७९॥
निर्ग्रन्थकः स्यात्क्षपणे निष्फलेऽप्यपरिच्छदे ।
निर्जरा तु गुरूच्यां स्त्री द्वे देवे त्रि जरोज्झिते ॥२९८०॥
निर्दटः परदोषोक्तिपरे निष्ठुरभाषिणि ।
निर्दटो निर्दये व्यर्थे स्यात्त्रिष्वन्यापवादिनि ॥२९८१॥
निर्दरं निर्झरे सारेऽन्यवत्तु कठिनेऽत्रपे ।
निर्देशो देशहीने त्रिः पुमांस्तु कथनाज्ञयोः ॥२९८२॥
निर्नरस्तु सहस्राशोस्तुरङ्गे तुषपावके ।
निर्भर्त्सनं खलीकारेऽलक्तकेऽपि नपुंसकम् ॥२९८३॥

---

१ निरूपण स्याद'लोके विचारे च निदर्शने ।
निरूपणा विचारे निदर्शनालोकयोर्न ना ॥

निर्मलं विमले त्रि स्यान्निर्माल्याभ्रकयोस्तु नप् ।
निर्माणं निमितौ सारे तथा क्लीबं समञ्जसे ॥२९८४॥
निर्माल्यं तूपयुक्ते क्ली माल्ये त्रिर्माल्यवर्जिते ।
निर्मुक्तस्त्रिस्त्यक्तसङ्गमुक्तकञ्चुकसर्पयोः ॥२९८५॥
निर्मोको मोचने व्योम्नि सनाहे सर्पकञ्चुके ।
निर्याणं करिणोपाङ्गे मृत्यौ मोक्षेऽध्वनिर्गमे ॥२९८६॥
निर्यातनञ्च निर्यातना प्रतीकारमात्रके ।
न्यासप्रत्यर्पणे याने वैरशुद्धौ तथा भवेत् ॥२९८७॥
निर्यामः कर्णधारे ना यामहीने तु भेद्यवत् ।
[1]निर्यूहो नागदन्तद्वाःक्वाथनिर्यासशेखरे ॥२९८८॥
निर्लज्जा तु स्त्रिया यान्यन्नियुक्ता देवरे व्रजेत् ।
लज्जाहीने तु निर्लज्जस्त्रिलिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥२९८९॥
निर्लेपन्त्वम्बुजे क्लीबं लेपहीने तु वाच्यवत् ।
निर्वाणं निर्वृतौ मोक्षे नाशे च गजमज्जने ॥२९९०॥
सङ्गमे त्रिस्तु शान्तादौ मुनिवह्निगजादिके ।
निर्वादः परिवादे ना वादहीने तु भेद्यवत् ॥२९९१॥
निर्वापणा स्यात्तापशमनाया वधे न ना ।
निर्वासना न नाघाते नगरादिबहिष्कृतौ ॥२९९२॥
निर्वृतिः सुस्थितावस्तगमने च सुखे स्त्रियाम् ।
निर्वेदस्तु पुमान्स्वेदे वेदहीने तु वाच्यवत् ॥२९९३॥
निर्वेशस्तु पुमान्भोगे वेतने मूर्च्छनेऽपि च ।
क्ली तु निर्व्यथनं रन्ध्रे निर्व्यथे तु त्रिषु स्मृतम् ॥२९९४॥
निर्हृतौ मुष्टिमान्द्ये च बन्धुनिर्हरणम्मतम् ।
निलयस्तु गृहे पुंसि तथा निलयने स्मृतः ॥२९९५॥
निलिम्पस्तु द्वयोर्देवे निलिम्पा तु स्त्रियां गवि ।
निवर्त्तनं निवृत्तौ च रज्जूनां त्रितयेऽपि च ॥२९९६॥

---

१ निर्यूह पुंसि शिखरे द्वारे निर्यास एव च ।
क्वाथेपि नागदन्ताख्यशङ्कुष्वपि तथा मत ॥ (के०)

अष्टहस्तमिताना स्यान्नतु ना ण्यन्ततः कृतौ ।
वसनक्रिययोर्वस्त्रे गृहे निवसनम्मतम् ॥२९९७॥
निवहस्तु समूहे च वायुस्कन्धान्तरे पुमान् ।
[1]निवातो दृढसंनाहे वातशून्येऽपि चाश्रये ॥२९९८॥
न ना निशमना प्रोक्ता दर्शने श्रवणेऽपि च ।
निशा दारुहरिद्रायां स्त्री त्रियामाहरिद्रयोः ॥२९९९॥
निशाचरः पुंस्युलूके सृगाले सर्परक्षसोः ।
निशाचरी पांसुलायां शिवाख्ये जम्बुकान्तरे ॥३०००॥
निशाचरो रात्रिचरमात्रे स्यादभिधेयवत् ।
निशान्तं क्ली गृहे शान्ते त्रि रात्र्यन्ते तदस्त्रियाम् ॥३००१॥
निशीथस्त्वर्धरात्रेऽपि प्रदोषे रात्रिमात्रके ।
निश्चारकस्तु पुँल्लिङ्गः पुरीषोत्सर्जिमारुते ॥३००२॥
निर्गन्तरि तु निश्चारकोऽयं स्यादभिधेयवत् ।
निःश्रोणिरधिरोहिण्यां स्त्री खर्जूरीद्रुमेपि च ॥३००३॥
निःश्रेयसं तु कल्याणमोक्षयोः शकटे तु ना ।
निषङ्गः पुंसि सङ्गेपि तूणीरेऽपि प्रकीर्त्तितः ॥३००४॥
निषङ्गधिस्तु पुँल्लिङ्गो रुद्रेऽपि च धनुर्धरे ।
निषद्वरः पुमान्पङ्के वह्नाविन्द्रे च मन्मथे ॥३००५॥
निषद्वरी तु स्त्री प्रोक्ता प्रभाया रजनावपि ।
निषधो दक्षिणे मेरोः पुमान्स्यात्कुलपर्वते ॥३००६॥
देशभेदे च तद्राज्ञे कठिने तु त्रिषु स्मृतः ।
[2]निषादो द्वे पारशवे विप्रोढावृषलीसुते ॥३००७॥
चण्डालेऽपि पुमास्तु स्यादयं गीतिस्वरान्तरे ।
निषेधः प्रतिषेधेऽपि पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥३००८॥
प्रसोमदेववर्गस्य पञ्चमे साम्नि च स्मृतः ।
निष्कोऽस्त्री, हेम्नि दीनारे साष्टकर्षशते पले ॥३००९॥

---

१ निवातस्त्वाश्रये शस्त्राभेद्यवर्मण्यमारुते । (के०)

२ निषादो द्वे क्रमोढाया शूद्राया विप्रत सुते ॥

वक्षोभूषान्तरे कर्षे फले हेम्नो रहस्यपि ।
निष्कस्तु निर्गताद्येषु त्रिलिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥३०१०॥
निष्कलाऽतीतार्त्तवायामवीर्ये त्वकले त्रिषु ।
निष्कासितो निर्गमितेऽप्याहितेऽधिकृते त्रिषु ॥३०११॥
निष्कुटो ना गृहारामे स्यात्केदारकवाटयोः ।
अथैलाया निष्कुटीति स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥३०१२॥
निष्कोशो ना हस्तिकुक्षिमध्ये कोशोज्झिते त्रिषु ।
निष्क्रयो बुद्धिसम्पत्तौ निर्गमे दुष्कुलेऽपि च ॥३०१३॥
द्वे निष्ठ्योऽन्त्रीशबरजे निष्ठ्या स्वात्या स्त्रिया मता ।
निष्ठोत्कर्षेप्यवस्थाया नाशेऽन्ते च व्रते तथा ॥३०१४॥
क्लेशे निर्वहणे चैव क्तक्तवत्वोरपि स्त्रियाम् ।
निष्पत्तावपि याञ्चाया परमाया गतावपि ॥३०१५॥
निष्ठुरं तु कठोरे त्रिः परुषाक्षरवाच्यपि ।
स्त्रिया तु निष्ठुरा मुद्राविशेषे हस्तनिर्मिते ॥३०१६॥
निष्पावः शूर्पपवने राजमाषे कडङ्गके ।
पवने शिम्बिकाया ना निर्विकल्पेऽन्यलिङ्गकः ॥३०१७॥
निस् निषेधे च साकल्येऽतीतार्थे निश्चयेऽव्ययम् ।
निसर्गः सर्जने न्यासे स्वभावे निर्गमेऽपि च ॥३०१८॥
निसृष्टञ्जनिते न्यस्ते वाच्यवत्परिकीर्त्तितम् ।
निसृष्टा तु स्त्रिया व्यङ्गकथायामियमिष्यते ॥३०१९॥
निस्तारे स्यान्निस्तरणमुपाये तरणेऽपि च ।
निस्तलं वर्त्तुलेऽप्येवं स्याच्चलेऽपि च वाच्यवत् ॥३०२०॥
निस्तारः पुंसि तूणीरे हिमानिलनिवारणे ।
प्रावारभेदे तरणेऽप्युपायेऽपि प्रकीर्त्तितः ॥३०२१॥
त्रिषु निस्तुषितं त्यक्ते चाग्निहीने लघूकृते ।
निस्त्रिंशस्तु त्रिषु क्रूरे खड्गे पुंल्लिङ्ग इष्यते ॥३०२२॥
निसङ्गा त्वतिमुक्ते स्त्री त्रिषु स्यात्सङ्गवर्जिते ।
क्लीबं निस्सरणन्द्वारे मरणे भयनिर्गतौ ॥३०२३॥

उपाये निर्गमे याने मुखे पुरगृहादिनः ।
निस्स्रावो भक्तमण्डेऽपि स्यान्निस्स्रावणकर्मणि ॥३०२४॥
निहतस्त्रि हते नीचस्वरयुक्ते तथाऽक्षरे ।
निह्नवस्त्वपलापे स्याद्विश्वासे निकृतावपि ॥३०२५॥
यादवस्तु सुविश्वासे नमस्कारेऽपि साञ्जलौ[1] ।
नीको द्वे ज्ञातिखगयोर्नीका कुल्याथिका स्त्रियाम्[2] ॥३०२६॥
नीकाशो निश्चये पुंसि तुल्ये स्यादभिधेयवत् ।
नीचः पुमान् शनौ नीचैःस्वरे नीचस्तु तद्वति ॥३०२७॥
वामने च निकृष्टे च वाच्यवत्परिकीर्त्तित' ।
नीडमस्त्री कुलाये च निलये च प्रकीर्त्तितम् ॥३०२८॥
नीतं क्ली नवनीताऽन्नधनेषु त्रि तु यौगिके ।
नीतिः स्त्रिया नयेऽप्येवम्प्रापणेऽपि स्त्रियाम्मता ॥३०२९॥
नीथो विप्रे द्वयोर्धर्मशीले त्रिर्ना नृपान्तरे ।
नीपकेऽथ च नीथा स्त्री नीतौ क्ली गीतभिद्यपि ॥३०३०॥
नीपः कदम्बबन्धूकनीलाऽशोकद्रुमेषु ना ।
नीरज कमले कुष्ठे नीरजः कृष्ण इष्यते ॥३०३१॥
नीलस्तु निधिभेदे ना गिरिभित्कपिभेदयोः ।
कार्ष्ण्यशौक्ल्याख्यगुणयोस्त्रि तु तद्वति तत्र च ॥३०३२॥
स्त्र्यर्थे नीलैव वस्त्रे स्यात्संज्ञायान्तु द्वयम्भवेत् ।
नीला नीली च नील्येव प्राणिन्येषा प्रकीर्त्तिता ॥३०३३॥
नीलको नीलितर्येष वाच्यवत्परिकीत्तितः ।
नीलकण्ठो मयूरे द्वे मूलके तु शिवे च ना ॥३०३४॥
नीलकेशी स्त्रियां नील्या त्रिस्तु कृष्णशिरोरुहे ।
नीलगुः स्यात्कृमौ पुंसि भम्भराल्यान्तु सा स्त्रियाम् ॥३०३५॥
नीलग्रीवः शिवे पुंसि त्रिस्तु नीलशिरोधरे ।
नीलवासाः शनौ चापि बलदेवे पुमान्मत' ॥३०३६॥

---

१ नीक स्त्री पुंसयोर्ज्ञातौ खगे च परिकीर्त्तित ।
२ नीको द्वे ज्ञातिखगयोर्नीक पुंसि द्रुमान्तरे ।
सेवनार्थकतुल्यायां नीका स्त्रीत्वे प्रकीर्त्तिता ॥
३ नीरज कमले कुष्ठे पुंसि कृष्णे प्रकीर्त्तितम् ।

नीलशीर्षः पुमान्गोलाङ्गूले त्रिः कृष्णमस्तके ।
नीलाञ्जसाऽप्सरोभेदे नदीभेदे च विद्युति ॥३०३७॥
नीलाम्बरो राक्षसे च बलदेवे शनैश्चरे ।
नीलिका नीलिनीक्षुद्रारोगशेफालिकास्त्रियम् ॥३०३८॥
नीलिका लोहभेदे स्त्री स्यात्सिहमलनामनि ।
[1]नीली स्त्र्योषधिभेदे स्यात्काल्याख्ये च रुजान्तरे ॥३०३९॥
नीवरो वणिजे पुंसि वास्तव्ये च प्रकीर्त्तितः ।
नीवलस्तु द्वयोर्मर्त्यजातिभेदे प्रकीर्त्तितः ॥३०४०॥
वैदेहीशूद्रजे किञ्च पुण्ड्रवत्तुरगान्तरे ।
नीवी तु कवचे शस्त्रे वणिङ्मूलधने स्त्रियाम् ॥३०४१॥
स्त्रीकटीवसनग्रन्थावपि नीविवदिष्यते ।
नीव्रं नेमौ वलीकेन्द्वोरेवतीभेऽपि कानने ॥३०४२॥
नीहारस्तु तुषारेऽपि शकृदुत्सर्ग एव च ।
नूतनं त्रिष्वभिनवे स्त्रीभूमनि तु नूतनाः ॥३०४३॥
सूर्यवृष्टिचतुःशत्या वृष्टिदायाः शते क्वचित् ।
नूधा अनूधास्सान्तौ द्वौ सूतमागधयोरनप् ॥३०४४॥
नूनन्तु निश्चिते तर्के स्मरणे वाक्यपूरणे ।
ना द्वे हरे हये मर्त्येऽथ नारी योषिति स्त्रियाम् ॥३०४५॥
नृपयज्ञस्तु संग्रामे राजसूयादिकेष्वपि ।
नृपलक्ष्म नृपच्छत्रे नृपाङ्के च नपुंसकम् ॥३०४६॥
नृपात्मजः स्यात्कूष्माण्डे कटुतुम्ब्या नृपात्मजा ।
नृपार्हन्त्वगुरौ क्लीबं स्याद्राजार्हे पुनस्त्रिषु ॥३०४७॥
नृभुः प्लवे प्रतिकृतौ तथा दीर्घक्रिमौ स्त्रियाम् ।
नेत् विकल्पे निषेधे चाऽव्ययमेतत्प्रकीर्त्तितम् ॥३०४८॥
नेता भव्यतरौ पुंसि तत्फले क्लीबमिष्यते ।
नीतिक्रियाकर्त्तरि तु सारथौ च प्रभौ त्रिषु ॥३०४९॥
नेत्रोऽस्त्री वस्त्रदण्डनाडीद्रुमूलेषु मथोगुणे ।
नेत्वं द्यावापृथिव्याश्च पुमांस्तु शशलाञ्छने ॥३०५०॥

---

१ नील्योषधौ च शेफालिकायां रोगान्तरेऽपि च ।

नेपः पुरोहिते वृक्षे नयेनाभृतके त्रिपु ।
नेपथ्य स्यादलङ्कारे रङ्गभूमौ[1] नपुंसकम् ॥३०५१॥
नेपालस्त्विक्षुभिद्रक्षोभिदोर्देशे नृमूर्धनि ।
नेपालकुनटीरास्नानवमालीष्वियं स्त्रियाम् ॥३०५२॥
नेपालन्तिलचूर्णे च पङ्के मांसे च पक्षले ।
नेमः पुरोहिते वज्रेऽर्धेऽन्ने ना खे नपुंसकम् ॥३०५३॥
सदृशे तु समीपे च भवेन्नेमोऽभिधेयवत् ।
नेमिस्तिनिशवृक्षे च भित्तिमूले तथा स्त्रियाम् ॥३०५४॥
चक्रप्रान्ते च कूपे च तथा तन्मुखबन्धने ।
पीताहाख्ये परिच्छेदे वज्रे च परिकीर्त्तिता ॥३०५५॥
नैगमस्तूपनिषदि पुमानुक्तो द्दतावपि ।
वणिङ्नागरयोस्तु त्रिस्तथा निगमयोगिनि ॥३०५६॥
नैचिकी गोशिरोदेशे श्रेष्ठायाञ्च गवि स्त्रियाम् ।
नैर्ऋतो राक्षसे द्वे स्यात्त्रि स्यान्निर्ऋतियोगिनि ॥३०५७॥
नैषधं हरिवर्णे स्यान्निषधाद्रेर्यदुत्तरम् ।
वाच्यवन्नैषधः प्रोक्तस्तथा निषधयोगिनि ॥३०५८॥
नौ स्त्रिया वाचि काले च तयोमपि मता स्त्रियाम् ।
न्यंशुको रणरेणौ प्रावरणे वेणुचन्द्रयोः ॥३०५९॥
प्रवासशीले तु मतो न्यंशुकः सोऽभिधेयवत् ।
न्यक्षं कृत्स्ने निकृष्टे च वाच्यवत्परिकीर्त्तितम् ॥३०६०॥
न्यग्रोधो ना शमीवृक्षे व्याममाने वटद्रुमे ।
फले त्वस्य लुकोभावान्नैयग्रोधमिति स्मृतम् ॥३०६१॥
न्यग्रोधी तु स्त्रिया स्तम्बे द्रवन्तीसंज्ञके मता ।
न्यङ् निरस्तेऽपि नीचेऽपि वाच्यवत्परिकीर्त्तितम् ॥३०६२॥
न्यङ्कुर्गुरुकुलेवासि शिष्ये मुन्यन्तरे पुमान् ।
मृगभेदे पुनर्न्यङ्कुर्द्वयोरयमुदीरितः ॥३०६३॥
न्यस्तकस्त्वस्त्रियामर्थनिक्षेपे निहिते त्रिषु ।
न्युक्षस्त्रि नीचे क्ली कार्त्स्न्ये तृणेऽथ महिषे द्वयोः ॥३०६४॥

---

१ रङ्गज्याया वा ।

न्युङ्खः सम्यङ्मनोज्ञे च साम्नः षट्प्रवणेषु च ।
न्युब्जो व्याधौ कर्मरङ्गद्रुमे दर्भमये स्रुचि ॥३०६५॥
कर्मरङ्गफले क्लीबं कुब्जाऽधोमुखयोस्त्रिषु ।
न्यूङ्खः साम्नः षडोङ्कारेष्वथ त्रिः सुन्दरे प्रिये ॥३०६६॥
न्यूनमूने विगर्ह्ये च वाच्यवत्परिकीर्त्तितम् ॥३०६६१/२॥

प

पो ना वाताण्डपूतेषु पाने पातरि कीर्त्तितः ॥३०६७॥
स्त्रिया तु रक्षणे पाने द्यूते पूरितके च सः ।
पक्तिस्त्रिया गौरवे च पाने च परिकीर्त्तिता ॥३०६८॥
पक्त्रन्तु गार्हपत्येऽपि पिठरे स्यान्नपुंसकम् ।
पक्वं त्रि कथितो नाशोन्मुखे परिणते खले ॥३०६९॥
क्लीबन्तु पचने प्रोक्तं शृतक्षीरजदध्नि च ।
पक्षः पार्श्वगरुत्साध्यसहायबलभित्तिषु ॥३०७०॥
पार्श्वद्वारे विरोधेऽर्द्धमासे चुल्लीबिलेऽन्तिके ।
हस्तिपार्श्वे परिज्ञाने केशशब्दात्परश्चये ॥३०७१॥
चन्द्रे पक्षचरो ना त्रिर्यूथभ्रष्टैकचारिणोः ।
पक्षतिः पक्षमूलेऽपि स्त्रिया च प्रतिपत्तिथौ ॥३०७२॥
पक्षी द्वयोः खगे स्त्री तु पूर्णिमाशाकिनीभिदोः ।
आगामिवर्त्तमानाहर्युक्तरात्रौ च पक्षिणी ॥३०७३॥
पक्ष्मपुष्पच्छदे पक्षिपक्षे नयनलोमसु ।
किञ्जल्के तत्तु तूलादेः सूक्ष्मांऽशे च नपुंसकम् ॥३०७४॥
पङ्कोऽस्त्री कर्दमे पापे तथैव परिकीर्त्तितः ।
पुमान्पङ्करसः शीधौ पङ्कस्यापि रसे स्मृतः ॥३०७५॥
पङ्कारः शैवले सेतौ सोपाने जलकुब्जके ।
पङ्क्तिश्छन्दोविशेषेषु चत्वारिंशत्स्वरादिषु ॥३०७६॥
आवलौ दशसंख्यायां त्वेकत्वे तन्मितेषु तु ।
स्याद्वस्तुषु द्वित्वत्रित्वादौ सर्वत्र स्त्रियामियम् ॥३०७७॥

पचत्रं रन्धनस्थाल्या पचत्रोऽपूपकारके ।
पचम्पचा तु स्त्री दार्व्यां चम्पके ना पचम्पचः ॥३०७८॥
पचिर्ना पचतौ धातावग्नौ च क्षुधि तु स्त्रियाम् ।
पचेलिमस्तु ना वह्नौ माषे च द्वे तु घोटके ॥३०७९॥
पच्छः शिलाया ना त्रिस्तु पादपीठेन गन्तरि ।
पाणिसंज्ञे[1] तु पच्छी स्त्री भवेद्दारुटकान्तरे ॥३०८०॥
पञ्चगुप्तो द्वयोः कूर्मे ना तु चार्वाकदर्शने ।
पञ्चत्वम्पञ्चभावे च मरणे पञ्चता तथा ॥३०८१॥
स्त्री पञ्चदश्यमावास्यापौर्णमास्योऽस्त्रि पूरणे ।
पञ्चमो रागभेदेपि षडजादीना स्वरे क्वचित् ॥३०८२॥
स्त्री तु पाण्डवपत्न्या स्यात् पञ्चमी श्रीतिथावपि ।
स्यात्पञ्चमविभक्तौ च पञ्चानान्तु त्रि पूरणे ॥३०८३॥
त्रिषु पञ्चसुगन्धः स्यादन्याऽर्थे क्लीसमाहृतौ ।
पूगकर्पूरतक्कोलजातीफललवङ्गके ॥३०८४॥
पञ्चाङ्गी तु खलीने च स्त्री पञ्चाङ्गसमाहृतौ ।
अङ्गैस्तु पञ्चभिर्युक्ते स्यात्पञ्चाङ्गोऽभिधेयवत् ॥३०८५॥
पञ्चाङ्गुलस्त्वेरण्डे ना पञ्चाङ्गुलिमिते त्रिषु ।
पञ्चाननः शिवे पुंसि सिंहे त्वेष द्वयोर्मतः ॥३०८६॥
पञ्चालस्त्वृषिभेदे ना देशभेदे नृभूमनि ।
तद्राजे सर्ववचनः पाञ्चालास्यस्त्र्यपत्यके ॥३०८७॥
पञ्चाली तु स्त्रियां गीतौ पुत्रिकायाञ्च कीर्त्तिता ।
पञ्चालिका तु स्त्रीवस्त्रपुत्रिकागीतिभेदयोः ॥३०८८॥
पञ्चिका द्यूतभेदे स्याद्व्याख्या ग्रन्थान्तरेऽपि च ।
त्रि तु विस्तारके पञ्चकश्च पञ्चाङ्गसंहतौ ॥३०८९॥
पटस्तु वस्त्रे केचितु सुवस्त्रे पुंनपुसकम् ।
पटी तु स्त्री विशिष्टे स्यात्पटे प्रावरणात्मके ॥३०९०॥
पटः प्रियालवृक्षे ना फले त्वस्य नपुंसकम् ।
पटच्चरं जीर्णवस्त्रे पुम्भूम्नि तु पटच्चराः ॥३०९१॥

1

मध्यदेशगते नीवृद्विशेषे परिकीर्त्तिताः ।
पटलोऽस्त्र्यक्षिरुग्भेदेऽध्याये गेहच्छदिष्वपि ॥३०९२॥
क्ली स्त्रियोस्तु समूहेऽथ पटली पिटकान्तरे ॥
पटहस्तु समारम्भे निर्घोषे युद्धवाद्यजे ॥३०९३॥
आनकेऽपि समाख्यातः पुन्नपुंसकलिङ्गकः ।
पटिः स्त्री पटभेदे स्याद्वागुलौ कुम्भिकाद्रुमे ॥३०९४॥
पटीरः पुंसि कन्दर्पे कन्दरे चन्दनेऽपि च ।
पटीरो मूलकेदारवेणुसारेषु वारिदे ॥३०९५॥
तितउन्यपि रङ्गे च वातिके पुंसि कीर्त्तितः ।
पटुस्त्रिशूरनिर्व्याधिदक्षाऽमन्दाऽच्छबुद्धिषु ॥३०९६॥
विस्पष्टे निस्त्वरे तीक्ष्णे लवणाख्यरसान्विते ।
एष्वर्थेषु स्त्रिया पट्वी पटुरित्युभयम्भवेत् ॥३०९७॥
पटुः पुंसि पटोल्या च लवणाख्यरसान्तरे ।
ऊषसैन्धवनाम्नोस्तु क्ली स्याल्लवणयोः पटु ॥३०९८॥
पटुलन्तु बले क्लीबं त्रि तु स्याद्वाग्मिकल्ययोः ।
पटोलस्तु पुमान्वल्लिजातौ तिक्तकनामनि ॥३०९९॥
पटोली तु स्त्रियां कोशातक्यां क्ली वसनान्तरे ।
पट्टः प्रशस्तकौशेयक्षौमादौ व्रणबन्धने ॥३१००॥
शाणस्य नेत्रे स्वर्णादिकृतदीर्घाच्छपत्रके ।
गुवाकनालिकेरादिपत्रमूलस्थवेष्टने ॥३१०१॥
पट्टनं शकटैर्गम्ये घोटकैर्नौभिरेव च ।
पुटभेदनसंज्ञे च क्षुद्रग्रामे पुरेऽपि च ॥३१०२॥
पट्टबन्धः क्षत्रियायाञ्जारेण क्षत्रियेण यः ।
जनितः स्याद्द्वयोस्तत्र नाम्ना क्षत्रियकुण्डके ॥३१०३॥
अभिधेयवदेष स्यात्पट्टबन्धनकर्त्तरि ।
पठिस्तु विदुषि त्रि स्यान्ना तु वेदस्य पाठके ॥३१०४॥
स्त्रियाम्फलकिकाया स्यादल्पाया युद्धकारिणाम् ।
पणो विक्रय्यशाकादिबद्धमुष्टौ ग्लहे धने ॥३१०५॥

द्यूते शीतौ वराटाना कार्षिकव्यवहारयोः ।
मूल्ये भृतौ व्यवस्थाया विक्रये च प्रकीर्त्तितः ॥३१०६॥
पणवो डिण्डिमे चापि गजस्कन्धे प्रकीर्त्तितः ।
पणिर्ना पणतौ धातौ वणिजि त्रिपु कीर्त्तितः ॥३१०७॥
पणिकस्तु वणिग्गेहे याज्ञिकानान्तु विश्रुते ।
पुरोडाशस्य प्रथने पणिकं स्यान्नपुसकम् ॥३१०८॥
पण्डा स्त्री तत्त्वबुद्धौ द्वे गतौ ना तु नपुंसके ।
पण्डा वेदोज्ज्वला बुद्धिस्तद्योगात्पण्डितो मतः ॥३१०९॥
पण्डितः सूकराकारे मृगे स्त्रीपुंसयोर्मत ।
नासिह्लकाख्यनिर्यासे विदुषि त्वभिधेयवत् ॥३११०॥
पतङ्गो द्वे बिडालेऽश्वे शलभे पक्षिमात्रके ।
ना त्वर्के शालिभेदेऽथ पुत्रिकाया पतङ्ग्यपि ॥३१११॥
पतन्द्वयोः पक्षिणि स्यात्त्रिः स्यात्पतनकर्त्तरि ।
क्लीबम्पतत्रमाकाशे पक्षे पक्ष्यादिकस्य च ॥३११२॥
पतनन्तरुपत्रेऽपि पाते हानौ च कर्मणः ।
पताका वैजयन्त्याञ्च सौभाग्ये नाटकाङ्कके ॥३११३॥
पताकिनी चम्वा त्रिस्तु पताकी वैजयन्तिके ।
पतिर्धवे गतौ मूले धातौ च पततौ पुमान् ॥३११४॥
स्त्रियान्तु पत्नी भार्याया पतिः स्वामिनि वाच्यवत् ।
(ग्रामस्य तु प्रभौ ग्रामपत्नी ग्रामपतिः स्त्रियाम् ॥३११५॥
वृद्धो यस्याः पतिर्वृद्धपत्नी वृद्धपतिश्च सा ।
एवं प्रयोगा अन्येपि तर्कणीया यथायथम्) ॥३११६॥
पतिघ्नो वाच्यवत्पत्युर्घातके परिकीर्त्तितः ।
वैधव्यलक्षणोपेते पतिघ्नी कन्यकान्तरे ॥३११७॥
पतितस्त्रिषु कर्मभ्यो हीने प्रस्कन्न एव च ।
पतेरस्तु पुमाञ्ज्ञेयः पवने द्वे तु पक्षिणि ॥३११८॥
पत्तनत्तौ मात्रगम्ये पुटभेदननामनि ।
क्षुद्रग्रामे पुरे चापि क्रयविक्रयभुव्यपि ॥३११९॥

पत्तिस्तु पतनेऽपि स्त्री पदनेऽपि प्रकीर्त्तिता ।
एकैकेभरथत्र्यश्वपञ्चपद्बलेऽपि च ॥३१२०॥
लेपेन कृतलेखाया बाह्वादौ पदिके तु ना ।
पत्रोऽस्त्री छुरिकायातपर्णेष्विषुखगच्छदे ॥३१२१॥
पत्रको यावशूकाख्ये यवक्षारान्तरे पुमान् ।
व्यवहारगतानान्तु लेख्ये स्यात्पत्तिसंज्ञके ॥३१२२॥
अनुलेपनविन्यासभेदेऽपि नपि पत्रकम् ।
पत्रलो जातपत्रे त्रिस्तालीवृक्षे तु पत्रला ॥३१२३॥
पत्रलन्त्वघने क्लीबन्दधिभेदे प्रकीर्त्तितम् ।
पत्राङ्गं न द्वयोर्भूर्जे पद्मके रक्तचन्दने ॥३१२४॥
पत्री शराद्रयोः काण्डद्रौ रथिके ना द्वयोः खगे ।
श्येनेऽथ पत्रिणी पत्न्याः कनिष्ठस्वसरि स्त्रियाम् ॥३१२५॥
पत्रन्तु यत्र यस्याऽपि तत्र स्याद्धेयलिङ्गकम् ।
पत्रोर्णन्धौतकौशेये ना तु डुण्डुक[1]-पादपे ॥३१२६॥
पत्सलस्तु प्रहारेऽपि प्रहासे च प्रकीर्त्तितः ।
पथिकृद्वर्त्महोमाग्नौ त्रिस्तु मार्गस्य कर्त्तरि ॥३१२७॥
पथ्यम्पथोऽनपेते त्रिर्हिते नित्येषु च क्रतोः ।
स्याद्विष्टुत्यादिकाङ्गेषु ऋक्सामे दाशरात्रिके ॥३१२८॥
पथ्या तु स्त्री हरीतक्या तथार्याच्छन्दसोऽन्तरे ।
गणेषु त्रिषु यस्यादावर्धयोर्दृश्यते यतिः ॥३१२९॥
बृहतीच्छन्दसो भेदे यस्य स्याद्द्वादशाक्षरम् ।
उपोत्तमम्पदम्पादास्त्रयोऽन्येऽष्टाक्षराः स्मृताः ॥३१३०॥
क्लीबन्तु पथ्य गायत्र्यादिकच्छन्दःसु सप्तसु ।
पदमङ्घ्रौ शरे त्राणे व्यवसायाऽपदेशयोः ॥३१३१॥
चिह्नेऽङ्घ्रिप्रचिह्नेऽङ्घ्रिन्यासे पद्यभागेंऽशुवस्तुनोः ।
स्थाने वाक्ये सुप्तिङन्ते माने पञ्चदशाङ्गुलौ ॥३१३२॥
इन्द्रपुच्छेऽतिवर्गस्याऽप्यादितस्त्रिषु सामसु ।
पदको ना मध्यमणौ पदाऽध्येतर्यपि स्मृत. ॥३१३३॥

१ डुण्डुक वा ।

उपाधिभूषणादौ तु पदत्रे च नपुंसकम् ।
पदाजिर्युधि मार्गे ना पदगे तु त्रिषु स्मृत' ॥३१३४॥
पदातिः पदिके पुंसि भवेत्स्थानवति त्रिषु ।
पदारस्तु पुमान्वास्तुदेवभेदेऽड्घ्रिधूलिषु ॥३१३५॥
पदारन्तु पदालिन्दे नपुंसकमुदीरितम् ।
पद्धतिस्तु स्त्रिया पङ्क्तौ मार्गे च परिकीर्त्तिता ॥३१३६॥
'पद्मोऽस्त्री पङ्कजे क्लीबं संख्याभेदे तथेन्द्रिये ।
गजबिन्दुष्वष्टकायान्नागराजान्तरे तु ना ॥३१३७॥
निधिभेदे व्यूहभेदे वर्णपीतसितासिते ।
त्रि तु तद्वति पद्मा तु लक्ष्मीभार्ग्यो स्त्रियामियम् ॥३१३८॥
स्यात्पद्मनालिकाया पद्मचारिण्याख्यभेषजे ।
पद्मकं स्यात्पद्मकाष्ठे कुसुम्भे बिन्दुजालके ॥३१३९॥
स्यात्पद्मलाञ्छनो लोकेश्वरे ब्रह्मणि भास्करे ।
धनदेऽथ श्रियान्तारावाग्देव्योः पद्मलाञ्छना ॥३१४०॥
पद्मासनन्त्वासनस्य भेदे क्ली पुंसि धातरि ।
पद्मी द्वयोर्हस्तिनि स्यात्त्रि तु पद्मवति स्मृतः ॥३१४१॥
पद्मिनी सरसीलक्ष्म्योर्नलिन्या योषिदन्तरे ।
पद्यं क्लीबं मतं श्लोके त्रिषु स्यात्पदसाधुनि ॥३१४२॥
द्वयोस्तु पद्यो वृषले पद्या तु स्यात्स्त्रियां पथि ।
पद्रो ग्रामनिवेशे ना त्रिषु शून्ये प्रकीर्त्तितः ॥३१४३॥
पद्वा वत्से द्वयोः पुंसि तूक्तो गत्यवसानयोः ।
पनसः कण्टकिफले कण्टकेऽपि पुमान्मतः ॥३१४४॥
पनसं स्वफले क्लीबं पनसी तु रुजान्तरे ।
पन्नः स्कन्ने त्रिषु क्ली तु जिह्वाया पन्नमिष्यते ॥३१४५॥
पन्नगस्त्वोषधेर्भेदे पुमान्सर्पे तु सद्वयोः ।
पपीर्ना किरणे सूर्ये द्वे तु हस्तिनि कीर्त्तितः ॥३१४६॥

---

१ पद्मोऽस्त्री पद्मके व्यूहनिधिसंख्यान्तरेऽम्बुजे ।
ना नागे स्त्री फञ्जिका श्री चारटी पद्मगी (गे) तु च । मे०

पयस्सामान्तरे दुग्धे रजन्यामन्नतोययोः ।
पयस्या क्षीरकाकोल्यामिक्षयोर्दुधिकौषधे ॥३१४७॥
स्वर्णक्षीर्याम्पयःसाधुभवादौ तु त्रिषु स्मृता ।
पयस्वती निशानद्योः पयस्विनि पुनस्त्रिषु ॥३१४८॥
पयस्विनी नदीधेनुनिप्सु स्त्री क्षीरिणि त्रिषु ।
पयोगर्भः पुमान्मेघे जलगर्भे यथायथम् ॥३१४९॥
पयोधरः कोषकारे नारिकेले स्तने स्त्रियाः ।
कशेरुमेघयोः पुंसि वाच्यवत्तु पयोभृति ॥३१५०॥
परम्प्रकृष्टे द्विषति पूर्वार्वाक्प्रतियोगिनोः ।
अन्यस्मिन्केवले दूरे त्रिषु ना परमात्मनि ॥३१५१॥
क्लीबम्परार्धसंज्ञायाः संख्याया द्विगुणात्मनि ।
संख्यायामथवा त्रिष्वेतत्संख्येयेषु वस्तुषु ॥३१५२॥
परः श्रेष्ठादिदूरान्योत्तरे क्लीबन्तु केवले ।
द्वयोस्तूद्रे परकुलो योगार्थे तु यथायथम् ॥३१५३॥
परजातो द्वयोर्दासे स्यात्त्रिषु त्वन्यजन्मनि ।
परञ्जस्तैलयन्त्रे स्याच्छुरिकाफलफेनयोः ॥३१५४॥
परपुष्टा तु वेश्यायाम्परपुष्टो द्वयोः पिके ।
परभृद्वायसे त्रिस्तु परभर्त्तरि कीर्त्तितः ॥३१५५॥
परमस्मादनुज्ञायामव्ययम्परमेश्वरे ।
पुँल्लिङ्ग उक्तः परमरसस्तक्रे रसोत्तमे ॥३१५६॥
परमेष्ठी विधौ विष्णौ शिवेऽथ परमेष्ठिनी ।
पार्वत्याम्परमेष्ठी तु निर्वृते चोत्तमे त्रिषु ॥३१५७॥
परम्परा स्त्री सन्ताने परिपाट्याञ्च हिंसने ।
द्वयोस्तु गृहिणः पुत्रपौत्रादेः पञ्चमेऽपि च ॥३१५८॥
षष्ठे च मृगभेदे च गोकर्ण इति विश्रुते ।
परशुः पुंसि वज्रे च टङ्कणे च परश्वधे ॥३१५९॥
पुमान्परशुभिद्विघ्नराजे त्रिस्तु कुठारिणि ।
पराऽव्ययं विमोक्षाभिमुख्यप्राधान्यधर्षणे ॥३१६०॥

प्रातिलोम्ये भृशार्थे च विक्रमे च गतौ वधे ।
पराको द्वादशाहोपवासात्मव्रतखड्गयोः ॥३१६१॥
दूरेऽह्नीनक्रतूनाञ्च त्रिरात्राणां क्वचिन्मतः ।
पराक्रमो विक्रमे स्यात्सामर्थ्योद्योगयोरपि ॥३१६२॥
परागः पुष्परेणौ च स्नानीयादौ रजस्यपि ।
उपरागेऽद्रिभेदे च विख्यातौ चन्दनेऽपि च ॥३१६३॥
पराभवस्तिरस्कारे विनाशे च पुमान्मतः ।
परायणञ्चतुर्मासोपवासेऽपि नपुंसकम् ॥३१६४॥
आसङ्गेऽपि च साकल्ये तथैव परिकीर्त्तितम् ।
पराशरस्तु शक्रेऽपि व्यासस्य जनकेऽपि च ॥३१६५॥
परासनन्निरसने वधे चापि नपुंसकम् ।
परि स्यात्सर्वतोभावे वर्जने व्याधिशेषयोः ॥३१६६॥
इत्थम्भूताख्यानभागवीप्साऽऽलिङ्गनलक्षणे ।
दोषाख्याने निरसने पूजाव्याप्त्योश्च भूषणे ॥३१६७॥
परिकम्पो भये कम्पे पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
पुमान्परिकरः सङ्घे पर्यङ्कपरिवारयोः ॥३१६८॥
प्रगाढगात्रिकाबन्धे समारम्भविवेकयोः ।
परिखाऽम्बुनिधौ खेये तथा भूभृत्यपि स्त्रियाम् ॥३१६९॥
त्रि स्यात्परिगतं व्याप्ते विज्ञाने परिवेष्टिते ।
परिग्रहस्तु शपथे मूले परिजने तथा ॥३१७०॥
आदानपत्न्योरर्केन्द्वोः स्याग्द्ग्रहग्रस्तयोरपि ।
परिघस्त्वर्गले दण्डे परिघाताऽस्त्रयोरपि ॥३१७१॥
कालयोगविशेषे च मूढगर्भे च मुद्गरे ।
परिघोषो निनादे स्यादवाच्ये जलदध्वनौ ॥३१७२॥
परिचारक उक्तो द्वे दासे शुश्रूषकेऽप्यथ ।
सग्भूषणादिष्वर्थेषु नियुक्तायान्नृपस्त्रियाम् ॥३१७३॥
स्त्रीलिङ्गमात्रे कथिता कविभिः परिचारिका ।
परिच्छदो जातिभेदे शबरी विप्रजे द्वयोः ॥३१७४॥

पुँल्लिङ्गस्तूपकरणे परिच्छद उदीरितः ।
[1]परिज्वाऽग्नौ च वायौ च चन्द्रे चाऽपि पुमान्मतः ॥३१७५॥
परिणाहो विशालत्वे परितो बन्धनेऽपि च ।
परितापस्तु पुंसि स्याद्दुःखे च नरकान्तरे ॥३१७६॥
परिधानमधोवस्त्रे तदाच्छादनकर्मणि ।
परिधायो जनस्थाने परिच्छेदनितम्बयोः ॥३१७७॥
परिधिर्यज्ञियतरोः शाखायामुपसूर्यके ।
प्राकारे परिधाने च षट्सु शुक्रियसामसु ॥३१७८॥
परिप्लवा दण्डहीनस्रुचि स्त्री त्रिषु चञ्चले ।
परिबर्हो राजयोग्यद्रव्ये चापि परिच्छदे ॥३१७९॥
परिभाषणमालापेऽप्युपालम्भे नपुंसकम् ।
अतिमर्दे परिमलो गन्धे चातिमनोहरे ॥३१८०॥
रतोपमर्दविकसत्कायरागादिसौरभे ।
परिवत्सर उक्तः संवत्सरेऽपि च तद्भिदि ॥३१८१॥
परित्यागे वधे च स्त्रीनपोः स्यात्परिवर्जना ।
परिवर्त्तो विनिमये कूर्मराजे प्रवर्त्तने ॥३१८२॥
परिवादस्तु निर्वादे वीणावादनसाधने ।
परिवादी तु परिवादवति त्र्यपवादिनि ॥३१८३॥
वीणायान्तु स्त्रियामेषा कीर्त्तिता परिवादिनी ।
परिवापः परीवापो लाजेषु च परिच्छदे ॥३१८४॥
पर्युप्तौ स्थाप्यबीजालवालागेहेषु कीर्त्तितः ।
[2]परिवारः परिजने प्रावारे खड्गकोशके ॥३१८५॥
परिवित्तिस्तु परिवेदने स्त्रीत्वेऽथ नाऽग्रजे ।
यस्याकृतविवाहस्य कनीयान्दारसंग्रही ॥३१८६॥
परिवेशो वेष्टने स्यात्परिधावपि पुंस्ययम् ।
परिवेषस्तु पुँल्लिङ्गः परिधौ परिवेषणे ॥३१८७॥

१ परिज्वा तु पुमानिन्दौ याज्ञिके परिचारिके ।
२ परिवारो जङ्गमे स्यात्खड्गकोशे परिच्छदे ।

परिवेषणमुक्त क्ली भोजनायाश्च वेष्टने ।
परिशुष्कन्तु भूयोऽद्भिः सिक्त्वा घृतविपाचिते ॥३१८८॥
मासे मृदुनि मरिचाद्युपेतेऽथ त्रि शुष्कके ।
भवेत्परिसरो मृत्यौ निधावपि च पुंस्ययम् ॥३१८९॥
परिस्पन्दः परिजने स्पन्देऽपि च पुमान्मत ।
परिस्रुता स्त्री वारुण्या स्यन्ने त्रिषु परिस्रुतः ॥३१९०॥
परीरन्तु हले ज्ञेय तथा हलमुखेऽपि च ।
परीरणो द्वे कमठे ना दण्डे पट्टशाटके ॥३१९१॥
परीवारो जङ्गमे स्यात्खड्गकोशे परिच्छदे ।
परीवारो जलोच्छ्वासे महीभृद्योग्यवस्तुनि ॥३१९२॥
परीष्टिस्तु परीप्सायामभितो यजनेऽपि च ।
मार्गणे परिचर्यायाम्प्राकारेऽपि स्त्रियाम्मता ॥३१९३॥
परुलस्तु द्वयोरश्वे पार्वत्याम्परुला स्त्रियाम् ।
परुरिक्ष्वादिकग्रन्थौ धर्मेऽपि च नपुंसकम् ॥३१९४॥
परुषं निष्ठुरोक्ते त्र्यस्निग्धे मिश्रे च कर्बुरे ।
परूषः पुंसि खर्जूरे क्ली तु तत्प्रसवे मतम् ॥३१९५॥
परेतस्तु मृते त्रि स्याद्भूतजात्यन्तरे द्वयोः ।
परेधितस्तु द्वे दासे त्रि तु स्यात्परवर्द्धिते ॥३१९६॥
पर्कटी तु स्त्रियाम्प्लक्षे पूगादेश्च नवे फले ।
क्ली पर्कटम्पूगफले द्वे तु कङ्काख्यपक्षिणि ॥३१९७॥
पर्जन्यस्तु पुमानिन्द्रे चास्त्रयन्त्रान्तरे मतः ।
गर्जदभ्रनिनदे वास्तुदेवान्तरेऽपि च ॥३१९८॥
पर्णः पलाशवृक्षे ना क्ली तत्सत्ये तरुच्छदे ।
पर्णसि स्याज्जले क्लीबं शाकादौ तु नृभूमनि ॥३१९९॥
उलूखले तु पुँल्लिङ्गः पर्णसिः परिकीर्त्तितः ।
[1]पर्पः शङ्खेऽम्बुधौ वस्त्रे पुँल्लिङ्गः-परिकीर्त्तितः ॥३२००॥
पर्पटो भेषजस्तम्बान्तरेऽपूपान्तरे पुमान् ।
पर्पटी त्वाढकीसंज्ञमृत्स्नादारुहरिद्रयोः ॥३२०१॥

---

१ पर्व पल वा ।

पर्परीकस्तु ना वह्नौ भक्षे च द्वे तु कुक्कुरे ।
कुररे पर्परीकस्तु पुंस्यपामाकरे त्रि तु ॥३२०२॥
पर्परीणश्च पर्णस्य सिरायान्द्यूतकम्बले ।
पर्णचूर्णरसेऽपि स्यात्पर्परीणान्तु पर्वणि ॥३२०३॥
पर्यङ्कः पुंसि खट्वायाम्पर्यस्त्यामासनेषु च ।
पद्मार्धपद्मपादोपवेशगूढपदात्मसु ॥३२०४॥
पुंसि पर्यनुयोगोऽनुयोगोपालम्भयोर्मतः ।
स्यात्पर्यवसितं लब्धे विरतिप्राप्तवत्यपि ॥३२०५॥
पर्यस्तस्तु हते चापि पातिते चाभिधेयवत् ।
पर्याप्तं वारणे तृप्तौ यथेष्टे त्रि तु शक्तके ॥३२०६॥
पर्याप्तिस्तु स्त्रियामुक्ता प्रकामप्राप्तिरक्षणे ।
पर्यायोऽवसरे पुंसि प्रकारक्रमयोरपि ॥३२०७॥
सामस्तोत्रगतस्तोमतृतीयांशेऽपि च स्मृतः ।
पर्वमिक्ष्वादिकाण्डस्थग्रन्थौ क्लीबं शिवे पुमान् ॥३२०८॥
पर्वतः पादपे पुंसि शाकमत्स्यप्रभेदयोः ।
देवमुन्यन्तरे शैले मेघे च परिकीर्त्तितः ॥३२०९॥
पर्वाऽस्त्री विषुवादौ च पञ्चदश्यान्तथोत्सवे ।
प्रतिपत्पञ्चदश्योश्च सन्धौ ग्रन्थिद्वयान्तरे ॥३२१०॥
इक्षुवेण्वादिकग्रन्थौ प्रस्तावे लक्षणान्तरे ।
पविः काके द्वयोरेष हिंस्रे स्यादभिधेयवत् ॥३२११॥
पलोऽस्त्रिया भवेन्मासे मानेऽप्यक्षचतुष्टये ।
पलगण्डो द्वयोर्मर्त्ये किरातकरणीभवे ॥३२१२॥
तथा स्याल्लेपके चैव भित्त्यादेः सुधया द्वयोः ।
पलङ्कषा गोक्षुरके रास्नागुग्गुलुकिंशुके ॥३२१३॥
मुण्डीरीलाक्षयोश्च स्त्री राक्षसे ना पलङ्कषः ।
पललन्तिलचूर्णे क्ली मासकर्दमभेदयोः ॥३२१४॥
व्रीहिस्तम्बे तु लूनान्तफले स्यात्पललोऽस्त्र्यथ ।
महापलाले क्षोदे च पलालस्य पलल्यसौ ॥३२१५॥

पलाण्डुर्दशजातीना सुकन्दस्य क्वचिन्मतः ।
सुकन्दकन्दमात्रे च पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥३२१६॥
पलाशः किंशुके शठ्यौषधे वर्णे हरित्यपि ।
त्रि तु तद्वर्णसंयुक्ते क्लीबं पत्रे तरोर्मतम् ॥३२१७॥
किंशुकप्रसवे चाथ पलाशो राक्षसे द्वयोः ।
पलाशिका तु सत्या स्त्री लाक्षाया च प्रकीर्त्तिता ॥३२१८॥
पलाशी राक्षसे द्वे ना वृक्षे मांसादिनि त्रिषु ।
पलिघः काचकलशघटप्राकारगोपुरे ॥३२१९॥
पलितोऽस्त्री राजशौक्ल्ये तद्वद्बलवतोस्त्रिषु ।
क्ली तु शैलेयमरिचतापाङ्के कर्दमे तु ना ॥३२२०॥
पल्यङ्को मञ्चपर्यङ्कवृषीपर्यस्तिकासु च ।
क्लीब पल्ययनं पर्याणेऽश्वादेर्द्वे तु पञ्चमे ॥३२२१॥
परम्पराख्ये पुत्रस्यापत्ये पल्ययनो मतः ।
पल्लवोऽस्त्री किसलयेऽलक्तरागप्रकोष्ठयोः ॥३२२२॥
बलविस्तारविटपे पत्रमात्रेऽथ ना विटे ।
त्रिषु पल्लवितं लाक्षारक्ते सत्पल्लवे तते ॥३२२३॥
पल्लिः कुटीराल्पग्रामाऽऽश्रमव्याधालयेष्वपि ।
क्ली मुसल्याश्च पल्लीवत्पल्लिः स्थूलकुसूलके ॥३२२४॥
पवनो वायुनिष्पावांशुषुष्वर्थे तु नस्तथा ।
पाकस्थाने कुलालस्य त्रिस्तु स्यात्पवसाधने ॥३२२५॥
पवमानो मरुत्यग्नौ गार्हपत्ये विशेषतः ।
यज्ञस्तोत्रविशेषेषु त्रिषु चैव पुमान्मतः ॥३२२६॥
पवनाख्यक्रियायास्तु मतः कर्त्तरि मेघवत् ।
पविर्वज्रे शस्त्रमुखे वायावपि पुमान्मतः ॥३२२७॥
पवित्रः पवने सोमे यवरश्म्यग्निभानुषु ।
विष्णौ शक्रे क्ली तु वृष्टौ कुशे मन्त्रेऽप्सु गोमये ॥३२२८॥
दध्नि ताम्रे ब्रह्मसूत्रे हेम्न्यर्थे कलशेऽम्बुजे ।
क्षीरे दर्भाङ्गुलीये त्वस्त्री मेध्ये त्वभिधेयवत् ॥३२२९॥

पवीरन्तु हले चापि रङ्गस्थाने नपुंसकम् ।
पशुस्त्वमुक्तात्मनि नाच्छगले च गवादिके ॥३२३०॥
ग्राम्ये मृगादौ वन्ये च दृश्यर्थे त्वव्ययम्पशु ।
पश्चात्प्रतीच्याञ्चरमेऽप्यधिकारेऽपि दृश्यते ॥३२३१॥
पश्याऽव्ययम्प्रशंसाया विसयेऽपि निगद्यते ।
पश्यत्तु स्यात्प्रशंसायां विसयेऽपि तथा भवेत् ॥३२३२॥
पांशुर्धूलौ च शस्यार्थचिरसंचितगोमये ।
पांशुचामर उक्तो ना दूर्वाञ्चितटीभुवि ॥३२३३॥
वर्द्धापके प्रशंसायां पुरोटौ धूलिगुच्छके ।
पांसुजम्पांसुजाते त्रि लवणे तूषजे नपि ॥३२३४॥
पांसुला कुलटोदक्याभूषु स्त्री त्रिषु पांसुके ।
पांसुलः पुंश्चले शम्भोः खट्वाङ्गेऽपि पुमान्मतः ॥३२३५॥
पाकः परिणतौ पक्तौ सूर्ये दैत्यान्तरे गिरा ।
पाकः शिशौ जरानिष्ठापचनक्लेदनेषु च ॥३२३६॥
स्थाल्यादौ चाथ पाकं क्ली करमर्दफले मतम् ।
पाकलं कुष्ठभैषज्ये पाकलः कुञ्जरज्वरे ॥३२३७॥
पाक्यं विडाख्यलवणे स्याद्भूमिलवणे तथा ।
यवक्षारेऽपि च क्लीबम्पक्तव्ये त्वभिधेयवत् ॥३२३८॥
पाचनन्दशमूलादौ प्रायश्चित्ते नले तु ना ।
वाच्यवत्पाचयितरि हरीतक्यान्तु पाचनी ॥३२३९॥
पाचलम्पाचने नाऽग्नौ राधनद्रव्यवातयोः ।
पाञ्चजन्यो विष्णुशङ्खे शङ्खमात्रे हुताशने ॥३२४०॥
पाजो बले तथाऽन्ने च सकारान्तं नपुंसकम् ।
पाटकं याज्ञिकाना स्यात्सोमोन्माने नपुंसकम् ॥३२४१॥
[1]ग्रामार्धे त्वस्त्रियां त्रिस्तु पटेः पाटयतेस्तृतः ।
पाटकः स्यान्महाकिष्कौ कटकान्तरवाद्ययोः ॥३२४२॥

१ पाटको रोधसि ग्रामैकदेशेक्षादिपातके ।

अक्षादिचालने मूलद्रव्यापचयरोधसोः ।
पाटलस्तु पुमानाशुसंज्ञव्रीह्यन्तरे तथा ॥३२४३॥
श्वेतलोहितसंमिश्रवर्णभेदेऽथ तद्वति ।
त्रि स्त्री तु तद्वर्णाख्यायां पाटला पाटलिद्रुमे ॥३२४४॥
पुष्पे तु तस्य नप्स्त्री स्यात्पाटलं पाटलेति च ।
पाटलिः पाटलासंज्ञपुष्पवृक्षे द्वयोर्भवेत् ॥३२४५॥
विवाहार्थे पुनः शङ्खपात्रे स्यात्पाटली स्त्रियाम् ।
पाटीरो मूलके वङ्गे तितऔ वार्त्तिकेऽम्बुदे ॥३२४६॥
केदारे वेणुसारे च पुँल्लिङ्गः स्यात्पटीरवत् ।
पाठा स्त्री विडकर्ण्या[1] स्यात्ख्याते तु पठने च ना ॥३२४७॥
पाठीनः पाठके गुग्गुलौ मत्स्यभिदि तु द्वयोः ।
पाणिः पलचतुर्भागे हस्तेऽपि च पुमान्मतः ॥३२४८॥
रक्तोत्पले पाणिकं ना पणेऽशीतिकपर्दके ।
पाणिग्रहो विवाहे स्यात्पाणेश्च ग्रहणे पुमान् ॥३२४९॥
पाण्डुः कुन्तीपतौ पाण्ड्यदेशराजाऽन्तरेऽपि ना ।
शालिजात्यन्तरे रोगभेदे खर्जूरपादपे ॥३२५०॥
वर्णान्तरे तद्वति तु त्रि खर्जूरफले तु नप् ।
स्यात्पाण्डुकम्बलः श्वेतप्रावारग्रावभेदयोः ॥३२५१॥
पाण्डुरं क्ली मरुवके शुक्ले ना त्रि तु तद्वति ।
पातो ना पतने राहौ पातं त्राणे च शोषणे ॥३२५२॥
पातन्तु शुष्के त्राते च वाच्यवत्परिकीर्त्तितम् ।
पापे तु पातकोऽस्त्री त्रिः पतेः पातयतेर्ण्वुलि ॥३२५३॥
पातालन्नागलोके स्याद्विवरे वडवानले ।
पाताली वागुरायाञ्च स्थाल्याञ्चैव स्त्रियाम्मता ॥३२५४॥
पातिली वागुराया स्यान्नारीपात्रप्रभेदयोः ।
पातुकः पतयालौ त्रिर्ना प्रपातेऽबिभे द्वयोः ॥३२५५॥
पात्रम्पात्री च पात्रश्च पिबेस्त्रातरि शोष्टरि ।
तथैव भाजनेऽपि स्यादथ योग्ये स्रुगादिके ॥३२५६॥

---

1 विडपर्ण्यां वा ।

आढके मण्डिते वित्ते नद्याः कूलद्वयान्तरे ।
प्रधानाङ्गे च सुगुणे पर्णे पात्रन्नपुंसकम् ॥३२५७॥
पात्रटस्तु कृशे त्रि स्यात्कर्पटे तु पुमानयम् ।
पात्रटीरः कांस्यलोहरौप्यपात्रेऽपि पावके ॥३२५८॥
सिंहाणेऽपि पुमांस्तद्वद्युक्तव्यापारमन्त्रिणि ।
पाथः स्थाने जलेऽन्ने च व्योम्न्यर्केऽग्नौ नपुंसकम् ॥३२५९॥
पाथिरस्त्री रवौ चन्द्रस्वर्गज्योतिर्नदीषु नप् ।
पादोऽशौ चरणे वृक्षेमूलेऽद्रेः प्रान्तपर्वते ॥३२६०॥
तुर्यभागे पद्यभागे परिमाणान्तरेऽपि च ।
पादचत्वर इत्युक्तश्छागसैकतपिप्पले ॥३२६१॥
करके परदोषैकप्रवक्तृपुरुषेऽपि च ।
पादपस्तु पुमान्वृक्षे पादपीठेऽप्यथ स्त्रियाम् ॥३२६२॥
पादपा पादुकाया स्यात्पादरक्षे तु भेद्यवत् ।
पादपाशी खड्डुकाया शृङ्खलायामपि स्त्रियाम् ॥३२६३॥
पादबन्धनमित्युक्तं क्लीबं चरणबन्धने ।
तथा जीवधनाभिख्ये गोमहिष्यादिवस्तुनि ॥३२६४॥
उपानहि स्त्रिया पादरक्षणी क्ल्यङ्घ्रिरक्षणे ।
पादातन्तु पदातीना सङ्घे क्लीबम्प्रकीर्त्तितम् ॥३२६५॥
पदातिसम्बन्धिनि तु पदातौ च त्रिषु स्मृतम् ।
पादावर्त्तः पुमान्पादस्यावर्त्तेप्यरघट्टके ॥३२६६॥
पादिका मन्दिरस्याल्पस्थूणायामप्युपानहि ।
रसतुर्येण हेमादेर्वेधे चापि स्त्रियाम्मता ॥३२६७॥
क्रीताद्यर्थे पादिकस्त्रि स्यात्पत्तरि तु पादकः ।
पादुः पादूरपि स्त्री स्यात्पादुकायामुपानहि ॥३२६८॥
पानन्तु पीतौ त्राणे च पानपात्रे च शोषणे ।
दर्शने क्वाप्यथो पानः पुमान्निःश्वासमारुते ॥३२६९॥
पानीयन्तु जले क्लीबं पातव्ये तु मतं त्रिषु ।
पानीयसम्भवं तु क्ली कूप्याख्यलवणान्तरे ॥३२७०॥

त्रि तु यत्किञ्चिदन्यत्स्याद्वारिजन्तत्र कीर्त्तितम् ।
पापस्तु कुत्सिते क्रूरे त्रिषु क्लीबन्तु दुष्कृते ॥३२७१॥
बिभीतकफले चाथ बिभीतकतरौ पुमान् ।
पापर्द्धिर्मृगयायां स्त्री पापऋद्धौ यथायथम् ॥३२७२॥
पाप्मा रोगे च पापे च नान्त' पुंसि प्रकीर्त्तितः ।
पामरो वाच्यवत्खण्डे नीचे चाज्ञे च कीर्त्तितः ॥३२७३॥
पायसोऽस्त्री दुग्धसिद्ध ओदने पुंसि तु स्मृतः ।
श्रीवेष्टाह्वयनिर्यासे पयोयोगिनि तु त्रिषु ॥३२७४॥
पायुर्भगे गुदे चापि पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
पारोऽस्त्र्यन्यतटे प्रान्ते साख्यतुष्ट्यन्तरे च ना ॥३२७५॥
पारी पूरे दोहपात्रे पादरज्जौ च दन्तिनः ।
पुष्पधूलौ च खण्डेऽथ पारा स्त्री सरिदन्तरे ॥३२७६॥
मध्यदेशस्थिते पारस्तु त्रिस्तारकपालके ।
क्वचित्खण्डे परागे च पारस्तु त्रिषु तारके ॥३२७७॥
पारः पुमान्स्यात्तरणपारतर्षिनृपान्तरे ।
पारकस्तारयितरि तर्पके पूरके त्रिषु ॥३२७८॥
पारके पारकास्तु स्युर्नृजातिभिदि भूम्नि पुम् ।
पारणस्तारके त्रिर्ना मेघे क्ली तु समापने ॥३२७९॥
व्रतान्तभोजने क्ली स्त्री पारणम्पारणापि च ।
कात्स्न्र्ये समस्तपाठेऽपि पारणं केचिदूचिरे ॥३२८०॥
पारतः पारदे पुंसि पारतस्तसि चाव्ययम् ।
पारदः पारते पुंसि त्रिस्तु पारस्य दातरि ॥३२८१॥
उदीच्यनीवृद्भेदे तु पारदाः स्युर्नृभूमनि ।
पारपारः पुमान् विष्णौ साख्यतुष्ट्यन्तरे तु नप् ॥३२८२॥
पारगे त्रिः पारमितो भावे पारमितास्य च ।
पारलौकिकमन्यस्य लोकस्य त्रिषु योगिनि ॥३२८३॥
मौक्तिकाकरभेदे तु पुंसि तन्मौक्तिकेऽपि च ।
द्वे तु पारशवो विप्रस्योढशुद्रासुते तथा ॥३२८४॥

परस्त्रीतनये चापि मौक्तिके तु पुमान्मतः ।
अथास्त्रिया स्यात् शस्त्रेऽपि लोहे कालायसाह्वये ॥३२८५॥
मध्यदेशनृजातीना भेदे तु स्युर्नृभूमनि ।
पारापारन्तीरयुगे पारापारस्तु वारिधौ ॥३२८६॥
अथ पारायणन्ध्याने तत्परेऽधीष्ट आश्रये ।
साकल्यासङ्गयोश्च स्यादङ्कुशस्य च बन्धने ॥३२८७॥
जलेन चतुरो मासान्वर्त्तनात्मनि च व्रते ।
कात्स्न्र्ये समस्तपाठ्ये च पाठे पारायणस्तु ना ॥३२८८॥
कथकेऽपि च शिष्टेऽपि कथितः कस्यचिन्मते ।
पारायणी सरस्वत्या कर्मध्यानप्रभासु च ॥३२८९॥
पारावतो व्रीहिभेदे तरुभेदेन्द्रनीलयोः ।
अतस्या वर्णभेदे चेषत्पाण्डौ त्रि तु तद्वति ॥३२९०॥
नीचेऽप्यथ द्रुमस्यात्रोक्तस्य पारावते फले ।
[1]वर्मण्यप्यथ पारावतो द्वे गृहकपोतके ॥३२९१॥
पारावती गोपगीते नदीभिल्लवलीफले ।
पारावतपदी स्त्री स्याज्जीवन्तीसंज्ञभेषजे ॥३२९२॥
यथासमासं योगार्थे लिङ्गाद्यस्य प्रकीर्त्तितम् ।
[2]पारावारोऽम्बुधौ पारावारन्तु स्यात्समाहृतौ ॥३२९३॥
पारावारे परार्वाचोः कूलयोरसमाहृतौ ।
पारिः सृणिगुणे घण्टा स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ॥३२९४॥
पारिजातः सुरद्रूणा पञ्चाना कश्चिदिष्यते ।
वृक्षभेदे च मन्दारपारिभद्रादिनामनि ॥३२९५॥
पारिन्दस्तु पुमान्वृक्षे गाथके त्वभिधेयवत् ।
पारिप्लवस्त्वाकुलेऽपि चञ्चले चाभिधेयवत् ॥३२९६॥

---

१ चर्मण्यथ वा ।

२ पारावार पुमान्विष्णौ सारव्यतुष्ट्यन्तरे तु नप् ।
पारावार तीरयुगे पारावारस्तु वारिधौ ॥

कथान्तरेऽश्वमेधादिकीर्त्तनीये पुमान्मतः ।
पारिभद्रस्तु मन्दारे निम्बद्रौ देवदारुणि ॥२१९७॥
पारिव्याधस्तु पुंसि स्याद्वेतसे च द्रुमोत्पले ।
पारुष्य परुषत्वे च दुर्वाक्ये चेन्द्रकानने ॥२१९८॥
बृहस्पतौ तु पारुष्यः पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
पार्थिवः पुंसि भूपेऽथ पृथिव्या विदिते त्रिषु ॥२१९९॥
पृथिव्याश्च विकारे स्यादिदमर्थादिके तथा ।
तत्र स्त्र्यर्थे भवेद्वृत्तौ पार्थिवा पार्थिवीति च ॥२२००॥
पार्थिवी तु स्त्रियामेव जानक्याम्परिकीर्त्तिता ।
पार्परो भक्तसिक्थे स्यात्कीनाशे राजयक्ष्मणि ॥२२०१॥
जराटेऽपि कदम्बस्य केसरे च गदान्तरे ।
पार्यः पारहितेऽन्त्ये त्रिः पार्यन्त्वन्ते नपुंसकम् ॥२२०२॥
पार्वतस्तु पुमान्निम्बे त्रि पर्वतभवादिके ।
पार्वती तु भवान्यामप्याढकीसंज्ञमृद्यपि ॥२२०३॥
गोपाल-[1]पत्रिकायाञ्च गजभक्ष्याख्यभूरुहे ।
पार्श्वन्तु कक्षाऽधोभागे पर्शुवृन्दात्मके तनोः ॥२२०४॥
चक्रोपान्तेऽन्तिके ना तु जैनतीर्थकरान्तरे ।
पार्श्व्यौ पुनः स्त्रियौ द्यावापृथिव्योः परिकीर्त्तितौ ॥२२०५॥
पार्ष्णिरुन्मत्तनार्यां स्त्री पादग्रन्थ्यधरे तु सा ।
सैन्यस्य पृष्ठभागे च स्त्रिया पुंसि च कीर्त्तिता ॥२२०६॥
पाली स्त्री जडकन्यायाम्पालस्तु त्रिषु पालके ।
पालस्त्राणे पुमानस्त्री द्रोणाख्ये काष्ठपात्रके ॥२२०७॥
पालकस्तु पुमान्हास्तिशिरोमध्यस्य पार्श्वयोः ।
गजज्वरे च द्वे त्वश्वे क्ली तु कुष्ठाख्यभेषजे ॥२२०८॥
पालङ्कः शल्लकीशाकभेदयोः श्राजिपक्षिणि ।
पालिः कर्णलताऽग्रेऽश्रौ पङ्क्तावङ्कप्रभेदयोः ॥२२०९॥

---

1 पुत्रिकाञ्च वा ।

छात्रादिदेये स्त्री पाली यूकासश्मश्रुयोषितोः ।
पालिकस्तु पुमान्वृक्षे नृपतावपि कीर्त्तितः ॥३३१०॥
भेद्यवद्राथके मुख्ये पूज्ये रक्षक एव च ।
पालुकः सूपकारेऽभिधेयवत्प्रोच्यतेऽथ च ॥३३११॥
लघुवाचिनि सूपे ना स्याद्ध्वर्यो च पालुकः ।
पाल्वरस्तु द्वयोर्दूते क्लीबन्त्वन्धपुरान्तरे ॥३३१२॥
पावकोऽग्नौ सदाचारे वह्निमन्थे च चित्रके ।
भल्लातके विडङ्गे च पुँल्लिङ्गः परिकीर्त्तितः ॥३३१३॥
पावनन्तु जलेऽपि स्यात्प्रायश्चित्ते नपुंसकम् ।
अथ स्यात्पावयितरि पवितर्यपि वाच्यवत् ॥३३१४॥
पावनस्तु पुमान्व्यासे पावकेऽपि प्रकीर्त्तितः ।
पाशो ना पाशनाया सुब्धातोः पाशयतेर्घञि ॥३३१५॥
रज्ज्वादिप्रान्तविन्यस्तग्रन्थिभेदे तथैव च ।
मृगपक्ष्यादिबन्धार्थयन्त्रभेदे च तत्कृते ॥३३१६॥
स्त्री तु केशाच्छिखाया स्यात्केशपाशिन्यथ त्रिषु ।
याप्ये प्रत्ययसंज्ञः स स्वार्थिको निहतस्वरः ॥३३१७॥
पाशी तु वरुणे पुंसि व्याधे पाशी च पाशिनी ।
पुमान्पाशुपतो वृक्षे शिवमल्लीबकाभिधे ॥३३१८॥
त्रि स्यात्पशुपतेः सम्बन्धिनि क्ली तु व्रतान्तरे ।
पिङ्गो मण्डलिसर्पाणा प्रभेदे महिषे द्वयोः ॥३३१९॥
ना पिशङ्गाह्वये वर्णे ऋषिभेदे च सर्षपे ।
पिशङ्गवर्णयुक्ते तु त्रि स्त्रिया पिङ्गलाह्वये ॥३३२०॥
पिङ्गा पक्ष्यन्तरे ब्रह्मरीतिसङ्गे च लोहके ।
तथा गोरोचनाहिङ्गुनालिकाचण्डिकासु च ॥३३२१॥
पिङ्गी तु शम्याम्पिङ्गन्तु तालके क्लीबमिष्यते ।
पिङ्गलो नागमुनिभिद्विष्णुब्रह्मशिवाग्निषु ॥३३२२॥
रवेरन्यतमे पारिपार्श्विकानां पिशङ्गके ।
वर्णे तद्वति तु त्रि स्त्री करिण्या पिङ्गला मता ॥३३२३॥

पुण्डरीकाभिधानस्याग्नेयदिक्करिणस्तथा ।
षण्णामन्यतमायाश्च निर्विषाणा जलौकसाम् ॥३३२४॥
शरीरनाडिभेदे च पक्षिजात्यन्तरेऽपि च ।
महाभारतविख्यातवेश्यायां लोहभिद्यपि ॥३३२५॥
ब्रह्मरीतिसमाख्यायां ह्रीबेरे तु नपुंसकम् ।
द्वयोर्बिडाले नकुले वानरेऽपि च पिङ्गलः ॥३३२६॥
पिचुर्ना कुष्ठभित्कर्षमानतूलसुरान्तरे ।
पिचुलो झावुकेऽपि स्यादिज्जले जलवायसे ॥३३२७॥
पिच्चटो नेत्ररोगे ना क्लीबं सीसकरङ्गयोः ।
पिच्छा पूगच्छटाकोशमोचाशाल्मलिवेष्टके ॥३३२८॥
सर्वपिच्छिलमण्डे च पङ्क्तावश्वपदामये ।
यवाग्वाश्च स्त्रियां पिच्छस्तु द्वयोर्बर्हचूडयोः ॥३३२९॥
पक्षिणस्तु छदे क्लीबं पिच्छ पुच्छे तु पुंस्ययम् ।
पिच्छः स्याद्गुणभेदे च यद्वा पिच्छिल उच्यते ॥३३३०॥
[1]पिच्छूली त्रिस्तृणस्तम्बे राशौ पिच्छूल एष ना ।
पिञ्जरः पीतरक्ताख्ये मिश्रवर्णान्तरे पुमान् ॥३३३१॥
त्रि तु तद्वत्यथ क्लीब हरितालेऽपि पिञ्जरम् ।
पिञ्जा तूले हरिद्रायाम्पिञ्जन्तु क्ली बले स्मृतम् ॥३३३२॥
पिञ्जस्तु स्याद्वधे पुंसि व्याकुले त्वभिधेयवत् ।
पिटो रोमपुटे तद्वत्कण्डोलेऽपि पुमान्मतः ॥३३३३॥
पिटं पिटाटिकाख्ये क्ली छदिषोऽवयवे मतम् ।
पिटकस्त्रिषु विस्फोटे मञ्जूषायाम्पुमान्मतः ॥३३३४॥
पिठरम्मुस्तके मन्थदण्डेऽपि स्यान्नपुंसकम् ।
पिठरी तु स्त्रियां क्लीबेऽपि स्यात्स्थाल्युखयोरियम् ॥३३३५॥

---

१ स्यात्पक्षिपक्षेऽपि मयूरस्य शिखण्डके ।
स्त्रियाम्पुंसि तु लाङ्गूले न द्वयोर्बर्हचूडयो ।

[1]पिण्डो बाले बले सान्द्रे देहागारैकदेशयोः ।
देहमात्रे निकाये च गोलसिल्हकयोरपि ॥३३३६॥
ओड्रपुष्पे च पुंसि स्यात्क्लीबमाजीवनायसोः ।
पिण्डी तु पिण्डीतगरेऽलाबुखर्जूरभेदयोः ॥३३३७॥
पिण्डपुष्पमशोके च जवायाश्च कुशेशये ।
स्त्रियाम्पिण्डफलाऽलाबुवल्ल्या योगे यथायथम् ॥३३३८॥
[2]पिण्डारः क्षपणे गोपे महिषीरक्षके द्रुमे ।
पिण्डारको ना पिण्डीके चित्राङ्गद्वीपिनि द्वयोः ॥३३३९॥
पिण्डिर्ना पिष्टधानादिचूर्णे निःस्नेहपिण्डके ।
पिण्डिकस्तु पुमान्गेहावयवेऽलिन्दसंज्ञके ॥३३४०॥
पिण्डिका तु स्त्रियान्नाभौ रथचक्रस्य कीर्त्तिता ।
जङ्घापिण्डे तथा हस्तिचरणावयवान्तरे ॥३३४१॥
पिण्डितो ना तुरुष्केऽथ त्रिषु स्याद्गणिते घने ।
पिण्डिलस्तु पुमान्मेघे हिमे क्ली गणके त्रिषु ॥३३४२॥
पिण्डीतकः स्यात्तगरे मदनाख्यमहीरुहे ।
पिण्याकोऽस्त्री तुरुष्काख्यनिर्यासे हिङ्गुकिण्वयोः ॥३३४३॥
श्रीपिष्टाख्ये च निर्यासे यवानीतिलकल्कयोः ।
पितामहो विरिञ्चे ना पितुश्च पितरि स्मृतः ॥३३४४॥
पितामही पुनः स्त्रीत्वे पितुर्मातरि कीर्त्तिता ।
पितुस्त्वन्ने विरिञ्चे च सूर्ये चापि पुमान्मतः ॥३३४५॥
पितृप्रपा तु योगार्थे गयायामाम्रसेचने ।
पित्तलं त्वारसंज्ञे क्ली लोहभेदे स्त्रियाम्पुनः ॥३३४६॥
पित्तला तोयपिप्पल्या त्रिस्तु पित्तकरे भवेत् ।
पित्र्या तु पूर्णिमाया स्त्री पित्र्यन्तु पितृदैवते ॥३३४७॥

१ पिण्डो निवापे सङ्घात आजीवे च गुडेरके ।
बाले च पुद्गले (पुङ्गले) पिण्डस्त्वस्त्रिया काय इष्यते ।
पिण्डी तु स्त्री देवपीठे भक्तपिण्डेऽपि कीर्त्तिता ।

२ पिडार वा ।

पितृसाधौ पितुश्चैवागतादौ वाच्यव मतम् ।
पि सा खगे द्वयोस्त्रिस्तु पत्तु पतितुमेष्टरि ॥३३४८॥
ापदारो महिषीपाले गोपे द्वे क्षपण तु ना ।
पिनाक कार्मुके शम्भो शूलेऽपि परिकीर्तित ॥३३४९॥
पांशुवर्षे च दण्ड च पुनपुंसकयोरयम् ।
द्वयो पिपतिष पक्षिण्यथ त्रि पतनोत्सुके ॥३३५ ॥
पिप्परस्तु पुमा वृक्षभदे स्यात्स्त्री तु पिप्परी ।
पिप्पल तु जले क्लीब वृक्षाणा च फले तथा ॥३३५१॥
वस्त्र छेदप्रभेदे च सूचीसूत्रेऽपि चूचुके ।
पिप्पली तु कणायाश्च कणमूले च हास्तन ॥३३५ ॥
मृज्यमानेऽतिवर्गस्य सामभदे च सप्तमे ।
निरङ्कुले पक्षिभदे ना वश्वत्थ हि पिप्पल ॥३३५२॥
क्लीब पिप्पलक स्यूतिसूत्र वृते स्तनस्य च ।
पियालो वृक्षयो सन्नकद्रुराजादनाख्ययो ॥३३५४॥
क्ली तु तत्प्रसवे द्राक्षाया पियाला स्त्रिया मता ।
पिल्लस्त्रिषु स्यात्क्लिन्नेऽक्ष्णि तथा क्लिन्नाक्षिमत्यपि ॥३३५५॥
पिशाचस्त्रिषु सोन्मादे देवयोन्यन्तरे द्वयो ।
पिशित क्ली भवे मासे मांस्यां तु पिशिता स्त्रियाम् ॥३३५६॥
पिशील क्लीबमुद्दितमेतदसद्वयान्तर ।
अथ स्त्रिया पिशीलीति वीणाभदे प्रकीर्त्तिता ॥३३५७॥
पिशुन कुङ्कुमे रूपे तगरे च नपुंसकम् ।
नारदेऽपि च काले ना सूचकक्रूरयोस्त्रिषु ॥३३५८॥
स्पृक्कायां तु स्त्रियामेषा पिशुना परिकीर्त्तिता ।
पिष्टको घृतपूपादौ नत्ररोगान्तरेऽपि च ॥३३५९॥
पीको जलाशये योनौ पुल्लिङ्ग परिकीर्तित ।
पीठ स्यादासने स्थाने तीर्थासनभिदोरपि ॥३३६ ॥

---

१ निरङ्कुके वा ।

२ पिल्ल पुमानित्यन्ये क्लिन्नाक्षे पुनरन्यवत् ।

अवधापूरण ना तु सूर्ये मत्स्यान्तरेऽपि च।
कसामात्येऽपि कस्मिश्चिदसुरेऽपि तथोदित ॥३३६१॥
पीठकस्त्वस्त्रियां पीठ शिविकायामपि क्वचित्।
पीठिका तु स्त्रियां क्षुद्रपीठसुन्दरपीठयो ॥३३६ ॥
पीठमर्दोऽतिधृष्ट स्त्रर्नायकस्य प्रिये तु ना।
पीडन मर्दने दु खदानेप्यावरणेप्यना ॥३३६३॥
पीडा व्यथा शिरोमालाकृपासु सरलद्रुमे।
उपरागोपेक्षणादौ केषाचित्पिटकेपि सा ॥३३६४॥
पीडित कृतपीडे त्रि क्ली पीडारतबन्धयो ।
पीतो ना ग धके हारिद्राभवर्णे च कीर्त्तित ॥३३६५॥
शा मलिद्वीपवैश्येऽपि गोमूत्रोद्भववर्णके।
त्रि तु तद्वणवति च पिबते पीयतेस्तथा ॥३३६६॥
कर्मण्यथ हरिद्राया पीता पीतौ तु नप् स्मृतम्।
पीतकाबेरमित्येतत्कुङ्कुमे पित्तलेऽपि च ॥३३६७॥
पीतचन्दनमुद्दिष्ट कालीयकहरिद्रया ।
दीपके दर्पणे चापि केषाञ्चित्पीतचम्पक ॥३३६८॥
स्त्री पीततण्डुला कङ्गुधान्ये स्याद्यौगिके त्रिषु।
पीतदारुस्तु नप्पीतचन्दने देवदारुणि ॥३३६९॥
अग्नौ सुवर्णे [क्लीब स्यात्] ताम्रसारे च चन्दने।
पीतदुग्धा मता स्वर्णक्षीर्यामपि तथा गवि ॥३३७ ॥
पीतनो नाम्रातके क्ली हरिताले च कुङ्कुमे।
पीतदारुणि च प्रोक्तमाम्रातकफलेऽपि च ॥३३ १॥
पीतपुष्पस्तु ना कासमर्दकूष्माण्डयोर्मत ।
शाखोटे कर्मरङ्गेऽपि पुमा पीतफलो मत ॥३३ २॥
द्वे पीतमारुत सर्पभेदे योगे यथायथम्।
पीतरक्तो रक्तपीते पीताऽस्रु यपि चेष्यते ॥३३ ३॥
पीतराग मधूच्छिष्टे मृणाले न स्त्रियामिदम्।
पीतल पीतवर्णे ना पीते त्रि पित्तले तु नप् ॥३३७४॥

१ पीतदारुस्तु खदिरे देवदारुद्रुमे पि च।

पीतवृक्षा देवदारुद्रुमे स्योनाकपादपे ।
स्या पीतशोणितोऽप्यत्र यौगिकं वाच्यथायथम् ॥३३ ५॥
पीतसारो मलयजे गोमेदकमणावपि ।
पीता पक्कारे कदलीभेदशिंशपयोरपि ॥३३ ६॥
हारद्रायां महायोतिष्मत्यामतिविषौषधे ।
पीताङ्गो भेकभेदेऽपि तथा स्योनाकपादप ॥३३ ॥
पीताब्धि स्यादगस्त्येऽपि पुल्लिङ्गश्चीनसागरे ।
पीताम्बरस्तु शैलूष तथा कैटभसूदने ॥३३ ८॥
पीतिस्तु स्याद्द्वयोरश्वे पानकर्मणि तु स्त्रियाम् ।
पीती तु स्याद्द्वयोरश्वेऽथ पीतवति वाच्यवत् ॥३३ ९॥
पीतुद्वयो पक्षिणि स्या लाचने तु प्रभाकरे ।
यूथाध्यक्षगजे पुसि बाला पचषकेऽपि च ॥३३८ ॥
वालाना घृतपानार्थभाजने च पुमा मत ।
पीतदारुस्तु खदिर देवदारुद्रुमेऽपि च ॥३३८१॥
पीथो ना नवनीतेऽग्नौ बालपेयघृतेऽपि च ।
पानेऽथ पीथ क्ली क्षीरे जलेऽपि परिकीर्त्तितम् ॥३३८५॥
पीनसो ना प्रतिश्याये द्वे तु मण्डलसञ्ज्ञिनाम् ।
षडिंवशते सपजातिभेदाना क्वचिदिष्यते ॥३३८३॥
पीनस्कधो वराहे द्वे स्थूलांसे तु त्रिषु स्मृत ।
पीयकोऽसुरजातौ द्वे तथैव त्रिषु निन्दके ॥३३८४॥
पीयुद्वयोरुलूके स्या ना काले किरणे रवौ ।
पीयु काकोलूकयोर्द्वे त्रिषु हिंस्रे प्रकीर्त्तित ॥३३८५॥
पीयुर्ना किरणे काले सुवर्णे पावके रवौ ।
पीयूष त्वमृते दुग्धे नवसूतगवीभवे ॥३३८६॥
पीला स्यादप्सरोभेदे स्त्रीविशेषे तथा मता ।
पीलुस्तु कटफले काण्डे पुष्प गुडफलद्रुमे ॥३३८ ॥

---

१ पीलु पुमा प्रसूने स्या परमाणौ मतङ्गज ।
अस्थिखण्डे च तालस्य काण्डपादपभेदयो ।

तालकाण्डे क्रमा वाण पुद्गले शरकोरक ।
फालास्थिखण्डे च पुमान्द्वे तु पीलुमतङ्गजे ॥३३८८॥
कटफलस्य तु पीलोश्च फले पीलु नपुसकम् ।
पीलुको वृक्षभेदे ना द्वयोस्तु स्यात्पिपीलके ॥३३८९॥
पीलुपर्णी तु मूर्वाया बिम्बिकायामपि स्त्रियाम् ।
पीव स्थूले वाच्यवत्स्यात् पीवा तु स्यात्स्त्रिया जले ॥३३९ ॥
पीवा वायौ पुमान्स्थूले वाच्यवत्पीवरी पुन ।
युवत्या च शतावर्या तथा च गवि कीत्तिता ॥३३९१॥
बर्हिषपितृकन्याया पत्न्या वेदशिरोमुने ।
पीवरस्तु द्वयो कूर्मे स्थूले तु त्रिषु कीर्त्तित ॥३३९२॥
पीवरा त्वश्वगन्धाया शतावर्या प्रकीर्त्तिता ।
पीवरन्तु मत क्रौञ्चद्वीपवर्षान्तरे नपि ॥३३९३॥
पीवरी तु स्त्रियामेषा शतावर्या प्रकीर्त्तिता ।
पुश्चल स्वैरिपुरुष स्वैरिण्या पुश्चली मता ॥३३९४॥
पुश्चलूर्व्यभिचारिण्या स्त्री ना तु व्यभिचारिणि ।
अथ पुसवन गर्भस्त्रिया सस्कारकर्मणि ॥३३९५॥
क्षीरे पुसश्च सवने नपुसकमुदीरितम् ।
पुस्त्वन्तु पुरुषत्वेऽपि शुक्रेपि क्वचिदिष्यते ॥३३९६॥
पुक्कसी कलिकायां च नीलिकायामपि स्त्रियाम् ।
श्वपचे तु द्वयारेष पुक्कसस्त्वधमे त्रिषु ॥३३९७॥
पुङ्ख श्येने द्वयोर्ना मङ्गलाचारशराङ्गयो ।
पुङ्गल सुन्दराकारे त्रिषु पुस्यात्ऽऽत्मदहयो ॥३३९८॥
पुङ्गवस्तु बलीवर्दे प्रभेदेप्यौषधस्य च ।
उत्तरस्थ पुन श्रेष्ठ पुङ्गव परिकीर्त्तित ॥३३९९॥

---

१ पीलुपर्णी बिम्बिकाया मूर्वायामोषधि भिदि ।

२ उल्बे द्वितीयसंस्कारे दुग्धे पुसवन मतम् ।

३ पुङ्ख श्येने द्वयोर्ना तु कर्त्तर्याक्ने शराङ्गके ।
पुङ्गवस्त्वृषभ श्रेष्ठ प्रभदेप्यौषधस्य च ।

पु छ पश्चात्प्रदेशे मुरयाङ्गे लाङ्गलयोर्नृनप् ।
पुच्छी स्यादकपर्णे ना कुक्कुट तु द्वयोर्मत ॥३४ ॥
पुञ्जिष्ठ कैवर्त्तके द्व वाच्यव पुञ्जिते मत ।
पुट स्त्रीपुसयो शूद्रकवरीसम्भवे मत ॥३४ १॥
पूर्या करण्ड्या कौपीन पुटस्तु स्या मसुद्गक ।
छन्दोऽन्तरे पुट तु स्यात्क्लीव जातीफले पुरे ॥३४ ॥
पुटक स्यात्पत्रपुट पाणिमुद्रा तरे पुट ।
पुटिका भस्त्रिकाशुक्त्योरेलायाञ्च स्त्रियाम्मता ॥३४ ३॥
जातीफले तु पुटक कमले कुमुदेऽ। च ।
पुटग्रीवा तु गगर्या ताम्रघट्यामपि स्त्रियाम् ॥३४ ४॥
पुटभेदो नदीवक्त्रे पत्तनातोद्ययोरपि ।
पुटित स्याद्धस्तिपुटे त्रि तु स्यूत च पाटित ॥३४ ५॥
पुण्डरीक सिते छत्रे कुष्ठ याध्य तरेऽपि च ।
पद्ममात्रे सिताम्भोज बालुकारयविषा तरे ॥३४ ६॥
स्यादाम्रस्य फले ग धद्रव्ये मदनकाह्वये ।
पुण्डरीकस्त्वग्निदिशो गजे हस्तिज्वरा तरे ॥३४ ॥
कोशकारा तरे चेक्षुशालिजातिभिदोरपि ।
महाश्वेतापतौ चापि विष्णुभक्त द्विजा तरे ॥३४ ॥
द्वयोस्तु सर्पभेदा ये राजिलारयास्त्रयोदश ।
तेषामेकत्र भेदे च याघ्रे च परिकीर्त्तित ॥३४ ९॥
आनूपमासवगस्य मध्ये य प्लवसज्ञक ।
हसादिगण उद्दिष्टस्तत्र चैकत्र पक्षिणि ॥३४१ ॥
अस्त्रियां तिलके यज्ञभेदेऽपि परिकीर्त्तित ।
पुण्डरीका त्वप्सरोभि क्रौ चद्वीपसरिद्भिदो ॥३४११॥
पुण्डरीकमुख पद्मवदने वाच्यव मत ।
पुण्डरीकमुखी तु स्त्री जलौकाभिदि कीर्त्तिता ॥३४१ ॥

१ पुटी त्रयी करण्ड्यां स्त्री नगरे ना समुद्गके ।
पुटो द्वे कबरी शूद्रसम्भवेथ पुटी त्रिषु ।

पुण्डरीकाक्ष इत्येष विष्णौ जलखगान्तरे ।
पुण्डरीकाक्षमित्येतत्क्लीबं स्याद्भेषजान्तरे ॥३४१३॥
पुण्डरीयक इत्येष विश्वेदेवान्तरेऽथ च ।
प्रपौण्डर्ये भेषजभिद्यपि स्यात्पुण्डरीयकम् ॥३४१४॥
पुण्ड्रं तु तिलके न स्त्री पुण्ड्रस्त्विक्ष्वन्तरे क्रमौ ।
पुण्ड्रं हिमाचलहेमकूटयोर्मध्ये पुरम् ॥३४१५॥
पुष्पगुमेऽतिमुक्ताख्ये दैत्यभित्पुण्डरीकयो ।
नीवृद्भेदे तु पुण्ड्राः स्युर्वरेन्द्रथाख्ये नृभूमनि ॥३४१६॥
अथ पुण्ड्रा स्त्रियामेव धवलायां गवीष्यते ।
पुण्ड्रक पुण्ड्रतुल्यार्थे ना कोशकृमिजीविनि ॥३४१ ॥
पुण्य पुपेऽप्सु ख हेम्नि व्रते धर्मे सुकर्मणि ।
गङ्गाम्र्ययोस्तु पुण्या स्त्री स्यात्तुलस्यश्वगन्धयो ॥३४१८॥
जस्त्री तु स्यात्सरोभेदे त्रिर्मनोज्ञे च पावके ।
पुण्यक व्रतभेदेऽत्र भार्यायै चाप्युपायने ॥३४१९॥
पुण्यकृत्त्रिषु योगार्थे विश्वेदेवान्तरे पुमान् ।
पुण्यगन्ध सुगन्धे त्रिश्चम्पके तु पुमान्मत ॥३४२ ॥
पुमा पुण्यजनो यक्षे राक्षसे सज्जनेऽपि च ।
पुंसि पुण्यफलो लक्ष्म्या उद्याने यौगिके त्रिषु ॥३४२१॥
पुंसि पुण्यबलो बोधिसत्त्वशक्त्यन्तरे तथा ।
पुण्यवत्याख्यपुर्याश्च नृपतौ परिकीर्त्तित ॥३४ २॥
पुण्यभूमि पुत्रमातर्यार्यावर्त्तेऽपि च स्त्रियाम् ।
पुण्यवांस्त्रि सुकृतिनि पूर्भेदे पुण्यवत्यपि ॥३४ ३॥
पुण्यश्लोक पुण्यकीर्त्तौ वाच्यवच्च प्रियवदे ।
पुत्तल पुद्गले देहे नरजीवशिवात्मसु ॥३४ ४॥
द्वे तु स्फटिकवर्णाऽश्वे मनोज्ञे तु त्रिषु स्मृत ।
पुत्रास्तु भूम्निच्छान्दोग्ये मधुकृत्सु प्रकीर्त्तिता ॥३४२५॥
पुत्रस्तु तनये पुंसि पञ्चमे भवनेऽपि च ।
पुत्रकाख्येऽपि सविषक्षुद्रजन्तौ नृपान्तरे ॥३४२६॥

पुत्री दुहितरि स्त्री वे सालभ यामपीष्यते ।
ह्रस्वार्थेऽप्यासपुत्र्यादा पावत्या वीरुद तरे ॥३४ ॥
पुत्रकस्तु पुमान्दीक्ष्यभदे स्या पवता तरे ।
पेषण्यां पाटलिपुरनिमातद्रुमभदयो ॥३४ ८॥
पुत्रदा स्तम्बभदेऽपि क दभदे च कीत्तिता ।
व ध्याकर्कोटकीवल्लौ योगार्थे तु त्रि पुत्रद ॥३८ ९॥
पुत्रदात्री मालवज वीरुद्भेदेऽपि यौगिके ।
पुत्रप्रिय पक्षिभदे द्वयोस्त्रिपु तु यौगिक ॥३४३ ॥
स्याद्वसिष्ठे पुत्रहतो हतपुत्रे त्रिषु स्मृत ।
स्यात्पुत्रिका पुत्तलिकादुहित्रोर्यावतूलके ॥३४२१॥
खड्गासिपुत्रिकादौ च ह्रस्वत्वे सा प्रयु यत ।
कृत्रिमादौ द्वयो स्त्रीत्वे पुत्रका पुत्रिकेति च ॥३४२ ॥
अभ्रातृपितृका क या पूणदाया च पुत्रिका ।
पुत्रिका तु मता स्त्रीत्वे मृद्दार्वादिकपुत्तले ॥३४३२॥
पतङ्गिकाया देशे च प्लुषौ श्वेतपिपीलके ।
पुद्गल परमाण्वात्मदेहे ना त्रिस्तु सु दरे ॥३४३४॥
पुन पक्षा तरे भेदाधिकाराप्रथमेषु च ।
विरुद्धाया दिशीत्यर्थे क्वचि छ्रुतिषु दृश्यते ॥३४३५॥
पुनर्भव पुनज म नखरक्तपुननवे ।
पुनर्भू पुनरूढाया स्त्री पुननूतने त्रिषु ॥३४३६॥
पुनर्वसुर्वररुचौ विष्णौ लोका तरे शिव ।
नृपान्तरे धनस्योपक्रमे ना दितिभे पुन ॥३४३ ॥
पुनवसू द्विवचने तद्युक्ते चा यनेहसि ।
पुनवसुस्तु जातेऽत्र वाच्यवत्परिकीर्त्तित ॥३४३८॥
पुनस्सरः प्रतिगमेऽप्यपामार्गे पुमान्मत ।
पुन्नागस्तु नरश्रेष्ठजातीफलसितोत्पले ॥३४३९॥
केसरे पाण्डनागे च पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।
पुन्नाग पू यपुरुषे पु गजे पुम्भुजङ्गमे ॥३४८ ॥

देवव लभवृक्षे ना क्लीब तत्प्रसवे मतम् ।
पुप्फुसोऽम्बुजबीजाना कोशे चापि कफाशये ॥३४४१॥
पुमास्तु पुरुषे विष्णावात्मन्यपि च पौरुषे ।
[वशाद्वृत्तौ तथा] दासे पुल्लिङ्गे सान्यपूरुष ॥३४४२॥
पू स्त्रिया नगरे देहे बुद्धौ पूर्त्ताविपीष्यते ।
पुरन्तु न स्त्रिया ध्यामस्तम्ब स्याद्गेहदेहयो ॥३४४३॥
असुराणां त्रिषु पुरेष्वपि वचि च मुस्तके ।
सर्वतोभद्रकाद्य च स्यान्छवागमम डले ॥३४४४॥
पुरस्तु गुग्गुलौ पुसि नगरे तु पुरी त्रिषु ।
द्वयोस्तु शूद्रमहिषीपुत्रे पुरिरपि स्त्रियाम् ॥३४४५॥
पुरे पुरा पुन स्त्रीवे गन्धद्रन्या तरं मता ।
पुरी स्त्रिया जगन्नाथक्षेत्रे पुसि पुन क्वचित् ॥३४४६॥
दशानामपि भिक्षूणा शङ्करानुगमायिनाम् ।
पुरञ्जनस्तु वरुणे पुमानात्मनि चेष्यते ॥३४४ ॥
पुरञ्जनी पुनबुद्धौ स्त्रीलिङ्गे परिकीत्तिता ।
ुरञ्जयो राजमदेष्वैरावतसुतेऽपि च ॥३४४८॥
पुरत प्रथमे चाग्रेऽप्यन्ययम्परिकीर्त्तितम् ।
पुरन्दरोऽग्नाविन्द्रे च शिवे दस्यौ पुमानथ ॥३४४९॥
पुरन्दरा तु गङ्गाया तथा नद्य तरे स्त्रियाम् ।
पुरन्दरम्पुन क्लीबमुदित चन्यभेषजे ॥३४५ ॥
पुरन्धि स्यादुदारे त्रि स्त्री सौभाग्यवती स्त्रियाम् ।
औदायादारदे योश्च पुरन्धि श्रतिषु श्रुता ॥३४५१॥
पुरन्त्र पुनरिन्द्रे च वरुण च पुमा मत ।
पुरश्छदश्चुचूकेऽपि [पुरश्चरणमनुष्ठितौ] ॥३४५ ॥
पुरोऽग्रे प्रथमे भूयोऽधिकारे च पुन पुन ।
पुरस्कारोऽग्रेकरण तथैव स्यादुपायने ॥३४५३॥
परस्कृत पूजिते स्यादभियुक्ते च शत्रुभि ।
अग्रतश्च कृते चैवाप्यभिषिक्तेऽभिधेयवत् ॥३४५४॥

पुरस्तात्प्रथमे प्राच्यामग्रतोऽथ परार्थयो ।
पुरा पुराणे निकटे प्रब घातीतभाविषु ॥३४५५॥
पुराण तु ग्रथभेद क्लीब स्यात्पञ्चलक्षणे ।
पुराण कार्षिके पुसि त्रिषु तु स्याच्चिर तने ॥३४५६॥
पुराणा च पुराणी च तत्र रूप स्त्रिया द्वयम् ।
पुराणगस्त्रि कथके ब्रह्मण्येष पुमा मत ॥३४५ ॥
पुरीतद न्त्रे हृद्यावरणेऽपि नपुसकम् ।
पुरीषी व्यापके भूमेर्वाच्यवत्परिकीर्त्तित ॥३४५८॥
अथानिर्णीतलिङ्गोऽय सरय्वा सरिद तरे ।
पुरीष्य भूमिसम्बद्धे परीषस्य च योगिनि ॥३४५९॥
पुराराति शिवे पुसि विष्णावपि तथा क्वचित् ।
पुरिस्तु नगरेऽपि स्त्री नद्यामपि तथा मता ॥३४६ ॥
पुरीष मृत्तिकाचूर्णे विष्ठाया सलिलेऽपि च ।
सामभिद्धिम्बतेजस्तु पुरीषी चयनान्तरे ॥३४६१॥
पुरुर्नृपान्तरे गङ्गाद्वाराद्रौ स्वग एव च ।
परागे ना द्वयोर्मर्त्ये त्रि तु प्रा ये महत्यपि ॥३४६ ॥
पुरुट पुसि दम्पत्यो परैरसहने भवेत् ।
स्त्रीपुसयोश्च सलापे जलजन्तौ पुनर्द्वयो ॥३४६३॥
पुरुदसा पुमान्सान्तइ द्रे त्रिर्बहुकर्मणि ।
पुरुभोजा गिरौ मेघे पुसि त्रिबहुभुज्यपि ॥३४६४॥
पुरुवारो बहुकचेऽश्वादौ त्रिश्च बहुप्रदे ।
पुरुष पुरुषीमर्त्यजातौ द्व ना सशेफके ॥३४६५॥
तिबादित्रिकभेदेऽपि प्रथमोत्तममध्यमे ।
अधिकारिणि मित्रे च सांख्यवादिनि वशजे ॥३४६६॥

---

१ पुरुभोजास्तु मेघे च गिरावपि पुमा मत ।
पुरुभोजा बहुभुजि त्रिषु मेघे पुमान्मत ।
२ पुरुषस्तु द्वयोर्मर्त्ये ना तु ज तौ सशेफके ।
पुन्नागवृक्षे द्रुहिणे क्षेत्रज्ञे सांख्यवेदिनाम् ।

पञ्चारत्निप्रमाणे च सविंशतिशताङ्गुले ।
कनीनिकायाञ्जीवे च विष्णौ च परमात्मनि ॥३४६७॥
शिवदुर्गाब्रह्मविष्णुस्वरूपे सांख्यपूरुषे ।
वृक्षादिसौरभ सप्तत वेष्वडग्रावृचा तथा ॥३४६८॥
महानाम्नीसमाख्याना मेषादिविषमेष्वपि ।
चाक्षुषस्य मनो पुत्रेऽष्टादशाना रवेरपि ॥३४६९॥
स्या पारिपार्श्विकानामेकत्र प चसु पुस्यपि ।
राजयोगोद्भवेष्वेवम्पु नाग [पुरुष पुमान्] ॥३४ ॥
अश्वावस्थानभेदे तु नस्त्री क्ली मेरुपर्वते ।
सेतुषानाम्नि पुरुषगति सामनि कीर्त्तिता ॥३४७१॥
अहमस्मीत्यगुत्पन्ने पुरुषस्य गतावपि ।
द्वयोस्तु पुरुष याघ्रो गृध्र ना पुरुषोत्तमे ॥३४ २॥
पुरुषाद्यस्तु विष्णौ स्यादादिनाथषमेऽपि च ।
पुरुषा तरमन्यस्मि पुसि भेदे नृणामपि ॥३४ ३॥
विष्णावहत्यथाप्यहद्विशेष पुरुषोत्तम ।
अधिमासे जगन्नाथक्षेत्रेऽपि परिकीर्त्तित ॥३४ ४॥
पुरुष्टुतस्त्रिबहुभि स्तुते पुसि शिवे मत ।
पुरुहूतस्तु बहुभिर्हूते त्रि पुसि वासवे ॥३४ ५॥
पुरुहूता पुन स्त्रीत्वे दुर्गारूपान्तरे मता ।
पुरोगामी पुरोगे त्रि कुक्कुरे तु द्वयोमत ॥३४ ६॥
पुरोटि पत्रझङ्कारे नदीवेगेऽपि कस्यचित् ।
पुरोडाश सोमरसे हविस्तद्दानमन्त्रयो ॥३४ ॥
हुतशेषे च पुल्लिङ्ग श दोय परिकीर्त्तित ।
पुरोद्भवस्त्रि पौरे द्वे वृक्षभेद पुरोद्भवा ॥३४७८॥

पुरोगामी श्नुनि द्वे स्यात्त्रिषु तु स्या पुर सरे ।
२ पुरतस्कारे वा ।
३ पुरोडाशो हविर्भेदे यमस्या पिष्टकस्य च ।

पुरोभागस्तु दोषकन्कत्वेऽग्रावस्थितावपि ।
पुरोहितोऽग्रनिहिते त्रि पुमास्तु पुरोधसि ॥३४ ९॥
पुल स्या पुसि पुलके तथैव प्रमथा तरे ।
पुला तालूर्ध्वभाग स्त्री गतिभद च वाजिनाम् ॥३४८ ॥
पुली तृणादिपूले स्त्री स्यादायाम पुलन्नपि ।
पुलक पुसि खङ्गस्थास्खण्डराजिषु हीरके ॥३४८१॥
शाकमेदे द्रुमदे च तृणादेरपि पूलके ।
कृमिप्रभेदे ग वर्कमणिदोषप्रभदयो ॥३४८ ॥
रोमा च हरिताले च रत्नभदेऽपि कीर्त्तित ।
गजान्नपिण्डे ग धर्वेऽप्यसौ पुलक इष्यत ॥३४८२॥
पुलकी ना कदम्बद्रावथ रामाञ्चते त्रिषु ।
पुलस्ति स्निग्धकेशे त्रिऋषिमेदे पुमा मत ॥३४ ४॥
पुलस्त्य ऋषिमदेऽपि शिवे स्यात्तारका तर ।
पुलहस्त्वृषिमेदेऽपि शिवे स्यात्तारका तरे ॥३४८५॥
पुलाकस्तुच्छधान्ये स्या सक्षेपे भक्तसिक्थके ।
धान्यभेदे त्वरायाञ्च न स्त्रिया परिकीर्त्तित ॥३४८६॥
पुलिनो स्त्री सैकते ना गरुडेन जितेऽसुरे ।
पुलिन्दो निष्ट्यपूर्वाया किरात्या शबरात्सुते ॥३४८ ॥
निष्ट्यादन यपूर्वाया किरात्या च सुते द्वया ।
पोलिन्दाख्येऽपि पाताङ्ग नागक या तरे पुन ॥३४८८॥
पुलि दाऽथ पुलिन्दी तु शबर्या रागभिद्यपि ।
पुलोमा तु वचाया स्या पुत्र्या वैश्वानरस्य च ॥३४८९॥
पु कस स्याद्द्वयोर्मर्त्यजातिभेद यदुद्भव ।
करण्यामपि चण्डालात्क्षत्रियायाञ्च शूद्रत ॥३४९ ॥

---

१ पुल स्या पुसि पुलके विपुले वाच्यलिङ्गक ।
२ पोलि दाख्येपि पोताङ्ग पुलि दा तु स्त्रिया मता ।
नागकन्यान्तरे स्त्री तु पुलि दी शबरस्त्रियाम् ।

पुल्लो विकासते त्रि स्यात् पुष्पे पुल्लं नपुंसकम् ।
पुल्वा द्वयो कीटकृमौ कीटे दर्वीकरारगे ॥३४९१॥
पुषस्तु पोषके त्रि स्यात् ।
पुष्कर नीलकमले कमलेऽपि स्रुचो मुखे ॥३४९२॥
मुरजत्वचि शुण्डाग्रे जले व्योमनि सायके ।
पञ्जरे युधि लास्येंऽशे मदेप्यक्ये नपुंसकम् ॥३४९३॥
कुष्ठौषधे सोमभौमशनिमत्यामघातिथौ ।
असिकोशेऽसिधारायामजमेरुह्रदान्तरे ॥३४९४॥
अस्त्री तु पुष्करद्वीपे ब्रह्माण्डे पञ्चभारते ।
पुमांस्तु योगभेदे च सूर्येऽपि मुरजे ह्रदे ॥३४९५॥
रोगनागभिदो कृष्ण शिवेऽपि वरुणात्मजे ॥
बुद्धभेदे पुष्कराख्यद्वीपस्याद्रौ द्विजेषु च ॥३४९६॥
कुशद्वीपस्य मेघेषु पुष्करावर्त्तकेषु च ।
नलभ्रातरि ऋक्षेषु कृत्तिकाद्येषु तत्र च ॥३४९ ॥
पुनर्वसूत्तराषाढाकृत्तिकोत्तरफल्गुनि ।
पूर्वभाद्रपदा चैव विशाखा यद्यवस्थिता ॥३४९८॥
द्वयोस्तु सारसे स्त्री तु पुष्करी शिवमातरि ।
पुष्करी स्यादिभ खड्गेऽथ पद्मवति वाच्यवत् ॥३४९९॥
स्त्रिया पुष्करिणी चेभ्यां सरोजिन्या जलाशये ।
अथ पुष्करपर्णं तु क्लीब स्यादिष्टकान्तरे ॥३५ ॥
पुष्करस्रक्तु योगार्थेऽश्विनोस्ता पुष्करस्रजौ ।
पुष्कराक्षस्तु विष्णौ ना सारसे तु द्वयोर्मत ॥३५ १॥
दाक्षायण्या च पूर्भेदे स्त्रीत्वे स्यात्पुष्करावती ।
पुष्कराह्व सारसे द्व क्ली तु स्यात्कुष्ठभेषजे ॥३५ ॥

---

१ पुष्कर करिहस्ताग्रे जल वाद्यमुखे युधि ।
खे जे दि्‌यसिधाराया तीर्थभषजभन्यो ।
का डे कुष्ठौषधे द्वीपभेदे पि पटहे तथा ।

पु कल भद्यव कुद्ध सार रम्यप्रभृतया ।
पुमा पुष्करवाद्यऽपि तस्त्राद्यान्तरपु च ॥ ॥
शिवे वरुणपुत्रेऽपि युद्धभिद्यसुरान्तर ।
नृभूम्नि तु कुशाग्नीपक्षनिर्यण्मिह पुष्कला ॥२ ॥
पुष्कल तीथभेदेऽपि चमम दुश्चिकाग्र्य ।
हिरण्यमानभेदऽपि भिक्षागणचतुष्टय ॥ २ ३॥
केचित्त पुष्कल क्लीबमाहुर्मरुमहीभृति ।
अथ पुष्कलको ग धमृगे क्षपणकीलया ॥२३ ॥
पुष्ट पुष्टौ धने स्थूलपालितादा तु वा यवत् ।
पुष्टग्रीवस्तु पुल्लङ्गो गगरी ताम्रकुम्भया ॥ ३ ॥
पुष्टिस्तु पोषणे वृद्धा स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ।
पुष्टिर्धने धर्मपत्न्यामपि च स्त्री व्रतान्तर ॥ ३ ८॥
अश्वग धौषधे शक्तिमातृके दुकलासु च ।
दाक्षायण्यां सरस्वत्यां प्रकृतश्च कला तरे ॥२३ ॥
पुष्टिदा पितृभेदे स्यु पुष्टिदा वृद्धिभपजे ।
अश्वग धौषधे चापि स्त्रीलिङ्ग परिकीर्त्तिता ॥३३८ ॥
पुष्टिवर्द्धन इत्युक्तश्चापारत्यविहगे द्वयो ।
नि तु वद्धनके पुष्टस्य चेदशमूल्यताम् ॥२३८ ॥
पुष्प पुमान् विकासे स्यात्स्त्री तु पुष्पी बलौषध ।
पुष्पोऽस्त्री कुसुमे योपिदार्त्तव नेत्ररुग्भिदि ॥३३१ ॥
नखद तादिकस्थेऽङ्क ग धभित्सामभेदयो ।
प्रणयोक्तौ कुबेरस्य विमने पुष्पकाभिधे ॥३३१२॥
विमाने तु पुमान्नागरलगिर्यन्तरेषु च ।
बोध्य तरे पुष्पसूत्रे पुष्पा चम्पापुरी स्त्रियाम् ॥३५१४॥

---

१ पु कलं भव्य कुद्ध प्रभूते शोभनेप्यथ (नदीभिदि) ।
भिक्षाचतुष्टये च स्यादपिमदे च पु स्ययम् ।
मुष्ट्यष्टकाष्टके पु क्ली तथा धान्यहिरण्ययो ।
२ पुष्पी स्त्री स्यात्प्रसूने च योषितामार्त्तवेऽप्यथ ।

पुष्पकस्त्रि पुष्पितरि ना विमाने धनेशितु ।
द्वयोस्तु द्वादशाना निर्विषाणा भोगिना क्वचित् ॥३५१५॥
पुष्पक रीतिपुष्पे च नेत्ररोग रसाञ्जने ।
लौहकास्ये मृदङ्गारशकट्या रत्नकङ्कण ॥३५१६॥
पुष्पिका स्याद् तमले जिह्वाशिश्नोर्मलेषु च ।
पुष्पकालो वस तेऽप्यार्त्तवस्य समयेऽपि च ॥३५१ ॥
पु पकेतु पुमा कामे तथा पुष्पाञ्जनेऽपि च ।
पुष्पज क्ली परागेऽथ पुसि पुष्परसे मत ॥३५१८॥
पुष्पजा तु स्त्रियां वि ध्यसमुद्भूते सरिद्भिदि ।
पुष्पद तस्तु ना वायुदिग्गजे विष्णुघोटके ॥३५१९॥
शिवे नागा तरे शूद्रजेऽथाद्रौ नवमार्हति ।
विद्याधरा तरे पुष्पद तौ तु शशिसूर्ययो ॥३५२ ॥
पुष्पद ती राक्षसीभिदथ क्ली गोपुरा तरे ।
पुष्पदामप्रसूनाना मा ये छ दोन्तरेऽपि च ॥३५२१॥
क्लीब पुष्पफल द्व द्वे कपित्थे तु पुमान्मत ।
कपित्थेऽपि च कूष्माण्डे पुमा पुष्पफलो मत ॥३५२२॥
पुष्पभद्रो वास्तुभेदे द्वाषष्टिस्तम्भभूषिते ।
पुष्पभद्रा नदीभेद क्लीब तु नगरा तरे ॥३५२३॥
अथ पुष्परज क्लीब परागे कुङ्कुमेपि च ।
पुष्पवत्त्रि सकुसुमे स्त्री तु पुष्पवती मता ॥३५२४॥
रजस्वलाया नृ द्वे तु रवी द्वो पुष्पव तवत् ।
वृषस्य त्या गवादौ च [मता पुष्पवती स्त्रियाम्] ॥३५ ५॥
पुष्पसारा तुलस्या स्त्री पुष्पसारो मर दके ।
पुष्पहासतुम या स्त्री पुष्पहास पुमा हरौ ॥३५२६॥
पुष्पहीना तु वृद्धायामुदुम्बरतरावपि ।
पुष्पाढ्यस्तु स्वय शीणपुष्पमूलफलाशने ॥३५२ ॥
व्रतिभेदे त्रिषु पुन पुष्पैराढ्ये प्रकीर्त्तित ।
पुष्पाभिकीणकस्तु द्वे स्याद्दर्वीकरसञ्ज्ञिनाम् ॥३५२८॥

पुष्पित त्रिर्विकसिते सपुष्पे मृत्युगन्धिनि ।
पुष्पिता ऋतुमत्या स्यात्पुमान्बुद्धान्तरे मत ॥३५ १॥
भुजङ्गमाना भदे च वैकर्तजाभिधावताम् ।
पुष्यस्तु ना कलियुग पौषे बुद्धान्तरे तथा ॥३५३ ॥
नक्षत्रे तिष्यसिद्ध्यादिनामभिर्विश्रुते मत ।
तद्युक्त कालसामान्ये त्रिस्तु तत्र भवेऽथ च ॥३५३८॥
पुष्टावप्युत्तमफले क्ली कूष्माण्डफलपि च ।
वैरूपाष्टकवर्गस्य साम्नि चैवान्तिमे स्मृतम् ॥३५३२॥
पुष्या तु वृक्षभेदेपि तिष्यऋक्षेपि च क्वचित् ।
पुस्तोऽस्त्रिया मतो लेप्ये क्ली तु लेप्यादिकर्मणि ॥३५३३॥
पुस्ताऽपि कस्यचिल्लेप्येऽथ पुस्त छादिते त्रिषु ।
पुस्तकोऽस्त्री मतो लेप्ये ग्रन्थ तु त्रिषु पुस्तिका ॥३५३४॥
पूरुत्तरस्थ पानस्य शुद्ध कर्तरि च त्रिषु ।
पूगक्ली क्रमुके क्ली तत्फले ना त्वद्रिवृन्दयो ॥३५३५॥
फलसारे च पूगी तु स्त्री मलप्वा सरिद्भिदि ।
पूजित पूजनीये त्रिर्देवे पुसि प्रकीर्त्तित ॥३५३६॥
पूज्य पुमान्स्याच्छ्वशुरे पूजनीये त्रिषु स्मृत ।
पूत त्रिषु पवित्रे च शटिते बहुलीकृते ॥३५३ ॥
पूत शङ्खे श्वेतकुशे [पूतौ द्वित्वे नितम्बयो] ।
पूतद्रु खदिरे देवदारुण्यपि पुमान्मत ॥३५३८॥
पूतना तु हरीतक्या दानवीरोगभेदयो ।
रवेरंशुचतुःशत्या वृष्टिदात्र्या शते क्वचित् ॥३५३९॥
पूतनस्तु द्वयो प्रतभेदऽपि परिकीर्त्तित ।
पूतरस्त्वधमे त्रि स्याद्यादोभेदे द्वयोर्मत ॥३५४ ॥

---

१ पुष्य तु कूष्माण्डफले नपुसकमुदीरितम् ।
२ पुमान्पुष्पफल कूष्माण्डे योगे तु यथायथम् ।
३ पूतौ तु पु द्विवचने नितम्बौ परिकीर्त्तितौ ।

पूतिर्दुर्गन्धे दुर्गन्धे तृणजात्यन्तरे पुमान् ।
पवनाख्यक्रियायां स्त्री दुर्गन्धवति तु त्रिषु ॥३५४१॥
पूतिकस्तृणभेदे च सोमभेदे प्रयुज्यते ।
स्यात् पूतिकरजे कर्णरुजायां पूतिकर्णकः ॥३५४२॥
पूतिकाष्ठं तु सरले देवदारुणि चापि नपुं ।
पूतिगन्धो गन्धकेऽपि नेङ्गुदीवृक्षमात्रके ॥३५४३॥
पूतिपुष्पी मातुलुङ्ग्यां योगार्थे तु त्रिषु स्मृता ।
स्त्री तु पूतिफली सोमराज्यां विस्रफले त्रिषु ॥३५४४॥
पूतीकः पूतिकार्थेऽपि दुर्गन्धे तु त्रिषु स्मृतः ।
पूतीकोपोदिकायाञ्च स्त्री पिपीलकभिद्यपि ॥३५४५॥
नपुंसकं तु पूतीकं पुरीषे परिकीर्त्तितम् ।
पूत्कारः पूत्कृतौ पुंसि पूत्कारी तु स्त्रियां मता ॥३५४६॥
सरस्वत्यां च केषाञ्चिद्भोगवत्यामपीष्यते ।
पूत्यण्डस्तु द्वयोरण्डकारकाख्येऽल्पपक्षिणि ॥३५४७॥
गन्धकीटेऽपि पूत्यण्डो द्वयोः कस्तूरिकामृगे ।
पूरः पुनर्नवायां च नद्यादेर्जलवृद्धणे ॥३५४८॥
खाद्यान्तरे व्रणस्यापि संशुद्धौ पुंसि कीर्त्तितः ।
प्राणायामे पूरकाख्ये बीजपूरद्रुमेऽपि च ॥३५४९॥
पूरी स्त्री वंशवाद्येऽपि खाद्यभेदे प्रकीर्त्तिता ।
प्रपूरणे तु पूरो ना पूराऽपि स्त्रीत्वमिष्यते ॥३५५०॥
स्यात्पूरयितृपूरित्रोः पूरको भेद्यलिङ्गकः ।
पूरकस्तु कलाये ना पूरेऽपि गुणकेऽपि च ॥३५५१॥
प्राणायामान्तरे पिण्डभेदे स्याद्बीजपूरके ।
अपूपभेदे तु स्त्रीत्वे पूरिकेति प्रकीर्त्तिता ॥३५५२॥

---

१ खट्टाशे तु द्वयोरेषु पूतीकोऽपि प्रयुज्यते ।
२ पूत्यण्डः कीटभेदेऽपि द्वयोः कस्तूरिकामृगे ।
पुरुत्तरस्य पानस्य शुद्धे कर्त्तरि च त्रिषु ।
३ पूरकस्तु कलायेऽथाऽपूपभेदे तु पूरिका ।

पूरण पूर्त्तिकर्मण्यना पूरयतेयुाच ।
पूरणा पूरणी तु स्त्री शा मलो च तथा पक्षे ॥३५५३॥
पुनर्नवाजातिभद त्रि तु स्यात्पूर्त्तिसाधने ।
[समुद्रसेता तु] पुमा पूरण परिकीर्त्तित ॥३५५४॥
पूर्ण क्लीब जले पूत्ता पूणा स्त्री पूणिमातथा ।
पञ्चमी दशमी प चदशीष्वपि तिथिष्वथ ॥३५५५॥
पूरिते त्रि समग्रे च शरस्याकणकर्षणे ।
पूर्ण शक्ते समग्रे ना पूरिते त्वभिधेयवत् ॥३५५६॥
पूणक स्वणपुच्छे स्या नासाच्छ या तु पूर्णिका ।
पूर्णिमाया चाथ पूर्णसुखादो त्रिषु पूणक ॥३५५७॥
पूणकूटो द्वयो कूटपूरिचापविहङ्गयो ।
पूणकोशर वपूपे ना पूणकोशौपधिभिदि ॥३५५८॥
पूणपात्रोऽस्त्रिया मित्रैर्वस्त्रमाल्यादि यद्बलात् ।
आा छ्यो सवकालेषु गृह्यते तत्र कीत्तित ॥३५५९॥
यस्य प्रमाण मुष्टीना षटपञ्चाश च्छतद्वयम् ।
तत्रापि तण्डुलाद्ये थ त्रिस्तु स्यात्पूर्णभाजने ॥३५६ ॥
पूर्णानक तू सर्वेषु बलादाकृष्य गृह्यते ।
वस्त्रमाल्यादियमित्र स्तत्र स्त्री त्वानके मृते ॥३५६१॥
पूर्त्त त्रि रक्षिते चूर्णे क्ली तु खातादिकर्मणि ।
पूर्वा प्राच्या स्त्रिया पूर्वस्त्र्यपरप्रातयोगिनि ॥३५६ ॥
दिग्देशकालविषये पुराणऽग्र तथाऽऽदिमे ।
पूर्वा पितामहाद्यषु पूर्वजेषु नृभूमनि ॥३५६३॥
पूर्वेद्यु [स्तु प्रभात] स्यात्तथैव धर्मवासरे ।
पूषा वृद्धौ द्वयो पूषो ब्रह्मदारुद्रुमे पुमान् ॥३५६४॥
पृक्षोन्नेपि च सग्रामे पु लिङ्ग परिकीर्त्तित ।
पृतना तु स्त्रिया युद्धे सेनायामपि कीर्त्तिता ॥३५६५॥

---

१ अ नसग्रामयो पृक्ष समाम्नाये समास तत् ।

सनाभेदेपि वाहिन्या पृतना त्रिगुणात्मनि ।
पृथो हस्ततले पुंसि पृथा कुन्त्यां स्त्रियां मता ॥३५६६॥
त्रयोदशाङ्गुलमिते मानेऽपि परिकीर्त्तिता ।
पृथग्जनस्तु मूर्खेऽपि नीचेऽपि च पुमान्मत ॥३५६ ॥
पृथिवी तु स्त्रिया भूमावाकाशेऽपि प्रकीर्त्तिता ।
पृथिवीपतिरुक्तो ना ऋषभाभिधभेषजे ॥३५६८॥
धर्मराज च भूपाले तथैव नरकासुरे ।
पृथुर्वैन्ये त्रिशङ्कोश्च जनकेऽप्यनरण्यजे ॥३५६९॥
राजान्तरे कृष्णपक्ष्येऽग्नौ विस्तीर्णे तु स त्रिषु ।
तत्र स्त्रिया पृथु पृथ्वी द्वय त कृष्णजीरके ॥३५ ॥
पृथ्वी तु स्त्री पृथिव्या स्यात्पृथुर्वाष्प्यौषधेऽस्त्रियाम् ।
स्त्रीपुंसयो पृथुरयम् वानरे परिकीर्त्तित ॥३५७१॥
पृथुक पुंसि चिपिटे शिशौ स्यादभिधेयवत् ।
पृथुचित्र कुण्ठमित धान्यसंग्राहके पुमान् ॥३५ २॥
गृहस्थे स्थूलचित्रे तु वाच्यवत्परिकीर्त्तित ।
पृथुच्छद शाकवृक्षे स्थूलपर्णे पुनस्त्रिषु ॥३५ ३॥
पृथुरोमा द्वयोर्मत्स्ये स्थूलरोम्णि त्रिषु स्मृत ।
पृथुहस्तस्त्रिषु स्थूलकरे पुंसि तु हस्तिन ॥३५ ४॥
ये करस्याङ्गुलेरूर्ध्वं सप्ताशास्तेषु सप्तमे ।
पृथ्वी भूमौ महत्या च त्वक्पत्र्यां कृष्णजीरके ॥३५ ५॥
पृथ्वीका पुनरेलाया तथा स्या कृष्णजीरके ।
पृदाकुर्गोत्रकृद्द य तरे पुंसि प्रकीर्त्तित ॥३५ ६॥
पृदाकुर्वृश्चिके व्याघ्रे सपचित्रकयोरनप ।
पृश्निर्ना किरण स्वर्गे सूर्ये देवान्तरेषु च ॥३५ ॥
क्लीब तु ने च साम्नोश्च बृहद्भिरिति गीतयो ।
त्रिषु त्वल्पवपुजन्तौ बिन्दुचित्रपशावपि ॥३५ ८॥

---

१ द्वयो पृदाकुरुदित पन्नगे वृश्चिकेपि च ।

विराज पृश्नय इति वन्नवणनिब धन ।
बि दुम वनिमत्तो वा प्रयोग इति सशय ॥३५ १॥
पृष पु ह्र च बिन्दौ च पशुगात्रादिबि दुषु ।
तथा दध्युपसिक्ता ये कुवि दस्य च त त्रके ॥३५८ ॥
अथ द्वे मृगभिद्येष त्रिस्तु स्या च्छ्वेतबि दुके ।
पृषत पृश्निसङ्गे स्यात्पुल्लिङ्गो देहवैकृते ॥३५८१॥
श्वेतबि दयुते तु त्रिर्मृगभदे द्वयोमत ।
शम्बरस्तु सबि दुश्चेत्पृषतो सावित्ति स्मृते ॥३५८२॥
पृषातको दध्नि सा ये घृतदुग्धे पृषातकम् ।
पृष्ठमन्त्याशमात्रऽपि पश्चादशे तनोरपि ॥३५८३॥
चतुष्षु सामस्तोत्रेषु क्रतो सामा तरे कुशे ।
पृष्ठशृङ्गी पुमान्दग्भीरौ पण्डे वृकादरे ॥३५८४॥
स्यात्पृष्ठहायनो धान्या तरे द्वे तु मतङ्गजे ।
पेचको ना हस्तिपु च्छमूलोपा ते द्वयो पुन ॥३५८५॥
उलूके पेचिका तु स्त्री पिङ्गलासज्ञपक्षिणि ।
पेटक पेटिकावृन्दे द्वयोर्ना पिटके स्मृत ॥३५८६॥
पेटा दास्या स्त्री त्रि पेगी पेडाया पेटके त्रिषु ।
पेत्वस्तपे भुर्वोऽश ना पशौ गालितशुष्कके ॥३५८७॥
मेषे तु पेत्व पेत्वीति मिथुने परिकीर्त्यत ।
पयस्तु त्रिषु पात ये रक्षित ये च कीर्त्तित ॥३५८८॥
पेया तु विरलाया स्त्री यवाग्वा परिकीर्त्तिता ।
पेय पात यपयसो पेया श्राणाच्छमण्डयो ॥३५८९॥
पेरुर्नाऽब्धौ रवौ शैले कलविङ्क त्वय द्वयो ।
पेलव तु त्रिषु मृदौ मरिचे तु नपुसकम् ॥३५९ ॥
पेशलस्तु मतश्चारौ दक्षे चाप्यभिधेयवत् ।
पेशो रूपे सुवर्णेऽपि सकारान्त नपुसकम् ॥३५९१॥

पृषत्पनर्द्वयोरेष मृगभन्दे प्रकीर्त्तित ।
२ मृगस्तु तास्रो हरिणो हरिणो पश्च श बर ।

पेशी सुपक्वकलिके मांस्या खड्गपिधानके ।
मासपि ब्या तथेवाण्डभेदप्येषा स्त्रियाम्मता ॥३५९२॥
पोगण्डस्तु द्वयोयूनि विकलाङ्गे तु भेद्यवत् ।
भवे पोटगल काशे स्तम्बेऽपि नडसञ्ज्ञके ॥३५९३॥
पोटा दास्या रा यकर्त्र्यां स्त्रीपुसाङ्कनपुसके ।
पुमा पोडगल काशे नडे मत्स्या तरेऽपि च ॥३५९४॥
वैकरञ्जारयसर्पाणां त्रयाणा च क्वचिन्मत ।
पोतोऽपत्ये दशाऽ देभे शिशौ द्वे तरुणे पशौ ॥३५९५॥
यानपात्रे तु पोतो ना गृहस्थाने च वासास ।
पोत्र वज्रे मुखाग्रे च सूकरस्य हलस्य च ॥३५९६॥
पोला तु पारखायाञ्च द्वारय त्रणतालके ।
पोषयि तु पुमा मेघे कोकिले तु द्वयोमत ॥३५९ ॥
पौस्न पुसवने क्लीब पुस सम्ब धिनि त्रिषु ।
पौंस्य बले च युद्ध च नपुसकमुदीरितम् ॥३५९८॥
पौर पुमाञ्श्वेतशालौ बलदेवे च कीर्त्तित ।
पुरसम्ब धिनि त्रि स्या क्लीब तु ध्यामकौषधे ॥३५९९॥
पौरुष नपि भावे च पुस कमणि चो यत ।
शौर्ये रेतसि च त्रिस्तु पुसम्ब धिन्युदीर्यते ॥३६ ॥
ऊर्ध्वविस्तृतदो पाणि नृमानेपि तथा भवेत् ।
पौरुषेय कृते पु सा विकारे पुरुषस्य च ॥३६ १॥
त्रिषु ना सङ्घवधयो पुरुषस्य पदा तरे ।
पौरोहितमथवस्त्वप्यथ पौरोधसे त्रिषु ॥३६ २॥
पौणमासी पूर्णिमाया पौणमासो मखा तरे ।
पौलस्त्यस्तु कुबेरेऽपि रावणेऽपि पुमा मत ॥३६ ३॥
द्वयो पुलस्त्यवशे स्या क्लीब युद्धे प्रकीर्त्तितम् ।
पौषस्तु तैषमासे स्यात्पौषे सामा तरे मतम् ॥३६ ४॥

---

१ पौरुषेयं तु पुरुषकृतेपि परुषस्य च ।
विकारे पि वधे प्येतद्धा यव परिकीर्त्तितम् ।

पौषी तु पुष्यनक्षत्रयुक्ताया पूर्णिमातिथा ।
प्र प्रकर्षे गताद्यर्थेऽप्यव्यय परिकीर्त्तितम् ॥३६ ५॥
प्रकर स्यात्पुमान्सङ्घे विशीर्णकुसुमादिषु ।
नपुंसक जोङ्गके स्त्री नाट्याङ्गे चन्द्रावना ॥३६ ६॥
प्रघट्टके प्रकरण प्रकीर्णा रूपकान्तरे ।
प्रकाण्ड पादपस्योक्तो मूलस्कन्धान्तरेऽपि च ॥३६ ॥
विटपेऽपि प्रशस्तेऽपि पुनपुंसकलिङ्गक ।
प्रकार पुंसि सादृश्ये भदेऽपि परिकीर्त्तित ॥३६ ८॥
प्रकाशोऽर्चिषि दीप्तौ ना तु न्ये स्फुटेऽपि त्रिषु ।
प्रकीर्णक त्रि सकीर्णे चामरे क्ली द्वयोर्हये ॥३६ ९॥
प्रकीर्य पूतकरजे विनिकीर्णे तु वाच्यवत् ।
प्रकृति पञ्चभूतेषु स्वभावे मूलकारणे ॥३६१ ॥
कारण शिश्नयोन्योश्च जन्त्वमान्यादिमातृषु ।
प्रत्यया पूर्वभाग च छन्दस्यष्टस्वरेऽपि च ॥३६११॥
अत्युक्तारव्य च चतुरशीत्य दे सलिलाभिधे ।
स्यात्प्रकोष्ठस्तु हस्तस्य कफोणिमणिबन्धयो ॥३६१ ॥
मध्येऽलिके च भूपालसद्मकक्ष्यान्तरेऽपि च ।
अथ प्रक्रम आरम्भऽवसरेऽपि क्रमेऽपि च ॥३६१३॥
प्रमाणभदेऽप्युक्तोऽसौ द्विपदस्त्रिपदोऽपि वा ।
प्रक्रिया चाधिकारेऽपि प्रकारे शब्दसाधने ॥३६१४॥
प्रक्षर क्ली तुरङ्गादे सनाहे प्रखराह्वये ।
त्रिषु त्वतिक्षरितरि प्रक्षर परिकीर्त्तित ॥३६१५॥
प्रखरोऽस्त्री तुरङ्गादे सनाहे प्रक्षराह्वये ।
द्वे कुक्कुरे चाश्वतरे खलातिखरयोस्त्रिषु ॥३६१६॥

---

१ प्रकरस्तत्पु पादौ ना प्रकीर्णसमूहयो ।
क्लीब वगुरुसंज्ञे सवृग न्ये प्रकीर्त्तितम् ।
(अथ प्रकरण प्रोक्त प्रकीर्णौ रूपकान्तरे ।)

२ ख्याते वा ।

३ प्रकाशस्तु स्फुटे ख्याते प्रहासातपयोरपि ।

प्रगाढस्तु भृश चापि कृच्छ्रे चाप्यभिधेयवत् ।
प्रग्रहस्तु तुलासूत्रे व ध्यामारग्वधद्रुमे ॥३६१७॥
अश्वादिरश्मौ रश्मौ च तथा नियमनेऽर्चने ।
प्रग्राहस्तु तुलासूत्रे तथैवाश्वादिरश्मिषु ॥३६१८॥
प्रग्रीवमस्त्री कलश ग्रीवाप्रासादयोरपि ।
प्रघणस्ताम्रकुम्भे स्यादलिन्द लोहमुद्गरे ॥३६१९॥
प्रघाणस्तु तरुस्क धेप्यलिन्देऽपि पुमा मत ।
प्रचण्डो दुवहे श्वेतकरवीरे प्रतापिनि ॥३६२ ॥
प्रचलाको मयूरस्य शिखण्डे पुसि कीर्त्तित ।
बिम्बाख्यकृकलासे तु नानावर्णकरे द्वयो ॥३६२१॥
प्रचलाका मयूरे च सर्पे चापि द्वयोर्मत ।
प्रचार पुसि खड्गे च स्यात् प्रायश्चरणेपि च ॥३६२ ॥
प्रचेता वरुणेऽग्नौ ना त्रिषु तूत्कृष्टचतसि ।
प्रचोदनी कण्टकार्या स्त्रीलिङ्ग परिकीर्त्तिता ॥३६२३॥
प्रचोदना प्रेरणायां तथैव स्यात्प्रचोदनम् ।
प्र छन्न छादिते त्रि स्याद तद्वारे गृहस्य नप् ॥३६२४॥
क्लीब प्रजनन प्रोक्त प्रजातावप्युपस्थयो ।
प्रजा जने च सताने स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ॥३६२५॥
पजाकरस्तु खड्ग ना योगार्थे तु यथायथम् ।
प्रजागमस्तु पुसि स्यात् प्रजाया आगमे तथा ॥३६२६॥
एकाहाहीनसत्राख्ययज्ञक्रतुषु च स्मृत ।
प्रजापतिश्च दक्षादौ महीपाले विधातरि ॥३६२ ॥
प्रजावती भ्रातृपत्न्या प्रजावत्तु त्रि सप्रजे ।
प्रज्ञस्तु पण्डिते त्रि स्या प्रज्ञाबुद्धौ स्त्रियां मता ॥३६२८॥
प्रज्ञान तु मतौ चिह्ने नपुसकमुदीरितम् ।
त्रिषु प्रज्वलितं दग्धे दीप्ते दीपित एव च ॥३६२९॥

---

१ प्रचेता पाशिनि मुनौ न प्रहृष्टहृदि त्रिषु ।

प्रणय प्रतिग्राह

प्रणय स्यात्परिचये विस्रम्भ प्रसरेऽप च ।
याश्वासौहृदनिर्माणेष्वपि पुसि प्रकीर्त्तित ॥२६३ ॥
प्रणवस्तु पुमा स्तु यामाकारेऽपि प्रकीर्त्तित ।
प्रणादस्तु पुमास्तारश दे च श्रवणामये ॥२६३१॥
प्रणाप्यो समते चापि निष्कामे चाभिधेयवत् ।
प्रणिधान प्रयत्ने स्यात्समाधौ च प्रवेशने ॥२६३ ॥
प्रणिधि प्रणिधाने च प्राथनेऽपि चरेऽपि च ।
त्रिषु प्रणिहित प्राप्ते यस्तेऽपि च समाहिते ॥२६३२॥
प्रणीत सस्कृताग्नौ ना यज्ञपात्रा तरे स्त्रियाम् ।
त्रिषु क्षिप्तोपसपन्नविहितेषु प्रवेशिते ॥२६३४॥
प्रतत वितते चापि क्षु ण चाप्यभिधेयवत् ।
प्रततिवा लविस्तारवीरुत्सु स्त्री प्रकीर्त्तिता ॥२६ ५॥
प्रतल पातालभदे तताङ्गुलिकरे पुमान् ।
प्रतापा ना प्रभावेऽपि भृशताप प्रकीर्त्तित ॥२६३६॥
प्रतापसो ना श्वेतार्के मृदुशृङ्गमृगे द्वयो ।
प्रतारिका स्त्रिया नाभौ व ्चके ना प्रतारक ॥२६२ ॥
प्रति प्रतिनिधावित्थम्भूतारयानाभिमुख्ययो ।
मात्राऽथभागवीप्सासु लक्षणप्रतिदानयो ॥२६३ ॥
प्रतिकाश प्रतीकाशस्तुल्यार्थावुत्तरे पदे ।
मूलस्याध प्रदेशेपि गजाना पूर्वपादयो ॥२६३९॥
स्त्रियां प्रतिकृति प्रोक्ता प्रतिमाप्रतिकारयो ।
तथा प्रतिनिधावेषा प्रतिकृति परिकीर्त्तिता ॥२६४ ॥
प्रतिकृष्ट मत गुह्यो द्विरावृत्या च कर्षिते ।
प्रतिग्रह क्रियाकारे सै यपृष्ठ पतद्ग्रहे ॥२६४१॥
द्विजेभ्यो विधिवद्देये तद्ग्रहे स्वीकृतावपि ।
प्रतिग्राहयतेस्त्वर्थे प्रतिग्राहश्च तद्ग्रहे ॥२६४२॥

१ प्र ीत उपसपन्नौदनादौ च प्रवेशिते ।
निर्मितक्षिप्तयोर्नीते विधिना नौ च वाच्यवत् ।

प्रतिग्राह स्वीकरणे सैन्यपृष्ठे पतद्ग्रहे ।
द्विजेभ्यो विधिवद्देये तदग्रहे च ग्रहान्तरे ॥३६४३॥
प्रतिघस्तु प्रतिहतौ स्यात्क्रोधवधयोरपि ।
प्रतिदान परीवर्त्तन्यासद्रव्यस्य चापण ॥३६४४॥
पुसि प्रतिदिवाऽह्नि स्यादपराह्णेऽपि च स्मृत ।
प्रतिपत्ति प्रवृत्तौ च प्रतिभाज्ञानयो स्त्रियाम् ॥३६४५॥
प्रागल्भ्ये गौरवे प्राप्तौ विश्वासेऽपि प्रकीर्त्तिता ।
प्रतिपद् स्त्री मता बोधे पक्षस्याद्यतिथावपि ॥३६४६॥
स्याद्बहिष्पवमानस्य प्रथमाया तथा ऋचि ।
प्रतिपन्नोऽन्यलिङ्ग स्याद्विज्ञानेऽङ्गीकृतेऽपि च ॥३६४ ॥
बोधके त्रिषु खट्वाङ्गघाधारे स्यात्प्रतिपादकम् ।
स्त्रीनपुसकयोर्दाने ज्ञापने प्रतिपादना ॥३६४८॥
प्रतिभा प्रतिभासे स्त्री प्रतिभो ना विदूषके ।
अथाऽभिधेयवत्प्रोक्त प्रतिभ प्रतिभातरि ॥३६४९॥
क्लीब प्रतिभय भीतौ त्रिषु तु स्याद्भयानके ।
प्रतिमा तु प्रतिकृतौ गजाना दन्तबन्धने ॥३६५ ॥
प्रतिमान प्रतिकृतौ गजदन्तद्वयान्तरे ।
प्रतियत्नस्तु सस्कार उपग्रहणलिप्सयो ॥३६५१॥
प्रतिशिष्ट निरस्ते चाप्याहूय प्रेषिते त्रिषु ।
प्रतिश्रयस्तु विज्ञेय स्थाने गोष्ठ्या तथा पुमान् ॥३६५२॥
प्रत्याहारे तथा सत्रशाले मण्डप आश्रये ।
प्रतिष्कशस्त्रि सहाये प्रष्ठे च प्रतिगन्तरि ॥३६५३॥
प्रतिष्कशस्त्वय चूते पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।
प्रतिष्ठा स्थितिमाहात्म्यस्थानगौरवभूमिषु ॥३६५४॥

---

१ प्रतिपत्ति प्रवृत्तौ च प्रागल्भ्ये गौरवापि च ।
सप्राप्तौ च प्रबोधे च पदप्राप्तौ च योषिति ।
प्रतिपादन तु दान प्रतिपत्तौ च बोधन ।

यागसिद्धा तथा छ दविशप षोडशाक्षरे ।
अस्त्री प्रतिसर सै यजघने स्तसूत्रके ॥ ६ ३ ॥
पुमास्तु व्रणशुद्धौ नाप्यारक्षे नेत्र म डने ।
अथासती च्छब्दू यामेकदेश च नेश्मन ॥२६१६॥
स्त्रिया प्रतिसरा त्रिर्नियो ये प्रतिसरो मत ।
प्रतिसृष्ट प्रेषिते स्यात्प्रत्याख्याते च वाच्यवत् ॥२६५ ॥
प्रतिस्पर्श सहाये स्याद्वात्ताहरपुरोगयो ।
भवेत्प्रातहृत द्विष्ट प्रतिस्खलितरुद्धयो ॥२६१८॥
प्रतिहर्त्ता त्रिषु ज्ञय प्रतिनेतरि तस्करे ।
प्रतिहारो द्वारपाले द्वारे प्रतिहृतावपि ॥२६१९॥
साम्नस्तृतीयभक्तौ च ना स्त्री तु प्रतिहार्यथ ।
तत्र या पृथिवीपाल सम्भावयात सर्वदा ॥२६६ ॥
प्रतीकोऽवयवे दीपे नानुकूलाऽनुरूपयो ।
प्रतिकूले प्रतीक त्र [देवमूर्त्त्यादिपू यते] ॥२६६८॥
प्रतीकारो नृपाणा स्याद्वैरनिर्यातने पुमान् ।
अपि प्रतिक्रियामात्रे प्रोक्त स प्रतिकारवत् ॥२६६ ॥
प्रतीकाश समासा ते तुल्यार्थ प्रतिकाशवत् ।
मूलस्याध प्रदेशेऽपि गजाना पूर्वपादयो ॥२६६२॥
प्रतीक्ष्य प्रतिपाल्ये च पू ये चाप्यभिधेयवत् ।
प्रतीत प्रतियाते च हृष्टे रयाते च सादरे ॥२६६४॥
ज्ञाते बुधे प्रत्ययिते वाच्यवत्परिकीर्त्तित ।
प्रतीहार प्रतीहारी द्वे द्वा स्थे चापि कच्छपे ॥२६६५॥
प्रतीहारस्तु पुँल्लिङ्गो द्वारे स्यात्प्रतिहारवत् ।
प्रतोद पुसि तोत्रे च तथैवोक्त प्रतोदने ॥२६६६॥
सामप्रभेद्योश्चापि परीतेत्यचिगीतयो ।
प्रतोली गोपुरेऽपि स्त्री रथ्यायाश्च प्रकीर्त्तिता ॥२६६७॥
प्रत्न छन्दसि पञ्चाशद्वर्णे त्रि तु पुरातने ।
प्रत्यक छ्रेणी नागदन्त्या गिरिकर्ण्यामपि स्मृता ॥२६६ ॥

तथा मूषिकपर्ण्यां च सा प्रत्यक्श्रेणिव मता ।
प्र यग्दृष्टिस्तु मीमासाया योगे तु यथायथम् ॥३६६९॥
प्र यक प्रती य्ऽभिमुखे प्रती यभिमुख त्रिषु ।
देशे पुसि प्रतीची तु पश्चिमाया दिशि स्त्रियाम् ॥३६ ॥
प्रथमापञ्चमीसप्तम्यर्थेष्वपोऽपि चा ययम् ।
प्र ययोऽधीनशपथज्ञानविश्वासहेतुपु ॥३६७१॥
र ध्रे च प्रथित वे चा याचारप्रतियातयो ।
सनादिश दा ययवे तथैव स्यात्सुबादिषु ॥३६ २॥
प्रत्यर्थी पुसि शत्रा स्याद्वेषव प्रतियोगिनि ।
शत्रा ना प्र यवस्थान परिस्पर्धिजने त्रिषु ॥३६ ३॥
प्रत्याकार पुमा प्र याकृतावायुधकोशके ।
प्र यालीढ तु चरण यासभदेऽशिते त्रिषु ॥३६ ४॥
प्र यासारो यूहपार्ष्णो प्रत्यासरणकर्मणि ।
चमूकव्यामपि तथा पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥३६ ५॥
प्र याहारोऽक्षरसमाम्नायेऽपि स्यादणादिषु ।
स्यात्प्रत्यानयनेऽर्थेभ्यश्च द्रियाणां समाहृतौ ॥३६ ६॥
वाद्यवादकसामग्रीविन्यासे नाट्यगोचरे ।
धौतांशुकद्वये प्रत्युद्गमतीय नपुसकम् ॥३६ ॥
स्यात्प्र युद्गमतीयस्तूपस्थात येऽभिधेयवत् ।
प्र यूषोऽस्त्री प्रभाते स्यात्त्रि प्रत्यूषितरि स्मृत ॥३६ ८॥
प्रथन पुसि मुद्गे स्याद्विसृतौ प्रथन नपि ।
प्रकाशनायां प्रथना न नापि च विसारण ॥३६ ९॥
प्रथम त्रि प्रधाने चादिमेऽथ प्रथमा स्त्रियाम् ।
आद्याया सुब्विभक्तौ स्यात्तथैव प्रतिपत्तिथौ ॥३६८ ॥
प्रथमस्तु पुमानाद्यत्रितये तिङ्विभक्तिषु ।
प्रदाकुस्तु द्वयोर्व्याघ्रे भेकाजगरयोरपि ॥३६८१॥

---

१ प्रत्यर्थी च पव प्राक न्यात्रयप्रतिवादि ो ।

प्रदीप्त भासिते चापि दग्ध चा यभिधयनत् ।
प्रदेश उपदेशकन्देशप्रादेशदन्त्रिषु ॥२६८ ॥
प्रदेशन प्रदिष्टा च दाने च प्राभृतऽपि च ।
प्रदोषस्तु पुमा दोष रात्रयोमेऽपि चादिम ॥२६८३॥
प्रकृष्टदोषादौ चेष प्रदोषा वा यव मत ।
प्रद्युम्नो म मथ पुसि प्रकृष्टद्युम्नके त्रिपु ॥२६ ८॥
प्रद्योतनस्तु वा सूर्ये क्लीब दीक्षा प्रकीत्तितम् ।
प्रधन तु समे क्लीब त्रि प्रकृष्टधने मतम् ॥२६८५॥
प्रधान तु प्रकृत्यारये सार यत वे परा मनि ।
महामात्रे च बुद्धौ च मुरये तु क्ली च ना यवत् ॥२६८६॥
प्रधूपिता स्त्रिया सूर्यग त यदिशि कीर्त्तिता ।
अथाभिधेयव चैष क्लेशिते स्या प्र धूपित ॥२६८७॥
प्रपञ्च पुसि विस्तारे सचये च विपर्यये ।
प्रपद तु पदाग्रऽपि नगदारव्ययजुष्प च ॥२६८८॥
प्रपातस्तु प्रपतने भृगौ सौप्तिकरोधसो ।
प्रपितामह इत्येष विधौ पितृपितामहे ॥२६८९॥
प्रबुद्धो विरतस्वाप पण्डितेऽन्नाहते त्रिपु।
प्रबोधना तु पुमाञ्ज्ञापनेप्यनुबोधने ॥२६९ ॥
आलेपविषये चापि प्रबुद्धौ तु प्रबोधनम् ।
प्रभञ्जनो ना मरुति योगार्थे तु यथायथम् ॥२६९१॥
प्रभव स्यादपामूले विक्रमे ज मकारण ।
आद्योपलब्धिस्थानेऽपि पुल्लिङ्ग परिकीत्तित ॥२६९२॥
प्रभा भास्यर्चिषि स्त्री स्या सूर्यपत्न्य तरेऽपि च ।
प्रभाकरस्तु सूर्येऽपि पावकेऽपि प्रकीर्त्तित ॥२६९३॥
प्रभावस्तु प्रतापे च माहात्म्ये च पुमा मत ।
प्रभासस्तीर्थभेदे च पुँल्लिङ्ग स्यात्प्रभासने ॥२६९४॥

प्रदेशो देशमात्रे स्यात्तर्ज यङ्गुष्ठसम्मिते ।
भित्तावपि तथा त त्रयुक्तिभदे प्रकीर्त्तित ॥

स्या प्रभिन्नो मत्तगज बा थव च विदारिते ।
प्रभूतमुद्गते प्रा येऽप प्रोक्तमभिधेयवत् ॥३६९५॥
स्त्री तु प्रभृतिरादौ त्रि प्रकृष्टभृतिकादिके ।
प्रमथा स्त्री हरीतक्या प्रमथो ना शिवानुग ॥३६९६॥
क्लीबे प्रमथन हिंसाम थनक्रिययोर्मतम् ।
प्रमदा स्त्रीविशेष च कीत्तिता चोत्तमस्त्रियाम् ॥३६९ ॥
हर्षे तु प्रमद पुसि त्रिप्रकृष्टमदादिके ।
प्रमाण हेतुमर्यादाशास्त्रेयत्ताप्रमातृषु ॥३६९८॥
सम्यग्वक्तरि नि ये स्यादेकताबोधयोरपि ।
छन्दोवृत्तविशेषेऽपि नपुसकमुदीरतम् ॥३६९९॥
प्रमाणना तु न पुमाञ्ज्ञापनेऽपि वधेऽपि च ।
प्रम थने च हिंसाया प्रमाथो लस्तकग्रहे ॥३ ॥
प्रमीढो मूत्रिते चापि स्याद्घनेप्यभिधेयवत् ।
प्रमीतस्तु मृते तद्व प्रोक्षितेऽप्यभिधेयवत् ॥३७ १॥
प्रमुख तु प्रधानेऽपि तथाधग्रेऽपि कीर्त्तितम् ।
प्रयत सस्कृते प्रोक्त पूत चाप्यभिधेयवत् ॥३ २॥
प्रयागस्तीथराजे स्याद्यज्ञे शतमखाश्वयो ।
प्रयाण करिह्वक्पूवप्रदेशे गमने मृतौ ॥३ ३॥
प्रयाम उक्तो नीवाके प्राय त्येऽपि पुमानयम् ।
प्रयोक्ता तूत्तमर्णेऽपि भेद्यवत्स्यात्प्रयोजके ॥३ ४॥
प्रयोग स्यात्कर्मविधौ सुरतणप्रतानयो ।
श दस्यो चारणे चो चारितश दे प्रवत्तने ॥३ ५॥
प्रयोजन तु कार्येऽपि हेतौ चाप नपुसकम् ।
वाणौ प्ररील्वा नार्या तु विधिज्ञाया प्ररी वरी ॥३ ६॥
प्ररूह सप्तरोहे त्रि पुल्लिङ्गस्तु महायवे ।
प्ररोहस्तु पुमानिष्टोऽङ्कुरे चैव प्ररोहणे ॥३ ॥
प्रलम्बो दैत्यभेदे स्यात्त्रपुषेऽपि पयोधरे ।
लताङ्कुरे च शाखायां हारभेदे प्रलम्बने ॥३ ८॥

प्रलयस्तु पुमान्मृत्यौ क्षये चास्य दनस्थिता ।
मूर्च्छायामपि क पा ते श्लेप च परिकीत्तित ॥२ ५॥
प्रलोभी किङ्किराते स्या लोभशीले तु स त्रिपु ।
प्रवङ्गम कपो भेके प्लवङ्गमवदिष्यते ॥३ १ ॥
अथ प्रवचन वेदे यारयाने च प्रकीत्तितम् ।
प्रशस्तवचने च स्याच्छास्त्रऽपि च नपुसकम् ॥३ ११॥
त्रिपु प्रवचनीय स्या प्रवक्तव्य प्रवक्तरि ।
प्रवण क्रमनिम्ने त्रि प्रह्वे ना तु चतुष्पथ ॥३ १२॥
प्रवर कृष्णमुद्गेऽधिलवण च पुमा मत ।
प्रवर स ततौ गात्रे क्लीब श्रेष्ठे तु वा यवत् ॥२७१३॥
प्रवहो वायुभदे स्याद्वायुमात्रे बहिर्गता ।
क्लीब प्रवहण कर्णीरथ व न उत्तमे ॥३ १४॥
प्रवारण निषधे स्यात्काम्यदाने च न द्वया ।
प्रवालस्त्वस्त्रिया वृक्षे प लवस्याङ्कुरे मत ॥३७१५॥
वीणाद डे विद्रुमे च तथैव नवप लवे ।
प्रवासना वधेऽपि स्यान्न ना तद्वद्विवासने ॥३ १६॥
प्रवाहस्तु प्रकृष्टाऽश्ने तथा स्रोतसि वारिण ।
परम्परायामपि च प्रवृत्तौ च पुमान्मत ॥३ १७॥
स्त्रीनपुसकयोर्भेदे युद्धे क्ली प्रविदारणम् ।
वधे विकीर्णीकरणे नप्स्त्रियो प्रविसारणा ॥३ १८॥
प्रवृत्ति स्त्री प्रवारो चारयो र्यापारवार्त्तयो ।
कुलत्थसज्ञधा ये चावन्त्यादौ हस्तिना मदे ॥३७१९॥
प्रवृद्ध एधिते चापि प्रसृते चाभिधेयवत् ।
प्रवेणी स्त्री कुथाया च वेण्या च स्यात्प्रवेणित् ॥३ २ ॥
प्रवेष्टस्तु भुजे पुंसि गजदन्तस्य मूलत ।
करीर्यारयात्प्रदशेऽपि परस्मि परिकीत्तित ॥३ २१॥
अथ प्रव्रजिता मांसीमुण्डीरीतापसीषु च ।
प्रष्ठस्त्रिष्वग्रगे श्रेष्ठे पुसि चाण्डालिकौषधौ ॥३ २२॥

प्रसन्ना पवने मातृप्रतिपत्त्यो प्रसन्नरी।
प्रसन्ना तु सुराया स्त्री स्वच्छसन्तुष्टयोस्त्रिषु ॥३ २३॥
प्रसभ तु बलात्कारे दत्तस्य स्यान्नपुसकम्।
प्रसभ पुसि वेगे स्यात्त्रिप्रकृष्टसभादिके ॥३ ४॥
प्रसर प्रणये वेगे पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित।
न ना प्रसरणी स्यात आसारे युद्धकारिणाम् ॥३ २५॥
अथ प्रसरण क्लीबलिङ्ग विसरणे मतम्।
प्रसर्पको दर्शनाय यज्ञस्थानमुपागते ॥३७२६॥
प्रसर्पति पुनर्वाच्यलिङ्गकोऽय प्रसर्पक।
प्रसवो जननानुज्ञापुत्रेषु फलपुष्पयो ॥३७२ ॥
पारम्पर्ये प्रसङ्गेऽपि प्राणिनां गर्भमोचने।
प्रेरणे प्रसूतौ चापि पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥३ २८॥
प्रसव्य प्रतिकूले चानुकूले च प्रकीर्त्तितम्।
आयत्ते दक्षिणे चापि सव्ये चाप्यभिधेयवत् ॥३ २९॥
नपुसक प्रसह्न भङ्गे चाभिभवे मतम्।
लताबृहत्यां तु स्त्रीत्वे मता प्रसह्नीति सा ॥३ ३ ॥
प्रसादस्तु प्रसत्तौ च स्वच्छत्वेप्यनुरोधने।
काव्यस्यौजोमुखाना च गुणानामेकके मत ॥३ ३१॥
प्रसादनस्तु प्रासाद ओदने स्यात्प्रसादनम्।
प्रसन्नीकरण त्वेषा न ना प्रोक्ता प्रसादना ॥३ ३२॥
प्रसाधना तु न पुमानभ्यङ्गप्रतिकर्मणो।
शुश्रूषायां च नृ स्त्री तु कङ्कते स्यात्प्रसाधनी ॥३७३३॥
प्रसिद्धो भूषिते ख्याते सिद्धे चाप्यभिधेयवत्।
प्रसूरश्वाजनयोश्च कन्दली वीरुधो स्त्रियाम् ॥३ ३४॥
प्रसूत प्रेरिते जाते स्यात्कृतप्रसवे त्रिषु।
ना सारथौ क्ली प्रसूने प्रसूता सूतिमस्त्रियाम् ॥३ ३५॥
प्रसूतो वाच्यवज्जाते क्लीबे तु फलपुष्पयो।
प्रसूति स्त्री प्रजनने प्रजायां जननेऽपि च ॥३ ३६॥

प्रसृता तु स्त्रिया जङ्घासङ्घाऽङ्गे पुनपा पुन ।
द्विसृताष्टकेऽधकुडवमान स्याद्गणपपट ॥२ ३७॥
निकुब्जपाणा च त्रिस्तु नेगित विस्तृतेऽपि च ।
प्रसृति स्त्री नचाजालव धता पर्यत तुपु ॥३७३८॥
प्रसेक सेचन चाप ३ युतावपि पुमा मत ।
प्रसेव पुसि वीणाङ्ग स्यूते न परिकीत्तित ॥३७३९॥
प्रसेवकस्तु ककुभ त्रिपु सेवापरायण ।
प्रस्तारस्तु प्रस्तरण वृत्तनि यसनेऽपि च ॥ ७४ ॥
प्रस्तावोऽवसरे चैवाऽधिकार सामनेदिनाम् ।
साम्न प्रथमभक्ता च पुलिङ्ग परिकीत्तित ॥३ ४१॥
प्रस्तुता सुरभौ स्त्री स्यात्प्रस्तुतम्प्रकृते त्रिपु ।
प्रस्तोता प्रस्तावभक्त साम्नो गातरि ऋत्विजि ॥ ७४२॥
पुलिङ्गो वा यव वेष मत प्रस्तावकत्तरि ।
प्रस्थोऽस्त्री स्यात् कुडवचतुष्कैतमितेपु च ॥ ४३॥
प्रस्फोटन तु शूर्पे स्यात्ताडने च विकाशने ।
भवे प्रस्रवण क्लीब प्रस्नुतावुस एव न ॥३७४४॥
माल्यवानितिनिरयाते पवते तु पुमा मत ।
प्रस्राव प्रस्नुतो मूत्रे भक्तमण्डे तथा पुमान् ॥३७४५॥
प्रहतस्तु मत क्षुण्ण व्युत्पन्नेऽप्यभिधेयवत् ।
क्लीब प्रहरण शस्त्रे युद्ध चाघातकर्मणि ॥२ ४६॥
क्लीब प्रहसन हासे रूपकान्यतमेऽपि च ।
प्रहित प्रषिते चास्य स्यालिङ्गमभिधेयवत् ॥२ ४ ॥
मुद्गादिभिन्ननिष्पत्ते तु सूप प्रहितोऽस्त्रियाम् ।
प्रहृष्टस्तु सरोमाञ्च प्रहर्षवति विस्मिते ॥३७४८॥
तथा प्रतिहत चापि वा यवत्परिकीत्तित ।
प्राकाश कुण्डले पुसि स्यात्प्रकाशयुजि त्रिषु ॥३७४९॥
प्राग्भारो गिरिश्रृङ्गाग्रे तथैवातिशये पुमान् ।
प्राक प्राग्भने प्राङमुखे च पूर्वेऽर्वाचि च भेद्यवत् ॥२ ५ ॥

दिग्देशकालविषय प्राची तु स्त्री हेरर्दिशि ।
प्रथमा पञ्चमी सप्तम्यर्थेष्व यय एव वा ॥३ ५१॥
सर्वेषु पूर्वोक्तार्थेष्वित्येव प्राकछ द ईरित ।
प्राचिका सल्लकीवृक्षे शाके पालङ्क्यभिरयके ॥३ ५२॥
अरण्यमक्षिकाया च श्येनसज्ञे च पक्षिणि ।
प्राचीनबर्हिर्वर्ह्णौ ना शक्रे चैव नृपान्तरे ॥३ ५३॥
प्राचतसो ना वा मीकौ प्रचेतोयोगिनि त्रिषु ।
प्राच्य प्राचि शरावत्या देश प्राग्दक्षिण त्रिषु ॥३ ५४॥
प्राजापत्य सामभित्सु गर्भाधानारयसस्कृतौ ।
द्वादशा कृते कृ छ्र भावे चैव प्रजापत ॥३ ५५॥
निवाहभेद तु तथा कृतोद्वाहद्विजे च ना ।
प्रजापतेस्त्वपत्ये द्वे त सम्ब धिनि तु त्रिषु ॥३ ५६॥
प्राज्ञस्तु धीमज्ज्ञात्रोस्त्रि प्राज्ञा प्राज्ञी स्त्रियां क्रमात् ।
प्राणो बलेऽनिले पुसि तथा कायानिला तरे ॥३ ५ ॥
द्व द्वाना प्रथमे साम्नीद्रियेषु शशभेषजे ।
प्राणाश्चाऽसुषु पुभूम्नि त्र पूर्णे क्ली तु पूरणे ॥३ ५८॥
प्राणक स वजातीय जीवकद्रुमचोलयो ।
प्राणथो मदनारये च वृक्षे चैव प्रजापता ॥३ ५९॥
प्राणदा तु हरीतक्या स्त्रियामृद्ध्यौषधेऽपि च ।
प्राणद पुसि वैद्ये स्यात्त्रिषु तु प्राणदातरि ॥३ ६ ॥
प्राणनाथस्तु विज्ञेयो यमराजे प्रियेऽपि च ।
प्राणिद्यतोऽस्त्रिया युद्धे पश्वाद्यैर्युद्ध एव च ॥३ ६१॥
प्राति पूर्त्ता मता स्त्रीत्वे प्रादेशेऽपि प्रकीर्त्तिता ।
प्राध्व स्याद्दूरमार्गे च ब धने च नपुसकम् ॥३ ६ ॥
प्रवेशे य यय प्राध्यमानुकूल्य च नर्मणि ।
प्रा तर तु वने दूरशू यवर्त्मनि कोटरे ॥३७६३॥

---

१ प्रा ो ह मारुते बाले का यजीवे निले बरे ।
पुल्लिङ्ग पूरिते तु त्रिलिङ्ग पु भूम्नि चासुषु ॥
२ प्राणकस्तु प्राणिनि त्रिषां स स्या जीवकद्रुमे ।

प्राप्त समञ्जसेऽपि स्याल्लब्धे चाप्यभिधेयवत् ।
प्राप्तरूपो वाच्यवत्स्यात्सुन्दरे च विचक्षणे ॥३७६४॥
प्राप्ति स्त्रियामधिगमेऽप्युदये च प्रकीर्त्तिता ।
प्रायो मृत्यौ प्रगमने बाहुल्येऽनशनेऽपि ना ॥३ ६५॥
बाल्यादिवयसि प्रोक्तस्तु यार्थे तु त्रिषु स्मृत ।
प्रायश्चित्त चिकित्साया रोगस्याप्यघनिष्क्रये ॥३ ६६॥
प्रार्थित याचिते शत्रुसरुद्धेऽभिहन्ते त्रिषु ।
प्रार्दितन्त्वभियुक्तेऽपि याचिते च हते त्रिपु ॥३ ६७॥
प्रालम्बमृजुलाम्बन्या कण्ठात्स्यात्कुसुमस्राज ।
प्रालम्बी तु स्त्रिया स्त्रणलल त्यां परिकीर्त्तिता ॥३ ६८॥
पुनर्नवाशूकशिम्ब्यो स्त्रिया स्यात्प्रावृषायणी ।
प्रावृषेण्य कदम्बद्रौ त्रि तु प्रावृड्भवादिषु ॥३७६९॥
प्रास कुन्ताख्यशस्त्रे ना तथाऽनुप्रास एव च ।
प्रासादस्तु प्रकृष्टासादे देवाढ्यनृपालये ॥३७७ ॥
प्रिय करुणवृक्षे ना वृद्धिनामौषध धवे ।
वल्लभे सुन्दरे त्रि स्त्री प्रियाऽभीप्सितयोषिति ॥३७७१॥
प्रियको ना फलाध्यक्षफलिन्यसननीपके ।
तेषां तु प्रसवे क्लीब मृगभेदे तु स द्वयो ॥३ २॥
घनैर्मृदू चमसृणै रोमभिश्चापि सयुते ।
नीलपाण्डुररेखावत्यपि वा श्वेतचन्द्रके ॥३ ७३॥
प्रियङ्गु स्त्री कणायां च राजिकाया च कीर्त्तिता ।
फलिन्या कङ्गुसस्येऽथ क्ली प्रियङ्ग्वपि कुङ्कुमे ॥३७७४॥
प्रियवदा स्त्री मालत्यां त्रि तु स्यात्प्रियवक्तरि ।
प्रियवद कथाया ना श्रुते विद्याधरान्तरे ॥३७ ५॥
स्त्रिया मङ्गलवाद्यस्य निर्घोषे प्रियवादिका ।
प्रियवक्तरि तु प्रोक्तो भेद्यवत्प्रियवादक ॥३७७६॥
प्रियापत्यो द्वयो कङ्कखगे प्रियसुते त्रिषु ।
प्रीत त्रिषु स्याद्धर्षितेऽथ नर्मणि नपुंसकम्

प्रीतिर्योगान्तरे प्रोक्ता स्मरपत्नीमुदा स्त्रियाम् ।
धकारोऽपि प्रयावश्यां कलायां ध्वनिना मता ॥३७४॥
प्रुष्टि पुमान्पावके स्याच्चुदपाने च कीर्तितः ।
प्रेक्षा बुद्धौ तथा नृत्तदर्शनेऽपि स्त्रियाम्मता ॥३७५॥
प्रेक्षो दासे द्वयो प्रेक्षाऽऽसर्थो प्रेक्षोलने तथा ।
स्त्रियां पर्यटने प्रोक्ता घोटकस्य गतावपि ॥३७ ॥
प्रेतो भूतान्तरे द्वे स्यान्मृत प्रेतोऽभिधयवत् ।
प्रेतालयो ना शाकोटद्रुमे योगे यथायथम् ॥३७/१॥
प्रेमा ना वासवे वाते प्रमा स्त्री स्नेहनर्मणो ।
प्रेरिवा तु समुद्रे ना स्त्री तु प्ररित्वरी पुरी ॥३७/२॥
प्रेष्यो दासे द्वयोरेष प्रेषणीयेऽभिधेयवत् ।
प्रैष प्रेषण उन्मादे क्लेशे मर्दन इष्यते ॥३७८३॥
प्रोक्षण तु वधे यज्ञपशोश्चाऽभ्युक्षणोऽम्भसा ।
प्रोक्षण्यो यज्वना कास्वप्यप्सु तासां च भाजने ॥३ ४॥
प्रोक्षित निहिते सिक्त वाच्यवत्परिकीर्त्तितम् ।
प्रोत नपुसक वस्त्रे खचिते वाच्यलिङ्गकम् ॥३७८५॥
प्रोथोऽस्त्री हयघोणाया ना कट्यामध्वगे त्रिषु ।
प्रोष्ठ पुस्यषभे स्त्री तु शफया प्रोष्ठ्युदीरिता ॥२ ८६॥
वाच्यवन्निपुणे तर्के प्रोहो हस्त्यङ्घ्रिपर्वणो ।
प्लक्षोऽश्वत्थ द्वीपभद पकटीगदभा डयो ॥३७ ॥
लवस्तु प्लवने मेघे जलपूरे तथोडुप ।
द्वयोस्तु मकटे भेके चण्डाले शकगानिरे ॥३ ॥
त्रिश्वेतवाहला तपु हमसारसकादिप ।
नगेषु सु तोक्तेष कर्त्तामुस्तके प्लवम् ॥ ॥
प्लवगो द्व कपा भके ना तु सूर्यस्य सारथा ।
प्लवङ्गम प्लवङ्गश्च प्लवक प्लवगस्तथा ॥ ७ ॥
प्लवङ्गश्च द्वयोरुक्ता भेकवानरयोरिम ।
प्लवन तु प्लुतीमात्रान्मज्जनक्रमणषु नप ॥ ॥

प्लावी तु पक्षिणि तथा म्रग स्त्रीपुसयामत ।
लुाक्षरग्नो कुम्बल ग पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥ ९ ॥
प्लुत तु प्लवने चाश्वगतिभद नपुसकम् ।
अथ त्रि तद्वत्यश्ने च सिक्ते वर्णे ाग्रमान्रे ॥३ ३॥

फ

फो यज्ञसाधन स्फान झञ्झावाते च पुस्ययम् ।
फ रूक्षोक्ता च फूत्कारे तथा नि फल भाषण ॥३ ४॥
फक्किका तु स्त्रियामेकग्र थ गौरे च सषपे ।
अथ फाक्कतरि प्रोक्त फक्ककश्चाभिधेयवत् ॥३ ९५॥
फटा तु स्त्री फणेऽप स्यात्तथा द तेऽप भागिनाम् ।
फफरीकश्च पट स्यात्फफरीक तु मादवे ॥३ ६॥
फल फाले धने बीजे निष्पत्तौ भोगलाभयो ।
सस्ये हेतुकृते चर्मसञ्ज्ञशस्त्रनिवारण ॥३ ९ ॥
शस्त्राणा च मुख ना तु करमर्देऽथ सा फला ।
कार्पास्या लवलीराजकोशातक्यो स्त्रियामथ ॥३७९८॥
कोशातक्या फलि या स्त्री ताम्रादिफलके फली ।
मत्स्यभेदे त्वपि स्त्रीत्वे फलीत्यव प्रकीर्त्तिता ॥३ ५॥
फलक काष्ठकीटे खेटकाख्ये शस्त्रवारण ।
फलकी चित्रफ याख्ये मत्स्यभेदे च चन्दने ॥३८ ॥
फलकस्तु क्षुमासञ्ज्ञे धा ये पुसि प्रकीर्त्तित ।
फलकी चर्मपाणौ त्रि स्त्र यां फलकि यपि ॥३ १॥
द्वयोस्तु फलकीत्येष मत्स्यभेदे प्रकीर्त्तित ।
फलपाका ता तु तालीद्रुमे स्त्री प्रियवादिषु ॥३८ २॥
मुद्गमाषतिलाद्यषु फलपाकविनाशिषु ।
फलाशन शुक द्वे स्यात्फलभक्षिणि तु त्रिषु ॥३८ ३॥
फलि यग्निशिखाया च कोशातक्यामपि स्त्रियाम् ।
प्रियङ्गावपि च त्रिस्तु फली फलसमन्विते ॥३८ ४॥

फलेरुहस्तालवृक्षे पाटल्या तु फलेरुहा ।
फलोदय पुमाल्लाभे स्वर्गेऽपि परिकीर्त्तित ॥३८ ५॥
त्रिषु फ गुरसारे स्त्री काकोदुम्बरिकातरौ ।
काकोदुम्बरिकाया ना फ गुस्त्रि त्व पमाघया ॥३८ ६॥
फ गुनी भगदेव ये नक्षत्रे यमदवते ।
ताभ्या युक्ते कालमात्रे जाते वत्र त्रि फल्गुनी ॥३८ ॥
फ गुनस्तु पुमानेव ज्ञयो मध्यमपाण्डवे ।
फाणिगुडे करम्बे च स्त्रीलिङ्ग परिकीर्त्तिता ॥३८ ८॥
फाणत गौडावकृतिभेदेऽथ क्वाथिते त्रिषु ।
फालो लाङ्गलकूटेऽपि श्वेताऽर्के दाडिमे पुमान् ॥३८ ९॥
निष्पत्तौ स्याद्विशरणे तक्कोले तु नपुसकम् ।
फलस्य तु विकारादौ फाल स्यादभिधेयवत् ॥३८१ ॥
फाल पुास महादेवे कालिन्दीभदेने पि च ।
क्लीब सीरोपकरणे त्रिषु कार्पासवाससि ॥३८११॥
फा गुनी पूणिमाया स्त्री कीर्त्तिता फ गुनीयुजि ।
फा गुनस्तद्युते मास तथा मध्यमपाण्डवे ॥३८१२॥
नदीजाजुनवृक्षे च फा गुन तु तृणा तरे ।
आश्चर्ये स्याद्विकसितेऽफुल्ल विशरणे नपि ॥
फेनिलोऽरिष्टवृक्षे ना त्रि सफेनेऽथ फेनिलम् ॥३८१३॥
मदनस्य बदर्याश्चारिष्टस्य च फले स्मृतम् ।
फरवस्तु द्वयोरुक्तो जम्बुकेऽप्यसपे तथा ॥३८१४॥

ब

ब पुमान्वरुण सि धौ भगे तोष गतऽपि च ।
ग धन त तुस तानें पुस्येव वपने स्मृत ॥३८१५॥
बकस्तु ना दा भ्यमुनावेकचक्रेश्वरेऽसुरे ।
बकपुष्पद्रुमे तद्व कुबेरेऽपि प्रकीर्त्तित ॥३८१६॥

द्वे तु पक्षिणि कह्लारय पुल्कसीक्षत्रजे ऽपि च ।
बको रुक्मबलाकाभिद्दातावर्जितशाखयो ॥३८१ ॥
बडिश त्वभ्यमानस्य भदेऽपि स्यान्नपुसकम् ।
मत्स्यवेधनयन्त्रे च विर जौ परिकीर्त्तितम् ॥३८१८॥
बण्ठर स्थगिकार जौ लाङ्गले कुक्कुरस्य च ।
करीरकोष तालस्य पल्लव च पयोधरे ॥३८१९॥
बदरी कुवलीवृक्षेऽजगधास्तम्बके स्त्रियाम् ।
ईश्वरस्थानभेदेऽथ कार्पास्या बदरा तथा ॥३८२ ॥
विष्वक्सेनप्रिया सञ्ज्ञेभेषज बदर तु नप ।
उक्त पूर्वस्थावराणाम्प्रसङ्गे परिकीर्त्तितम् ॥३८२१॥
अथ बद्धशिखा स्त्री स्यादु चटाया शिशौ त्रिषु ।
बधि श्येने च काके च नृस्त्रियो परिकीर्त्तित ॥३८ ॥
बन्दनी नतिजीवातुकुटीयाचनकर्मसु ।
बन्दा बन्धाश्च भिक्षुकया लताभेदेऽपि च स्त्रियाम् ॥३८२३॥
बन्ध सीसारयलोहेऽपि पुमानाधौ च बन्धने ।
स्याद्बन्धकी स्त्री कुलटाऽन्नासत्कृतिवेश्ययो ॥३८२४॥
करिण्यामप्यथाऽऽधौ तु बन्धक त्रिषु बन्द्धार ।
बन्धन क्ली सयमने त्रि तु बन्धस्य साधने ॥३८२५॥
पशुबन्धनरज्जौ तु बन्धनी स्त्री प्रकीर्त्तिता ।
बन्धु स्वरे ना स्वजने तुर्ये राशौ च लग्नत ॥३८२६॥
अथ बन्धुरधिक्षेप्ये वाच्यवत्परिकीत्तित ।
बन्धुजीवस्तु बन्धूके क्ली तत्पुष्पे प्रकीर्त्तितम् ॥३८ ॥
योगार्थे त्वस्य लिङ्गादि तर्कणीय यथायथम् ।
बन्धुरस्तु द्वयोर्हसे बन्धूके न स्त्रियामयम् ॥३८२८॥
त्रिलिङ्ग सुन्दरे नम्रे तथा स्यादुन्नतानते ।
बन्धुर मुकुटे पुसि स्त्रीचिह्ने तैलकन्कयो ॥३८२९॥
बन्धूके वधिरे हसे त्रिषु स्याद्रम्पनम्रयो ।
बन्धूको बन्धुजीवाख्यपुष्पगुल्मेऽसनद्रुमे ॥३ ३ ॥

नपुंसकं तु बन्धूकमनयाः प्रसवे मतम् ।
बन्धूरा पण्ययोषायां स्त्रियां पुंभूम्नि शत्रुषु ॥३८३१॥
बभ्रुर्ना केशवे पूर्वराजभेदर्षिभेदयोः ।
आनौ कडारवृषभे धने वर्णे च पिङ्गले ॥३८३२॥
त्रि तु तद्वति खल्वाटे द्वे त्वोते नकुलेऽपि च ।
स्त्रियां तु बभ्रुरित्येषा कपिलायां गवि स्मृता ॥३८३३॥
बरटा द्वयोर्वरट्यां स्त्री हस्यां च तत्पतौ पुमान् ।
बरण्डोऽप्यन्तरे वेदीसमूहमुखरागयोः ॥३८३४॥
बरण्कस्तु मातङ्गवेधां यौवनकण्टके ।
बराटकः पद्मबीजकोषे रज्जौ कपर्दके ॥३८३५॥
बर्पटी व्रीहिभेदे च तथा पण्यास्त्रयां मता ।
बर्बरो बर्बरी म्लेच्छजातिभेदे द्वयोर्भवेत् ॥३८३६॥
बर्बरा त्वजगन्धायां भार्ग्यां चापि स्त्रियां मता ।
बर्हं मयूरपिच्छेऽपि वृक्षपत्रे नपुंसकम् ॥३८३७॥
बर्हिणः भारतद्वीपान्तरे केकिनि तु द्वयोः ।
बर्हिः कुशेक्षुख यज्ञ क्लीं महत्यनले तु ना ॥३८३८॥
बलोऽस्त्र्यस्थनि रूपे च शक्तिरेतश्चमूष्वपि ।
स्थौल्येऽथ ना यावकारण्यवे चापि हलायुधे ॥३८३९॥
दैत्यान्तरेऽथ बलिनि त्रि स्त्री वाट्यालके बला ।
पिप्पल्याश्च द्विलिङ्गस्तु बलः काके प्रकीर्त्तितः ॥३८४ ॥
बलजः गोपुरक्षेत्रे शस्यसङ्करयोरपि ।
बणिज्यायां पुमान् बाणिज्यके च करणान्तरे ॥३८४१॥
बलदेवो बले वाते त्रायमाणौषधौ स्त्रियाम् ।
बलभद्रा त्रायमाणाकुमार्यो पुंसि सीरिणि ॥३८४२॥
बलाहको गिरौ मेघे दैत्यनागविशेषयोः ।
बलिः पूजोपहारे ना भागधेये नृपस्य च ॥३८४३॥
प्राणनाथकधातौ च दैत्यभेदेऽपि कीर्त्तितः ।
देवतार्च्चनतूर्ये तु नृस्त्रियोर्बलिरिष्यते ॥३८४४॥

बलिर्दैत्यप्रभदे ना करचामरदण्डया ।
उपहारे पुमा स्त्री तु जरयाश्लथचर्मणि ॥३८४५॥
गृहदारुप्रभद च जठरावयवेऽपि च ।
बली मापे नालिकेरे शोणाम्लाने च म ञ्ज च ॥३८४६॥
षष्ठ शरीरधातूना कारवे लान्तरेऽपि च ।
बृहत्कर्कोटकाख्ये ना बलयुक्त तु स त्रिषु ॥३८४ ॥
बलिपुष्टीद्वयो काके योगार्थे तु यथायथम् ।
बलिभुक्त द्वयो काके बलिभोक्तरि तु त्रिषु ॥३८४८॥
बलीका विसकण्ठ्या च ब धकीकुलटाथयो ।
बल्वरस्तु पले पुसि स्तन चाथ झष द्वयो ॥३८४९॥
ब य प्रधानधातौ स्या क्लीब बलकरे त्रिषु ।
बहल पुष्कले सान्द्रे भेद्यवत्परिकीर्त्तितम् ॥३८५ ॥
बहिष्ठन्तु माहष्ठे त्रि ह्रीबेरे तु नपुसकम् ।
बहुव्रता तहोमाग्नौ भद्यलिङ्ग तु वाच्ययो ॥३८५१॥
त्रित्वादिसख्यासख्येये महाऽर्थेऽप्यत्र च स्त्रियाम् ।
यदाप्यास्तदा बह्वी बहुरित्यपि वा द्वयम् ॥३८५ ॥
बहुप्रजो द्वे वराहे योगार्थे तु यथायथम् ।
भवेद्बहुफलो नीपे क्ष्मामलक्या तु योषिति ॥३८५३॥
बहुरूप शिवे विष्णौ धूनके सरटे स्मरे ।
बहुलस्तु पुमानग्ना कृष्णपक्षे च नीपके ॥३८५४॥
त्रिस्तु कृष्णे प्रभूते च कृत्तिकाकालजातके ।
अथ स्त्री बहुला श्वेताभूम्येलासुरभीषु च ॥३८५५॥
स्त्री भूम्नि कृत्तिकास्वेता रोदस्योर्बहुले इति ।
बहुलीकृतमेतत्त्रि पूतधा येऽपि विस्तृते ॥३८५६॥
शतावर्यां बहुसुता योगार्थे तु यथायथम् ।
बाढन्त्रिषु भृशार्थे स्याद्बाढ त्वनुमतावपि ॥३८५७॥
अवश्यमर्थे च तथा प्रतिज्ञायां नपुसकम् ।
बाणोऽसुरे बलिसुते तथक्ष्वाकुमहीभृत ॥३८५८॥

प्रपात्रे वृक्षभेदे च ककुभाख्ये पुमान् मत ।
द्वयो बणिग्नीलझिण्टयामस्त्रियां शरतद्भिदो ॥३८५९॥
भवेद्वाणिजक पुसि वडवाग्नौ वणि यपि ।
वाणी सरस्वती द्या वाचि स्यूतावपि स्त्रियाम् ॥३८६ ॥
बाव क्षुद्रफले पूगे बले चापि पुमान् मत ।
द्वयोस्तु बाधा दुखे च निषेधे च प्रकीर्त्तिता ॥३८६१॥
बान्धवो ज्ञातिसुहृदोर्द्वे त्रि स्याद्बन्धुयोगिनि ।
बाभ्रवी गिरिजायां स्त्री बभ्रवश्ये द्वयोर्भवेत् ॥३८६२॥
बभ्रुसम्बन्धिनि त्रि स्यात्स्त्री न्नक्कणयोर्मले ।
गणिस्थराजे पुल्लिङ्गो बाभ्रव परिकीर्त्तित ॥३८६३॥
बारकी शत्रुचित्राश्नपणा जीवपयोधिषु ।
बारुण्डी द्वारपिण्ड्या स्त्री फणिना राजके पुमान् ॥३८६४॥
न स्त्रिया सेकपात्रे च मलेऽक्ष्ण श्रवणस्य च ।
बादरस्तु पुमान्मेलन दाया दिवसे तु नप ॥३८६५॥
बार्हत बृहतीच्छन्दस्यपि स्यादबृहतीफले ।
बृहत्या बृहतश्चापि सम्बन्धिन्यभिधेयवत् ॥३८६६॥
बाल शिशौ च मूर्खे च वाच्यवत्परिकीत्तित ।
बालस्तु नालिकेरे ना पञ्चवर्षगजे द्वयो ॥३८६ ॥
बाला तु मल्लिकाभेदे हरिद्रायामपि स्त्रियाम् ।
बालकस्तु पुमान् कृष्णशालौ त्रिस्त्वतिबालिशे ॥३८६८॥
बालकस्तु शिशावङ्ग बालधौ हयहस्तिनो ।
अङ्गुलीयकहीबेरवलये पुसि बालिका ॥३८६९॥
बालाया बालुकापत्रकाहलाकर्णभूषणे ।
बालवत्सो बालपुत्रयुते त्रिष्वथ च द्वयो ॥३८ ॥
पारावताख्याद यसि कपोताख्यविहङ्गमे ।
बालिशस्तु भवेन्मूर्खे तथा बालेऽभिधेयवत् ॥३८ १॥
बालुका सिकतासु स्याद्वालुक वेलवालुके ।
बालेयो गर्दभे दैत्येऽपि द्वयो परिकीर्त्तित ॥३८ २॥

मृदो बलिहिते चापि खलेऽप त्रिपु कीर्त्तित ।
बाष्पस्तु धूमाभासे ना मुखतोयादिजेऽश्रणि ॥३ ३॥
शाकमदे च बाष्पी तु हिङ्गुपर्यायरयभषज ।
बाहा प्रवाहण नृस्त्री स्त्रिया बाहौ प्रकीत्त्विता ॥३८ ४॥
बाहु पुरुषभेदे ना द्वयोस्त्वेष भुज मत ।
षटत्रिंशदङ्गुलेऽप्येप स्यात्प्रमाणा तरे तथा ॥३८ ५॥
गृहादिद्वारपार्श्वस्थयाग्नकरयातदारुषु ।
बाहक ककटे चार्के दात्यूहे जलखातके ॥ ८ ६॥
बाहजस्तु द्वयो कीरे क्षत्रिये च प्रकीत्तित ।
स्वयजाततिले पुसि बाहुजाते तु वाच्यवत् ॥३८ ७॥
बाहुदा स्त्री नदीमदे बाहोदातार तु त्रिषु ।
अनयोर्बहुदस्यापि त्रि सम्बन्धिवान बाहुदी ॥३८ ८॥
बाहुल कात्तिके पुसि बाहुत्राण तु बाहुलम् ।
स्याद्बाहल तु बहुलसम्बन्धि यभिधेयवत् ॥३८ ९॥
बाहलेय पुमान्स्कन्दे द्वयोस्तु बहुलासुते ।
बाह्य स्वकपित्ते नृत्ते क्लीब त्रिस्तु बहिर्भवे ॥३८८ ॥
बाह्लव तु क्लीबलिङ्ग हिङ्गुकुङ्कुमयोर्मतम् ।
बाह्लिक क्ली कुसुम्भेऽपि हिङ्गुकुङ्कुमयोरपि ॥३८८१॥
पुभूम्नि देशभेदेपि द्वयास्तद्देशज तुषु ।
विशेषाद्बाल्हिकाऽश्वेषु बाल्हीक तत्समार्थकम् ॥३८८२॥
बिदल पाटिते काष्ठे वेण्वादीना दलेऽपि च ।
द्विधाकृते मुद्गादावस्त्रियां परिकीर्त्तित ॥३८८३॥
भ्रुवोर्मध्ये बिदुद तक्षतभेदे पुमा मत ।
वेदितर्यन्यलिङ्ग स्यात् स्वकार्यप्रकृतौ पुमान् ॥३८८४॥
बि दविप्रुषि पक्ष्मादिशरीरस्थपृषत्सु ना ।
लवे चावयवे नश्यत्प्रजयोषिति तु द्वयो ॥३८८५॥
बि दुलस्तु भवेदम्बुवेतसे वेतसेऽपि च ।
बिम्बोऽस्त्री मण्डलसमप्रतिमासुखलक्ष्मसु ॥३८८६॥

प्रतिबिम्बे तत्प्रकृतौ समानत्वोपधानयो ।
आदर्शे स्त्री तु बिम्बोष्ठीलताया क्ली तु तत्फले ॥३८८ ॥
बिम्बस्तु कृकलासे स्यान्मानावणक्षमे द्वयो ।
बिम्बिसारकमि युक्त चापभेदे नपुसकम् ॥३८८८॥
बाणभेदे तु विज्ञेयो ना द्वापश्चाशदङ्कुले ।
बिल छिद्रे गुहायाञ्च पुमानुच्चै श्रवोहये ॥३८८९॥
बिलेशयो द्वे नकुले मूषिके भुजगेऽपि च ।
बिलेशया तु गोधायामिय स्त्रीत्वे प्रकीर्त्तिता ॥३८९ ॥
बिल्व पादपभेदे ना श्रीफलाख्ये प्रकीर्त्तित ।
क्लीब तु तत्फले बिम्बमानेऽपि फलनामनि ॥३८९१॥
बिसखण्ड रक्तपद्मे योगार्थे तु यथायथम् ।
बीजम नेऽप्यपत्ये च रेतस्यङ्कुरकारणे ॥३८९२॥
फलास्थनि च हेतौ च नपुसकमुदीरितम् ।
बीजपुष्प मरुवके तथा मदनकेऽपि च ॥३८९३॥
बीजी बीजवति त्रि स्यात्पुमांस्तु पितरि स्मृत ।
बीज्यो धा ये यावशूकाख्ययवक्षारभिद्यपि ॥३८९४॥
बीभत्सस्तु पुमा पापे काव्यस्थ च रसा तरे ।
बुकस्तु शिवम यां ना मूषाया तु बुका स्त्रियाम् ॥३८९५॥
बुक्कणो वावदूके त्रि शुनि द्वे ना नृपान्तरे ।
बुद्धो ना सुगतेऽथ त्रि पण्डिते ज्ञातरि स्मृत ॥३८९६॥
ज्ञायमाने च फुल्ले च बोधने तु नपुसकम् ।
बुद्धिमा राजभृङ्गाख्य स्याद्रम्याटा तरे द्वयो ॥३८९७॥
वाच्यवद्बुद्धिमानेष बुद्धियुक्ते प्रकीर्त्तित ।
बुदबुदोऽपां विकारे ना नेत्ररोगे त्रि तद्वति ॥३८९८॥
बुध सुरे द्वयोर्ना तु बुधश्चा द्रमसायनौ ।
विद्वद्रोद्धोस्त्रिषु बुधो बुद्धौ तु स्यात्स्त्रिया बुधा ॥३८९९॥
मुण्डीसज्ञतृणस्तम्बे बृद्धिसज्ञे च भेषजे ।
बुधानस्तु गुरौ पुसि विज्ञे स्यादभिधेयवत् ॥३९ ॥

बुध्न प्रजापतौ रुद्रे पृष्ठान्ते खगतुण्डयो ।
वृक्षादेरप्यवाग्भागे पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥३९ १॥

बुलिर्योनौ च वायौ च स्त्रियामेषा प्रकीर्त्तिता ।
बुस कडगरे न स्त्री क्लीब तु सालले बुसम् ॥३९ २॥

गोकरीषधने त्वेषा बुसा स्त्री परिकीर्त्तिता ।
बुस्त प्रहसने पुसि धनुकोटौ नपुसकम् ॥३९ ३॥

बृन्चूको द्व मातृवाहनाम्नि जतौ जले तु नप् ।
वृन्दारको द्वयोर्देवे त्रि तु मुख्येऽपि सुन्दरे ॥३९ ४॥

बृहच्छद शोथशत्रुस्तम्बे ना त्रि तु यौगिके ।
बृहदारण्यके साम्नि वामिद्वीत्यकसमुद्भवे ॥३९ ५॥

क्ली त्रिर्महति तत्रापि स्त्र्यर्थे स्याद्बृहतीत्यथ ।
प्रसहासङ्गवार्त्ताक्या छन्दोभेदेषु केषुचित् ॥३९ ६॥

षट्त्रिंशदक्षराद्येषु तथा विश्वावसोरपि ।
वीणायां क्षुद्रवार्त्ताक्या बृहतीवाक्यपि स्त्रियाम् ॥३९ ॥

बृहत्क सामभेदे य आगन्तेत्यचि गीयते ।
मणिभेदेऽपि तत्राय बृहत्क पुसि कीर्त्तित ॥३९ ८॥

प्रविकासिप्रभोऽल्पोऽपि यो महानिव लक्ष्यते ।
बृहन्नला गुडाकेशे महापोटगले पुमान् ॥३९ ९॥

बेकट स्याद्वैकटिके मत्स्यभेदे च यूनि च ।
बेटकस्त्रिर्वैकटिके तथा सञ्जातयौवने ॥३९१ ॥

बैजिक शिग्रुतले च हेतौ सद्योऽङ्कुरे तु ना ।
अथ बीजप्रयोज्यादौ बैजिक मेद्यलिङ्गकम् ॥३९११॥

बोधनी बोधपिप्पल्योर्बोधन गन्धदीपने ।
बोधनीया स्त्रियां वृद्धिसञ्ज्ञके भेषजान्तरे ॥३९१ ॥

अथ बोधयितव्ये च बोद्धव्येऽपि च वाच्यवत् ।
बोधिस्त्वर्थे स्त्रिया सम्यग्ज्ञाने च द्रे तु कुक्कुटे ॥३९१३॥

पुमांस्तु बोधिबुद्धे स्यादश्वत्थेऽपि प्रकीर्त्तितः ।
बोलः सान्ये मधुनि च तक्काले ना वपोश्रमे ॥३९१४॥
लेखन्युद्धृतमस्या च तथा गन्धरसौषधे ।
ब्रघ्ना ना ऋषिभित्सर्गसूर्ये द्वे न्वश्वविप्रयो ॥३९१५॥
ब्रह्मघोषो वेदघोषे तथैव गरलान्तरे ।
ब्रह्मचारी पुमान्स्कन्देऽप्युपनीतेऽपि कीर्त्तितः ॥३९१६॥
ब्रह्मचारिण्युमाया स्त्री त्रि त्वमथुनकारिणि ।
ब्रह्मण्यः स्याद्ब्रह्मसाधु ब्रह्मदारुशनैश्चरे ॥३९१ ॥
ब्रह्मदण्डी तु भाङ्गर्यां स्याद्ब्रह्मदण्डो धनुर्भिदि ।
ब्रह्मा रुद्रहृषीकेशविरिञ्चार्के दुवह्निषु ॥३९१८॥
यज्ञे विप्रे च भृग्वादिष्वृत्विग्भेदे तु पुंस्ययम् ।
क्लीबं तु वेदे मन्त्रेऽक्षे खेऽब्धात्माऽऽमतपस्सु च ॥३९१९॥
मोक्षे जपे धने चैतेष्वर्थेषु ब्रह्म कीर्त्तितम् ।
ब्रह्मपुत्रो विषे ब्रह्मवालुकारण्ये पुमान्मतः ॥३९२ ॥
रुद्रे केतुग्रहे चापि योगार्थे तु यथायथम् ।
ब्रह्मपुत्रः क्षेत्रभेदे नदभेदे च पुंस्ययम् ॥३९२१॥
ब्रह्मबन्धुस्त्र्यधिक्षिप्य निर्देश्ये ब्राह्मणाधमे ।
ब्रह्मी तु फञ्जिकायां स्याच्छाकमत्स्यप्रभेदयोः ॥३९२२॥
ब्राह्मोऽन्तिमे रात्रियामेऽथ ब्राह्मी सप्तमातृषु ।
एकस्या दिशि चोर्व्यायां ब्रह्मरीत्यारव्यलोहके ॥३९ ३॥
मत्स्याक्ष्यारण्यतृणस्तम्बवाचिषु त्रि तु यौगिके ।
ब्राह्मणस्तु द्वयोर्विप्र आत्मज्ञ तु त्रिषु स्मृतः ॥३९ ४॥
स्याद्न्यारण्यायकवेदांशतदंशान्तरयोस्तु नपु ।
ब्राह्मणी तु ब्रह्मरीतिलोहे भाङ्गर्यामपि स्त्रियाम् ॥३९ ५॥
हरेणुस्पृक्कयोश्चापि स्यात्पिङ्गविपुले तथा ।
पिपीलिकान्तरे रक्तपुच्छे चाञ्जनिकान्तरे ॥३९२६॥
ब्राह्मण्य विप्रसङ्घे ब्राह्मणानां भावकर्मणो ॥३९२६॥

भ

भ नक्षत्रे च मेषादौ सख्याया सप्तविंशतौ ॥३९२ ॥
भस्तु भ्रान्तौ तथा शुक्रग्रहेऽप्यादिगुरौ गणे ।
सज्ञान्तरे पाणिनेश्च भा तु भास स्त्रिया मता ॥३९२८॥
भक्षणाऽभ्यवहारे स्त्री भक्षण च नपुसकम् ।
गवीशुकाख्यधान्ये तु भक्षणीति स्त्रिया मता ॥३९ ९॥
भक्तस्त्रि सेविते सेवकेऽथ क्ल्योदनसेवयो ।
भक्तिर्भागे सेव्यमाने लक्षणासेवयो स्त्रियाम् ॥३९२ ॥
भगोऽस्त्री स्याद्यशोवीर्ययोनियत्नार्कभूतिषु ।
कान्ती छाज्ञानवैराग्यधर्मश्वर्यतपस्सु च ॥३९३१॥
धैर्यसौभाग्यमाहात्म्यधनशुक्रमतिश्रुते ।
पुमांस्तु सूर्ये चादित्यभदानामपि कुत्रचित् ॥९९३ ॥
भगवांस्तु महादेवे शिवे च सुगते पुमान् ।
स्त्री पार्वत्या भगवती पूज्ये तु भगवास्त्रिषु ॥३९३३॥
भङ्ग पुमास्तरङ्गे च भञ्जने च प्रकीर्त्तित ।
धान्ये तु मातुलान्याख्ये स्त्रियां भङ्गा प्रकीर्त्तिता ॥३९३४॥
भङ्गिभङ्गऽप्याकृतौ च विच्छित्तौ च स्त्रियाम्मता ।
भङ्गुरो नश्वरे चापि नम्र स्यादभिधेयवत् ॥३९३५॥
भङ्ग्यो भाङ्गीनभक्तव्यभङ्गसाध्वादिषु त्रिषु ।
भञ्जन क्लीबमामर्देऽथार्थे भञ्जयतेर्न ना ॥३९३६॥
भञ्जना तु स्त्रियामेव विवृत्य वचने भवेत् ।
भटस्तु योधे ना मर्त्ये नटीविप्रोद्भवे द्वयो ॥३९३ ॥
भटाल तु कपाले क्ली भटाल सेवके त्रिषु ।
भटिल सेवके त्रि स्याद्द्वयोस्तु शुनके मत ॥३९३८॥
भट्टारको ना नाट्योक्तौ राज्ञि पूज्ये च पूरुषे ।
स्त्री तु भट्टारिका ज्ञेया नाट्योक्तावेव मातरि ॥३९३९॥

भट्टिनी द्विजभार्यायां नाट्योक्त्या राजयोषिति ।
भण्ड धनवता कोशस्थितेऽर्थे स्यान्नपुंसकम् ॥३९४ ॥
परिहासे द्वयोर्भण्डा हास्यकारिणि तु त्रिषु ।
भण्डी मण्डूकपर्ण्यां रथतृणस्तम्बे स्त्रियाम्मता ॥३९४१॥
भण्डन परिहासे क्ली दुग्धे च कवचे रणे ।
भण्डिलस्तु शिरीषे ना द्वयो पुत्रे तथा शुनि ॥३९४२॥
भण्डीरी मण्डूकपर्ण्यां भण्डीरो योद्धरि त्रिषु ।
भदन्त पुंसि संन्यासिन्यपि स्यात्पूजनीयके ॥३९४३॥
शाक्यक्षपणकानां च त्रिस्तु ताराभदन्तके ।
भद्र पुमान् स्याद्वृषभे गजभेदे द्वयोर्मत ॥३९४४॥
नपुंसक तु भद्र स्यात्सामभेदे शुभे सुखे ।
भद्रस्तु कीर्त्तित साधौ बृहत्यप्यभिधेयवत् ॥३९४५॥
स्त्रियां तु भद्रा दूर्वायां शारिबारास्नयोरपि ।
द्वितीयासप्तमीद्वादश्यारत्यासु च तिथिष्वपि ॥३९४६॥
भद्रकाली तु गन्धोल्या कात्यायन्यामपि स्त्रियाम ।
भय प्रतिभये घोर प्रसूने कुब्जकस्य च ॥३९४७॥
भयानको द्वे वराहे व्याघ्रे स्यान्मूषिकान्तरे ।
रसभेदे तु राहौ च पुमांस्त्रिषु तु भीषणे ॥३९४८॥
भरस्त्वतिशये भारे संग्रामे गरिमण्यपि ।
घोषके भरण तु क्ली धारण पोषणेऽपि च ॥३९४९॥
भरणी घोषके ऋक्षे भरण वेतने भृतौ ।
भरतस्त्वृत्विजि नटे रामस्य च कनीयसि ॥३९५ ॥
आद्यक्षत्रियभेदे च वर्षेऽस्मिन्वृत्तशास्त्रके ।
भरद्वाजो गुरो पुत्रे व्याघ्राटारव्यविहङ्गमे ॥३९५१॥

---

१ भण्डनं कवचे युद्धे खलीकारेऽपि न द्वयो ।
२ भयानक स्मृतो व्याघ्रे रसे राहौ भयंकरे ।
३ भरणी यमनक्षत्रे भरण्यो भुग्नयपि स्त्रियाम् ।
भरण पोषणे चापि धारणे पि नपुंसकम् ।

भरु सुवर्णे च शिवे भर्त्तरि त्वभिधेयवत्।[1]
भरुजा द्वे शृगालेऽपि स्नेहसम्मृष्टतण्डुले ॥३९ ॥
भक्ष्यभेदेऽपि तत्राऽन्ये भरुजी भरुजा स्त्रियाम्।
भरुट कुम्भकारे द्व कपर्दे तु पुमान्मत ॥३९५२॥
भगशब्दस्त्वदन्त स्यात्सामभेदे महेश्वर।
भगस्तेजसि च क्लीब सा त रेतस्यपीष्यत ॥३९५४॥
भर्त्ता धवे ना त्रिषु तु स्वामिपोषकधत्त पु।
भर्त्तदारक उक्तो ना नाट्योक्तौ युवराजके ॥३९५५॥
राजपुत्र्या तु नाटयोक्तौ स्त्रीलिङ्गा भर्त्तदारिका।
भम स्याद्वेतने चापि काञ्चनेऽपि नपुसकम ॥३९५६॥
भर्मक रोगभेदे स्याद्विडङ्गकलधौतयो ।
भल्ल स्यात्पुसि भल्लूके शस्त्रभेदे पुनर्द्वया ॥ ९५ ॥
भल्लीति भल्लातक्या च स्त्रियामेव प्रकीर्त्तता।
भल्लको वानर चापि तथा ऋक्षमृगे द्वयो ॥ ९५८॥
भल्लाटस्तु द्वयोऋक्षे ना देवे वास्तुवासिनि।
उदकपार्श्वस्थकोष्ठाना प्रत्यगारम्य तुर्यके ॥३९५९॥
भल्लूकष्टुण्डुवृक्षे ना द्वयोस्त्वृक्षमृग मत ।
भव शिवप्राप्तिसत्त्वजगज्जन्मशुभक्कुधि ॥३९६ ॥
भवस्तु भावितर्येष भव्यवत्परिकीर्त्तित ।
भवत्पूज्ये सर्वनाम त्रिष्वत्र भवती स्त्रियाम् ॥३९६१॥
त्रिष्वेव जायमाने च विद्यमाने च तत्र च।
स्त्रीत्वे भवन्तीत्येतस्यान्ना तु गोत्रस्य कर्त्तरि ॥३९६ ॥
ऋषिभेदे भवन्ती तु स्त्रीलिङ्गा लटश्रुतौ स्मृता।
भवन क्लीबमुत्पत्तौ गृहे भवनमस्त्रियाम् ॥३९६३॥
स्त्रीपुसयोस्तु भवन कुक्कुटे परिकीर्त्तित ।
भवन्त पुसि काले त्रिभवन्ती भवितर्यपि ॥३९६४॥

---

१ भरुस्तु वर्णे पुसि स्याद्भर्त्तरि त्वभिधेयवत्।

भविलस्त्रिषु भव्य क्ली गृहे मु यन्तरे तु ना ।
भविष्यत्सालले क्लीब भाविनि वभिधेयवत् ॥३९६५॥
भ यो ना कर्मरङ्गद्रौ क्लीब तस्य फले धने ।
कल्याणारयगुणे च स्याद्धेद्यलिङ्ग तु तद्वति ॥३९६६॥
योग्ये भवितरि प्राप्ये भवितव्ये तु त नपि ।
भषण कुक्कुरे द्व स्यात्क्ली तु बुक्कणकर्मणि ॥३९६ ॥
भसद्दा ता स्त्रिया विष्ठा गुह्यकोष्ठेषु नप् मुखे ।
भस्त्रा तु वह्निध्मानार्थाऽयस्कारादिद्दतौ स्त्रियाम् ॥३९६८॥
भदे सप्तदशस्तोमविच्युतरिषुधावपि ।
भस्मक याधिभेदेऽपि विडङ्गऽपि नपुसकम् ॥३९६९॥
भस्मतूल ग्रामकूटे पाशुवर्षे हिमेऽपि च ।
भाकूट शलभदेऽपि तथैव निमिषा तर ॥३९ ॥
भाक्तस्तु भक्तसाधौ स्यात्त्रिषु लाक्षणिकेऽपि च ।
भागौ भाग्ये तुरीयांशे रूपकाऽर्धेंऽशमात्रके ॥३९ १॥
भाग तु सामभेदे क्ली भगसम्बन्धिनि त्रिषु ।
भागधेय तु भाग्ये क्ली दायादे तु पुमानयम ॥३९ २॥
स्त्रीपुसयोर्भागधेयी राजदेयकरे मता ।
अथ भागवत प्रोक्तो भगवद्योगिनि त्रिषु ॥३९ ३॥
द्वयो क्षत्रियपूर्वाया वैश्याया व्रात्यत सुते ।
भाग्य शुभाशुभ ज मा तरकर्मणि कर्मणि ॥३९ ४॥
शुभाशुमेऽथ भक्त ये त्रिषु तत्र च साधुनि ।
प्रदीयते या वृद्ध्यायलाभशुल्को पदात्मना ॥३९ ५॥
भाजन तु मत योग्ये पात्रे चापि नपुसकम ।
भाण्ड क्लीबममत्रेऽश्वभूषणे भूषणेऽपि च ॥३९ ६॥
वणिङ्मूलधने पण्ये तथैवोपस्करे स्मृतम् ।
भाण्डी तु स्त्री शिरीषद्रौ भण्डसम्बन्धिनि त्रिषु ॥३९ ॥
भातु शरीरावयवे दैवे चापि पुमान्मत ।
भानुर्ना भास्करे घस्रे नृस्त्रियोस्तु गभस्तिषु ॥३९ ८॥

भाम क्रोधे च भगिनीपता भामा तु योषित ।
स्त्रीत्वे च सत्यभामायामी र्ष्यावति तु स त्रिषु ॥३९ १॥
भार सहस्रद्वितये पलाना च गरिम्णि च ।
वोढव्ये भरणे चापि पुंलिङ्ग परिकीर्त्तित ॥३९८ ॥
भारत त्वस्त्रियामस्मिन्वर्षे स्यात्स्त्री तु भारती ।
यक्षिणीतुलसीवाणीनाट्यवृत्त्य तरेषु च ॥३९ १॥
क्लीब तु भारतमिति महाभारत इष्यते ।
भारद्वाज पक्षिभदे व्याघ्राटाख्ये द्वयोर्मत ॥३९८ ॥
भारद्वाजी स्त्रियां वन्यकार्पास्या ना क्वचिन्मुनौ ।
भरद्वाजस्य वश्ये द्वे त्रि तु सम्बन्धिनि स्मृत ॥३९८३॥
भारवाहो रेचिताख्याऽश्वगतौ पुंसि कीर्त्तित ।
अथ तद्वति भारस्य वोढर्यपि च वाच्यवत् ॥३९८४॥
भारुण्ड सामभेदेषु क्ली भारुण्ड पुनर्द्वयो ।
एकोदरपृथग्ग्रीवे पक्षिण्यम्बुधिचारिणि ॥३९८५॥
भार्गवी पार्वतीलक्ष्मीदूर्वासु स्यात्स्त्रियामथ ।
शुक्रे परशुरामे च गजे धन्विनि भार्गव ॥३९८६॥
भार्त्रं पोषे त्रि तु भृतेर्ग्राहके भक्त योगिनि ।
भार्या स्त्री सहधर्मिण्या भार्यस्त्वादिनृपान्तरे ॥३९८ ॥
भारसाध्वादिके त्वेष भार्य स्यादभिधेयवत् ।
भार्याटक पुमान्भार्यानिर्जिते हरिणान्तरे ॥३९८८॥
भार्यारु शैलभेदे स्यान्मृगभेदे च तत्र च ।
क्रीडया परभार्यायाम्पुत्रो येनोपपादित ॥३९८९॥
भाल तु तेजसि क्लीब ललाटे च प्रकीर्त्तितम् ।
भालाङ्कस्तु शिवे शाकभेदेऽपि करपत्रके ॥३९९ ॥

---

१ भार स्याद्वीवधे विष्णौ पलानां द्विसहस्रके ।

२ भारद्वाजस्तु ना द्रोणे द्वे भरद्वाजवंशजे ।
भारद्वाजी तु वन्यायां कार्पास्यां परिकीर्त्तिता ।

महालक्षणसम्पन्नपुरुषे राहिते च ना।
कच्छपे च द्वयोस्त्रिस्तु रोहिते गुणिनि स्मृत ॥३९९१॥
भावस्तु भास्करे ज्येष्ठभ्रातर्यपि पुमान्मत ।
भावो लीलाक्रियाचेष्टाभूत्यभिप्रायजन्तुषु ॥३९९ ॥
पदार्थमात्रे सत्तायामात्मयोनिस्वभावयो ।
आत्मन्यपि च योनौ च प्राप्तिसंस्कारजन्मसु ॥३९९३॥
शृङ्गारादे रसस्यापि कारण चान्तरात्मान ।
नाट्योक्तिविषये प्राज्ञ पुसि त्रिषु तु मानिनि ॥३९९४॥
भवसम्बन्धिनि बुधे भाव स्याद्भवितयापि ।
भावज्ञा स्त्री प्रियङ्गुद्रा भद्यवद्भाववेदिनि ॥३९९५॥
भावनोत्पादने चापि तथा गन्धाधवासने ।
प्रवर्त्तनायामपि च नप्स्त्रियो परिकीर्त्तिता ॥३९९६॥
भावाटस्तु त्रिषु ज्ञेयो भावके कामुकेऽपि च ।
ना तु साधुनिवेशे स्याद्भावाटस्तु द्वयोर्नटे ॥३९९ ॥
भावित्र तु भवेद्भद्रे त्रैलोक्ये च नपुसकम् ।
भावुक कुशले क्लीबमुपालम्भे तु भाषणी ॥३९९८॥
भाषा गिर्यभियोगोक्तौ लौकिकोक्तौ च भाषणे ।
भाष्य तु क्ली विवरणग्रन्थजात्यन्तरे यथा ॥३९९९॥
महाभाष्यादि तत्र स्याद्भाषणीये तु भेद्यवत् ।
भा प्रभावे मयूखे च स्त्रियामुक्ता रुचावपि ॥४ ॥
भासो द्वयो शकुन्तान्यखगे दीप्तावपि स्मृत ।
सामान्तरे तु भास तन्नपुसकमुदीरितम् ॥४ १॥
भासन्त सुन्दराकारे त्रिषु ना भासपक्षिणि ।
भासयन्तो रवौ ना त्रि भाषयन्ती प्रभाकृति ॥४ २॥
भास्कर पावके सूर्ये क्वचित्पाषाणशिल्पिनि ।
भास्वान्रवी द्वयोर्ना स्त्री नद्युष्णसोस्त्रिस्तु भास्वरे ॥४ ३॥

भिक्षा तु भिक्षितद्रव्ये देयान्न ग्रासमात्रके।
याचने सेवने चापि भृतावपि मता स्त्रियाम् ॥४ ४॥
भिक्षुरित्येष पुंलिङ्ग परिव्राजि प्रकीर्त्तित।
चतुर्थकालाशिनि तु भिक्षाशीले च मद्यवत् ॥४ ५॥
भित्ति प्रदेशे कुड्य चाप्यवलम्बे भवेत्स्त्रियाम्।
भित्तिका तु नदीभेदे शरावत्याह्वये स्मृता ४ ६॥
तथा भाषादिचूर्णे च वज्र च परिकीर्त्तिता।
भिदक परशो वज्रे पुंसि स्याद्वज्रकामयो ॥४ ॥
भिदुर कुलिश त्रिस्तु भेत्तर्यपि भिदेलिमे।
भिन्द्र स्यादद्दे त्रि क्ली त्वेतद्रणवज्रयो ॥४ ८॥
भिन्न विदारितेऽन्यस्मिन्मिश्रे चाप्यभिधेयवत्।
भिन्नकुम्भस्त्रि योगार्थे तथा स्याद्दास्यमोचिते ॥४ ९॥
भिल्लो द्वयो स्याच्छबरान्निष्ठ्यपूर्वाऽधिकासुते।
अथ भिल्ल पुमानेष पक्कणे परिकीर्त्तित ॥४ १ ॥
भीत भये क्ली भीतस्तु त्रिषु प्रोक्ता भयान्विते।
भीमोऽम्लवेतसे घोरे शम्भौ मध्यमपाण्डवे ॥४ ११॥
दमयन्त्याश्चपितरि क्रूरे लिङ्ग तु मद्यवत्।
भीरु पुंसीक्षुदतरौ स्त्रिया तूर्वारुयोषितो ॥४ १२॥
योषिद्भेदेऽपि भीरुस्तु कातरे त्रिषु कीर्त्तित।
भीरुचेतास्त्रियोगार्थे मृगे त्वेष द्वयोर्मत ॥४ १३॥
भीषणा भापनायां न ना भीमे तु त्रि भीषणम्।
भीषणा तु कवाटे च स्त्रियां स्यात्सल्लकीरसे ॥४ १४॥

---

१ भासयन्तस्तु पुंल्लिङ्गो भास्करे परिकीर्त्तित।
अथ भासयितयुक्ता भासयन्त्याभिधेयवत्।
भास्कर पुंसि सूर्येऽपि पावकेऽपि प्रकीर्त्तित।
भास्वानि वा रवौ पुंसि मद्यलिङ्ग तु भास्वरे।
भास्वती तु स्त्रियां नद्या तथैवोषसि कीर्त्तिता।

भीष्म शान्तनवे पुंसि भेद्यवस्तु भयानके।
भुजो भूजद्रुमे [ऽर्केऽग्नौ] बाहौ भूमानगोचरे ॥४ १५॥
[गरुडे वस्तुभेदे] च भुजा [स्यात्] नृस्त्रियो [रियम्]।
भुजङ्गस्तु विटे पिङ्गे तथैवा यतमे भवेत् ॥४ १६॥
चण्डवृष्टिप्रपातादिदण्डका ते द्वयोस्त्वहौ।
भुजिर्भुनक्तिधातौ च पावके भुजतावपि ॥४ १७॥
भुजिष्यस्तु द्वयोर्दास आचार्ये त्वोदने तथा।
हस्तसूत्रेऽपि ना त्रिस्तु भोक्तर्येष धने तु नप् ॥४ १८॥
भुरण्यस्तु त्रिषु क्षिप्रे विष्णवर्काग्निषु पुंस्ययम्।
भुरिग्बाहौ च कन्दे च वसाया भुवि च स्त्रियाम् ॥४ १९॥
उक्ताद्युत्कृतिपर्यन्त छन्द स्वेकाक्षराधिके।
छन्दोभेदेऽप्यथ पुमा भुरिप्राजनि कीर्त्तित ॥४ ॥
भुलिङ्गः ऋषिभेदे ना नीष्वृद्भेदे तु भूम्नि च।
स्यात्साल्वावयवे द्वे तु पक्षिजात्यन्तरे मत ॥४ २१॥
भुवनोऽस्त्री भवेल्लोके क्लीबं तु गगने जले।
भुवन्युः स्यात्पुमानर्के ज्वलने शशलाञ्छने ॥४ २२॥
भुवो नपुंसक सान्त लोकभेदे रवावपि।
भूर्भूम्यां स्थानमात्रे स्त्री सौराष्ट्रया व्योमदेहयो ॥४ २३॥
भूक छिद्रे च काले च नपुंसकमुदीरितम्।
भूकेश्यवल्गुजे स्त्री स्याद्भूकेश शैवले वटे ॥४ २४॥
भूजम्बुरितिगोधूमे विकङ्कतफले स्त्रियाम्।
भूत प्राप्तिमहाभूतसत्त्वे भवनकर्मणि ॥४ २५॥
त्रि तु प्राणिनि च न्याय्येऽतीतलब्धसमेषु च।
देवयोन्यन्तरे त्वस्त्री भूता तन्मातरि स्त्रियाम् ॥४ २६॥

---

१ भुजस्तु गरुडे केँ नौ बाहौ तु स्याद्द्वयोर्भुजा।
२ भुरिक स्त्री भूवसाकन्दभुजेष्छ दोत्तरेपि च।
३ भुवनो स्त्री भवेल्लोके क्लीबं तु भुवने जले।

अथ भूत कुमारेऽ्य पुल्लिङ्ग परिकीत्तित ।
भूत क्ष्मादौ पिशाचादौ ज तौ क्लीब त्रिषूचित ॥४ २७॥
प्राप्ते वित्ते समे सत्ये देवयो य तरे तु ना ।
भूतवृक्षस्तु शाखोटद्रुम स्योनाकपादपे ॥४ २८॥
भूतात्मा पुसि [पवने] दैवे[जीवात्मब्रह्मणो] ।
भूतिभस्मनि सम्पत्तिहस्तिशृङ्गारयो स्त्रियाम् ॥४ ९॥
भूतिक तु यवा या कत्तणभूनिम्बभूस्तृण ।
छत्रायवा योभूतीक भूनिम्बे कटफलेऽपि च ॥४ ३ ॥
भूतेष्टा स्त्री चतुदश्या तिथौ स्यात्रिस्तु यौगिके ।
भूभृ पुमा नृपे चापि पवते च प्रकीर्त्तित ॥४ ३१॥
भूमि पृथि या विषये स्थानमात्रे भवेत्स्त्रियाम् ।
भूमिका रचनाया स्याद्वेषा तरपरिग्रहे ॥४ ३ ॥
भूमिजोऽङ्गारके पुसि तथैव नरकासुरे ।
स्त्रिया तु भूमिजा सीतादे या त्रिषु तु भूद्भवे ॥४ ३३॥
भूमिस्पृक स्याद्वयोर्वैश्यमर्त्ययोस्त्रि तु यौगिके ।
भूयोऽ यय पुनरर्थे त्रिस्त्वितरे च महत्तरे ॥४ ३४॥
भूरिर्ना वासुदेवे च हरे च परमेष्ठिनि ।
नपुसक सुवर्णे च प्रा ये स्याद्वा यलिङ्गक ॥४ ३५॥
स्त्रिया भूरिफलाऽन्यस्मि पुष्पवल्ले प्रकीत्तिता ।
स्थावरे सप्तलानाम्नि यौगिके तु त्रिषु स्मृता ॥४ ३६॥
भूर्णिभ्रमणशीले त्रि स्त्रिया भूमौ धृतावपि ।
भूषणाऽलङकृतौ च स्यात्स्त्री क्ली त्वाभरणे भवेत् ॥४ ३७॥
भृगुर्गिरितटे ऋष्य तरे शुक्रे शिवे पुमान् ।
भृङ्गो द्वयो स्याद्भृम्याटे भ्रमरे च पुमा पुन ॥४ ३८॥

---

१ भूता मा पवनेदेहे जीवा मनि विरञ्चने ।

२ भूरिर्ना सुवर्णे स्यात्सुरे तु त्रिषु स्मृत ।

३ भृगु प्रधाने मुनिभिस्सत्सुतेषु सुभूमनि ।

भृङ्गराजे लवङ्गे च भृङ्गारे वर्णभिद्यपि ।
पिङ्गारये त्रिस्तु तद्युक्ते क्ली तु वक्पत्रभषजे ॥४ ३९॥
भृङ्गराजो माकवे स्याद्योदक्षिणपदाचले ।
वास्तुन सप्तमपदे प्राक्त आरम्य तिष्ठति ॥४ ४ ॥
वास्तुदेवेऽपि ना तस्मि द्व तु भू (धू) म्याटभृङ्गयो ।
भृङ्गार कनकाल्वां भृङ्गारी झि यारयकीटके ॥४ ४१॥
भृङ्गारी झिल्लिकाया स्यात्कनकालौ पुन पुमान् ।
भृज्जकण्ठस्तु वश्याया विप्रेण जनितेऽपि च ॥४ ४२॥
तथा व्रात्येन विप्राया जनितेऽपि सुते द्वयो ।
भृति स्त्री धारण पोष भृतकादेश्च वेतने ॥४ ४३॥
अथ तत्र भृति स्त्री स्या मूल्येऽपि भरणेऽपि च ।
भृत्या दासे द्वयोर्भृत्या तु स्त्रिया वेतने मता ॥४ ४४॥
भृमल कृमिभेदे द्व क्ली चक्रे नाऽनिले मत ।
भृमिर्द्वयोहस्तिनि स्यात्पुसि वायौ जलेऽपि च ॥४ ४५॥
भृष्टि स्याद्भर्जने शू यवाटिकायामपि स्त्रियाम् ।
भेको निषादविप्राजे मण्डूकेऽपि द्वयोमत ॥४ ४६॥
भेदो विशषे यावृत्तावुपजापे विदारणे ।
भेनस्तु च द्र सूर्ये च पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥४ ४७॥
भरस्तु कातरे त्रि स्याद्भेरी स्त्री दु दुभौ मता ।
भेरुण्डा देवताभेदयक्षिण्य तरयो स्त्रियाम् ॥४ ४८॥
भयानके तु भेरुण्डो वाच्यवत्परिकीर्त्तित ।
भेल स्यादुडुपे पुसि चिाकत्साग्र थकृ मुनौ ॥४ ४९॥
पूज्यप्राज्यप्रहीणेषु तु त्रि स्यात्कातरेऽपि च ।
भषज स्यात्सुखे तोये भेषजी चौषधे नना ॥४ ५ ॥
भैरवी मातृभेदे स्त्री ना शिवे त्रिस्तु भीषणे ।
भोगो घने सुखे रा ये सपस्य फणकाययो ॥४ ५१॥

---

१ मधुमते भृङ्गराजे पुसि भृङ्गी गुड वर्चि ।

२ पुमांस्तु मेघे भक स्याद् भीरके च तथा मत ।

कौटिल्ये भोजने त्राण वेश्यादीना भृतावपि ।
भोगवद्भोगयुक्त त्रिभुजग भोगवान्द्वयो ॥४ ५ ॥
स्त्री तु भोगवती नागपुरी पातालगङ्गयो ।
भोगी तु सर्पे द्वे स्त्री तु भोगिनी नृपयोषिति ॥४ ५३॥
कृताभिषेकाया अन्यस्या भोगी त्वेष च वान्यवत् ।
वैयावृत्यकरे चापि भूपाले भोगवत्यपि ॥४ ५४॥
भोजो राज यमान्तेऽपि नीवृद्भेदेऽस्य राजनि ।
मर्त्यजात्यन्तरे चापि द्वयो क्षत्रियगोलक ॥४ ५५॥
पुभूमनि तु विन्ध्याद्रिपार्श्वस्थ नीवृदन्तरे ।
भोजन धनमुक्त्यो क्लो न ना भोजयतेशुचि ॥४ ५६॥
भोजनीय त्रि भोक्तव्ये सामुद्रलवण तु नप ।
भोलो द्वयोर्द्वीपिनामशार्दूलान्तर इष्यते ॥४ ५ ॥
उदीच्यनीवृद्भेदे तु भोला पुभूमान स्मृता ।
भोलो मीनान्तरे पुसि त्रिषु कामादिविह्वले ॥४ ५८॥
भोस्तु सम्बोधने चैव विषादेऽप्यव्यय मतम् ।
भौतो देवलके पुसि भौती रात्रौ स्त्रिया मता ॥४ ५९॥
भौत भूतसमूहे क्ली भूतसम्बन्धिनि त्रिषु ।
भौतिक भूतसम्बद्धे त्रिषु ना भौतिक शिवे ॥४ ६ ॥
भौमोऽभिधेयवद्भूमिभवऽथ नरकासुरे ।
कुजग्रहे रक्तपुनर्नवायामम्बरेऽपि ना ॥४ ६१॥
भौरिक कनकाध्यक्षे त्रि पुभूम्नि तु भौरिका ।
प्राग्देशावस्थिते नीवृद्भेदे समतटाह्वये ॥४ ६२॥
भ्रशस्तु व्यसने पाते नाशे चैव पुमान्मत ।
भ्रमस्तु मिथ्याज्ञाने च भ्रमणे विचिकित्सने ॥४ ६३॥
शस्त्रमार्जनयन्त्रे च गृहाच्च निर्गमाध्वनि ।
भ्रमको भ्रामक क्रोष्टौ द्वे सूर्यावर्त्तके पुमान् ॥४ ६४॥

---

१ भ्रमीस्तु निर्गमे भ्राम्सौ कु दभ्रमणयोरपि ।

अयस्का तविशेष च लोहभ्रमणकारिणि ।
भ्रमण तु नपि भ्रा तौ स्त्रीनपुसकयो पुन ॥४ ६५॥
भ्रमणा भ्रमयत्यर्थे स्त्रिया तु परिकीर्त्तिता ।
कारुण्डिकायां भ्रमणी क्रियाद्यायामधीशितु ॥४ ६६॥
भ्रमरोऽलौ द्वयोर्ना तु गिरिके कामुके बटौ ।
हस्तमुद्रा तरे पुनदात्रीजतुकयो पुन ॥४ ६७॥
भ्रमगी भ्रमर छ र्यां तु स्त्रिया भ्रमरा मता ।
अथ भ्रमरको भृङ्ग गिरिके चाऽलका तरे ॥४ ६८॥
भ्रमरेष्टस्तु पुस्याम्रे नीपे जम्बूटपादपे ।
भ्रमि स्त्री भ्रमण धात्वोभ्रमतौ भ्राम्यतौ च ना ॥४ ६९॥
भ्राजो दीप्ते त्रिष्वथ ना दीप्तावादि यभिद्यपि ।
भ्राजास्तु श्लोकभेदे स्युर्भ्राज सामा तरे नपि ॥४ ॥
भ्रातृ यस्तु पुमान्शत्रा भ्रात्रप ये द्वयोर्मत ।
भ्रा तो ना राजधुस्तूरे मत्तेभे त्रिस्तु सम्भ्रमे ॥४ १॥
भ्रा तिर्मिथ्यामतौ चापि भ्रमणे च स्त्रिया मता ।
भ्रा तिमा भ्रा तियुक्ते स्यादलङ्कारा तरेऽपि च ॥४ ॥
भ्रामर मधुभेदे स्यात्क्लीब भ्रमरनिर्मिते ।
दुर्गाया भ्रामरी स्त्री स्याद् भ्रामर प्रस्तरा तरे ॥४ ३॥
भ्रामाको जम्बुके धूर्ते सूर्यावर्त्ताऽश्मभद्योयो ।
भ्रुकुटीमुख इत्युक्तो यौगिके सपभिद्यपि ॥४ ४॥
भ्रूणोऽर्भके च भूपे च ब्राह्मण्या श्रोत्रियद्विज ।
गर्भिण्यां स्त्रैणगर्भे च विप्रे चार्ये मतावपि ॥४ ५॥

म

मो मध्यमस्वरे काले शिवे द्रब्रह्मविष्णुषु ।
यमे विषे म त्रभेदे पुमांश्छन्दोगणा तरे ॥४ ६॥

---

१ य त्रभेदे वा ।

मा प्रभा मातृमानेषुज्ञानब धनमृत्युषु ।
लक्ष्म्या कव्या स्त्रियो म तु धनेऽम्बुनि नपुसकम् ॥४ ॥
मकरो द्वे झषे ना तु निधिराशिभिदो स्मृत ।
मकरन्द पुष्परसे तथा स्या म लिका तरे ॥४ ७८॥
रससि दूरमदे च कामे च मकरध्वज ।
नपुसक मकरमुख तथा स्यान्मकराकृतौ ॥४ ९॥
मकराङ्क समुद्रऽपि कामदेवे पुमा मत ।
जलनिगमनद्वारे जानूर्ध्वावयवे तथा ॥४ ८ ॥
मकुर स्या मुकुरवद्दपण बकुलद्रुमे ।
कुलालदण्डे मुकुले बकुलस्य फलेऽपि नप ॥४ ८१॥
मकुलो बकुले पुसि कुडमले त्वस्त्रिया मत ।
मकुष्ठो व्रीहिभेदे ना म थरे पुनर यवत् ॥४ ८ ॥
मक्कणस्तु पुमा कालेऽप्यजातरदने गजे ।
नि श्मश्रुपुरुषे द्वे तूद्दशे खवगजेऽपि च ॥४ ८३॥
क्लीब तु मक्कण योधजङ्घात्राणाथयन्त्रके ।
मखो यशस्कामसत्रयाजिक्र वमरा तरे ॥४ ८४॥
मखद्वेषी शिवे चापि राक्षसेऽपि पुमा मत ।
मगधो राजभेदेऽस्य मगधा भूम्नि नीवृति ॥४ ८५॥
मुष्टौ च फलकादीनां वाद्यभेदे च मडडुके ।
पिप्प या मगधा स्त्रीत्वे [सुश्रुते परिकीर्त्तिता] ॥४ ८६॥
मघा स्त्रियोऽग्निनक्षत्रे भूम्नि काले च तद्युते ।
मघा तु गिरिजाया स्त्री मघी धा या तरे भवेत् ॥४ ८ ॥
मघा त्वोषधिभदे द्व मघो द्वीपान्तरे पुमान् ।
क्ली तु दानधनादौ च मघ स्यात्कुसुमा तरे ॥४ ८८॥
मघवा ना नकारा तस्त्वन्तोपी द्रे त्रि दातरि ।
मङ्क्षु शीघ्रे भृशार्थे चाव्ययमेतत्प्रकीर्त्तितम् ॥ ४ ८९॥

१ सुखे म्बुनि वा ।
२ मक्कूर्ण वा ।

मङ्गोऽस्त्री मङ्गले ना तु मङ्ग आर्योपजीविन ।
मङ्गस्तु मङ्गलस्य स्या पठितर्यभिधेयवत् ॥४ ९ ॥
मङ्गोऽस्त्री नौशिरस्यक्ली मङ्गने गमनात्मके ।
मङ्गला सितदूर्वायाग्रुमायामस्त्रिया शुभे ॥४ ९१॥
त्रि तु स्या मल्लिकापुष्पग धे ल घार्थरक्षणे ।
मङ्गलोऽङ्गारके ग्रामवास्तुभेदे च पुस्ययम् ॥४ ९२॥
मङ्गल्य निमित्तादौ मङ्गलस्याभिधेयत् ।
मल्लिकासमग धे च दध्नि तु स्या नपुसकम् ॥४ ९३॥
तथा सर्वौषधिस्नाने ना तु बिल्वमसूरयो ।
अश्वत्थ त्रायमाणाया वचाया तु स्त्रियां मता ॥४ ९४॥
कालागुरुविशेषे च मल्लिकाख्ये च सौरभे ।
रोचनाशम्यथ पुष्पीमसीशुक्लवचास्वपि ॥४ ९५॥
रीठाकरञ्जे जीरे च नारिकेलकपित्थयो ।
मङ्गल्या गिरिजाया च चीडायामृद्धिभेषजे ॥४ ९६॥
दूर्वाहरिद्राजीव तीमाषपर्णीप्रियङ्गुषु ।
मञ्जरी तिलकद्रुमुक्तयोव लरौ द्वयो ॥४ ९ ॥
मञ्जुघोषाऽप्सरोभेद यौगिके तु भवेत्त्रिषु ।
मञ्जुनाशी तु शच्या स्त्री मञ्जनाशस्त्रियौगिके ॥४ ९८॥
मञ्जुलो जलरङ्कारयखगे द्वे त्रि तु सुन्दरे ।
मञ्जुल तु मत क्लीब निकुञ्जे च जलाञ्जले ॥४ ९९॥
जलाञ्चल स्वतोवारिनिर्गमे शैवलेऽपि च ।
मञ्जूषा स्यात्पुटे तद्व पेटायामपि च स्त्रियाम् ॥४१ ॥
मटची करकायां स्याच्छलभे कस्यचि मते ।
मठरस्त्वृषिभदे ना मद्यव वलसे स्मृत ॥४१ १॥
मठर दध्न्यतितरा द्रवीभूते नपुसकम् ।
त्रि तु कण्ठगते प्राणे क्रमिजात्य तरे द्वयो ॥४१ २॥
मड्डुक वाद्यभेद च मुष्टौ स्या फलकस्य च ।
मणि स्त्रीपुसयो रत्ने मणिब धेऽप्यलिञ्जरे ॥४१ ३॥

अजादिकण्ठप्रभवे स्तनाकारे च वस्तुनि ।
काष्ठलोहादिनिष्पाद्यगुलिकायामपीष्यते ॥४१ ४॥
गोलमात्रे गुह्यमध्यगुले शेफाग्रकेऽपि च ।
घण्टाया मणतौ त्वेष धातो पुास मणि स्मृत ॥४१ ५॥
कुण्डले तीथभद च स्त्रिया स्या मणिकणिका ।
मणिच्छिद्रा तु भदायामृषभार्यौषधावपि ॥४१ ६॥
मणिब धो मणेर्ब ध स धौ पाणिप्रकोष्ठया ।
मणिमाला स्त्रिया हारे तथा द तक्षता तरे ॥४१ ॥
मणिसोपानश दोऽय सोपाने मणिनिर्मिते ।
चाटुकार इति ख्यातेऽप्येकव ल्या समे कृते ॥४१ ८॥
सौवणगुडकैर्विंद्यादलङ्कारा तरेऽपि तम् ।
मणीच मौक्तिके पुष्पे चाग्रहस्तेऽपि कीत्तितम् ॥४१ ९॥
मण्ड सवरसाग्र स्यादस्त्री म डा तु नृस्त्रियो ।
मण्डने किरणे तु स्यान्मण्डो मण्डी तु सा स्त्रियाम् ॥४११ ॥
या (ग्वा)गुल्यां पञ्चमाषे तू माने मण्ड नपुसकम् ।
मण्डन भूषणे क्लीब न ना भूषिकतौ भवेत् ॥४१११॥
मण्डनालङ्करिष्णौ तु वाच्यव मण्डनो मत ।
मण्डपस्त्रिषु मण्डस्य पिबेऽथाऽस्त्रीजनाश्रये ॥४११ ॥
मण्डय तस्तु मुकुरेऽप्योदनेऽपि पुमा मत ।
अथ प्रसाधके वित्तपालेऽप्यर्थमये त्रिपु ॥४११३॥
तत्रापि मण्डय तीति स्त्रीत्व रूप प्रकीत्तितम् ।
मण्डली त्र्युपसर्ये च बिम्बे कुष्ठरुजा तरे ॥४११४॥
समूहमात्रे ग्रामौघे देशे द्वादशराजके ।
युग्मे च कुक्कुरे त्वेष कीर्त्तितो मण्डलो द्वयो ॥४११५॥
क्लीब मण्डलक बिम्बे कुष्ठभेद रुजान्तरे ।
मण्डलाग्रस्तु खड्गेऽप्यन्वर्थे खड्गान्तरेऽपि ना ॥४११६॥
मण्डली तु द्वयो सर्पजातिभेदेषु केषुचित् ।
षड विंशतौ मण्डलवदर्थे ना तस्त्रिषु स्मृत ॥४११७॥

मण्डूक पिकभेदे च भेके स्त्रीपुसयोर्मत ।
अथोपरिष्टादारभ्य तुर्यभागे स्त्रियामियम् ॥४११८॥
गजापराङग्रर्मण्डूकी कृतस्य दशधा मता ॥
मण्डूकपर्ण्यामपि च लाङ्गलावयवा तरे ॥४११९॥
पुरदुर्गबहिर्भूमिकृतयन्त्रा तरे तु ना ।
मण्डूकष्टुण्टुकेऽपि स्यात्तथा नागा तरेऽपि च ॥४१२ ॥
रतब धा तरे त्वेत मण्डूक स्यान्नपुसकम् ।
मण्डूकपर्णी भण्डीरीव या स्त्री परिकीर्त्तिता ॥४१२१॥
मण्डूकपर्णस्तु पुमाष्टुण्टुवृक्षे प्रकीर्त्तित ।
मण्डोदक चित्तराग क्लीबमातपणेऽपि च ॥४१ २॥
मत तु वाञ्छते ज्ञायमाने च त्रिषु कीर्त्तितम् ।
अथ क्लीब मत ज्ञाने स्यादाकूतेच्छयोरपि ॥४१२३॥
मतिबुद्धावपि स्त्री स्यादिच्छाया च तथा मता ।
म कुणो निर्विषाणेभे नि श्मश्रुपुरुषेऽपि च ॥४१ ४॥
उद्दशे नारिकेले च पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।
मत्तः क्षीबे च हृष्ट त्र क्लीब तु मदकर्मणि ॥१४२५॥
मत्तवारणमुक्त क्ली नियूहेऽपाश्रयेऽपि च ।
अथ मत्तगजे पुसि मत्तवारण इष्यते ॥४१ ६॥
क्लीब प्रासादवीथीना कुड्यवृक्षवृतावपि ।
मत्य क्षेत्रस्य कृष्टस्य क्ली समीकृतिसाधने ॥४१ ॥
अथ मत्यो मत सार्धो मतस्याप्यभिधेयवत् ।
मत्सरोऽ यशुभद्वेष लोभे कोपे तथा क्रतो ॥४१२८॥
सोमाख्ये साधने चैव निष्क्रयेऽपि पुमा मत ।
कृपणे त्व यसम्पत्तरसोढरि तथा त्रिषु ॥४१२९॥
मत्सरा तु स्त्रियामेषा मक्षिकायां प्रकीर्त्तिता ।
मत्सरी त्रिकदर्याढ्ये परसम्पदसोढरि ॥४१३ ॥

---

१ मण्डूक स्यात्सुरतके भस्य भके पिकान्तरे ।
भार्यां स्त्रीत्वञ्च स्वैरिण्या मण्डूकी कीर्त्तिता तथा ॥

मत्स्यो मीने द्वयोर्मत्स्या नीवृद्भेद नृभूमनि ।
तद्राजे तु पुमान्मत्स्यो मीनराशौ तथा मत ॥४१३१॥
मत्स्यराड मकरे द्व स्याद्विराडाख्ये नृपे पुमान् ।
मत्स्याक्षी तु स्त्रिया ब्राह्मीसञ्ज्ञानूपतृणान्तरे ॥४१३२॥
मत्स्याक्षस्तु पुमाञ्छाकस्तम्बे पत्तरसञ्ज्ञक ।
मथित तु क्लीबलिङ्ग निजले गोरसे कृते ॥४१३३॥
त्रिस्तु मन्थतिमथ्नातिकमभूतेषु वस्तुषु ।
क्लीब निर्मलघोले स्यात्त्रिष्वालोडितघृष्टयो ॥४१३४॥
मदो रेतसि गर्वे च हर्षे गन्धे पुमास्तथा ।
गजदानजले मेढ्रप्रवर्त्तिनि विशेषत ॥४१३५॥
कस्तूर्याञ्चाथ मत्तावस्थाया स्त्री ने मदी मता ।
मत्तनागे मदकलस्त्रिर्मदान्यक्तवाचि च ॥४१३६॥
मदनो ना स्मरे पिण्डीतकद्रौ वनकोद्रवे ।
धुर्धूरे कुरवे चैव मधूच्छिष्टवसन्तयो ॥४१३७॥
कस्तूरिकामृगाण्डे तु मद्ये च मदनी स्त्रियाम् ।
प्रसवे तूक्तवृक्षाणां मदन स्यान्नपुसकम् ॥४१३८॥
माद्यत्यर्थेऽप मदना त्वना मदयते कृतौ ।
सारिकाया तु मदनशलाका परिकीर्त्तिता ॥४१३९॥
अपि चैषा मता स्त्रीत्वे कामोद्दीपकभेषजे ।
मदमत्तस्तु धुर्धूरे न स्त्री ना तु पुरे मत ॥४१४ ॥
अथ मत्त मदेन स्यान्मदमत्तोऽभिधेयवत् ।
मदयन्ती मल्लिकाया मदयन्तस्त्रि मादके ॥४१४१॥
मदयित्नुस्तु समदे पुमान्मद्ये तु नप्स्मृत ।
मदारो हस्तिनि द्वे स्यात्त्रिषु वलसधूर्त्तयो ॥४१४२॥
मदोत्कटो द्वयो पारावतनामनि पक्षिणि ।
मदोत्कटा चैत्ररथनाम्नि याऽस्ति शिवालये ॥४१४३॥
तस्यां शिवायां त्रिस्त्वेष मदेनोद्धत इष्यते ।
मद्गुर्द्वे जलकाके च निष्टयान्च वरुटीभवे ॥४१४४॥

शालेयारण्ये शीतशिवे स्त्रियां मधुरिका मता ।
मधुवाक्कोकिले द्वु स्यात्प्रियवाचि तु मेघवत् ॥४१५९॥
मधुव्रत श्वेतगुञ्जायां फलाध्यक्षके तु ना ।
मधुसूदन उक्तो द्वु भृङ्गे ना वनमालिनि ॥४१६ ॥
मधूल पुंसि गिरिजे मधूके मधुरे तथा ।
त्रि तु तद्वत्यथ मधौ मधूलसारघादिके ॥४१६१॥
मधूलकस्तु गिरिजे मधूकारण्यतरौ पुमान् ।
मधूकपुष्पविहितसुरायां स्त्री मधूलिका ॥४१६२॥
मूर्वायामपि च प्रोक्ता स्याद्यष्टिमधुकेऽपि च ।
मध्य दशगुणे सख्यान्तरे क्लीब समुद्रत ॥४१६३॥
वस्तुद्वयस्यान्तराले छन्दोभेदेऽपि कीर्त्तितम् ।
त्रि तु न्याय्येवलग्नारण्यकायाङ्गे तु नृशण्डयो ॥४१६४॥
हिमोत्सर्गाय सूर्यस्य रश्मीनां यच्छतत्रयम् ।
तत्रैकत्र शते ह्रादिन्यारण्येषु रविरश्मिषु ॥४२६५॥
स्त्रियां मध्या भूमनि स्युर्मध्या स्त्री नायिकान्तरे ।
मध्यमोऽस्त्र्यवलग्ने ना मध्यदेशेश्वरे नृपे ॥४१६६॥
षड्जादीनां स्वराणां च सप्तानां क्वचिदिष्यते ।
त्रि तु मध्यभवे स्त्री तु मध्यमा मध्यमाङ्गुलौ ॥४१६७॥
स्त्रियां च दृष्टरजसि कर्णिकायां च कीर्त्तिता ।
मनश्चित्ते मनीषायामपि च क्लीबमिष्यते ॥४१६८॥
मनागल्पे च मन्दे चाप्यव्ययं परिकीर्त्तितम् ।
मनाका तु करिण्यां च कामिन्यां स्त्रीत्व इष्यते ॥४१६९॥
मनुस्तु पुंसि मन्त्रे स्यात्पूर्वे च क्षत्रियान्तरे ।
स्त्रियां तु तस्य भार्यायां मनायी च मनाव्यपि ॥४१७ ॥
मनोजवाऽग्निजिह्वानां सप्तानां क्वचिदिष्यते ।
मनोजवो द्वयोरेषोऽपत्ये स्यात्पितृधर्मिणि ॥४१ १॥

---

१ पुमान्स्वरे मध्यदेशोऽप्यवलग्ने तु न स्त्रियाम् ।
स्त्रियां दृष्टरजो नार्यां कर्णिकाङ्गुलिमध्ययो ॥

मनोरथोऽभिलाषेऽपि वाञ्छितार्थेऽपि कीर्त्तित ।
मनोहरा तु पिप्पल्यां स्या ममोहारिणि त्रिषु ॥४१७२॥
मन्तु शोकेऽपराधे ना वैमनस्ये प्रजापतौ ।
प्रियवदे तु विज्ञे च म तु स्यादभिधेयवत् ॥४१७३॥
मन्ता प्रजापतौ नाथ विद्वज्ज्ञात्रेष्टषु त्रिषु ।
मन्त्र ऋग्यजुरादौ च तथा स्याद्गूढभाषणे ॥४१७४॥
पुमान्म न्त्रस्समुद्दिष्टो देवादीनां च साधने ।
म त्रज्ञस्तु पुमांश्चारे त्रि तु स्या मन्त्रवादिनि ॥४१ ५॥
म त्री धीसचिवे राज्ञ पुसि म त्रवति त्रिषु ।
म थो मन्थनदण्डे च मन्थने च पुमान्मतः ॥४१ ६॥
दिवाकरेऽपि च तथा द्रवसिक्तेषु सक्तुषु ।
म थरो मन्दगे वक्रे पृथौ म दे त्रि सूचके ॥४१ ७॥
ना तु बाधे बले कोपे म थदण्डेऽथ म थरम् ।
कुसुम्भ्यां म थरा तु स्त्री कैकेय्याश्चेटिका तरे ॥४१ ८॥
म थी तु भास्करे राहौ च द्रेऽपि च पुमांस्तथा ।
गृहार यसोमपात्राणामेकस्मि यज्ञकारिणाम् ॥४१ ९॥
मन्द शनौ ना त्रिषु तु स्व पाज्ञापटुरोगिषु ॥
निर्भाग्ये च कनिष्ठे च म दजाते तु दध्नि नप ॥४१८ ॥
अथ मन्दो द्वयोरेष गजमदे प्रकीर्त्तित ।
मन्दन तु स्तुतौ मोदे गतौ स्वप्ने मदेऽपि च ॥४१८१॥
मन्दरस्तु पुमान्म थशैले मन्दारपादपे ।
वाच्यवद्बहले मन्दे मन्दर परिकीर्त्तित ॥४१८२॥
त्रिषु मन्दविसर्पी स्या छनकै सृतिशीलके ।
शिर क्रिमौ च यूकाख्ये स्त्रिया मन्दविसर्पिणी ॥४१८३॥
मन्दसानो द्वयोर्हंसे ना जीवार्के दुवह्निषु ।
मन्दाकिनी स्यादाकाशगङ्गायामापगान्तरे ॥४१८४॥

---

१ म दो तीक्ष्णे च मूर्खे च स्वरे चाभा यरोगिणो ।
अल्पे च त्रिषु पुसि स्याज्जातिजालम्बरे शनौ ॥

मन्दाक्षो मन्दहष्टौ च तथा मन्दद्रिये त्रिषु ।
नपुंसकं तु मन्दाक्षं लज्जायां परिकीर्त्तितम् ॥४१८५॥
मन्दारस्तु पुमान्देववृक्षभेदेऽर्कनाम्नि च ।
गुल्मे स्यात्पारिभद्रारुयवृक्षतद्भेदयोरपि ॥४१८६॥
अथारविन्दे मन्दारमुक्ताद्युप्रसवेऽपि च ।
मन्दिरं तु पुरे गहे क्लीबमन्धौ तु मन्दिरः ॥४१८ ॥
मन्दुरा वाजिशालायां शयनीयाथवस्तुनि ।
मन्द्रः स्वराणां सप्तानां षष्ठे ना सामवर्त्तिनाम् ।४१८८॥
मन्द्रो गम्भीरशब्दे त्रिर्मन्द्रा वाचि स्त्रियां मता ।
मन्मथः कामचिन्तायां कपित्थेऽपि स्मरे पुमान् ॥४१८९॥
मन्मथं तु कपित्थस्य प्रसवे क्लीबमिष्यते ।
मन्युः कृपारुटशुग्दन्ययज्ञे ना धीमति त्रिषु ॥४१९ ॥
मयः प्रक्षेपणे दैत्यवर्द्धकौ पुंसि हिंसने ।
मया स्त्रीवे चिकित्सायां द्वयोरश्वोष्ट्रयोर्मयी ॥४१९१॥
मयटस्तृणहर्म्येऽपि प्रासादेऽपि पुमान्मतः ।
मयुः पुमान्स्यात्प्रक्षेपेऽथ द्वयोः किन्नरे मृगः ॥४१९२॥
मयूखः किरणे न स्त्री रथाऽक्षे तु पुमानयम् ।
ज्वालादीप्त्योश्च शङ्कौ च मयूखः परिकीर्त्तितः ॥४१९३॥
अग्निभेदेऽपि दीप्तौ तु मयूखाऽपि स्त्रियां क्वचित् ।
मयूरो बर्हिणे द्वे नाऽपामार्गे तुलसीभिदि ॥४१९४॥
अम्पपत्रसुगन्धौ च स्यान्मयूरशिखौषधे ।
कालमानान्तरे नृत्यगतिभित्कविभेदयोः ॥४१९५॥
अथ तुत्थाञ्जने क्लीबं मयूरञ्चासवान्तरे ।
क्वचिद्द्वयोः कुक्कुटेऽथ मयूर्यप्यौषधान्तरे ॥४१९६॥
मयूरकः सुगन्धौ मञ्जीरकारूये फणिजके ।
अपामार्गेऽप्यथ मयूरकन्तुत्थाञ्जने मतम् ॥४१९७॥
मयूरचूडं स्त्रीत्वे तु स्यान्मयूरशिखौषधौ ।
मरो मृत्यौ मर्त्यलोके नारकेषु त्वनी नृभू ॥४१९८॥

---

१ अथाश्वेपि तथैवोष्ट्रे मय स्त्रीपुंसयोर्मतः ।

मरका जनमार्यां नृ जातिभेदे पुनर्नृभू ।
मरतोऽग्नौ पुमाञ्जन्तौ द्वयोर्मरत इष्यते ॥४१९९॥
मरण तु मृतौ स्थानेऽप्यष्टमे गरला तरं ।
मरायो मृत एकाह ऋतुभेदकुस्थलयो ॥४२ ॥
नपुसक मराय स्यादुभयो साममदयो ।
अग्नि नरो दीधतिमिरित्यस्यामृचि गीतयो ॥४२ १॥
मरायी घातके दीप्ते कैश्चि सञ्ज्ञा तरे स्मृत ।
मराल पुसि वर्णेऽपपीतरक्त त्रि तद्वति ॥४२ २॥
मराल कज्जले जा मे मेघे दाडिमकुञ्जके ।
मृदौ शुभे विशालेऽथ द्वे तु हसाश्वहस्तिषु ॥४२ ३॥
मरिचस्तु मरीचेऽपि कतके तुलसीभिदि ।
मरिच तु मरीचस्य फले कक्कोलकेऽपि च ॥४२ ४॥
मरीचौ च मरीच तु मरिचस्य फले मतम् ।
मरीचिर्मृगतृष्णाया किरणे च द्वयोर्मत ॥४२ ५॥
अष्टके त्रसरेणूना लिक्षाख्यपरिमाणके ।
ना तु सप्तर्षिभेदेऽपि कृपणे तु त्रिषु स्मृत ॥४२ ६॥
मरीचिका स्त्री लिक्षाख्ये त्रसरेणुभिरष्टभि ।
समिते मानभेदेऽपि मृगतृष्णाख्यतेजसि ॥४२ ॥
मरीचिकस्तु पुल्लिङ्गो लोकभेदे प्रकीर्त्तित ।
मरीचिगर्भो लोकेऽपि हरिवशादिवर्णिते ॥४२ ८॥
नृभूम्नि दाक्षसावर्णिम व तरसुरे वपि ।
मरीचिपस्त्रियोगार्थे किरणषु नृभूमनि ॥४ ९॥
मरुस्तु निजले देशे शैले चेक्ष्वाकुवशजे ।
पितामहेऽम्बरीषस्य हर्यश्वतनयेऽपि च ॥४२१ ॥
सोमवश्येऽथ पुभूम्नि स्युर्दाशेरकनीवृति ।
तन्निवासिष्वपि तथा द्वयोस्तु हरिणे मरु ॥४२११॥

---

१ तथैव ऋषिवंशे पि भारतादिषु वर्णिते ।

क्वाप्युद्भिदन्तरे पुंसि स्याद्भिरम्बुपवासके ।
वसुभेदे तथा दैत्यभेदे चापि मरुर्मत ॥४२१२ ॥
मरुकस्तु मयूरेऽपि हरिणेऽपि द्वयोर्मत ।
मरुजा तु स्त्रियामुच्चमृदुपाण्डुररोमिका ॥४२१३॥
रोमराजिमती मध्ये द्वादशाङ्गुलसम्मिता ।
इत्युक्त मृगभेदे स्यादथ त्रिमरुसम्भवे ॥४२१४॥
नखारव्यगन्धखदिरभिदोस्त्री त्विन्द्रवारुणी ।
मरुजो हसभेदे द्वे श्वापदेऽप्यथ नब्जले ॥४२१५॥
मरुण्डोच्चललाटा स्त्री नृभूम्नि तु जनान्तरे ।
मरुत्मा पवने शैलशिखरे चामरान्तरे ॥४२१६॥
बृहद्रथ साध्यभेदे स्यात्तथैवोद्भिदन्तरे ।
मरुदेशे च रूपे चतिवर्जि स्वर्णे तु नप्स्मृतम् ॥४२१ ॥
द्वे देवमात्र स्पृक्कायां स्त्री क्लीब ग्रन्थिपर्णके ।
मरुतस्तु सुरे द्व स्याद्वायुपाटलयो पुमान् ॥४२१८॥
मरुत्तो नृपभेदेऽपि क्वचिद्वायौ प्रकीर्त्तित ।
मरुत्पुत्रस्य पर्यायाभीमेऽपि च हनूमति ॥४२१९॥
[1]मरुत्वान्वा मरुत्मान् वा मेघे त्विन्द्रहनुमतसु च ।
मरुत्सखोऽग्नाविन्द्रे च पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥४२२ ॥
मरुद्भवो यागपात्रमित्साभाशमिद्रोर्हरौ ।
मरुद्भवा ताम्रमूलाकार्पास्यो परिकीर्त्तिता ॥४२२१॥
मरुद्रथोऽश्वे देवाना स्यन्दने च प्रकीर्त्तित ।
मरुद्वधा नदीभेदे मरुद्वर्धिनि तु त्रिषु ॥४२२२॥
मरुद्वहस्तु धूमेऽपि तथाऽग्नौ च पुमान्मत ।
मरुमाला हि रक्तेऽपि स्पृक्कायां च प्रकीर्त्तिता ॥४२२३॥

---

१ मरुकस्तु नखाग्रे गन्धद्रव्ये खदिरान्तरे ।

२ मरुद्द्रुमयोर्देवसाम्ये स्पृक्कायां तु मरुत्स्त्रियाम् ।
मरुद्वेने समीरे ना ग्रन्थिपर्णे नपुंसकम् ॥

३ मवे मरुवक पुंसि मदनद्रौ फणिज्जके ।

भवेन्मरुबक पुंसि मदनद्रौ फणिजके ।
राहौ भयानके तु त्रि द्वयोर्यामे बकेऽपि च ॥४२२४॥
महे द्रवारुण्यायासभेदयोर्मरुसम्भवा ।
अथ मूलकभेदेऽथ पुमान्स्यान्मरुसम्भव ॥४२२५॥
मरूक केकिहरिणभेकेषु च पुमानयम् ।
मर्कोऽथाकमरुद्ब्रह्मो दमनोदेवदारुषु ॥४२२६॥
सूर्योपरागे शुक्रस्य पुत्रे बालग्रहान्तरे ।
द्वयो सर्पेऽथ विघ्नस्य कर्त्तरि त्रिषु कीर्तित ॥४२२ ॥
प्राणवायावपि तथा मर्को यक्षान्तरे क्वचित् ।
मर्कटस्तु कपौ द्वे स्याल्लूतायां चाथ नस्त्रियो ॥४२२८॥
कपाटबन्धनार्थाया सूचेर्विष्कम्भयन्त्रके ।
मर्कट मर्कटी चेति स्यात्स्त्रिया त्वेव मकटी ॥४२२९॥
कपिकच्छ्वारग्वधवल्ल्याश्च करञ्जद्रुमभिद्यथ ।
तुरुष्कनिर्यासे वन्यारग्वधद्रुमेऽपि च मर्कट ॥४२३ ॥
विषभेदेऽपि च स्त्रीणा पुमान्स्यात्करणान्तरे ।
धान्यभेदे मर्कटको द्वे तु मत्स्यान्तरे मत ॥४२३१॥
मर्करो भृङ्गराजे ना मर्करा वन्ध्ययोषिति ।
क्षितगर्भे च गर्ते च भाजनेऽपि स्त्रिया मता ॥४२३२॥
मर्जू समाजनीशुद्धयोनद्या तीरे नदीतटे ।
शिलायां च स्त्रियामुक्ता रजके तु द्वयोर्मता ॥४२३३॥
पुमांस्तु पीठमर्देऽपि स्त्रीधर्मिपुरुषे क्वचित् ।
मर्त्तु स्त्वृष्यन्तरे मर्त्यलोके ना मनुजे द्वयो ॥४२३४॥
मर्त्तव्यो मरणार्हे त्रिरवश्यमरण तु नप ।
मर्त्यो द्वयोर्मनुष्ये भद्यवन्मरणधर्मिणि ॥४२३५॥
मर्त्यलोके पुमान्मर्त्या मृत्यौ स्त्री क्ली पुन स्तनौ ।
मर्दो ना मर्दने बाधे पीडाया त्रिस्तु मर्दके ॥४२३६॥
मदनी तु स्त्रिया योधपादरक्षार्थयन्त्रके ।
युचि स्यान्मर्दन प्राय उत्तरस्थ प्रबाधके ॥४२३ ॥

---

१ मरुभवा यासभेदे तथैव खदिरान्तरे ।
मरुभवस्तु [पुंल्लिङ्ग भेदे स्यान्मूलकस्य च] ॥

नपुसक तु मृदनातेरर्थे मदनमिष्यते ।
स्यात्प्रसाधनसंवाहनादितद्बाधनादि च ॥४ ३८॥
मर्दिनी गीतभेदे स्याद्योगार्थे तूत्तरस्त्रिषु ।
मर्म व्रणाहस्थानेऽङ्गस धौ गोप्ये नपुसकम् ॥४ ३९॥
मर्मरो वस्त्रपर्णादिस्वनिते त्रिस्तु तद्वति ।
ममरा भक्ष्यभेदे स्त्री मोडी (ढी) सज्ञेऽथ ममरी ॥४ ४ ॥
श्रुतिशष्कुलितानाडीभिद्यपि स्त्री देवदारुणि ।
ममरीकोऽनले शूरे ना द्रु श्येनेऽधमे त्रिपु ॥४२४१॥
मर्यो म र्येपि तरुणे वरणीयेऽथ उष्ट्रके ।
मर्या तु चिह्ने सीमान्तेऽपि च स्त्रीत्वे प्रकीर्त्तिता ॥४२४२॥
मर्यादा स्त्री यवस्थासीमयो रक्षाङ्गुलीयके ।
क्वाप्यथर्वेऽपादष्टेऽथ न्यायनिर्णेतरि त्रिषु ॥४२४३॥
अर्वाचीनस्य वैदर्म्याम्पत्या दवातिथरपि ।
विदेहजायां भार्याया मर्यादा नाम दृश्यते ॥४२४४॥
मर्श क्षुताभिजनने चोपदेशे पुमानयम ।
मर्शन घर्षणे स्पर्शे स्याद् यारयाने परीक्षणे ॥४२४५॥
मर्षित क्ली क्षमाया तद्युक्त स्यान्मर्षितर्यपि ।
मल पापे च वातादावस्त्रिया किट्टविष्ठयो ॥४२४६॥
समुद्रफेने कपूरे क्ली तु स्यात्कास्यलोहयो ।
वृश्चिकस्य च शूकेपि तथा चर्मणि शोधिते ॥४ ४७॥
मला तु भूम्याम या स्त्री त्रि स्यान्मलिनपापिनो ।
द्वयोस्तु मालुकोशूद्रसम्भवे वर्णसङ्करे ॥४२४८॥
मलघ्न शा मलेमूले मलघ्नी नागमर्दिनी ।
तथाय स्यात्त्रिलिङ्गस्तु मलघ्नम्मलहन्तरि ॥४ ४९॥
मलज तु मत पूये नृभूमलदजातिपु ।
मलदो माषधान्ये ना मलदास्तु नृभूमनि ॥४२५ ॥
स्थौराख्यनीवृद्भेदे स्युस्त्रिष्वय मलदातरि ।
मलन पटवासे ना मलन मदने नपि ॥४२५१॥

मलपु क्ली नले भृङ्गथा त्रिस्तु स्यान्मलमाजके ।
काकोदुम्बरिकाक्षीरविदार्योर्मलपू स्त्रियाम् ॥४२५२॥
मलयो देश आरामे शैलांशे पर्वतान्तरे ।
उपद्वीपान्तरे नन्दनोद्यानोद्यानयो क्वचित् ॥४ ५३॥
तालभेदेऽपि न स्त्री स्यात् त्रि वृताया तु योषिति ।
चन्दने क्ली मलयज राहौ मलयज पुमान् ॥४२५४॥
मलवान्मलिने त्रि सात्त्वायां मलवत्यसौ ।
स्त्रिया तु मलवद्वासा उदक्याया त्रियौगिके ॥४ ५५॥
मलहारक इत्येष मलहर्त्तरि वाच्यवत् ।
गजोपचारकुशले पुसि स्यान्मलहारक ॥४२५६॥
मलाका स्वैरिणीदूतीकरेणुष्विष्यते स्त्रियाम् ।
मलिना मलिनी पुष्पवत्यां स्त्री मलिन नपि ॥४ ५ ॥
पापटङ्कणतुच्छेऽप्सु त्रिस्तु कृष्णे मलीमसे ।
मलिनस्तु पुमास्तसुपुत्रे पाशुपते यतौ ॥४२५८॥
क्रूरे त्रिर्ना तु मलिनमुखोऽग्नौ प्रतभिद्यपि ।
गोलाङ्गूले तु मलिनमुख स्त्रीपुसयोर्मत ॥४२५९॥
मलिम्लुचोऽयश्च यज्ञे गृहस्थे पावकेऽपि च ।
अधिमासेऽपि पुसि स्याच्चौरे तु त्रिष्वथ स्मृत ॥४२६ ॥
मशके शावके चापि चातके रजके द्वयो ।
मलिष्ठो मलिने त्रि स्त्री मलिष्ठा सातवस्त्रियाम् ॥४२६१॥
मलीकन्त्वञ्जने क्लीबम्मलीक पुसि विद्विषि ।
मलीमसस्तु मलिने पुष्पकाशीशलोहयो ॥४२६२॥
मल्लुको जठरे पुसि द्वयोस्तु स्याच्चतुष्पदे ।
मल्लूक कृमिभेदे द्व सरोजशकुनौ खगे ॥४२६३॥

---

१ ना लोहे पु पकाशीश मलिने त्रिर्मलीमस ।
२ मल्लूक पक्षिमात्रे च सरोजशकनौ द्वयो ।

मल्लो योधे बलिष्ठ च श्रेष्ठे स्यादुत्तरस्थित ।
स्या नारायणराजेऽर्हत्येकविंशे भविष्यति ॥४ ६४॥
हवि शेषासुरभिदोहनौ पात्रा तरे पुन ।
मल्लो मल्ली कपाल्यार यमत्स्यभेदेऽप च द्वया ॥४ ६५॥
व्रात्यपूर्वक्षत्रियाजे व्रात्याज्जाते द्वयोमत ।
म लनाग पत्रवाहे वात्स्यायनसुरेभया ॥४ ६६॥
म लरिस्तु पुमा कृष्णे शिवेऽपि परिकीर्त्तित ।
मल्लकस्तु पुमान्द ते नृभूम्नि तु जना तरे ॥४२६ ॥
म ला तु प्रमदाया स्त्री मल्लिकाया तु म यपि ।
मल्ला मल्लिश्च पीठे तु पत्रवल्लीविभूषणे ॥४२६८॥
द्व तु पत्रपुटे पात्रे नारिकेलास्थिभाजने ।
मल्लारो रागभेदेऽथ मल्लारी रागिणीभिदि ॥४२६९॥
म लिस्स्त्री मस्त्यभेदेऽपि स्यात्कपालकरङ्कयो ।
म लिकाया च मृत्पात्रेऽथासनेप्यथ मल्लतौ ॥४ ७ ॥
धातावहत्यूनविंशेपि च मल्लि पुमा मत ।
म लिको नृस्त्रियोर्दीपाधारे स्याद्धसभिद्यपि ॥४२ १॥
मल्लिका भूपदीनाम्न्या पुष्पवल या स्त्रियां मता ।
म लिका तृणशू येऽपि मीनमृत्पात्रभेदयो ॥४२ ॥
म लिकाकुसुम पुसि करुणार ये फलद्रुमे ।
योगार्थे त्वस्य लिङ्गादि तर्कणीय यथायथम् ॥४२ ३॥

---

१ सरोजशकर्नि येव भगयाञ्छाकटायन ।
मल्लो योधे बलिष्ठे च पात्रभेदे तु नृस्त्रियो ।
मल्लो म ली च मल्ली तु मल्लिकापीठयो स्त्रियाम् ॥
नस्त्रियोर्धारणे मल्लो मल्ला चेति द्वयो पुन ।
२ मल्लनागो भमातङ्गे वात्स्यायनमुनावपि ।
३ मल्लिका मत्स्यभदे तु मल्लया छन्दोभिदो स्त्रियाम् ।
मल्लिको हंसभिद्दीपाधारभाजनयोर्द्वयो ॥
म लिका भूपदीशेफालिकायाश्चा तरे स्त्रियाम् ।
मल्लिकस्तु पुमान् ॥
मल्लिस्तु मल्लतौ धातौ पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।

मल्लिकाक्ष सितैर्नेत्रैलक्षितेऽश्वे शुनि द्वयो ।
हसे च चञ्चुचरणर्मलिनैरुपलक्षिते ॥४२७४॥
मल्लिकाक्षी श्वेतचिह्ननेत्रशु या क्वचिन्मता ।
मश श इ्दर्पि कोपे ना मशके तु द्वयोर्मत ॥४२ ५॥
मशकस्त्वृषिभेदे ना चमरोगान्तरे द्वतौ ।
शाकद्वीप्ये जनपदे द्वयोस्तु स्या मलिम्लुच ॥४२ ६॥
वस्त्रै कृते स्यान्मशकहरी मशकरुद्वये ।
मशक क्षिपते यो यस्तत्र वाच्यवदिष्यत ॥४२ ॥
मसन हिंसने माने सामरान्याश्च कीर्त्तितम् ।
मसारो नीलरत्ने स्यात्तथा जनपदान्तरे ॥४२ ८॥
मसि कृपणतृष्णाया शस्या मष्याश्च काण्डके ।
मसिक सर्पविवरे शेफाली मसिका स्मृता ॥४ ९॥
मसूर पुसि मङ्ग्यधान्ये चर्मासनान्तरे ।
मसूरी व्रीहिकङ्कारयधान्ये स्त्री मारिवेश्ययो ॥४२८ ॥
मसूरो मसुरी चापि ह्रस्वमध्यावपि स्मृतौ ।
मसूरी पापरोगे स्यादुपधाने पुन पुमान् ॥४२८१॥
मसृणी तु स्त्रियामेषा क्षुमाधान्ये प्रकर्त्तिता ।
अथाप्यककशे स्निग्धे मसृणो वा यवन्मत ॥४२८२॥
मस्त माने त्रिषु क्लीब मस्तके देवदारुणि ।
मस्तकोऽस्त्री शिर पूवभागमध्ये शिरस्यपि ॥४२८३॥
शिवस्य रूपभेदेऽपि तरुगिर्यादिकस्य च ।
मस्तिष्कोऽस्त्री शिर स्नेहे तच्चिकित्साक्षमौषधे ॥४२८४॥
मस्तु स्त्रीपुसयोर्मुष्टौ पिण्डिताङ्गुलिरूपके ।
दधिमण्ड तु त मस्तु नपुसकमुदीरितम् ॥४२८५॥
दधिवारिण्यपि क्लीब प्रयुक्त मस्तु सुश्रुते ।
मस्तुलुङ्ग शिर स्नेहे न स्त्री क्ली दधिमण्डके ॥४२८६॥

---

१ मशकस्त्वृषिभदे न द्वयोस्तु स्या मलिम्लुचे ।
२ मसूरो मसुरी वा ना वेश्याव्रीहिप्रभेदयो ॥

महः पुंस्युत्सवे स्त्री तु मही वाचि गवि क्षितौ ।
नदीभेदेऽप्यथ द्वित्वे द्यावाभूम्योर्मही इति ॥४ ८ ॥
महद्राज्ये च वृन्दे च जले चापि नपुंसकम् ।
त्रिबृहत्यपि पूज्येऽथ महर्लोके मतो न ना ॥४ ॥
महती तु त्रिबृहद्वल्या वीणायां नारदस्य च ।
निशोऽन्तिमे त्रिभागे वा यामे वाऽज्ञातलिङ्गक ॥४ ८९॥
महत्तरी तु स्त्री राज्ञो वृद्धा या परिचारिका ।
आशीस्स्वस्त्ययनाभिज्ञा तस्या त्रिस्तु बृहत्तर ॥४२९ ॥
महो नपुंसकं सान्तं जले तेजसि चोत्सवे ।
महाकच्छस्तु पुंसि स्यात्समुद्रे च प्रचेतसि ॥४२९१॥
महाकन्दं तु शुण्ठ्यां क्ली लशुने त्वास्त्रियां मतम् ।
महाकायो बृहद्देहे त्रिष्वथ स्याद्गजे द्वयो ॥४ ९ ॥
महाकाल प्रमथकिंपाकबाणासुरे शिवे ।
महाग्रीवा द्वयोरुष्ट्र वा यवदीर्घकन्दरे ॥४२९३॥
महाघोषोऽतिघोषे ना क्लीबं हट्टे प्रकीर्त्तितम् ।
अथ कर्कटशृङ्ग्यां स्त्री महाघोषाऽभिधीयते ॥४२९४॥
महाजाली स्त्रियां पीतघोषवल्ल्यां त्रि यौगिके ।
महादंष्ट्रो द्वयोर्व्याघ्रे चित्राङ्गाख्ये त्रि यौगिके ॥४२९५॥
महादिवाकीर्त्यं सामभेदे त्रिषु तु यौगिके ।
पावत्यामपि राज्ञश्चाभिषिक्ताया च योषिति ॥४२९६॥
महाधनं युधि स्वर्णे सिल्हे त्रिस्तु महाढके ।
महानट शिवे पुंसि योगार्थे तु यथायथम् ॥४२९७॥
महानद्युत्कलनदीभेदे स्यान्फल्गुगङ्गयो ।
ततो गयाप्रदेशे तु पूर्वतोऽस्ति महानदी ॥४२९८॥
महानर्मा द्वयोर्वैश्याक्षत्रपुत्रे त्रि यौगिके ।
महानसं तु शकटे पाकस्थानेऽपि कीर्त्तितम् ॥४२९९॥
महानादो द्वयो सिंहेभयोर्ना वर्षुकाम्बुदे ।
महानीलो भृङ्गराजे मणिनागविशेषयो ॥४३ ॥

महापक्षस्त्रियोगार्थे द्व कारण्डवपक्षिणि ।
महापक्षी तु घूके द्व यौगिके तु यथायथम् ॥४३ १॥
महापत्रस्तालवृक्षे योगार्थे तु त्रिषु स्मृत ।
महापद्मो द्वयो षडवशतिदर्वीकरोरगा ॥४३ २॥
ये तेषामेकभेदे ना क्षाटे शोथारिनाम्नि च ।
क्लीव तु रक्तकमले महापद्म प्रकीर्त्तितम ॥४३ ३॥
महाफला तु कूष्माण्डे महाजम्ब्वामपि स्त्रियाम् ।
महाबल सीसके तु बलाया तु महाबला ॥४३ ४॥
महाबलस्त्वतिबले वा यवत्परिकीर्त्तित ।
महाबुसा यवे चापि धा ये हायनसञ्ज्ञके ॥४३ ५॥
महामात्र समृद्धे चामा ये हस्तिपकाधिपे ।
महामुखो द्वयोनक्रे बृहद्वक्त्रे च वाच्यवत् ॥४३ ६॥
महामुनिस्तु रुद्राक्षेऽगस्त्ये चापि मह यषौ ।
अथ कुस्तुम्बुरुण्येत महामुनि नपुसकम् ॥४३ ॥
महामू य पद्मरागे ना महार्हे तु वा यवत् ।
महारजतमुद्दिष्ट शातकुम्भकुसुम्भयो ॥४३ ८॥
महारसा द्रोणपुष्पीनील्योषध्यो स्त्रियां मता ।
महारसस्तु खर्जूरवृक्षे चेक्षे तथा पुमान् ॥४३ ९॥
महाराज कररुहे कुबेरे च महानृपे ।
महार्घस्त्रिर्महामू ये द्व तु लावकपक्षिणि ॥४३१ ॥
महालयो धनिगृहभेदेऽपि परमा मनि ।
तीर्थे विहारे चामायामाश्विनस्य प्रकीर्त्तित ॥४३११॥
महावीरो महादेवे पावके गरुडे पुमान् ।
सोमवंशसमुद्भूते बृहद्रथसुते नृपे ॥४३१२॥
वर्द्धमानजिने सोमवश्ये बार्हद्रथौ नृपे ।
प्रवर्ग्यपात्रे सुभटे वीरे वज्रेऽप्यपत्रिषु ॥४३१३॥
प्रवरे द्वे तु हसे च श्वेताश्वे च खगेऽपि च ।
यौगिकार्थे तु लिङ्गादि तर्कणीय यथायथम् ॥४३१४॥

महावेग कपौ द्वे स्याद्वाच्यवत्तु महारये ।
महाव्रत शिवे पुसि क्ली त्वेकाहमखान्तरे ॥४३१५॥
अस्त्री व्रते स्यान्महति त्रि तु स्याद्विपुलव्रते ।
स्यान्महाशकुना घूक द्वयोरपि महाखगे ॥४३१६॥
महाशङ्खो मानुषास्थिसङ्ख्याभेदालिकेषु च ।
महाशको द्वयोर्मत्स्यभेद एथालनामनि ॥४३१ ॥
देविकाख्ये महाशल्का मातुलुङ्गान्तरे स्त्रियाम् ।
महाशिला महाग्राव्णि शस्त्रभेद यदीङ्शम् ॥४३१८॥
शतघ्नी तु चतुस्ताला लोहकण्टकसञ्चिता ।
अय कण्टकसछन्ना शतघ्न्येकमहाशिला ॥४३१९॥
महाश्वेता नीलगिरिकर्ण्यां स्त्रीत्वे प्रकीर्त्तिता ।
तथा क्षीरविदार्यां च कण्टकिव्रततीभिदि ॥४३२ ॥
पुण्डरीकप्रियायां च योगार्थे तु यथायथम् ।
महासर्पो द्वयो षड्विंशतिदर्वीकरोरगा ॥४३ १॥
ये तेषामेकभेदेऽथ क्ली ससर्पाख्यसामसु ।
महासहा माषपर्ण्यां स्तम्बे चाम्लानसञ्ज्ञके ॥४३ ॥
महासेन कार्त्तिकेये महासैन्यपतावपि ।
महिस्तु धरणौ स्त्रीत्वे महति त्वेष मेघवत् ॥४३२३॥
महिन तु भवेद्राज्य शन्यायाञ्च नपुसकम् ।
महिला तु फलिन्यां च स्त्रीत्वे योषित्यपीष्यते ॥४३२४॥
महिषी त्वोषधीभेदेऽभिषिक्तायां नृपस्त्रियाम् ।
सैरिभे तु द्वयोरेष महिष परिकीर्त्तित ॥४३२५॥
मही भूमावपि स्त्रीत्वे तथा नद्यन्तरे मता ।
महीपतिस्तु नृपतौ पुसि भव्यतरावपि ॥४३ ६॥
महेन्द्रस्तु भवेच्छैलविशेषेऽपि पुरन्दरे ।
महेश्वरो महादेवे पुसि स्याद्गुग्गुलावपि ॥४३ ७॥
महेश्वरी तु स्त्री ब्रह्मरीतिसञ्ज्ञकलोहके ।
पार्वत्याञ्च श्रिया चाथाऽधीश्वरे तु त्रिषु स्मृत ॥४३२८॥

महोग्रा तु त्रयोदश्या तिथावत्युग्रके त्रिषु ।
महोदया नना कायकुब्जारायनगरे मता ॥४३ १॥
स्त्रीत्वे किञ्चित्प्रौढाया कयाया परिकीर्त्तिता ।
महोदरी नादेयीनाम्नि स्या मुस्तकान्तरे ॥४३३ ॥
रावणस्य त्वमात्ये ना क्ली तूदररजा तरे ।
महौषध तु लशुनातिविषाशुण्ठिषु स्मृतम् ॥४३३१॥
महति चौषधे न स्त्री महौषध उदीरित ।
अन्यस्मिंश्चैव लशुनादृशस्वपि पलाण्डुषु ॥४३३२॥
मास स्यादामिषे मांसी कक्लोलीजटयोर्मता ।
मा स्त्री शिवाश्रियोरयय ावकपे निवारण ॥४३३३॥
माकन्दोऽस्त्री रसाले स्त्री धात्रीनगरभेदया ।
माक्षिक चक्रसञ्ज्ञ स्याच्छैलधात्व तरे तथा ॥४३३४॥
सारघे मधुनि क्लीब मक्षिकायोगिनि त्रिषु ।
मागधी तु स्त्रिया यूथीपिप्पल्यो परिकीर्त्तिता ॥४३३५॥
द्वयोस्तु वैश्याद्विप्राया जाते मर्त्या तरेऽपि च ।
वैश्या क्षत्रियकयाया जाते च स्याच्च वन्दिनि ॥४३३६॥
पुमांस्तु मगधानां स्याद्राज्ञि जीरकजीवके ।
माघी स्त्री पूर्णिमाया स्या मघायुज्यथ तद्वति ॥४३३ ॥
मासे माघस्त्रिस्तु मघानक्षत्रयुतकालजे ।
माघ्यस्तु कुन्दवृक्षे स्या माघ्य तत्प्रसवे मतम् ॥४३३८॥
माघसाधौ तु माघ्योऽसावभिधेयवदिष्यते ।
माचलो वन्दिचौरे च तथा स्याद् ग्राहरोगयाः ॥४३३९॥
माठरस्तु पुमा व्यासे रवे स्या पारिपार्श्विके ।
माठि स्त्रिया स्यात् कवचे तरुपत्रसिरास्वपि ॥४३४ ॥
माढि स्त्री पत्रपक्तौ च दैन्यस्यापि प्रकाशने ।
माणवस्तु पुमा हारभेदे षोडशयष्टिके ॥४३४१॥
द्वयोस्तु माणवो बाले तथा कुपुरुषेऽपि च ।
भवेन्माणवक पुसि हारे षोडशयष्टिके ॥४३४२॥

द्वयोस्तु गह्यपुरुषे बाले माणविका मता ।
माणिक्या गृहगोधाया माणिक्य रत्नसत्तमे ॥४३४३॥
मातङ्गस्तु द्वयोस्क्तो हस्तिान श्वपचऽपि च ।
मातामहस्तु पित्रो स्यान्मातुर्मातामहीत्यपि ॥४३४४॥
मातामहास्तु मातु स्यु पूर्वजेषु नृभूमनि ।
माति स्त्रियामवच्छेदे तथा मानेऽपि कीर्त्तिता ॥४३४५॥
मातुल पुंसि धुत्तूरे मातुलाख्यद्रुमेऽपि च ।
मातुर्भ्रातरि च स्त्री तु भार्यायां तस्य मातुली ॥४३४६॥
द्वयोस्तु मालुधानाख्यसर्पभदेऽपि मातुल ।
मातुलानी कलाये स्याद्भङ्गाया मातुलास्त्रियाम् ॥४३४ ॥
मातुलुङ्गस्तु रुचकगुल्मेऽत्यम्लफले पुन ।
भेदेऽस्य मातुलुङ्गी स्यादथ क्लीब फलेऽनयो ॥४३४८॥
मातोमाजननीगोषु वेपणीसरितोर्भुवि ।
अकारादिकवर्णानामाम्नाये तारकासु च ॥४३४९॥
आश्विन्यादिषु पौष्याख्यपूर्णिमायामपि स्त्रियाम् ।
ब्राह्मयादिदेवीषु त्रिस्तु मात्री स्यान्मानकारिणि ॥४३५ ॥
स्यान्मातरि स्त्रियां नित्य धातृकाकारणे स्वरे ।
मात्तु यत्त्रायते तत्र मात्र स्यादभिधेयवत् ॥४३५१॥
मात्रा कर्णविभूषायां वित्ते माने परिच्छदे ।
अक्षरावयवे स्वल्पे क्लीब कार्त्स्न्येऽवधारणे ॥४३५ ॥
माथस्तु मथने चापि मार्गे चापि पुमान्मत ।
माधवो ना वसन्ते वैशाखमासे हरावपि ॥४३५२॥
मध्वासवसमाख्ये तु मद्यभेदे नृशण्डयो ।
अतिमुक्तलतायां तु सुरायामपि माधवी ॥४३५४॥

---

१ मातुलानी च भङ्गाख्य धान्ये स्या ।
२ मातुलौ व्रीहिभिन्मातुर्भ्रात्रोश्च मदनद्रुमे ।
३ मात्रा धने प्रवृत्ती च पर्वते कर्णभूषणे ।
हस्वोच्चारणकालेऽपि परिच्छेदे परिच्छदे ।
एकदेशे थ मात्रम्तूत्तरं कार्त्स्न्ये वधारणे ।

जय त्यामपि कोशातक्यां दीर्घफलनामनि ।
शतपुष्प्यामपि मधुशकराया तथा स्त्रियाम् ॥४३५५॥
मधुपुत्रादिषु पुनर्माधवस्त्रिषु कीर्त्तित ।
माधुक मधुनि क्लीब पुराणे यौगिके त्रिषु ॥४३५६॥
माधुर षोडशेऽरत्नौ यूपस्यारम्य मूलत ।
भवे सप्तदशारत्नेर्योगार्थे तु त्रिषु स्मृत ॥४३५ ॥
मान क्लीव परिछेदे हस्तादौ चापि हिंसने ।
लग्नाद्दशमराशौ च प्रक्षेपप्रणिदानयो ॥४३५८॥
आधारानतिरिक्तत्व यदाधेयस्य सम्भव ।
तत्राथ मान पूजायां ज्ञाने चित्तोन्नतौ च ना ॥४३५९॥
स्त्रिया तु मानी कुडुवपरिमाणद्वये मता ।
मानवस्तु मनुष्ये द्वे मनुसम्बन्धिनि त्रिषु ॥४३६ ॥
मानस तु मत चित्ते हिमवत्सरसामपि ।
एकस्मिस्तोत्रभेदेऽपि यवनां त्रि तु यौगिके ॥४३६१॥
मानिनी तु स्त्रिया फ या मानी मानवति त्रिषु ।
मामक स्यान्मदीयार्थे त्रिषु पुसि तु मातुले ॥४३६२॥
माया स्त्री शाम्बरीबुद्ध्योर्विष्णोर्नवसु शक्तिषु ।
एकस्यां साख्यतत्त्वे च प्रधानाख्येऽथ स त्रिषु ॥४३६३॥
मायके यश्च मां याति तत्रापि परिकीर्त्तिता ।
मारस्तु मरणे कामे मृतावपि पुमान्मत ॥४३६४॥
मारिर्मारी स्त्रियामुक्ते मसूरीसज्ञके गदे ।
[कालरात्रौ] सर्वलोकतते मृत्यौ [सुरान्तरे] ॥४३६५॥
मारिर्मारयतौ धातौ पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।
मारिषो जीवशाकेऽपि चार्ये नाट्योक्तिगोचरे ॥४३६६॥
दक्षमातरि तु स्त्रीत्वे मारिषा परिकीर्त्तिता ।
मारीचो रक्षसो भेदे कक्कोले याजकद्विजे ॥४३६ ॥

१ माया स्यात्शाम्बरीबुद्ध्योर्माय पीताम्बरे सुरे ।
२ मारी मारि स्त्रिया कालरात्री व्याधिमृतावपि ।

कश्यपेऽथ स्त्रियामुक्ता मारीची देवता तरे ।
मारुण्डोऽण्ड भुजङ्गाना मार्गे गोमयमण्डले ॥४३६ ॥
मारुतो हनुमद्भीमसेनवायुष्वय पुमान् ।
पुराम्भि दुर्युवेत्यस्यामृचि गीते तु साम्नि नप ॥४३६१॥
मार्गो मृगमदे माष्टा मागशीर्षाऽध्वनोश्च ना ।
सौम्यगेऽथ द्वयोमागा प्रोक्ता मागणकर्मणि ॥४३ ॥
मागणो याचके बाणऽपि च पुसि प्रकीत्तित ।
मागणा तु न ना याच्ञाद्वेषयोरियमिष्यते ॥४२ १॥
मागरस्तु द्वयोरायोग या जाते निषादत ।
कैवर्त्तेऽप्यथ मार्गस्य दातरि त्रिपु मागर ॥४३७ ॥
मागशीर्षी पूणिमायां मृगशीषयुजि स्त्रियाम् ।
पुमास्तु मासे तद्युक्त मागशीर्ष प्रकीत्तित ॥४३ ३॥
मार्जनोऽस्त्री स्नहगुण पुसि स्या लोध्रशाखिनि ।
माजन माजना चेति मार्ष्टा स्त्रीक्लीबयोर्भवेत् ॥४२ ४॥
मार्जारो द्वे विडालेऽगस्त्येक्षुदद्रुमयोस्तु ना ।
मार्जारी चमराकारे कोद्रङ्गारये मृगान्तरे ॥४३ ५॥
कस्तूरिकामगाण्डेऽपि मार्जारी स्त्रीत्व इष्यते ।
मार्जारीय स्मृत शूद्रे बिडाले कायशोधने ॥४३ ६॥
मार्जालीय पुमानङ्गशोधने धौतिदेशके ।
मार्जालीयस्तु मार्जारे मत स्त्रीपुसयोरयम् ॥४३ ७॥
मार्जित शोधिते त्रि स्याद्रसालायां तु मार्जिता ।
अपक्वतक्र सव्योषचतुर्जातगुडार्द्रकम् ॥४३ ८॥
सजीरक रसाला स्यादिति तल्लक्षण विदु ।
मार्त्तण्डस्तु खगे चापि द्वयोर्दंष्ट्रिणि च स्मृत ॥४३७१॥
रवौ तु पुसि मार्त्तण्डमार्त्ताण्डौ परिकीर्त्तितौ ।
मालस्तु प्रहतक्षेत्रभूतले त्रिषु कीर्त्तित ॥४३८ ॥

---

१ मारुतस्तु पुमा वायौ भीमसेने हनूमति ।
पुराभिन्दुर्युवेत्यस्यामृचि गीते च साम्नि नप ॥

माला पृक्कास्रजोर्माल सूतीशूद्रोद्भवे द्वयो ।
तत्र माली जातिङीषि मालस्तु स्यात्कठिञ्जरे ॥४३८१॥
पुंलिङ्ग कालपर्ण्यारण्यतुलस्यां धारणेऽप्यथ ।
क्ली दक्षिणा तरद्वीपे मालमस्मा च भारतात् ॥४३८२॥
मालको धारके विज्ञैरभिधेयवदिष्यते ।
वनदुर्गनिवासे तु मालक खेटकाभिधे ॥४३८३॥
मालिका तु स्त्रिया पङ्क्तावाढ्यानां च गृहा तरे ।
सप्तलासञ्ज्ञके पुष्पवल्लिभेदेऽपि मालिका ॥४३८४॥
ग्रैवेयके पुष्पमा ये पुत्रिकाहस्तिम लयो ।
मालकी तु स्त्रियां पु पव लीषु सकलास्वपि ॥४३८५॥
मालवा स्युजनपदऽवतिनाम्नि नृभूमनि ।
तन्निवासिव्रते तु द्व मर्त्यजात्य तरेऽपि च ॥४३८६॥
मालिको द्व भवे मालाकारे मालावति त्रिषु ।
मालिनी मातृकावृत्तभिदोर्मालिक्योषिति ॥४३८ ॥
गौरीचम्पानगर्योश्च मन्दाकिन्या नदीभिदि ।
मालु पत्रलतायां च नार्यां च स्त्रीत्व इष्यते ॥४३८८॥
मालुधानो मातुलाहौ मालुधानी लता तरे ।
माल्य क्ली कुसुमे पुष्पस्रजि धार्ये तु भेद्यवत् ॥४३८९॥
माषस्तु धान्ये वृष्यार ये पुनपुसकयोर्मत ।
पञ्चगुञ्जात्मके माने तण्डुलोन्मितवस्तुनि ॥४३९ ॥
कार्षापणप्रभदेऽपि हिंसाथमषणे तु ना ।
माषा व्रीह्य तरे मूर्खे मान वग्दोषभेदयो ॥४३९१॥
माषाशी तु तुरङ्गे द्वे माषस्य त्याशके त्रिषु ।
माष्य तु हिंस्यमाषीणमाषसाध्यादिषु त्रिषु ॥४३९२॥
मास्तु मासेऽपि चन्द्रेऽपि सान्त पुंलिङ्ग इष्यते ।
मासरो भक्तमण्डे व कसार ये भक्तसाधने ॥४३९३॥
मासिक स्यात्स्त्रीरजसि मासश्राद्धे तु न स्त्रियाम् ।
मासिक तु त्रिषु ज्ञेय मासम्भूतभृतादिषु ॥४३९४॥

माह्रिरस्तु पुमानिन्द्रे क्लीब शयनबालयो ।
माहूर पर्वते पुसि पूजके तु त्रिषु स्मृत ॥४३९५॥
माहेन्द्री सप्तमातॄणामेकस्या कदलीभिदि ।
पृथुदीर्घफलाया स्यादथ त्रियोगिके भवत् ॥४३९६॥
मित्र क्ली सुहृदि स्थौणर्योपथे लग्नतस्तथा ।
चतुर्थराशावथ ना मित्रेऽर्केऽर्कौ तरेऽपि च ॥४३९७॥
मित्रविन्द पुमानुक्त कोहलस्य मुन सुते ।
मित्राविन्दा स्त्रियामिष्टिविशेष यज्वनि श्रुते ॥४३९८॥
कृष्णप्रधानपत्नीना सप्तानामपि कुत्रचित् ।
मिथोऽन्योन्येऽव्यय प्रोक्त रहस्यपि तथा स्मृतम् ॥४३९९॥
मिथुन तु क्लीबलिङ्ग स्त्रीपुसयुगले तथा ।
मधुसर्पिर्द्वये राशौ तृतीये च द्वयोगणे ॥४४ ॥
युग्मार्ये तद्वति त्रि स्याद्दम्पत्योर्मिथुन पुमान् ।
मिथुनत्व रते भावकर्मणोर्मैथुनस्य च ॥४४ १॥
मिथुनी तु द्वयो खञ्जरीटे त्रिषु तु यौगिके ।
मिद्ध चित्ताभिसक्षेपे क्लीबमालस्यनिद्रयो ॥४४ २॥
मिशिस्तु तुत्थनीलिन्या सूक्ष्मैलाया च कीर्त्तिता ।
मिश्रक यजमानस्य क्लीबमुक्त घृताञ्जने ॥४४ ३॥
मिश्रकस्त्रिषु सकीर्ण तथा मिश्रयितर्यपि ।
मिष तु क्ली छलेऽथ द्वे घघरीक्षत्रियोद्भवे ॥४४ ४॥
मिष व्याजे मत क्लीब स्पर्धनेऽपि प्रकीर्त्तितम् ।
मिसि स्त्री मधुरामास्यो शतपुष्पाजमोदयो ॥४४ ५॥
मिह्रिरोऽर्केऽनिले मेघे बद्धे नप् सलिले स्मृतम् ।
मीढो मेषे द्वयो क्लीब मूत्रणे मूत्रितेऽन्यवत् ॥४४ ६॥
मीढा तु देवरे याऽन्य नियुक्तेत्यभिसारिका ।
मीनो ना द्वादशे राशौ द्वे तु मत्स्ये त्रि हिंसिते ॥४४ ७॥
षष्ठौ तु मीना स्त्री क्ली तु हिंसने मीनमिष्यते ।
मीनी प्रीणस्तु पुँल्लिङ्गो दर्दुराम्रे च खञ्जने ॥४४ ८॥

मीमासा श्रौतवाक्यार्थशास्त्रेऽपि च विचारणे ।
मीर क्लीबमुखाया मास्पच या ना तु वारिधौ ॥४४ ९॥
मीलितो मुद्रिते चापि योजिते चाभिधेयवत् ।
मुकु दो निधिभिद्विष्णुरत्नभेदे च कु दुरौ ॥४४१ ॥
मुकुरो बकुले दण्डे कुलाले स्याच्च दपणे ।
स्त्री मुक्तब धना म लिकायां त्रिषु तु यागिके ॥४४११॥
मुक्ता स्त्री मौक्तिके त्रिस्तु विसृष्ट मुक्तिभाजि च ।
मुक्ताफल तु कर्पूरमाक्तिके लवलीफले ॥४४१ ॥
मुक्ति स्त्रियां स्यात्स्वर्गे चाप्यपवर्गे च मोक्षणे ।
मुख वक्त्रेऽभ्युपाये च मु ये ताम्रे च सै धवे ॥४४१३॥
आदौ नि सरणे गेहपुरादद्वार एव च ।
सध्य तरे नाटकादे श दऽपि च नपुसकम् ॥४४१४॥
मुखभूषणमास्यालङ्कृतौ वङ्गा यलेखके ।
मुखमण्डन इत्युक्तस्तिलका यद्रुमे पुमान् ॥४४१५॥
मुखस्य भूषणे क्लीब वर्ण्यते येन वस्तुना ।
मुख वाच्यवदत्र त मुखमण्डन उच्यते ॥४४१६॥
मुखरा शारिकाया स्त्री मुखरो दुमुखे त्रिषु ।
मुखशोभा वेदशालिमुख का तौ मुखस्य च ॥४४१७॥
मु य वक्त्रेऽप्युपाये च नपुसकमुदीरितम् ।
त्रिषु तु स्या मुखभवे प्रधाने प्रथमेऽपि च ॥४४१८॥
मुग्ध मूढे च सौम्ये च नूतनेऽप्यभिधेयवत् ।
मुचिरोऽर्केऽम्बुदे धर्मे पुमान्दातरि तु त्रिषु ॥४४१९॥
मुचुकु द पुष्पवृक्षभेदमा धातृपुत्रयो ।
क्लीब तु मुचुकुन्दस्य प्रसवे परिकीर्त्तितम् ॥४४२ ॥
मुण्ड स्यान्मस्तके त्रिस्तु परिवापितकेशके ।
स्त्री तु मुण्डा च मुण्डी च स्तम्बे श्रमणिकाह्वये ॥४४२१॥

१ मुख नि सरणे वक्त्रे प्रारम्भोपाययोरपि ।

सा तु मुण्डैव भिक्षुक्या मण्डने तु नरस्त्रियो ।
मुण्डो दैत्या तरे राहुग्रहे ना मुण्डिते त्रिषु ॥४४२ ॥
मु डन वपने चापि त्राणेऽपि च नपुसकम् ।
मण्डितस्तूसकेशे त्रिमुण्चारये भेषजे स्त्रियाम् ॥४४ ३॥
मुदिरोऽर्के च मेघे ना भके द्वे कामुके त्रिषु ।
मुद्गरो द्रुघणे पुसि तथा वेण्वादिभेदने ॥४४ ४॥
म ल्लिकायाम्मुद्गदे त्रि क्लीब स्यान्म ल्लिका तरे ।
मुद्राऽङ्गुलीये लिखिताक्षरे चिह्नेऽप्सरोऽ तरे ॥४४ ५।
हस्तवि यासभेदेषु स्थापनीनिष्ठरादिषु ।
अथाऽभिधेयव मुद्रश दो मोदस्य दातारं ॥४४२६॥
मुनिऋषावगस्त्यर्षौ बुद्धे दमनके कुशे ।
अगस्त्यद्रा द्वयोस्तु स्याद्भेके वाचयमे त्रिषु ॥४४ ७॥
मुनिप्रिया ना श्यामाके योगार्थे तु यथायथम् ।
मुनिभेषजमागस्त्यहरीतक्या च लङ्घने ॥४४२८॥
मुनिसेवित उक्तो ना नीवारे त्रि तु यौगिके ।
मुमुचानो मोक्तृमुमुक्षिस्त्रोस्त्रिर्ना तु वारिदे ॥४४ ९॥
मुरली वशवाद्ये पुण्डिकारये काहला तरे ।
मुरवो वाद्यभेदे च खण्डिकाद्रयमानके ॥४४३ ॥
मुरा तु ग धकुब्या च चण्द्रगुप्तस्य मातरि ।
अथ दैत्यान्तरे विष्णुनिहते स्या मुर पुमान् ॥४ ३१॥
मुमुरस्तुषवह्नौ स्या म मथ रविवाजिनि ।
मुषल स्यादयोग्रे च पुनपुसकयो स्त्रियाम् ॥४४३२॥
तालमूल्यामाखुपर्णीगृहगोधिकयोरपि ।
मुषित तु हृतेऽपि स्यात्खण्डितेऽ यभिधेयवत् ॥४४३३॥
मुष्को मोक्षकवृक्षे स्यात्सहते वृषणेऽपि च ।
मुष्टि फलकखङ्गादे पलारये ग्रहणाश्रये ॥४४३४॥

---

१ मुद्गरं क (म) ल्लिकाभेदे पुसि लोष्ठादिभेदने ।
२ मुर्मुरो ज्वलदङ्गारपूर्णाग्नौ च तुषानले ।
३ मुष्कस्तु वृषणे न स्त्री भागल्यावयवे तु ना ।

उन्मानभेदे सुदृढपिण्डिताङ्गुलिसंहतौ ।
धानुष्कहस्तविन्यासभेदे ग्राह्ये च मुष्टि नपुं ॥४४३५॥
मुष्टिकस्तु पुमान् स्वर्णकारे स्यात्स्त्री तु मुष्टिका ।
स्वर्णकारोपकरणभेद एषा प्रकीर्त्तिता ॥४४३६॥
मुसलोऽस्त्ययवघाताय दण्डे स्त्री तु मुसल्यसौ ।
गृहगोधातालमूलीकुस्तुम्बुरुषु कीर्त्तिता ॥४४३ ॥
मुस्ता तु मुस्तके त्रि स्याद्विषभेदे तु न स्त्रियाम् ।
मुहरिस्तु पुमान् सूर्ये तथा स्यादनडुह्यपि ॥४४३८॥
मुहिरोऽर्के स्मरे पुंसि त्रिर्मूर्खे क्ली तमस्यपि ।
मूको दैत्यान्तरे ना त्रि [रवाच्यमतिदीनयो] ॥४४३९॥
अश्वाया वेसराज्जाते [पशौ द्वे क्ल्याविलाम्बुनि] ।
मूढा प्रहेलिकाभेदे मोहने तु नपुंसकम् ॥४४४ ॥
मूढस्तु तद्भितेऽप्यज्ञे क्रद्धमूच्छितयोस्त्रिषु ।
मूत आतञ्चने व्रीहावपि पुंसि मतस्तथा ॥४४४१॥
आचमन्यां तृणैबद्धे भारे व्रीह्यादिकस्य च ।
वस्त्रवेष्टनबन्धेऽथ त्रिर्बद्धे क्ली तु बन्धने ॥४४४२॥
मूर्च्छनं स्यादभिन्यासौ मोहे चाप्यथ मूर्च्छना ।
गीतिधर्मान्तरे स्त्री स्यान्मना मूर्च्छयते कृतौ ॥४४४३॥
मूर्च्छितस्तु प्रवृद्धेऽपि मूढसोच्छ्राययोस्त्रिषु ।
मूर्त्तं स्यात्त्रिषु मूर्च्छाले कठिने मूर्त्तिमत्यपि ॥४४४४॥
मूर्त्ति काये च काठिन्ये काकप्रतिमयोरपि ।
मूर्धाभिषिक्तो ना राज्ञि क्षत्रिये तु द्वयोर्मत ॥४४४५॥
अथ प्रधाने मूर्धाभिषिक्त स्यात्त्रिषु च प्रभौ ।
मूर्धावसिक्तो द्व विप्रात्क्षत्रियाजे त्रियौगिके ॥४४४६॥
मूलोऽस्त्र्यादौ समीपे च वृक्षाङ्घ्रौ च वशीकृतौ ।
नक्षत्रभेदे स्वीये च कारणेऽपि प्रकीर्त्तित ॥४४४ ॥

---

१ मुहिरो र्के च कामे च मुहिरं तमसि स्मृतम् ।

मूलकोऽस्त्री बुस्तिकारण्यशाकस्तम्भान्तरे मत ।
मूलनक्षत्रसयुक्तकालजाते त्रिषु स्मृत ॥४४४८॥
मूलेरस्तु पुमानुक्त आपणीयवनस्पतौ ।
स्याद्वनस्पतिमात्रेऽपि पण्ये तु स्यान्नपुसकम् ॥४४४९॥
मूल्य क्ली वेतने [त्रिस्तु वहने मूल्य इष्यत] ।
माषमुद्गादिके मूलोपान्त्ये तत्रापि नेष्यते ॥४४५ ॥
य परादिरुपादानद्रव्यतुल्यप्रयोजन ।
मूषा लोहकृतां तेजसावत्तन्यारण्यभाण्डके ॥४४५१॥
द्वे तु चोरे भवेन्मूषा मूषश्चोरे भवेत्त्रिषु ।
मूषिकस्त्वाखुजातौ द्वे स्त्रीत्वे त्वेतस्य मूषिका ॥४४५ ॥
अनिष्टगन्धे विज्ञेया मूषिके सदृशाकृता ।
मूषिका निर्विषाणा च जातिभेदे जलौकसाम् ॥४४५३॥
मृगो मकरराशौ च मृगशीर्षे च तद्युते ।
काले पश्वन्वेषणयोर्द्वे तु हस्तिकुरङ्गयो ॥४४५४॥
स षडङ्गुलयोनौ तु नायिकाया भवेन्मृगी ।
मृगनेत्रा रात्रिभेदे त्रिर्मृगाक्षे स्त्रियो भिदि ॥४४५५॥
मृगधु पुसि गोमायौ व्याधे च परमेष्ठिनि ।
पुमान्मृगरिपु सिंहे व्याघ्रेऽपि परिकीर्त्तित ॥४४५६॥
नपुसक मृगशिरो मृगशीर्षे त्रि यौगिके ।
मृगशीर्ष सोमऋक्षे योगार्थे तु यथायथम् ॥४४५ ॥
मृगारिस्तु तरक्षौ स्याद्योगार्थे तु यथायथम् ।
कण्ठीरवे च शार्दूले मृगारिस्तु भवेद्द्वयो ॥४४५८॥
मृणालोऽस्त्री बिसे पद्माङ्कुरे स्यात्पद्मकोरके ।
मृत त्रि नष्टे भैक्षे तु याचिते मरणे च नपु ॥४४५९॥
मृत्युर्द्वयो स्यान्मरणे पुमानेवाऽन्तके मत ।
मृत्यु [ञ्जयोमहादेवे] श्रीफलद्रोणकाकयो ॥४४६ ॥

---

१ मृग पशौ कुरङ्गे च करिनक्षत्रभेदयो ।
अन्वेषणे च याच्ञायां मृगी तु वनितान्तरे ।

मृत्युपुष्पः पुमान्वेणाविक्षावपि तथा मत ।
स्यात्कदर्यां मृत्युफला महाकालफले पुमान् ॥४४६१॥
मृत्युसयमन पुस्यासनभेदऽस्य लक्षणम् ।
भुजवेष्टितजङ्घोरोश्चूलिकाश्लेषितावने ॥४४६२॥
पृष्ठतो भुजपाशश्चेन्मृत्युसयमनो हि स ।
योगार्थे त्वस्य लिङ्गादि तकणीय यथायथम् ॥४४६३॥
मृत्सा मृत्स्ना तुवर्याञ्च तथा श्रेष्ठमृदि स्मृते ।
मृत्स्नी जले मृत्तिकाया तुवरीसञ्ज्ञभषजे ॥४४६४॥
मृदङ्गो लतयो स्वल्पफलकोशातकीति च ।
महाकोशातकीतिख्यातयोर्वाद्यान्तरेऽपि च ॥४४६५॥
मुरजाख्येऽथ लतयोरुक्तयो प्रसवे नपि ।
मृदु वङ्गे कोमले तु त्रि स्यादकठिनेऽपि च ॥४४६६॥
मृदुकण्टक उक्तो द्वे पाठीने त्रि तु यौगिके ।
मृदुत्वक पुसि भूर्जे च मुञ्ज त्रिषु तु यौगिके ॥४४६७॥
मृदुरोमा शशे द्व स्याद्योगार्थे तु यथायथम् ।
मृदुल क्लीबमगुरौ मृदुनि त्रिषु कीर्त्तितम् ॥४४६८॥
मृष्टेरुको वदान्येऽपि मृष्टाशन्यतिथिद्विषि ।
मेकला विन्ध्यपर्यन्तनीवृद्भेद नृभूमनि ॥४४६९॥
मेकलोऽद्रय तरे शीतगुण त्रिषु तु तद्वति ।
मेखला कटिसूत्रेऽपि आणिस्थानेऽपि च स्त्रियाम् ॥४४७ ॥
खड्गत्सरुनिब धस्याश्रयेऽद्रकटके तथा ।
मेघ स्या पुसि जलदे मुस्ताया च तदथका ॥४४ १॥
मेघज तु जले क्लीब त्रि तु स्यान्मेघसम्भवे ।
मघनादो मघघोष इन्द्रजित्तण्डुलीययो ॥४४ २॥
वरुणे च द्वयोस्त्वेष आखुजात्यन्तरे मत ।
मेघपुष्पो हरेरश्वे पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥४४ ३॥
मेघपुष्प तु पिण्डाभ्राम्बुनादेयेषु नप्स्मृतम् ।
मेघवाहन इत्येष पुसि शक्र शिवेऽपि च ॥४४ ४॥

मेघानन्दा बलाका स्यान्मेघानन्दास्तु बर्हिणः ।
मन्थ प्रावृषि ना त्रिस्तु मेघसाधुनि तद्भवे ॥४४७५॥
मेचकः श्यामले कृष्णे पुमांस्तद्वति तु त्रिषु ।
मेचकोऽस्त्री मयूरस्य चन्द्रके स्तनचूचुके ॥४४७६॥
मेचकं चान्धकारे च क्लीबं स्रोतोऽञ्जने मतम् ।
मेढ्रं नपुंसकं शिश्ने मढ्रो मेषे द्वयोर्मतः ॥४४७७॥
मेथिः पुमान्खले दारुण्यस्तं यत्पशुबन्धने ।
मेथीवन्मथिकायां सा स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥४४७८॥
मेदा तु स्यादोषधीभेदे मेदने ना द्वयोः पुनः ।
वैदेहकानिषादीजे मर्त्यजात्यन्तरे भवेत् ॥४४७९॥
मेदुरौषधिभेदे स्त्री सान्द्रस्निग्धे घने त्रिषु ।
मेधा स्त्री धारणावत्यां भवेद्बुद्धौ धनेऽयथ ॥४४८०॥
मेधो यज्ञे सङ्गमे तु द्वयोर्मेधाविनि त्रिषु ।
मेधातिथिः शुके द्वः स्यान्मुनिभेदे पुनः पुमान् ॥४४८१॥
मेधावती महाज्योतिष्मत्यां स्त्री त्रि सुमेधके ।
मेध्यं शुचिनि यज्ञार्हे मेधाम्बर्ह्यादिषु त्रिषु ॥४४८२॥
मेध्यस्तु खदिरे छागे यवे मुञ्जे पुमान्मतः ।
मेध्यं धने बले स्वर्णे मेध्या तु स्यान्नदीभिदि ॥४४८३॥
केतकीरोचनाज्योतिष्मतीब्राह्मीशमीषु च ।
माण्डूक्यां शङ्खपुष्प्यां च वचयोः श्वेतरक्तयोः ॥४४८४॥
मेनो ना पृषदश्वाख्ये कीर्त्तितः पूर्वपार्थिवे ।
मेनाऽस्य पुत्र्यां स्त्रीमात्रे वा गुप्तामातृषु स्मृता ॥४४८५॥
मेनादस्तु द्वयोश्छागे स्यान्मार्जारमयूरयोः ।
मेनिस्तु वाचि च स्त्रीत्वे सङ्कल्पे च प्रकीर्त्तिता ॥४४८६॥
मेरुकः शल्लकीवृक्षे देशभेदे तु मेरुका ।
मेला पत्राञ्जने मस्यां मेलस्तु नारिसङ्गमे ॥४४८७॥
मेषो ना प्रथमे राशावुरभ्रे तु द्वयोरयम् ।
मेषको जीवशाके स्यान्मेष्यां स्त्री मेषिका मता ॥४४८८॥

मेषशृङ्ग्यौषधमिदि न तु स्त्री विषभिद्यपि।
अथ मेष्यो हिमोत्सगक्षमा ये रविरश्मय ॥४४८९॥
शतत्रयमितास्तेषामेकस्मिञ्छत ईरिता ।
मेहा भुवि स्यान्मेहस्तु मूत्रणे मूत्ररुग्भिदि ॥४४९ ॥
मेहघ्नी स्त्री हरिद्राया त्रिर्मेहारावमानने ।
मेहन मूत्रण क्लीबमस्त्री मेढ प्रकीर्त्तितम् ॥४४९१॥
मेही मेहवति त्रि स्याद्व्याघ्र द्वीप्यभिधे द्वयो ।
मत्रो विप्रे वैश्यपूर्ववैश्याया ब्रात्यजे द्वयो ॥४४९२॥
मित्रे वपाने ना सन्धियोगाऽऽदत्यान्तरेष्वथ ।
मैत्र पुरीषोत्सर्गे क्ली मित्रसङ्के तथा मतम् ॥४४९३॥
मृगाऽत्यचित्रामित्रक्ष मृदु मैत्र भृगुस्तथा ।
उपस्थानेऽपि सूर्यस्य सूत्रभदे तथा भवेत् ॥४४९४॥
मैत्री मुनेर्वृत्तिभेदेऽनुराधासख्ययो स्त्रियाम् ।
वसिष्ठागस्त्यवाल्मीक्यर्थे मैत्रावरुणि पुमान् ॥४४९५॥
स्यान्मैथिली स्त्री सीताया ना वैदेहप्रदोषयो ।
मैथुन सुरते क्लीब सङ्गतावपि कीर्त्तितम् ॥४४९६॥
त्रिर्मैथुनोद्वाहयुक्ते मिथुनाङ्क तथा मत ।
द्वे तु मैथुनिक त्रि तु मैथुनवयसौ ॥४४९ ॥
स्त्री तु मैथुनिका पाणिग्रहणे परिकीर्त्तिता ।
मैथुनी सारसे द्वे स्यात्त्रि तु मैथनवयसौ ॥४४९८॥
मोको ना मोचने शिष्ये मोकी रात्रौ स्त्रियां मता ।
स्त्रीपुसयोस्तु मोकी च मोकश्च स्या चतुष्पदे ॥४४९९॥
मोक तु पशुवृत्तौ तत् क्लीबलिङ्ग प्रकीर्त्तितम् ।
मोक्षो मुष्करवृक्षे च मृतौ मुक्तो विमोचने ॥४५ ॥
मोचा तु कदलीमात्रे सुगन्ध्यपफलेऽपि च ।
स्यात्कदल्यन्तरे किं च शाल्मलौ ना तु शिग्रुके ॥४५ १॥

वृक्षस्य च रसे माच पाट था तु द्वयोभगवत् ।
मोचक कदले शिग्रुनिर्मोचम्नविरागिपु ॥४ २॥
मोचाट कृष्णजीरे च रम्भास्थ्नि मलयोद्भवे ।
मोण शुष्कफले तक्रमक्षिकाहिकरण्डया ॥४१ ३॥
मोदक पूपभेदे स्यात्पुल्लिङ्ग च नपुसके ।
वा यवन्मोदयितरि मोदितर्यपि मादक ॥४५ ४॥
मोरट कृष्णाजीरे च रम्भास्थ्नि मलयोदभवे ।
मोरट तु प्रसूत्यादिसप्ताहात्क्षीर ऊर्ध्वज ॥४५ ५॥
मोरकाख्ये गजादीनामिक्षुमूल च गारसे ।
मोरटा तु स्त्रिया मूर्वासञ्ज्ञके भेषजान्तरं ॥४५ ॥
सूर्यावर्त्ते पर्णिकाख्यस्तम्बे च परिकीर्त्तिता ।
मोह क्रोध च मूर्च्छाया तथैवाज्ञानत द्वयो ॥४१ ॥
मोहन क्ली रते मोहेऽथार्थे मोहयतेरना ।
मोहना विष्णुशक्तौ तु कस्याश्चिन्मोहनी मता ॥४१ ८॥
मौढी यक्षे मर्मराख्ये मूढयोगिनि तु त्रिषु ।
मौलिस्त नृस्त्रियोर्मूर्ध्नि चूडामुकुटयोरपि ॥४१ ९॥
धम्मिल्लेऽशोकवृक्षे तु ना भूमौ त स्त्रिया भवेत् ।
मौष्टिको ना स्वर्णकारे त्रि तु मुष्टिप्रहारिणि ॥४५१ ॥
म्लान म्लानवति त्रि स्यात्क्लीब म्लानौ प्रकीर्त्तितम् ।
मण्डूकभेदे गृहजे म्लान स्त्रीपुसयोर्मत्त ॥४५११॥
म्लिष्ट म्लानेऽप्यविस्पष्टवाक्ये स्यादभिधेयवत् ।
म्लेच्छास्त द्वे म्लेच्छवाक्षु स्यु प्रत्यन्तनिवासिषु ॥४५१ ॥
म्लेच्छने तु द्वयोर्म्लेच्छा ताम्रे तु म्लेच्छमिष्यते ।
म्लेच्छभोजास्तु गोधूमे योगार्थे तु यथायथम् ॥४५१३॥
म्लेच्छास्य ताम्रसञ्ज्ञ स्याल्लोहे म्लेच्छमुखेऽपि नप् ।
म्लेच्छाना त्वसने स्त्रीत्वे म्लेच्छास्या परिकीर्त्तिता ॥४५१४॥

---

१ मोचक शाल्मलि सौभाञ्जनो रम्भा च मोचकरि ।
२ दूर्वाया बीक्षुमूले तु गोरसे पि च मोरटम् ।

य

यो ना वायौ यानयोगयशोयमनयातृषु ।
या याञाधूमितत्यागसमज्ञायोगवारण ॥४५१५॥
आसौ रथादियानेपि स्त्रीयोनावपि च स्त्रियाम् ।
यक्षी तु पूजनीये त्रिर्यक्ष्या स्त्री यक्षिणीष्यते ॥४५१६॥
यक्षो वैश्रवणे पुसि प्रासादेपि विडौजस ।
यक्ष नपुसक स वे स्यात्खापेयशुनोर्द्वयो ॥४५१ ॥
यक्षकर्दम इत्येष यक्षाणामपि कदमे ।
कर्पूरागरुकस्तूरी तक्कोलै साधितेऽपि च ॥४५१८॥
ग घयुक्तिविशेषे स्यादेतवा स्यात्सकुङ्कुमै ।
यक्षराट पुसि घनदे मल्लाना रङ्गचत्वरे ॥४५१९॥
यक्ष्मस्तु याधिमात्रेऽपि क्षयरोगे च पूजने ।
यक्ष्मा न याधिमात्रेऽपि क्षयरोगे विशेषतः ॥४५२ ॥
यजतस्तु शशाङ्केऽपि यज्ञद्र ये च ऋत्विजि ।
शिवेऽपि यजनीये तु श दोऽयम्परिकीर्त्तित ॥४५२१॥
यजत्रमग्निहोत्रे च यज्ञोपकरणे मतम् ।
यजत्रस्तु त्रिलिङ्गोऽसौ यजनीये प्रकीर्त्तित ॥४५२२॥
यजत्रस्तु पुमानग्निहोत्रिण्यपि च कस्यचित् ।
यजन तु यजत्रार ये यागोपकरणे क्रतौ ॥४५२३॥
यागस्य चाधिकरणे करणे च नपुसकम् ।
यजिस्तु यजधातौ ना यजमाने द्वयोर्मत ॥४५२४॥
यजनार्थे तु म वादौ लिङ्ग नाऽस्य विभाव्यते ।
यजुरध्वयुवह्न्योर्ना द्वे शिष्ययजमानयो ॥४५२५॥
च द्राऽश्वमेदेऽपि यजु कैश्चित्पुसि कीर्त्तित ।
यजुर्यज्ञोत्सवे क्लीब मन्त्रजात्य तरेऽपि च ॥४५२६॥
यज्ञस्तु केशवे चाग्नौ योगे चात्मनि चेष्यते ।
यज्ञार्हो यागयोग्ये त्रि कृष्णसारमृगे द्वयोः ॥४५ ॥

यज्ञियो यज्ञकर्मार्हे त्रिषुञ्ज तु पुमा मत ।
यत तु यमने हस्तिपकाना पादकर्मणि ॥४५२८॥
भद्यलिङग तु बद्धे स्यात्तथैवोपरतेऽपि च ।
यतिजितेन्द्रिये चापि परिव्राजि तथा त्रिषु ॥४५ ९॥
स्त्रिया तु यमने पादच्छेदभेदे यतिर्मता ।
तथा कारागृहे धातौ त्वेष ना यततौ मत ॥४५३ ॥
यथा तु योग्यतावीप्सापदार्थानतिवृत्तिषु ।
साहश्ये चैव माने च प्रशसायामपीष्यते ॥४५३१॥
यथासुख पुमाश्च द्र यौगिके तु यथायथम् ।
यद यय स्याद्गर्हायां तथा हेत्ववधारणे ॥४५३२॥
यदि त्वेतद्विकल्पेऽपि गर्हायाम यय मतम् ।
यदुर्नाऽऽद्यनृपे द्वे तु तद्वश्येषु च मानवे ॥४५३३॥
यद्वत्प्रश्ने वितर्के चाऽप्य यय परिकीर्त्तितम् ।
यन्ता हस्तिपके सूते पुसि नियमकर्त्तरि ॥४५३४॥
य त्र तु क्ली लघूपायकर्मनिर्माणसाधने ।
यन्त्रणाया तु पुल्लिङ्गो य त्रोऽय परिकीर्त्तित ॥४५३५॥
यन्त्रण स्यान्नियमने रक्षणे ब धनेऽपि च ।
यमो वैवस्वते पुसि यमने च शनैश्चरे ॥४५३६॥
शब्दवणविशेषेषु तथैव स्या चतु त्रपि ।
शरीरसाधनाऽपेक्षे सत्यादौ नित्यकर्मणि ॥४५३ ॥
वल्गितारयस्य घोटाना गतिभेदस्य चाष्टसु ।
भेदेष्वेकत्र भेदे स्यात्क्ली तु युग्मे त्रिषु त्वद ॥४५३८॥
मरणे युग्मवति च यमी तु यमुना सरित् ।
स्त्री यमाविति तु द्यावापृथिव्योरथ वायसे ॥४५३९॥
हीनाधिकाङ्गतुरगे तथा स्त्रीपुसयोर्मतः ।
महिषे स्याद्यमरथो यमस्य स्य दनेऽपि च ॥४५३४ ॥
यमल युगले क्लीब यमली चोटिकाद्वये ।
यमस्वसा तु दुर्गाया यमुनायामपि स्त्रियाम् ॥४५४१॥

यम्या रात्रौ स्त्रियामुक्ता य तव्ये तु त्रिलिङ्गके ।
यम्यो यमयित ये च यमसाधावपीष्यते ॥४५४२॥
यमीस्तु पुंसि सूर्येऽपि मोक्षमार्गेऽपि कीर्त्तित ।
यमी स्त्रीपुंसयोर्विप्र घोटके च प्रयुज्यते ॥४५४३॥
स्त्री तु प्रासौ दीघवृष्टौ दि यवृष्टौ यमीर्मता ।
ययुस्तु नाऽश्वमेधाऽश्वेऽश्वमात्रे तु द्वयोर्ययु ॥४५४४॥
यवा रश्मौ मनीषायां [ना व्रीहौ महति त्रिषु] ।
यवन मिश्रणे द्वे तु शूद्राक्षत्रियजे तथा ॥४५४५॥
वैश्याक्षत्रियजेऽपि स्याद्यवना तु नृभूमनि ।
देशे तुरुष्करार ये तन्मर्त्ये सवचो द्वयो ॥४५४६॥
यवनेष्ट पलाण्डूनां दशानामेकभेदके ।
योगार्थे तु त्रिलिङ्गोय यवनेष्ट प्रकीर्त्तित ॥४५४ ॥
पुमा यवफलो वेणौ मासीकुटजयोरपि ।
यविष्ठस्त्रियुवतमेऽग्नौ तु ना सवनाहुते ॥४५४८॥
यवीयाननुजेऽपि स्यादिति यूनि च वाच्यवत् ।
यव्य यवोत्प युचिते क्षेत्रे यवहितेऽपि च ॥४५४९॥
यवसाधावथ स्त्रीत्वे य या नद्या प्रकीर्त्तिता ।
यशस्तु सत्त्वर यातिश्रीज्ञानमाहात्म्यवारिषु ॥४५५ ॥
धनप्रतापयोश्चापि नपुंसकमुदीरितम् ।
यशोदा त्वग्निचित्याया इष्टकासु च कासुचित् ॥४५५१॥
नन्दगोपस्य पत्न्याश्च त्रि तु कीर्त्ते प्रदातरि ।
यष्टिरस्त्री गृहस्थस्य द डे स्याद्दण्डमात्रके ॥४५५२॥
तरवारौ च यष्टि स्यात् तथा खड्गायुधा तरे ।
तथा हारलतायाश्च स्त्री तु स्यान्मधुकोषधौ ॥४५५३॥
यागो यज्ञेऽपि पुंल्लिङ्गो मण्डलेष्वपि कीर्त्तितः ।
शैवागमप्रसिद्धेषु सवतोभद्रकादिषु ॥४५५४॥
याच्ञाऽनुवत्तने स्त्री स्यात्प्राथनेऽपि तथेष्यते ।
याजकस्त्रियाजयितृयष्ट्रो पुंसि तु ऋत्विजि ॥४५५५॥

याजन्यस्तु पुमा यज्ञे क्षत्रिये तु द्वयोर्मत ।
याजिको ना यज्ञविद्यामधीयाने विदत्यपि ॥४१५६॥
कुशे च याजके त्रिस्तु यज्ञेन नयतीदृशे ।
यात हस्तिपककृत्ये तथा चाङ्कुशवारणे ॥४१५ ॥
गते तथा यतियतसम्बन्धिन्यभिधेयवत् ।
यातयाम तु जीर्णेऽपि परिभुक्तोज्झिते त्रिषु ॥४१५८॥
याता देवरपत्न्या स्त्री यात्री तु त्रिषु गन्तरि ।
यातु क्ली राक्षसे यातु पापे ना पथिके त्रिषु ॥४५४९॥
यात्रा तु यापनेऽपि स्याद्गमनोत्सवयो स्त्रियाम् ।
याद पतिस्तु वरुणे समुद्रेऽपि पुमान्मत ॥४५६ ॥
यादव केशवे पुसि [यदुसम्बन्धिनि त्रिषु] ।
यादसाम्पतिरम्भोधौ पश्चिमाशापतावपि ॥४५६१॥
यानोऽस्त्री वाहने प्रोक्तो यान क्ली गमने मतम् ।
यापनावत्तने प्रस्थापने निरसनेऽपि च ॥४५६२॥
कालक्षेपेऽपि च प्रोक्ता स्त्रिया चैव नपुसके ।
याप्यन्तु यापनीयेऽपि वाच्यवच्च विगर्हिते ॥४५६३॥
याम सामान्तरे ना तु प्रहरे यमनेऽपि च ।
यामको यन्तरि त्रि स्याद्यामकौ तु पुनर्वसू ॥४५६४॥
यामि कुलस्त्रियामिष्टा तथैव स्वसरि स्त्रियाम् ।
यामुन स्रोतोऽञ्जने क्ली यमुनायोगिनि त्रिषु ॥४५६५॥
याम्याऽवाच्यां भरण्या च याम्योऽगस्त्ये च चन्दने ।
यावो नाऽलक्तके माषे यवयोगिनि तु त्रिषु ॥४५६६॥
यावको यवभेदे स्यात्कुल्माषान्येऽप्यलक्तके ।
यावको यवितर्येष त्रिलिङ्ग परिकीर्त्तित ॥४५६७॥
यावत् कार्त्स्न्यें प्रशसायां परिच्छेदेऽवधारणे ।
पक्षान्तरेऽपि च प्रोक्तोऽधिकारे मानसम्भ्रमे ॥४५६८॥
यावतस्तु तुरुष्काख्यनिर्यासे पुसि कीर्त्तित ।
यावता यावदर्थे तु स्त्रीनपुसकयोर्मता ॥४५६९॥

यावस तु मत क्लीब मित्रे रक्ततृणोऽपि च ।
युक्त प्रकारे ना याय्यसमाहितयुते त्रिषु ॥४५७ ॥
युक्ति स्त्रिया समाधावप्युपपत्तौ च योजने ।
युग तु क्ली चतुहस्ते षडशी यक्कुलेऽपि या ॥४५ १॥
युग्मेऽथ तद्वति त्रि स्याद्युगा स्त्री ऋद्धिभेषजे ।
युगोऽस्त्री स्य दनादीनामीषाब धनदारुणि ॥४५ २॥
माने कृतादित्रेतादिकाले स्याज्ज मपवसु ।
युग धरोऽस्त्रियामेष प्रोक्त स्यन्दनकूबरे ॥४५७३॥
साल्वैकावयवे तु स्युनृभूमनि युग धरा ।
युग्म नपुसक शम्भुकार्मुके वाहनेऽपि च ॥४५ ४॥
युग्यस्तु युगसाधौ च युगवोढरि च त्रिषु ।
युङ सहाये द्वितीयादिसमसरये त्रि वस्तुनि ॥४५ ५॥
युञ्जान सारथौ पुसि विप्र द्वे योक्तरि त्रिषु ।
युतोऽपृथक्कृते युक्त बद्धे च त्रिषु नप्पुन ॥४५ ६॥
मिश्रणे च पृथक्कारे ब धने च युतादि तत् ।
युतक योषितो वस्त्रभेदे शूर्पाग्र एव च ॥४५ ॥
यौतके युगले चापि सश्रये वसनाञ्चले ।
युतकम्भेद्यवद्युक्ते युग्मावयवयोरपि ॥४५७८॥
युद्धस्तु शत्रौ सग्रामे ना योद्धरि तु स त्रिषु ।
युधिष्ठिर पाण्डवाना ज्येष्ठे शक्रे तथा पुमान् ॥४५ ९॥
युध्मस्तु सयुगे पुंसि तथा धनुषि कीर्त्तित ।
युयुधानो युयुत्सौ त्रि साहासान्वितयोद्धरि ॥४५८ ॥
युयुधानस्तु कस्मिश्चित्पुल्लिङ्गो राजनि स्मृत ।
युवा स्यात्तरुण श्रेष्ठे निसर्गबलशालिनि ॥४५८१॥
यूथिकाऽम्लानके पुष्पविशेषेऽपि च योषिति ।
यूथी स्त्री मागधीवर्यां न स्त्री तिर्यक [समूहयो] ॥४५८२॥
यूषोऽस्त्री व्यञ्जनरसे छायायां तु स्त्रियामियम् ।
यूषा तु पुसि च स्त्रीत्वे हिंसायां परिकीर्त्तिता ॥४५८३॥

१ युतो युक्ते पृथग्भूते क्लीवं हस्तचतु ये ।

योक्त्र स्यादङ्गुलौ तद्वत्करणे च युजेरपि ।
योग स्यात्सङ्गतौ प्राप्तौ जवे विस्त्रम्भघातिनि ॥४५८४॥
ध्यानयोजनकार्येषु सनहनेऽपि च भेषजे ।
योगी ना यावशूकारयलवण नागरङ्गके ॥४५८५॥
समाहिते तु सयोगशीले योगरति त्रिषु ।
योगिनी तु स्त्रिया शैलराजपुत्र्या प्रकीर्त्तिता ॥४५८६॥
योग्य वृद्धयौषधेऽपूपे ग्राहनक्षीरचन्दने ।
योग्य क्षमे प्रवीणेऽर्हेऽप्युपायित्र्यभिधेयवत् ॥४५८ ॥
योग्यो ना पुष्यनक्षत्रे योग्या ऋद्धयौषधे न ना ।
योग्या पुनर्नवायां स्त्री रक्तायां गुणनेऽपि च ॥४५८८॥
योग्यास्तु भूमनि स्त्रीत्वे भरणीषु प्रकीर्त्तिता ।
योजन परमात्मन्यप्यध्वमाने नपुसकम् ॥४५८९॥
कोसलाद्येष्वथ क्रोशचत्वारो मगणादिषु ।
तथा युक्तिक्रियायां च लतापूगे तु योजन ॥४५९ ॥
अथ योजनगन्धेति जानक्या व्यासमातरि ।
तथा कस्तूरिकायाश्च स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥४५९१॥
योनि स्त्रीणां भगे स्थाने गृहे कारणताम्रयो ।
आकरे च स्त्रियामेषा पुसि चापि प्रकीर्त्तिता ॥४५९२॥
यौतुक कन्यया प्राप्ये पित्रादे स्यान्नपुसकम् ।
लेख्येऽपि च त्रिषु त्वेतदात्मीये परिकीर्त्तितम् ॥४५९३॥
यौन त्रि योनिसम्बद्धे क्ली गर्भाधानसस्कृतौ ।
यौवन नपि तारुण्ये युवतीना कदम्बके ॥४५९४॥
लावण्ये च कुचे चापि प्रोक्त यौवनलक्षणम् ॥४५९४३॥

र

रह क्ली वेग औत्सुक्ये सान्तोऽदन्तस्तु पुस्ययम् ॥४५९५॥
रहस च समासान्ते सान्तो ना स्याच्छिवे हरौ ।
रहिर्द्वयोर्जविन्यश्वे धारौत्सुक्यजवे स्त्रियाम् ॥४५९६॥

रो रेफे लघुमध्ये रप्रत्याहारे रलात्मके ।
प्रमेच्छाग्निजवे तीक्ष्णदातृधातृषु तु त्रिषु ॥४५९ ॥
रा दाने विभ्रमे स्वर्णे री गतौ र मत द्युतौ ।
रक्त कुङ्कुमताम्रासृक स्त्रीपुष्पे रागवस्तुनि ॥४५९८॥
पत्राङ्गारय्येऽपि सि दूरे हिङ्गुले पद्मकेऽपि च ।
भूधात्र्याश्च फले क्लीब ना तु रोहीतकद्रमे ॥४५९९॥
कुसुम्भेऽपि शिव सूर्यका ते स्या मङ्गलग्रहे ।
ग्णे च लोहिते त्रिस्तु रक्त तद्वति रागिणि ॥४६ ॥
कृता यवर्णे मधुरेऽनुरक्ते चानुनासिके ।
रक्तस्तु रक्तिकालाक्षामञ्जिष्ठाश्रुतिभि सु च ॥४६ १॥
सप्तानां वह्निजिह्वानामेकस्या काचसारयो ।
रक्तकोऽम्लानब धूकपत्राङ्गे रक्तशिग्रुके ॥४६ २॥
रक्तवस्त्रे वा यवत्त सानुरागे सविभ्रमे ।
सशोणिते रक्तिका तु श्रतिभिद्गुञ्जयोर्मता ॥४६ ३॥
रक्तकण्ठ कोकिले द्वे त्रिस्तु स्या मधुरस्वरे ।
रक्तक दो विद्रुमे त्रिस्तथा राजपलाण्डुक ॥४६ ४॥
रक्तग्र थिर्व्याधिभेदे स लकीभद एव च ।
रक्तग्रीवस्तु रक्षोभि पारावतभिदोद्वयो ॥४६ ५॥
रक्ताभो रोहितको दूर्वा रक्तघ्न्युदीरिता ।
पत्राङ्गेऽपि कुसुम्भेऽपि योगार्थे रक्तचन्दनम् ॥४६ ६॥
अतिरक्ते रक्ततरस्त्रि क्लीब रक्तगैरिके ।
रक्तद ती तु पार्वत्या त्रि तु शोणरदे भवेत् ॥४६ ॥
रक्तदृष्टिद्वयो पारावतयोग यथायथम् ।
रक्तपा तु जलौकायां डाकि या ना तु राक्षसे ॥४६ ८॥
रक्तपुच्छी त्रि योगार्थे ब्राह्मणीकीटके स्त्रियाम् ।
रक्तपुष्प कोविदारासनयोर्ना त्रियौगिके ॥४६ ९॥

---

१ रस्तु रेफेपि रलयोरिच्छाप्रेमाग्निषु स्मृत ।
दातृधात्रोस्तु राशातोस्तीक्ष्णे चाप्येष वाच्यवत् ॥

स्त्रियां रक्तफला बिम्बीलतायां त्रि तु यौगिके ।
रक्तरेणुस्तु सिन्दूरे पलाशस्य च कोरके ॥४६१ ॥
रक्तशीर्षो नृनिर्यासे प्रीपिष्टाग्न्ये त्रियौगिके ।
रक्ताक्ष कासरे क्रूरे पारावतचकोरयो ॥४६११॥
रक्ताङ्ग निद्रुम क्लीव रक्ताङ्गो मङ्गलग्रहे ।
स्त्री रक्ताङ्गति काम्पिल्यजीवन्त्यो परिकीर्त्तिता ॥४६१२॥
रक्षणा रक्षण त्राण विष्णौ स्यात्पुंसि रक्षण ।
रक्षस्तु रक्षके त्रि स्याद्द्विपद्राक्षसयोस्तु नप ॥४६१३॥
रक्षा भस्मनि लाक्षायां रक्षणे यन्त्रबन्धने ।
स्याद्रक्षापेक्षको द्वारपालेऽन्तःपुररक्षिणि ॥४६१४॥
रक्षोघ्नो गौरसिद्धार्थभल्लातक्यो क्ली काञ्जिके ।
हिङ्गुन्यथ स्त्री रक्षोघ्नी रक्षोहन्तरि वान्यवत् ॥४६१५॥
रक्षिका धार्ययन्त्रादौ स्त्रीत्रातरि तु वाच्यवत् ।
रघुलघौ वेगवति त्रिद्धे तु जविवाजिनि ॥६४१६॥
पुमान्दिलीपपुत्रेऽपि ककुत्स्थस्य सुतेऽपि वा ।
रघुवशाख्यकाव्येऽपि प्रयुक्तो लक्षणाबलात् ॥४६१ ॥
रङ्कोऽनुदारे लुब्धे त्रिर्मन्दे दीने बुभुक्षिते ।
रङ्कुर्द्वे मृगभेदे स्यान्नीचुच्छेदे तु पुंस्ययम् ॥४६१८॥
रङ्ग स्थाने नृत्तयुद्धस्थाने स्याद्रूपवर्णयो ।
नासयोच्चारणे हर्षे प्रेम्णि तालान्तरेऽपि च ॥४६१९॥
टङ्के खदिरसारेऽथ रङ्गा नद्यन्तरे स्त्रियाम् ।
रङ्ग तु नागे सीसे च वङ्गवत्स्यान्नपुंसकम् ॥४६२ ॥
रङ्गजीवक इत्येष वर्णकारे नटेऽपि ना ।
रङ्गदा स्वजिका ना तु टङ्कणे खादिरे रसे ॥४६२१॥
रङ्गमाता तु कुट्टिन्या लाक्षायां च त्रुटावपि ।
रङ्गाजीवश्चित्रकरे पुंसि त्रिषु तु यौगिके ॥४३२२॥
रङ्गावतारी तु नटे वान्यवत्परिकीर्त्तित ।
पुमांस्तु तस्मिन्सम्प्राप्तो यो नाट्ये रुद्रभूमिकाम् ॥४६२३॥

---

१ रक्ताक्षो द्वे कपोते चकोरे महिषराक्षसौ ।
२ रक्तिका कृष्णलायां स्त्री बन्धूकारुणयोस्तु ना ।

रचनं स्यात्प्रणयने करणे रचना पुनः ।
रीतौ च रचनार्थे च त्वष्टु पत्न्यामपि स्त्रियाम् ॥४६२४॥
रजस्त्वदन्तं स्त्रीपुष्पे पासावपि रजोगुणे ।
रजकस्तु शुके चापि पुंसि निर्णेजके द्वयोः ॥४६२५॥
रजकस्त्रिर्मृगाणां स्यादथ रमयितर्यपि ।
रजतोऽस्त्री मतो रूप्ये शोणिते हृदहारयोः ॥४६२६॥
अथ श्वेते त्रिलिङ्गोऽथ रजतः परिकीर्त्तितः ।
रजती स्त्री हरिद्रायां तथा नील्योषधौ निशि ॥४६२७॥
जतुकृत्सन्नवल्यां च रागद्रव्ये तु नप्स्मृतम् ।
रजःपूता सुरभ्यां स्याद्यौगिके तु यथायथम् ॥४६२८॥
रजोऽह्नि शरदि क्ली स्त्री पुष्पे रेणौ जले स्त्रजि ।
सत्त्वाद्ययतमे रात्रौ लोहे तेजसि रेतसि ॥४६२९॥
रजस्वलो द्वु महिषः उदक्यायां रजस्वला ।
रजस्वलस्तु रजसा युक्तः स्यादाभधेयवत् ॥४६३ ॥
रजिर्नेद्रपराभूते नृपे वा दानवान्तरे ।
कस्यांचिद्वनितायां वा राज्ये वेत्याह सायणः ॥४६३१॥
आयो पुत्रेऽप्याङ्गिरसे रोदस्योर्वे दुसूर्ययोः ।
उभा रजी रजिस्स्त्री वे ऋक्षुदृष्टा दिगर्थिका ॥४६३२॥
रज्जूवराटके स्त्र्यष्टहस्तमानेऽपि रज्जुवत् ।
नाडीभेदेऽपि पृष्ठास्थिनिर्गते तारकान्तरे ॥४६३३॥
रञ्जनं नील्योषधौ च क्लीबं स्याद्रक्तचन्दने ।
मनःशिलायां तु स्त्री स्याद्धरिद्रायां च रञ्जनी ॥४६३४॥
अथ रञ्जयतेरर्थे रञ्जना रञ्जनं द्वयम् ।
रञ्जसानः पुमान्मेघे घर्मेऽपि परिकीर्त्तितः ॥४६३५॥
रणोऽस्त्रियां मतो युद्धेऽतिशब्दे शब्द एव च ।
रणकस्तु वियोगे स्यात्पुंस्यप्यौत्सुक्य इष्यते ॥४६३६॥
रण्डा मूषिकपर्ण्यां स्याद्विधवायामपि स्त्रियाम् ।
स्वसम्बन्धाथशून्येऽन्तःकरणे क्ली नरे तु ना ॥४६३ ॥

१ रणः कोणे क्वणे पुंसि समरे स्यान्नपुंसकम् ।

रतस्त्रि कृतराम च तन्निष्ठे सुरते तु नप ।
स्मरे तु रतनारी न नारीणा सीत्कृतौ शुनि ॥४६३८॥
रतद्विक स्याद्दिनसे सुखस्थानेऽष्टमङ्गले ।
रतिस्तु सुरतोत्कण्ठापरमप्रीतिषु स्मृता ॥४६३९॥
रागे कामस्य भार्याया गुह्यरत्ननदीसृतौ ।
रतुदूते पुमान्स्त्री तु नद्या पथि च बन्धने ॥४६४ ॥
रत्न स्वजातिश्रेष्ठेऽपि माणिक्यादौ धनेऽम्बुनि ।
रत्नगर्भा भुवि स्त्री ना कुबेरे त्रि तु यागिके ॥४६४१॥
भवेद्रत्नवर स्वर्णे रत्नाना प्रवरेऽपि च ।
रत्नाकरस्तु रत्नानामाकरेऽम्भोनिधावपि ॥४६४२॥
रथस्तु स्यन्दने पुसि वेतसे च प्रकीर्त्तित ।
द्वयोस्तु चक्रवाके स्याद्रन्थ्या तु स्त्री रथी स्मृता ॥४६४३॥
रथकारस्त्रि तक्ष्णि द्वे माहिष्यात्करणीसुते ।
रथाङ्ग रथचक्रे क्ली स्यन्दनावयवेऽपि च ॥४६४४॥
चक्रवाकाह्वये तु स्यात्पक्षिभेदे द्वयोरयम् ।
र या रथसमूहे च प्रतोल्या पथि च स्त्रियाम् ॥४६४५॥
रथस्य वोढस्वीयादौ रथ्य स्यादभिधेयवत् ।
रदो विलेखने पुसि तथा दन्तेऽपि कीर्त्तित ॥४६४६॥
रन्तिदेव पुमान्विष्णौ तथैव स्यान्नृपान्तरे ।
रन्ध्र स्याद्विवरे क्लीबमपराधे च दूषणे ॥४६४ ॥
राशौ लग्नाऽष्टमे द्वे तु विप्रमन्त्रीसमुद्भवे ।
रप (पा) ठस्तु द्वयोर्ज्ञेयो मण्डूके विदुषि त्रिषु ॥४६४ ॥
रभसो वेजसरम्भहर्षेऽथ महति द्वयो ।
रमठस्तु द्वयोर्म्लेच्छे त्रिषु क्रीडनशीलके ॥४६४९॥
रमणस्तु धवे [कामे नपि क्रीडानितम्बयो:] ।
[पटोलमूले नार्यां स्त्री रमणी रमणा न ना] ॥४६५ ॥

१ रति परप्रीतिररतोत्कण्ठारागे स्मरस्त्रियाम् ।
२ रतिः स्त्री स्मरदारेषु रागे सुरतगुह्ययो ।
३ र या रथौघविशिखावर्त्मनीषु च योषिति ।

रसन तु फले स्नेहे निर्यासे हेमरूप्ययाः ।
स्यात्कषायद्रवेऽन्ने च विषेऽपि च नपुंसकम् ॥४६६४॥
आस्वादने तु जिह्वाया श ्दने रसना न ना ।
रसवत्त्रि रसाऱ्ये रसवती स्त्री महानसे ॥४६६५॥
रसायन दीर्घायुष्कभेषजेऽपि रसाश्रये ।
रसायनं विषेऽपि स्या ज्जराव्याधिजिदौषधौ ॥४६६६॥
पुल्लिङ्ग पक्षिराजे च विडङ्गाऱ्यौषधेऽपि च ।
रसालस्तु पुमानिक्षावाम्रेऽपि वरुणद्रुमे ॥४६६ ॥
समिश्ररसभेदे च कटुतिक्तकषायके ।
त्रि तु स्यात्तद्वति स्त्री तु रसाला पानकान्तरे ॥४६६८॥
अपक्वतक्र सव्योषचतुर्जातगुडार्द्रकम् ।
सजीरकं यन्निर्दिष्टं पानक तत्र सा भवेत् ॥४६६९॥
रसाला रसनादूर्वाविदारीमाजितासु च ।
रसिको मद्यभदे स्यादपक्वेक्षुरसे कृते ॥४६ ॥
रसिकस्तु रसज्ञेऽयमभिधेयवदिष्यते ।
रसिका स्त्री रसालेक्षुरसयो सरसे त्रिषु ॥४६ १॥
रसित मेघनिर्घोषे रुते च स्या नपुंसकम् ।
त्रिषु त्वास्वादिते चैव स्वर्णादिरञ्जितेऽपि च ॥४६७२॥
रसोनो लशुने पुंसि रसहीने तु स त्रिषु ।
रस्नो दण्डे पुमानश्वे द्वयो रस्न प्रकीत्तित ॥४६ ३॥
रहोऽव्यय वा विजने [नस्त्वे रतिगुह्ययो] ।
रहस्या तु नदीभेदे स्त्रिया त्रिस्तु रहोभवे ॥४६७४॥
राक स्यादातपे सूर्ये पुमान् राका त्विय स्त्रियाम् ।
नद्य तरे च क छवां च नवजातरज स्त्रियाम् ॥४६७५॥
सम्पूर्णे दुतिथौ पूर्णिमा चेत् प्रतिपद्युता ।
राक्षसो यातुधाने द्वे राक्षसी ग धवस्तुनि ॥४६ ६॥

---

१ स्याजातार्त्तवक यायां तथा पूर्णेन्दुपर्वणि ।

२ राक्षसो यातुधाने द्व राक्षसी ग धवस्तुनि ।
विवाहभेदे तु त्रिषो मुहूर्त्त योगभिद्यपि ।
वत्सरे चोनपञ्चाशे नम्बाऽमात्यान्तरे पुमान् ।

चण्डासज्ञे तथा रात्रौ लङ्काद्वीपेऽपि च स्त्रियाम ।
सायाह्नत्रिमुहूर्ते च दष्ट्राया च प्रकीर्त्तिता ॥४६ ॥
नन्दाऽमात्ये विवाहस्य भदे वर्षमुहूर्त्तयो ।
यागस्य ना राक्षसस्तु रक्षस्सम्बन्धिनि त्रिषु ॥४६ ८॥
रागोऽनुरागे मात्सर्ये रक्तवर्णे रजस्यपि ।
लाक्षादिरञ्जनद्रव्ये दीप्तौ क्लेशादिकेऽपि च ॥४६ ९॥
लोहितादिषु वर्णेषु गीतिधर्मान्तरेऽपि च ।
रागचूर्ण पुमान्द तथावने मकरध्वजे ॥४६८ ॥
रागवान्पूगवृक्षे ना त्रि तु रागवति स्मृत ।
रागसूत्र पट्टसूत्रे तुलासूत्रेऽपि कीर्त्तितम् ॥४६८१॥
रागी रक्ते कामुक च वाच्यवत्परिकीर्त्तित ।
राघवो द्वे महातिम्यन्तरे वश्ये रघोरपि ॥४६८२॥
रघुसम्बन्धिमात्रे तु राघवस्त्रिषु कीर्त्तित ।
राट तु छन्दोविशेषे स्त्री द्वाविंश यक्षरे मता ॥४६८३॥
अथ राट क्रतुभेदे च पार्थिवेऽपि पुमान्मत ।
राजकन्या तु राज्ञश्च कन्यायां च नपुसके ॥४६८४॥
अपि केसरमालाख्यझाटे सा परिकीर्त्तिता ।
राजजम्बूस्तु जम्बूभित्पिण्डखजूरया स्त्रियाम् ॥४६८५॥
अथ राजतरु कर्णिकारारग्वधवृक्षयो ।
राजा ना सोमवल्ल्या च चन्द्रे शक्रे तु पार्थिवे ॥४६८६॥
क्षत्रिये द्वे प्रभौ तु [यक्षे नाऽथ भवेत्स्त्रियाम्] ।
राज्ञी लोहे अक्षरीतिनाम्नि रूप स्त्रियामिदम ॥४६८ ॥
राजन सामभेदे क्ली राज्ञ शूद्रासुते द्वयो ।
राजन्य क्षत्रिये राजपुत्रेऽग्नौ क्षीरिकाद्रुमे ॥४६८८॥
राजपुत्रो महाराजाग्र बुधे राजनन्दने ।
राजपुत्री तु मालत्यां तिक्तालाबा च कीर्त्तिता ॥४६८९॥

१ चण्डासंज्ञे वाच्यवत्त रक्ष सम्बन्धिनि त्रिषु ।
मुहूर्त्तवर्षयोगाना भदे स्याद्राक्षस पुमान् ।

चुछु दर्यामपि स्त्रीत्वे योगार्थे तु यथायथम् ।
स्याद्राजबदरं रक्तामलके लवणेऽपि च ॥४६९ ॥
राजराजः कुबेरेऽपि सार्वभौमे सुधाकरे ।
राजवृक्षः समाख्यातः सुवर्णाकपिपालयो ॥४८९१॥
म थानके समाख्यातो राजवृक्षस्तृणाधिपे ।
स्त्रिया राजसभाराज्ञे राज्ञश्चास्थानं इष्यते ॥४६९२॥
राजसी निशि शैशिया रजोयोगिनि तु त्रिषु ।
राजहंसस्तु कादम्बः कलहंसे नृपोत्तमे ॥४६९३॥
द्वयो स्त्रियां राजहंसी रसालाभिदि कीर्त्तिता ।
राजादनं प्रियालद्रौ क्ली पलाशद्रुमे तु ना ॥४६९४॥
फलाध्यक्षद्रुमे त्वेष न स्त्री राजादनो मत ।
राजार्हं राजयोग्ये त्रि कस्तूर्यण्डे नपुंसकम् ॥४६९५॥
जोङ्गके चाथ राजार्हा स्त्री वे जम्ब्वा प्रकीर्त्तिता ।
राजिम्तु राजसर्पे चाधोभागे रसनस्य च ॥४६९६॥
क्षेत्र कारादिलेखाया पङ्क्तावपि भवेत्स्त्रियाम् ।
केदारेऽपि च पङ्क्तौ च राजवृन्दे तु राजकम् ॥४६९ ॥
राजको राजितर्येष त्रिलिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
राजिकाक्षवसङ्गे स्त्री विज्ञेया सर्षपान्तरे ॥४६९८॥
राजीवं कमले क्लीब त्रिस्तु तद्वति वस्तुनि ।
राजोपजीविनि द्वे तु मत्स्ये हस्तिान सारसे ॥४६९९॥
राजीवो हरिणाख्येपि राजीमतिमृगान्तरे ।
राठा नीवृतिसुह्मषु शोभायामपि च स्त्रियाम ॥४ ॥
रातोऽभिधेयवद्दत्ते राती त्री रतयोगिनि ।
विहारशीलकन्यायां रातादानं तु नप्स्मृतम् ॥४ १॥
रात्रकं पञ्चरात्रे ना वेश्यावेश्मादिवासिनि ।
द्वे राक्षसे रात्रिचरी रात्रिचारिणि तु त्रिषु ॥४७ २॥
रात्रिजं तारके क्लीब रात्रिजाते त्रिषु स्मृतम् ।
रात्रिजागर उक्तो द्वे शुनके त्रिस्तु यौगिके ॥४ ३॥

राधा विशाखानक्षत्रे तद्युक्ते कालमात्रके ।
कर्णमातरि च स्त्री स्याद्विशाखासम्भवे त्रिषु ॥४७ ४॥
राधस्तु मासे वैशाखे राधी तत्पूर्णिमा मता ।
गधो मासा तरे राधा चित्रभेदे च ध विनाम् ॥४ ५॥
गोपीविशाखामलकीविष्णुक्रा तासु विद्युति ।
राधन साधने प्राप्तौ राधना भाषण स्त्रियाम् ॥४ ६॥
राधस्तु सा त क्लीब स्या प्ररूढे च घनेऽपि च ।
राधेरक पुमान्सीरे सीरके च घनोपले ॥४ ॥
राम परशुरामे ना विष्णौ दाशरथा रतौ ।
बलभद्रे ध्वजे श दे मौली लक्ष्मणि कीर्त्तित ॥४ ८॥
वर्णेषु शुक्लशबलकृष्णषु त्रि तु तद्वति ।
चारुप्रधानयोश्चापि रामा तु स्य तरे स्त्रियाम् ॥४ ९॥
हिङ्गुनद्योस्तथा क्लीब कुष्ठवास्तूकयोरथ ।
ना हये पशुभेदे च वरुणे च प्रकीर्त्तित ॥४ १ ॥
रामको रक्तरि त्रि स्या मत्स्यजा यन्तरे द्वयो ।
रामिलो रमणे कामे पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥४ ११॥
राम्भो ना वैणवे दण्डे रम्भासम्ब धिनि त्रिषु ।
राशि क्रत्वन्तरे पुञ्जे मेषादावाढकेऽपि ना ॥४ १२॥
साम्नोस्त्वर्गिन नरोवर्गगीतयो स्यान्नपुसकम् ।
राष्ट्रस्त्वजन्ये विषयेऽप्यस्त्रियां परिकीर्त्तित ॥४ १३॥
रास कोलाहले ध्वाने भाषाशृङ्खलकेऽपि च ।
क्रीडाभेदे यादवाना पु लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥४७१४॥
रासेरसस्तु गोष्ठ्यां स्याद्रासशृङ्गारयोरपि ।
रससिद्धौ रसावासषष्ठीजागरयोपि ॥४ १५॥
रास्ना स्त्रीत्वे मता धेनौ सुवारयेपि च भेषजे ।
रिक्त शून्ये त्रिषु क्ली तु रेचने त्र वनेऽपि च ॥४ १६॥
क्षीयमाणतिथिप्रायपक्षे रिक्त पुमान्मत ।
रिक्ता चतुर्थनवमचतुदशातिथिष्वियम् ॥४ १ ॥

१ रामा योषाहिंगुनद्यो क्लीब वास्तूककुष्ठयो ।
ना राघवे च वरुणे रैणुकेये हलायुधे ॥

रिङ्खाऽश्वगतिभेदेपि शूकशिम्ब्या च नर्त्तने ।
रित गतौ हिंसनेऽप त्रिगर्त्ते हिंसितेऽपि च ॥४ १८॥
रिपु शत्रौ पुमाश्चौरे तथा षष्ठगृहे रिपु ।
रिप्र दु खे च पापे च क्लीबलिङ्ग प्रकीर्त्तितम् ॥४ १९॥
रिष्ट वभावे पापेऽथ त्रिर्याप्येऽप्यशुभे शुभे ।
खड्गे च फेनिले पुसि रिष्टिरित्यपि रिष्टवत ॥४ २ ॥
रीतिर्दग्धसुवर्णादिमले स्थित्यारकूटयो ।
प्रचारे स्रवणे पङ्क्तौ स्वभावे पित्तले स्त्रियाम् ॥४ १॥
वैदर्भी मागधी लाटी गौडी पाञ्चाल्यवतिका ।
इत्यादि नामधेयासु का यवृत्तिषु चेष्यते ॥४७२२॥
रीतिक रीतिकुसुमे रीतिधातौ तु रीतिका ।
री याऽवमाननाया च लज्जायां स्त्रीत्व इष्यते ॥४ २३॥
रुस्तु शब्दे भये युद्धे विच्छेदेऽपि पुमा मत ।
रुक्म सुवर्णे तीक्ष्णारये चायोभेदेऽञ्जनान्तरे ॥४ २४॥
रुक्मस्तु निष्कालकारे धत्तरे नागकेसरे ।
रुक्मिणी द्वारवत्या दाक्षायणी कृष्णपत्न्यपि ॥४ २५॥
रुक्मी तु तद्भ्रातरि पुमास्तथा स्यात्पर्वतान्तरे ।
रुग्णो भग्ने व्याधिते त्रि क्ली रुग्ण भगर प्रयो ॥४ २६॥
रुक्प्रभाकान्तिवाञ्छासु चकारान्ता स्त्रियां मता ।
रुचको विपुले चापि वाच्यवद्रुचिकारिणि ॥४ २ ॥
अस्त्री दन्तेऽङ्गुलीये च निष्के सौभाग्यभूषणे ।
द्वे मातुलुङ्गजम्बीरकपोतेष्वेरण्ड एव ना ॥४ २८॥
चतुरस्रस्तम्भभेदे पञ्चाना भाग्यशालिनाम् ।
ग्रहयोगविशेषेण चैकस्मिन् पर्वतान्तरे ॥४ २९॥

---

१ रिष्ट क्षेमाशुभाभावे पुसि खड्गे च फेनिले ।
२ रुक्मस्तु पुसि निष्काख्ये मतो वक्षोविभूषणे ।
३ रुक्तु याधौ चकारान्ता व्यथायां च स्त्रियां मता ।
रुग्ण्याधिव्यथयोर्जान्ता स्त्री तथा कुष्ठभेद जे ॥

अश्वभूषा तरे तु क्ली मा येऽपि रुचक मतम ।
सौवर्चले विडङ्ग च क्षारे च मधुरद्रवे ।।४ ३ ।।
गोरोचनायां रुचिकृद्द्र यभेदेऽपि कीर्त्तितम ।
उत्तरालिन्दशून्ये च रुचक मन्दिरान्तरे ।।४ ३१।।
रुचि स्त्री दीप्तिशोभाभिलाषाभिष्वङ्गरश्मिषु ।
रतब धा तरे चैव रोचनायां मता रुचि ।।४ ३२।।
वृक्षाम्लसञ्ज्ञे तिन्तिण्या फले स्त्री देवता तरे ।
आकूतेस्तु पुमा पत्यौ यज्ञस्य पितरि स्मृत ।।४ ३३।।
क्लीब रुचिफल बिम्बीफले पारेवतेऽपि च ।
रुचिभर्त्ता पुमा सूर्ये पत्यावपि रुचेर्मत ।।४ ३४।।
रुचिराऽतिजग यन्तवृत्तरोचनयो स्त्रियाम ।
वाच्यवत्सुन्दरे चैव दीप्तेऽपि रुचिकारिणि ।।४ ३५।।
क्ली कुङ्कुमे रुधिरवल्लवङ्ग सुषिर यथा ।
कैश्चिदुक्त मूलकेऽपि रुचिर स्या नपुसकम ।।४ ३६।।
रुचिष्य स्वदमाने त्रि खद्योते तु द्वयोर्मत ।
रुचिष्य श्वेतलवणे क्लीबलिङ्ग प्रकीर्त्तितम ।।४ ३ ।।
रु य पत्यौ च कतके बि वे शालौ पुमानथ ।
रुच्या तु ककटीभेदे कृष्णजीरे तथा स्त्रियाम ।।४ ३८।।
रुच्य सौर्वचले क्लीब भूषणेऽपि विलेपने ।
रुचिकारिण्यथ रुच्यो वाच्यवत्परिकीर्त्तित ।।४ ३९।।
रुक व्याधिव्यथयोर्जा ता स्त्री तथा कुष्ठभेषजे ।
रुजा भङ्गजरामृत्युरोगेषु स्त्री व इष्यते ।।४ ४ ।।
मेष्यामपि तथा कुष्ठभेषजे भञ्जके त्रिषु ।
रुजाकरो रोगकरे कमरङ्गफलेऽपि च ।।४ ४१।।
रुजासहो रोगसहे परुषेऽपि तथा पुमान् ।
रुणि क्रमुकभेदेऽपि दुष्टदेवश्रुतौ स्त्रियाम ।।४ ४२।।

---

१ रुचिरो वा यकिञ्चो य पु दरे रुचिकारिणि ।

हिमालयोपत्यकाया प्रयुक्तषाऽऽमरुत्फले ।
रुण्डो नृजातिभेदे द्वे वरुटीशूद्रसम्भवे ॥४ ४३॥
चतुष्पाज्जातिभेदे च स्यादश्वावेसरोद्भवे ।
कबन्धे तु पुमान्रुण्ड खण्डिते वेष वाच्यवत् ॥४ ४४॥
रुण्डिका युद्धभूद्वारपिण्डीदूतीविभूतिषु ।
रुत क्लीब रवे प्रोक्त विच्छिन्ने वाच्यवन्मतम् ॥४७४५॥
रुद् स्त्रिया रोदन याथ्यो रोदके पुत्तरस्थित ।
रुदथस्तु शिशुच्छात्रकुक्कुटेषु शुनिद्वयो ॥४ ४६॥
रुदित क्ली रोदनेऽथ त्रि साक्रन्दे च शोचिते ।
रुद्रस्तु ना शिवेऽग्नौ च रुद्राणी पार्वती स्त्रियाम् ॥४ ४ ॥
देवभेदेषु मन्त्रेषु भीमे स्तोतरि च त्रिषु ।
अजैकपादहिर्बुध्न्यो हरो निर्ऋत ईश्वर ॥४ ४८॥
भुवनोऽङ्गारको मृत्युरर्धकेतुकपालिनौ ।
सर्वश्चेत्येकादशामी रुद्रा वायव्यकीर्त्तिता ॥४ ४९॥
स्यादेकादशसंख्याया प्रथमे च मुहूर्त्तके ।
एकारवीणान्तरयो कोशकारान्तरेऽपि च ॥४७५ ॥
रुद्रा तु स्याल्लताभेदे स्त्रीभूम्नि वर्यमाशुषु ।
शतसंख्येषु ये ताप वितरन्त्यथ च स्त्रियाम् ॥४ ५१॥
स्याद्रुद्रतनयो दण्डे तथा खड्गेऽपि पुस्ययम् ।
रुद्रपत्नी तु दुर्गायामतस्याश्च प्रकीर्त्तिता ॥४ ५ ॥
रुद्रप्रिया तु पार्वत्यां हरीतक्यामपि स्मृता ।
रुधिरोऽङ्गारके चाथ शोणिते कुङ्कुमेऽपि नप् ॥४ ५३॥
रुमा सुग्रीवदारेषु विशिष्टलवणाकरे ।
रुम्रस्सूर्यस्रुते चैव विनाशेऽपि पुमा मत ॥४ ५४॥
ब्राह्मणे तु द्वयोरुम्रो दर्शनीये तु स त्रिषु ।
रुरु प्रमद्वारायाश्च पत्यौ ना मृगदैत्ययो ॥४ ५५॥

---

१ रुण्डिका द्वारपिण्ड्यां च पूतिकायां रणक्षितौ ।

रुवथो ना ध्वनौ द्वे तु कुक्कुटे शकुनावपि
रुशद्व्रणविशेषेण युक्त वाक्येऽप्यमङ्गले ॥४ ५६॥
हिंसितर्यपि पूवत्र स्त्र्यर्थे स्याद्रुशतीति हि।
रुह्वा पुमान्प्रावृषि च तथा प्रावृड्वनस्पतौ ॥४ ५ ॥
रुह्वरीति स्त्रियामेषा वसुधायां प्रकीर्त्तिता।
रूक्ष क्ली नि शरे दध्नि त्रिष्वप्रेम्ण्यपि चिक्कणे ॥४७५८॥
पादपे तु पुमानेष रूक्ष सम्परिकीर्त्तित ।
रूक्षणी यागवीथौ स्यात्स तु शीथुनि नामत ॥४ ५९॥
अथ रूक्षयित ये च सरूक्षणहिते त्रिषु।
रूक्षस्वरो गद्भे स्याद्योगार्थे तु यथायथम् ॥४ ६ ॥
रूढो यवे ना क्ली जाते प्रसिद्धे वा यवश्च स ।
कृतप्ररोहणे श देऽवयवार्थबहिष्कृते ॥४ ६१॥
रूप स्वभावसौ दर्यश्लोकाकृतिवपु षु च।
शब्दे च नाटके नाटकादौ शुक्लादिकेष्वपि ॥४ ६२॥
ग्र थावृत्तौ च मृगजात्य तरे तु द्वयोरयम्।
रूपणे तु पुमानेव रूप एष प्रयु यते ॥४ ६३॥
रूपक नाटके मूर्त्ते काव्यालङ्करणेऽपि च।
रूप्य विभूषणे हेम्नि रजते चाहते मतम् ॥। ६४॥
अथ प्रशस्तरूपेऽपि रूपणीये च वाच्यवत्।
रेको विरेके शङ्कायां रेक स्याद्वमेऽपि च ॥४ ६५॥
रेखा तु कृत्रिमे मार्गे हस्तपादतलादिषु।
निर तरालपड क्तौ च [चिह्ने रेखा प्रकीर्त्तिता] ॥४ ६६॥
रेचना रेचयत्यर्थे न ना रिक्तौ तु रेचनम्।
रेचनी दन्तिकागु मे कम्पिल्ले त्रिषुदोषधौ ॥४ ६ ॥
क्लीब रेचितमावक्रप्लुतात्माश्वगतौ मतम्।
वियोजने च भ्रुकुटौ कृतायामेकया भ्रवा ॥४ ६८॥

---

१ हिंसितु स्त्र्यर्थविषये रुशाम्बी रुशतीति च।

मत रेचयतेरर्थे तथा सम्पचनेऽपि च।
रेचित वा॒यवत्प्रोक्त सम्पृक्त च वियोजिते ॥४७६९॥
कर्मभूते रेचयतेस्तथोक्तगतिमत्यपि।
रेटि स्त्री वह्निरटिते सयतोत्कटवाचि च ॥४७ ॥
तिन्त्रिटीके स्पृहाया च तथा का॒त्यचिषोरपि।
रेणु स्त्रियां हरण्वार॒यभपजे परिकीर्त्तिता ॥४ १॥
स्त्रीपुसयोस्तु पांसौ स्या॒त्रसरेण्वष्टकेपि च।
रेणुका तु हरेणौ स्त्री जमदग्नेश्च योषिति ॥४ ७२॥
रेतो जले च शुक्रे च सा॒त क्ली पारदेऽपि च।
रेत्र रेतसि पीयूषे पटवासे च सूतके ॥४ ३॥
रेपा स्यादधमे क्रूरे कृपणेऽप्यभिधेयवत्।
रेफस्तु पुसि मूध॒यो॒तस्स्थावर्णे प्रकीर्त्तित ॥४ ४॥
वा॒यवत्तु मतो रेफ स्तोतर्यपि च कुत्सिते।
रेरिहाणस्तु पुसि स्या॒महादेवेऽम्बरेऽपि च ॥४७ ५॥
रेवट दक्षिणावर्त्तशङ्खे क्लीब प्रकीर्त्तितम्।
रेणुवातूलयो पुसि विषवैद्ये पुनद्वयो ॥४ ६॥
रेवती बलभद्रस्य पत्न्या गवि च पौष्णभ।
तद्युक्ते कालमात्रे च तत्र जातस्त्रिया तथा ॥४ ॥
मालत्यां नागदन्तार॒यस्तम्बे मातृषु च स्त्रियाम्।
केषुचित्सामभेदेषु रेवत्य इति भूम्नि च ॥४ ८॥
प्रत्येक स्युस्तृचे चापि रेवतीर्न उपक्रमे।
[रेवा नील्योषधौ रत्यां नर्मदार॒यनदीभिदि] ॥४ ९॥
रैशब्दो द्वे धने स्वर्णे मेघे त्वेष पुमा॒मत।
रैवतोऽद्रौ शिवे मेघारग्वधाऽद्र्यन्तरेषु च ॥४ ८ ॥
सम्बा॒धिनि तु रेवत्या रैवत मेधवन्मतम्।
रोको दीप्तौ बिले रोक नौकाक्रयणभेद्यो ॥४ ८१॥
रोग कुष्ठौषधे व्याधौ [तथाऽऽधौ परिकीर्त्तितः]।
रोचकस्तु पुमान्हस्तिकर्णे इत्यतिविश्रुते ॥४ ८२॥

कम्बलस्य प्रभेदे स्यात्त्रिषु रोचितरि स्मृत ॥४ ८३॥
रोचना रक्तकह्लारे कर्कशावारयोषितो ।
रोचनी तु त्रिवृद्वल्या गोपित्त रोचना मता ॥४ ८४॥
मन शिलायां काम्बल्यसञ्ज्ञवृक्षेपि च स्त्रियाम् ।
रोचन कूटशाल्मल्यां रोचत्यर्थे तु रोचनम् ॥४ ८५॥
रोचना रोचयत्यर्थे न ना त्रिषु तु रोचके ।
रोड क्षोदे भवे पुसि तृप्ते स्याद्वाच्यलिङ्गक ॥४७८६॥
रोडा तु पासुलाया स्त्री त्रिषु हस्तादिवर्जिते ।
रोदनी तु यवासेऽथ रोदन रुदिताश्रुणो ॥४ ८ ॥
रोद क्ली रोदसी च स्त्री द्वय व्योम्नि तथा भुवि ।
सहोक्तौ तु भवेद्द्यावा पृथिव्यो रोदसी इति ॥४ ८८॥
रोधस्तीरेऽन्तरिक्षे च वृत्तौ कुड्ये च बन्धने ।
रोधसी इति तु द्वित्वे रोदसोरिदमुच्यते ॥४ ८९॥
रोध्रो ना सावरे क्लीबमपराधे च किल्बिषे ।
रोपस्तु रोपणेऽपि स्यात्तथा बाणे पुमान्मत ॥४ ९ ॥
रोपणस्तु शरे पुसि त्रि तु रोहणसाधने ।
रोपणा रोहणाया च मता क्लीबे स्त्रियामपि ॥४ ९१॥
रोमशस्तु द्वयोर्मेषे ना निम्बे ऋषिभिद्यपि ।
रोमशा तु स्त्रिया शूकशिम्ब्या कासीस इष्यते ॥४ ९२॥
काकजङ्घासहामांसीमेदासु त्रिस्तु लोमशे ।
रोमहर्षण [सूतमुनौ रोमाञ्चजनके त्रिषु] ॥४ ९३॥
रोषणस्तु पुमान्स्वर्णकषणग्राणि पारदे ।
क्रोधने रोषशीलार्थे त्रिषु स्यादूषरेऽपि च ॥४ ९४॥
रोहक प्रेतभेदे ना रोहरि त्रिषु विश्रुत ।
रोहन्ती स्त्री लतायां स्याद्रोहन्तस्तु पुमान्द्रुमे ॥४७९५॥
रोहन्तो मेघवच्चैव रोहतादिति कर्त्तरि ।
रोहिणी लोहिनीपथ्याऽतसीकन्यासु गव्यपि ॥४ ९६॥

कण्ठरोगप्रभदे च नक्षत्रे च प्रजापत ।
तद्युक्ते कालमात्रे च तत्रजातस्त्रियामपि ॥४ ९ ।
[एकत्र कृष्णपत्नीपु मूलभ च तडि यपि] ।
रोहिदग्निहये पुास वणभेदेऽर्क एव त्र ॥४ ९ ॥
त्रि तु तद्वणवत्येष वा यवत्तु द्वयोर्मत ।
स्त्रिया त्वृश्यस्य भार्याया नद्यङ्कुलिलतासु च ॥४ ९९॥
रोहित पुसि वृषभ रक्तवर्णे प्रकीत्तित ।
रक्ते वर्णेऽथ तद्युक्त रोहिता रोहिणी त्रिषु ॥४८ ॥
द्वे श्वेतराजिमृगभिद्य श्यमत्स्या तरे वपि ।
रोहिणी तु स्त्रियां रक्तवर्णाया गत्रि कीर्त्तिता ॥४८ १॥
रोहित कुङ्कुमे घासे ऋजौ शक्रशरासने ।
रोहिताश्वश्चित्रभानौ हरिश्च द्रनृपा मजे ॥४८ २॥
रोही रोहितकद्रौ ना रोहवत्येष वाच्यवत् ।
रोहिषो गद भाभासमृगभिन्मत्स्यभेदयो ॥४८ ३॥
कत्तृणाकाशयो स्त्री तु वात्याया रोहिषी स्मृता ।
रौद्रो न स्त्री भवेद् घर्मे का यस्य च रसा तरे ॥४८ ४॥
शिवशक्त्य तरे चैवोग्रताचण्डिकयो स्त्रियाम् ।
एकस्या सप्तमातृणां त्रि तूग्रे रुद्रयोगिनि ॥४८ ५॥
रौरव साममेदेऽपि पुमांश्च नरका तरे ।
रुरुसम्ब धिनि त्वेष वा यव च भयङ्करे ॥४८ ६॥
रौहिणेयो बुधेऽपि स्याद्बलभद्रे तथा पुमान् ।
स्यादपत्ये तु रोहिण्या रौहिणेयो द्वयोरयम् ॥४८ ७॥
रौहिष कत्तृणे क्लीब पुसि स्याद्धरिणा तरे ॥४८ ॥

ल

लक्तिका गवि गोधाया वाद्यभेदेऽपि च स्त्रियाम् ॥४८ ८॥

---

१ रोहितं ऋजौ शक्रचापे चापि तृणे पि च ।
पुसि स्यान्मीनमृगयोः वे रोहितकद्रुमे ।

लक्ष शर॑ये क्लीब स्या॑लक्षोऽस्त्री याज इष्यत ।
लक्ष करुणवृक्षे ना दर्शनाङ्कनयोरपि ॥४८ ९॥
अयुते तु दशाभ्यस्ते लक्ष लक्षा च नप्स्त्रियो ।
लक्षण कार्षिके चिह्ने नाम्नि मुद्राङ्कसम्पदो ॥४८१ ॥
भक्त्यां स्त्री लक्षणा स्यात्तु सारस्या दशनाङ्कयो ।
लक्ष्मण सारसे द्व स्यात्पुमान्रामानुजे मत ॥४८११॥
प्रियाया सारसस्य स्या॑लक्ष्मणा लक्ष्मणीति च ।
स्त्रियां लता॑तरे पुत्रजननीनाम्नि लक्ष्मणा ॥४८१२॥
॑योतिष्मत्योषधौ चापि स्यात्त लक्ष्मवति त्रिषु ।
लक्ष्मचिह्ने प्रधाने च प्रोक्त ना॑त नपुसकम् ॥४८१३॥
लक्ष्मी श्रीभूतिशोभासु ऋद्धिवृद्ध्यौषधद्वये ।
लवङ्गे नवशक्तीनां विष्णोरेकत्र च स्त्रियाम् ॥४८१४॥
लक्ष्मीपतिर्नृपे चापि विष्णावपि पुमा॑मत ।
लक्ष्मीपुत्रो द्वयोरश्वे श्रीसुतेऽथाढ्यके त्रिषु ॥४८१५॥
लक्ष्मीवाञ्श्रीमति त्रि स्यात्कतकार॑यद्रुमे तु ना ।
लक्ष्य शर॑ये क्ली श दे सिद्ध लक्षणतस्तथा ॥४८१६॥
द्रष्टव्ये त्वङ्कनीये च लक्ष्य स्यादभिधेयवत् ।
लग्न राश्युदये क्लीब सक्तल॑जितयोस्त्रिषु ॥४८१ ॥
लघण्मेघे टकारान्तो वायावपि पुमान्मत ।
हिरण्यमाषकस्यापि भेदे स्त्री त्वप्सरस्यसौ ॥४८१८॥
लघ्वसारेष्टरम्या॑पशीघ्रे प्रतिभटे गुरो ।
एकमात्रस्वरे चैषु स्त्र्यर्थे ल॑ग्वी लघुस्तथा ॥४८१९॥
अथ क्लीब लघूशीरेऽप्यगुरावपि कीर्त्तितम् ।
गुग्गुलौ तु पुमान्स्त्री तु स्पृक्कायां स्यन्दना॑तरे ॥४८२ ॥
लङ्का रक्ष पुरीशाखाशाकिनीकुलटासु च ।
लङ्ग सङ्गे च पिङ्गे च पु॑लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥४८२१॥
लङ्गन तु गतौ क्लीब लङ्गनी तु स्त्रियामियम् ।
वस्त्रलम्बनदण्डे स्यात्तिरश्चीने गृहादिषु ॥४८ २॥

लङ्कक्लिलङ्घितरि द्व तु रङ्गोपजीविनि ।
लङ्घन तूपवासे स्यात्क्रमणे प्लवनेऽपि च ॥४ २३॥
लज्जालु स्त्री नमस्कार्यारण्येऽनूपलता तरे ।
शमीफलारण्ये सलिलोद्भूतवल्य तरेऽपि च ॥४८२४॥
लज्जालुर्वाच्यव चैष लज्जाशीले प्रकीर्त्तित ।
लटव कटाह लटवा तु कुसुम्भे पक्षिभिद्यपि ॥४ २५॥
लटवा करञ्जभेदे स्यात्फले वाद्य स्त्रियामियम् ।
लडहो ना विलासे त्रिर्विलासवति सुन्दरे ॥४८२६॥
लता तु वल्या शाखाया प्रियङ्गुस्पृक्कयोरपि ।
लता बृहत्यामपि च ज्योतिष्मत्यतिमुक्तयो ॥४८२७॥
तथैव शारिवायां च माधवीदूर्वयोस्स्त्रियाम ।
लब्धवण पण्डिते त्रियोगार्थे तु यथायथम ॥४८२८॥
लभ्य याप्ये च लब्धव्ये वाच्यवत्परिकीर्त्तितम ।
लम्पाको लम्पटे देशे पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥४८२९॥
लम्बस्तु लम्बने पुंसि स्त्रियां चैव प्रकीर्त्तित ।
लम्बकर्ण स्मृत कोहपादपे छगलेऽपि च ॥४८३ ॥
लम्बन शकुने द्वे स्याल्लम्बनम्भूषणे मतम् ।
ललन्तिकासमाख्येपि तथा लम्बनकर्मणि ॥४८३१॥
लम्बा पद्मालयागौर्योस्तिक्ततुम्ब्यामपि स्त्रियाम् ।
लम्बा स्त्रीभूमिभेदेऽपि तथोत्कोचे प्रकीर्त्तिता ॥४८३२॥
लम्बोदरो विघ्नराजे विशेषे नृपतौ तथा ।
लयो विनाशे सश्लेषे साम्ये तौर्यत्रिके मतम ॥४८३३॥
लर्जुशब्दो मत स्त्रीत्वे वणिग्यपि च विद्युति ।
लल तु पल्लवेऽपि स्यादुद्यानेऽपि नपुसकम् ॥४८३४॥
ललजिह्वोऽन्यवत् हिंस्रे क्रमेलकशुनो पुमान् ।
ललत् त्रिषु विलासस्य कर्त्तर्येतत्प्रकीर्त्तितम् ॥४८३५॥
लम्बनाख्ये त्वलङ्कारे ललन्ती स्त्रीत्व इष्यते ।
ललना कामिनीजिह्वानाडी [स्वाचारसर्जयो] ॥४८३६॥

नपुसक तु ललन विलासे परिकीर्त्तितम ।
ललाटिका ललाटस्थपत्राङ्गुल्यां प्रकीर्त्तिता ॥४८३७॥
तथैव पत्रपाश्यायामपि स्त्रीलिङ्ग इष्यते ।
ललामोऽस्त्री ध्वजे चिह्ने प्रभावे पुरुषे नृपे ॥४८३८॥
छत्रे धाम्नि पशो भृङ्गे पुण्ड्र पुच्छे च भूषणे ।
वाच्यवल्लिङ्गिनि श्रेष्ठेऽथ ललामो द्वयोर्हये ॥४८३९॥
ललित हारभदे क्ली लसितेऽथ त्रिरीप्सिते ।
लवश्छेदे च लेशे च काले नाशे च राघवे ॥४८४ ॥
लवणो दैत्यभेदे च पुमा षड्रसेऽप्यथ ।
लवणद्र यससृष्ट त्रि स्या षड्रसान्विते ॥४८४१॥
लताभेदे तु लवणी क्ली तु स्या सैन्धवादिषु ।
[ना तु सिन्धौ च लवणी नदीभेदद्विषो स्त्रियाम] ॥४८४२॥
लवाणकस्तु कालेऽपि दात्रेऽपि तृणभिद्यपि ।
लव्वो (व्यो) द्वयोरपत्ये स्यादृषिस्थाने तु पुस्ययम ॥४८४३॥
ला स्त्रीलिङ्ग हि दाने स्याद्ग्रहणेपि निगद्यते ।
लाक्षा वलक्तकेप्याथर्वणोक्तेऽपि लता तरे ॥४८४४॥
लाक्षावृक्ष पलाशे पुम् कोशाम्रऽपि प्रकीर्त्तित ।
लाक्षिको लाक्षयारक्ते लक्षमूल्ये च मेघवत् ॥४८४५॥
लाङ्गल तु हले गेहदारुपुष्पविशेषयो ।
ताले मेढ्रे [च पुच्छे च लाङ्गल] कस्यचिन्मतम ॥४८४६॥
लाङ्गल्यग्निशिखातोयपिप्पलीशालिभित्स्वपि ।
मञ्जिष्ठानारिके योश्च रास्नायामपि कीर्त्तिता ॥४८४ ॥
नदीभेदेऽथ चरक शालिभेदेऽवदश्नरम ।
नृभूम्नि लाङ्गला शाखामि नृजातिभिदोरपि ॥४८४८॥
स्याल्लाङ्गले लाङ्गलकमथ लाङ्गलिका स्त्रियाम ।
भवेदग्निशिखायामप्यथ लाङ्गलकी मता ॥४८४९॥
विषभेदे लाङ्गलिको नृभू सामगशाखिषु ।
लाङ्गली बलदेवे नालिकेरे ना त्रियौगिके ॥४८५ ॥

अथ लाङ्गलिनी लाङ्गलिक्यां स्त्रीत्वे प्रकीर्त्तिता ।
लाङगूलव लाङ्गुल क्ली कीत्तित मेढपुच्छयो ॥४८५१॥
लाङगूली पृश्निपर्ण्यां स्याल्लाङगूल मेढपुच्छयो ।
लाङगूली वानरे कन्दभेदे हैमवतेऽपि ना ॥४ ५२॥
लाङगूलिनी नदीभेदे लाङ्गुल्यपि च सा मता ।
लाज क्लीबमुशीरेऽथ स्त्रियां पुभूम्नि चाक्षते ॥४८५३॥
भृष्टधान्येऽपि च स्त्रीत्वे किंवा पुभूम्नि कस्यचित् ।
लाञ्छनी स्त्री च मुद्राया क्लीचिह्नाङ्कननामसु ॥४८५४॥
लाटो देशान्तरे वस्त्रे लाटदेश्येपु भूम्न्ययम ।
लातशब्दस्तु पुल्लिङ्गो भृत्तिकादानभाजने ॥४८५५॥
आत्त तु भेद्यलिङ्ग स आदाने तु नपुसकम ।
लाब पक्षिविशेष द्वे [लावा रूप स्त्रियाम्भवेत्] ॥४८५६॥
लालिकाऽश्वनसो रज्जौ त्रिस्तु स्याल्ललितर्यपि ।
बालानुकृतिशब्दे तु लालक परिकीत्तित ॥४८५७॥
लालना लालयत्यर्थे न ना सजरसे तु ना ।
द्वयोस्तु मूषिकाकारसविषप्राणिभिद्यपि ॥४८५८॥
लालसा तु न नौत्सुक्ये प्रार्थनायां च दोहदे ।
अतिमात्राभिलाषेऽथ स्त्री छन्दोयोगिनीभिदो ॥४८५९॥
लाला मुखजले काञ्च्यां कान्त्याञ्च लवलीद्रुमे ।
द्वयोस्तु लालो मैत्रेय ब्राह्मणीसम्भवे मत ॥४८६ ॥
विलासे तु पुमांल्लाल स्यादुपक्रन्दने तु नप् ।
स्यादुपच्छन्दने लाल गुह्यार्थपरभार्ययो ॥४८६१॥
लालाटी तु ललाटे स्त्री ललाटयुजि वाच्यवत् ।
लालाटिक प्रभोर्भावदर्शि यात्र्लेषणान्तरे ॥४८६२॥
कार्याक्षमे [चैव पुमान्मतोऽथ शब्दवेदिभि] ।
लालास्रावस्तु लूतायां द्वे लालास्रवणे पुमान् ॥४८६३॥

---

१ लाङ्गली हलिनि स्त्रियां नारिकेले पुताप्रभे ।

लावश्छेत्त्ययुत्तरत्र त्रिर्द्वे लावाख्यपक्षिणि ।
लावणी स्त्री नृत्यगीतभिदोलवणयोगिनि ॥४८६४॥
लवण यस्य पण्य त्रिस्तत्र लावणिको मत ।
[क्लीबे लावणिक प्रोक्तम्पात्रे च लवणस्य तु ॥४८६५॥
लास स्यान्नर्त्तने पुसि मांसरूपे तथा मत ।
स्त्री लासिका स्यान्नर्त्तक्यां त्रिषु स्याल्लसितर्यपि ॥४८६६॥
लासको ना शिवे वेष्टे न स्त्री स्यादायुधान्तरे ।
द्व मयूरे दृश्यकाव्यविशेषे लासिका स्त्रियाम् ॥४८६७॥
लासिका लासकी नर्त्तक्यामङ्गे लासक नपि ।
लास्य तौर्यत्रिके नृत्ये लास्या द्वे नृत्यकारिणि ॥४८६८॥
लि क्लमेऽन्ते क्षये साम्ये कङ्कणेऽपि पुमान्मत ।
लिकुचो लकुचे पुसि लिकुच फलभक्षणे ॥४८६९॥
लिक्ष लिक्षोऽपि लिक्षा च यूका डे मानभिद्यपि ।
लिखिर्ना लिखनौ द्वे तु शिल्पिनि त्रिस्तु पण्डिते ॥४८ ॥
लिखित कृतलेखादौ लिखित स्मृतिकृद्विदि ।
लिगुर्गोत्रान्तरे मन्त्रे द्वारभूमिप्रदेशयो ॥४८ १॥
ना द्वयोस्तु मृगे क्ली तु हृदये लिगु कीर्त्तितम् ।
लिङ्ग बुद्ध्यादिसहत्यां सांख्यानां प्रकृतावपि ॥४८ २॥
स्त्रीपुसादेश्च सस्थाने शरीरे चिह्नशेफसो ।
प्रत्याख्यायामवयवे वेषे बुद्ध्यनुमानयो ॥४८ ३॥
शिवमूर्त्तिविशेषेपि पुराणे लिङ्गनामके ।
लिङ्गकस्तु कपित्थ स्याल्लिङ्गिकाभेषजान्तरे ॥४८ ४॥
लिङ्गज स्याच्छिश्नमले लिङ्गजा भेषजान्तरे ।
लिङ्गी परशुरामे ना लिङ्गयव्यक्ते नपुसकम् ॥४८ ५॥
लिङ्गिन केपि शैवा स्युर्लिङ्गिनी भेषजान्तरे ।
लिङ्गुर्गोत्रान्तरे मस्तौ चित्तेऽपि च पुमान्मत ॥४८ ६॥

---

१ मृगे चय लिगु पुसि स्त्रियां च परिकीर्त्तित ।

चित्रकारे लिपिकरो लेखकेऽपि च वाच्यवत् ।
लिप्त क्ली भोजने लेपे त्रिस्तु दिग्धे विषादिना ॥४८ ॥
भुक्तेऽपि लिप्सा तु स्त्रीत्वे मता षष्टितमांशके ।
लिम्पाको गर्दभे द्वे स्याज्जम्बीरे तु मत पुमान् ॥४८ ८॥
ली श्लषणे च चपले स्त्रीत्व एव प्रकीत्तिता ।
लीलाविलासे क्रीडायां छन्दोभिद्योगिनीभिदो ॥४८७९॥
शृङ्गारभावचेष्टायाम् (अपि स्त्रीत्वे प्रकीर्त्तिता) ।
लीलाखेलस्त्रि सलीले क्ली तु छन्दोभिदि स्मृतम् ॥४८८ ॥
लीलावान्सविलासे त्रि स्त्रिया लीलावती मता ।
दुर्गायाम्भास्कराचार्यपाटीगणितपुस्तके ॥४८८१॥
लुञ्चको लुञ्चनकृति त्रिर्ना धान्यान्तरे मत ।
लुण्टाकस्त्रिषु चोरे स्याद्द्वयो काके प्रकीर्त्तित ॥४८८२॥
लुण्ठन दस्युकार्ये क्ली लुञ्चने लुठनेऽपि च ।
लुण्ठाकस्त्रिषु चोरेऽथ काके स्त्रीपुसयोर्मत ॥४८८३॥
लुण्डी तु लुण्डिकायां च निगमेऽपि स्त्रियाम्मता ।
लुप्तु लोपेऽपि लुप्ते तु लुप्स्यादेषोऽभिधेयवत् ॥४८८४॥
लुब्धो व्याधे पुमांस्त्रिस्तु कदर्येच्छावतोरयम् ।
लुब्धकस्तु मतो व्याधे तथार्द्रायामपीष्यते ॥४८८५॥
लुम्बिका भक्ष्यभेदेष्युलुम्बारण्ये वाद्यभिद्यपि ।
स्यास्त्रिषु स्वदनारण्यस्य लुब्धनस्य च कर्त्तरि ॥४८८६॥
लुशभो मत्तकरिणि लुशभ तु वने स्मृतम् ।
अथ लूनश्च विच्छिन्ने वाच्यवत्परिकीर्त्तित ॥४८८७॥
लूता चर्मगदेऽप्यूर्णनाभे चापि पिपीलके ।
लूतो मर्कटके पुत्रीनवमालिकयो स्त्रियाम् ॥४८८८॥
लूनश्छिन्ने त्रिषु प्रोक्तो लून पुच्छे नपुसकम् ।
लूनको द्वे पशौ प्रोक्तो भेदिते वाच्यवन्मत ॥४८८९॥
लूनिश्छेदे स्त्रियामुक्ता तथा शालौ प्रकीर्त्तिता ।
लेखो देवे द्वयोर्ना तु लेख्ये चैव विलेखने ॥४८९ ॥

लेखा लिपौ कृत्रिमायां सख्याने राजिसीमयो ।
आभोगचूडाग्रशिखाकलास्वपि तथा स्त्रियाम् ॥४८९१॥
लेखन लिखतेरर्थे साधने लेखकर्मण ।
लिपिन्यासे छदने च भूर्जे चापि नपुसकम् ॥४८९२॥
लेखनिक कथितो लेखहारके पुस्त्रियोरयम् ।
लेखेषु परहस्तेन स्वहस्तस्य च लेखके ॥४८९३॥
लेखनी तूलिकायां स्त्री त्रिस्तु लेखनसाधने ।
लेख्य नपुसक पत्रे सख्याया लिखिताक्षरे ॥४८९४॥
लेख्यो लेखयितव्ये च लेखितव्येऽपि च त्रिषु ।
लेख्यपत्रो मतस्ताले लेखपत्रे पुननपि ॥४८९५॥
लेढा तु मृदुवाते ना लेहके तु त्रिषु स्मृत ।
लेपस्तु भोजने लिप्तिक्रियायां रोगभिद्यपि ॥४८९६॥
लेपन चन्दनादौ च मांसेऽपि रुधिरे नपि ।
ना तु लिप्तिक्रियाया स्यात् त्रि तु त साधने मतम् ॥४८९७॥
लेप्य तु लेपनीये त्रि क्लीब स्यात्पुस्तकर्मणि ।
लेयस्तु सिंहराशौ ना स्यादादेये तु भेद्यवत् ॥४८९८॥
लेलिह कृमिभेदेऽपि सर्पे चापि द्वयोर्मत ।
लेलिहा तु स्त्रियामेषाऽङ्गुलिमुद्रान्तरे मता ॥४८९९॥
लेलिहानस्तु सर्पे द्व शिवे ना रेरिहाणवत् ।
लेलिहाना स्त्रियामेषाऽङ्गुलिमुद्रान्तरे मता ॥४९ ॥
मुहुर्लेढरि तु त्रिन्वे लेलिहान प्रकीर्त्तित ।
लेश कलाद्वयमिते काले सूक्ष्मांश एव च ॥४९ १॥
गीतभेदे कणायाश्च नाट्यालङ्करणान्तरे ।
लेहस्तु लेहने [पुसि तथा लेहनकर्मणि] ॥४९ २॥
लेहनस्तु शुनि द्वे स्यान्चौर्यग्रासिनि तु त्रिषु ।
सौवचलद्रवे वस्त्री लोहिते जारणाह्वये ॥४९ ३॥
तथा लेह्यते कर्मभूते स्याल्लेढिकर्त्तरि ।
लेही त्वेषा स्त्रियां कणशष्कुलीरोगभिद्यपि ॥४९ ४॥

लेह्य निर्लेहनीये स्यादमृते तु नपुसकम् ।
लैङ्ग पुराणभेदे क्ली लङ्गी स्याद्धषजा तगे ॥४९ ५॥
लेलिहानो द्वयो सर्पे मुहुर्लेहरि तु त्रिषु ।
लोको जने च स्थाने च निष्टप सामाभद्यपि ॥४९ ६॥
लोककर्त्ता पुमा‍न्विष्णौ शिवे ब्रह्मणि चष्यते ।
लोककान्ताषधभिदि लोककान्तो जनप्रिये ॥४९ ॥
लोककृत् स्थानकृल्लोकस्त्वष्टा वा परिकीर्त्तित ।
लोकनाथो ब्रह्मविष्णुशिवबुद्धनृपेष्वपि ॥४९ ८॥
रसान्तरे तथैवावलोकितेश्वर उ यते ।
लोकपालस्तु शुक्रादौ राजन्यपि पुमा मत ॥४९ ९॥
लोकब धु शिवे चैव सूर्ये चापि पुमा मत ।
लोकमाता तु दुर्गायां लक्ष्म्या चैव प्रकीर्त्तिता ॥४९१ ॥
लोकम्पृणो लोकसुख त्रि स्त्री स्यादिष्टका तरे ।
अथ लोकविसग स्या प्रलये [वा यवत्यपि] ॥४९११॥
लोकेशो ब्रह्मणि तथा पारदेऽपि पुमा मत ।
लोचको मासपिण्डेऽक्षितारकाया च क जले ॥४९१२॥
ललाटाभरणे स्त्रीणा कदली नीलवस्त्रयो ।
नीलि यां कणपूरे च मौ यां भ्रश्लथचर्मणि ॥४९१३॥
रक्ताशुके चर्मणि च स्नुचि स्यात्सपक चुके ।
अथ निबुद्धिदुबुद्ध्योर्लोचितर्यपि वाच्यवत् ॥४९१४॥
लोचिका तु स्त्रियामेषा शष्कुल्यां परिकीर्त्तिता ।
लोचन त्वक्षणि क्लीब पश्यत्यर्थे तु सा न ना ॥४९१५॥
लोचन लोचना स्त्री तु विचारोक्तौ च लोचना ।
लोचनीति पुन स्त्रीत्वे भेषजा तर इष्यते ॥४९१६॥
लोट उ मादरोगस्स्यात्तथा लोटाम्लवास्तुके ।
लोटना स्त्री सानुसारवाचि क्ली तु विलोटने ॥४९१ ॥
लोणिका च बृहल्लोण्यां घोटिकायाम्प्रकीर्त्तिता ।
लोतोऽश्रुचिह्नयोर्लोत लोप्त्रारण्ये मुषिते धने ॥४९१८॥

लोधो लोध्रे द्वे तु जन्तुभेदे लुब्धे निसायण ।
लोपस्तु छेदने पुंसि तथा वर्णाद्यदर्शने ॥४९१९॥
लोपा शुकान्तरे लोपामुद्रायां च प्रकीर्तिता ।
लोप्ता निर्लोपके लोप्त्री चोरीते च धने स्मृता ॥४९२ ॥
लोभनं तु सुवर्णे च लोभे चापि नपुंसकम् ।
अथ लोभयतेरर्थे लोभनं लोभना न ना ॥४९२१॥
लोभ्यो मुद्गेऽप्यारकूटे लोभ्य त्रिर्लोभनीयके ।
लोम क्लीब तनुरुहे सामभेदे तथा मतम् ॥४९२२॥
लोमशो मुनिभेदे ना तथा स्याद्भेषजान्तरे ।
लोमशा तु स्त्रियां काकजङ्घामांसीवचासु च ॥४९२३॥
शूकशिम्बिमहामेदाकाकोलीकर्कटीषु च ।
काशीशे शालिनीभेदे लोपाख्यां च प्रकीर्त्तिता ॥४९२४॥
द्वे तु मेषे त्रि सलोम्नि क्ली तु छन्दोन्तरे मतम् ।
क्ली लोमहर्षण रोमाञ्चेऽथ सूतमुनौ पुमान ॥४९२५॥
रोमाञ्चजनके तु त्रिर्लोमहर्षण उच्यते ।
लोलश्चले सतृष्णे त्रिर्लोला जिह्वाश्रियो स्त्रियाम् ॥४९२६॥
दाक्षायण्यामुपलावर्त्तकस्यायां च विद्युति ।
मधुदैत्यजनन्यां च छन्दोभिद्योगिनीभिदो ॥४९ ॥
लोलस्तु पुंसि मेढ्रे स्याल्लोली सङ्गीतभिद्यपि ।
लोलुपस्त्रिषु लुब्धे स्याल्लोलुपा योगिनीभिदि ॥४९२८॥
लोष्टोऽस्त्री लेष्टुके सीम्नि लोष्टं क्लीबमयोमले ।
लोहोऽस्त्री मरिचस्वर्णागुर्वंयसु च तैजसे ॥४९२९॥
द्वयो पक्ष्यन्तरे रक्तच्छागे रक्ते तु वाच्यवत् ।
लोहजं कांस्यलोहे क्ली भेधव लोहसम्भवे ॥४९३ ॥
लोहद्रावी तु योगार्थे स तु स्यात्पुंसि टङ्कणे ।
लोहपृष्ठो द्वयो कङ्के चरक प्रतुदान्तरे ॥४९३१॥
लोहलोऽस्फुटवाचि त्रि शृङ्खलाधार्य एष ना ।
स्याल्लोहसङ्करो लोहमिश्रणे क्ल्युत्तमायसे ॥४९३२॥

---

१ लोमशो मुनिभेदे ना मेषे द्वे लोमशास्त्रिषु ।
लोम स्मिते स्त्रियां काकजङ्घामांसीवचासु च ।
शूकशिम्बिमहामेद काकोलीषु प्रकीर्त्तिता ॥

लोहायस ताम्रभवे त्रि क्ली तु ताम्रेण मिश्रित ।
लोहित तु मत ताम्रे कुङ्कुमे रक्तचन्दने ॥४९३३॥
रुधिरे रक्तगोशीर्षे पद्मरागमणावपि ।
अशुभ द्रायुधभिदि कदनेऽपि प्रकीत्तितम् ॥४९३४॥
रोहिताख्या तरे सपभदेऽपि हरिणा तरे ।
पुमास्तु रत्नभेदेऽपि रोगेऽप्यक्षिपुटादिनि ॥४९३५॥
रक्तशालावतस्या चाङ्गारके म स्यभिद्यपि ।
ब्रह्मपुत्रनदे वार्ध्य तरे दशा तरे तथा ॥४९३६॥
रक्तवर्णे त्रिस्तु तद्वत्यत्र रूपद्वय स्त्रियाम् ।
लोहिनी लोहिता चेति लोहिता तु स्त्रियामियम् ॥४९३ ॥
पुनर्नवायां रक्तायां स्तम्ने लज्जालुनामनि ।
पद्मरागे लोहितकोऽस्त्री त्रि कोपादिलोहिते ॥४९३८॥
तत्र स्त्रिया लोहितिका रूप लोहिनिकेति च ।
कांस्ये लोहितक क्लीब स्त्री तु लोहितिकामता ॥४९४९॥
रक्ताशया तरे कस्याञ्जनभपजभिद्यपि ।
लोहिते च दने न स्त्री प्रोक्तो लोहितच दन ॥४९४ ॥
कुङ्कुमे तु मत क्लीबमिद लोहितच दनम् ।
स्त्रीत्वे लोहितपुष्पी स्यात् पु तु दाडिमवृक्षके ॥४९४१॥
पुमाल्लोहितपुष्पोऽसौ दाडिमे परिकीर्त्तित ।
लोहिताक्ष सपभेदे कोकिलेऽपि द्वयोर्मत ॥४९४२॥
विष्णौ तु लोहितेऽप्यक्षे [त्रिर्नव् रक्ताशया तरे] ।
लोहिताक्षो मतो वह्नौ तथा शम्भावपि क्वचित् ॥४९४३॥
योगार्थे नकुले तु द्वे कथितो लोहितानन ।
लोहित्यो दक्षिणा धौ च शालिभिद्ब्रह्मपुत्रयो ॥४९४४॥
लौल्य क्लीब सतृष्णात्वे चाञ्चल्येऽपि प्रकीर्त्तितम् ।
लौह क्लीबमयस्युक्त लोहसम्ब धिनि त्रिषु ॥४९४५॥
लौहा तु लोहरचितपाकपात्रान्तरे मता ।
लौहित्य लोहितत्वे क्ली ब्रह्मपुत्रनदे पुमान् ॥४९४६॥

व

व सा वने च वाते च वरुणे वन्दने [शुभे] ।
[मन्त्रणे] वसतौ बाहौ वस्त्रेऽपि वरुणालये ॥४९४७॥
शार्दूले चैव शाल्के बलवत्यपि पुंसि च ।
व बीजे वरुणस्य स्यादिवार्थे तु तदव्ययम् ॥४९४८॥
वा स्त्री वयनहिंसेषु गमे ना त तुवायके ।
वंश पृष्ठास्थ्नि गेहोर्ध्वकाष्ठे वेणौ गणे कुले ॥४९४९॥
नासोर्ध्वास्थ्नीक्षुभेदे च शाले विंशतिहस्तके ।
रागभेदे तुगाक्षीर्यां विष्णौ वंश प्रकीर्त्तित ॥४९५ ॥
वंशकरि वक्षुवेण्वोऽस्थ्नोर्द्धे तु मत्स्यान्तरे मत ।
स्त्री वंशिका मुरल्या च वंशके त्वगुरौ न ना ॥४१५१॥
वंशज कुलजे त्रि स्याद्वंशबीजे पुमानयम् ।
वंशजा तु तुगाक्षीर्यां स्त्री वे क्लीबेऽपि च क्वचित् ॥४९५२॥
[वंशपत्र मत क्लीब हरिताले स्त्रियामपि ।
पुंसि मीनेक्षुभेदे च वंशपत्रक इष्यते] ॥४९५३॥
वंशर्णवस्तु चणकधान्ये ना त्रि तु यौगिके ।
वंशिकस्त्वध्वमाने ना दशस्तोमात्मके मत ॥४९५४॥
वंशिका वंशवाद्ये च वंशजालेऽपि च स्त्रियाम् ।
वंशिक मद्यवत्तुच्छे क्लीब त्वगुरुणि स्मृतम् ॥४९५५॥
वंशि तु दैर्घ्यमाने तुगाक्षीरीवीणयोरपि ।
रक्ताशये चतु कषमाने चापि स्त्रियां मता ॥४९५६॥
वंश्यां कुस्तुम्बुरीसञ्ज्ञधान्ये स्त्री वंशजे त्रिषु ।
वक्तव्य कुत्सिते नीचे वाच्येऽधीने तथा त्रिषु ॥४९५ ॥
वक्तव्यवाक्ये वक्तव्यपुरुषे च तथा मत ।
वक्ता तु पण्डितेऽपि स्याद् वाग्मिन्यप्यन्यलिङ्गक ॥४९५८॥
वक्त्रोऽस्त्री स्यान्मुखेऽनुष्टुप्छन्दो वृत्तान्तरेषु च ।
वस्त्रभेदेऽपि तगरमूलेऽपि परिकीर्त्तितः ॥४९५९॥

वक्रो विष्णौ शनावङ्गारके पपटभेषज ।
रुद्रे वाणासुरे पुसि तगरे तु नपुसकम् ॥४९६ ॥
वक्रा वीणान्तरे चापि कुटिलक्रयोस्त्रिपु ।
वक्रकण्टस्तु बदरे खदिरेऽपि मत पुमान ॥४९६१॥
वक्रतुण्डो गणश ना शुके स्त्रीपुसयोर्मत ।
वक्रदष्ो वराहे द्वे योगार्थे तु त्रिपु स्मृत ॥४९६ ॥
वक्रद तो [वराहे स्याद] द तवक्र नृप तु ना ।
वक्रनक्रस्तु पिशुने तथैव शुकपक्षिणि ॥४९६३॥
वक्रपुष्पो बकागस्त्यपलाशतरुषु स्मृत ।
वक्रश या कुटुम्बि या गुञ्जायाञ्च प्रकीत्तिता ॥४९६४॥
वक्रि पशुसमास्थेऽस्थि पाश्वस्य स्त्री पुमा पुन ।
दिवसे त्रिस्तु कुटिल श यके तु द्वयोरयम् ॥४९६५॥
वक्षणा वक्षसि तथा तदादावपि कीर्त्तिता ।
वक्षा पुल्लिङ्ग उक्षिण स्याद्वक्ष क्लीबमुरस्थले ॥४९६६॥
वग्नु पुमा स्याद्वचने वाचाले त्वभिधेयवत् ।
वङ्का पर्याणभागे द्वे ना नदीपात्रभङ्गुरे ॥४९६ ॥
वङ्क्विर्वाद्यावशषे स्त्री कण्टके तु पुमान् मत ।
वङ्कुमुनिविशेषे ना वङ्क्तरि वभिधेयवत् ॥४९६८॥
वङ्गा पौरस्त्यजनपदा तरे तज्जनेषु च ।
नृभूम्नि ना तु वङ्ग स्याद्दक्षे वृक्षान्तरेऽप्यथ ॥४९६९॥
न स्त्री वृ ताककार्पास्यो क्ली सीसे यशदेऽपि च ।
गतौ तु वङ्गो वङ्गा च पुसि स्त्रीत्वे तथा भवेत् ॥४९७ ॥
वच कीरे द्वयो स्त्री तु शारिकौषधयोर्वचा ।
पुमास करण सूर्ये चापि केचिद्द्वय विदु ॥४९ १॥
वचक्नु श्रोत्रिये पुसि तथाचार्ये प्रकीर्त्तित ।
त्रिषु वाग्मिनि विप्रे तु वचक्नु कीर्त्तितो द्वयो ॥४९७२॥
वचण्डा च वचण्डी च छुरिका सारिकाऽनयो ।
वचन वाक्य उक्तौ च सरयाशुण्ठयोस्तथेष्यते ॥४९ ३॥

वचनीय तु वाक्येऽपि तथा दोषे नपुसकम् ।
वचर कुक्कुटे द्व स्याच्छठे पुलिङ्ग इष्यत ॥४९ ४॥
वचलुस्तु पुमा व्रतेऽपराधेऽप प्रकीर्त्तित ।
वचिस्तु वचधातौ ना वचने तु स्त्रियाम्भवेत् ॥४९ ५॥
वचुष्यो वक्तरि त्रि स्यान्नकुले तु द्वयोर्मत ।
वज्रोऽस्त्री कुलिश शस्त्रेऽप्यशनौ मणिवेधके ॥४९ ६॥
हीरकेऽभ्रकभेदेऽपि चासने यस्य लक्षणम् ।
जङ्घे पद्मासनावस्थ त सघिनिहितौ करौ ॥४९ ॥
ताभ्यामेव स्थितौ भूमाव तरिक्षासन च तत् ।
व्रतभदे च गोमूत्रे दम्भे यावकजीवने ॥४९ ८॥
वज्र स्याद्बालके धा या योगयज्ञभिदोस्तु ना ।
वज्रा स्नुह्या गुडू या च वज्री दुर्गास्नुहीभिदो ॥४९ ९॥
वाग्वज्रेऽपि च श येऽपि ग्रहस्थि य तरेऽप च ।
तिलपुष्पे श्वेतकुशे कोकिलाक्षे च निष्ठुरे ॥४९८ ॥
स्नुह्या च कोकिलाक्षे च पुमा स्याद्वज्रकण्टक ।
वज्रतुण्डो द्वयोर्गृध्रे दशेऽपि गरुडे तु ना ॥४९८१॥
वज्रदन्त सूकरेऽपि मूषिकेऽपि द्वयोर्मत ।
शतपुष्प्यां वज्रपुष्पा स्त्री क्ली तु तिलपुष्पके ॥४९८२॥
वज्रवृक्ष पत्रहीनस्नुहीद्रो ना क्वचि मत ।
वज्रशल्य श यके द्वे वज्रश याषधा तरे ॥४९८३॥
वज्रहस्त पुमानि द्रे वज्रहस्ता सामद्भिदि ।
वज्राङ्गस्तु द्वयो सर्पे वज्राङ्गी च गवेधुका ॥४९८४॥
वज्री तु वज्रयुक्त त्रि पुमानिद्र तथागते ।
ग (र) ति लक्षणमप्युक्त यस्य नामा तर तथा ॥४९८५॥
वज्री द्रबुद्धयो पुसि स्यात् विश्वेदेवा तरेऽपि च ।
वज्रिणी तु स्त्रियामिष्टका तरे परिकीर्त्तिता ॥४९८६॥
वञ्चकस्तु खले चापि धूर्त्ते वाच्यवदिष्यते ।
द्वयोस्तु गृहबभ्रौ च जम्बुके चापि वञ्चक ॥४९८ ॥

---

१ हेरम्बे वा ।

वञ्चितो विप्रलब्धे त्रिवाञ्चता नायिकाभिदि ।
वञ्चुथ कोकिले कारौ द्वे ना दम्भऽध्वकालयो ॥४९८८॥
वञ्जुलस्तिमिशेऽशोके वेतसेऽपि मत पुमान् ।
वञ्जुलस्तिमिशेऽशोके वेतसेऽथापगा तरे ॥४९८९॥
द्वे स्त्री गवि सुदाह्याया न क्ली नदनदीभदो ।
वटो न्यग्रोधवृक्षेऽपूपा तरे ग धके पुमान् ॥४९९ ॥
साम्ये चाथ द्वे कपर्दे पक्षिभेद तथा वटी ।
वेणुकीवैश्यजे चाथ स्त्री क्रीडागुटिकाथिका ॥४९९१॥
वृक्षान्तरेऽप गाढाया र जो तु स्याद्वटी त्रिषु ।
वटक पुसि मानस्य भदे स्यादष्टमापके ॥४९९२॥
वटिका तु स्त्रिया क्रीडागुटिका गुलिकाऽथका ।
वटपत्रस्तु तुलसीभेदे शुक्ले पुमा मत ॥४९९३॥
वटपत्रा पुन स्त्रीत्वे कीत्तिता मल्लिकान्तरे ।
वटपत्री त्विरावत्या स्त्रीत्व एव प्रकीर्त्तिता ॥४९९४॥
वटम्बस्तृणपुञ्जे च शैले च परिकीर्त्तित ।
वटर कुक्कुरे वस्त्रे शठे त्रिश्चौरचञ्चले ॥४९९५॥
वटिरुद्दहिकाशूननाम्यो कल्केऽपि च स्त्रियाम् ।
पुमांस्तु वटतौ धातौ वेष्टनार्थे वटि स्मृत ॥४९९६॥
वटी तु रज्जुके नान्तो कत्तु लेऽप्यभिधेयवत् ।
चतुरङ्गादिगुलिकार्थे तु पुसि वटी स्मृत ॥४९९ ॥
वठरस्तु शठ स्थूले मन्दे वक्रेऽपि च त्रिपु ।
अथाम्बष्ठ शब्दकारे वर्षे च वठर पुमान् ॥४९९८॥
स्त्रिया तु वडवाऽश्वाया कुम्भदास्या द्विजस्त्रियाम् ।
कामतन्त्रप्रसिद्धे स्त्रीभदे तत्र तु ना वृषे ॥४९९९॥
गाव पुमास यस्तमारोहन्ति यियप्सव ।
वडवामुखमश्वाया मुखे क्ली च रसातले ॥५ ॥
वडवामुख इत्येष पुमा स्यादौवपावके ।
वणिक्पथस्तुलाराशौ वणिग्वर्त्मनि चेष्यते ॥५ १॥

वणिक्कर्मणि केषाञ्चित् वणि यपि पुमा मत ।
वणिक स्त्रियां वणि यायां क्रयविक्रयिके त्रिषु ॥५ २॥
तुलाराशौ तु करणभेदे ना वणिजो वणिक ।
वण्टो भागे दात्रमुष्टावथो विभजने द्वयो ॥५ ३॥
वण्टालो युद्धभेदे च नौकायां च खनित्रके ।
वण्ठ स्यादकृतोद्वाहे खर्वे कु तायुधेऽपि च ॥५ ४॥
वण्ठरस्तु स्तने तालाङ्कुरे मेघे श्वपुच्छके ।
करीरकोशे स्थगिकार जौ द्व ना तु कुक्कुरे ॥५ ५॥
वण्डो ना मृतभार्येऽथाभिनिविष्ट त्रिषु स्मृत ।
अ पे दुश्चर्मणि तथा छिन्नपुच्छपशावपि ॥५ ६॥
वण्ड निष्कुषित वच्यप्रशिश्ने शिश्नमात्रके ।
वण्डाल शूरयोर्युद्ध नौकायां च खनित्रके ॥५ ॥
वतस शेखरे कर्णपूरे वीतसके क्वचित् ।
वतामन्त्रणस तोषखेदानुक्रोशविस्मये ॥५ ८॥
वतूर्देवनदीसत्यवाक्पथ्यक्षिरुजि स्त्रियाम् ।
वत्स सवत्सरे वृक्षभेदे कुटजसञ्ज्ञके ॥५ ९॥
ऋषिभेदे च तद्वश्यपुरुषेषु तु भूमनि ।
फले तु कुटजस्य क्ली द्वे तु तर्णकसञ्ज्ञके ॥५ १ ॥
गोमहिष्यादिपोतेऽपि बालेऽपि तनयादिके ।
वर्षे तु वाच्यवद्वत्सो न तु स्त्री वक्षसि स्मृत ॥५ ११॥
व सको व सवा येऽथ पीततुत्थे नपुसकम् ।
तथैव वत्सनाभेऽपि वत्सक क्लीबमिष्यते ॥५ १२॥
वत्सनाभो वृक्षभेदे विषभेदेऽपि दृश्यते ।
वत्सरस्तु पुमान्वर्षे पञ्चषान्यतमेऽपि च ॥५ १३॥
वत्सलो हरिणादौ द्वे त्रिषु प्रेमवति स्मृतः ।
गवि सा वत्सकामाया वत्सला स्त्रीत्व इष्यते ॥५ १४॥
पुमांस्तु रसभेदेऽपि तृणाग्नावपि वत्सल ।
व सादनी गुडूच्यां स्त्री द्वयोस्तु वृक इष्यते ॥५ १५॥

वदो वक्तर्यपि त्रि स्या मगवेदादिम पुमान् ।
वदन स्या मुखऽ युक्तावग्रेऽपि शिखरेऽपि च ॥५ १६॥
वदा यो व गुवाचि स्यात्त्रिषु वाग्मिनि दातरि ।
सहस्रदंष्ट्रे पाठीने वदालो मत्स्ययोद्वयो ॥५ १ ॥
वधो ना हनने वज्र बले त्रिषु तु हिंसके ।
वधस्तु हनने वज्रे बलेऽपि गुणनेऽपि च ॥५ १८॥
वधा तु स्त्री कलम्यारयजलशाके प्रकीर्त्तिता ।
वधक पद्मबीजे क्ली ना याधौ त्रि तु घातके ॥५ १९॥
वधत्रमायुधे त तुवायदण्डे च कीर्त्तितम् ।
शूरे धवयिमर्मारये क दके च नपुसकम् ॥५ ॥
वधिको घातके त्रि स्या कस्तूर्यां क्लीबमिष्यते ।
वधू स्त्री शारि [वायाञ्च नदीपूवजभार्ययो] ॥५ २१॥
स्नुषाशटीनवोढासु चाणस्पृक्काङ्गनासु च ।
वधूटी तु नवोढायां पुत्रपत्न्या तथष्यते ॥५ २॥
वध्यस्तु हननीये त्रिर्वध्या हत्या प्रकीत्तिता ।
वध्री वध्र वरत्रायां नपि त्रपुणि कीर्त्तितम् ॥५ ३॥
वध्रिका तु वरत्राया वत्रिक स्यान्नपुसके ।
वन यज्ञे जलेऽरण्ये गहनेऽशौ धने मुदि ॥५ २४॥
काष्ठ मुस्ते निवासे च वनी स्त्री गहने मता ।
वनकन्दस्तु धरणीकन्देऽपि वनशूरणे ॥५ २५॥
अगुरौ देवदारौ च वनचन्दनमिष्यते ।
वनजो द्वे गजे ना तु मुस्तेऽपि वनशूरणे ॥५ २६॥
जम्बीरेऽपि च धा याके वनजा तु वनार्द्रके ।
अश्वग धाहरिद्राभिद्वनकार्पासिकासु च ॥५ २ ॥
मुद्गपर्ण्यां लताभेदे क्ली कसोत्पलपद्मयो ।
वनतिक्तो हरीतक्यां वनतिक्ता पुनस्स्त्रियाम् ॥५ २८॥
वनद्रुमस्त्वगुरुणि वनस्थविटपिन्यपि ।
वनप्रिय कोकिले द्वे तथैव हरिणान्तरे ॥५ २९॥

वनमाली हरौ तालभेदे स्त्री वनमालिनी ।
वराह्यां द्वारकापुर्यामपि चैव प्रकीर्त्तिता ॥५ ३ ॥
वनवासी तु काके द्व नृभूम्नि वनवासिन ।
दाक्षिणात्येषु देशेषु केषुचित्परिकीर्त्तित ॥५ ३१॥
पुमांस्तु वानप्रस्थ स्याद्वनवस्तरि च त्रिषु ।
वनश्वा गन्धमार्जारे द्वे याघ्रे जम्बुकेऽपि च ॥५ ३२॥
वनस्थो द्व वनगजे हरिणेऽप्यथ च स्त्रियाम् ।
वनस्थाऽत्यम्लपर्ण्याञ्च क्षुद्राश्वत्थे तथा मता ॥५ ३३॥
वनस्पतिर्ना द्रुमात्रे विनापुष्प फलिद्रुमे ।
सोमे वटे पाटले च धृतपृष्ठस्य चा मज ॥५ ३४॥
वनहासस्तु काशेऽपि तथा स्या मल्लिकान्तरे ।
वनायवो जनपद्भेदे तद्वासिनृष्वपि ॥५ ३५॥
वनायुस्तु सुते पुंसि स्या पुरूरवस क्वचित् ।
वनि सनुनि चाग्नौ च याच्ञाया च पुमा मत ॥५ ३६॥
वनि स्त्रिया स्यादि छाया पुमा कामे वनिर्मत ।
वनतौ च वनोतौ च शकुनौ तु द्वयोर्मत ॥५ ३७॥
वनिता स्त्रीमात्रकेऽपि जातरागस्त्रियामपि ।
अथ प्रिये याचिते च सेवितेऽप्यभिधेयवत् ॥५ ३८॥
वनिष्ठुस्तु गुदे नाऽश्ने सम्भक्ते त्वभिधेयवत् ।
वनी वृक्षे मतौ मेघे सोमे त्रिष्वभिलाषिणि ॥५ ३९॥
वनोद्भवा मुद्गपर्ण्या वन्ये स्याद्बीजपूरके ।
वनदार्वासिफाया च योगे तु स्याद्यथायथम् ॥५ ४ ॥
वनौका वनवास्तन्ये त्रि द्वयोर्वानरे मत ।
वन्दकस्तु द्वयोवन्दावृक्षे ना श्रमणान्तरे ॥५ ४१॥
वन्दथस्तु पुमा स्तुत्ये तथा स्तोतरि कीर्त्तित ।
वन्दना तु न ना स्तुत्यामभिवादन एव च ॥५ ४२॥
वन्दनी नतिजीवातुवटीयाचनकर्मसु ।
वन्दनीयस्त्रिषु स्तुत्ये व दनीया तु भिक्षुकी ॥५ ४३॥

वन्दा वन्दाकवृक्षेऽपि भिक्षुक्या च स्त्रिया मता ।
वन्दारु स्तोतरि त्रि स्याद्वन्दारु क्ली स्तुतौ मतम् ॥५ ४४॥
वन्दि स्त्री प्रग्रहे ना तु वन्दतौ त्रि तु वन्दिनि ।
वन्दी त्रिस्तावके द्वे तु वैदेहे मागधेऽपि च ॥५ ४५॥
वन्दी तु निगृहीते स्यात्स्त्रीत्वे चैव प्रयुज्यते ।
वन्दीकस्तोरणस्तम्भे तथैव स्यात्पुरन्दरे ॥५ ४६॥
वन्द्यस्तुल्ये त्रि वन्द्या स्त्री भिक्षुकीवन्दयोर्मता ।
वन्ध्य त्रिर्निष्फले शून्ये वन्ध्या तु स्त्रीत्व इष्यते ॥५ ४ ॥
गन्धद्रव्यान्तरे गर्भधृत्ययोग्यस्त्रियामपि ।
वन्यस्तु पुंसि वेत्रे च धान्ये मर्कटकाह्वये ॥५ ४८॥
वनशूरणकन्देऽपि रक्तालौ ।
नवबौद्धोपासके तु द्वे वन्या तु जलाप्लवे ॥५ ४९॥
अरण्यान्यां तिक्तकोशातकी वन्यश्वगन्धयो ।
क्ली तु कसोत्पले वन्य वनसाधौ तु वाच्यवत् ॥५ ५ ॥
वन्य स्त्रिषु वनोद्भूते स्त्री वनाम्बुसमूहयो ।
वपन बीजानक्षेपे क्लीब स्यात् क्षौरकर्मणि ॥५ ५१॥
खरुकुट्यारयवपनशालायां वपनी स्त्रियाम् ।
वपनी तु स्त्रिया क्षौरशालायां परिकीर्त्तिता ॥५ ५२॥
वपा मेदसि रन्ध्रे च स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ।
वपु शरीरे लावण्ये दीप्तिप्रकृतिवारिषु ॥५ ५३॥
वप्ता पितरि ना त्रिमुण्डके व्रीह्यादिवापके ।
वप्रोऽस्त्री वास्तुभूक्षेत्ररोध प्राकारसानुषु ॥५ ५४॥
प्राकारमूले क्ली सीसे मञ्जिष्ठायां स्त्रियामथ ।
निष्ठुरे वनजे वाजिकायां पाटीर इष्यते ॥५ ५५॥
रेणौ चये पुंसि तटे जनके च प्रजापतौ ।
वप्रि समुद्रे क्षेत्रे ना दुर्गतौ तु स्त्रियां मता ॥५ ५६॥
वमथुर्वमने मेघे गजहस्तोत्थशीकरे । —
वमनोऽर्क्कोठवृक्षेऽपि भङ्गायां च पुमान्मत ॥५ ५७॥

वमनी तु जलौकाया कार्पास्यां योगिनीभिदि ।
अना तु छदने तद्वद्दनेऽप्याहुतावपि ॥५ ५८॥
नृजातिभेदे वमना नृबहुत्वे प्रकीर्त्तिता ।
वमिर्नाऽग्नौ च धत्तूरे वा तौ स्त्री वमतौ तु ना ॥५ ५९॥
वम्र पुंस्युषिभेदे स्याद्धूमवणप्रभेदयो ।
उपदीका जातिमात्रे वम्रो वम्री च नृस्त्रियो ॥५ ६ ॥
वयो धनेऽन्ने बाल्यादौ वत्सरे जीविते खगे ।
जातौ च यौवने चैव सा त क्लीबमुदीरितम् ॥५ ६१॥
वयस्यस्तरुणे त्रि द्वे मित्रे ब्राह्मयां पुन स्त्रियाम् ।
काकोलीक्षीरकाकोल्यत्यम्लपर्णीगुडूचिषु च ॥५ ६२॥
सूक्ष्मैलाया हरीतक्यां वयस्या परिकीर्त्तिता ।
वया स्त्री तरुशाखाया ना तु गत्यशनादिषु ॥५ ६३॥
वयुन मन्दिरे शस्ते वैदुष्येऽपि मखे तु ना ।
वयुना कान्तिबुद्धयो स्त्री द्वे तु स्याद्देवविप्रयो ॥५ ६४॥
वयोधास्तु द्वयोर्यूनि वयसो धातरि त्रिषु ।
आकारान्तोऽपिदृशेऽर्थे तु वयोधा परिकीर्त्तित ॥५ ६५॥
वरो ना भूपजामात्रोर्देवादेरीप्सिते क्रुधि ।
सभक्तौ चानिरोधे च वृञ्वृञोर्भाववाचक ॥५ ६६॥
विडेऽपि वरटाख्येऽपि धान्यभेदे प्रकीर्त्तित ।
यवक्षारे तुरुष्काख्यनिर्यासे मारिषा तरे ॥५ ६७॥
लतामारिष इत्युक्त चटके तु द्वयोरयम् ।
अथोत्तरेषु षटसु क्ली तक्कोले कुङ्कुमेऽपि च ॥५ ६८॥
गुग्गुलौ हरिताले च महोदर्याख्यमुस्तके ।
वन्तु लाकाररचितवह्निकुण्डेऽप्यथ स्त्रियाम् ॥५ ६९॥
विडङ्गेऽपि गुडूच्यां च ब्राह्मीरेणुकयोरपि ।
पाठायाञ्च नदीभेदे पार्वत्यामपि कीर्त्तिता ॥५ ॥
पथ्यागुञ्जाहरिद्रासु दूर्वादारुहरिद्रयो ।
आस्फोताकण्टकार्योश्च वरापि स्यात्फलत्रिके ॥५ १॥

शरपर्णीमुद्गपर्ण्यो शालिभेदेऽपि पर्पटे ।
अस्त्रिया तु द्विखण्डाख्ये मत प्रावरणा तरे ॥५ २॥
क्लीबमेव मनागिष्टऽ यय वा थो तमे त्रिपु ।
वरक स्या पटगृहे वस्त्रेऽपि च नपुसकम् ॥५ ३॥
वरको वनमुद्गे ना रूक्षणाख्ये च कोद्रवे ।
भाग्यां वराटिकातु यधान्ये च वरकाष्ठका ॥५ ४॥
देवदारुणि कालेयेऽपि प्रोक्त वरच दनम् ।
वरटो धा यभेदे कुसुम्भबीजाख्ययोदिते ॥५ ७५॥
वरटाऽप्यथ हसस्य योषाया तु स्त्रियाम् मता ।
वरटा वरटी चेति सविषे शलभान्तरे ॥५ ७६॥
नृजातिभदे वरटा म लीपुष्पे नपुसकम् ।
वरणस्तु पुमास्तिक्तशाकप्राकारयोरपि ॥५ ॥
अथावृतौ च सम्भक्तौ क यादिवरणे नपि ।
वरणा स्यान्नदीभेदे काशीस्थ वरुणाऽपि च ॥५ ८॥
वरण्ड पुम्बलाख्ये स्या मुखरोगे च स ह्यना ।
प्राकारेऽप्य तरावेदौ तृणकाष्ठादिभारके ॥५ ९॥
वडिशे स्यसिपुत्र्याश्च रज्जुशारिकयोरपि ।
स्त्रिया वरतनुश्चारुनार्यां छन्दोऽन्तरेऽपि च ॥५ ८ ॥
वरतिक्तस्तु कुटजे स्या निम्बे पर्पटेऽपि च ।
वरतिक्ता तु पाठाया सैव स्याद्वरतिक्तिका ॥५ ८१॥
वरत्रा तु स्त्रिया वर्त्रा तथा स्याद्वध्रिकक्षयो ।
वरदस्तु प्रस नेऽपि वा यवत्स्यात्समर्थके ॥५ ८२॥
नृजातिभेदे वरदा क याया वरदा मता ।
त्रिपर्ण्यामपि रक्तालौ वरत तो कुलस्य च ॥५ ८३॥
देव्यां योगि यन्तरे च मध्यदेशे नदीभिदि ।
वरपोतो द्वे हरिणे शाकभेदे नपुसकम् ॥५ ८४॥
वरप्रदो विधौ लोपामुद्रायां तु वरप्रदा ।
धवे वरयिता पुसि त्रि स्याद्वरयतेस्तृचि ॥५ ८५॥

कात्यायने वररुचि कोषकारे कवौ शिवे ।
वरलो वरला चापि गन्धोलीहंसयोषितो ॥५ ८६॥
वरलन्धश्चम्पकेऽपि काञ्चीभेदे पुमान्मत ।
वरवर्णिन्यस्तु लाक्षाहरिद्रारोचनासु च ॥५ ८ ॥
स्त्रीरत्ने च फलिन्यां च साधीयस्यामपि स्त्रियाम् ।
दुर्गायामपि लक्ष्म्याञ्च सरस्वत्यामपीष्यते ॥५ ८८॥
वराक शङ्करे पुसि हिंसायां भेषजान्तरे ।
शोचनीये पुनरय स्याद्वराकोऽभिधेयवत् ॥५ ८९॥
वराङ्ग योनिमातङ्गमस्तकेषु गुडे त्वचि ।
हस्ते चोचारत्यौषधौ ना विष्णौ नाक्षत्रवत्सरे ॥५ ९ ॥
चतुर्विंशतिसयुक्तवासरत्रिशतीमिते ।
वराङ्गा तु चतुर्वषसुरभौ परिकीर्त्तिता ॥५ ९१॥
वराङ्गी तु हरिद्राया शाकाम्ले तु प्रकीर्त्तिता ।
वराङ्गना श्रेष्ठनार्यां तथा तालीद्रुमेऽस्त्रियाम् ॥५ ९२॥
वराटो बीजकोशे नाऽब्जस्य स्याद्रज्जुनीचयो ।
खड्गभेदेऽपि चैरण्डबीजाभपुलकावली ॥५ ९३॥
कपर्देऽपि वराटी तु रागभदे प्रकीर्त्तिता ।
वराटको द्वे कपर्देऽब्जबीजकोशे त्रि सेवके ॥५ ९४॥
स्याद्वराणस्तु शक्रेऽपि वात्स्यायनमुनावपि ।
वराणक पुमानुक्तो वात्स्यायनमुनावयम् ॥५ ९५॥
द्वयोवराणक प्रोक्तस्तीवरीडोम्बयो सुते ।
वराणसो वराणीये त्रि काश्या तु वराणसी ॥५ ९६॥
तथैव च नदीभेदे स्त्रीत्व एव प्रकीर्त्तित ।
वरारोहा श्रेष्ठनार्यां महोदर्यारत्यमुस्तके ॥५ ९ ॥
मल्लिकाया विशेषे च देवमल्लीति विश्रुते ।
सोमेश्वरस्थदाक्षायण्या रम्ये च नितम्बके ॥५ ९८॥
अथ विष्णौ गजारोहे नोत्तमारोहिणि त्रिषु ।
वरालः सितपिङ्गाभवर्णे त्रिषु तु तद्वति ॥५ ९९॥

वराला हसका ताया वराल भेषजा तरे ।
वरालस्तु पुमाश्च द्र रागभदे प्रकीर्त्तित ॥५१ ॥
वराह पवते मेघऽङ्ग्रि सुप्रवरेऽह्न ना ।
विष्णौ वराहमिहिरे मानद्वीपाद्रिभित्स्वपि ॥५१ १॥
व्यूहभदे मुस्तकेऽपि रक्तालौ च प्रकीत्तित ।
सूकरे तु पशौ मेष शिशुमारे द्वयोर्मत ॥५१ २॥
वराही मातृभदे स्याद्विष्वक्सेनप्रियौषधौ ।
स्त्रीलिङ्ग एव कथिता तथैषा मुस्तका नरे ॥५१ ३॥
वराहनामा रक्तालौ लज्जालौ च पुमा मत ।
वराहिकाऽश्वग धाया नागभदे वराहक ॥५१ ४॥
वराहुस्तु वराहे द्वे नृभूम्नि तु वराहव ।
वरिमा तु वरत्वेऽपि तथोरुत्वे पुमा मत ॥५१ ५॥
वरिवस्तु धनेऽपि स्याद्वरत्वेऽपि नपुंसकम् ।
वरिषस्तु पुमा वृष्टौ वर्षासु स्त्री बहुत्वके ॥५१ ६॥
वर्षे तु वरिष क्लीबलिङ्गमेव प्रकीर्त्तितम् ।
वरिष्ठ स्यादुरुतमे तथा वरतमे त्रिषु ॥५१ ॥
द्वे तित्तिरे बीजपूरे ना क्ली मरिचताम्रयो ।
वरीता त्रिर्वरयितर्यथ पुसि वरे स्मृत ॥५१ ८॥
वरीया योगभेदो ना स्यात्प्रशस्तरे त्रिषु ।
अतियू युरूत्तरे शतावर्या वरीयसी ॥५१ ९॥
वरुटस्तु प्राक्प्रसूतस्य जातौ क्षत्रियस्त्रियाम् ।
व्रात्याज्जाते निषाद्यां च मेदे वैदेहजे द्वयो ॥५११ ॥
वरुणो वरुणद्रौ च प्रचेतसि जलोदरे ।
आदित्यभेदो धावप्सु ग्रहनागाग्निभित्स्वपि ॥५११॥

---

१ वराहकर्णहदुभि र यश्वगन्धा प्रकीर्त्तिता ।

२ द्वे तित्तिरे क्ली मरिचे बीजपूरे पुमा मत ।
पक्षिजात्यन्तरे तित्तिर्याख्ये स्त्रीपुंसयोरयम् ।
ताम्रे क्लीब तित्तिरौ ना वरोरुतमयोस्त्रिषु ।

३ रोगे महोदरा याख्ये थोकतु प्रसवे नपि ।

तथाऽऽयुधविशेषेऽपि वरुणा तु नदीभिदि ।
द्वे मत्स्यभेदे वरुणपाशो योगे यथायथम् ॥५११२॥
अहीनभेदे वरुणप्रघास पुसि कीर्त्तित ।
चातुर्मास्ये नृभूकार्ये श्रावणाषाढपूर्णयो ॥५११३॥
वरूथो रथगुप्तौ ना मृग क्ली चर्मवेश्मनो ।
अस्त्री सैन्येऽपि वृन्दे द्व पुमास्तु निजराष्ट्रके ॥५११४॥
वरूथी स्याद्युद्धरथे सेनायान्तु वरूथिनी ।
श्रेष्ठे क्लीव वरेण्य स्याद् वा यव चापि कुत्रचित् ॥५११५॥
वरेण्या पितृभेदेषु वरे य कुङ्कुमे मतम् ।
सर्वो चलोके पार्वत्या तु वरेण्या प्रकीर्त्तिता ॥५११६॥
वकर परिहासे स्या छागे युवपशावपि ।
वकराट कटाक्षे स्यात्तरुणादित्यरोचिषि ॥५११ ॥
नारीपयोधरो सङ्कका तदत्तनखक्षते ।
वर्ग समानानिवहे वज्रे शक्त्याह्वये बले ॥१५१८॥
तावत्कृत्व कृता चापि [पक्षे] पुल्लिङ्ग [इष्यत] ।
वगणा गुणने वर्गीकरणे खण्डनेऽपि च ॥५११९॥
वर्ग्यश्छात्रालये पुसि पक्ष्ये तु त्रिषु कीर्त्तित ।
वर्चोऽनविष्ठातेज सु लावण्येऽपि तथार्चिषि ॥५१२ ॥
रूपे नपुसक पुसि वर्चाश्च द्रसुते मत ।
वजन तु मत क्लीव हिंसाया त्याग एव च ॥५१२१॥
वर्णोऽस्त्रिया प्रकारे च शोभायाञ्च विलेपने ।
सुवर्णेऽपि तद् कर्षे [कथायामपि कीर्त्तित] ॥५१२२॥
ना तु द्रव्याश्रितगुणमात्रे शुक्लादिके स्तुतौ ।
गोतिक्रमे च विप्रादौ कुथ चित्रे तथाऽऽकृतौ ॥५१२३॥
उक्तिमात्रेऽक्षरे कीर्त्तौ माल्ये वेषे व्रतेऽपि च ।
ब्रह्मचर्येऽथ वर्णी स्यादाढकी पृथुबीजयो ॥५१२४॥

---

१ वरुणस्तरुभवे प्सु पश्चिमाशापतावपि ।

वर्णं तु कुङ्कुमे क्लीबलिङ्गमेव प्रकीर्त्तितम् ।
ना वर्णकस्ता तवे स्याद्द्वयो रागषु वणिका ॥५१२५॥
पर्यायार्हादिकथने न्यारयातरि भवेत्त्रिषु ।
वणकश्चारण स्त्री तु च दने च विलेपने ॥५१ ६॥
द्वयोर्ना यादिषु स्त्री स्यादुत्कर्षे कथनस्य न ।
वर्णाट स्त्रीकृताजीवे त्रिश्चित्रकात गायने ॥५१२ ॥
श्लोकस्तेने स धिचौरेऽपि च वणविलोडक ।
वणा त्रिर्लेखके चित्रकरेऽपि ब्रह्मचारिणि ॥५१२८॥
वणवत्यथना वृक्षभदेऽपि श्रमणान्तरे ।
स्त्रीमात्रे तु स्त्रीवशेष हरिद्राया च वणिनी ॥५१२९॥
वणुर्नदा तरे वेदेऽर्के ना जनपदा तरे ।
वर्ण्यं तु वणनीये त्रि सुवर्णे तु नपुसकम् ॥५१३ ॥
वर्त्तक स्याल्लोहभद त्रि तु वर्त्तितरि स्मृत ।
वत्तका वर्त्तिका चाथ त्रिषु वर्त्तितरि स्मृत ॥५१३१॥
वत्तकोऽश्वखुरे स्त्री तु विहगे वत्तकी द्वयो ।
वत्तन धूलिलुठनेऽश्वस्य न्यावत्तनेऽपि च ॥५१३२॥
कुटीपिण्डे प्रवृत्तौ जीविकाया वचने मुहु ।
त्रिर्वर्त्ति णौ न ना वत्तयत्यर्थे प्रेषण तथा ॥५१३३॥
पिण्डने तूलनालायां तक्रुपीठ तथष्यते ।
वत्तन वामने क्लीब वृत्तौ स्त्री प्रेषणाध्वनो ॥५१३४॥
नदीभेदे वत्तरुक काकनीडे जलावटे ।
वत्तिर्भेषजनिर्माणे नयनाञ्जनलेखयो ॥५१३५॥
गात्रानुलेपनीदीपदशादीपेषु योषिति ।
वत्तु लस्तु कलाये ना तक्रुपीठे च चक्रके ॥५१३६॥
वत्तु ली गजपिप्पल्या स्यात्पलाण्डव न्तरेऽपि च ।
वर्त्म मार्गे तथा नेत्र च्छदे ना त नपुंसकम् ॥५१३ ॥
वधन्तु सीसके सेतौ भाङ्गर्या वर्धो द्वयोर्मत ।
अथ वर्धयितर्येष वर्धः स्यादभिधेयवत् ॥५१३८॥

वधको द्व तीक्ष्णभाङ्गर्यां ना वर्धयितरि त्रिषु ।
वधन छेदने वृद्धिक्रियायाञ्च नपुसकम् ॥५१३९॥
वधनस्त्रिषु वधिष्णौ तथा स्यादृवृद्धिसाधने ।
गलतिकाया तु स्त्री स्यासमार्ज्या च वधनी ॥५१४ ॥
वर्धना तु न ना धातोरर्थे वधयतेर्मता ।
वधमान प्रश्नभेदे शरावैरण्डविष्णुषु ॥५१४१॥
पुरा तरे जनपदा तरे पौरस्त्यादग्गजे ।
महावीराहति तथा श दोऽय त्रि सवृद्धिके ॥५१४२॥
वर्धमान पुनश्छ दोऽन्तरे क्लीब प्रकीर्त्तितम् ।
वर्धमानक उक्तो ना करमुद्रा तरेऽपि च ॥५१४३॥
वर्धापक पूणपात्रे कञ्चुके पासुचामरे ।
वर्धापन नाभिताल छदे स्या पूर्णपात्रके ॥५१४४॥
वर्धित प्रसिते छि ने पूरितेऽपि शरावके ।
वर्ध्रे वर्ध्री वरत्रा ना वेष्टे क्ली चर्मसीसयो ॥५१४५॥
वर्म स्यात्कवच चापि वचि गेहे नपुसकम् ।
वर्मवत् क्ली तनुत्राणे सवर्मणि तु वाच्यवत् ॥५१४६॥
वर्या पतिंवराया स्त्री वरेण्ये त्रिषु ना स्मरे ।
ववर फञ्जिका केशनीवृद तरचक्रले ॥५१४ ॥
पारसीकजने तु द्वे शबरेऽप्यथ च स्त्रियाम् ।
प र्यां स्याद्ववरी नद्या केशविन्यासभिद्यपि ॥५१४८॥
शाकपुष्पभिदोस्त्रिस्तु वक्रकेशेऽपि चाधमे ।
वर्वरीका सरस्वत्या द्वे तु पक्षिणि चोरण ॥५१४९॥
केशसस्थानभेदे च त्रिषु वाक्यकृति स्मृत ।
वर्वरीको [महाकालशाकभित्केशकर्मसु] ॥५१५ ॥
वर्वी स्त्री शकटे द्वे तु शरभारयमहामृगे ।
वर्षोऽस्त्री व सरे वृष्टौ दिवसे भारतादिके ॥५१५१॥
प्रावृटसज्ञत्तु भेदे तु वर्षा स्त्री भूम्नि कीर्त्तिता ।
उपवषभ्रातरि तु वष पुसि प्रकीर्त्तित ॥५१५२॥

वषा तु स्त्री च वार्षिक्या वृष्टौ स्यात्कस्यचिन्मते ।
वर्षकस्त्रिवृष्टिकृति वर्षात्स्वार्थे यथायथम ॥५१५३॥
अथ ग्रीष्मालये क्लीबं वर्षकं कैश्चिदीष्यते ।
वर्षकोशस्तु मासेऽपि तथा ज्योतिषिके पुमान् ॥५१५४॥
वर्षणं तु मतं वृष्टौ दाने मोक्षादिके गुणात् ।
वर्षणिवर्त्तनेऽपि स्याद्वर्षणेऽपि कृतौ क्रतौ ॥५१५५॥
षण्ढे वर्षधरो वर्षपर्वतेऽपि पुमान्मतः ।
वर्षवृद्धिस्तु वर्षोपचये जन्मदिनोत्सवे ॥५१५६॥
पुनर्नवाया वर्षाङ्गी वर्षाङ्गो मास इष्यते ।
वर्षाभूः स्त्री च शोथघ्न्या भूलताप्लवयोः पुमान् ॥५१५ ॥
वर्षाभूस्तु द्वयोर्भेके वर्षाभ्वीति यदा तदा ।
वृत्ति स्याद्योनिमत्यर्थे तथा गडूपदेऽपि च ॥५१५८॥
भेकोक्तन्यायभाव स्यात्परेषां तु मतं विदु ।
पुनर्नवासमाख्यायामोषधी स्त्री तु तत्पुनः ॥५१५९॥
स्यात्सशयितमस्माभिर्यतश्छन्दसि दृश्यते ।
अनादिसम्प्रदायात्ते प्रयोगे कण्ठजोष्मवान् ॥५१६ ॥
व्युत्पन्नो ह्वयतेर्धातोर्वर्षाह्व शब्द एष वै ।
उत्तम्भयेति वर्षाह्वा जुहोतीति ततश्च स ॥५१६१॥
अपभ्रष्ट उताहोस्विद्वर्षाभूरिति चापर ।
पुनर्नवायां शब्दोऽस्ति व्युत्पन्नो भवतेरिति ॥५१६२॥
व्युत्पद्यमानो भवतेर्मण्डूके सावकाशक ।
तस्मात्पुनर्नवाया स्यादयमोष्ठ्यभकारवान् ॥५१६३॥
पुनर्नवाया स्त्री द्वे तु वर्षाभ्वूर्भेक इष्यते ।
वर्षुस्तु वर्षुके वापि वृद्धे स्यादभिधेयवत् ॥५१६४॥
वर्ष्म न स्त्री परिच्छेदे शरीरश्रेष्ठयोरपि ।
स्यादुच्छ्राये च महति शुष्मण्यपि च सुन्दरे ॥५१६५॥
वर्ष्या वृष्ट्यम्बुषु स्त्री भू त्रिस्तु वृष्ट्यब्दसम्भवे ।
वलो दैत्यान्तरे मेघे पर्वतेऽपि पुमांस्तथा ॥५१६६॥

वल्कस्तु दशने पुंसि व कले त्वस्त्रिया मत ।
वल्कस्तु दशने पुंसि न स्त्री व कलशल्कयो ॥५१८१॥
वल्कलस्त्वचि वृक्षस्य न स्त्री वस्त्रेऽपि तत्कृते ।
ना वल्करोऽग्रे त्वक्पत्रे क्ली व लभिदि वल्कला ॥५१८२॥
वल्गित व गनेऽप्यश्वगतौ त्रिषु तु तद्युते ।
व गु त्रिरम्ये स्त्री वाचि द्वे छागे नेत्ररोम्णि नप ॥५१८३॥
व गुको ना द्रुमेदे क्ली चन्दनेऽपि वने पणे ।
वल्मीरि द्रे समुद्रे च पुंसि सा द्र तु वाच्यवत् ॥५१८४॥
वल्मीक सातपे मेघे पुमा सूर्येऽप्यथास्त्रियाम् ।
व मीक करपादादिशोथे नाकौ तथा मत ॥५१८५॥
व लो गोधूमभेदेऽपि तथा माना तरे पुमान् ।
वल्लकी कु दुरुक्यामक्षयोगा तरवीणयो ॥५१८६॥
व लभो दयितेऽप्यक्षे त्रिर्ना स लक्षणे हये ।
स्यादगुर्व तरे स्त्री तु वल्लभी परिकीर्त्तिता ॥५१८ ॥
वल्लभा तु प्रियङ्गौ चाऽतिविषायाश्च कीर्त्तिता ।
वल्लरिस्त्री लतायां च मञ्जर्यां व लरी तथा ॥५१८८॥
वल्लवो द्वे सूपकारे गोपे भीमे पुन पुमान् ।
व ला स्त्री तुवरीधान्ये सा तु सवरणे द्वयो ॥५१८९॥
मल्लीक्षत्रियजे त्वेषा द्वयोवल्ली प्रकीर्त्तिता ।
व ली कैवर्त्तिकाचव्याऽजमोदाप्रततिष्वपि ॥५१९ ॥
फलवल्लीग्र थकाण्डभूषु स्त्री वल्लिवन्मता ।
वल्लिज मरिचे वशक्षीर्यां चव नपुंसकम् ॥५१९१॥
सविषप्रसवे तूद्भिद्भेदे स्याद्वल्लिज पुमान् ।
वल्लु(ल्लू)रस्तु वनक्षेत्र ऊषरे वाहने तथा ॥५१९२॥
गहनेऽपि च नक्षत्रे क्लीबलिङ्ग प्रकीर्त्तितम् ।
वल्लुर शाद्वले क्षेत्रगहनेऽन्मभसि स्मृतम् ॥५१९३॥
मञ्जर्यामौषधे कुञ्जेऽपि क्लीबमिति केचन ।
वल्लूरकस्तु वल्लूरे कणवैकृतमित्यपि ॥५१९४॥

वल्लूरा तु त्रयी शुष्कमांसशूकरमांसयोः ।
वप्रः पुमान् ह्रदे त्रिस्तु वप्रो वरणकारिणि ॥५१९५॥
वशङ्गमस्त्रिर्वशगे मन्त्रभेदे वशङ्गतौ ।
वशवर्ति योषधीभिद्यथ त्रिषु तु यौगिके ॥५१९६॥
स्त्रियां वशा स्याद्वन्ध्याया स्त्रीमात्रे दुहितर्यपि ।
करिण्या वन्ध्यगव्यां चाप्यग्निमन्थद्रुमेऽप्यथ ॥५१९ ॥
आयत्तत्वे प्रभुत्वे च स्पृहायां च जनेऽपि ना ।
केचिद्वश्यालये वाल्मीक्यपिभिन्जन्मसूचिरे ॥५१९८॥
वशं द्रुतवसायां च क्लीबं क्वाप्युपलभ्यते ।
त्रिष्वायत्ते द्वयोस्तु स्यात्करणीवैश्यसम्भवे ॥५१९९॥
वशि कान्ते त्रिषु क्लीबं वशित्वे वशि कीर्तितम् ।
वशी वश्यात्मनि त्रि स्याद्वशिनी तु स्त्रिया मता ॥५२ ॥
शम्यामपि च वन्दायां न क्ली जलबिडालके ।
वशिरः किणिहीहस्तिपिप्पल्योः पुंसि कीर्तितः ॥५२ १॥
सामुद्रलवणे त्वेतद्वशिरं स्यान्नपुंसकम् ।
वशीरोऽपि वसीरोऽपि वसिरश्चैव न स्त्रियाम् ॥५२ २॥
वश्या वशित्वसिद्धौ न नाऽथ स्याद्वशगे त्रिषु ।
वसतिः स्त्री गृहे रात्राववस्थाने जिनाश्रमे ॥५२ ३॥
वसनं छादने वस्त्रे निवासाख्ये च कर्मणि ।
वसन्तः सुरभौ छन्दोरागतालान्तरेषु च ॥५२ ४॥
तथाऽतिसाररोगेऽपि पुंल्लिङ्गः परिकीर्तितः ।
वसन्तजा सुरभिमासोत्सवे मल्लिकाभिदि ॥५२ ५॥
वसन्ततिलका न क्ली छन्दोभेदे प्रकीर्तिता ।
तिलकस्य तु पुष्पे क्ली भाणभेदे रसान्तरे ॥५२ ६॥
वसन्तदूतश्चैत्रेऽपि चूते ना पञ्चमस्वरे ।
वसन्तदूती पाटल्यां माधव्यां च स्त्रियां मता ॥५२ ॥
द्रुमान्तरेऽग्निमन्थाभे कोकिले तु द्वयोर्भवेत् ।
स्याद्वसन्तसखः पुंसि कामे च मलयानिले ॥५२ ८॥

वस`य वसुदवैस्त्रि सबद्ध धनयोगिनि ।
वसाऽस्यादाद्रकाभोद्भिद तरे मेदसि तथा ॥५ ९॥
वसादनी शिंशपायामटरूषऽपि च स्त्रियाम ।
छत्राक क्ली तु कवके वसारोह शिली`ध्रके ॥५२१ ॥
वसिस्तु वसधातौ ना वस्त्रे स्या`पुसि वा स्त्रियाम् ।
वसिष्ठ ऋषिमदेऽपि पुमास्तारा`तरेऽपि च ॥५२११॥
वसिष्ठ तू`यते वासिष्ठवत्कैश्चिन्नपुसकम् ।
वसुर्नाऽनौ ह्रदे योक्त्रे किरणऽ`धुकपादपे ॥५२१२॥
पादपे पीतमुद्गे चारत्निसञ्ज्ञप्रमाणके ।
पूर्वक्षत्रियभदे च देवभेदे बके द्रुमे ॥५२१३॥
आदित्यमरुद्ग्नी`द्रवायुरुद्रोऽश्विविष्णुषु ।
शिवे कुबेरेऽप्युषसि सूर्ये च`द्राष्टसख्ययो ॥५२१४॥
त्रिशुष्कस्वादुशस्तेपु न तु क्ला नरमत्स्ययो ।
मणौ जले च द्रविणे क्लीब स्याद्वसिरौषधे ॥५२१५॥
वसुदेवे तथा कृष्णे भारद्वाजऋषौ जिने ।
वृद्ध्यौषधे तथा श्यामैरलेऽश्वेपि मौक्तिके ॥५२१६॥
रौमकार`येऽपि लवण वस्वी तु स्यात्स्त्रिया निशि ।
वसुको वासयितरि त्रि पुमास्तु बकद्रुमे ॥५२१७॥
अर्वागस्त्याटरूषेषु तालभिद्यपि (कीर्त्तित) ।
रौमकार`ये तु लवण क्लीब वसुकमिष्यते ॥५२१८॥
वसुदेव कृष्णताते कण्ववश्यनृपा`तरे ।
वसुदेव धनिष्ठायां स्त्री श्वफल्कसुतार्थिका ॥५२१९॥
वसुदै`या धनिष्ठाया तथैव नवमीतिथौ ।
वसुधास्त्रिधनवति भूलक्ष्म्यो (स्तु स्त्रियामियम्) ॥५२२ ॥
वसुधा तु नदीबौद्धदेवीभिदलकास्वपि ।
वसुधासुत इत्येष भौमे च नरकासुरे ॥५२२१॥
वसुप्रभाऽग्निजिह्वानामेकस्यामलकापुरि ।
वसुमा वसुयुक्ते त्रिर्वसुमत्यवनि स्त्रियोः ॥५२२२॥

वसुरेतास्तु वह्नौ स्याच्छिवे चापि प्रयुज्यते।
वसुलस्तु द्वयोर्देवे वसुदत्ताऽभिधे तु ना ॥५२२३॥
वसुश्रेष्ठस्तु विष्णौ ना रजते तु नपुंसकम्।
वसुषेणस्तु कर्णेऽपि विष्णावपि पुमान्मतः ॥५२२४॥
वसुसाराऽलकापुर्यां योगार्थे तु यथायथम्।
वस्नको बकवृक्षे ना क्ली तु स्याल्लवणान्तरे ॥५२२५॥
वसोर्धाराऽग्निचयनघृतहोमे ग्रहाऽन्तरे।
स्वगङ्गायां तथा स्वाहादेव्या तीर्थान्तरेऽपि च ॥५२२६॥
वस्तिर्मूत्राशये नाभेश्चाधोदेशेऽभिधीयताम्।
द्वे स्नेहनोपकरणे दशायामम्बरस्य च ॥५२२७॥
अथ वस्तिः पुमान्धातौ वसावादादिके स्मृतः।
वस्ति ग्रामनगर्यादिपदार्थेऽपि धने (नपि) ॥५२२८॥
वस्तुकं वस्तुनि तथा वास्तूके क्लीबमुच्यते।
वस्रं स्यादंशुके क्लीबं तथा (वस्रा नदीभिदि) ॥५२२९॥
स्याद्वस्त्रकुट्टिमं छत्रे तथैव पटवेश्मनि।
वस्नः समाजे लवणे मूल्ये मेढ्रागमे तु ना ॥५२३ ॥
वस्नोऽह्नि वस्त्रं तु गृहे वेतने च नपुंसकम्।
वस्वौकसारा वस्वोकसारापि स्यान्नदीभिदि ॥५२३१॥
अलकायामपि तथाऽमरावत्यामपीष्यते।
वहा नद्यां वहो वायौ गोश्वादिस्कन्धदेशके ॥५२३२॥
मानान्तरे चतुर्द्रोणे युगांशे मार्ग एव च।
वहतो वृषभेऽपि स्यात्पथिकेऽपि तथा पुमान् ॥५२३३॥
वहतिस्तु कुटुम्बेऽपि पुत्रेऽमात्ये वृषे पुमान्।
वहती त्वापगायां स्त्रीलिङ्ग एव प्रकीर्त्तिता ॥५२३४॥
वहतुस्तु बलीवर्दे कालेऽग्नौ पथिके पुमान्।
वहनं भारभरणे रथादीनां च यापने ॥५२३५॥
स्यन्दे रथविशेषे च चतुरस्रे सकूबरे।
वहन्तो रथरेणौ ना वहन्ती वोढरि त्रिषु ॥५२३६॥

ना विस्तृतकरे हस्ते क्ली ताम्रे मकरेऽपि च ।
गह त्यस्तु सर तीषु स्त्रीबन्त्वेऽप्सु कीर्तिता ॥५२३ ॥
क्लीब वहित्र पोतोपवहनारत्यरथा तरे ।
वह्निस्त्वग्नौ पुमानुष्णि द्वयोस्त्वश्वे गहिन्तथा ॥१२३८॥
भ लातक्या त्रिसरयायाञ्जम्बीरे चित्रकेऽपि च ।
रेफे क पेऽष्टमे चाप वाहने न पुमानयम् ॥१२३९॥
वाह्लगभ समुद्रेऽपि वेणौ वृक्षे तथा पुमान् ।
वह्निगर्भा पुन स्त्री वे शमीवृक्षे प्रकीर्त्तिता ॥१२४ ॥
वाह्न वाला तु धातक्या पुमास्तु नरका तरे ।
अजमोदा वह्निदीपका कुसुम्भे पुन पुमान् ॥५२४१॥
वह्निबीज सुवर्णेऽपि जम्बीरे रेफ एव च ।
स्यात्कुसुम्भे वह्निमुख योगार्थे तु यथायथम् ॥५२४२॥
कुसुम्भ कुङ्कुमे क्लीबलिङ्ग वह्निशिख मतम् ।
धातक्या गणिकारीकाश्मर्योर्वह्निशिखा स्त्रियाम् ॥५२४३॥
अथ वह्निसखो वायौ जीरकेऽपि पुमा मत ।
वा स्याद्विकल्पोपमयोर्वितर्के पादपूरणे ॥५२४४॥
समु चये च विस्तम्भे नानार्थाऽतीतयोरपि ।
एवार्थेऽपि तथवार्थे चार्थे त चा ययम्मतम् ॥५२४५॥
वाशी स्त्री स्यात्तुगाक्षीया वशसम्बन्धिनि त्रिषु ।
वाशिकस्त्रिपु वेणोश्च वादके वाशभारिके ॥५२४६॥
वाको वाका द्वयोरुक्तौ वाक स्यात्सामभि स्वपि ।
वाक्य तु वचने क्लीब सक्रिये कारके तथा ॥५२४ ॥
मीमासाया तकशास्त्रे शास्त्रार्थे परिकीर्त्तितम् ।
वागरो वारके शाणे निज रे वाडवे वृके ॥५२४८॥
मुमुक्षौ पण्डिते चापि परित्यक्तभयेऽपि च ।
निणकेऽपि विशाले च वागरो वारके पुमान् ॥५२४९॥
वागीशा तु सरस्वत्या ना ब्रह्मणि बृहस्पतौ ।
वागीश्वरस्तु धिषणे ब्रह्मण्यपि पुमान्मत ॥५२५ ॥

वागीश्वरी सरस्वत्यां स्त्रियां वागीश्वरोऽपि च ।
वागुरा मृगबन्धन्यां स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥५२५१॥
वागुरस्तु द्वयोरुक्तो वैश्यवेनीसमुद्भवे ।
वाग्दुष्ट दूषते वाचा द्वयोस्तु ब्रात्य इष्यते ॥५२५२॥
वाग्मी शुके द्वे ना जीवे वाचोयुक्तिपटौ त्रिषु ।
वाग्य कत्येऽपि निर्वेदे वाग्दरिद्रेऽपि वाच्यवत ॥५ ५३॥
वाघ स्याद्दविजि पुमान्मेधाविनि तथा मत ।
साहित्ये वाङ्मय क्लीब वाग्देव्यां वाङ्मयी स्त्रियाम ॥५२५४॥
वाग्वाण्यां गौणावृत्त्या सा शब्द वक्त्रेऽपि च स्त्रियाम ।
एकाहभदे जिह्वाया साम्नि वाङनिधनाभिधे ॥५२५५॥
वाचयमो मुनौ त्रिस्तु वाग्यते परिकीर्त्तित ।
वाचो मत्स्यविशेषे द्वे पुमास्तु मदनद्रुमे ॥५२५६॥
वाचको वाच्यवत्पाठकेऽपि चार्थाभिधायके ।
वाचनस्योपयुक्तेऽपि तथा वाचनक मतम ॥५२५ ॥
वाचाला शारिकायां स्त्री बहुगर्ह्यगिरि त्रिषु ।
स देशे वाचिक क्ली वागाशीदत्ते पुमान्मत ॥५२५८॥
वाच्यस्त्रि कुत्सितेऽधीने विहीन वदितव्यके ।
प्रजापतौ तु पुल्लिङ्ग वा यन्दोषे नपुसकम ॥५२५९॥
वाज पक्षीषुपक्षे रेतसि वेगे स्वने युधि ।
अन्ने चैत्रे ऋभूणां च त्रयाणां क्वचिदिष्यते ॥५२६ ॥
वाज केचित्क्लीबमाहुर्घृतयज्ञान्नवारिषु ।
वाजपेयोऽस्त्रियां सोमसप्तसस्थासु च क्वचित ॥५२६१॥
पुमास्तु तस्य मन्त्रे च कल्पे च परिकीर्त्तित ।
पुमान्वाजसनिर्विष्णौ साम्नोरपि कयोश्चन ॥५ ६२॥
याज्ञवल्क्ये वाजसनेयो नृ भूयाजुषेषु च ।
वाजिस्त्री पुङ्खवसने केशपङ्क्तौ द्वयोर्हये ॥५२६३॥
वाजी नाग्नौ गुरौ बाणे द्वे तु घोटकपक्षिणोः ।
त्रि वाजवति ना सप्तसस्थाऽश्यम्णोस्तथाऽनिले ॥५२६४॥

वा`यवद्वाजिन वाजिसम्ब`धान समीरितम ।
वाजिन तु मत क्लीब नवामिक्षाजरस्तुनि ॥५२६५॥
वाजिनी वश्वग`धायामश्वायां चोषसि स्मृता ।
वाञ्छितस्तालभेद स्यादि`छाया तु नपुसकम ॥५२६६॥
वाटस्तु वेष्टने पुसि नगरे भोजने गृहे ।
मण्डले वलये मार्गे स्त्रिया वाटी तथा मता ॥५२६ ॥
कुट्या पक्षिविशेषेऽथ वरण्डाङ्गान्नभित्सु नप ।
स्त्रिया तु वाटी गेहा त क्लृसे पुष्पफले वने ॥५२६८॥
अस्त्री वृतौ द्वे तु वैश्यमत्रीपुत्रेऽपि वास्तुनि ।
वाट्या बलाया स्त्री त्रिस्तु वेष्टत्रवेष्टयित`ययो ॥५२६९॥
वटयोगिनि वाट्यस्तु पुमा`भृष्टयवे मत ।
वाडबो वडबाऽग्नौ ना ब्राह्मणे तु द्वयोर्मत ॥५२ ॥
वाडब करण स्त्रीणा घोटकौघे नपुसकम ।
मुहूर्त्तभेदऽप्यस्त्री तु पाताले दक्षिणध्रुवे ॥५२ १॥
नरकेऽपि च केषाञ्चि मते वाडबमिष्यते ।
वाडबेयोऽश्विनो पुसि वृषेऽथ ब्राह्मणे द्वयो ॥५२ २॥
वाण हुडुक्कहिक्काया (छन्दोभिद्वीणयोस्तु ना) ।
वाण स्याद्गोस्तने दैत्यभदे केवलकाण्डयो ॥५२ ३॥
वाणा तु वाणमूले स्त्री नीलीझण्ट्या पुनद्वयो ।
वाणिनी तु विदग्धाया नत्तक्यां मत्तयोषिति ॥५२ ४॥
वाणिर्वानेऽम्बुदे वाचि स्तुतावपि भवेत्स्त्रियाम् ।
वाणी वाने सरस्वत्यां वाग्वाद्यस्वरवेणुषु ॥५२७५॥
छन्दोभिदोश्च वाण्यौ तु युगेऽपि स्याद्रथादिन ।
नदीभेदेऽपि वाणी स्यात्सा केषाञ्चित सरस्वती ॥५२७६॥
वाणिजो वणिजि प्रोक्तस्तथैव वडबानले ।
वात त्रिकृतवाने ना वायौ वातिकृतौ तु नप् ॥५२ ७॥
वातकेलि कलालापे षिङ्गद`तक्षते पुमान् ।
वा`यायां पिच्छिलस्फोटे वामाया वातशोणिते ॥५२ ८॥

स्त्रिया वातखुडा वातहुडावत्परिकीर्त्तिता ।
वातगामी पाक्षणि द्वे त्रि तु स्याद्वातयायिनि ॥५२ ९॥
वातगामी तु वातूलो कचयो शक्रकार्मुके ।
वातगु मस्तु वात्याया (वात) याधौ पुमामत ॥५२८ ॥
वात नस्तु पुमानेष उक्त एरण्डपादपे ।
वातघ्नी वमनुष्ये स्याद्वाच्यवद्वातघातके ॥५२८१॥
वातज शूलभेदे स्याद्योगे तु स्याद्यथायथम् ।
वातपुत्रो महाधूर्त्ते भीमसेने हनूमति ॥५२८२॥
वातप्रमी स्त्री वात्याया द्व तु वातमृगाश्वयो ।
नकुलेऽपि च कषाञ्चिन्मते वातप्रमी स्मृत ॥५२८३॥
द्वयोर्वातमृग द्वे वातग वातमजो मत ।
वातरायण उमत्ते निष्प्रयोजनपूरुषे ॥५२८४॥
क्रकचे करपत्रे च सायके शरसङक्रमे ।
वातरायण इ युक्त कैश्चि च सरलद्रुमे ॥५२८५॥
वातारूषश्चक्रवातो कोचे द्रधनुरुत्कटे ।
वातवेगस्तु गरुड धृतराष्ट्रसुते क्वाचत् ॥५२८६॥
वात याधिस्तु योगार्थेऽनिरुद्धे तु पुमान्मत ।
पुमा वातसुतो वेश्याऽऽचार्ये योगे यथायथम ॥५२८ ॥
स्त्रिया वातहुडा वात्या राजशोणितयोरपि ।
पिच्छिलस्फोटिकाया च वामायामपि योषिति ॥५२८८॥
वातादो मृगभेद द्वे बादामे ना फलेऽस्य नप् ।
वातापिर्दैत्यभेद ना त्रिषु [वातस्य पातरि] ॥५२८९॥
वातायनोऽनिले चोलौ नृभूस्यात्सामशाखिषु ।
द्वयोरश्वे गवाक्षे तु क्लीब वातायन मतम ॥५२९ ॥
वातारिस्तु शतावर्या निगुण्ड्येरण्डयोरपि ।
अजमोदास्नुहीभार्गीभ लातकविडङ्गके ॥५२९१॥
सूरण पुत्रदा यां च जतुकायाम्प्रकीर्त्तिता ।
वातिर्वायौ रवी द्वोर्ना गतिग धनकर्मणि ॥५२९२॥

धातौ तत्क्रिययोस्तु स्त्री वाति शोषे तथा मता ।
वातिको विषवैद्ये द्वे त्रिषु स्याद्वातरोगिणि ॥१ ९३॥
तथा वातस्य शमने कोपने चापि वस्तुनि ।
द्वयोस्तु चातकेऽप्येष वातिको मान्त्रिकेऽपि च ॥१ ९४॥
स्कन्दानुगामिनि क्वचित्पुस्येष परिकीर्त्तित ।
वातिग पुसि भण्टाक्या धातुनादिनि वायवत् ॥१ ९५॥
वातुलस्तु सराते त्रि शिम्बीधा यात्तरे पुमान् ।
प्रियङ्गौ चक्रवाते च वातुल परिकीर्त्तित ॥१ ९६॥
वातूल पुसि वात्यायां त्रिर्वातासहवातले ।
वात्या स्त्री चक्रवातेऽथ वात्यस्त्रिर्वातयोगिनि ॥१२९ ॥
वात्सक वत्सयूथ क्ली त्रिस्तु वत्सकयोगिनि ।
वात्सीपुत्रो नापिते द्वे नागयेन्तरयो पुमान ॥१२९८॥
वात्स्यस्त्रिवत्साऽपत्यादौ वास्य वत्सत्व इष्यते ।
वादस्तु कलहेऽप्युक्तस्तथा वीणादिवादने ॥१२९९॥
वादन वदनेन त्रि सम्बद्धेऽथ न ना शुचि ।
वादल स्याद्यष्टिमधौ वादल स्याच्च दुर्दिने ॥५३ ०॥
वादायस्त्रिवदायेन सम्बद्धेऽन्यत्र वादत ।
वादिकस्त्रिर्वादवति मान्त्रिके वातकाभिधे ॥१३ १॥
वादिक क्ली तु वाद्ये स्याद् भद्यलिङ्ग तु कर्त्तरि ।
अण्यन्त वदतेर्ण्यन्ते वदते कर्मणि स्मृत ॥१३ ॥
वादित्र वाद्यनिर्घोषे वाद्ये चापि नपुसकम ।
वदितुस्तु त्रिसम्बन्धि येतद्वादित्रमिष्यते ॥५३ ३॥
वादिराट पुसि मञ्जुश्रीबुद्धे योगाथ इष्यते ।
वाद्यन्तु क्लीवमातोद्ये त्रिर्वाद्यो वादनीयके ॥५३ ४॥
वाद्यमान त्रियोगार्थे वाद्यभाण्डे नपुसकम् ।
वाध्रीणसो द्वयोश्छागे गण्डकेऽप्युक्षिण पक्षिणि ॥१३ ५॥
कृष्णग्रीवे रक्तशीर्षे श्वेतपक्षे प्रकीर्त्तित ।
वान शुष्कफले शुष्के त्रि क्ली स्यूतौ च शोषणे ॥५३ ६॥

वातेर्धातो क्रियाया च कटे वान प्रकीर्त्तितम ।
वानक ब्रह्मचर्ये क्ली त्रि तु स्याद्वनितर्यपि ॥५३ ॥
वानप्रस्थो मधूके च वैखानसपलाशयो ।
नपुसक तु प्रसवे स्या माधूकपलाशयो ॥५३ ८॥
वानरो ना तुरुष्कार यनिर्यासेऽथ कपौ द्वयो ।
कपिक छ्रौ पुन स्त्रीत्वे वानरी परिकीर्त्तिता ॥५३ ९॥
वानस्पत्य शिव पुसि फला पुष्पवति द्रुमे ।
क्ली द्रुमाणा फल कुञ्जे त्रर्वनस्पतियोगिनि ॥५३१ ॥
वानायुस्तु द्वयोरश्व वनायुविषयोद्भवे ।
नृभूम्नि तद्दशजने वाताया कस्यचिद्द्वयो ॥५३११॥
वानीरो वतसे पुसि तथा चित्रक इष्यते ।
वानीरकस्तु वानीरे मुञ्जऽपि च पुमा मत ॥५३१२॥
वानीरजस्तु मु जे वनीरज कुष्ठमषजे ।
वानेय मुस्तके क्लीब त्रिषु स्याद्वनसम्भवे ॥५३१३॥
वान्ताद कुक्कुरेऽपि द्वे तथा पक्ष्यन्तरे मत ।
वाप योदनभिक्षायां ग्रासमात्र्यां स्त्रिया मता ॥५३१४॥
अथ वापयतेरर्थे वापन वापना नना ।
वापित तु मत बीजाकृतमुण्डितयोस्त्रिषु ॥५३१५॥
वापी तु दीर्घिकाया स्या ज्योतिर्योगा तरेऽपि च ।
वामस्तु प्रतिकूले च त्रिषु सुन्दरस ययो ॥५३१६॥
द्वयोस्तूष्ट्रऽथ पुल्लिङ्गो वाम स्याद्वरुण सरे ।
पयोधरे हरे वा तौ रुद्रभिद्वामहस्तयो ॥५३१ ॥
वामा स्त्री नवशक्तीना शिवस्यैकत्र योषिति ॥
योषिद्भेदेऽपि दुर्गाया सरस्वत्यां श्रियामपि ॥५३१८॥
नदीभेदे पार्श्वनाथमातर्यपि तथा मता ।
वामी शृगालीवडबारासभीवेसरीषु च ॥५३१९॥
वामकस्त्रिमतो वामे द्वे तु स्यात्सङ्करान्तरे ।
अथ मुद्राविशेषे तु वामक स्यान्नपुसकम् ॥५३ ॥

वामदेव शिवेऽमात्ये तथा दशरथस्य च ।
शा मलिद्वीपगिरिभिद्दषिभिव याधिभित्सु च ॥५३ १॥
ब्रह्ममासतृतीया वामदेवी तु पावती ।
वामनस्तु त्रिषु ह्रस्वे पुमास्तु मदनद्रुमे ॥५२२ ॥
अवतारा तरे विष्णोस्तथा दक्षिणदिग्गज ।
स्त्री वामलोचनेत्येषा स्त्रीभद परिकीत्तिता ॥५३ ३॥
क्ली कर्मधारये चाथ बहुव्रीहौ तु भद्यवत ।
वायसोऽगुरुवृक्षे च श्रीवत्सघ्राङ्क्षयो पुमान् ॥५३ ४॥
वयस्सम्बधिनि तथा वायसस्त्रिषु कीर्त्तित ।
काकोदुम्बरिकाया तु काकमाच्या च वायसी ॥५३२५॥
क्लीब वायुफल शक्रकार्मुके करकेऽपि च ।
वार क्रियाभ्यावृत्तौ च समूहेऽवसरे क्षणे ॥५३२६॥
द्वारे हरे कुब्जवृक्षे चारे सूर्यादिवासरे ।
वारी स्याद्गजब धन्या कलस्यामपि योषिति ॥५३ ७॥
वारकोऽश्वगतौ पुसि वा यव स्यान्निषेधके ।
वारकीरस्तु पुसि स्याद्वारग्राहिणि वाडवे ॥५३२८॥
यूकायां वेणिवेध यां नीराजितहयेऽपि च ।
वारङ्ग पक्षिणि द्वे स्यात्खड्गैकावयवे तु ना ॥५३२९॥
वारणो हस्तिनि द्व स्यात्पुसि सेतौ प्रकीर्त्तित ।
स्त्रियां पुसि तथवेय वारणा स्यान्निवारणे ॥५३३ ॥
वरणद्रोस्तु विकृतौ त्रि स्याद्वरणयोगिनि ।
वारवाणोऽस्त्रियामुक्त कञ्चुके कवचेऽपि च ॥५३३१॥
वाराह सामभेदे क्ली वाराही तु स्त्रिया मता ।
विष्वक्सेनप्रियानाम्न्यामोषधौ न लता तरे ॥५३३ ॥
वाराहच्छन्दसञ्ज्ञे स्याद यस्या क्वचिदोषधौ ।
सप्तानां चैव मातॄणामेकस्यामपि मातरि ॥५३३३॥
वाराह सामभेदेषु वराहमुनिना पुन ।
कृते वराहसन्बधि यपि त्रिषु समीरितम् ॥५३३४॥

वारि स्त्री हस्तिनो यत्र गृह्यन्ते तत्र कीर्त्तिता ।
अथ वारिकलश्यां च जलेऽपि च नपुंसकम् ॥५३३५॥
वारिज त्वधिलवणे पद्मे शङ्खे तु वारिज ।
वारिणिस्तु पशौ द्वे स्यात्पशुवृत्त्या तु सा स्त्रियाम् ॥५३३६॥
वारिपिण्डस्तु मण्डूके द्वयो पाषाणगर्भजे ।
यौगिके त्वस्य लिङ्गादि तर्कणीय यथायथम ॥५३३७॥
वारुः शुकफले पुंसि जङ्घाया स्त्री हये द्वयो ।
वारुण्युमाप्रती योश्च सुरायाञ्च लतान्तरे ॥५३३८॥
वरुणस्य तु सम्बन्धियुदित वारुण त्रिषु ।
वारूढस्तु कपाटे च तथा वस्त्राऽञ्चलेऽपि च ॥५३३९॥
पावके पञ्जरे चैव शम्बलेऽपि पुमान्मत ।
वार्क्ष क्लीब वने वृक्षसम्बन्धिनि पुनस्त्रिषु ॥५३४ ॥
वार्त्ता तु वर्त्तनोदन्तकृषिप्रभृतिवृत्तिषु ।
वार्त्ताक्यां च स्त्रिया वार्त्त निःसारारोग्ययोरथ ॥५३४१॥
त्रिर्वृत्तवृत्तिसम्बन्धिन्यपि स्यादवृत्तिमत्यपि ।
वार्त्ताकी स्त्रि शब्दफलस्तम्बे वातिङ्गनाह्वये ॥५३४२॥
प्रसहाख्ये क्षुद्रफले स्तम्बे तत्प्रसवे तु नप् ।
वार्त्तिकस्तु द्वयोदूते व्याख्याग्रन्थान्तरे तु नप् ॥५३४३॥
तथा विवाहविख्यातधूलिभक्तेऽपि कीर्त्तितम् ।
वार्दूरं कृष्णलाबीजदक्षिणावर्त्तशङ्खयो ॥५३४४॥
काकचिञ्चीभवे बीजे वारिक्रिमिजनीरयो ।
वाधक वृद्धसङ्घाते वृद्धत्वे वृद्धकर्मणि ॥५३४५॥
वाधुषिस्त्वृणवृद्धौ स्त्री वृद्धया जीवे तु भेद्यवत ।
वार्ध्रीणस खड्गमृगे मत स्त्रीपुसयोरयम ॥५३४६॥
कृष्णग्रीवे रक्तशीर्षे श्वेतपक्षे विहङ्गमे ।
त्रिविधे त्विन्द्रियक्षीणे श्वेते चाजापतौ पुमान् ॥५३४७॥

---

१ वारुणी गण्डदूर्वायां प्रतीचीसुरयोरपि ।

वावटीरो नक्र आम्रास्थ्यङ्कुरे गणिकासुते ।
वाषिक त्रायमाणाख्यभेषजे नप्यथ त्रिषु ॥५३४८॥
वर्षासु भवजातादौ निवृत्त यच्च किञ्चन ।
वर्षण वर्षाभिर्वा स्याच्चत्राधीष्टादिकेऽपि तत ॥५३४९॥
वालस्तु ना सवरणे चलने केशपुच्छयो ।
विशेषादश्वकरिणो पुच्छ ह्रीबेरके तु नप ॥५३५ ॥
वाली ह्युलकन्या स्यात्स्त्रियां स्याज्जतुकाह्वला ।
नारिकेले हरिद्रायां मल्लिकाभिदि वालधौ ॥५३५१॥
वाल्यलिङ्गोऽर्भके मूर्खे तथाऽलङ्कारभिद्यपि ।
वालक त्वस्त्रियां ज्ञेय वलये चाङ्गुलीयके ॥५३५२॥
ह्रीबेर क्ली शिशौ द्वे स्त्री वालिका सिकतासु च ।
ऊर्मौ च कर्णपृष्ठस्थे विज्ञेया भूषणान्तरे ॥५३५३॥
वालवाय पुमाञ्शैलविशेषे परिकीर्त्तित ।
वालै कार्यस्य वस्त्रस्य य कर्त्ता त्रिषु तत्र च ॥५३५४॥
वालि नावश्विनी ऋक्षे वाली सुग्रीवपूर्वजे ।
केशह्रीबेरपुच्छादियुक्तार्थे त्वभिधेयवत् ॥५३५५॥
वालुका सिकतासु स्त्री क्ली त्वेलावालुकौषधे ।
पुण्डरीकसमाख्ये च वालुक स्याद्विषान्तरे ॥५३५६॥
वावीर उत्पत्तिक्षेत्रेऽ थमोघे परिकीर्त्तित ।
वाशा स्त्रियामाटरूषे वाशी वाचि प्रकीर्त्तिता ॥५३५ ॥
हिमसृष्टयै च सूर्यस्य रश्मीनां यच्छतत्रयम् ।
तत्रैकत्राऽथ वाशी स्याद्वशसम्बन्धिनि त्रिषु ॥५३५८॥
वाशा तु पुंसि स्त्रीत्वे च वाशिते परिकीर्त्तिता ।
वाश तु सामभेदे क्ली क इ वेदेत्यचि स्थिते ॥५३५९॥
वाशिरग्नौ वाशयतौ वाशतौ वाश्यतावपि ।
द्वे गोमायौ प्रजननप्राप्ताया स्त्री चतुष्पदि ॥५३६ ॥
अथ भीरावय वाशिर्भेद्यवत्परिकीर्त्तित ।
वाशिता तु करिण्यां च स्त्रीत्वे योषिति च स्मृता ॥५३६१॥

वाशुरः पक्षिणि द्वे स्याद्वाशुरा तु स्त्रियां निशि ।
वाश्रा चाप्यथ वाश्रस्तु पुरुषे शब्दवृन्दयो ॥५३६२॥
वाश्रो ना दिवसे क्लीब मन्दिर च चतुष्पथे ।
वासतेयी तु रात्र्या स्त्री साधौ तु वसतौ त्रिषु ॥५३६३॥
वासनस्तु पुमा गेहावयवे पि दुसज्ञके ।
वारिधा यां च वस्त्रे च प्रत्याशाज्ञानयो स्त्रियाम ॥५३६४॥
वासना तु न ना ग धधूपाद्यर्भावनाविधौ ।
तथा निवासयत्यर्थे वस्तेर्हेतुकृतावपि ॥५३६५॥
वासनीय कुङ्कुमे क्ली त्रि तु वासयित यके ।
वास तो ना कुरवके त्रिषु त्ववहिते तथा ॥५३६६॥
जाते वस तात्तद्योगिन्यपि तत्पुष्पजातिषु ।
वास ती माधवीयूथ्यो [कोकिलायामपीष्यते] ॥५३६ ॥
वासरो दिवसे न स्त्री ना त्वग्नौ प्रावृषि स्मरे ।
वासवो वसुसम्बधि यथ त्रिर्ना पुर दरे ॥५३६८॥
यूपस्यारत्नय सप्तदशद्वादश एष्वपि ।
वासिका स्त्री माल्यदाम्नि वासिक तु नपुसकम ॥५३६९॥
गृहच्छादिष्काष्ठभेदे स धिकाष्ठाह्वये स्मृतम ।
वासिता करिणीनार्योर्वासित भाविते रुते ॥५३७ ॥
वासुक रौमकाख्ये क्ली लवणेऽर्कद्रुमे तु ना ।
वासुदेवस्तु ना विष्णौ द्वयोस्तु स्यात्तुरङ्गमे ॥५३ १॥
वासुरा वासितायां स्याद्वासतेयभुवि स्त्रियाम् ।
वास्तुरस्त्री गृहे सीम्नि सुलङ्कागृहभूपुरे ॥५३ २॥
वाहस्तु ना बलीवर्दे वहने त्वसयुग्मके ।
प्रस्थद्वयेऽवखार्यां स्यात्तथाखारीचतुष्टये ॥५३ ३॥
स्त्रीपुसयोस्तु वाहोऽथ मतो गर्दभघोटयो ।
वाहसो जलनिर्याणे शयालौ सुनिषण्णके ॥५३ ४॥
क्ली तु स्याद्वाहन युग्ये वाहनी तु स्त्रियामियम ।
पुरस्य राजमार्गे स्यादुपनिष्करसज्ञके ॥५३७५॥

अना तु वाहयत्यर्थे वाहन वाहनाऽपि च ।
ना त्वग्नौ सुनिषण्णारण्यशाके च जलनिगमे ॥५३ ६॥
भेद्यलिङ्गस्तु वहनकर्म्मजीवे प्रकीर्त्तित ।
वाहिका पुसि भूम्नि स्युष्टर्कनामनि नीवृति ॥५३ ७॥
तुलासञ्ज्ञो मानभदाद्दक्ष दशगुण स्मृतम ।
वृद्ध्या दशगुण तस्मात्स्थितेष्वाचितकादिषु ॥५३ ८॥
अष्टासु परिमाणेषु षटको वाहिकमुच्यते ।
वाहिनी स्यात्तरङ्गिण्यां सेनासैन्यप्रभेदयो ॥५३७९॥
वाह्य वाहयित ये त्रिर्वोढव्ये वाहसाधुनि ।
नपुसक तु वाह्य तद्वाहने परिकीर्त्तितम ॥५३८ ॥
विग तरि त्रिषु खगे द्वयोर्ना परमात्मनि ।
विनिग्रहे नियोग च विज्ञाने पादपूरणे ॥५३८१॥
निश्चयेऽसहने हेताव याप्तिविनियोगयो ।
ईषदर्थे परिभवे शुद्धावालम्बनेऽपि च ॥५३८२॥
विकच क्षपणे केतौ नाऽकेशे स्फुटितेऽन्यवत् ।
विकटा वज्रवाराह्या त्रिपूरुविकरालयो ॥५३८३॥
विकर्त्तनो रवौ पुसि कत्तने तु विकत्तनम् ।
अथ कत्तयतेरर्थे न पुसि स्याद्विकर्त्तना ॥५३८४॥
विकल्प पुसि भ्रान्तौ च कल्पने (सशयेऽपि च) ।
विकसुको ना परिस्रोतो रसे त्रि गुणवादिनि ॥५३८५॥
विकारस्त्वन्यथाभावे रागे च परिकीर्त्तित ।
विकाशः पुसि विजने प्रकाशे (च प्रकीर्त्तित) ॥५३८६॥
विकुस्रस्तु समुद्रेऽपि चन्द्रेऽपि परिकीर्त्तित ।
विकृतो न स्त्रियामुक्तो रसे बीभत्सनामनि ॥५३८७॥
त्रि तद्वति विकारेणान्विते पक्षिकृतेऽपि च ।
तथा वीतकृतेऽपि स्याद्रोगिदूरूपयोरपि ॥५३८८॥
नानाविधक्रिये क्ली तु विकृत विविध कृते ।
त्रपाद्यैरुचितस्याप्यनुक्तौ भावान्तरे स्त्रिया ॥५३८९॥

विक्रम शक्तसम्पत्तौ क्रान्तौ क्षान्तौ तथा पुमान् ।
विक्लिष्टो रजसा जीर्णे शीर्णे चार्द्रे च वाच्यवत् ॥५३९ ॥
विगत निष्प्रभे वीतेऽप्यभिधेयवदिष्यते ।
विगूढो गर्हितेऽपि स्याद् गुप्ते च त्रिषु (कीर्त्तित) ॥५३९१॥
विग्रस्तु गतनासेऽपि तथा मेधाविनि त्रिषु ।
तत्तु मेधाविनि याप्य गतनासे वसाम्प्रतम् ॥५३९२॥
यस्मात्स्मृतिर्वेघ इति नतु वेग्र इतीदृशम् ।
विग्रहो व्यासवाक्येऽपि विस्तारे युद्धदेहयो ॥५३९३॥
वेग्रहे च पुमानुक्तस्त्रि तु स्याद्विगतग्रहे ।
विघ्नकारी स्मृतो घोरदर्शनेऽपि विघातिनि ॥५३९४॥
भवेद्विचकिलो मल्लीप्रभेदे मदने पुमान् ।
विचक्षण कृष्णशिम्बौ पण्डिते त्रिर्विचक्षण ॥५३९५॥
विचिकित्सा सशये स्याद्योगार्थे तु यथायथम् ।
स्त्री विच्छित्तिस्तु विच्छेदे भावभेदे च योषिताम् ॥५३९६॥
स चाय वस्त्रमाल्यादेर्न्यासे ना स्वोपशोभित ।
हारभदेऽङ्गराग च श दोऽयमपि च स्त्रियाम् ॥५३९ ॥
विच्छिन्न तु समालब्धे वाच्यव स्याद्द्विधाकृते ।
विजन्मा गह्वजन्मन्यप्यभिधेयवदिष्यते ॥५३९८॥
शूद्रपूर्वकवैश्यायां व्रात्याज्जाते द्वयोरयम् ।
विजयस्तु जये खड्गे चार्जुनेऽपि पुमा मत ॥५३९९॥
विजया तु हरीतक्यां भङ्गाया [तिथिभिद्यपि] ।
विजिज्ञासा तु मीमांसने स्त्री योगे यथायथम् ॥५४ ॥
विजृम्भण सुचेष्टायां क्लीब त्रिषु विकस्वरे ।
विजम्भित जम्भणे क्ली त्रि सजृम्भे विकस्वरे ॥५४ १॥
विज्ञान [क्लीबलिङ्ग स्याच्चेतनाज्ञानकर्म्मसु] ।
विटोद्भ्री लवणे षिङ्गे मूषिके खदिरेऽपि च ॥५४ २॥
विटकान्ता हरिद्रायां योगार्थे तु यथायथम् ।
विटङ्क पादपाङ्गे च गृहस्यावयवेऽपि च ॥५४ ३॥

विटपो न स्त्रिया स्तम्बशाखाविस्तारप ल्लवे ।
विटपतिर्द्दे सुरे ना जामातरि त्रिविशापतौ ॥५४ ४॥
विडङ्गस्त्रिष्वभिज्ञे स्यात्कृमिघ्ने पुनपुसकम् ।
विडालो नेत्रपिण्डे स्याद्वृषदशकके पुमान् ॥५४ ५॥
वितण्डा [करवीर्यां स्यात्] कच्छी शाकेऽ[पि च स्त्रियाम्] ।
स्वपक्षस्थापनाहीने वादे तार्किकवि श्रुते ॥५४ ६॥
वितक आशङ्काया स्याद्वीततर्के तु भेद्यवत ।
वितकस्तु पुमानूहे सशये च निगद्यते ॥५४ ७॥
वितानो यज्ञ उ लोचे विस्तारे पुन्नपुसकम् ।
क्लीब वृत्तविशषे स्यात्त्रिलिङ्गो मत्ततुच्छयो ॥५४ ८॥
वितुन्नरवामलक्या वितुन्न तुत्थाञ्जने मतम् ।
वितुन्न सुनिषण्णे च शैवाले च नपुसकम् ॥५८ ॥
वितुन्नकस्तु धा याके झाटामलमयूरके ।
वितुन्नक तु भूधा या कुस्तुम्बुर्यां [नपुसकम्] ॥१४१ ॥
वित्त धने क्ली त्रिषु तु प्रथिते च विचारिते ।
वित्ति सम्भावनाया स्याद्विचारे लाभ एव च ॥५४११॥
विज्ञातरि त्रिषु ज्ञाने स्त्रिया ना तु बुधग्रहे ।
विदण्डो मागरोधार्थार्गले त्रिस्तु वियष्टिके ॥५४१२॥
विदथो योगिकृतिनो [पुलि ङ्ग परिकीर्त्तित] ।
विदाज्ञाने च निर्दिष्टा मनीषायाञ्च योषिति ॥५४१३॥
विदारो ना जलोच्छ्वासो [तथा स्यात्प्रविदारणे] ।
विदारी शालपर्ण्यां च रोगभेदेक्षुग धयो ॥५४१४॥
विदारणा ननाभेदे तथैव स्याद्विडम्बने ।
विदारण विडम्बे च भेदे क्लीब रणे द्वयो ॥५४१५॥
विदारिका च काश्मर्यां शृगाल्याञ्च [स्त्रियाम्मता] ।
विदित सश्रुतेऽपि स्या ज्ञाते चाप्यभिधेयवत् ॥५४१६॥

---

१ आनूपशाकस्तम्बे पि सुनिषण्णाह्वये नपि ।

विदुरो नागरे धीरे कौरवाणां च मन्त्रिणि ।
विदुलस्तु पुमानम्बुवेतसे वेतसेऽपि च ॥५४१ ॥
विदूषकश्चाटुवटौ परनिन्दाकरेऽपि च ।
विदेहास्तीरभुक्तौ नृ भूम्नि वीततनौ त्रिषु ॥५४१८॥
विदेह कायशू ये स्या जनका वयभूमिपे ।
विद्ध सू यादिभिर्भिन्ने सदृशे [बाधितेऽपि च] ॥५४१९॥
क्षिप्ते च त्रिषु तज्जात योतिर्विद्वीक्षितेऽपि च ।
विद्या शास्त्रेऽपि विज्ञाने म त्रेष्वपि मता तथा ॥५४२ ॥
शैवागमप्रसिद्धेषु त वभेदेषु केषुचित ।
महाविद्यार यदेवीषु [सरस्वत्यामपि स्त्रियाम्] ॥५४२१॥
विद्युत्त तडिति स्त्री स्याद्दीप्ते विद्युत्त्रिषु स्मृत ।
[शिलायाञ्चैव] स ध्यायां स्त्रिया त्रिषु तु निष्प्रभ ॥५४२२॥
विद्रवो विद्रुतौ [पुसि बुद्धावपि तथा मत] ।
विद्रुत विद्रवे क्ली त्रिर्विलीने च पलायिते ॥५४२३॥
विद्रुम प लवे वृक्ष प्रवाले मणिभूरुहे ।
विद्वान् विदद्बुधात्मज्ञेष्वपि स्याद्विदुरे त्रिषु ॥५४२४॥
विधर्मा त्वहिते पुसि यतीचारे च कीर्त्तित ।
सामप्रभेदे तु क्लीब त्रि स्याद्विगतधर्मके ॥५४२५॥
उ चारणप्रभेदे च स्पृष्टताद्ये विध मतम् ।
विधा गजा ने ऋद्धौ च प्रकारे वेतने विधौ ॥५४२६॥
विधाता [ना वि धौ कामे] कत्त मेधाविनोस्त्रिषु ।
विधान हस्तिकवले प्ररणेऽभ्यचने घने ॥५४२ ॥
वेदनायामुपाये च प्रकारे वैरकर्मणि ।
विधिर्ना नियतौ काले विधाने परमेष्ठिनि ॥५४२८॥
विधुर्विष्णवग्निकाले दुवात [कपूरकेषु च] ।
[पुल्लिङ्गो द्वे राक्षसे तु श दोऽयम्परिकीर्त्तित] ॥५४२९॥
विधुत कम्पितेऽपि स्यात्त्यक्ते चाप्यभिधेयवत ।
विधुर कष्टविश्लिष्टाप नीकविकलेषु च ॥५४३ ॥

[क्लीब तु तत्र विश्लेष रसालाया स्त्रियामपि] ।
विनत प्रणते भुग्ने शिक्षिते चाभिधेयवत् ॥५४३१॥
विनता तार्क्ष्यजननी पटकाण्डभिदोस्स्त्रियाम् ।
विनया स्त्री बलाया ना शमेकीतनये त्रिषु ॥५४३ ॥
विनायकस्तु हेरम्बे तार्क्ष्ये विघ्ने जिने गुरा ।
विनिपातो निपाते स्याद्दवादि यसने पुमान् ॥५४३३॥
विनीत सुवहाऽश्वे स्याद्वणि यपि पुमास्त्रिषु ।
जितेन्द्रियेऽपनीते च निभृते विनयान्विते ॥५४३४॥
विनेता केशवे राज्ञि ना [च त्रिषु निनेतरि] ।
अजयस्तु प्रकरणे दन्त्योष्ठादिपदावले ॥५४३५॥
दन्त्योष्ठादिं च विदुषो बाचक विन्दुरि यमुम् ।
विप्रुड्वाचिनमोष्ठ्यादिबिन्दुश द च विभ्रमात् ॥५४३६॥
एक म वा द्वयोरथा विन्दुर्ज्ञातरि विप्रुषि ।
विन्ध्या स्त्रिया लवल्या स्यात्पुसि न्याधाद्रिभदयो ॥५४३ ॥
विन्न तु प्राप्तसत्ताके त्रिषु लब्धे विचारिते ।
विपक्ष पक्षिपक्षेऽरौ त्रि तु स्याद्वीतपक्षके ॥५४३८॥
स्त्रियां विपञ्ची वीणायां वीणाभदे च कीर्त्तिता ।
योऽल्पदण्डश्च तन्त्रीभिस्तथा नवभिरन्वित ॥५४३९॥
विपणि पण्यवीथ्या च भवेदापणपण्ययो ।
विपत्ति[र्यानाया स्यात्पदि चापि स्त्रियामियम्] ॥५४४ ॥
विपन्नस्तु द्वयो सर्पे त्रिर्मृते च विपद्गते ।
विपाक पचने स्वेदे विरुद्धे कर्मण फले ॥५४४१॥
विपाकी ना यवक्षारे विपाकवति तु त्रिषु ।
विपिन गहने त्रि क्ली जलदुर्गे वनेऽपि च ॥५४४२॥
विपुल पृथुलेऽगाधे मेरुपश्चिमभूधरे ।
विप्रतीसार उद्दिष्ट कौकृत्येऽनुशयेऽरुणि ॥५४४३॥
विप्रलापो विरोधोक्तौ विप्रलम्भोपमदयो ।
विप्रस्य भाषणे चापि पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥५४४४॥

विप्रिय त्वपराधे क्ली भेद्यवद्विगतप्रिये ।
विबुधस्तु द्वयोर्देवे विदुषि त्वभिधेयवत् ॥५४४५॥
विभक्ति स्त्री विभागेऽपि सुप्तिङो प्राग्दिशीयके ।
प्र ययेऽपि तथा प्रोक्ता वीतभक्तौ तु भेद्यवत् ॥५४४६॥
विभवो ना धने मोक्षेऽप्यैश्वर्येऽपि पुमान्मत ।
विभाकरोऽग्नौ सूर्ये ना त्रिषु तु स्याद्विभाकृति] ॥५४४ ॥
विभाजन शाकभेदे देवमारिषसञ्ज्ञके ।
विभागन्तुव्यापारे तु नना स्याद्विभाजना ॥५४४८॥
विभावः स्यात्परिचये रसस्योद्दीपनादिषु ।
विभावती सप्तलारयपुष्पव या प्रकीर्तिता ॥५४४९॥
विभावना साधनायामुपल धौ तथा न ना ।
विभावरी निशारा यो कुट्ट या वक्रयोषिति ॥५४५ ॥
विवादे वस्त्रगुण्ठ्या च [स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता] ।
विभावसुर्ना सूर्याग्नी दुषु द्वे शतपत्रके ॥५४५१॥
विभीषण पुमाञ्शक्रे रावणस्याऽनुजेऽपि च ।
विभु कुबेरे [सूर्ये च पुसि ब्रह्मणि शङ्करे] ॥५४५२॥
[त्रिषु स्यात्सर्वगे नित्ये प्रभावपि तथा मत] ।
विभूतिस्तु स्त्रियाम्भूतौ विभोरैश्वर्यसम्पदो ॥५४५३॥
वीतभूतौ तु कथिता विभूतिरभिधेयवत् ।
विभ्रम सशये भ्रा तौ शोभाया वेभ्रमे पुमान् ॥५४५४॥
शृङ्गारचेष्टाभेदे च द्राग्विपर्यासरूपके ।
वीतभ्रमे वय प्रोक्तो विभ्रमश्चाभिधेयवत् ॥५४५५॥
[विमला स्त्री भुवो भेदे शातलायां त्रि निर्मले] ।
विमानो योमयाने च सावभौमगृहेऽपि च ॥५४५६॥
घोटके यानपात्रे च पुनपुसकयोर्मत ।
शिविकायां तथा सप्तभूमिके भवनेऽपि च ॥५४५७॥
विरजा तुद्रदेश्ये स्त्री पूर्भेदे जम्बुपादपे ।
विरला गृध्रनरयारयलतायां स्त्यघने त्रिषु ॥५४५८॥

विराग पुसि वैराग्ये वीतरागे त्रिषु स्मृत ।
विराट छन्दोऽन्तरेषु स्यात्क्षत्रिये तु द्वयोरयम् ॥५४५९॥
अथ विष्णौ तथा यज्ञभेदे पुसि विराड भवेत ।
विरिञ्चिर्ना विरिञ्चश्च वैकुण्ठ परमेष्ठिनि ॥५४६ ॥
विरूढोऽङ्कुरिते जाते [वाच्यवत्परिकीर्त्तित] ।
विरोचनोऽर्के चन्द्रेऽग्नौ प्रह्लादतनयेऽपि च ॥५४६१॥
विरोधी पुसि शत्रौ स्यात्त्रिषु तु स्याद्विरोद्धरि ।
विलग्न कायमध्ये क्ली सक्ते तु त्रिषु कीर्त्तितम् ॥५४६ ॥
विलम्बो विषभेदेऽपि पुमान्प्रोक्तो विलम्बके ।
विलम्बित वञ्चिते स्यात्तथा मन्देऽपि च त्रिषु ॥५४६३॥
विलासशब्दो लीलाया [हारभेदे च ना मत] ।
तथैव भावभेदेऽपि य उक्त श्लिष्टनिक्रिया ॥५४६४॥
विलासी भोगिनि [त्रि स्याद्व्याले चाऽयम्पुमान्मत] ।
विलीन विद्रुतेऽपि स्यात्तथा लीनेऽपि वाच्यवत् ॥५४६५॥
विलेपस्त्वनुलेपार्थद्रव्येऽपि स्याद्विलेपने ।
विलेपी स्त्री मता तस्या यवागूर्वा या घनद्रवा ॥ ४६६॥
विलेपनी सुवेषस्त्रीयवाग्वोरपि योषिति ।
विलेप्या त्रिर्विलेपन्ये विलेप्या तु स्त्रियां मता ॥५४६ ॥
विलोमस्तु प्रतीपे स्याद्भुजङ्गे वरुणे शुनि ।
आमलक्या विलोमी च विलोम चारघट्टके ॥५४६८॥
विवक्षित तु रुचिरे वक्तुमिष्टेऽपि च त्रिषु ।
विवधो वीवध पर्याहारे भारे तथाऽध्वनि ॥५४६९॥
विवर्त्त समुदाये स्यादपवर्त्तननृत्ययो ।
विवशस्त्ववस्वतन्त्रात्मन्यवश्ये च प्रकीर्त्तित ॥५४७ ॥
अरिष्टदुष्टबुद्धौ च त्रिलिङ्ग परिकीर्त्तित ।
विवस्वांस्तु पुमान्सूर्ये द्वे तु देवे नरेऽपि च ॥५४७१॥
वायुदिग्गजहस्तिन्यां पुनस्स्त्री स्याद्विवस्वती ।
विविक्त निर्जने शुद्धे पृथग्भूते विचारिते ॥५४ २॥

असम्बाधेऽपि च तथा वाच्यवत्परिकीर्त्तितम् ।
विवृता क्षुद्ररुग्भेदे विस्तृते त्वभिधेयवत ॥५४ ३॥
विवृत्ताक्ष कुक्कुटे द्वे योगार्थे तु यथायथम् ।
विवेकस्तु पृथक्कारे पृथग्भावे विचारणे ॥५४ ४॥
जलद्रोण्यामपि तथा पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।
विट (श) तु गूथ नना‍ऽङ्कुर्या स्त्री द्वयोर्मर्त्यवैश्ययो ॥५४ ५॥
विशद पाण्डुरे रक्त [स्पष्टे चाऽपि तथा मत] ।
विशय सशये तद्वद्बेश्चापि शयने पुमान् ॥५४ ६॥
विशल्याऽग्निशिखाद न्तीगुडूचीषु स्त्रियां मता ।
नि शल्ये तु विश ल्योऽयमभिधेयवदिष्यते ॥५४ ७॥
क्ली हिंसाया विशसन खड्गे विशसन पुमान् ।
विशाखा ऋक्षभेदेऽपि धारासज्ञ द्रुमाङ्कके ॥५४ ८॥
स्कन्ददेवे स्कन्ददेवपृष्ठजेऽपि सुरान्तरे ।
विशाखान्वितकालेयो जातस्तत्राभिधेयवत् ॥५४ ९॥
विशारदस्त्रिषु बुधे धृष्टे विगतशारदे ।
विशाला त्वि द्रवारुण्यामुज्जयिन्यान्तु योषिति ॥५४८ ॥
मृगपक्षिभिदो पुसि पृथुले त्वभिधेयवत ।
विशालाक्षो हरे तार्क्ष्ये ना सुनेत्रेऽभिधेयवत ॥५४८१॥
विशिख चेतसि क्लीव नि शिखे तु त्रिषु स्मृतम् ।
[पुस्यय विशिख प्रोक्तस्तोमरे च तथा शर] ॥५४८२॥
विशिखा तु खनित्र्यां च रथ्यानलिकयोरपि ।
विशुद्धलवण तु स्यात्सैन्धवे लवणे शुचौ ॥५४८३॥
विशोलिम शशाङ्केऽपि भास्करे पाशकेऽपि च ।
वि दुतन्त्रे तथा पुसि च तुरङ्गेऽपि कीर्त्तित ॥५४८४॥
विशेषोऽतिशये भेदे योगार्थे तु यथायथम् ।
विशेषकस्तु तिलके पुसि क्लीबे च कीर्त्तित ॥५४८५॥
विशेषयितरि त्वेष विशेष्टरि तथा त्रिषु ।
विश्रब्धोऽनुद्भटेऽपि स्याद्दाढविश्वस्तयोस्त्रिषु ॥५४८६॥

विश्लेषस्तु पृथक्कारे विरहेऽपि पुमान्मत ।
विश्वा त्वातिविषाभूम्यो स्त्री शुण्ठ्या क्लीनपुंसकम् ॥५४८ ॥
सर्वनाम त्रि सर्वार्थे क्लीब तु जगति स्मृतम् ।
विश्वे तु देवभदेषु भवेयु पुसि भूमनि ॥५४८८॥
विश्वकर्मा तु सूर्येऽपि विरिञ्चे देववधकौ ।
विश्वगोप्ता तु शक्रेऽपि विष्णावपि पुमान्मत ॥५४८९॥
विश्वप्सा तु पुमाञ्शके [चन्द्रऽग्ना] वान्तरेऽनिले ।
विश्वम्भरोऽच्युते शक्र वह्नौ विश्वम्भरा भुवि ॥५४९ ॥
ना शुण्ठ्या पुसि देवप्रभदेऽप्यखिले त्रिषु ।
विश्वरूप शिवे विष्णावश्वे वाष्ट्र बृहस्पतौ ॥५४९१॥
विश्वरूपा गवि स्त्री स्याद्भूम्नि गायत्रसामनि ।
त्रिरभ्यासेन गीते च यूषुवाच प्रमेत्यचि ॥५४९ ॥
विश्वस्ता विधवाया त्रिस्त्वाप्तविश्वासयोग्ययो ।
विश्वात्मा तु विरिञ्चेऽपि भास्करेऽप प्रकीर्त्तित ॥५४९३॥
विश्वावसुर्ना गन्धर्वभदे रात्रौ स्त्रियां मता ।
विश्वेदेवास्तु सूर्येऽपि वह्नावपि पुमान्मत ॥५४९४॥
[विटशब्दस्तु षकारान्त स्त्रिया पावनविष्ठयो] ।
विषघाती द्वयोराखुजातिभदे त्रियौगिके ॥५४९५॥
विषघ्नी त्रिवृताभार्ङ्गीगुडूचीवृश्चिकालिषु ।
यमनुष्ये विषारौ ना श्लेष्मातकशिरीषयो ॥५४९६॥
विषधरो द्वयो सर्पे पुमान्मेघे प्रकीर्त्तित ।
विषयो गोचरे देशे तथा रूपरसादिके ॥५४९ ॥
पुमाञ्जनपदे नित्यसेवितेऽपि प्रकीर्त्तित ।
विषयी मन्मथे भूपे विषयस्थजनेऽपि ना ॥५४९८॥
विषयासक्तविषयान्वितयोस्त्रीन्द्रिये तु नप् ।
विषा त्वतिविषायां स्त्री क्ष्वेडे न स्त्री जले तु नप ॥५४९९॥
विषाणी क्षीरकाकोल्यामजशृङ्ग्यां च योषिति ।
कुष्ठनामौषधे क्लीब पशुशृङ्गेभदन्तयो ॥५५ ॥

विषाद पुसि चित्तावसादे त्रिविषभक्षके ।
विषायी स्यात्पुमा राज्ञि वैषयिकजनेऽपि च ॥५५ १॥
इन्द्रिये कामदेवे च विषयासक्तपूरुषे ।
विषुव न्नृनपो काले समरात्रिन्दिवे मतम् ॥५५ २॥
क्रतुभेदे त्वय श द पुँल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।
विष्कम्भ प्रातब धे च प्रतिब धस्य साधने ॥५५ ३॥
रूपकाङ्गा तरे योगा तरविस्तारयोरपि ।
विष्किरो द्वे पक्षिमात्रे मयूरे कुक्कुटेऽपि च ॥५५ ४॥
विष्टप् तु स्त्री दिवि प्रोक्ता विष्टप्सूर्ये पुमान्मत ।
विष्टप भुवने देवविमानेऽपि नपुसकम् ॥५५ ५॥
विष्टम्भ प्रतिब धेऽपि स्या स्तोमदशके परे ।
महावैराजसञ्ज्ञस्य साम्न प्रस्तावभक्तित ॥५५ ६॥
विष्टरस्त्वासने वृक्षे दर्भमुष्टौ तथा पुमान् ।
विष्टिर्ना कर्मणि हठा कारिते त्रिषु तत्कृति ॥५५ ॥
स्त्री वाजूवेदनाकालभेदमू यप्रवेशने ।
विष्णुर्मेधे केशवस्यावतारे वामनाभिधे ॥५५ ८॥
च द्रे द्वादशसूर्याणां तथैवान्यतमे पुमान् ।
[यज्ञ तथा केशव च वि णुश द प्रकीर्त्तित] ॥५५ ९॥
विष्णुक्रा ता तु सुमुखीगिरिकर्णिकयोरपि ।
विष्णुगुप्तस्तु कौटिल्ये योगार्थे तु यथायथम् ॥५५१ ॥
क्लीब विष्णुपद योम्नि तीर्थभेदेऽपि कीर्त्तितम् ।
गङ्गाया स्त्री विष्णुपदी रविसङ्क्रमणेषु तु ॥५५११॥
वृषवृश्चिकसिंहेषु कुम्भे च स्त्रीनपुसकम् ।
विष्वक तु सवतोऽर्थेऽ यय नानागतिके त्रिषु ॥५५१२॥
स्त्रीत्वे विषूची तत्रापि स्त्र्येव सा स्याद्रुजा तरे ।
विष्वक्सेना फलिन्या स्त्री विष्वक्सेनस्तु ना हरौ ॥५५१३॥

---

१ रूपकाङ्गप्रभेदे च ब धभवे च योगिनाम् ।

२ विष्टिस्त्रिषु कर्मकरे स्याज्जूवेतनकर्मसु ।

विष्वक्सेनप्रिया लक्ष्म्या वाराह्यामपि योषिति ।
विसर प्रसरे चैव व्रजेऽपि स्यात्पुमानयम् ॥५५१४॥
विसर्गस्तु पुमान्दाने त्यागे च जलनिर्गमे ।
विसर्जनीयेऽप्ययनभेदेऽपि च विभावसो ॥५५१५॥
विसृत विगते चापि तते चाप्यभिधेयवत् ।
विस्तरा वाक्प्रपञ्च स्याद्विस्तारे प्रणयेऽपि च ॥५५१६॥
विस्तारो विस्तृतौ तद्वत्स्तम्बेऽपि च पुमान्मत ।
विस्फुलिङ्गस्त्वग्निकणे विषभेदे तथा पुमान् ॥५५१ ॥
विस्फोट स्फुटनेऽपि स्यान्मसूर्याञ्च तथा पुमान् ।
विस्मयस्त्वद्भुते तद्वद्दर्पेऽपि च पुमान्मत ॥५५१८॥
स्मयेन रहिते त्वेष वाच्यवत्परिकीर्त्तित ।
विस्मापनो ना कुहके गन्धर्वनगरे स्मरे ॥५५१९॥
विस्मितस्त्रिषु निस्मेरे छन्दोभेदे त्वना भवेत ।
विस्रगन्धिस्त्वामगन्धौ हारताले नपुंसकम् ॥५५२ ॥
विस्रब्ध निभृते शस्ये तथा विश्वसिते त्रिषु ।
विस्रम्भ केलिकलहे विश्वासे प्रणयेऽपि च ॥५५२१॥
विस्रा स्त्री हपुषायां क्ली रुधिरे त्वामगन्धिनि ।
विस्वर क्ली विरुद्ध स्यात्स्वरे त्रिर्विकृतस्वरे ॥५५२२॥
विहङ्ग पक्षिणि द्व ना रविचन्द्राम्बुदेषुषु ।
विहगस्त्वेषु दशमे राशौ सर्वग्रहस्थितौ ॥५५२३॥
विहङ्गक पक्षिणि द्वे पर्याहारे विहङ्गिका ।
विहङ्गम पक्षिणि द्वे सूर्ये नाऽथ नृभूमनि ॥५५२४॥
एकादशान्तरभवे निजराणां गणान्तरे ।
विहङ्गिकाया तु स्त्रीत्वे पक्षिण्या च विहङ्गमा ॥५५ ५॥
विहणस्त्वृषिभेदे ना शठ वाच्यवदिष्यते ।
क्लीब विहनन विघ्ने पिञ्जनेऽपि वधेऽपि च ॥५५ ६॥
तथा कार्पासतूलादेर्विघातेऽपि प्रकीर्त्तितम् ।
विहव्या इष्टकाभित्सु स्त्री क्ली ऋक्सूक्तभिद्यपि ॥५५२७॥

विहस्तस्त्रिषु व्यग्रे निर्हस्ते ना नपुसके ।
विहा वसत्यामपि च विहगेषु भवे स्त्रियाम् ॥५५२८॥
विहाया योम्नि नृनपोर्विहगे तु द्वयोर्मत ।
विहायसस्तु नृनपो योम्नि पक्षिणि तु द्वयो ॥५५२९॥
विहाया महति स्तेने त्रिषु व्यापरि वञ्चके ।
विहारो भ्रमणे स्कन्ध लीलायां सुगतालये ॥५५३ ॥
वैजयन्ते पुमा द्वे तु विन्दुरेखकपक्षिणि ।
विहेठन तु हिंसाया मदने च विडम्बने ॥५५३१॥
विह्वलस्त्रिर्विक्लवे स्यात् रसगन्धे च पुम् स्मृत ।
वीको वायौ वसन्तेऽर्थे नाशे वीका द्वशोर्मले ॥५५३२॥
द्वयो पक्षिणि चित्ते तु वीक पुसि विदु परे ।
वीकाशस्तु प्रकाशेऽपि (तथा प्रोक्तो रहस्यपि) ॥५५३३॥
वीक्षो वीक्षा विस्मये द्व वीक्षा स्याद्वीक्षणे स्त्रियाम् ।
वीक्षण दर्शने नेत्रे [नपुसकमुदीरितम् ॥५५३४॥
वीक्ष्य तु विस्मये दृश्ये पुसि लासकवादिनो ।
वीङ्खा लास्यान्तरे स धौ कपिकच्छवामपि स्त्रियाम् ॥५५३५॥
वीचि स्त्रीपुसयोरूर्मौ लेशे पङ्क्तौ तथा मता ।
सुखेऽवकाशे किरण [सुखे] वी यपि च स्त्रियाम् ॥५५३६॥
वीजनस्तु द्वयो शकजीवजीवकपक्षिणो ।
वीजन न्यजने वस्तुन्याप व्यजनचालने ॥५५३ ॥
वीटक स्याच्च ताम्बूले वीटिका तु स्त्रिया मता ।
कञ्चुक्यादेब घनेऽपि ताम्बूलादिकवेष्टने ॥५५३८॥
वीडुद्दढे मेघवत्स्याद्बले तु स्यान्नपुसकम् ।
वीणा विद्युति वल्लक्या ग्रहयोगान्तरे तथा ॥५५३९॥
नदीभेदेऽपि च स्त्रीत्वे कीर्त्तिता सरिदन्तरे ।
वीणावादस्त्रि वीणायां वादके वादने तु ना ॥५५४ ॥
वीत न्वसारे हस्त्यश्वे हस्त्यारोहाङ्घ्रिकर्मणि ।
वीतस्तु वा यवत्प्रोक्तो गते शान्ते त्रिषु न्वथ ॥५५४१॥

गतिकान्त्यशनादा विगतावङ्कुशवारणे ।
वीतरागो जिन बुद्धे ना रागरहित त्रिषु ॥५५४२॥
वीतशोकोऽशोकवृक्षे वीतशोका तु पूर्भिदि ।
वीतह्व्यो नृपभिदि कृष्णेऽपि च पुमान्मत ॥५५४३॥
वीतिर्द्वीप्तौ गतौ धावनेऽशने प्रजने स्त्रियाम् ।
वीतिहोत्रोऽनलेऽर्के ना नृभूम्नि क्षत्रियान्तरे ॥५५४४॥
वीथी तु पङ्क्तौ मार्गे च गृहाङ्गे रूपकान्तरे ।
वीन्ध्रोऽन्ध्रान्यनिले ना क्ली नभसि त्रिस्तु निर्मले ॥५५४५॥
वीर शिवकुबेरेन्द्रराहुस्कन्दसुतेषु ना ।
अग्निभेदे तप पुत्रे यज्ञाग्नावर्जुनद्रुमे ॥५५४६॥
रक्तालुके महावीरजिने स्यात्तान्त्रिकान्तरे ।
वीरा तु मलपूक्षीरविदारीदुग्धिकासु च ॥५५४ ॥
गम्भारीक्षीरकाकोलीतामलक्येलवालुके ।
रम्भायां च सुरायां च पतिपुत्रवती स्त्रियाम् ॥५५४८॥
वीर तु शृङ्गीशृङ्गाटनतोशीरारुके नले ।
क्लीब पुष्करमूलेऽपि मरिचे काञ्जिके तथा ॥५५४९॥
त्रि तु शूरे परे पक्षिक्षेपके विगते रणे ।
पक्षिक्षपे तु निक्षेपे वीरा वीर इति द्वयो ॥५५५ ॥
शरे वीरतर पुसि शवे त केचिदूचिरे ।
वीरणे क्ली वीरतर वीरश्रेष्ठ पुनस्त्रिषु ॥५५५१॥
अथ वीरतरु शृङ्गाटकोशीरनडार्जुने ।
भल्लातकेऽपि पुल्लिङ्ग करवीरेऽपि चेष्यते ॥५५५२॥
नयान्तरे मयूरे तु द्वयोर्वीरन्धरो मत ।
वीरभद्रोऽश्वमेधाश्वे वीरश्रेष्ठ च वीरणे ॥५५५३॥
रुद्रान्तरे शिवस्यापि कीर्त्तितोऽनुचरान्तरे ।
स्याद्वीरललित वीरक्रीडाच्छन्दोभिदोरपि ॥५५५४॥
वीरलोको वीरजने वीरावासे तथा मत ।
वीरवान् वीरयुक्ते त्रिर्वीर्यवत्यपि च क्वचित ॥५५५५॥

स्त्रीत्वे वीरवती गन्धद्रव्यभेदाऽपगाभिदो ।
वीरवृक्षो बिल्वधान्यभिदोभल्लातकेऽर्जुने ॥५५५६॥
वीरसेनो नलपिता आरूकफले तु नपुं ॥
वीरहा त्रिषु वीरारो ना तूत्सन्नाग्निहोत्रिणि ॥५५५ ॥
वीराशसनमाजेभूर्या स्यादतिभयप्रदा ।
तस्या तथैव वीरस्याशसनेऽपि नपुसकम ॥५५५८॥
वीरिणी वीरमातर्यप्यसिक यां दक्षयोषति ।
सरिद्भेदे वीरिणीति यस्या नामान्तर विदु ॥५५५९॥
वीरेन्द्रो वीरवर्ये स्याद्वीरेन्द्री योगिनीभिदि ।
वीरोज्झो योऽग्निहोत्री सन्नाऽब्दमग्निं जुहोत्यसौ ॥५५६ ॥
वीरस्य तूज्झके चैष वीरोज्झो वा यव मत ।
वीर्यं रेतोऽभशक्त्याह्वबलशौर्यपराक्रमे ॥५५६१॥
दीप्तिमाहात्म्ययो क्लीब स्त्रीवीर्याऽतिबलौषधे ।
वीवधो विवध पर्याहारे भारे तथाऽध्वनि ॥५५६२॥
वीश स्याद्विंशतिपलमाने पुँल्लिङ्ग एष तु ।
वृक सूर्ये दुवज्रेषु जठराग्नौ बकद्रुमे ॥५५६३॥
नृभूम्नि देशभेदे स्याद्वृक क्लीब हले मतम् ।
त्रिषु स्तेने च धूर्त्ते च द्वयोस्त्वीहामृगे शुनि ॥५५६४॥
काकोलूकशृगालेषु क्षत्रियेऽपि वृको वृकी ।
वृकी तु वृद्धवाशि या स्त्रियामेव निरुप्यते ॥५५६५॥
वृका वृकीति द्वितयमम्बष्ठाया प्रकीर्त्तिता ।
वृकधूप कृत्रिमश्रीपिष्टनिर्यासयोर्मत ॥५५६६॥
वृकधूपस्तु सरलद्रवकृत्रिमधूपयो ।
वृकलो वल्कले स्त्री तु अन्त्रे च वृकला स्मृता ॥५५६ ॥
द्वाराध काष्ठपार्श्वे स्त्री वृकवाला प्रकीर्त्तिता ।
वृकोदरो भीमे भूम्नि प्रमथाना गणान्तरे ॥५५६८॥
वृक्षादनश्चलदले मधुच्छत्रकुठारयो ।
वृक्षादनी तु वन्दाया विदारीकन्दकेऽपि च ॥५५६९॥

वृक्षावासो भिक्षुभेदे पक्षिणि त्वनपुंसके ।
वृक्षेशयास्त्वहिशय द्वयो सर्पान्तरे मत ॥५५ ॥
वृजिन क्ली बले पापे केशेऽथ कुटिले त्रिषु ।
वृत धने वान्यवस्तु तत्र यद्वरण कृतम् ॥५५ १॥
वृतिर्निरोधे सम्भक्तावपि चानेष्टके स्त्रियाम् ।
धात्वोस्तु यत्तता नापि वृयतौ च पुमानयम् ॥५५ ॥
वृत्तोऽतीतेऽप्यधीतेऽतिवर्त्तुलेऽपि वृते मृते ।
दृढेऽन्यलिङ्ग वा क्लीब छन्दश्चारित्रवृत्तिषु ॥५५ ३॥
वृत्त कूर्मे द्वयो [र्नस्त्री सम्भक्तौ च स्वरूपके] ।
वृत्ता महाकोशातक्या रेणुकाझिङ्झरिष्टयो ॥५५७४॥
प्रियङ्गौ मासरोहिण्या छन्दोभेदे तथा स्त्रियाम् ।
वृत्तक श्रमणे द्वे स्यादवृत्तक गद्यभिद्यपि ॥५५ ५॥
वृत्तपर्णी महापूवशणपुष्प्यौषधे तथा ।
पाठाख्यभेषजऽप्येषा स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥५५ ६॥
वृत्तपुष्प कदम्बेऽपि शिरीषे चैव मुद्गरे ।
दाडिमे बदरे वृत्तफल क्ली मरिचे मत ॥५५ ॥
हरीतक्या तु वृन्ताके स्त्रियां कर्कटिकान्तरे ।
वृत्तभङ्गश्चरित्रस्य छन्दसश्चैव विप्लवे ॥५५७८॥
अर्कपर्णेऽपि मल्ल्या च स्त्रियां स्याद्वृत्तमल्लिका ।
वृत्तान्त प्रक्रियाया स्यात्कार्त्स्न्येवार्त्ताप्रभेदयो ॥५५ ९॥
वृत्तार्ध छन्दसोऽर्धेऽपि वर्त्तुलार्धे तथा मतम् ।
वृत्तिस्तु वर्त्तने कृष्या मारभट्यादिकेष्वपि ॥५५ ॥
शब्दोच्चारणधर्मेषु द्रुतमध्यादिषु त्रिषु ।
ऋक्पादस्याप्युपान्तेऽप्यप्रतिबन्धप्रवर्त्तने ॥५५८१॥
व्याख्याने ग्रन्थभेदे च सामगीतिगुणान्तरे ।
कृत्तद्धितादावभिधादौ च मल्लीरुजोरपि ॥५५८२॥
सम्भक्तौ मरणे चापि स्त्रीलिङ्ग परिकीर्त्तिता ।
वृत्र धने ध्वनौ पापे वृत्रो दैत्यान्तरे गिरौ ॥५५८३॥

मेघेऽन्धकारे शत्रौ च पुंलिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
वृथाजातो द्विजे यज्ञयागिनि त्रि तु यौगिके ॥५५८४॥
वृद्धो वैवस्वते क्ली तु शैलेये स्थविरे त्रिषु ।
त्रिमात्रसामवर्णे च स्यादेधितमनीषिणो ॥५५८५॥
गजे त्वशीतिवर्षे द्वे वृद्धापत्ये तथा मतः ।
वृद्धदारक उक्तो ना छगलान्त्यारण्यभेषजे ॥५५८६॥
जीर्णभार्ये तु वृद्धस्य भेदकेऽपि त्रिषु स्मृतः ।
वृद्धधूपः शिरीषेऽपि श्रीवासेऽपि पुमान् मतः ॥५५८ ॥
वृद्धश्रवाः पुमानिन्द्रे महायशसि वाच्यवत् ।
वृद्धावस्कन्दी तु पुंसि शक्रे त्रिषु तु यौगिके ॥५५८८॥
वृद्धिस्तु वर्धने योगेऽप्यष्टवगौषधान्तरे ।
कालान्तरे चाभ्युदये समृद्धावपि योषिति ॥५५८९॥
ऋणातिरिक्तदातव्ये प्रयोक्त्रे पुत्रजन्मनि ।
मुष्कवृद्धयात्मके वर्ध्मसंज्ञे रोगान्तरेऽपि च ॥५५९ ॥
वृधः सुहृदि सौहार्दे त्रिस्तु सौहार्दकारिणि ।
वृधसानस्तु पुरुषे मृत्यौ भूमिधनेऽपि च ॥५५९१॥
अथाभिधेयवद्वृद्धिशालिन्येष प्रकीर्त्तितः ।
वृधसानुः पुमान् पत्रे पुरुषे च कृतावपि ॥५५९२॥
वृन्तं तरूणां प्रसवबन्धने चूचुकेऽपि च ।
शल्कादिमूलेऽपि घटीधारायां च नपुंसकम् ॥५५९३॥
कालिङ्गसङ्गवन्त्यां तु वृन्ताके वृन्तमिष्यते ।
वृन्तो वृन्तीति च स्त्रीपुंसयोजन्त्वन्तरे मतः ॥५५९४।
वृन्ता छन्दोविशेषेऽपि तथैव स्थावरान्तरे ।
वृन्दं कदम्बे तौर्यत्रिकिणां सङ्घे तथा मतम् ॥५५९५॥
वृन्दस्त्वर्बुदसंख्यायां [समूहेऽपि पुमानथ] ।
वृन्दा तु तुलसीस्तम्बे राधायां च प्रकीर्त्तिता ॥५५९६॥
जलन्धरस्य पत्न्यां च जिनशक्त्यन्तरेऽपि च ।
वृन्दारकस्त्रिषु श्रेष्ठे तत्र वृन्दारका तथा ॥५५९७॥

वृन्दारिका मता स्त्रीत्वे द्वयोर्देवे प्रकीर्त्तिता ।
वृन्दावनं तु मथुरोपशल्यारण्यमिह्यथ ॥५५९८॥
वृन्दावनी तु तुलसीस्तम्भे स्त्री परिकीर्त्तिता ।
वृन्दावनेश्वरः कृष्णे राधा वृन्दावनेश्वरी ॥५५९९॥
वृशः स्यादटरूषे ना वृशा स्तम्बान्तरे मता ।
भौमायार्कार्पिते तत्र या च श्वेतपुनर्नवा ॥५६ ॥
वृश्चिकस्तु द्रुणे राशौ पुमान् स्यान्मदनद्रुमे ।
अग्रहायणमासेऽपि हालिकेऽपि प्रकीर्त्तित ॥५६ १॥
वृश्चिका तु द्वयोस्तत्र याऽसौ श्वेतपुनर्नवा ।
वृश्चिकी तु द्वयोः शूककीटेऽथो वृश्चिकी तथा ॥५६ ॥
वृश्चिका च मता पादाङ्गुलीये स्त्रीत्व एव सा ।
वृश्चिकाली स्त्रियामुष्ट्रधूम्रपुच्छधान्यभेषजे ॥५६ ३॥
वृश्चिकालं वृश्चिकस्य क्लीबं स्यात्तु छकण्टके ।
वृषः आर्द्रक ओषध्यां बलेऽपि लशुनेऽपि च ॥५६ ४॥
वृत्तौ मुष्कफलयोः कोष्ठावयवभेदयोः ।
उक्ष्णि धर्मे बलीवर्दे पुंसि शक्रे बृहस्पतौ ॥५६ ५॥
मेषाद् द्वितीयराशौ च बले कर्णे शिवे हरौ ।
सूर्ये रेतसि कामेक्षु या च चित्रपुनर्नवा ॥५६ ६॥
तत्र हैमवते कन्दविशेषे मन्दिरान्तरे ।
वास्तुस्थानान्तरे पञ्चदशेऽब्दे च बृहस्पतेः ॥५६ ॥
शत्रौ साध्यान्तरेऽध्यक्षे करणस्य चतुष्पदः ।
वाच्यवत्तुकुले श्रेष्ठे तस्या स्याद्भूरिरेतसि ॥५६ ८॥
द्वन्द्वं त्वश्वे मूषिके देवे क्ली त्वन्तःपुररेतसोः ।
वृषा स्त्री कदली ऋद्ध्यौषधन्यग्रोधिकास्वपि ॥५६ ९॥
कपिकच्छ्वां वृषाऽप्यषाऽटरूषे कैश्चिदिष्यते ।
सामभदेऽप्यथ हरीतक्यां चापि प्रकीर्त्तिता ॥५६१ ॥
वृसी तु कैश्चिद्भ्रमतो वृषीति परिकीर्त्तिता ।
वृषा मूषिकपर्ण्यां च मुनीनामासने वृषी ॥५६११॥

---

१ पुमान्मतः ।

छन्दोभेदे निदानोक्तेऽप्यष्टपञ्चाशदक्षरे।
वृषकं सामभेदे स्याद्वृषकस्तूद्भिदन्तरे ॥५६१२॥
वृषकर्मा तु योगेऽथायुधो मन्त्रान्तरे पुमान्।
वृषणोऽस्त्र्यण्डकोशोऽण्डौ वृषणौ वृषणः शिवे ॥५६१३॥
वृषणश्वो वर्षकाश्व इन्द्रेऽपीन्द्राश्व एव च।
वृषण्वसुः पुमानिन्द्रे वृषण्वसु तु तद्धने ॥५६१४॥
वृषध्वजः शिवे पुंसि दुर्गायां तु वृषध्वजा।
वृषपर्वा कशेरौ च क्रमुके केशरे शिवे ॥५६१५॥
वृषभस्तूक्ष्णि शक्रेऽपि वृषराशौ श्रवे बिले।
वृषकेतू मुहूर्तेऽष्टाविंशे चाप्यहदन्तरे ॥५६१६॥
दशघ्ननृपतौ कृष्णनिहते चासुरान्तरे।
अद्रिभेदेऽथ वृषभा स्वार्षभे सरिदन्तरे ॥५६१ ॥
वृषभी विधवायां च कपिकच्छ्वां प्रकीर्त्तिता।
स पुंस्त्वे तूत्तरः श्रेष्ठे वृषभो वाच्यवन्मतः ॥५६१८॥
शिवेऽपि चाद्रिभेदेऽपि पुमान्स्याद्वृषभध्वजः।
वृषलो वृषभे शूद्रे च द्रगुसनृपे नदे ॥५६१९॥
पलाण्डुभेदेऽथ हये द्वे स्त्री स्याद्धारयोषित।
वृषलण्डी तु पिप्पल्यां स्त्री न स्त्री वृषवर्चसि ॥५६२ ॥
वृषाकपिस्तु पुंसीन्द्रेऽप्यग्नौ सूर्ये हरे हरौ।
सूक्तान्तरे रुद्रभेदे स्यादिन्द्रतनयेऽपि च ॥५६२१॥
वृषाकपाय्युमास्वाहाश्रीशचीपृषसि स्त्रियाम्।
शतावर्यां च जीवन्त्यामोतौ तु द्व वृषाकपि ॥५६२२॥
वृषाङ्कः क्लीबभल्लातमहद्वशिवसाधुषु।
वृषाणकः शिवे ऋष्यन्तरेऽपि प्रमथान्तरे ॥५६२३॥
वृष्टिस्तु वर्षणेऽप्येकाहान्तरेऽपि स्त्रियां मता।
त्रिषु वृष्टिसनिर्वृष्टिदातरि क्लीबह्नु वके ॥५६२४॥
ता इष्टकान्तरे वृष्टिसनयः परिकीर्त्तिता।
वृष्णिश्चण्डेऽपि पाषण्डे स पुंस्त्वे वाच्यवन्मतः ॥५६२५॥

वृष्णाय पाण्डवेषु स्युर्यदुष्वपि नृभूमनि ।
वृष्णिर्द्वे गविमेषेऽथ किरणे मारुते शिवे ॥५६२६॥
अग्नाविन्द्रे च कृष्णे च वृष्णि पुंसि प्रकीर्त्तित ।
वृष्णयस्तु वर्षके त्रि स्याद्वृष्ण्य पुंस्त्वे नपुंसकम् ॥५६२ ॥
वृष्य इक्षौ माषधान्ये ना त्रि स्याच्छुक्रवर्धके ।
वृष्या शतावरीपथ्याविदारीवृद्धिभेषजे ॥५६ ८॥
वृष्य नपुंसक प्रोक्त विदारीसञ्ज्ञभेषजे ।
वेकटो मणिकारे ना यूनि चैव विदूषके ॥५६२९॥
द्वयोस्तु मत्स्यभेदे स्याद्वकट त्वद्भुतेऽन्ययम् ।
वेगो जवे प्रवाहे च महाकालफलेऽपि च ॥५६३ ॥
पुमान्मूलादिप्रवृत्तौ स्याद्रेतो रोगवायुषु ।
वेगवान्द्वे तरक्षौ स्त्री वेगवत्योषधीभिदि ॥५६३१॥
छन्दोऽन्तरे सरिद्भेदे त्रिस्तु वेगिनि वेगवान् ।
वेगी वायौ पुमाञ्श्येने द्वयोर्वेगवति त्रिषु ॥५६३२॥
स्याद्वेजन सप्तदशेऽग्नौ यूपस्य मूलत ।
अरत्रय सप्तदशपदीया सरण्यया मता ॥५६३३॥
अना तु वेजयत्यर्थे क्लीब तु चलने भये ।
वेटी स्त्री ना विवेटस्तु पुमाञ्शब्दे प्रकीर्त्तित ॥५६३४॥
वेडा नावि स्त्रियां वेड सान्द्रविच्छिन्नचन्दने ।
वेणस्तु द्वे मनुष्याणा जातिभेदे प्रकीर्त्तित ॥५६३५॥
पुत्रे वैदेहकाऽम्बष्ठयोर्वेन नाम्न्येव जीवति ।
लङ्घनप्लवनाद्यै स्यात्तग्रराज्ञीसुतेऽपि च ॥५६३६॥
मायासमोहनादीनि वृत्तिस्तस्य भवेद्यदि ।
केषाञ्चिद्वेणुकारेऽपि वेणस्त्रीपुंसयोर्मत ॥५६३७॥
वेणा तु नृ स्त्रियां ज्ञातिनिशामनगतिष्वपि ।
चिन्तायामपि वादित्रग्रहणेऽपि सरिद्भिदि ॥५६३८॥

---

१ वृष्या स्त्रियां विदार्यां स्याद्वृद्धिसञ्ज्ञे च भषजे ।
२ वेगो रहसि किंपाके पि प्रभावप्रवाहयो ।
तथा रेतसि वायौ च पुंल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥
३ वेगी तु मारुते पुंसि त्रिषु वेगवति स्मृत ।

वेणि (णी) व्यांघौ केशब धे जन या च सरित्यपि।
वेणिजलस्रुतौ केशब धभेदे लतान्तरे ॥५६३९॥
देवताडाह्वये मध्ये नद्यादेरपि च स्त्रियाम्।
वेणिस्तु वेणतौ धातौ पुल्लिङ्गे परिकीर्त्तित ॥५६४ ॥
वेणिका स्त्री मता वेण्या नरजात्य तरे नृभू।
वेणुनृपा तरे त्वक्सारेऽपि वाद्यान्तरे पुमान् ॥५६४१॥
वेणुक गजतोत्रे स्याद्वशवाद्ये तु वेणुका।
स्त्रीपुसयोर्वेणुकी स्या निषादी क्षत्रियोद्भवे ॥५६४२॥
अथ स्त्री वेणुका स्यादुद्भिद्भेदे विषवल्फले।
सरिद्भेदेऽथ पुभूम्नि नृजातिभिदि वेणुका ॥५६४३॥
वेणुजो वेणुबीजे स्याद्वेणुज मरिचे मतम्।
नागभेदे द्वयो स्त्री तु तृणभिद्वेणुपत्रिका ॥५६४४॥
ना ज्योतिष्मत्सुते स्त्री वेणुमती सरिद तरे।
वेणुबीजे वेणुयवो तथा वेणुयवी स्त्रियाम् ॥५६४५॥
वेतस्तु वेत्रे वेता तु वेतने परिकीर्त्तित ।
वेतण्डो द्वे गजे वेतण्डा दुर्गायां प्रकीर्त्तिता ॥५६४६॥
वेतन रजते मूल्ये भृतावपि नपुसकम्।
वेतसी निचुले द्वे स्याद्वेतस छुरिका तरे ॥५६४७॥
वेतस्वती तु स्त्रीनद्यां त्रिषु स्याद्बहुवेतसे।
वेतालाऽपि च वेताली दुर्गा प्रेता तरे तु ना ॥५६४८॥
वेत्रोऽस्त्री स्तम्बभेदे क्ली यष्टौ वश्यङ्गभिद्यपि।
वेत्रवत्यापगाभेदे दुर्गा चित्ररथीति या ॥५६४९॥
तत्र वेत्रासुरस्यापि मातरि स्त्रीत्व इष्यते।
वेत्री तु द्वारपाले द्वे त्रिषु वेत्रवति स्मृत ॥५६५ ॥
वेद श्रुतौ चतु सख्या विष्वोर्वित्त प्रकीर्त्तित ।
कुशे मुञ्जेऽपि वेदा तु नदीभेदे प्रकीर्त्तिता ॥५६५१॥
वेदकर्त्ता शिवे विष्णौ सूर्येऽपि च पुमान्मत ।
वेदगर्भो द्वयोर्विप्रे पुमास्तु ब्रह्मणि स्मृत ॥५६५२॥

वेदगर्भा पुन स्त्रीत्वे सरस्वत्यां प्रकीर्त्तिता ।
वेदन तु न ना ज्ञाने तथानुभवपीडयो ॥५६५३॥
नपुसक तु सत्तायां तथा लाभावचारयो ।
वेदमाता तु गायत्री सावित्री च सरस्वती ॥५६५४॥
नदीभेदे वेद्वती श्रीसीताद्रौपदीषु च ।
ऋषौ क्वचिद्वेदशिरा क्लीब तूपनिषत्स्वपि ॥५६५५॥
वेद सान्त मत ज्ञाने [नपुसकमिदम्भवेत्] ।
वेदाङ्ग षटसु शिक्षादिष्वथ सूर्ये पुमा मत ॥५६५६॥
आदित्याना द्वादशानां तथैव क्वचिदिष्यते ।
वेदात्मा तु पुमान्विष्णौ सूर्ये ब्रह्मण्यपीष्यते ॥५६५७॥
वेदिर्वितर्दौ यागाय परिष्कृतभुवि स्त्रियाम् ।
चतुष्कोणाऽग्निकुण्डेऽग्निकुण्डे वेदयतौ तु ना ॥५६५८॥
पुमांस्तु पण्डितेऽपि स्या [मुद्रायामङ्गुले स्त्रियाम्] ।
वेदिकाङ्गुलिमुद्राया स्त्रीत्वे वेद्यामपीष्यते ॥५६५९॥
अम्बष्ठाया पुनर्वेदि क्लीबलिङ्ग प्रकीर्त्तितम् ।
वेदी तु ब्रह्मणि पुमा वेदिनी स्त्री सरिद्भिदि ॥५६६ ॥
वेद्य तु वेदै सबद्धे वेदितव्येऽपि वाच्यवत् ।
ज्ञानकार्ये तु वेद्या सा स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥५६६१॥
वेधश्छेदे ग्रहादीनां दशने धातुमिश्रणे ।
शतत्रुट्यात्मकलवन्त्यशमाने तथा पुमान् ॥५६६२॥
वेधा पुनर्भकारे सा स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ।
वेधक व्यद्धरि त्रि स्यात्क्ली धान्याके च सैन्धवे ॥५६६३॥
वेधक पुसि कर्पूरे चन्दने चाम्लवेतसे ।
वेधन यधने स्त्रीत्वास्फोटन्या वेधनी मता ॥५६६४॥
वेधमुख्या तु कस्तूर्यां ना तु कर्चूरके भवेत् ।
वेधा विदुषि सर्वज्ञे त्रिर्ना देशे हरौ विधौ ॥५६६५॥
[पर्णद्रुसूर्यधर्मेषु प्रणेतरि तथा पुमान्] ।
वेध्यम्लवेतसे वेधिनी तु मेथीजलौकसो ॥५६६६॥

वेध्य शरव्ये क्लीब स्याद्वेध्या वाद्यान्तरे मता ।
वेनो द्वयोजनेऽम्बष्ठीवैदेहकसमुद्भवे ॥५६६ ॥
स्यात्पारधैनुके चापि वैदेह्याम्बष्ठजेऽपि च ।
ना तु यज्ञप्रजापत्योर्ध्यानिमेधाविनोरयम् ॥५६६८॥
[पुसीन्द्रे च पृथुपितर्यथ स्त्री पाण्डुरोगके] ।
वेर न स्त्री शरीरे क्ली वार्त्ताकौ कुङ्कुमे मुखे ॥५६६९॥
वेरट चूचुके क्लीब त्रिर्मिश्रीकृतनीचयो ।
(वेलश्चूते) पुमानेतत्फले तु स्यान्नपुसकम् ॥५६ ॥
उद्यानेऽपि च बौद्धानां महासरण्यान्तरे तथा ।
वेला कूले समुद्रस्य तदम्बुविकृतावपि ॥५६ १॥
तरङ्ग वसरे काले व्यवस्थायामपि स्त्रियाम् ।
अक्लिष्टमरणे रागे ईश्वरस्य च भोजने ॥५६ २॥
वेग रागेऽपि केशाश्वि स्वाध्याये दन्तमांसके ।
बुधपत्न्यां मेरुपुत्र्या समुद्रस्य च योषिति ॥५६ ३॥
वेल्लन स्याद्विलुठने दूर्वाभेदे स्त्रियाम्मता ।
वेल्ला तु वेल्लने नृस्त्री विडङ्गे तु नपुसकम् ॥५६७४॥
वेल्लित गमने क्लीब कुटिले विधुते त्रिषु ।
वेश प्रवेशे नेपथ्ये वेश्यावासे गृहेऽपि च ॥५६ ५॥
पटगेहे तथा वेश्याकर्मण्यपि पुमान्मत ।
अथोग्रीवैश्यजे द्व स्याद्वेशके तु त्रिषु स्मृत ॥५६ ६॥
वेशन्त पल्वले चापि तथाकाशे प्रकीर्त्तित ।
वेशवार पिष्टमांसविशेषे चाप्युपस्करे ।५६७ ॥
वेश्मको वेश्मसम्बद्धे त्रिनृभूम्नि नृजातिषु ।
वेश्म स्यान्मन्दिरे राशौ तुर्यराशौ च लग्नत ॥५६ ८॥
वेश्या मल्लीगणिकयो पाठाच्छदोभिदोरथ ।
क्ली वेश्यागेहम लीभेदयोस्त्रिर्वेशयोगिनि ॥५६ ९॥
वेष क्रियायामाकल्पे पुल्लिङ्गऽपि प्रकीर्त्तित ।
वेषस्त्रिविष्टपे रूपे क्लीब तु व्योम्नि वारिणि ॥५६८ ॥

वेष्ट श्रीवेष्टनिर्यासे वेष्टा स्याद्वष्टने द्वयो ।
वेष्टक तु शिरोवेष्टनिर्यासेऽपि नपुसकम् ॥५६८१॥
कूष्माण्डे तु पुमान्श दद्विल्वे स्यादितियोगत ।
वेष्टन मुकुट वाट उष्णीपे कणशष्कुलौ ॥५६८२॥
तथा परिवृते चापि गुग्गुलौ च नपुसकम् ।
वेष्टित त्रिषु रद्धे क्ली लासके करणान्तरे ॥५६८३॥
वेसरोऽश्वतरे स्त्रीपुसयो क्लीब तु वासरे ।
वेसवार पिष्टमासविशेषे चाप्युपस्करे ॥५६८४॥
वै स्यात्सम्बोधने पादपूरणेऽनुनयेऽपि च ।
वैकङ्कतस्त्रिषु विकङ्कताज्जाते द्रुमे न ना ॥५६८५॥
वैकक्ष्य पुष्पमान्येऽपि तिर्यग्वक्षसि धारिते ।
तथा प्रावरणे चापि वैकक्ष कस्यचिन्मते ॥५६८६॥
वैकर्त्तनो यमे कर्णे सुग्रीवेऽपि शनैश्वरे ।
वैकुण्ठ केशवे शक्रे पुल्लिङ्गस्तुलसीद्रुमे ॥५६८ ॥
तालभेदे चतुर्विशब्रह्ममासदिनेऽपि च ।
अस्त्री तु विष्णुलोके वैकुण्ठा शक्त्यन्तरे हरे ॥५६८८॥
वैखानसो द्वयोर्वानप्रस्थेप्यपिषु केषुचित ।
वम्रेऽपि तारकाभेदे ना नृभूऋषिभिस्तु च ॥५६८९॥
वैष्णवानां प्रभेदेषु क्वचिद्वैखानसा मता ।
क्ली सामभेदे त्रिर्वैखानससम्बन्धिनि स्मृत ॥५६९ ॥
वैदूर्यो रत्नभेदेऽस्त्री पुमा स्यात्पर्वतान्तरे ।
वैजयन्ती पताकायां तर्कार्यां स्त्री हरिस्रजि ॥५६९१॥
वैण सामान्तरे द्वे तु वेणुकृत्सङ्करान्तरे ।
वैणवो वेणुबीजेऽपि वशीवाद्ये पुमान्मत ॥५६९२॥
वैणवी तु स्त्रियां वीणातुगाक्षीर्यो प्रकीर्त्तिता ।
वैणव स्याद्वेणुफले स्वर्णे वेणुतटोद्भवे ॥५६९३॥
वर्षान्तरे कुशद्वीपे तथा स्यात्सामभेदयो ।
द्वयोस्तु ब्राह्मणीमाहिष्यजे स्यात्सङ्करान्तरे ॥५६९४॥

---

१ वैजयन्तो गुहे शक्रस्य प्रासादे ध्वजे पि च ।
वैखुर्क स्निग्धतैले च हेतौ सचौऽङ्कुरे तु ना ॥

वैधृतो योगभदे स्याद् द्र चैकादशा तरे ।
वासिष्ठसामभेदे तु नैधृत स्यान्नपुसकम् ॥५ ९॥
वैधेयस्त्रिषु मूर्खे नृभूयजु शाखिभित्सु च ।
वैनतेयस्तु गरुडे ना प्रभाकरसारथौ ॥५ १ ॥
वैनाशिकस्तु बौद्धेऽपि योतविल्लूतयोरपि ।
वैनाशिक तु लग्ना क्ली त्रयोर्विशगृहे मतम् ॥५ ११॥
वैभ्राजो लोकभदेऽपि विष्वक्सेनेऽद्रिभिद्यपि ।
देवोद्यानविशेषे तु तत्सरोभिदि चापि नप ॥५ ॥
वैम यो विमताप ये विमतत्वे पुननपि ।
वैयश्वो विश्वमनसि वैयश्व सामभिद्यपि ॥५ १३॥
वैयाघ्रस्तु रथे याघ्रचर्माच्छ ने त्रियौगिके ।
याघ्रचर्मणि तु क्लीब वैयाघ्र परिकीर्त्तितम् ॥५ १४॥
वैराज सामभेद क्ली क पलोकभिदोस्तु ना ।
वैराट शक्रगोपे द्वे वैराट रत्नभिद्यपि ॥५ १५॥
वैराटस्तु विराटस्यापत्यादौ वा यव मत ।
वैरिण त्रिर्वीरणन सम्बद्धे परिकीर्त्तितम् ॥५७१६॥
वैरी शत्रौ तथैव स्याद्वैरवत्यभिधेयवत् ।
वैरोचनिस्तु सुगते वलिदैत्यार्कपत्रयो ॥५ १७॥
वैवस्वत शनियमरुद्राभ मनुभित्स्वपि ।
वैवस्वती दक्षिणस्यां यमुनायामपि स्मृता ॥५ १८॥
वैश तापि च वैश ता पल्वले स्त्रीत्व इष्यते ।
वैश तयोगिनि पुनर्वंश त वाच्यव मतम् ॥५ १९॥
शौकनासे यासशिष्ये वैशम्पायन इष्यते ।
वैशस वैकृतविपन्नरके नरका तरे ॥५ २ ॥
वैशाखो म थदण्डेऽपि पुमा माधवमासि च ।
वर्षाणा द्वादशानाञ्च सप्तमे स्याद्बृहस्पते ॥५ २१॥
अस्त्री तु ध विनां यत्र त्रिवितस्त्य तरौ पदौ ।
तत्र स्यात्स्थितिभेदे च वैशाली तु स्त्रिया मता ॥५७२२॥

पूर्णिमाया विशाखक्षयुक्तायां करिणो नखात् ।
ऊर्ध्वकृतस्य पूर्वाङ्गेरूध्वभागे च कीर्त्तिता ॥५ २३॥
पुननवायां रक्तायां वसुदेवस्त्रियामपि ।
वैशिको वेशसम्बद्ध त्रिविंट वे नपुसकम् ॥५ २४॥
वैशेषिक विशेषत्वे शास्त्रे काणभुजेऽपि च ।
वैशेषिकस्त्रिस्त ज्ञेऽपि विशेषस्य च योगिनि ॥५७२५॥
पुमान्वैश्रवणस्तूर्यमुहूर्त्ते धनदेऽपि च ।
वेश्वदेवो ग्रहैकाहभिदो पुसि प्रकीर्त्तित ॥५ २६॥
वैश्वदेवीष्टकाभेदे माघशुक्लाष्टकोत्सवे ।
छन्दोभदेऽथ त क्लीब स्या छन्नश्राद्धभेदयो ॥५ २ ॥
सामा तरेऽपि प्रथमे चातुर्मास्यस्य पव णि ।
वैश्वदेव मन्त्रभदोत्तराषाढक्षयोर्मतम् ॥५७ ८॥
वैश्वानरोऽग्नावप्यग्निभेदे सूर्येऽपि तत्करे ।
आत्म यप्यवैश्वानयु यते श्रक्षपद्धतौ ॥५ २९॥
पूव भाद्रपदादौ रेव य तायामथो नपि ।
वैश्वानर सामभेदे तथा [स्या क्लीबलिङ्गकम्] ॥५ ३ ॥
वैश्वामत्री तु गाय यां सामभेदे नपुसकम् ।
स्त्रियां वैषयिकी या स्त्री गता वेश्या वमात्मन ॥५७३१॥
भोगाय तत्र विषयभवादौ तु त्रिषु स्मृता ।
मध्यबिन्दौ वैषुवत विषुव सक्रमेऽपि च ॥५ ३२॥
तथा ब्राह्मणभेदेऽपि नपुसकमुदीरितम् ।
वैष्ट्र तु यकृति स्वर्गे रोहेऽपि परमात्मनि ॥५ ३३॥
विष्टपे द्यवि वायौ च विष्णौ स्यात्कस्यचिन्मते ।
वैष्णवो विष्णुभक्ते विष्णुदेवे विष्णुयोगिनि ॥५७३४॥
त्र्यथ सप्तदशारत्नेयूपस्यारभ्य मूलत ।
ज्ञयस्त्रयोदशेऽरनौ वैष्णवी तु स्त्रियामियम् ॥५ ३५॥
सप्तानामपि मातॄणामेकस्या स्यात्तथैव सा ।
नवानां विष्णुशक्तीनामेकस्यामपि नप्पुन ॥५ ३६॥

नवाह सोमवगस्य साम्नोराऊरजा तरे ।
शतावर्यां तुलस्या च तथा स्या मृ च्छना तरे ॥५ ३ ॥
तथाऽपराजिताया च श्रवणर्क्षे तु वैष्णवम् ।
वैहायस तु धानुष्कस्थितिभदे नपुसकम ॥५७३८॥
प्रत्यालीढाह्वये त्रिस्तु सम्बन्धिनि विहायस ।
वैहायसी नदीभदे स्त्री व्योम पुडडयनेऽपि च ॥५ ३९॥
वोड़ी स्त्री पणतुर्ये द्वे वोड्रो मत्स्यादिभदयो ।
वोढा स्याद्वृषभे पुसि तथा स्याद्दपभौषधो ॥१ ४ ॥
परिणेतरि मूढे तु त्रिर्भाराश्वे द्वयोर्मत ।
वोडी स्त्री पणपादे ना गोनसाहौ झषा तरे ॥५ ४१॥
व्यक्त त्रिर्निश्चिते स्पष्ट यङ्क्येऽपि च मनीषिणि ।
व्यक्त तु व्यञ्जनाख्ये स्यात्कार्येऽङ्कगणिते तथा ॥१७४२॥
व्यक्तग धा म लिकाया पिप्पलीमूर्वयोरपि ।
व्यक्तिस्त्री पृथगात्मत्वे लिङ्ग व्यञ्जनयोरपि ॥१ ४३॥
व्यग्रस्तु विगताग्रे च व्यापृताकुलयोस्त्रिषु ।
व्यङ्गो भेके द्वयोस्त्रिस्तु विरूपाङ्गगताङ्गयो ॥५ ४४॥
पुमान्नीलपृषद्रूपवक्त्र व्याधौ तथायसि ।
व्यजन वीजने तालवृ तादौ वायुसाधने ॥५७४५॥
व्यञ्जन स्यादवयवे श्मश्रुनिष्ठानलक्ष्मसु ।
व्यनक्त्यर्थे न ना यज्ञपशुसस्कारकर्मणि ॥५ ४६॥
अस्त्री तु हल्समाख्येषु वर्णेषु यञ्जन मतम् ।
वृत्तिभेदे व्यञ्जना स्त्री क्लीबे चापि प्रयुज्यते ॥५ ४ ॥
अथ व्यक्तिकरो व्याजे यसन यतिषङ्गयो ।
प्रस्तावेऽपि च सम्पर्के पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥५ ४८॥
व्यतिक्षेपस्तु युद्धेऽतिक्षेपणेऽपि पुमान्मत ।
व्यतिरेको निषेधेऽतिरेकेऽलङ्कारभिद्यपि ॥५७४९॥
व्यतीपातो महोत्पाते योगभेदापमानयो ।
व्यत्यस्तस्त्रिर्विपर्यस्ते महासख्या तरे तु नप् ॥५ १ ॥

व्यथि क्ली वर्त्मनि क्रोधे सा त त्रिस्तु व्यथावति ।
व्यध्य पुसि धनुर्यायां वेधनीयेऽभिधेयवत् ॥५ ५१॥
यध्वो दुरध्वे पुसि स्यान्त्रिस्ताद्दक्षाध्वयोगिनि ।
व्यन्तरे द्व पिशाचादौ यन्तर ॥५ ५२॥
महोरग किम्पुरुषो भूतग धर्वकिन्नरा ।
यक्षरक्ष पिशाचाश्च जैनानां व्यन्तरा मता ॥५ ५३॥
व्यपदेशोपदेश व्यवहाराभिजनेष्वपि ।
व्ययो वित्तसमुत्सर्गे निगमे पक्षिणो गतौ ॥५ ५४॥
लग्ना च द्वादशे राशौ विंशे वर्षे बृहस्पत ।
व्यर्थोऽभिधेयशू येऽपि त्रिषु स्यान्निष्प्रयोजने ॥५ ५५॥
व्यलीकमप्रियाकार्यवैलक्ष्यव्यङ्ग्यपीडने ।
विपर्ययेऽपराधे च रोगे दोषेऽपि कामजे ॥५ ५६॥
अनिष्टे तु व्यलीकस्त्रिर्नागरे तु पुमान्मत ।
व्यवच्छेदस्तु व्यावृत्तौ चापा च शरमोक्षणे ॥५ ५ ॥
व्यवहारो वाक्प्रयोगे सम्ब धे द्यूतदण्डयो ।
शासने वित्रसवाद विवादेऽसिवणिज्ययो ॥५ ५ ॥
व्यवहारो द्रुभेद स्यान्न्यायेऽपि च पणे स्थितौ ।
व्यवहारिका स्या लोकयात्रासमाजनीक्षुदे ॥५ ५९॥
व्यवाय सुरतेऽ तर्धौ पुसि क्लीब तु तेजसि ।
व्यसन सक्तिविपदोर्दैवानिष्टफलेऽह्नसि ॥५७६ ॥
पैशु यादौ च कोपोत्थे मृगयादौ च कामजे ।
निक्षेपे निष्फलोद्योगेऽप्यशुभे च नपुसकम् ॥५७६१॥
व्यस्त तु व्याकुले व्याप्ते विभक्तेऽप्यभिधेयवत् ।
श दशास्त्रे व्याकरण ज्याटङ्कारे स्फुटीकृतौ ॥५ ६२।
व्याघातो व्याहतावारग्वधे योगा तरेऽपि च ।
विघ्ने प्रहारेऽलङ्कारभेदे व्याघात इष्यते ॥५ ६३॥
व्याघ्र स्यात्पुसि शार्दूले रक्तैरण्डकरञ्जयोः ।
श्रेष्ठे नराद्युत्तरस्थ कण्टकार्यां तु योषिति ॥५ ६४॥

अस्त्री व्याघ्रनख द्वीपिनखे व्यालायुध तु नप ।
भवेद व्याघ्रनख क दग धद्र यनिशषयो ॥५ ६५॥
नखक्षता तरे क्लीब तथा स्यादायुधा तरे ।
व्याघ्रपाद्पिभद्ऽपि पुसि न स्याद्विकङ्कते ॥५ ६६॥
एरण्डे व्याघ्रपुच्छो ना द्वीपिपुच्छे तु पुनपो ।
व्याज शाठ्येऽपदेशे च स्याद व्याजमपि न स्त्रियाम् ॥५ ६ ॥
व्याडो ने द्रे द्वयो सर्पे शृगाले स्वापदऽपि च ।
व्यादीर्णास्या द्वयो सिहे योगार्थे तु यथायथम ॥५७६८॥
व्याधो दुष्ट त्रिषु द्व तु मृगयौ सङ्करा तरे ।
व्याधि कुष्ठ च रोगे ना ककशाया स्त्रिया तथा ॥५ ६९॥
व्याधिघात पुमानारग्वधनेतसयोर्मत ।
व्याधी रोगिण्युत्तरस्थो वेधकारिणि वा यवत् ॥५ ॥
व्यापारस्तु कृतौ पुसि दशमे भवनेऽपि च ।
व्याप्त ख्याते समाक्रा ते [त्रिलिङ्ग परिकीर्त्तितम्] ॥५७ १॥
व्याप्य त्रिव्यापनीये क्ली साधने कुष्ठमषजे ।
व्यायत व्यापृते दीर्घे दृढे चातिशयेऽ यवत् ॥५ २॥
व्यायाम पौरुषे व्यामे स्पर्धाया दुर्गसञ्चरे ।
वस्त्राद्याकर्षणे दीर्घीकरणे विषमे श्रमे ॥५ ७३॥
व्यालो दुष्टगजे भूपे द्रेष्काणभिदि चित्रके ।
बहुप्रदे त्वपि शठे खले व्यालस्त्रिषु स्मृत ॥५ ४॥
व्यालदष्ट्र कोकिलाक्षे गोक्षुरेऽपि मत पुमान् ।
द्वयोर्व्यालमृगो हिंस्रमृगे चापि मृगा तरे ॥५ ७५॥
व्यालम्बो लम्बिनि त्रि स्यादरण्डे तु पुमा मत ।
व्यावत्तकस्त्रि र्याघृत्तिकृति ना चक्रमदके ॥५७७६॥
व्यासो वृत्तार्द्धसीम्नि स्याद्विस्तारे बादरायणे ।
व्यास धनुर्विशेषे क्ली योगार्थे तु यथायथम् ॥५७७ ॥
व्युत्थान प्रतिकूल वे स्वात त्र्यकरणेऽपि च ।
व्युष्ट तु व्युषिते त्रि स्यात्क्ली प्रभातविन्नासयो ॥५ ८॥

व्युष्टि प्रयोजनाभिख्यफले स्त्रीलिङ्ग इष्यते।
अग्निचित्येष्टकाना च भेदेष्वृद्धिविवासयो ॥५७९॥
कालेऽष्टमेऽष्टमे भुङ्क्ते यस्तत्र व्युष्टिरिष्यते।
व्यूढ संहतविन्यस्तपृथुलेष्वभिधेयवत् ॥५८ ॥
व्यूहो व्रजेऽपि विन्यासे विन्यस्तेऽपि पुमान्मत ।
व्योम स्थाने दिशि जले चाकाशेऽपि नपुसकम ॥५८१॥
अभ्रके कामवायौ च दशमे भवने तथा।
सूर्यस्यायतने त्राणेऽवकाशेऽपि प्रकीर्त्तितम् ॥५८२॥
तथैवाक्षितसख्याया यख्याया दशकामनि।
वृन्दादिषु तु षटस्वन्ये निखव बद्धमक्षितम ॥५८३॥
व्योमा त्वेकाहभेदे ना वाच्यवत्स्यादरक्षिते।
व्योमचारी द्वयोर्देवे खगे त्रिश्चिरजीविनि ॥५८४॥
व्योष स्यात्त्रिकटुद्रव्ये करिभेदे पुमानयम् ।
मरिच पिप्पली चैवार्द्रक त्रिकटु कीर्त्तितम ॥५८५॥
व्रजोऽस्त्रियामश्वगोष्ठे गोष्ठ मार्गसमूहयो ।
व्रजस्तु मेघे शैले च पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥५८६॥
व्रजभूव्रजभूमी स्त्री स्यात्कदम्बान्तरे पुमान्।
अथ व्रजोद्भवे त्वेष वाच्यवद्व्रजभूर्मत ॥५८ ॥
व्रज्या वर्गे गतौ चापि तथा पर्यटने स्त्रियाम ।
व्रण क्षतेऽपि दोषेऽपि ना स्त्रियां परिकीर्त्तित ॥५७८८॥
व्रणकृत्त्रिषु योगार्थे पुमान्भल्लातकद्रुमे।
व्रणह पुसि चैरण्डे गुडूच्यां व्रणहा स्त्रियाम ॥५८९॥
व्रणहृद्भणिकायां ना व्रणहारिणि तु त्रिषु।
व्रणारि: पुस्यगस्त्येऽपि [त्रिषु वाच्यवदिष्यते] ॥५९ ॥
व्रतोऽस्त्री नियमे क्ली तु व्रत मासर्तुवत्सरे।
विष्णावग्नौ धनेऽन्ने च विधाने भुक्तिकर्मणो ॥५९१॥
महाव्रतसमाख्येऽपि क्रतुभेदे व्रत मतम्।
व्रती व्रतवति त्रि स्याद्द्वयोरश्वे प्रकीर्त्तित ॥५७९२॥

व्रश्चन पत्रपरशौ पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।
छेदने व्रश्चन क्लीब त्रि तु छेदनसाधने ॥५७९३॥
व्राजिवाक स्वत्रसार्थेऽश्वे कुक्कुट तु द्वयोरयम् ।
व्रातस्तु ना समूहे स्यात्सङ्घे वा यस्य लक्षणम् ॥५७९४॥
प्राहुरुत्सेधजीवाश्च नानाजातीयका अपि ।
अन्यवस्थितवृत्ताश्च सङ्घा व्राता इतीदृशम् ॥५७९५॥
मनुष्ये तु द्वयोर्व्रातो व्रात्ये यस्य च लक्षणम् ।
व्रात्यस्त्वनुपनीतो यो विवाह ब्राह्मणादिक ॥५ ९६॥
करोति तस्मिन्सस्कारहीनमात्रेऽपि ना मत ।
द्वयोस्तु प्रतिलोमाना प्रतिलोमजमानुषे ॥५७९ ॥
व्रात्या तु व्रातचर्याया स्त्री त्रिस्तु व्रतसाधुनि ।
व्रीहि सामान्यधान्ये स्यादाशुधान्ये तु पुस्ययम् ॥५ ९८॥
स्याद्व्रीहिराजिक कङ्गुधान्यचीनकधान्ययो ॥५७९८॥

श

शसा स्तुतौ तथेच्छायामुक्तौ स्त्रिया मता ॥५ ९९॥
इच्छाया वाऽजय प्राह तदसत्स्मर्यते यत ।
आङ्पूवस्यैष शब्दज्ञै शसेरिच्छार्थवाचिता ॥५८ ॥
शस्य आहवनीयाऽग्नौ शसनीये तु वाच्यवत् ।
शमव्यय वा क्लीब वा कल्याणेऽथ पुमान्मतः ॥५८ १॥
शस्त्रे शिवेऽप्युत्तरस्थस्त्वय शयितरि त्रिषु ।
शको ना पशुविष्ठाया देशभेदे जले तु नप् ॥५८ २॥
शका तु गवयाभिरव्यपशुजातौ स्त्रियामियम् ।
स्याद्वत्सरेऽपि पार्थादेः शको जात्य तरे नृपे ॥५८ ३॥
शक धुर्देवताभेदे तथैव स्याद्वनस्पतौ ।
शकलस्त्वृषिभेदे ना खण्डे तु नरशण्डयोः ॥५८ ४॥
रागद्रव्यविशेषे च वल्कलेऽप्यथ मेघवत् ।
शकलो मूर्खधनिनोर्नीवृद्भेदे नृभूमनि ॥५८ ५॥

शकली तु द्वयोर्मत्स्ये शकलेन युते त्रिषु ।
शकल्वूर्देवताभेदे स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥५८ ६॥
वनस्पतिविशेष तु शकल्व पुसि कीर्त्तित ।
शकुटा पश्चिम भाग विभज्य दशधोव्वत ॥५८ ॥
हस्तिन पञ्चमे भागे शाकस्तम्बा तरे तु ना ।
शकुन पक्षिणि द्वे ना मित्रे क्ली भाविसूचके ॥५८ ८॥
शकुनि पक्षिमात्रेऽपि चिल्लपक्षिणि च द्वयो ।
शकुनिस्तु पुमानेष स्याद्दुर्योधनमातुले ॥५८ ९॥
शकुन्तस्तु द्वयो पक्षिमात्रे भासाख्यपाक्षणि ।
स्त्रीपुसयोस्तु शकुलो मत्स्यभेदे प्रकीर्त्तित ॥५८१ ॥
अथ कूष्माण्डवल्ल्यां स्त्री शकुला परिकीर्त्तिता ।
रोहिणीतोयपिप्पल्यो शकुलादन्युदीरिता ॥५८११॥
शकृत्क्लीबे जले प्रोक्त तथा गोमयविष्ठयो ।
स्याच्छकोटस्तु बाहौ ना शक्ते तु त्रिषु कीर्त्तित ॥५८१२॥
शक्तिवसिष्ठपुत्रे ना स्त्री सांख्यप्रकृतौ श्रियाम् ।
सामर्थ्ये च प्रभावादिजातासु च तिसृष्वपि ॥५८१३॥
कर्मण्यप्यायुधे कासूनाम्नि शक्तीतिशक्तिवत् ।
शक्र कुटजवृक्षे च महेन्द्रे च पुमान्मत ॥५८१४॥
शक्ल प्रियवदे शक्ते वाच्यवपरिकीर्त्तित ।
शक्वा तु हस्ते ग्रन्थादौ पुस्यथो शक्वरी स्त्रियाम् ॥५८१५॥
नद्यां विधुति काञ्च्या च तथा बाहात्रपीष्यते ।
षटपञ्चाशत्स्वरे चापि छन्दोभेद तथा मता ॥५८१६॥
शङ्कु शम्भौ चतुर्वक्त्रे पुमान्सख्यान्तरेऽपि च ।
कोटिलक्षात्मकेऽथास्त्री कीलमेढ्रायुधान्तरे ॥५८१७॥
वृक्षपत्रसिराजाले शङ्कुर्गोत्रेऽपि कीर्त्तिता ।
द्वयोर्विडाले हसे च यादोभेदे च राक्षसे ॥५८१८॥
एवमुत्पादिवर्गस्य तृतीये साम्नि च स्मृत ।
पुन्नपुसकयोरनमविशेषेण मन्यते ॥५८१९॥

अप्राण्यर्थं तथा प्राह शङ्कुरप्राणगोचर ।
इत्यधर्चादिवर्गस्य वैजयन्त्या प्रपञ्चने ॥५८२ ॥
शङ्ककर्णस्तु ना मुन्यन्तरे द्व तु खरोष्ट्रयो ।
शङ्कुकर्णी प्रतोल्या स्यात्परिघ लोहकीलिनि ॥५८२१॥
शङ्खोऽस्त्री वलये कम्बौ ललाटास्थिगमर्मयो ।
सख्याभेदे निखर्वाख्यसख्याया दशकात्मके ॥५८२२॥
निधिभेद त्वमावास्यातिथो नागर्षिभेदयो ।
मणिभेद च शुक्त्याख्यभेपजे शङ्ख एष ना ॥५८२३॥
शङ्खपालो द्वयोदर्वीकराणा षट च विंशति ।
ये भेदास्तेषु चैकस्मिन्योगार्थे तु यथायथम् ॥५८२४॥
शङ्खिनी चौरपुष्प्या स्यात् शङ्खी शङ्खवति त्रिषु ।
शठो ना मातुलुङ्गे च मध्यधुधूरयोरपि ॥५८२५॥
सिते च सषपे तस्य फले चाथ नपुसकम् ।
पाये वङ्गाख्यलोहे च प्रसवेऽप्रोक्तशाखिनाम् ॥५८२६॥
त्रिस्तु धूर्ते च शत्रौ च मार्जारे तु द्वयोरयम् ।
शणीर पुलिने शोणाम्बुमध्यस्थेऽपि गङ्गया ॥५८२ ॥
सरग्ना सङ्गमेनावृतेऽपि स्याद्दरी तटे ।
पुमाञ्शतधृतिर्ब्रह्मण्यथ योगे यथायथम् ॥५८२८॥
शतपत्र तु कमले शतपत्रस्त्वय द्वयो ।
मयूरे सारसे चापि स्याद्दार्वाघाटपक्षिणि ॥५८२९॥
शतपर्वा तु ना वेणौ स्त्री दूर्वावचयोरपि ।
कलम्ब्यां च विसे तु क्ली स्थौणेयाख्ये च भेषजे ॥५८३ ॥
शतपात्तु शताङ्घ्रावप्यभिधेयवदिष्यते ।
अथो शतपदीकणजलौकायां स्त्रिया मता ॥५८३१॥
शतमान भवेत्कर्षद्वये व्रीहेस्तथाढके ।
शतोन्मिते तण्डुलानामपि स्यात्पुम्नपुसकम् ॥५८३२॥
स्त्रियां शतमुखी पार्वत्यां योगे तु यथायथम् ।
शतमूर्धा तु वल्मीके योगार्थे तु यथायथम् ॥५८३३॥

शतवीर्या श्वेतदूर्वा योगार्थे तु यथायथम् ।
शतह्रदा तु तडिति तडिद्ध्रदे त्रि यौगिके ॥५८३४॥
शताङ्गस्तु रथे पुंसि योगार्थे तु यथायथम ।
शतानन्दस्तु ना विष्णौ विरिञ्चे गौतमेऽपि च ॥५८३५॥
शतावर्त्ता तु तडिति शतावर्त्तस्तु ना हरौ ।
शत्रिस्तु कुञ्जरे क्रौञ्चनाम्नि पक्षिणि च द्वयो ॥५८३६॥
शत्रुस्तु पुंस्यमित्रे स्या लग्नात्षष्ठे च राशिके ।
शत्रुघ्न पुंसि भरतानुजे त्रि शत्रुहन्तरि ॥५८३ ॥
शद्रिस्तु पवते पुंसि द्वयोस्तु गजमेषयो ।
शपथ कार आक्रोशे शपने च सुतादिभि ॥५८३८॥
शफ पुंसि च शण्डे च लाङ्गलाङ्गान्तरे खुरे ।
महावीरारण्यपात्रस्य परिग्रहणकाष्ठयो ॥५८३९॥
शृथश्च यस्ये यचि च गीतयो सामभेदयो ।
शफरो मत्स्यभेदे स्यात्प्रोष्ठीसञ्ज्ञ द्वयोरयम ॥५८४ ॥
शफरी वृक्षभेदे स्यादश्मन्तक इति श्रुते ।
शबरस्तु द्वयो शूद्रभिल्लीसम्भव इष्यते ॥५८४१॥
शबरी तापसीभेद रामायणकथाश्रते ।
शबरस्तु शिवे पुंसि शबर क्ली जले मतम् ॥५८४२॥
शबलश्चित्रवर्णे ना चित्रवणवृषेऽपि च ।
शबली गवि चित्रायां चित्रवणयुते त्रिषु ॥५८४३॥
शब्दोऽक्षरे यशोगीत्योर्वाक्ये खे श्रवण ध्वनौ ।
शब्दग्राट तु द्वयो शिष्ये त्रि तु शाब्दे प्रकीर्त्तित ॥५८४४॥
शमस्तु शान्तौ पुंल्लिङ्ग माने च चतुरङ्गुले ।
शमथस्तु जले शान्तावप्याश्रमपदे पुमान् ॥५८४५॥
शमनो ना यमे शान्तौ क्ली नना शमने नना ।
तथैव शमयत्यर्थे त्रि तु स्याच्छान्तिसाधने ॥५८४६॥
शमल तु मत पापे विष्ठायां च नपुसकम् ।
अथ स्त्री शमिता चूर्णे गोधूमस्येति यादव ॥५८४७॥

असाध्वित्र तदाभाति श दज्ञाना यदाग्रणी ।
गोधूमचूणसमिध धा त पुल्लिङ्गमुक्तवान् ॥५८४८॥
शाकटायन आचार्यस्तस्यापभ्रंश इ ययम् ।
भासते चापि साध्वी चेदीप्स्ये शमयतेस्त्रिषु ॥१८४९॥
शमी तु स्यात्सक्तुफलासञ्ज्ञवृक्षा तरे स्त्रियाम् ।
मुद्गमाषादिसस्याना बीजकोश्या च चर्मणि ॥१८५ ॥
शम्बो वज्रे लोहमये वलये मुसलाग्रगे ।
आरत्रेऽर्था तरेऽप्यस्ति शम्बबीजात्कृषाविति ॥५ ५१॥
शम्बरो मेघगिर्योद त्या तरेऽप्युरसा स्त्रियाम् ।
दधाने द्वे तु मत्स्येऽल्पहरिणऽपि मृगा तरे ॥१ ५२॥
क्लीब तु सलिले बौद्धव्रतभदे बलेऽपि च ।
शम्बूको जलशुक्तौ द्व शम्बूका तु भवेस्त्रियाम् ॥१८५३॥
गजस्य मुखमध्यस्य पार्श्वाधोदेशयोरथ ।
ना सूक्ष्मे तण्डुलकणे तण्डुलस्थमलेऽपि च ॥१८५४॥
शम्भुर्ब्रह्मणि विष्णौ च शिनेऽर्हति च पुस्ययम् ।
शम्या तु युगकीलेऽस्त्री माने षटत्रिंशदङ्गुले ॥५८१५॥
अथो शमयित ये त्रि शमितव्ये तु तन्नपि ।
शयो ना शयने पाणौ कृकलासे तु स द्वयो ॥५८५६॥
शयथस्तु प्रदोषेऽपि मृत्यौ पुसि प्रकीर्त्तित ।
द्वयोस्त्वजगरे मत्स्ये निद्रालौ त्वेष वा यवत् ॥५८५ ॥
शय्याया शयन क्लीब भावे च शेरतेर्मतम् ।
शयानको गिरौ द्व त्वजगरे कृकलासके ॥५८५८॥
शयालुस्तु शृगाले द्व निद्रालावभिधेयवत् ।
उदुम्बरद्रुमे पुसि स्याद्वृक्षावयवा तरे ॥५८५९॥
क्लीब तूदुम्बरफले ग धद्र या तरेऽपि च ।
शयुस्तु नाऽर्के स्वप्ने च द्वयोस्त्वजगरे मत ॥५८६ ॥
शयुनोऽजगरे द्व स्या च्छशाङ्कस्वप्नयोस्तु ना ।
शय्या स्त्री शयनीये च ग्र थगुम्फे च सा त्रि तु ॥५८६१॥

शयसाधौ पाणिभवे मन्दिरे तु नपुंसकम् ।
शर पुंसि शरद्वायौ क्षीरादेमुखबन्धने ॥५८६२॥
इन्द्रसङ्गतृणस्तम्बे हिंसामार्गणयोरपि ।
अथ ह्रीबेरजलयो शरमुक्त नपुंसकम् ॥५८६३॥
शरठ वायुधे चापे क्रीडाशीले तु भेद्यवत् ।
शरद् संवत्सरे मघाऽयय चापि स्त्रियां मता ॥५८६४॥
शरभ सिंहशत्रौ स्यादष्टपात्संज्ञके मृगे ।
द्वयोर्मृगान्तरे चापि करभ च प्रकीर्त्तित ॥५८६५॥
अविवाह्यविशीर्णाङ्गक याया शरभा स्त्रियाम् ।
शरवारि शरास्ये ना पातक्यशरजीवयो ॥५८६६॥
शरु स्यादायुधे क्रोधे द्वयोस्तु स्यात्कपिञ्जले ।
शर्करा च सितायां च रोगभेदे शिलान्तरे ॥५८६ ॥
शर्करावप्रदेशे च शकलेऽल्पकपालके ।
गुडे च खण्डे विकृतौ स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ॥५८६८॥
शर्म गेहे सुखेऽप्युक्त नकारान्त नपुंसकम् ।
शव शिवे ना शर्वाणी स्यान्मृडान्या स्त्रियामियम् ॥५८६९॥
शर्वर तमसि क्लीब शवर शिवच द्वयो ।
शवरी तु स्त्रिया रात्रौ स ध्यायामपि कीर्त्तिता ॥५८ ॥
शल तु शलले क्लीब तल्लोम्नि परिकीर्त्तिम् ।
शलस्तु गन्तरि त्रि स्याद्वृद्वयोरुष्ट्रे च गद्भे ॥५८७१॥
शलली नप्स्त्रियो श्वाविल्लोम्नि श्वाविधि तु द्वयो ।
शलाका तु भवेत्सूच्या द्यतोपकरणऽपि च ॥५८ २॥
अस्थूलदीर्घकाष्ठादिमये वस्तुनि च स्त्रियाम् ।
शल्क तु शकले चात्तरसेऽपि शकले मतम् ॥५८७३॥
वल्कले मुद्गरे चाथ त्रिषु भीतौ च पातरि ।
शल्यमस्त्री शलाकाया शङ्कुसंज्ञायुधान्तरे ॥५८ ४॥
विद्ध्वा शरीर लीनेऽन्त काण्डेऽथ मदनद्रुमे ।
मद्रराजान्तरे चाथ श्वाविटसंज्ञमृगे द्वयो ॥५८ ५॥

शल्यकस्तु पुमाञ्श्वेतखदिरे कदराह्वये ।
शल्यकी तु द्वयोरेषा मृगभेदे प्रकीर्त्तिता ॥५ ६॥
शवस्तु कुणपे न स्त्री जले तु क्ली गतौ तु ना ।
शशो बोलौषधे द्व तु रोगकर्णमृगे मत ॥१८ ॥
शश्शरीकस्तु पुष्पारये द्वयोर्लावारयपक्षिणि ।
क्रिमौ च मेधलिङ्गस्तु विकलेन्द्रियज तुषु ॥५८ ८॥
शष्कु यपूपभदेऽपि स्यात्कर्णावयवा तरे ।
शष्प बालतृणे रूपे रोमभेदे च न स्त्रियाम् ॥१८७९॥
शस्ता मित्रावरुणयोर्ना ब्रह्मणि पितयपि ।
चण्डाले तु द्वयो शस्ता त्रिषु स्तोतरि कीर्त्तित ॥५८८ ॥
शस्त्री तु छुरिकाया स्त्री शस्त्र तु क्लीबमायुधे ।
अयस्पृड म त्रभेदेषु शसाया साधनेषु च ॥५८८१॥
शस्त्रकष्टङ्कणक्षारे शस्त्रक त्वयसि स्मृतम् ।
शाको हरितके पत्रपुष्पादिदशके तरो ॥५८८२॥
मूलपत्रकरीराग्रफलकाण्डाधिरूढकम् ।
त्वक्पुष्प कवकं चेति शाक दशविध स्मृतम् ॥५८८३॥
इत्युक्ते नस्त्रिया ना तु पृथुच्छदतरौ मत ।
शक्तौ सहाये सुहृदि साधनेऽपि शकेर्घञि ॥१८८४॥
भारताऽन तरे द्वीपभेदेऽपि शकटेऽपि च ।
शिरीषेऽप्यथ शाका तु हरीतक्यां प्रकीर्त्तिता ॥५८८५॥
शाकी तु स्त्री महाशाके नानाशाकसमाहृतौ ।
शाककोष्ठा तु जीव तीडोडीसञ्ज्ञकशाकयो ॥५८८६॥
शाकम्भरी तु दुर्गायां लवणह्रदभिधाप ।
शाकारय शाकवृक्षे ना शाके तु स्यान्नपुसकम् ॥५८८ ॥
अथ शाकट इत्येष पुमा पलशतात्मन ।
तुलासञ्ज्ञस्य मानस्य विंशत्यात्मकभारके ॥५८८८॥
शाकटी ना पराभिरये यत्त मान व्यवस्थितम् ।
उक्तात्तु यद्दशगुण ततो दशगुण च यत् ॥५८८९॥

तस्मा च यद्दशगुण तस्मिन् क्ली भेद्यवत्पुन ।
शकटे शकटस्यापि सम्बन्धिनि च वाहके ॥५८९ ॥
शकटस्याथ शाकव्यर्थे निदानकृतोदिते ।
शाकटीनस्तुलानां स्याद्विंशया मकमानके ॥५८९१॥
शकटस्य तु सम्बन्धि यय वाच्यवदिष्यते ।
शाकल शकलाख्येन रक्ते द्रव्येण वाच्यवत् ॥५८९२॥
शाकलानां च शकलस्यापि सम्बन्धिनि स्मृतम् ।
अस्त्रियां शकले पुंसि काष्ठखण्डकृताङ्गदे ॥५८९३॥
ऋषिभेदे सपभेदे शाकल तु पुरान्तरे ।
मद्राणां सामभेदेऽपि शाकल्यश्रुतियागयो ॥५८९४॥
बाह्लीकग्रामभेदेऽपि नपुंसकमुदीरितम ।
शाकी त्रिषु सहायेऽथ शाकिनी डाकिनीभिदि ॥५८९५॥
तथैव शाकक्षेत्रेऽपि क्लीब एव प्रकीर्त्तिता ।
शाकुन स्याच्छाकुनिके निमित्तेऽप्यथ वाच्यवत् ॥५८९६॥
शकुने शकुनस्यापि सम्बन्धिनि तथा मत ।
परोत्तापि यपि भवेत्पश्चात्तापिनि कस्यचित् ॥५८९ ॥
वैतसिक शाकुनिको निमित्तज्ञे तथा त्रिषु ।
केषाञ्चिन्मत्स्यबन्धेऽपि तथा शकुनयोगिनि ॥५८९८॥
शाकुनी मत्स्यबन्धे त्रि पुमा स्यादसुरान्तरे ।
शाकुनेयो लघूलूके द्वे त्रि शकुनियोगिनि ॥५८९९॥
पुल्लिङ्ग शाकुनेयोऽय वृकनाम्न्यसुरे मत ।
शाकुन्तलो ना भरते क्लीब स्यान्नाटकान्तरे ॥५९ ॥
द्वयो शाकुलिको मत्स्यबन्धे त्रिर्मत्स्यसहतौ ।
शाक्करो वृषभे सोमविशेषेऽप्यथ वाच्यवत् ॥५९ १॥
शक्करीयोगिनि क्ली तु यागसामभिदोभवेत ।
शाक्त सामान्तरे क्ली त्रिस्तान्त्रिके ना पराशरे ॥५९ २॥
शाक्तिकस्त्रि शक्तिजीवि यपि स्यात्तान्त्रिकान्तरे ।
शाक्त्य सामान्तरे ना तु गौरवीति ऋषौ भवेत् ॥५९ ३॥

शाक्यो गौतमबुद्ध ना त्रि शकाभिजनादिके ।
शाक्री स्त्रियां स्याद् दुर्गायां शाक्र येष्टक्ष इष्यते ॥५९ ४॥
शाखा तरोलतायां च देहाङ्ग्यङ्गुलिबाहुषु ।
गृहपार्श्वे द्वारपार्श्वस्तम्भ भागप्रभागयो ॥५९ ५॥
पक्षान्तरेऽन्तिके वर्गे वेदव्यक्तिषु च स्त्रियाम ।
शाखस्तु स्कन्ददेवस्य पृष्ठजे स्यात्सुरान्तरे ॥५९ ६॥
करञ्जेऽपि च पुल्लिङ्ग शाखा व्याप्तौ द्वयोर्मता ।
शाखामृगो वानरे द्व केषांचिच्चिक्षुरेऽपि च ॥५९ ॥
शाखाशिफा वरोह स्यान्मूलाञ्चाग्रज्ञता लता ।
शाखी तु वृक्षसामान्ये शाखिनस्तु नृभूमनि ॥५९ ८॥
तुरुष्केऽथ शाखी तु स्याच्छाखावति ना यवत् ।
शाख्यस्तु शाखासदृशे शाखायोगिनि च त्रिषु ॥५९ ९॥
शाङ्कर शङ्करस्य स्यात्सम्बन्धि यप वान्यवत् ।
शाङ्करी तु समाम्नाये वर्णानां शिवसम्मते ॥५९१ ॥
क्लीब शाङ्करमार्द्राभे पुमाञ्छाकरवृद्दषे ।
शाङ्करिस्तु गणेशेऽपि कार्त्तिकेये तथा पुमान् ॥५९११॥
शाङ्खस्त्रि शङ्खसम्बन्धि यथ शङ्खस्वने तु नप ।
शाङ्खिकस्त्रि शङ्खयोगिन्यपि शङ्खध्मि कीर्त्तित ॥५९१२॥
द्वयोस्तु शङ्खककमिजातौ शङ्खारिनामनि ।
शाडवो रागभेदेऽम्लमधुरेऽथ त्रि तद्वति ॥५९१३॥
शाणो ना निकषे द्वे तु शाण शाणा चतुष्टये ।
माषाणामथ दाने स्त्री शाणी गोण्यामपीष्यते ॥५९१४॥
शणसम्बन्धिनि त्वेषा शाणी स्याज्जैनचीवरे ।
तथा जवनिकाभेदे सज्ञायां त्रिस्तु यौगिके ॥५९१५॥
शाण्डिल्यस्त्वृषिभेदे ना स्याद्बिल्वे पावकान्तरे ।
शाण्डिल्यस्य त्वपत्ये द्वे गोत्रे स्त्री तत्र शाण्डिली ॥५९१६॥
शाण्डिल शाण्डिल्यजाते शाण्डिलीत्यग्निमातरि ।
शातस्तीक्ष्णे कृशे चापि शतयोगिनि वान्यवत् ॥५९१ ॥

क्ली धत्तरसुखयो पुसि अशक्षयादिषु ।
शातकुम्भ सुवर्णे क्ली तत्सम्बन्धिनि तु त्रिषु ॥५९१८॥
करवीरे तु धत्तरे ना क्लीब प्रसवेऽनयो ।
शातकौम्भ सुवर्णे क्ली स्यात्सौवर्णे तु वाच्यवत् ॥५९ ९॥
शातन तु भवेन्नाशे तेजनेऽपि नपुसकम् ।
शात्रव पुसि शत्रौ त्रि शत्रुयोगानि शात्रवम् ॥५९२ ॥
नपुसक तु शत्रूणा समूहे वैर एव च ।
शादस्तु शष्पे पङ्क च शदने स्वणबन्धयो ॥५९२१॥
अथ शातरि तद्व च शदसम्बन्धिनि त्रिषु ।
गृह्यकारस्य शादाभिरित्युक्तोश्च स्यतां गति ॥५९२२॥
इष्टकार्थे गोभिलस्य प्रयोग इति केचन ।
शाद्वल शातहरिते त्रिरस्त्रीघासवत्स्थले ॥५९२३॥
अथ शाडवलवत्प्रोक्त पुल्लिङ्गस्तु वृषे मत ।
शानस्तु पुसि शाते स्त्री शानी स्यात्ककटीभिदि ॥५९२४॥
शानपाद पारिपानेऽपि च दनकशाश्मनि ।
शान्त शमवति त्रि स्यान्निशातेऽवसिते शुभे ॥५९२५॥
क्ली तु शान्तौ पुमाञ्शान्त सुनिषण्ण रसान्तरे ।
शान्ता तु श्रुतिभेदे चाऽप्यामलक्यामपीष्यते ॥५९२६॥
दूर्वान्तरे रेणुकाख्यौषधे रामस्वसर्यपि ।
सप्तमार्हद्देवताया शक्तिभेदेऽपि कीर्तिता ॥५९२ ॥
वषभद पुनजम्बूद्वीपस्थे शान्तमिष्यते ।
भीष्मे शान्तनवस्तद्वत ाफटसूत्राणा प्रणेतरि ॥५९२८॥
द्वीपान्तरे पुन क्लीबमिद शान्तनव मतम् ।
शान्तनुर्धान्यभे शान्तनौ भीष्मपितर्यपि ॥५९२९॥
शान्ति शमे चिकित्साया धर्मपत्न्यां च मङ्गले ।
स्त्री ना दशमम न्वतरे द्रेऽपि तुषितान्तरे ॥५९३ ॥
अर्हद्भदेऽपि च तथा शान्तिनाथाऽभिधान्तरे ।
शाप शपथ आक्रोशे तरत्काष्ठादिके पुमान् ॥५९३१॥

शाबर वपराधेऽघ क्ली लोध्रे ना त्रियौगिके ।
जाल्मेऽपि शाबरी वात्मगुप्ताशबरभाषयो ॥५९३ ॥
शाबर ताम्रतमसोस्तथा शम्बरच दने ।
रोध्रे शाबरक शाबरिका स्याद्रक्तपा तरे ॥५९२३॥
शाब य शबलत्वे शाबल्या स्याद्ब धुलस्त्रियाम् ।
शाबस्ती पुरभेद शाबस्तस्तत्कत्त भूपता ॥५९३४॥
शा दी स्त्री वे सरस्वत्या शा दस्त्रिश दयोगिनि ।
शा दिकस्त्रि श दयोगि यपि श दावदि स्मृत ॥५९३५॥
शामनस्त्रि शा तिकृति शामनस्तु यमे पुमान् ।
शामित्र शमितुर्यागपशुकत्तनकारिण ॥५९३६॥
सम्बा धनि त्रिरग्नौ तु ना यागपशुवाचक ।
शामित्र क्ली वधस्थाने तथा शामित्रकर्मणि ॥५९३७॥
शामीलस्त्रि शमीयोग यथ क्ली भस्मनि स्मृतम् ।
अथ स्त्रियामिय मा ये शामीली परिकीत्तिता ॥५९३८॥
स्याच्छाम्बरी स्त्री मायायां त्रि तु शम्बरयोगनि ।
शाम्बर शम्बररणे तथा शबरच दने ॥५९३९॥
शाम्भवस्त्रि शम्भुयोगि यपत्ये स्याच्छिवस्य च ।
शिवभक्तेऽप्यथ पुमान् [कर्पूरविषभेदयो] ॥५९४ ॥
स्त्री शाम्भवी स्याद्दुर्गाया शाम्भवा दवदारुणि ।
शाम्य शा तो मत क्लीबे शाम्यस्तद्योगिनि त्रिषु ॥५९४१॥
शायक कत्तरि त्रि स्याच्छयनस्याऽथ शायिका ।
शयनस्यैव पर्यायादौ स्त्रीत्वे परिकीत्तिता ॥५९४ ॥
शारो वायौ हिंसने च शबले त्रि तु तद्वति ।
शार शारी द्यूतशारावक्ली शारी पुन स्त्रियाम् ॥५९४३॥
शारिकाख्ये पक्षिभदे कुशेथ त्रि शरादणि ।
[अथ शारक इत्येष हिंसके वाच्यवन्मत] ॥५९४४॥
शारदस्तु पुमा पीतमुद्गे सवत्सरेऽपि च ।
त्रिस्त्वधृष्टे च शुद्धे च शरत्पक्वादिकेषु च ॥५९४५॥

शारस्थ दातरि नवरोगे चाप्यप्रतिमेऽप्यथ ।
शारद शारदीति द्वे सप्तपणतरौ भवेत् ॥५९४६॥
शारदी तोयपिप्पल्यां कार्त्तिकाश्विनपूर्णयो ।
शारद तु शरच्छस्ये क्लीब श्वेतोत्पलेऽपि च ॥५९४ ॥
शारदा सारिवाब्राह्मीदुर्गावाग्देवतासु च ।
पुसि शारदको दूर्वाभेदे शारदिका स्त्रियाम ॥५९४८॥
शारिपुत्रे द्रोणपुत्रे शारद्वतीपुत्र इष्यते ।
शारि स्त्री शारिकासज्ञविहङ्गे नृस्त्रियो पुन ॥५९४९॥
पर्याणभेदे द्यूतस्य गुडे शारयतौ तु ना ।
[ति यप या तथा बाणे कपटे च स्त्रियामियम] ॥५९५ ॥
शारिका पक्षिभेदे च वाद्यवादनदण्डके ।
द्यूतक्रीडाविशेषे च दुर्गायां तु स्त्रिया मता ॥५९५१॥
शारीर पुसि जीवात्म यथ त्रि काययोगिनि ।
शारीर कायघटनाऽऽयुर्वेदस्थानभेदयोः ॥५९५२॥
वृषऽपि पुसि शारीर विद्वास केचिदूचिरे ।
शारीरको ना जीवा म यथ त्रि काययोगिनि ॥५९५३॥
शारीरके इति द्वि वे स्यात्कायसुखदु खयो ।
शाकरो मधुमद्य माध्वीकार ये दुग्धफेनयो ॥५९९४॥
साम्नोस्तु योनौ वर्गो थयो क्ली शकरिले त्रिषु ।
शाङ्ग तु व गुचापेऽपि चापे भृङ्गकृतेऽप च ॥५९५५॥
केषुचित्सामभेदेषु यदुक्त तद्वदाद्रके ।
चापमात्रेऽपि च क्लीब वा यव छङ्गयोगिान ॥५९५६॥
तथा भृङ्गविकारेऽपि द्व तु पक्ष्य तरे स्मृत ।
शार्ङ्गेष्ठ चर्मपर्ण्यार यलताभेदे नपुसकम ॥५९५ ॥
शार्ङ्गेष्ठा तु स्त्रिया दासी षडश्राधार यकौषधे ।
शार्ङ्गी तु पुसि गोवि दे तथा शाङ्गवति त्रिषु ॥५९५८॥
शार्दूलो द्वे याघ्रसिंहशरभेष्वपि चूणके ।
पक्ष्यन्तरेऽप्युत्तरस्थ पुसि कोष्ठाथको मत ॥५९५९॥

नृभूम्नि शाखाभेदे ना छन्दोभिन्चित्रकौपजे ।
स्याच्छार्दूली तु याघ्रयादो तथाश्वापदमातरि ॥५९६० ॥
शार्वरोऽस्त्र्यन्धतमसे घातुके तु त्रिषु स्मृत ।
शालस्तु पुंसि प्राकारेऽश्वकर्ण लकुचेऽपि च ॥५९६१॥
स्यात्सातवाहने वृक्षसामान्ये द्व झषान्तर ।
शाला तु गेहे गेहैकदेशे च स्त्री तरोस्तथा ॥५९६२॥
स्कन्धसञ्जातशाखाया सूक्ष्मलाया त्रि गन्तरि ।
शालोऽस्त्यथर्चादिषु च वान्यनद्रन्तरि स्मृत ॥५९६३॥
अथ शाली स्त्रिया कृष्णजीरे पत्नीस्वसर्यपि ।
शालग्रामो ग्रामभेदे गण्डकीतीरसस्थिते ॥५९६४॥
शालवृक्षावृते विष्णौ शालग्रामशिलास्थिते ।
अस्त्री तु तद्ग्रामभवे पूजार्हे स्याच्छिलान्तरे ॥५९६५॥
शालग्रामी तु गण्डक्या स्त्रीत्व एव प्रकीर्तिता ।
शालङ्कायन इत्येष ऋषिभिन्प्रमथान्तरे ॥५९६६॥
शालपुष्प वदवकर्णपुष्प [क्लीव प्रकीर्त्तितम] ।
क्रीडान्तरे दारुपुत्र्या वेश्याया शालभञ्जिका ॥५९६ ॥
शालसारस्तु वृक्षेऽपि हिङ्गुन्यपि पुमान्मत ।
शालाकस्तु शलाकाना वृन्दे तत्पावकेऽपि च ॥५९६८॥
शालाकी शन्यवैद्येऽपि तथा स्यात्कुन्तधारिणि ।
शालाक्यस्त्वक्षिवैद्येऽथ क्लीव शल्यचिकित्सिते ॥५९६९॥
कुर्वादित्याच्छलाकाया अपत्ये तु भवेत्त्रिषु ।
शालाद्वार्यो याग्वह्न्यन्तरे त्रिर्गृहाग्रगे ॥५९ ॥
शालामुख गृहद्वारे शालिभेदे तु पुस्ययम ।
शालामुखीयो योगे त्रि शालाद्वार्योऽनले तु ना ॥५९ १॥
शालामृग कुक्कुरेऽपि केषाञ्चिज्जम्बुके द्वयो ।
शालार क्ली हस्तिनखे सोपाने पक्षिपञ्जरे ॥५९७२॥
नागदन्तेऽपि भित्तिस्थे शालार केचिदूचिरे ।
शालावृका कपिक्रोष्टुश्वबिडालादयो मता ॥५९ ३॥

शालिर्दशविधे पुंसि तण्डुले क्वापि च स्त्रियाम ।
खट्वाशे तु द्वयोर्यक्षान्तरे सिंहाकृतौ पुमान् ॥५९ ४॥
शालिकस्त्रिषु शालाजे शालायां शालिका मता ।
शालिकस्त्रि शालियोगि यस्य चूर्णे नपुंसकम ॥५९ ५॥
शाली फलाढ्ये च तथा शालिमत्येष वाच्यवत ।
तथा शालावात प्रोक्त शोभने तूत्तरस्थित ॥५९ ६॥
शालिनी तु स्त्रियामेषाछ दोभदे प्रकीर्त्तिता ।
शालिपिष्ट शालिचूर्णे क्लीब काचमणावपि ॥५९७ ॥
शालिवाह शालिवहमाने शा यूहि वा वृषे ।
शालिहान पुमानश्वायुर्वेदकृ मुनिभिद्यथ ॥५९ ८॥
शालिहोत्र तु शास्त्रेऽस्य नपुसकमुदीरितम् ।
शालीनो गृहसम्बन्धि यधृष्टक्लीबयोस्त्रिषु ॥५९ ९॥
पुमानाढ्यगृहस्थेऽथ शालीन विनये भवेत ।
शालुश्चोरारयगन्धे ना कषाये त्रिस्तु तद्वति ॥५९८ ॥
उदीच्यफलभदे तु पद्मक दऽपि न द्वयो ।
अथ स्त्रीपुंसयो शालुदर्दुरे परिकीर्त्तित ॥५९८१॥
शालूक कण्ठगड्डुके तथा जातिफलेऽपि नप् ।
अथ द्वयोस्तु शालूको दर्दुरे परिकीर्त्तित ॥५९८२॥
शालूरो दर्दुरे द्वे स्याच्छन्दोभेदे पुमान्मत ।
शालेय पुंसि मिश्रेयौषधे चाणक्यमूलके ॥५९८३॥
शालिक्षेत्रे तु शालेय शालेय पर्वतान्तरे ।
शाल्मलो द्वीपभेद स्यान्निर्यासे शाल्मलेरपि ॥५९८४॥
उत्तरस्थ शाल्मलिवत्तलवृक्षान्तरे मत ।
शाल्मलिस्तु द्वयोस्तूलद्रुभेदे द्वीपभिद्यपि ॥५९८५॥
यदावृतिघृताम्भोधिस्तथैव नरकान्तरे ।
स्त्रियां रूपद्वयं तस्य शाल्मलि शाल्मलीत्यपि ॥५९८६॥
शाल्मली स्त्री सरिद्भेद नारकीयाऽऽपगान्तरे ।
विष्णुशक्त्यन्तरेऽपीति विद्वास केचिदूचिरे ॥५९८ ॥

रोहिद्रुमे शाल्मलिक शाल्मलेश्च कनि स्मृत ।
शाल्मली गरुडे द्वे स्त्री शाल्मला शाल्मलिरपि ॥५९८८॥
शाल्मलिस्थस्तु गृध्रेऽपि गरुडेऽपि तथा द्वया ।
शाल्वो वृक्षान्तरे शाल्वा नृभूम्नि क्षत्रियान्तरे ॥५९८९॥
तेषां वासेऽपि विषये शाल्वस्तेषा नृपे मत ।
शावा तु स्त्री सरिद्भेदे शावक्षुप्रसवे तु नप् ॥५९९ ॥
शावोऽस्त्री मृतके पुंसि शिशौ त्रिमृतयोगिनि ।
नपुंसक तु मृतकाशौचे शावमुदीरितम ॥५९९१॥
शाश्वतो ना शिवे व्यासे वाच्यवत्तु सनातने ।
शाश्वत तु सदात्वेऽपि योम्नि स्त्री शाश्वती भुवि ॥५९९२॥
शष्कुलीयोगिनि त्रि शाष्कुलिक क्ली तच्चये ।
शासस्त्रि शासकेऽथाज्ञारूपिक्षुक्तान्तरपु ना ॥५९९३॥
शासको दण्डयितरि शिक्षके पालके त्रिषु ।
शासन शासके त्रि स्याच्छिक्षिकायां तु शासनी ॥५९९४॥
शासन दण्डने क्लीबमाज्ञायामपि पालने ।
आज्ञापत्रे लेखशास्त्रसन्देशात्मयमादिषु ॥५९९५॥
शास्ति स्त्री शासुधातौ च शासनार्थेषु कीर्तिता ।
शास्ता बुद्धे गुरौ भूपे जिने खड्गे तथा पुमान् ॥५९९६॥
शास्त्र तु क्लीबमाज्ञाया विद्यायां च नपुंसकम ।
शास्त्रचक्षुर्व्याकरण शास्त्रनेत्रे पुनस्त्रिषु ॥५९९ ॥
शास्त्रशिल्पी तु कश्मीरदेश भूम्नि तु त जने ।
शास्त्रार्थ शास्त्रवाच्ये स्याद्वादेऽपि विदुषाम्मत ॥५९९८॥
शास्त्री शास्त्रवति त्रि स्यात्पुंल्लिङ्गो बुद्ध इष्यते ।
शाह्वा कश्मीरभागेषु शाह्वो वैदेशिके नृपे ॥५९९९॥
शिर्ना शान्तौ शिवे भाग्येऽप्यादेशे जवशसोर्मत ।
शिक्य शिक्या तुलारज्जौ रज्जुपाशान्तरेऽपि च ॥६ ॥
शिक्षाऽभ्यासे चिकीर्षाया पाठे विनयदण्डयो ।
साहाय्येऽध्यापने वेदाङ्गभित्पाटलभूरुहो ॥६ १॥

१ शिंशुमारस्तु पुल्लिङ्ग उफस्तारामयाऽप्युते ।
शिंशुमारो द्वयोर्यादोन्तरे जलकपावपि ॥

पुमांस्तु शिक्षो गन्धर्वराजभेदे प्रकीर्त्तितः ।
शिक्षाकरोऽध्यापके त्रिरथ व्यासे पुमान् मतः ॥६ २॥
शिखण्डो बर्हिबर्हेऽपि चूडायां (वृक्षभिद्यपि) ।
शिखण्डी तु शिखायां स्त्री पुमांस्तु शिखिपुच्छके ॥६ ३॥
शिखण्डकः काकपक्षे चूडायां बर्हिबर्हके ।
तथा शैवविशेषाणां प्राप्तमोक्षे यतौ पुमान् ॥६ ४॥
नितम्बाधोभागयोस्तु क्ली द्वित्वे स्तः शिखण्डके ।
शिखण्डिकः कुक्कुटेऽपि मयूरेऽपि द्वयोर्मतः ॥६ ५॥
शिखण्डिका शिखायां स्त्री पद्मरागः शिखण्डिकम् ।
शिखण्डी तु द्वयोर्ज्ञेयो मयूरेऽपि च कुक्कुटे ॥६ ६॥
शिखण्डिनी तु यूथ्यांश्च गुञ्जायां चाप्सरोभिदि ।
नारायणे तथा बाणे कस्मिंश्चित्पर्वतान्तरे ॥६ ७॥
कलायसंज्ञे धान्ये च शिखण्डवति तु त्रिषु ।
शिखरोऽस्त्री गिरेः शृङ्गे वृक्षाग्रे पुलकेऽपि च ॥६ ८॥
पक्वदाडिमबीजाभमाणिक्यशकलेऽप्यथ ।
शिखरं शोभने चापि वर्त्तुले वान्यवन्मतम् ॥६ ९॥
शिखरं शोभने प्रोक्तमित्यसत्तदमूलकम् ।
मल्लिकाकुड्मले पाणिमुद्रामदास्त्रभेदयोः ॥६ १ ॥
शिखरा तु गदाभेदे मूर्वायां शिखरी पुनः ।
स्त्रीत्वे कर्कटशृङ्ग्यां स्याल्लवङ्गं शिखरं मतम् ॥६ ११॥
शिखरी पुंस्यपामार्गस्तम्भे चापि तरौ गिरौ ।
स्याद्वाच्यवत्तु तीक्ष्णाग्रे मल्लीकोरकसन्निभे ॥६ १२॥
अत्यष्टिवृत्तभेदे तु स्त्रियां शिखरिणी मता ।
मार्जितासंज्ञके तक्रभेदे चापि सुसंस्कृते ॥६ १३॥
नायिकोत्तमभिद्रोमावलीद्राक्षान्तरेष्वपि ।
शिखा मता शिफाशाखाघृणिज्वालासु मूर्धनि ॥६ १४॥
चूडायां केकिचूडायां चूचुकेऽप्यग्रमात्रके ।
प्रधानेऽपि तथा वृक्षस्याग्रे छन्दोन्तरे स्त्रियाम् ॥६ १५॥

ना तु सर्पान्तरे सर्पसत्रयाजि फणाभृताम् ।
शिखी स्त्रियामिन्द्रजालाद्यन्तरनदीभिदो ॥६ १६॥
शिखाकन्द तु लशुने पलाण्डावपि कीर्त्तितम् ।
शिखाधरो ना मञ्जुश्रीबुद्धे बर्हिणि तु द्वयो ॥६ १ ॥
शिखामणि शिरोरत्ने ना श्रेष्ठ तूत्तरस्थित ।
शिखामूल तु लशुने पलाण्डौ गृञ्जनेऽपि च ॥६ १८॥
शिखावान्दीपके केतावग्नौ स्याच्चित्रके पुमान् ।
त्रि सचूडेऽपि तीक्ष्णाग्रे स्त्रियां तु स्याच्छिखावती ॥६ १९॥
शिखावलो मयूरे द्वे तच्छिखाया शिखावला ।
शिखी नाग्न्यशुवृक्षेषु शरे केतुग्रहे द्विजे ॥६ २ ॥
दीपे गिरौ धूमकेतौ कपिकच्छ्वा सितावरे ।
भिक्षौ नामान्तरे शक्रे तामसान्तरसम्भवे ॥६ २१॥
द्वितीयबुद्ध बौद्धाना ब्रह्मण्यपि तथा मत ।
परिव्राजिवृषे वृक्षविशेषेऽश्मन्तकाह्वये ॥६ २॥
शिखावति त्वय त्रि स्याद्द्वे कुक्कुटमयूरयो ।
यति मुक्तशिखावत्सु त्रिर्द्वे चैव बकाश्वयो ॥६ २३॥
तथाग्निपर्यायतया त्रिसन्ध्यायामपीष्यते ।
शिक्रु शिक्येऽपि जालेऽपि स्त्रीत्व एव प्रकीत्तिता ॥६ २४॥
शिग्रुर्भोजनशाके स्त्री ना तु शोभाञ्जनद्रुमे ।
नृभूम्नि शिग्रवो मर्त्ये ज्ञातिभेदेऽपि वैदिके ॥६ २५॥
शिङ्गो वृक्षे किशोरेऽपि पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।
शिङ्घाण कोशवृद्धावप्यब्धिफेने तथा पुमान् ॥६ २६॥
शिङ्घाणा त्रिषु नासाया मले क्लीब त्वयोमले ।
काचपात्रेऽपि कूर्चेऽपि शिङ्घाण परिकीर्त्तितम ॥६ ॥
शिञ्जा धनुर्गुणे स्त्री स्यान्नूपुरादिध्वनावपि ।
शिञ्जित क्ली नूपुरादिध्वनौ तद्वति तु त्रिषु ॥६ २८॥
शिञ्जी शिञ्जावति त्रि स्याच्छिञ्जिनी स्त्री चतुर्गुणे ।
वृत्तचापेऽपि गणिते नूपुरेऽपि तथा मता ॥६ २९॥

शित त्रि तेजिते ना तु विश्वामित्रसुते शरे ।
क्लीब शिता मदोष्णि स्याद्योनौ यकृति मेदसि ॥६ ३ ।
शितिस्स्त्री तेजने ना तु वर्णयो शुक्लकृष्णयो ।
ऋजावप्यथ च त्रि स्यादुक्तवर्णयुते शिति ॥६ ३१॥
भूजवृक्षेऽपि सारेऽथ त्रिस्तद्वर्णयुते ऋजौ ।
शितिकण्ठ शिवे पुसि तथा नागान्तर मत ॥६ ३२॥
नीलकण्ठखगे तु द्वे तथा दात्यूहकेकिनो ।
चन्दने क्ली शितौ कस्तूर्यां च स्याच्छितिचन्दनम ॥६ ३३॥
शितिपृष्ठास्त्रयोगार्थे पुमान्नागपुरोहिते ।
शित्पुटो भ्रमरे च द्वे जन्तौ मार्जारसन्निभे ॥६ ३४॥
शिथिल त्वदृढे त्रि स्याच्छिथिली तु स्त्रियामियम ।
वम्रिकासदृश पिङ्गवर्णे कीटान्तर भवेत् ॥६ ३५॥
शिपिर्नभ्रश्मिशेफषु द्वे पशुप्राणिनो शिपि ।
शैत्याच्छयनयोगा च शिप वारि प्रचक्षते ॥६ ३६॥
शिपिविष्टस्तु खलतौ शिवे विष्णौ पुमान्मत ।
त्रिदुश्चर्मणि शेफाग्रचर्महीनेऽपि निर्धने ॥६ ३ ॥
शिप्रो हनौ स्याच्छिप्रा तु नासायां च नदीभिदि ।
शिप्रे कपोलौ शिप्रा तु शिरस्त्राणे प्रकीत्तितम ॥६ ३८॥
शिफा मातरि शाखायामवरोहे नदीभिदि ।
नद्या कशायां कुमुदमूले मासीहरिद्रयो ॥६ ३९॥
शिबरौशीनरे क्रव्यात्पक्षिभिन्भूजवृक्षयो ।
शिबिका तु कुबेरीयगदाशिबिकयोर्मता ॥६ ४ ॥
शिबिर तु मत स्कन्धावारे धान्यान्तरऽपि च ।
शिम्बि शिमीवल्कार्येऽपि शिम्ब्यां च क्लीत्व इष्यते ॥६ ४१॥
शिम्बो द्वे मृगजातौ स्त्री शिम्बी निष्पावनामनि ।
वल्ल्यां शिम्बा तु मुद्गादिसस्याना [बीजकोशके] ॥६ ४२॥
शिम्बस्तु चक्रमर्देऽपि पुमान्कैश्चित्प्रकीर्त्तित ।
शिम्बल क्षुद्रशिम्बेऽपि पुमांश्चैव द्रुमान्तरे ॥६ ४३॥

शिम्बल शाल्मले पुष्पे ऋग्भाष्ये सायणोऽब्रवीत् ।
शिम्बि शिम्ब्यां तथा स्त्रीत्वे वल्ल्यां निष्पावनामनि ॥६ ४४॥
शिम्बिक कृष्णमुद्गे ना शिम्ब्या स्त्री शिम्बिका मता ।
शिम्बी शिम्ब्या च निष्पावे कपिकच्छ्वां[स्त्रिया मता] ॥६ ४५॥
शिम्यु समर्थे त्रि पुंभू नृजातिभिदि शिम्यव ।
शिरोऽनपिप्पलीमूले भूर्जेऽपि शयनीयके ॥६ ४६॥
स्त्रीपुंसयोरजगरे शिर एव प्रकीर्त्तित ।
शिरस्तु मस्तके श्रेष्ठ क्लीब स्यात्पर्वतान्तरे ॥६ ४ ॥
आरम्भेऽग्र सामभिद्यापो योतिर्मन्त्र इष्यते ।
शिरस्का शिबिकाया स्याच्छिरस्क तु शिरस्त्रके ॥६ ४८॥
शिरस्त्र तु कपालेऽपि शिरोरक्षणवस्तुनि ।
शिरस्थो व्यवहारस्थेऽभियोक्तर्यपि नायके ॥६ ४९॥
शिरस्यो ना शिरःकेशे शिरःसम्बन्धिनि त्रिषु ।
वाच्यवद्धातुकेऽथ स्यान्ना शिरिर्बाणखड्गयोः ॥६ ५ ॥
शिरिर्यालमृगेऽपि द्वे शलभेऽपि प्रकीर्त्तित ।
शिलम्बस्तु कुविन्देऽपि मुनावपि पुमान्मत ॥६ ५१॥
शिरिणा तु स्त्रियां रात्रौ गुह्याया कस्यचिन्मते ।
शिरिम्बिठ पुमान्मघे [ऋग्वेदे परिकीर्त्तित] ॥६ ५२॥
शिरीषो वृक्षभेदेऽथ नृभूग्रामान्तरे मत ।
शिरीषक शिरीषेऽपि तथा नागान्तरे मत ॥६ ५३॥
शिरीषिका न्वय स्त्रीत्वे वृक्षभेदे प्रकीर्त्तिता ।
शिरोरुजा शिरोव्याधौ सप्तपर्णद्रुमेऽपि च ॥६ ५४॥
शिरोरुह कचे शृङ्गे काकनासा शिरोरुहा ।
शिलजौषधिभेदे स्त्री शैलेये शिलज मतम् ॥६ ५५॥
शिलोऽस्त्री कणिशाऽऽदाने पारियात्रसुते तु ना ।
शिलाऽश्मनि च कर्पूरे द्वाराऽधस्स्थितदारुणि ॥६ ५६॥
शिलाकुट्टस्तु टङ्केऽथ पुमान्पाषाणशिल्पिनि ।
शिलाज त्वयसि क्लीब शिलाजतुनि च स्मृतम् ॥६ ५ ॥

स्याच्छिलाकुसुमे पारसीकतैले तथा मतम्।
शिलाटक स्यादट्टेऽपि विलेऽपि च तिले स्मृतौ ॥६ ५८॥
शिलाधातुस्तु खटिकाहरितालकगैरिके।
शिलापेषस्तु पेषण्यां तथा धा यादपेषके ॥६ ५९॥
शिलावहा नदीभेदे स्त्री नृभूम्नि जना तरे।
शिलासन तु शैलेये क्ली शिलाकुसुमेऽपि च ॥६ ६ ॥
शिलिर्ना भूजवृक्षे स्त्री द्वाराधस्थितदारुणि।
शिली गण्डूपदीभेक्योर्द्वाराधस्थितदारुणि ॥६ ६१॥
स्तम्भशीर्षे तथा बाणे शल्येऽपि स्त्रीव इष्यते।
शिलीमुख शरे पुसि भ्रमरे तु द्वयोर्मत ॥६ ६२॥
शिलो थ नपि शैलेये क्ली शिलाकुसुमेऽपि च।
शिलोद्भव क्ली शैलेये स्याच्छिलाकुसुमेऽपि च ॥६ ६३॥
तथा च दनभेदेऽपि सुवर्णेऽपि प्रकीर्त्तितम्।
शिल्प नपुसक प्रोक्त कारुकर्माण कर्मणि ॥६ ६४॥
कर्मा तराणां निर्माणविज्ञानेऽपि तथा मतम्।
शि पाचार्या तु वपनशालाया यौगिकेऽपि च ॥६ ६५॥
शिव शम्भौ पद्मरागे गोरसे शीधुकीलयो।
रुद्रभेदेऽपि शैवेऽपि तथा लिङ्गे शिवस्य च ॥६ ६६॥
देवे वेदे षष्ठमासे वालके गुग्गुलावपि।
पारते कृष्णधत्तूरे योगभित्पुण्डरीकयो ॥६ ६ ॥
शुक्रे काले वसौ शाके सुनिषण्णाभिधे पुमान्।
द्वे तु वातमृगे स्त्री तु शम्भोर्नवसु शक्तिषु ॥६ ६ ॥
एकस्याञ्च गवीध्वार यक्षुद्रधा ये नदीषु च।
हरीतक्यामामलक्या तामलक्या शमीद्रुमे ॥६ ६९॥
श्यामाहरिद्रादूर्वासु पीतवा व तरेऽपि च।
छन्दोभित्पिप्पलीमूलनेमिमातृनदीभिदो ॥६ ७ ॥
तुलस्यां क्रोष्टुभेदे च दीप्तजिह्वाह्वये स्मृता।
क्ली तु वारिणि कल्याणे स्यौणेये मूलका तरे ॥६ ७१॥

चाणक्यमूलकाभिख्ये सुखे व्योम्नि च सैन्धवे ।
सामुद्रलवणे श्वेतटङ्कणे च दनेऽपि च ॥६ ७२॥
तारेऽप्यामलके लोहे तगरे वर्षमिद्यपि ।
जम्बूप्लक्षद्वीपगते पुराणे शैवनामनि ॥६ ३॥
मोक्षे तु नस्त्री गौर्यां तु द्वयमेतच्छिवी शिवा ।
त्रि तु स्याच्छुभयुक्तेऽस्य सदा वाऽन्ताद्युदात्तता ॥६ ७४॥
शिवङ्करो ना खड्गे स्यादथ त्रि शिवकारिणि ।
शिवप्रिय पुष्पवृक्षे वसुभद्र इति श्रुते ॥६ ७५॥
शिशिम्बष्ठस्तु मेघेऽपि भरद्वाजऽपि चोच्यते ।
विशेषतो च शिशिरो शीते ना त्रि तु तद्वति ॥६ ७६॥
शिशु पुस्यषिभेदे च स्कन्दे च द्व तु बालके ।
शिशुकस्तु द्वयोर्बाले शिशुमारे तथैव च ॥६ ७॥
उलूपीसञ्ज्ञके यादोऽन्तरे ना तु द्रुमा तरे ।
शिशुप्रिय क्ली कल्हारे सौगन्धिकमिति श्रुते ॥६ ८॥
शिंशुमारस्तु पुल्लिङ्ग उक्तस्तारामयाऽच्युते ।
शिंशुमारो द्वयोर्यादोऽन्तरे जलकपावपि ॥६ ७९॥
शिश्विदानो द्वे कृकलासे त्रि स्यात्कृष्णकर्मणि ।
शीकरस्तु पुमा वाताहृते स्नेहकणे मत ॥६ ८ ॥
हस्तिहस्तोद्भूतदानजले च शबले गुणे ।
तथा शीतगुणे त्रिस्तु तद्गुणा यतराऽन्वते ॥६ ८१॥
शीघ्र क्लीबमसन्ये ना वायौ क्षिप्र तु तत्त्रिषु ।
शीत जले च शैत्ये क्ली त्रिषु शैत्यगुणान्विते ॥६ ८२॥
शीतस्तु वेतसे पुंसि तथा श्लेष्मातके मत ।
शीतकस्त्वलसे त्रि स्त्री तु ज्वालाभिदि शीतिका ॥६ ८३॥
करवीरे पुमाञ्शीतकुम्भस्तत्प्रसवे तु नप् ।
शीतपङ्कस्तु ना शीधौ योगार्थे तु यथायथम् ॥६ ८४॥
शीतलश्चम्पकतरौ तथा शीतगुणे पुमान् ।
त्रि तद्वति स्त्री तु रक्तवर्णायां गवि शीतला ॥६ ८५॥

सैन्धवे क्ली शीतशिव ना तु शालेयभेषजे।
शीधुरस्त्री मद्यमात्रे पक्वेक्षुरसजेऽत्र च ॥६८६॥
शीरा कार्पासिकाया स्त्री शीरस्त्वजगरे द्वयो।
लताङ्कुशे तु शीरीति स्त्रीलङ्ग परिकीर्त्तिता ॥६८ ॥
शीर्णिस्त्वङ्गे विशरणे तथा रोगे भवेत्स्त्रियाम्।
शीर्वी स्त्री पुंसयोर्यङ्कौ कुमौ च परिकीर्त्तित ॥६८८॥
शीर्षण्य क्ली शिरस्त्राणे योधाना शीषकाह्वये।
केशे ना विशदे तु त्रिमुख्ये मूधभवेऽपि च ॥६८९॥
शीलमस्त्री स्वभावेऽपि सद्वृत्तेऽपि प्रकीर्त्तितम्।
शीवा द्वयो शृगाले चाऽजगरे सप एव च ॥६ ९ ॥
शुको याससुते कीरे रावणस्य च मन्त्रिणि।
ग्रन्थिपर्णे शिरीषे च शुक स्या छोणके क्वचित् ॥६९१॥
शुकनासष्टुण्टुवृक्षे पुमाश्चागस्त्यपादपे।
शुकपत्रो निर्विषा ये सर्पा द्वादशकीर्त्तिता ॥६९२॥
तेषामेकत्र योगे तु लिङ्गाद स्याद्यथायथम्।
शुक्तस्तु पूतिता प्राप्त परुषेऽम्लेऽपि वाच्यवत् ॥६९३॥
शुक्त तु काञ्जिके कल्कजातावाप नपुंसकम्।
य मस्त्वादिशुचौ भाण्डे सक्षौद्रगुडकाञ्जिके ॥६९४॥
त्रिरात्र धान्यराशिस्थ तत्र चापि प्रकीर्त्तितम्।
शुक्तिस्तु मुक्तास्फोटे स्त्री स्यादङ्कोलदलौषधे ॥६९५॥
तिन्तिड्या तिन्तिडीकाया फले दुर्नामिकाह्वये।
जलजन्तौ च घोटानां रोमावर्त्तान्तरेऽपि च ॥६९६॥
कर्षो माने तथा कर्षे द्विगुणो मानकेऽपि च।
अक्षिरोगविशेषे च पुमांस्त्वन्यत्र तरे स्मृत ॥६९७॥
शुक्रस्तु श्वेतवर्णे च शुक्लपक्षे पुमान्मत।
श्वेतवर्णान्विते तु त्रि शुक्र त्वम्सु नपुंसकम ॥६९८॥
शुक्लोऽर्के सितवर्णे च चन्द्रेऽग्नौ भार्गवेऽध्वरे।
दक्षिणाग्नौ क्रताग्रशौ यज्ञपात्रगृहान्तरे ॥६९९॥

ज्येष्ठमासेऽपि शुक्ल तु हेम्नि पुण्ये धने जने ।
रेतोऽक्षिरुग्भिदो सामा तरे द्वे तु शिशौ द्विजे ॥६१ ॥
त्रि तु मेध्ये सिते चाथ धर्मसज नररश्मिषु ।
शतत्रये रवे शुक्रा इति स्त्री वे प्रकीर्त्तिता ॥६१ १॥
शुण्ठोऽपे त्रिषु ना तु स्या पशौ पेश्या तृणा तरे ।
शुण्ठिर्ना शुण्ठतौ धातौ स्त्री तु स्यान्नागरौषधे ॥६१ २॥
शुण्डा सलीलहस्ति या मादराहस्तिहस्तयो ।
शुद्धोऽस्त्रिया जलेऽर्के तु ना त्र केवलपूतयो ॥६१ ३॥
शुद्धा तोऽ त पुरे कक्ष्या तरे गुह्ये तथा पुमान् ।
शुनो वायौ सुख तु क्ली शुनके तु द्वयोर्मत ॥६१ ४॥
शुनकस्त्वृषिभदे ना शुनि स्त्रीपुसयोर्मत ।
शु न्ध्यवोऽप्सु स्त्रियो शु ध्युर्नाऽह्नोऽ यर्के द्वयो खगे ॥६१ ५॥
शुभ लग्ना च नवमे राशावप्सु च मङ्गले ।
मञ्जुप्रशस्तयोस्तु त्रिर्मङ्गलेन तथा विते ॥६१ ६॥
अर्घ्यायां तु शुभेत्येषा स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ।
शुभिस्त्रि रम्ये विप्रे द्वे नाऽवनौ च ऋषौ रवौ ॥६१ ॥
शुभ्र शौक्ल्ये पुमास्त्रिस्तु शुक्ले स्याद्दीप्तिमत्यपि ।
शुल्कोऽस्त्री स्यात्प्रदेयेऽर्थे मार्गादिषु महीपते ॥६१ ८॥
विवाहाय वराद्ग्राह्ये धनेऽपि परिकीर्त्तिता ।
शुश्रूषा श्रोतुमि छायामुपास्तौ च कथानके ॥६१ ९॥
शुषिर्ना शुष्यतौ धातौ स्त्री तु र न्ध्रे च शोषणे ।
शुषिरो विवरे न स्त्री वाद्यभेदे नखौषधे ॥६११ ॥
पाशादौ तु छिद्रयुक्ते शुषिरस्त्रिषु कीर्त्तित ।
एत चासाम्प्रत यस्माद् त्यादि सुषिरो मत ॥६१११॥
शुष्णो ग्रीष्मांशुक्ष्यर्के ना द्वे शोषे बले तु नप् ।
शुष्म बलेऽप्सुसयोगे शुष्म कालेऽनिले रवौ ॥६११२॥
शूकोऽस्त्री धा यसूक्ष्माग्रे शुङ्गाऽनुक्रोशयोरपि ।
शूद्रश्चतुर्थवर्णे च तथा सकरजे द्वयो ॥६११३॥

स्त्र्यर्थे शूद्राऽत्र पुयोगे तु शूद्री भूम्नि तु स्मृता ।
शूद्रा घर्मार्थरश्मीनां त्रिशया प्रथमे शते ॥६११४॥
नपुसक तु रजते शूद्रमेतत्प्रकीर्त्तितम् ।
शून्य रिक्ते मोहवतो वचस्यपि च वाच्यवत् ॥६११५॥
शूरो वीरे त्रिषु श्वेतशालौ ना कुक्कुटे द्वयो ।
शूर्पोऽस्त्री परिमाणेऽपि द्रोणयुग्मात्मके मत ॥६११६॥
अर्द्धप्रस्थात्मके मानेऽपि च द्रोणचतुर्गुणे ।
प्रस्फोटनक्रियाया च साधनेऽपि प्रकीर्त्तित ॥६११ ॥
शूर्पकर्णो हस्तिान द्वे यौगिके तु यथायथम् ।
शूलोऽस्त्री शस्त्रभेदे च तथा रोगान्तरे मत ॥६११८॥
स्या छूलनाशक सौवर्चलाख्ये लवण नपि ।
शूलिकस्त्रि शूलवति द्वे विप्राशूद्रसभवे ॥६११९॥
शूली तु शूलयुक्ते त्रि शङ्करे तु पुमा मत ।
शृङ्खल कटिसूत्रे त्रिद तिना पादब धने ॥६१२ ॥
शृङ्गोऽस्त्री शैलशिखरे सानौ क्रीडाऽम्बुयन्त्रके ।
विषाणे च प्रभुत्वे च स्यात्प्राधा यप्रधानयो ॥६१२१॥
क्लीब तु वलिनि स्त्री तु शृङ्गी म स्या तरे मता ।
मद्गुरस्य स्त्रियां ककटशृङ्ग्यां च विषौषधे ॥६१२२॥
अथ शृङ्गस्तु पुल्लिङ्गो जीवकाख्यभेषजे ।
शृङ्गारस्तु पुमान्द तबीजस्तम्बेऽम्बुसभवे ॥६१२३॥
शृङ्गाट तत्फले युद्धयन्त्रभेदे चतुष्पथे ।
शृङ्गारो लम्पटे पुसि नस्त्री तु रस उज्ज्वले ॥६१२४॥
तथा सिन्दूरचूर्णे च करिणां मण्डनान्तरे ।
शृङ्गारी पूगवृक्षे ना सुवेषे त्वभिधेयवत् ॥६१२५॥
शृङ्गी तु वृषभेऽश्वे च यस्य शृङ्ग पदे भवेत् ।
मांसबुद्बुद उक्तोऽय पुमांश्च वृषभौषधे ॥६१२६॥
शृङ्गिणी तु गवि स्त्रीत्वे महिषे तु द्वयोर्भवेत् ।
शृङ्गिबेर तु शुण्ठ्यामप्यार्द्रकेऽपि नपुसकम् ॥६१२७॥

शेवा स्त्री प्रचलासञ्ज्ञनिद्राया क्ली सुखे धने ।
शेषोऽप्रधानेऽनन्तारयसर्पराजे च शार्ङ्गिण ।।६१२८।।
अवतारा तरेऽप ये त्रिस्व यत्रोपयुक्तत ।
माल्याक्षतादिदाने तु स्त्री शेषा परिकीर्त्तिता ।।६१२९।।
शेखस्वनन्यपूर्वाया विप्राया व्रात्यविप्रजे ।
द्वयोरथ शिखा योगि येष शैखस्त्रिषु स्मृत ।।६१३ ।।
शै य शीतलतायां च नैशित्ये शौक्ल्यकार्ष्ण्ययो ।
शैलस्तु भूधरे पुसि शिलासम्ब धिनि त्रिषु ।।६१३१।।
वृत्तौ शीलभवाया स्त्री शैलीति परिकीर्त्तिता ।
शैलाट शुक्लकाचे च देवले च पुमा मत ।।६१३२।।
शैलाटस्तु द्वयो सिंहे किराते च प्रकीर्त्तित ।
शैलूषो ना बिल्वशण्डजात्योर्द्वे कितवे नटे ।।६१३३।।
शैलेय सि धुलवण क्लीब स्यात्तार्क्ष्यशैलके ।
कालानुसार्यधातौ च मधुपे तु द्वयोरयम् ।।६१३४।।
स्त्रिया शैवलिनी नद्या वाच्यवत्तु सशैवले ।
शैशव तु द्वयो साम्नोरु चतागीतयोस्तथा ।।६१३५।।
नपुसक शिशुत्वेऽथ शिशुसम्ब धिनि त्रिषु ।
शोक शुचि पुमा स्त्री तु शोकी रात्रौ प्रकीर्त्तिता ।।६१३६।।
शोचिज्वलति शुद्धत्वे पैङ्गल्येंशौ शुग्विशुद्धयो ।
शोठो धूर्त्तेऽलसे मूर्खे नीचे पापरते त्रिषु ।।६१३ ।।
शोणो हिरण्यबाह्वारयनदभेदे प्रकीर्त्तित ।
टुण्डुवृक्षे रक्तवर्णे त्रि तु तद्वति तत्र च ।।६१३८।।
स्त्र्यर्थे शोणा शोण्यथाश्वे द्वे कोकनदवर्णके ।
शोणित रुधिरे वृक्षनिर्यासे कुङ्कुमेऽपि नप् ।।६१३९।।
रक्तवर्णयुते त्वेतदभिधेयवदिष्यते ।
शोधना शोधयत्यर्थे न ना शुद्धौ तु नप्स्मृतम् ।।६१४ ।।
शोधनोऽङ्कोलवृक्षे ना सम्माज या तु शोधनी ।
अथ शोधन एष स्याद्वाच्यवच्छुद्धिसाधने ।।६१४१।।

शोभन क्ली सुवर्णेऽर्थे शोभिते त्रि तु सुन्दरे ।
शोषक पश्चिमे कोष्ठश्रेणावारम्य दक्षिणात् ॥६१४२॥
कोष्ठे य सप्तमे वास्तुदेवस्तत्र पुमान्मत ।
अथ त्रि शोषयितरि शोष्टर्यपि च शोषक ॥६१४३॥
शौक शुकसमूहे च स्त्रीणां च करणान्तरे ।
शौण्डो द्व कुक्कुटे शौण्डी पिप्पल्या जलदावलौ ॥६१४४॥
शौण्डो तु मत्त शुण्डासम्बन्धि यप्यभिधेयवत् ।
औत्थिताशनिके शौन्यादनिकस्तस्करेऽपि च ॥६१४५॥
शौर्यं शक्त्याह्वयबले लग्नाद्राशौ तृतीयके ।
शूरस्य भावक्रिययोस्तथैव स्यान्नपुसकम् ॥६१४६॥
श्यामो ना हरिते वर्णे वर्णे कृष्णे तथाऽम्बुदे ।
पीलुद्रुमे च श्यामा तु निशीथि यां स्त्रियामियम् ॥६१४ ॥
पिप्पलीफलिनीविद्युत्पालिनीशारिवासु च ।
स्त्री यञ्जनकृताया च कयाया पोतकीखगे ॥६१४८॥
क्लीब योम्नि मरीचेऽथोक्तवर्णान्वितयोस्त्रषु ।
श्यामक श्यामाकधाये हेम्नस्तु श्यामिका मले ॥६१४९॥
श्यामलोऽश्वत्थवृक्षे ना काष्र्ये च त्रिषु तद्वति ।
श्यामला स्त्री मृगीभेदे प्रोक्त यस्य च लक्षणम् ॥६१५ ॥
श्यामवल्ली लताया च श्यामे च मरिचे स्त्रियाम् ।
श्यावोऽर्काश्वे च कपिशे वर्णे त्रिषु तु तद्वति ॥६१५१॥
श्येनस्तु श्वतवर्णे ना त्रि तु तद्वति तत्र च ।
स्त्र्यर्थे श्येना तथा श्येनी मृगे द्वे चापि पक्षिणि ॥६१५२॥
श्येन सामान्तरे क्रत्वन्तरे चाप्याभिचारिके ।
श्येनसञ्ज्ञतृणप्राणिजान्यो स्यादेतयोर्यदा ॥६१५३॥
स्त्र्यर्थे वृत्तिस्तदारूप श्येनीत्येव प्रकीर्त्तितम् ।
द्वे त्वश्वे पत्रिसञ्ज्ञे च श्येन पक्ष्यन्तरे स्मृत ॥६१५४॥
श्येना तु प्राचिकासञ्ज्ञपक्षिजातौ स्त्रियां मता ।
श्येन्यो द्वयोरजगरे शकुनावपि कीर्त्तित ॥६१५५॥

श्रद्धास्तिक्ये स्पृहायां च गर्भिण्यास्तु विशेषत ।
श्रद्धालुर्दोहदि या स्त्री श्रद्धाशीले तु वा यवत् ॥६१५६॥
श्रपणा श्रपयत्यर्थे ननाऽथ श्रपणी स्त्रियाम् ।
स्यादग्निहोत्रहवणीनामधेये स्रुगन्तरे ॥६१५७॥
श्रमण तु मत शा तौ श्रमणी मुण्डिकौषधे ।
दृष्यालयारयलतायां च क्षपण तु द्वयोर्भवेत् ॥६१५८॥
श्रवण क्ली शृणोत्यर्थे श्रोत्रे पुसि तु विष्णुभ ।
तद्युक्त कालमात्रेऽथ द्वयो प्राण्यन्तरे भवेत् ॥६१५९॥
श्रवणा तु स्त्रियां रात्रिविशेषे पूर्णिमान्तरे ।
श्रवो यश श्रोत्रबलधनाऽ नेषु नपुसकम् ॥६१६ ॥
श्रविष्ठा वसुभेऽपि स्त्री तद्युक्त कालमात्रके ।
अथ श्रविष्ठो जातेऽत्र वा यवत्परिकीर्त्तित ॥६१६१॥
श्राणा स्त्रिया यवाग्वा स्यात्क्षीरात्तु हविषस्तथा ।
अन्यत्र पक्वे श्राणस्त्रिवथ पाके नपुसकम् ॥६१६२॥
श्राद्ध श्रद्धावति त्रि स्यात्स्त्रीत्वे श्राद्धेऽति तत्र च ।
श्राद्ध तु भोजनाया स्यात्पितणा क्लीबलिङ्गकम् ॥६१६३॥
श्रावक श्रावयितरि श्रोतरि त्रिगुणे तु ना ।
कण्ठजे गायकानां यो दूरत श्रावयेद्ध्वनिम् ॥६१६४॥
स्त्रीपुसयोस्तु जैनानां श्रावक स्यादुपासके ।
श्रावणी पूर्णिमायां स्त्री श्रवणर्क्षयुजि स्मृता ॥६१६५॥
मुण्ड्यौषधे च दृष्यालीनाम्नि वल्ल्यन्तरेऽपि च ।
श्रावणो ना श्रावणिके मासि त्रिषु तु यौगिके ॥६१६६॥
श्रीरिन्दिरायां [सम्पत्तौ लवङ्गे च स्त्रियाम्मता] ।
श्रीकण्ठस्तु शिवे पुसि तथैव कुरुजाङ्गले ॥६१६ ॥
श्रीगर्भस्तु श्रियो गर्भे खड्गेऽपि परिकीर्त्तित ।
श्रीघन दृघनि क्लीब बुद्धे तु श्रीघन पुमान् ॥६१६८॥
श्रीपर्णं त्वग्निमन्थेऽपि कमलेऽपि नपुसकम् ।
श्रीपर्णी तु स्त्रियां वृक्षे काश्मर्ये कट्फलेऽपि च ॥६१६९॥

श्रीपुष्प तु श्रिय पुष्पे सितपद्मेऽपि कीर्त्तितम् ।
श्रीफल्यामलकीनील्योर्बिल्वे तु श्रीफल पुमान् ॥६१७ ॥
श्रीमास्तु पुसि गोविन्दे कुबेरगृहकेतुषु ।
इटचरारण्यबलीवर्दे कदम्बतिलकारण्ययो ॥६१ १॥
वृक्षयोर्गुग्गुलौ द्वे तु शुके लक्ष्मीवति त्रिषु ।
श्रीवत्स श्रीपतौ तस्य लाञ्छनेऽपि पुमान्मत ॥६१ २॥
श्रीव साङ्को वासुदेवे वृके त्वेष द्वयोर्मत ।
श्रीवास श्रीपिष्टनाम्नि निर्यासे केशवेऽपि च ॥६१ ३॥
श्रीह्रदस्तु प्रपाया च पुँल्लिङ्गाऽपि श्रियो ह्रदे ।
श्रुत नपुसक शास्त्रे श्रवणाख्ये च कर्मणि ॥६१ ४॥
आकर्णितेऽत्यवधृतेऽपि श्रुत वाच्यवन्मतम् ।
श्रुतकर्मा यौगिकेऽपि पुमास्तु स्याच्छनैश्चरे ॥६१७५॥
श्रुतिस्तु वेदे श्रवणक्रियाया च श्रोत्र एव च ।
गीतिधर्मविशेषे च शब्दे चाप्यभिधायके ॥६१ ६॥
श्रूष बले सुखे श्रषा शाकमित्कासमदयो ।
श्रेणि पङ्क्तौ च धारायामष्टादशगणान्तरे ॥६१७ ॥
अक्ली समानजातीयशिल्पिना सहतावपि ।
श्रेय सामान्तरे क्लीब द्वाइये मानुकोद्भवे ॥६१ ८॥
मोक्षे धर्मे शुभेऽथ त्रिस्तद्यतेऽतिप्रशस्यके ।
स्त्र्यर्थे नपो श्रेयसीति स्त्रिया तु श्रेयसी तथा ॥६१ ९॥
पाठाया हस्तिपिप्पल्या हरीतक्यां च कीर्त्तिता ।
श्रेष्ठ ताम्र मत क्लीब स्या प्रशस्यतमे त्रिषु ॥६१८ ॥
श्रोणि कट्यामुपस्थे च स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ।
श्रोत्रकान्ता वृद्धिसज्ञभेषजे यौगिकेऽपि च ॥६१८१॥
श्लक्ष्ण तु मसृणेऽल्पेऽपि सुन्दरेऽप्यभिधेयवत् ।
श्लिकुर्नना विषादे ना ज्योतिषेऽपि मृगास्थनि ॥६१८२॥
अथ श्लेष्मघना भल्ल्यां केतक्यां च स्त्रियां मता ।
पिण्यामल्ल्यो स्त्रियां श्लेष्मघ्नी त्रिस्तु श्लेष्महन्तरि ॥६१८३॥

श्लेष्मा कफे चर्मणश्च विकारे द्रढकाह्वये ।
रथस्य शीघ्रवहनसाधने चापि वस्तुनि ॥६१८४॥
गोधूमे श्लेष्मलस्त्रिस्तु श्लेष्मे तच्छलेष्मकारिणो ।
श्लोको यशसि पद्ये च तथा वाचि पुमान्मत ॥६१८५॥
श्वदंष्ट्रा गोक्षुराऽभिख्यस्तम्बे यन्त्रा तरेऽपि च ।
परिखाया बहिर्भूमौ राज्ञा द न्ता तरे शुनाम् ॥६१८६॥
श्वपचोऽन यपूर्वायां किरात्या निष्ठ्यत सुते ।
विप्राचण्डालज च द्वे त्रि शुन पक्तरि स्मृत ॥६१८ ॥
श्वपाकोऽम्बष्ठतो विप्रचा क्षत्तुश्चोग्रस्त्रिया सुते ।
उग्रात्क्षत्रस्त्रिया चापि शुन पाके तु ना मत ॥६१८८॥
श्वयो बले गदे शोषे पु लिङ्ग परिकीर्त्तित ।
श्वयी त्रि श्वयथौ च द्रे चापि पुल्लिङ्ग इष्यते ॥६१८९॥
श्ववृत्तिस्तु शुना वृत्तौ सेवाया च प्रकीर्त्तिता ।
श्वशुरो जनके पत्युर्जायायाश्च पुमान्मत ॥६१९ ॥
स्त्रियां तु श्वशुरा भ्रातृजायामिय सम्परिकीर्त्तिता ।
श्वशुर्यो देवरे च द्रे ना द्वयो श्यालके मत ॥६१९१॥
श्वश्रू श्वशुरपत्यां च पितृष्वसरि च स्त्रियाम् ।
श्वसन क्ली मत श्वासे ना वायौ मदनद्रुमे ॥६१९२॥
श्वात्र नपुसक क्षिप्रे धनेऽपि परिकीर्त्तितम् ।
श्वाल स्यादाशुगत्या ना कुक्कुरे तु द्वयोर्मत ॥६१९३॥
श्वेतस्तु ऋषिभेदेऽपि शुक्लवर्णे पुमान्मत ।
कुलशैलान्तरे मेरोरुत्तरान्नीलपर्वतात् ॥६१९४॥
उत्तरे च त्रिषु श्वेत शुक्लवर्णान्विते मत ।
क्लीब तु दध्नि रजतेऽप्यथ श्वेता सुराऽ तरे ॥६१९५॥
पैष्टिकीसञ्ज्ञके स्त्री स्याल्लतान्तरनदीभिदो ।
भवेत्सुग धौ तुलसीसञ्ज्ञके च कटिङ्करे ॥६१९६॥
सितशेफालिकायां तु स्याच्छ्वेतसुरसा स्त्रियाम् ॥६१९६॥

ष

षटक षण्णां गणे त्रि स्याद्विशेषात्कामरोषयो ॥६११९ ॥
मदलोभमुदा मानस्य च सङ्घे पुमान्मत ।
षडस्रा तु स्त्रियामेषा स्याच्छागलकपादपे ॥६११९८॥
प्रसिद्धे चापि शार्ङ्गष्ठादासाप्रभृतिभि पदै ।
वनस्पत्यन्तरे त्रिस्तु षटकोणे पारकीर्त्तिता ॥६११९९॥
षडग्रन्था पिप्पलीमूले वचाशठ्योरपि स्त्रियाम् ।
षण्ड स्यादिटचरे पण्डे मूर्धं योष्मादिक पुमान् ॥६२ ॥
एष वेर्षवरे नीलवृषो सर्गे च कीर्त्तित ।
षण्डोऽस्त्री वृक्षपद्मादिवृन्दे पुसि तु गोपतौ ॥६२ १॥
षण्डाली स्त्री सरागाया तैलमाने सरस्यपि ।
षष्टिहायन-शब्दोऽय गजे स्याद्वृद्धे स्त्रिया पुन ॥६२ २॥
समाहारद्विगौ षष्टिहायनी भवेत्पुन ।
बहुव्रीहौ हि तत्रापि स्त्रियां ङीप् षष्टिहायनी ॥६२ ३॥
वयस्येवात्र ङीबुक्त शालादौ षष्टिहायना ।
षष्ठ तु पूरणे षण्णां त्रि षष्ठी तु स्त्रियां तिथौ ॥६२ ४॥
स्कान्द्या षष्ठविभक्तौ च पावत्याश्च प्रकीर्त्तिता ।
षाडवो गीतिभेदेऽम्लमधुरोर्मिश्रिते रसे ॥६२ ५॥
षाडवस्त्वम्लमधुररसयुक्ते त्रिषु स्मृत ।
षाण्मासी सप्तमे मासि कर्त्तव्ये श्राद्ध इष्यते ॥६२ ६॥
षण्मासीयोगिनि त्वेष वाच्यवत्परिकीर्त्तित ।
षाष्ठिक व्रतभेदे षष्ठकालांशे प्रवर्त्तने ॥६२ ॥
मेघवत्तु क्रतुमति षष्ठाहभववस्तुनि ।
पिङ्गो वेश्यापतौ पुसि वेश्याचार्येऽपि कीर्त्तित ॥६२ ८॥
पलमाने षोडशिका न नाथाऽस्त्री पलद्वये ।
ष्व्यूमश्चन्द्रे जले रश्मौ तन्तौ स्यान्मङ्गलेऽपि च ॥६२ ९॥

स

सो विष्णावीश्वरे सा तु लक्ष्म्या गौर्यामपीष्यते ।
सयद्युद्धेऽग्निचित्याया द्वादशस्विष्टकासु च ॥६२१ ॥
सयद्वरो नृपे पुसि क्लीब सयद्वर रणे ।
अथ सयद्वरस्त्रि स्यादनूपेऽप्यभयप्रदे ॥६२११॥
सयाव समिश्रणे च भक्ष्यभदेऽस्य लक्षणम् ।
समिता वम्लदुग्धार्द्रा पक्वा खण्डे घृतोत्तरे ॥६२१२॥
सयावोऽय युतश्चूर्णे खण्डैलामरिचाद्रकै ।
सरम्भ पुनराटोपे क्रोधेऽपि परिकीर्त्तित ॥६२१३॥
सरोधस्तु क्षये पुसि तथा सरोधने मत ।
सलयस्तु पुमान्स्वापे तथैकीभाव इष्यते ॥६२१४॥
सवत्सरोऽब्दभेदे चाऽदमात्रेऽपि कीर्त्तित ।
क्लीब सवनन याच्ञासभक्त्योश्च वशीकृतौ ॥६२१५॥
सवत्तस्त्वृषिभेदे स्याद्वत्सरे च जगत्क्षये ।
सवत्तनाया सवृत्तावपि सवत्र पुस्ययम् ॥६२१६॥
सवत्तको हलिहले तथैव वडवानले ।
सवर्त्तिका नवदले नलि यावेष्टितेऽपि च ॥६२१७॥
पुमान् सवसथ प्रोक्तो ग्रामे सवसनेऽपि च ।
सवालश्च द्रकिरणे गजपुच्छस्य मूलत ॥६२१८॥
चतुर्धा च विभक्तस्य द्वितीयांशे प्रकीर्त्तित ।
सवास सहवासे च राजधान्यां तथा पुमान् ॥६२१९॥
स्त्रिया तु मुखशालायां न तु ना सहवासने ।
सवासन कर्मशाला न तु ना सहवासने ॥६२२ ॥
सवित्तिस्तु स्त्रियां ज्ञाने सवादेऽपि प्रकीर्त्तिता ।
सविद्युद्धे प्रतिज्ञायां सङ्केताचारनामसु ॥६२२१॥
सभाषणे क्रियाकारे ज्ञानतोषणयोरपि ।
सवृत क्ली सवरणे वर्णधर्मान्तरेऽपि च ॥६२२२॥

स्या महाप्रलये तद्व संहारी त्वघशालिका ।
सहित त्रिषु सश्लिष्ट सहिता तु स्त्रियामियम् ॥६२३ ॥
शास्त्रग्र था तरे वेदभागेऽपि क्वचिदि यते ।
अतीव सन्निकर्षे च वर्णाना क्ली तु सामनि ॥६२३८॥
स्वादिष्ठावर्गगीते स्यात्षष्ठे च नवमेऽपि च ।
सहृति प्रलयाकषसमाप्तिषु भवो स्त्रयाम् ॥६२३९॥
सक्थ्यूरा शकटाङ्गे च कस्मिश्चि स्यान्नपुसकम् ।
सखा सहायसुहृदोस्त्रि स्त्रीत्वेऽत्र सखीति च ॥६२४ ॥
भाषाप्रयोगे रूप स्याद्व धौ तु स्यात्सखा पुमान् ।
सगर सविषे त्रि क्ली योम्नि ना तु नृपा तरे ॥६ ४१॥
सङ्करो ग्निचटत्कारे समाज यवपुञ्जिते ।
सङ्कीर्णे च त्रिषु स्त्री तु क याभदे नृदूषिते ॥६२४२॥
विवाहायोग्यक यानामेकत्र परिकीर्त्तिता ।
नवदूषितक याया सङ्कारी पुनरु यते ॥६२४३॥
पुमा सङ्कसुक श्राद्धाऽग्नौ सङ्कीर्णे तु स त्रिषु ।
तथाऽपवादशीले च यक्ता यक्तेऽपि चारणे ॥६२४४॥
द्वयो सङ्कुचितो हसेऽथाल्पीभूते त्रिषु स्मृत ।
सङ्क्रमस वस्त्रियां दुर्गसञ्चरेऽप्येकमाश्रवम् ॥६२४५॥
उज्झित्वान्याश्रयप्राप्तौ तथैव प्र ययेऽपि च ।
सङ्ख्यमस्त्री रणे स्त्री तु सङ्ख्या स्याद्गणने तथा ॥६२४६॥
एकत्वादौ विचारे च तथैव परिकीर्त्तिता ।
सङ्गो युद्धे सङ्गमेऽथ लवणे सैन्धवे नपि ॥६२४ ॥
सङ्गतो दिवसस्य स्या चतुर्भागे द्वितीयके ।
पञ्चरात्रपय पानव्रतेऽथ मिलिते त्रिषु ॥६२४८॥
सङ्गमो मेलके नस्त्री सङ्गमस्तु व्रता तरे ।
पञ्चरात्र पय पानात्मके पुसि प्रकीर्त्तितः ॥६२४९॥
सङ्गरो ना प्रतिज्ञायां क्रियाकारेऽपि चापदि ।
युद्धे विषे च क्लीव तु सङ्गर स्या छमीफले ॥६२५ ॥

सङ्ग्रहस्तु महोद्योगे स्वीकारे च समुच्छ्रये ।
स्त्रीसङ्ग्रहेऽपि सङ्क्षेपे पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥६२५१॥
सङ्ग्रहो मुष्टिमात्रेऽपि मुष्टौ च फलकादिन ।
सङ्घवादी द्वयोर्मर्त्त्ये यौगिके तु यथायथम् ॥६२५२॥
सङ्घातस्तु मत पुसि समूहे हननेऽस्थनि ।
का यजातिविशेषे च तथैव नरका तरे ॥६२५३॥
सङ्घातिकारणा वेशा स्त्रीलिङ्ग परिकीर्त्तिता ।
त्रिस्तु सङ्घातयितरि सह तर्यपि चेष्यते ॥६२५४॥
स ज स्यात्त्रिषु सम्बद्ध सतो जातेऽपि कीर्त्तितम् ।
स जनस्तु पुमान्साधौ कुलीने भेषवद्भवेत् ॥६२५५॥
स्त्रियां तु सञ्जना हस्तिक पनायामथ स्मृतम ।
नपुसक स जन तु तद्वद्व चोपरक्षणे ॥६२५६॥
सञ्चार सङ्क्रमे सङ्के चारे सस्याचरेऽपि य ।
गत्वा ग वा पर जिज्ञासने तत्र प्रकीर्त्तित ॥६२५ ॥
त्रिषु सञ्चारितर्यत्र सञ्चारक इति स्मृत ।
सञ्चारिका तु भूपस्य कथाया द्रविणादिषु ॥६२५८॥
नियुक्तायां महाकार्ये चास्यां दूत्या तथा स्त्रियाम् ।
सञ्जयो धृतराष्ट्रस्य सचिवे पुसि कीर्त्तित ॥६२५९॥
क्लीव तु सामभेदे स्यादि द्र नरश्चचि स्थिते ।
विश्वाधनानी यारम्य तथा हीनमखा तरे ॥६२६ ॥
सज्ञाऽभिधाने सङ्केते हस्ताद्यैरथसूचने ।
सूर्यभार्यान्तरे बुद्धौ चेतनायां च तत्र तु ॥६२६१॥
उपांशु य च क्रियते स्वेष्वनीकेषु विग्रहे ।
सटा जटायां स्त्री वेऽथ नना सिंहस्य केसरे ॥६२६२॥
सङ्करे तु भटीविप्रसम्भवे स्यात्सटो द्वयो ।
सत्साधौ विद्यमाने च प्रशस्तेऽभ्यर्हिते तथा ॥६२६३॥
सत्ये बुधे शोभने च भेषवत्परिकीर्त्तित ।
सती पतिव्रतोमाश्रीतुवरीभेषजेषु च ॥६२६४॥

सत्परब्रह्मनक्षत्रजलेषु स्यान्नपुसकम् ।
उक्त श ्दे ऽपि स ्छष्दस्तस्य लिङ्ग न निश्चितम ॥६२६५॥
सत्तम स्या ्पू यतमे श्रेष्ठे त्रिष्वतिशोभने ।
सत्त्र वना ्छादनयो सदादाने नपुसकम् ॥६२६६॥
द्वादशाहादियज्ञषु तथैव परिकीर्त्तितम ।
स ्व स्वभावसत्तायां द्रव्य ऽ त करण बले ॥६२६ ॥
पराक्रमे सार्यगुणे ्यवसाया ऽऽ मभावयो ।
माहा ्म्ये च मत क्लीब पारुषे त्वस्त्रियामिदम ॥६२६८॥
पिशाचादौ तथा प्राण स व ज तुषु चोच्यते ।
सत्य क्ली शपथ तथ्ये त्रि तु तद्वति कीर्त्तितम ॥६२६९॥
स या तु सत्यभामार्यकृष्णपत्नया प्रकीर्त्तिता ।
अथ स ्यवती स्त्री स्याद्वेदव्यासस्य मातरि ॥६२ ॥
ब्राह्मयार्येऽपि तृणस्तम्बे स ्ययुक्ते तु भद्यवत ।
सत्यङ्कार पुमा स ्याकृतावपि करापणे ॥६२ १॥
सदन तु गृहे तोये सीद ्यर्थे च कीर्त्तितम ।
सदो यज्ञमहावेदे हविर्धानद्वयस्य हि ॥६२७२॥
पश्चाद्देशे मत क्लीब गोष्ठ्यां तु स्त्री नपुसकम ।
द्यावापृथिव्योस्तु क्लीबे द्विवच सदसी इति ॥६२ ३॥
सदस्यस्त्रिषु सभ्ये च स्याद्यज्ञविधिदर्शिनि ।
सदागति पुमा सूर्ये वायौ चापि प्रकीर्त्तित ॥६२ ४॥
सदाफलो नालिकेरे पुमांश्चोदुम्बरद्रुमे ।
सद्म गेहे जले क्लीब रोदस्यो सद्मनी इति ॥६२ ५॥
सद्य पाको मत स्वप्ने निशाऽत्ययसमुद्भवे ।
सध्रि स्यान्नपि सयोगे ना त्वग्नावनड्डुह्यपि ॥६२ ६॥
सनतस्तु सनोतौ च पुमा ्म्लेच्छे द्वयोर्मत ।
सनातनो ना विष्णौ च विरिञ्चे त्रिस्तु शाश्वते ॥६२ ॥
सनाभिस्तु सपिण्डे च सोदर्ये च द्वयोर्मत ।
सनिर्नदीतटे दाने नृस्त्रियो पथियाञ्चयो ॥६२ ८॥

सन्ततिस्त्ववायें स्यात्परिपर्येऽपि पुत्रयोः ।
सन्तानस्तु कुले कल्पवृक्षभेदे तथैव च ॥६२७९॥
परम्परायां चापत्ये पुंल्लिङ्ग परिकीर्त्तितः ।
सन्दंशो लोहकारोपकरणान्तर इष्यते ॥६२८०॥
सन्दंशनेऽभिचारात्मक्याहक्रन्वन्तरेऽपि च ।
सन्दष्टो यमकस्य त्रिभेदः सन्दंशनस्य च ॥६२८१॥
कर्मभूतेऽथ सन्दष्टः पुंसि समिश्ररूपके ।
गायकानां कण्ठदोषविशेषे परिकीर्त्तितः ॥६२८२॥
सन्धा वधौ प्रतिज्ञायां सन्ध्यासन्धानकर्मणोः ।
सन्धानमधिचाप स्याद्बाणस्यारोपणे तथा ॥६२८३॥
काञ्जकादेरभिषवे काञ्जिके श्लेषणेऽप्यथ ।
सन्धानी रूप्यशालायां स्त्री वार्त्ताक्यन्तरेऽपि च ॥६२८४॥
गिरिप्रयारण्ये त्रिषु तु सन्धिसाधन इष्यते ।
सन्धिस्तु रन्ध्रे नाट्याङ्गे श्लेषे भङ्गसुरङ्गयोः ॥६२८५॥
अन्त्यस्तोमेऽतिरात्रस्य वर्णानां योजनेऽपि च ।
सन्धिन्यकालदुग्धा गौर्वृषाक्रान्ताऽपि गौर्मता ॥६२८६॥
द्विकालदोह्या सन्वेककालं या गौश्च दुह्यते ।
सन्धिला तु सुरुङ्गायां नदीमग्नियोरपि ॥६२८७॥
सन्नमन्येऽत्रसन्न त्रिष्वनुदात्तविशीर्णयोः ।
गते तथेष्यते क्लीं तु सन्नं सत्तौ प्रकीर्त्तितम् ॥६२८८॥
सन्नाह्यो युद्धयोग्येभे सन्नद्धव्ये तु स त्रिषु ।
सप्तकस्तु पुमान्सङ्घे सप्ताना क्लीं तु सप्तकम् ॥६२८९॥
मृगयाक्षादिषु स्त्री तु सप्तकीक्काञ्चिदामनि ।
सप्तम त्रिषु सप्तानां पूरणे सप्तमी पुनः ॥६२९०॥
स्यात्सप्तमविभक्तौ स्त्री दुर्गादन्यास्तिथावपि ।
सप्तर्षिरशी ना सप्तषयश्चित्रशिखण्डिषु ॥६२९१॥
सप्तला नवमान्यां च सातलागुञ्जयोः स्त्रियाम् ।
सभ्यः सामाजिके साधौ सभासाधौ तथा त्रिषु ॥६२९२॥

ना त्वग्निभेदे यागस्थे पूव आहवनीयत ।
त्रि समङ्गो मङ्गयुते प्राणिद्यते तु पुस्ययम ॥६२९३॥
समङ्गा तु नमस्कारीस्तम्बे स्त्री परिकीर्त्तिता ।
समञ्जस क्ली याये त्रि रम्यस्तेऽप्युचितेऽपि च ॥६२९४॥
अथ व्रीह्यादिधानुष्कस्थितिभेदषु प चसु ।
एकस्मि स्या समपद योगार्थे तु यथायथम ॥६२९५॥
समयोऽस्त्री क्रियाकारे भाषानिर्देशसम्पदि ।
सङ्केताचारसिद्धा तकालेषु शपथऽप च ॥६२९६॥
सङ्गमे त्वेष समय पु लिङ्ग परिकीर्त्तित ।
समथस्तु समानार्थे सम्बद्धार्थे हितेऽपि च ॥६२९ ॥
न्याय्य शक्ते तथा भेद्यलिङ्गोऽय परिकीर्त्तित ।
समथन स्थापनायामाक्षिप्तस्य पुनभवेत् ॥६ ९८॥
स्यात्सम्प्रधारणायां च समर्थीकरणेऽपि च ।
समर्याद समीपेऽपि मर्यादासहिते त्रिषु ॥६२९९॥
समवर्त्ती यमे पुसि योगार्थे तु यथायथम ।
समाघातो वधे युद्ध योगार्थे तु यथायथम ॥६३ ॥
समाधिस्तु पुमा ध्याने नीवाके च समथने ।
प्राणिद्यते प्रतिज्ञायां का यालङ्करणा तरे ॥६३ १॥
तुल्यत्वे भेद्यवत्तु स्यात्समानाधिसमा श्रिते ।
समानस्तु पुमान्वायुभेदे देहा तरस्थिते ॥६३ २॥
त्रिस्तु साध्वेकतु येषु मानेन सहितेऽपि च ।
समापन समाप्तौ न तु ना घातेऽवसायने ॥६३ ३॥
समारम्भ सम्यगारम्भणे चाचार इष्यते ।
समाहारस्तु सक्षेपेऽप्येकत्र करणे च ना ॥६३ ४॥
समानाहारकादौ तु लिङ्गाद्य स्याद्यथायथम ।
समाहित मते सम्यगाहिते वा यवत्तथा ॥६३ ५॥
समाधिस्थे परिहृते प्रतिज्ञातेऽपि कीर्त्तितम् ।
समाह्वयो रणे प्राणिद्यूते नाम्न्यथ यौगिके ॥६३ ६॥

समिति परिष स्थाने सङ्गे ससद्युधि स्त्रियाम् ।
समिधस्तु समूहेऽग्नौ युद्धगोधूमपिष्टयो ॥६३ ॥
समीकस्तु समुद्रेऽपि मिथुनेऽपि पुमान्मत ।
समीरण फणिर्जे च वायावाहरणे च ना ॥६३ ८॥
समु च्छ्रयस्तून्नतौ च विरोधेऽपि पुमान्मत ।
समूहे स्या समुदय समरे च समुद्गमे ॥६३ ९॥
समुद्ग सम्पुटे पुास स्या मुद्गसहिते त्रिषु ।
स्यात्समुद्धरण क्लीब वान्ताऽ तेऽप्युन्नयेऽपि च ॥६३१ ॥
समुद्रस्तु पुमान घौ छन्दस्युत्कृतिसञ्ज्ञके ।
आकाशे च तथा सर्ख्याविशेषेऽपि त्रयोदश ॥६३११॥
तेषां ये शतसर्ख्याता क्रमाद्दशगुणोत्तराः ।
त्रिस्तु मुद्राऽन्वितेऽथ क्ली समुद्र देहलक्षणे ॥६३१२॥
समुद्रनवनीत तु च द्रे स्यादमृतेऽपि च ।
समुद्रान्ता तु दुःस्पर्शे कार्पासीस्पृक्कयोरपि ॥६३१३॥
समुन्नद्धो गर्विते च पण्डितम्म यके त्रिषु ।
समुन्नय समुत्क्षेपे तथा समुदये मत ॥६३१४॥
समूढ पुञ्जिते भुग्ने सद्योजातेऽनुपप्लुते ।
समूहन तु क्लीब स्यात्सहतीकरणे तथा ॥६३१५॥
शपस्य योजने मौर्व्यां स्त्रिया तु स्यात्समूहनी ।
सम्माज यामवा य तसमूह्यार्थे समूहना ॥६३१६॥
सम्पञ्चूतौ गुणो कर्षे तथा स्त्रीत्वे प्रकीर्त्तिता ।
सम्पुटस्तु समुद्गे च म त्राक्षरग्रथना तरे ॥६३१ ॥
कलिकाया कुरवके पु लिङ्ग परिकीर्त्तित ।
सम्प्रयोगस्तु सुरते संस्तवेऽप्यभिधीयते ॥६३१८॥
सम्प्रेषणी द्वादशाहश्राद्धे स्त्रीत्वे प्रकीर्त्तिता ।
क्ली सम्यक प्रेषण त प्रयुक्तौ सम्प्रेषणा न ना ॥६३१९॥
सम्बाधस्तु भगे स्त्रीणा मेढ्रे कारागृहेऽपि ना ।
स्यात्सङ्कटे तु सम्बाधो मेघवत्परिकीर्त्तितः ॥६३२ ॥

सम्भव कारणोत्पत्त्योः सङ्कते सङ्गमेऽपि च।
मात्यर्थे मापयत्यर्थे तौ चाथा सद्भिरीरितौ ॥६३२१॥
अकर्मको मातिधातुः प्रस्थादीनां घटादिषु।
प्रवर्त्तनेऽन्तर्भावेऽसौ सम्भूत इति सूत्रग ॥६३२२॥
सकर्मको मापयति स्थाल्याद्याधारवस्तु ना।
ग्रहणेऽन्तर्भावनायामाढकादे प्रवर्त्तने ॥६३२३॥
स चायं सम्भवत्यादिसूत्रे सूत्रकृतोदितः।
तत्र ह्याकृष्यते कर्म तद्धरत्यादिसूत्रतः ॥६३२४॥
असम्भवो हेममयजन्तोरेषामसम्भवे।
इत्यादिषु प्रयोगेषु भूयिष्ठेषु कृतात्मभिः ॥६३२५॥
अथ सम्भवशब्दस्य चिन्तनीयो विचक्षणैः।
सम्भावनाऽऽसादने च सम्माने च न ना मता ॥६३२६॥
पात्रस्यान्तर्मापने च तत्र युक्तौ च कीर्त्तिता।
सम्भेदो मिश्रणे चापि भेदेऽपि च पुमान्मतः ॥६३२७॥
सम्भोगो ना रते भोगे हस्तिहस्ते तथास्य च।
तृतीयेंऽशेऽङ्गुलेरूर्ध्वं विभक्तस्य च सप्तधा ॥६३२८॥
सम्भ्रमोऽत्यादरे यत्नत्वे संवेगे च साध्वसे।
स्यात्सम्मतिः स्त्री वाञ्छायामनुज्ञापूजयोरपि ॥६३२९॥
सम्मर्दो मदने पुंसि तथा युद्धे प्रकीर्त्तितः।
सम्मर्शस्तु पुमांस्तर्के तथा सम्मर्शने मतः ॥६३३०॥
सम्मार्जनी तु शोधन्यां स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता।
सम्मार्जना सम्मृष्टौ संशोधनायामपीष्यते ॥६३३१॥
सम्राट् तु पुंसि विष्ण्वर्कहुताशेन्द्रेषु राज्ञि च।
येनेष्टं राजसूयेन मण्डलस्येश्वरश्च यः ॥६३३२॥
शास्ति यश्चाज्ञया राज्ञस्तत्र सम्राट् पुनः स्त्रियाम्।
षड्विंशत्यक्षरेऽन्त्यस्था छन्दोभेदे प्रकीर्त्तिता ॥६३३३॥
सरो वायौ पुमान्क्लीबे तु सरः क्षीरे प्रकीर्त्तितम्।
निषादशुनकीजे द्वे त्रिस्थिरप्रतियोगिनि ॥६३३४॥

सरकोऽस्त्री मणौ शीधुपाने चषकशीधुनो ।
मेघवत्सरक साधुसर्त्तर्येष प्रकीर्त्तित ॥६३३५॥
सरघा तु शुनीभेदे देवानां परिकीर्त्तिता ।
मधुनिर्माणशीले च स्त्रिया स्यान्मक्षिका तरे ॥६३३६॥
सरटी नीलिकालोहे द्वयोस्तु कृकलासके ।
सरणिस्तु स्त्रियाम्मार्गे श्रेणौ च परिकीर्त्तिता ॥६३३ ॥
सरण्डस्तृणसङ्घाते कृमिभेदे तु स द्वयो ।
सरण्युर्नाऽनिले मेघे सूर्यपत्न्यां स्त्रियामियम् ॥६३३८॥
सरधि स्त्री सिरापङ्क्तिसङ्घाताऽम्बसु ना रवौ ।
सरल पूतिकाष्ठारय्यद्रुमे पुसि प्रकीर्त्तित ॥६३३९॥
सरलस्त्रिर्विदग्धे च ऋजौ च प्रियवादिनि ।
सरस्तु सलिले क्लीव तटाके सरसी नना ॥६३४ ॥
महासर सु सरसी दाक्षिणात्या प्रयु जते ।
क्लीब सरस्त्रदाकाशे सरस्नान्नाऽम्बुधौ नदे ॥६३४१॥
सरस्वती नदीमात्रे वाग्देव्यां च नदीभिदि ।
गङ्गायां गवि मेदिन्यां स्त्रीरत्ने च वचस्यपि ॥६३४२॥
तथा तृणलतास्तम्बे मत्स्याक्षीनाम्नि कीर्त्तिता ।
ब्राह्मीति विश्रतारयेऽथ सरस्वान रसिकेऽपि च ॥६३४३॥
सरोयुक्ते तथा मेघलिङ्गोऽय परिकीर्त्तित ।
सरिन्मधा तथा छन्दोभेदे द्वासप्ततिस्वरे ॥६३४४॥
सरीसृपस्तु सर्पे द्वे तथैनोदरसर्पिषु ।
सर्गोऽध्याये स्वभावे च निर्माणे च समुज्झने ॥६३४५॥
उत्साहे निश्चये चापि पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।
सजक त्वतिबाले स्याद्दन्नि [स्रष्टरि मेघवत्] ॥६३४६॥
सजूर्वनस्पतौ विद्युत्यपि स्त्री वणिजि द्वयो ।
सर्पदंष्ट्री वृश्चिकाल्योषध्यां योगे यथायथम् ॥६३४ ॥
सर्पराजो वासुकौ ना द्व तु राजिलभोगिनाम् ।
त्रयोदशानामेकत्र सर्पराज प्रकीर्त्तित ॥६३४८॥

स्यात्सपलोचना रास्नासञ्ज्ञके भेषजे स्त्रियाम् ।
सर्पिजले घ्रते चैव क्लीबलिङ्ग प्रकीर्त्तितम् ॥६३४९॥
सर्वगन्ध तु तक्कोलागरुकर्पूरसयुता ।
एलालवङ्ग वक्पत्रनागकेसरसिल्हका ॥६३५ ॥
ऋद्धिसञ्ज्ञकभैषज्यमदे सवजनप्रिया ।
सर्वज्ञो ना शिवे बुद्धे त्रि तु स्यात्सर्ववेदिनि ॥६३५१॥
अथ ना सर्वतोभद्रो गृहविच्छन्दकान्तरे ।
निम्बवृक्षे च विषमकाव्यालङ्कारभेदके ॥६३५२॥
स्त्रियां तु सवतोभद्रा काश्मर्याभिरव्यपादपे ।
यत्तु सर्वप्रकारेण भद्र तत्र त्रिषु स्मृतम् ॥६३५३॥
सर्वतोमुखमप्सु क्ली ना ब्रह्मक्रतुभदयो ।
सवभक्षा वजाया स्याद्यौगिके तु यथायथम् ॥६३५४॥
स्त्री सवमङ्गला शैलतनयायां च यौगिके ।
सर्वसन्नाह इत्युक्त सन्नद्धौ सर्ववर्मिणाम् ॥६२५५॥
सर्वात्मनाप्व्यय शब्द पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।
सर्वौघ सर्वसन्नाहे राज्ञा पुसि प्रकीर्त्तित ॥६३५६॥
मधुमेदे तु सर्वौघ यौगिके तु यथायथम् ।
सर्षपस्त्वोषधीभेदे तुन्दभारये पुमान्मत ॥६३५ ॥
सर्षपी फलिनीवृक्षे स्त्रियां न्याच्य तरेऽपि च ।
सलो भृङ्गिरिटे पुसि क्ली तु पत्राङ्गभेषजे ॥६३५८॥
सलज्ज सत्रपे त्रि क्ली स्तम्बे दमनकाह्वये ।
सलम्बस्त्वृषिभेदे ना तन्तुवाये पुनर्द्वयो ॥६३५९॥
सलिल तु जले छन्दोऽन्तरे प्रकृतिनामनि ।
यत्र चत्वार्यशीतिश्च वर्णा स्युर्वाततोऽधिका ॥६३६ ॥
सल्वा स्त्री क्षत्रियाभेदे देशभेदे नृ भूम्नि ते ।
सवस्तु सूतौ सूत्यायां सुतौ यागे च वर्त्तने ॥६३६१॥
सवन कालभेदेऽपि स्यात्प्रात सवनादिषु ।
यज्ञस्य सोमाभिषवे स्नाने काण्डे नपुंसकम् ॥६३६२॥

यागे तु पुंसि सवनो वनेन सहिते त्रिषु ।
सवर्णो ब्राह्मणाज्जाते क्षत्रियाया विवाहत ॥६३६३॥
त्रिस्तु यवर्णमात्रे च मर्त्ये चाप्येकवर्णके ।
सव्य वामे दक्षिणे त्रि सोतर्यसवितर्ययो ॥६३६४॥
तथा प्रेरयितर्ये च मृतके वनले पुमान् ।
सस्य धान्ये गुणे धान्यस्तम्बे वृक्षादिन फले ॥६३६५॥
सस्यक सस्यसम्पन्नव्रीहिसस्यादिकेषु च ।
तथैव गुणसम्पन्ने मेघलिङ्गमथैष ना ॥६३६६॥
स्यान्नारिकेलसस्यामममणौ खड्गे च सस्यक ।
स्त्रीपुंसयो सहचरी पीतझिण्ट्यारयश्चाटके ॥६३६ ॥
अथो सहचरश्चैष सहचारिणि वा यवत् ।
सहजोऽस्त्री स्वभावे त्र सहोत्पन्नसगर्भ्ययो ॥६३६८॥
सहदेवा स्त्रियां सवे दण्डोपल इति श्रते ।
युधिष्ठिरकनिष्ठे तु नायोगार्थे यथायथम् ॥६३६९॥
सहो जले बले च क्ली हेमन्ते तु पुमानयम् ।
मार्गशीर्षे तु मासि स्यात्पुनपुंसकयोरयम् ॥६३ ॥
सहसानो मयूरे द्वे यजमाने तु स त्रिषु ।
सहसानुर्मयूरे च सर्पे चापि द्वयोर्मत ॥६३ १॥
सहस्रमस्त्री बहुनि शताना दशकेऽपि च ।
सहस्रपत्र कमले क्लीब स्याद्यौगिके त्रिषु ॥६३ २॥
सहस्रवीर्या स्त्रीलिङ्गे स्याद्दूर्वाश्वेतदूर्वयो ।
तथोध्वकण्टकान्यारयशतावर्या प्रकीर्त्तिता ॥६३ ३॥
सहस्रवेधी पुंस्यम्लवेतसे क्ली तु हिङ्गुनि ।
सहा तु पुष्पस्तम्बेषु त्रिषु स्त्री तरणौ तथा ॥६३७४॥
नीलझिण्ट्यां पीतझिण्ट्यामित्यप्यतिबलाह्वये ।
बलासञ्ज्ञे च भैषज्यस्तम्बयोरोषधावपि ॥६३ ५॥
मुद्गपर्ण्यभिधानायां भेधलिङ्ग तु सोदरि ।
सहायस्तु द्वयो सरव्यौ सेवके तु त्रिषु स्मृत ॥६३ ६॥

सहुारस्तु पुमा युद्धेऽ धकारेऽपि प्रकीत्तित ।
चिद्रूपे स्या सहृदयो हृदयेन युते त्रिषु ॥६३ ७॥
सहोक्ति स्यात्स्यलङ्कारभेदेऽाप सहभाषणे ।
सहोरस्तु पुमा विष्णौ पवतेऽपि प्रकीत्तित ॥६३ ८॥
सह्य पर्वतमेदे ना पश्चिमार्णवपाश्वगे ।
सोढ ये त्रिषु सह्य स्यादारोग्ये तु नपुसकम् ॥६३७९॥
सा लक्ष्म्यां सवनाम्नश्च प्रथमैकस्त्रिया तद ।
सांयात्रिक प्रभाते क्ली पुमा पोतवणिज्ययम् ॥६३८ ॥
सांव सरो वा यवत्तु त्रिलिङ्ग परिकीर्त्तित ।
सवत्सरभवादौ च विज्ञेय फलपवणो ॥६३८१॥
विद्याज्ज्यौतिषिके चैव कृष्णशालौ पुन पुमान् ।
स्त्री तु सावत्सरी श्राद्धे कत्त ये वत्सरात्यये ॥६३८२॥
स्या सावत्सरक वषदेयर्णादिषु वा यत्रत् ।
सांव सरिकव योतिविज्ञ तु स्मर्यते नरि ॥६३८३॥
अनिश्चिते साशयिकस्तथा शङ्कावति त्रिषु ।
सा य न्या ययुते नैकादशाहश्राद्धभिद्यपि ॥६३८४॥
सात सुखे क्ली क्षीणे त्रि साती स्यर्थेऽत्र कीर्त्तिता ।
तीव्रायां वेदनायां स्त्री सातिर्दानावसानयो ॥६३८५॥
सा वतो बलदेवे ना द्वे वपत्ये च स वत ।
स्या क्षत्रपूर्व वैश्याजे व्रात्या च हरिपूजके ॥६३८६॥
सा विक स त्वनिवृत्ते त्रिष्वथो सा विकी स्त्रियाम् ।
नाव्यस्थकैशिकीत्यादिवृत्तीनां क्वचिदिष्यते ॥६३८७॥
सात्मा ना प्रकृतावात्मसहिते तु त्रिषु स्मृत ।
अत्य ताभ्यस्तताहेतो प्रकृतित्व गतेऽपि च ॥६३८८॥
सादी सूते तथैवायमश्वारोहे पुमा मत ।
साधन क्ली धने शेफे सिद्धावनुगतौ गतौ ॥६३८९॥
मारणे मृतसस्कारेऽप्युपायेऽप्यर्थदापने ।
सेनाङ्गे यातनायाञ्च न तु ना साधना मता ॥६३९ ॥

निवर्त्तनाया मन्त्रादेश्चाऽभीष्टफलादीकृतौ ।
साधारणं तु सामान्ये त्रिषु साधारणीति च ॥६३९१॥
साधारणा च स्त्रीत्वे स्यादथ साधारणी स्त्रियाम् ।
कवाटबन्धमोक्षार्थकुञ्चिकाया प्रकीर्त्तिता ॥६३९२॥
साधिष्ठ स्यात्साधुतमे तथा भृशतरे त्रिषु ।
साधीयान्स्यात्साधुतरे तथा भृशतरे त्रिषु ॥६३९३॥
साधुर्याकृतशब्दे त्रि सज्जनोचित चारुषु ।
धर्मशीले सयते च ना तु वाधुषिके मत ॥६३९४॥
पतिव्रतायां तु स्त्री वे साध्वीति परिकीर्त्तिता ।
ना तु वार्धुषिके कैश्चित्पठितस्तदसद्यत ॥६३९५॥
स्यादौपाधिकशब्दत्वादस्य लिङ्ग विशेषणम् ।
साध्यस्त्रि साधनीये ना गणदेवान्तरेऽशुषु ॥६३९६॥
सानसिस्तु ऋणे पुसि सुवर्णेऽपि नखेऽपि च ।
सान्त्व तु सान्त्वने क्लीब वाक्ये तु मधुरे त्रिषु ॥६३९ ॥
सामजो हस्तिनि द्वे स्यात्त्रि तु सामसमुद्भवे ।
साम प्रगीतमन्त्रेषु साधुन्यपि तथा मतम् ॥६३९८॥
नान्त नपुसक प्रोक्त सान्त्वसामप्रभेदयो ।
सामिधेनी तु समिदाधानर्चि च समिध्यपि ॥६३९९॥
त्रि सामुद्रोऽब्धिसम्बन्धिन्यथ क्ली देहलक्षणे ।
साम्परायस्तु सग्रामे विपदुत्तरकालयो ॥६४ ॥
स्यात्साम्परायिक युद्धे रथे स्यात्साम्परायिक ।
सायकस्तु शरे खड्गे वज्रे ना त्रिस्तु मातरि ॥६४ १॥
सार स्थिरांशे सरणे तरोर्मज्ज्ञि धने बले ।
व्योम्नि रेतसि ना त्रिस्तू कृष्ट न्याय्ये च सुन्दरे ॥६४ २॥
सारी तु भ्रुकुटावेषा स्त्रीलिङ्गे परिकीर्त्तिता ।
सारङ्गश्चातके भृङ्ग कृष्णसारे गजे द्वयो ॥६३ ३॥
पुमांस्तु शबले वर्णे सारङ्गस्त्रिषु तद्वति ।
स्त्रीत्वे तु सारङ्गीत्येतद्रूप सवत्र कीर्त्तितम् ॥६४ ४॥

सारणस्तु शरद्वायौ पुमांश्च वरुणात्मजे ।
सारणं सारणा चेति नना स्यात्सारिकर्मणि ॥६४ ५॥
सारणी तु स्त्रियामेषा ग्रन्थ पद्यात्मके मता ।
सारमेयस्तु शुनके मूषिकाया तथा द्वयो ॥६४ ६॥
सारस पुष्करखगे द्व ने दौ क्ली तु वारिजे ।
मेखलाया सारसनमुरस्त्राणे तथा नपि ॥६४ ॥
सारस्वतो वै वदण्डे ना त्रि सत्रमखान्तरे ।
सरस्वत्याश्च सम्बन्धि धयय त्रिषु प्रकीर्त्तित ॥६४ ८॥
सारिका काण्डवीणायां सारकस्त्वभिधेयवत् ।
सत्तयपि तथैवायमुक्त सारयितयपि ॥६४ ९॥
साथस्त्वथवति त्रि स्यात्प्राणिसङ्घान्तरे तु ना ।
सार्वभौमश्चक्रवर्त्तिन्यपि चोत्तरदिग्गजे ॥६४१ ॥
सार्वभौमस्तु विदिते वाच्यलिङ्ग प्रकीर्त्तित ।
सालोऽस्त्रिया स्यात्प्राकारे नाऽश्वकर्णतरौ तरौ ॥६४११॥
गतौ च मत्स्यभदे तु द्वयो साल प्रकीर्त्तित ।
सालावृक शृगालेऽपि वानरे च वृके द्वयो ॥६४१२॥
साल्वास्तु मध्यदेशीयकारकुत्सीयनीवृति ।
अन्यनीवृद्विशेषे च नृभूम्नि परिकीर्त्तित ॥६४१३॥
तयो राज्ञो पुमान्साल्वस्तदपत्येषु सद्वयो ।
सावनोऽब्दविशेषे स्यात्षष्टित्रिशतवासरे ॥६४१४॥
त्रिषु त्ववनयुक्ते च सवनस्य च योगिनि ।
सावित्र्यनामिकाङ्गु या तथा तत्सवितुश्चर्चि ॥६४१५॥
विश्वामित्रेण दृष्टाया त्रि स्यात्सवितृयोगिनि ।
साहस त्वस्त्रियां दण्डशब्दपर्यायके दमे ॥६४१६॥
अतर्कितप्रवृत्तौ तु बलात्कारे नपुंसकम् ।
साहस स्यात्त्रिषु चेतत्कृतकार्ये प्रकीर्त्तितम् ॥६४१ ॥
साहस्र तु सहस्राणां समूहे स्यान्नपुंसकम् ।
सहस्रेण तु निर्वृत्ते सहस्रवति च त्रिषु ॥६४१८॥

साहस्रस्तु चतुषु स्यात्पुस्येकाहक्रतुष्वयम् ।
सिंहो द्वयोर्मृग द्रेऽथ वेङ्कटाद्रौ पुमा मत ॥६४१९॥
सिंही तु वाशावार्त्ताकीकण्टकारीष्विय स्त्रियाम् ।
सिंहो द्वयो किशोर स्यात्पुमानेष वनस्पतौ ॥६४२ ॥
स्यात्सिंहकेसर पुसि वकुलेऽस्त्री सटे हरे ।
सिंहपुच्छी माषपर्णीपृश्निपर्ण्यो स्त्रियां मता ॥६४२१॥
क्लीब सिंहमल लोहे नीलिकारयेऽथ यौगिके ।
स्यात्सिंहविक्रमोऽश्वे द्वे योगार्थे तु यथायथम् ॥६४२२॥
सिंहास्यस्त्वटरूषे ना योगार्थे तु यथायथम् ।
सिंहिका राक्षसीभेदे राहोर्मातरि च स्त्रियाम् ॥६४२३॥
नतजानौ चाविवाह्यक याभेदे प्रकीर्त्तिता ।
सिकता भूम्नि देशे सिकतिले वालुकास्वपि ॥६४२४॥
सिक्थोऽस्त्रियां मधूच्छिष्ट पुलाकेऽस्य पुस्ययम् ।
सित शौक्ल्ये जीरके च पुलिङ्ग उशनस्यपि ॥६४२५॥
अथ प्राप्तावसाने सशौक्ये बुद्धेऽपि च त्रिषु ।
शर्करायां पुन स्त्रीत्ने सितेति परिकीर्त्तिता ॥६४२६॥
सितकुञ्जर इन्द्रे ना योगार्थे तु यथायथम् ।
सितच्छदो द्वयोर्हंसे योगार्थे तु यथायथम् ॥६४२ ॥
सितापाङ्गो मयूरे द्वे योगार्थे तु यथायथम् ।
सिताभ्र पुसि कपूरे क्लीब त्वभ्रे सिते मतम् ॥६४२८॥
सितायुधस्वेथालारये मत्स्यभदे द्वयोर्मत ।
सितासितस्तु योगार्थे बलभद्र वसौ पुमान् ॥६४२९॥
सिद्धस्तु सनकादौ ना देवजात्यन्तरे द्वयो ।
निष्पन्ने तु त्रिषु क्ली तु सिद्धौ ग यादिकेष्वपि ॥६४३ ॥
सिद्धो ना वृक्षभेदे स्यादथ सा गुजने त्रिषु ।
ना पारदे सिद्धरसो रससिद्धे तु स त्रिषु ॥६४३१॥
सिद्धार्थ सषपे बुद्धे नाऽर्थेन तु युते त्रिषु ।
सिद्धि स्त्री गतिसराद्ध्योर्ऋद्धवृद्ध्योषधिद्वये ॥६४३२॥

सिध्मलौषधिभेदे स्त्री स्यान्मत्स्यविकृतावपि ।
अथाऽभिधेयवत्सिध्मवति सिध्मल इष्यते ॥६४३३॥
सिनमन्ने शरीरे च क्ली बिल्मारद्रुमे तु ना ।
सिनीवाली दृष्टचन्द्रामावास्यापार्वती तथा ॥६४३४॥
सिन्धुस्तु नद्यां स्त्री ना तु समुद्रेऽपि नदान्तरे ।
अशीत्यक्षरके छन्दोभेदे च कृतसञ्ज्ञके ॥६४३५॥
गजाना दानतोये च कटनेत्रसमुद्भवे ।
नीवृज्जदे तु पुभूम्नि सिन्धव परिकीर्त्तिता ॥६४३६॥
सैन्धवे लवणे क्लीब सिन्धु स्याद्वृद्धे तु हस्तिनि ।
सिमस्तु क्षत्र सर्वार्थे सर्वनाम त्रिषु स्मृत ॥६४३ ॥
ग्रामगोचरभूमौ तु सिमो ना सवनामन ।
क्षत्रस्य मर्यादायां च द्वयोस्त्वश्वे ।सम स्मृत ॥६४३८॥
सिमा स्त्रियो महानाम्नीसञ्ज्ञसामान्तरे स्मृता ।
सिलिन्ध्रो वृक्षभेदे ना स्याच्छत्राके तु न स्त्रियाम् ॥६४३९॥
मत्स्यभेद सिलिन्ध्रो द्व स्त्री तु गण्डपदीम्राद ।
सिलिन्ध्रवृक्षप्रसवकदलीपुष्पयोस्तु नप ॥६४४ ॥
सीता तु रामभार्यायां पृथिव्या हलपद्धतौ ।
सस्ये हरितसस्ये च सस्यभूमावपि स्त्रियाम् ॥६४४१॥
सुमेरुशिरस प्राग्दिग्गतगङ्गान्तरेऽपि च ।
सीत्य तु धान्ये क्लीब स्यात्कृष्टभूमितले त्वपि ॥६४४२॥
सीतायामपि साधौ च [त्रिलिङ्ग परिकीर्त्तित] ।
सीवुगुण्डो द्व विप्रपराजकीजे ना स्नुहीतरौ ॥६४४३॥
सीम स्त्रीपुसयोरश्वे पुमास्तु परिकीर्त्तित ।
क्षेत्रस्य मर्यादायाश्च ग्रामगोचरभुव्यपि ॥६४४४॥
सीमा टापि क्षितौ कूलेऽवधौ क्षेत्रव्यवस्थयोः ।
मभन्तापि च सीमेयमेष्वेवार्थेषु कीर्त्तिता ॥६४४५॥
स्यात् सीमिकं तु वल्मीके शाखायां क्ली तरोरपि ।
स्त्रीपुसयोस्तु सलिलक्रिमौ सीमिक इष्यते ॥६४४६॥

सीरो हलाकयो पुंसि सीरी तु स्त्री लताङ्कुरे।
लाङ्गलिक्या च नद्यां तु सीरा स्त्री वै प्रकीर्त्तिता ॥६४४ ॥
सीव युपस्थाध सूत्र सूच्यां स्यूतौ तु सीवनम् ।
सुक दस्तु पलाण्डौ ना त्रि तु शोभनकन्दके ॥६४४८॥
सुकृत सत्कृतौ पुण्ये त्रिस्तु सुष्ठुकृते मतम्।
स्त्री सुकेश्यप्सरोभेदे त्रि तु शोभनमूधजे ॥६४४९॥
सुख शर्मणि लग्ना चतुथराशौ च शस्तख।
स्याच्छोभनखयुक्ते च त्रि सुखस्य च साधने ॥६४५ ॥
शम्भोस्तु नवशक्तीना स्यादेकत्र सुखा स्त्रियाम्।
सुखोदयस्तु ना मद्यभेदे माध्वीकसञ्ज्ञके ॥६४५१॥
अपक्वेक्षुरसै सिद्धे योगार्थे तु यथायथम्।
सुगत पुंसि बुद्धेऽथ त्रि शोभनगते भवेत् ॥६४५२॥
सुग्रीवो रामामत्रे स्या कपिभेदे पुमानयम्।
वास्तुदेवविशेषे च कोष्ठश्रेणौ हि पश्चिमे ॥६४५३॥
आरभ्य दक्षिणा कोष्ठात्ततीये तत्र य स्थित ।
ग्रीवायां शोभनायां स्त्री बहुव्रीहौ तु मेघवत् ॥६४५४॥
सुचरित्रा मता स्त्रीत्वे कुस्तुम्बुर्व्यां च योगिके।
सुत सोमरसे भूपे लग्नाद्राशौ च पञ्चमे ॥६४५५॥
पुत्रयोस्तु द्वयो स्त्री तु शाकवल्ल्यन्तरे सुता।
उपोदकाख्ये त्रिषु तु प्रसूतेऽभिषुतेऽपि च ॥६४५६॥
सुदर्शन शङ्खणस्य पुत्र ऐक्ष्वाकभूभुजि ।
विष्णुचक्र तु पुंसि स्या क्लीबेऽपि च सुदर्शन ॥६४५ ॥
अथाऽमराव यामेत क्लीबमेव सुदर्शनम्।
सुदर्शना तु दर्व्यालीनाम्नि व लीभिदि स्मृता ॥६४५८॥
गृध्राख्यपक्षिभेदे तु द्वयारक्त सुदर्शन ।
सुधाऽमृते तथा स्नुह्यामपि सौहित्यमूर्वयो ॥६४५९॥
गङ्गेष्टिकायां कुड्यादिलेपद्रव्या तरे स्त्रियाम्।
सुनारस्तु शुनीस्तन्ये सर्पाण्डे च पुमान्मत ॥६४६ ॥

सुनाल रक्तकुमुदे बहुव्रीहौ तु भेद्यवत् ।
सुनिषण्ण शाकभेदे स्वस्तिकादिपदश्रुते ॥६४६१॥
सुन्दो दत्या तरे दारुलेखके च पुमान्मत ।
सुपर्णो गरुडे पुसि किरणे च प्रकीर्त्तित ॥६४६२॥
अश्वे गरुडव चापि पक्षिजात्य तरे द्वयो ।
सुपर्णी तु स्त्रियामेषा विनताया प्रकीर्त्तिता ॥६४६३॥
सुपार्श्वो गदभाण्डाख्यपादपेऽपि पुमा मत ।
मेरोरुत्तरविष्कम्भपवतेऽपि तथा भवेत ॥६४६४॥
सुप्त तु त्रिषु निद्राणे प्रशस्तजटकेऽपि च ।
खञ्जरीटे पुन कृष्णवक्षसि द्वे स्त्रिया पुन ॥६४६५॥
सुप्ता जटाया शस्ताया क्ली तु स्वापे प्रकीत्तितम ।
सुप्रतीको यौगिके च पुमास्त्वीशानदिग्गजे ॥६४६६॥
सुब्रह्मण्यस्तु ना स्कन्द ऋत्विग्भेदे तु नृस्त्रियो ।
सुब्रह्म या तु निगदनाम्नि स्याद्यजुर तरे ॥६४६ ॥
सुभिक्षा धातकीवृक्षे त्रिस्त्वन्नाढ्य प्रकीत्तिता ।
सुमनास्तु स्त्रिया ज्ञेया मालत्या कुसुमे पुन ॥६४६८॥
स्त्रीभूम्नि स्यु सुमनसस्त्रि तु स्याच्छुभचेतसि ।
पण्डिते च द्वयोस्तु स्याद्देवे क्ली तु शुभे हृदि ॥६४६९॥
[गृहोर्ध्वभूस्थस्थूणाया सुमेधा स्यात्स्त्रियामियम] ।
सुयामुनो वत्सराजप्रासादेऽभ्रा तरेऽच्युते ॥६४ ॥
सुर सुरी द्वयोर्देवे सुरा मद्य जलेऽपि च ।
स्त्रिया सुरतताली स्याद्दूत्या चैन शिर स्रजि ॥६४ १॥
सुरभि कलमाले च ग धे च प्राणतपणे ।
त्रि तु तद्वति चारौ च श्रेष्ठे च स्यात्स्त्रिया पुन ॥६४ २॥
देवधेनौ ना तु वह्नौ वस ते चम्पकेऽपि च ।
कपित्थे राजजम्ब्वा च पुल्लिङ्ग सुरभिच्छद ॥६४ ३॥
सुरवल्लभ उक्तो ना पुन्नागे यौगिके तु स ।
सुरसा तु महाजम्बूनाम्नि जम्ब्व तरे स्मृता ॥६४७४॥

योगार्थे वस्य लिङ्गादि तर्कणीय यथायथम ।
सुराष्ट्र पीतमुद्ग ना सुराष्ट्रास्तु नृभूमनि ॥६४ ५॥
पश्चिमा ध्यन्तिके देशाभघस्त्री तु सुराष्ट्रके ।
सुराष्ट्रजाढकीसज्ञे स्त्री साराष्ट्रमृदन्तरे ॥६४ ६॥
नपुसक सुरूप च शाल्मलीफल इष्यते ।
सुरूपा मल्लिकाभेदे वैश्यनाम्नि स्त्रियामथ ॥६४ ॥
सुलभ पाकयज्ञाग्नावयत्नाऽप्ये तु स त्रिषु ।
स्त्रिया सुलवणाधान्ये गवीधुरिति विश्रुते ॥६४ ८॥
सुलोह न्वारकूटेऽपि शस्तलोहेऽपि कीर्त्तितम् ।
सुवर्चला प्रभार्याया सूर्यपन्या प्रकीर्त्तिता ॥६४ ९॥
तथा क्षुमाह्वये धान्ये शाकभदेऽपि च स्त्रियाम् ।
सुवर्णा मखभिधस्त्री पुमांस्तु स्वणकषयो ॥६४८ ॥
सुवहा सल्लकीगोधापदीशेफालिकासु च ।
एलापर्ण्यां च रास्नायां वीणायां च स्त्रियां मता ॥६४८१॥
सुविदत्र कुटुम्बे क्ली धनलाङ्गलयोरपि ।
सुविदत्र पुनस्त्रि स्याच्छुद्धज्ञानसुविद्ययो ॥६४८२॥
सुव्रता सुखसन्दोह्यसुरभौ त्रि तु सद्व्रते ।
सुषमा परमायां स्त्री शोभायां त्रिस्तु सुन्दरे ॥६४८३॥
सुषवी कारवल्या स्त्री तथा कृष्णे च जीरके ।
क्लीब तु सुषिर छिद्रे वशादौ वाद्यभिद्यपि ॥६४८४॥
स्याद्विद्रुमलतायां तु सुषिरा स्त्री नटे तु ना ।
सुषियुक्ते तु सुषिरो मेधव परिकीर्त्तित ॥६४८५॥
सुषेणस्तु पुमान् विष्णौ करमर्दद्रुमेऽपि च ।
सुग्रीववैद्य क्लीब तु करमर्दफलादिके ॥६४८६॥
कृष्णत्रिवृल्लतायां तु सुषेणा स्त्री प्रकीर्त्तिता ।
सुस्तर शयने पुसि तथा माने प्रकीर्त्तित ॥६४८७॥
सुहितस्तु मतस्तृप्ते तथा सुष्ठुहिते त्रिषु ।
सुहृन्मन्त्रिणि पुसि त्रिर्मित्रे क्ली शोभने हृदि ॥६४८८॥

१ पङ्कक्रीडनक पोत्री किटिराखनिक किरि ।

सुक्षा नृभूम्नि स्युर्देशभदे सवचो नृपे ।
वाच्यव सूक्ष्मम यल्पे क्लीब चध्यात्म इष्यते ॥६४८९॥
सूक्ष्मा नवाना शक्तीना वि णोरेकत्र कीर्त्तिता ।
सूचक पिशुने हस्तभ्रभङ्गाद्यैश्च बोधके ॥६४९ ॥
द्वे तु श्वक्रोष्टृकाकेषु सूचक परिकीर्त्तित ।
सूचना तु न ना वृष्टौ ग धने यर्थनेऽपि च ॥६४९१॥
सूचे सूचौ दभणे तु सूच सूचस्तु सूचने ।
सूचि स्यूति शलाकाया कवाटा पागले स्त्रियाम ॥६४९ ॥
सूचीवद्द्वे तु वेश्याजे निषादात्सूचिरु यते ।
सूचीमुख तु क्लीब स्यादासने यस्य लक्षणम् ॥६४९३॥
ऊर्ध्वञ्जोर्जानुनोर्बाहूप्रसार्य करयोस्तलौ ।
सहत्य च स्थितिर्या स्यात्तत्सूचीमुखमासनम ॥६४९४॥
सूत पारदसारथ्यो पुसि तक्षणि तु द्वयो ।
तथा वन्दिनि विप्राया क्षत्रिया जात इष्यते ॥६४९५॥
त्रि प्रेरिते च जनिते क्ली सूतो प्रेरणेऽपि च ।
सूतक ज मनि प्रोक्त नृनपो राहुपारदे ॥६४९६॥
स्त्रिया तु स्यात्प्रसूताया सूतका सूतिकापि च ।
सूत्रोऽस्त्री यज्ञसूत्रे च त तौ सङग्रहवाच्यपि ॥६४९७॥
सूदो ना सूपकारेऽथ सूपे रूपे च नप्स्त्रियो ।
सूदा तु क्षरणे स्त्री स्या नतु ना क्षारणे मता ॥६४९८॥
सून तु पुष्पे क्लीब स्या प्रसूते पुष्पिते त्रिषु ।
सूना वधे वधस्थाने स्या च दण्डाऽर्पिताऽङ्कुशे ॥६४९९॥
अध सिराया जिह्वायां तथा दुहितरि स्मृता ।
सूनुद्वयोरपत्ये स्यादथाऽर्के चाऽनुजे पुमान् ॥६५ ॥
सूपो ना सूपकृत्यस्त्री मुद्गाद्यैर्व्यञ्जने कृते ।
सूम प्रकीर्त्तितश्च द्रे पुल्लिङ्ग श्वयथावपि ॥६५ १॥
क्ली त्व तरिक्षे त्रिषु तु सदूमे सदुमेऽपि च ।
सूरः सूर्ये गभस्तौ च पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥६५ २॥

सूरि पुमान्स्यादाचार्ये त्रि तु स्तोतरि पण्डिते ।
सूर्पो वात्ताकयो पुसि मत्स्यजातौ द्वयोर्मत ॥६५ ३॥
सूर्म सूर्मी शुष्ककाष्ठलोहप्रतिमयोद्वयो
सूर्या वाचि श्वेतगिरिकर्ण्या सूर्यस्तु ना रवौ ॥६५ ४॥
सृको वके सृगाले द्व ना वज्रे नरके शरे ।
सृगालो दैत्यभेदे ना क्रोष्ट्रौ द्वे डमरे स्त्रियाम ॥६५ ५॥
सृणिस्तु वह्नौ वज्रे च पुलिङ्ग स्यात्तथाऽङ्कुशे ।
सृणीकस्तु त्रिषून्मत्ते ना त्वग्नावशनावपि ॥६५ ६॥
सृणीका तु स्त्रियामेषा लालाया परिकीर्त्तिता ।
सृतिस्तु मार्गे गमनेऽपि च स्त्री वे प्रकीर्त्तिता ॥६५ ॥
सृत्वा प्रजापतौ वह्नौ पुसि द्व नीचजातिषु ।
सृत्वरी तु स्त्रियां वाचि जननीवैश्ययोरपि ॥६५ ८॥
सृदाकुर्द्वे खगेऽप्सु क्ली नाऽग्नौ गोत्रर्षिभिद्यपि ।
सृपा द्वयो शिशौ सर्पे यतिनि त्वेष भेद्यवत् ॥६५ ९॥
सृप्र सर्पिषि तले क्ली सृप्रश्चन्द्रे पुमान्मत ।
सृप्रा तूज्जयिनीपार्श्ववाहिन्यां सरिति स्मृता ॥६५१ ॥
सृमरो मृगभेदे द्वे गत्वरे तु स्त्रियां मत ।
सृष्ट तु सर्जने क्लीब निश्चिते त्वभिधेयवत् ॥६५११॥
बहुनिर्मितयोर्युक्तेऽपि सृष्ट परिकीर्त्तितम् ।
सृष्टि स्त्रियां स्वभावे च त्यागेऽप्युत्पादनेऽपि च ॥६५१२॥
सेशब्द सेवने स्त्री स्यात्सेवके वाच्यलिङ्गक ।
सेक्ता पुसि धवे त्रिस्तु सेचके परिकीर्त्तित ॥६५१३॥
सेचन नौसेकपात्रे सिक्तावपि नपुसकम् ।
सेतुरायतने वारिबन्धे ना वरुणद्रुमे ॥६५१४॥
सेनस्त्रिष्विनयुक्ते स्यात्सेना चम्वा स्त्रियां मता ।
सेनानीस्तु पुमान्स्कन्दे त्रि तु सेनापतौ स्मृत ॥६५१५॥
सेव स्यूतौ पुमान्न क्ली भजने परिकीर्त्तित ।
सेवको ना प्रसेवाख्ये स्यूते सेवितरि त्रिषु ॥६५१६॥

सेवना सुवयत्यर्थे न ना क्ली स्यूतिसेवयो ।
सेव्य तु सेवनीये त्रिर्वात येऽप्यथ न जले ॥६५१ ॥
उशीरे नि शरे दध्नि पत्राङ्गाह्वयभेषजे ।
अब्धिजे लवणे ना तु मध्वासव इति श्रुते ॥६५१८॥
मद्यभेदे स्त्रिया तु स्यात्सेन्या नीवारधान्यके ।
स्यात्स्त्री मतल्लिकाया द्वे त्वायोगन्या हि दस्युजे ॥६५१९॥
वन्दाकेऽप्यजझटासञ्ज्ञस्तम्बेऽथ चटके द्वयो ।
त्रि सैकत सिकतिले सिकतापुलिने त्रिषु ॥६५२ ॥
सैनिक सैन्यरक्षेऽपि स्यात्सेनासमवायिनि ।
सैन्धवोऽश्वेऽश्वभेदे द्रु मनुष्ये सिन्धुदेशजे ॥६५२१॥
क्ली वस्त्रजालराष्ट्रेषु पुमास्तु स्याज्जयद्रथे ।
सिन्धुसम्बन्धिनि पुनस्त्रिषु सैन्धव इष्यते ॥६५२ ॥
सैन्यं क्लीबं च सेनाया त्रि सेनासमवायिनि ।
सैन्यश्चतुर्णामश्वानां कृष्णस्यैकत्र पुस्त्ययम् ॥६५२३॥
सैरास्तु मध्यदेशस्य नीवृद्भेदे नृभूमनि ।
सीरस्य तु सिरायाश्च सम्बन्धियभिधेयवत् ॥६५२४॥
सैरिकस्त्रि सीरयोगिवोढ़ावौ स्वर्ग एष ना ।
सैरिन्ध्री स्ववशान्यालयस्थशिल्पकृति स्त्रियाम् ॥६५२५॥
सोता नाऽध्यापके त्रिस्तु जनके चाभिषोतरि ।
सोमो ब्रह्मणि पूर्णेन्दौ वह्नौ पुण्ये लतान्तरे ॥६५२६॥
नीर्येऽमृतरसे शैत्ये सोम तु त्रिषु तद्वति ।
तथोमया च सहिते ऊमेन सहितेऽपि च ॥६५२७॥
नर्मदायां सोमभवा स्त्रीयोगे तु यथायथम् ।
सोमयोनिद्वयोर्विप्रे सुरे योगे तु लोकवत् ॥६५२८॥
अथो नपुसक क्षीरे ज्ञेय सोमरसोद्भवम ।
सोमवल्कस्तु धवलखादिरे कटफलेऽपि च ॥६५२९॥
सोमवल्ली स्त्रियां ब्राह्मयां गुडूच्यामप्यवल्गुजे ।
सौगन्धिक तु क्ली पद्मे कल्हारेऽध्यामसञ्ज्ञके ॥६५३ ॥

गन्धद्रव्ये गन्धकारव्यधातौ तु स्यादयं पुमान् ।
सौदामनी मता विद्युद्विशेषेऽपि च विद्यति ॥६५३१॥
सौधस्तु न स्त्री सुधया गेहे शुक्लीकृते मतः ।
क्लीबं तु रजते सौधं सुधासम्बन्धिनि त्रिषु ॥६५३२॥
सौसिकस्तु अपातारव्यशत्रुनिग्रहकर्मणि ।
सौमिको दीक्षणीयेष्टौ त्रि तु सोमक्रतूद्भवे ॥६५३३॥
सौम्यस्त्रि सुन्दरे सोमदेवते ना तु वत्सरे ।
बुधग्रहे सोमयागेऽस्त्नौ पञ्चदशेऽस्य च ॥६५३४॥
यूपः सप्तदशारत्निर्वाजपयस्य यः श्रुतः ।
सौम्या निशि स्त्रिया सौम्यं क्लीबं कृतयुगेऽपि च ॥६५३५॥
तुरायणारव्यतपसोद्वितयेऽपि प्रकीर्त्तितम् ।
सौरतो मृदुवायौ ना त्रि स्यात्सुरतयोगिनि ॥६५३६॥
सौरभेयी तु सुरभौ सौरभेयस्तु ना वृषे ।
सौरभ्यमुक्तं सौगन्ध्ये क्लीबं च गुणगौरवे ॥६५३ ॥
मनोज्ञत्वेऽपि सौरभ्यस्तु मनोज्ञे विधेयवत् ।
सौराष्ट्रं कांस्यलोहेऽथ सौराष्ट्री त्वाढकी मृदि ॥६५३८॥
सौवीरो गोपघोण्टाया सौवीरं बदरीफले ।
स्रोतोऽञ्जने काञ्जिकेऽथ नीवृद्भेदे नृभूमनि ॥६५३९॥
सौष्ठवं तु प्रशस्तत्वेऽवष्टम्भेऽपि नपुंसकम् ।
स्कन्दस्तु कार्त्तिकेयेऽपि नदीतीरेऽपि पारते ॥६५४ ॥
स्कन्दने ब्रह्मणि शिवे नृपे देहे तथा पुमान् ।
उत्तरस्थः पुनः स्कन्दो भवेत्स्कन्देन कर्त्तरि ॥६५४१॥
स्कन्दनं पातवैफल्यविरेकगतिशोषणे ।
स्कन्दोलस्तु पुमाञ्शीतगुणे शीते पुनस्त्रिषु ॥६५४२॥
स्कन्धोंऽशे भूपतौ वृक्षमहाविटपमूलके ।
चये समुदये रूपवेदनादिकपञ्चके ॥६५४३॥
सैन्यव्यूहे ग्रन्थकाण्डे काये पिण्डे मुनावपि ।
आर्याभेदे स्कन्धकारव्ये सम्पराये मरुत्पथे ॥६५४४॥

राज्याभिषेकसम्भाराङ्गभूतकलशादिके ।
धूवहस्कन्धसाम्येऽपि स्यान्नागान्तरसविदो ॥६५४५॥
भद्रादा च बके तु द्रु स्कन्धा स्त्री वल्लिशाखयो ।
स्कन्धकस्तु भने स्कन्धेऽप्यार्याभेदे क्वचि मत ॥६५४६॥
अथ स्कन्धफलो नारिकेले चि वेऽप्युदुम्बरे ।
स्कन्धः सान्त मत स्कन्धे शिखरेऽपि तरोर्मत ॥६५४७॥
स्कन्धोपनेय स्याद्राज्ञा सन्धिभेदेऽपि यौगिके ।
स्कन्न शुष्के लम्बमाने पतितेऽप्युन्नते क्वचित् ॥६५४८॥
स्खदन पाटने स्थैर्ये क्लेशोत्पादनहिंसयो ।
विद्रावणे विदारेऽपि स्खदनाऽपि क्वचि मता ॥६५४९॥
स्खलस्तु स्खलनेऽप्याह तस्यार्थं सायण खलम ।
स्खलन गद्गदने स्यादस्थैर्यभ्रशयोरपि ॥६५५ ॥
बाधायामपराधेऽपि विनिपाते पराभवे ।
स्खलित त्वस्थिरे मत्ते निगृहीते च गद्गदे ॥६५५१॥
अनुबणे प्रमत्तेऽपि सम्भ्रान्तभ्रान्तयोस्त्रिषु ।
स्खलित त्वपराधेऽपि नाशे वक्रगतावपि ॥६५५२॥
स्तनो न स्त्री कुचे चूचुके च पात्राङ्गभिद्यपि ।
स्तनन कासने शब्दमात्रे कुन्थनगर्जयो ॥६५५३॥
अथ स्तनभवो योगाऽर्थेऽपि स्त्रीकरणान्तरे ।
स्तनयित्नु पुमान्मेघे तथा मेघस्य गर्जिते ॥६५५४॥
व्याधौ मृतौ विद्युति च मुस्तके मेघवाचिवत् ।
स्तनान्तर तु स्तनयोर्मध्ये चापि नपुसकम् ॥६५५५॥
भाविवैधव्यचिह्नेऽपि स्तनस्थे परिकीर्त्तितम् ।
स्तनित गर्जिते दुःखशब्दे चापकरध्वनौ ॥६५५६॥
स्तब्ध स्थिरे जडेऽहङ्कारिणि मन्दे घने त्रिषु ।
स्तबके नस्त्रियां गुच्छे समूहे ग्रन्थकाण्डके ॥६५५७॥
स्तन्य क्षीरे भवेत्क्लीब स्तन्य स्तनभवे त्रिषु ।
स्तब्धरोमा वराहे द्रु यौगिके तु यथायथम् ॥६५५८॥

स्तम्बस्तृणे च विटपे सङ्हतौ च पुमान्मत ।
पुमान्स्तम्बकरिर्व्रीहौ वाच्यव स्तम्बकारिणि ॥६५५९॥
स्तम्बेरमो गजेऽप्यष्टसख्यायां हस्तिवाचिवत् ।
स्तम्बज स्तम्बजाते त्रिरुशीरे तु नपुसकम् ॥६५६ ॥
स्तभस्तुस्तु भवे छागे तथा मेषे द्वयोर्मत ।
स्तम्भ ऊक्तो जडीभावे स्थूणायां प्रतिब धने ॥६५६१॥
स्तम्भकस्त्रि स्तम्भकृति पुमांस्तु प्रमथा तरे ।
कृतौ पुमा स्तम्भकरस्स्तम्भकारिणि वा यवत् ॥६५६२॥
स्तम्भन स्त धताहेतौ त्रिर्ना कामशरा तरे ।
विद्या तरे स्तम्भनी स्त्री क्ली स्त धकरणे मतम् ॥६५६३॥
स्तरस्वास्तरणे पाषाणाद्यशेऽपि पुमा मत ।
स्तरण छादनेऽपि स्याद्वधेऽपि च नपुसकम् ॥६५६४॥
स्तरिधूमे पुमा स्त्री तु तृणे स्या स्तरिव स्तरी ।
व ध्याया च स्तरी तद्वत्स्त्रीमात्रेऽपि प्रकीर्त्तिता ॥६५६५॥
स्तिमित निश्चले क्लि नेऽप्यभिधेयवदिष्यते ।
स्ताग्नुस्तु स्तोतरि मतो गर्जितर्यपि वा यवत् ॥६५६६॥
अस्त्री स्तवरको वस्त्रभेदे पुसि वृतौ भवेत् ।
स्तिहितिस्त्री महीजस्य फले स्यादङ्कुरेऽपि च ॥६५६ ॥
स्तीभि पुसि समुद्रे च हृदये च प्रकीर्त्तित ।
स्तीर्णा प्रमथभेदेषु स्तीर्णस्त्रि स्या प्रसारिते ॥६५६८॥
सयुगोपायतनयो पु लिङ्ग परिकीर्त्तित ।
स्तीर्निर्नभसि चाध्वर्यौ तृणजातौ पयस्यपि ॥६५६९॥
शत्रौ तथैव रुधिरे पुल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।
स्तूप समु छ्रये वायौ मूर्धमध्यगुडे पशो ॥६५ ॥
स्तेनश्चोरे तथा चोरनाम्नि स्याद्ग धवस्तुनि ।
स्तेयी चौरे पुमा द्रे तु स्वर्णकारेऽपि मूषिके ॥६५ १॥
स्तै य क्लीबे भवे चौर्ये स्तै यश्चारे पुमा मत ।
स्तोम स्यादध्वमाने च दशमन्व तराह्वये ॥६५७२॥

१ सट्यो ।

देयभेदे च पुंलिङ्गस्तथा स्यात्स्तोतृवृन्दयोः ।
सङ्ख्यायां यज्ञगस्तोत्रस्तोत्रियाणां क्रतावपि ॥६५७३॥
स्त्येनस्तु चोरेऽप्यमृते पुंलिङ्गः परिकीर्त्तितः ।
स्त्री प्रियङ्ग्वाह्वये वृक्षे वध्वीवनितयोरपि ॥६५ ४॥
लग्नाच्च सप्तमे राशौ लिङ्गच्छन्दोविशेषयोः ।
स्त्रीकृतं करणे स्त्रीणां वाच्यवत्तु स्त्रिया कृतः ॥६५७५॥
स्त्रीधर्मो मैथुनेऽपि स्यादार्त्तवे योगिकेऽपि च ।
स्त्रीभिः स्तनौ शोणितं च स्त्रीनभःपयसोर्मता ॥६५७६॥
स्त्रीपुंसयोस्त्वयं स्त्रीभिरजे सम्परिकीर्त्तिता ।
स्त्रीप्रियोऽशोकवृक्षे चाम्रवृक्षे च पुमान्मतः ॥६५ ॥
तयोस्तु प्रसवे क्लीबं योगार्थे तु यथायथम् ।
स्त्रीवासः पुंसि वल्मीके स्त्रीणां वासे तथा पुमान् ॥६५ ८॥
स्त्रीस्वभावस्तु योगार्थे तथैव स्यान्नपुंसके ।
स्थपतिः सौविदल्लेऽपि बृहस्पतिसवेष्टिनि ॥६५७९॥
तक्षण्यधिपतौ शिल्प्यन्तरे जीनकुबेरयोः ।
स्थलजा यष्टिमधुके वाच्यवत्तु स्थलोद्भवे ॥६५८ ॥
स्थली ननोन्नतभुवि स्थला कृत्रिममृण्मये ।
स्त्रियां क्षेत्रादिनिम्नस्थसलिलस्य निवारणे ॥६५८१॥
स्थलेरुहा गृहकुमार्यां दग्धायां च तथेष्यते ।
स्त्रिया स्थाने फले चैव कुष्ठीमांसे प्रकीर्त्तिता ॥६५८२॥
द्वयोः स्थविस्तु नवाये कुष्ठिनि त्वभिधेयवत् ।
जङ्गमेऽपि तथैव स्यात्पुमांसस्स्वर्ग इष्यते ॥६५८३॥
स्थाणुर्ना कुरुदेशे च गन्धद्रव्यान्तरे शिवे ।
नागरक्षोरुद्रभित्सु प्रजापत्यन्तरेऽपि च ॥६५८४॥
श्वेतोपदीकावल्मीके क्ली तु स्यादासनान्तरे ।
अथ कीलोद्भिदोस्त्री वाच्यवत्तु स्थिरे मतः ॥६५८५॥
स्थानं क्लीबं नरेऽप्यन्ये प्राहुर्गेहावकाशयोः ।
सम्बन्धभेदे जन्तूनां स्यान्निवृत्तिप्रसङ्गयोः ॥६५८६॥

अपकर्षे च सादृश्ये क्लीब तु स्थितिकर्मणि ।
स्थान शवेऽपि पुसि स्यात्तथैव प्रमथा तरे ॥६५८७॥
स्थानक वालवालेऽपि सिंहादीना क्रमाह्वये ।
लब्धन कत्तु कामानां स्यादवस्था तरेऽपि च ॥६५८८॥
स्थानीय तु महाग्रामे स्थात येऽपि पुरेऽपि च ।
अथ स्थानेऽयय कारणार्थे युक्ताथ एव च ॥६५८९॥
स्थापना स्थापय यर्थे नना तसाधने त्रिषु ।
स्थापनी तु स्त्रियां पाठानाम्नि वल्या प्रकीर्त्तिता ॥६५९ ॥
स्थाप्य त्रिस्स्थापनीये निक्षेपे ना नपि क्लीबे रे ।
स्थाया भुवि स्त्रियां स्थाय स्थाने स्थातरि तु त्रिषु ॥६५९१॥
स्थायुकस्तु त्रिषु स्थास्नौ स्याद्ग्रामाधिकृतेऽपि च ।
स्थाल भोजनपात्रे क्ली स्था युखायां स्त्रिया मता ॥६५९२॥
स्थालस्तु ना महादेवे ास्थतिकर्मणि च स्मृत ।
स्थालीबि वस्तण्डुले ना त्रि तु स्थालीबिलार्हके ॥६५९३॥
स्थासक पुसि चर्चिक्ये बुद्बुदेऽपि प्रकीर्त्तित ।
तथा नक्षत्रमालाख्ये करिणा भूषणान्तरे ॥६५९४॥
स्थित स्थितौ मत क्लीब सप्रतिज्ञे पुन स्थित ।
तथागतेर्निवृत्ते च त्रिषु स्यादूर्ध्वता गते ॥६५९५॥
अवस्थायां व्यवस्थाया स्थिति स्त्री तिष्ठते कृतौ ।
स्थिर प्रोक्त शनौ पुसि निश्चले तु त्रिषु स्मृत ॥६५९६॥
सालपर्णीभेषजे तु भूमौ च स्यात्स्थिरा स्त्रियाम् ।
स्थिरजिह्वस्तु मत्स्ये द्वे योगार्थे तु यथायथम् ॥६५९ ॥
स्थिरदष्ट्रो द्वयो सर्पे ना वराहाकृतौ हरौ ।
मयूरे द्वे स्थिरमदो योगार्थे तु यथायथम् ॥६५९८॥
स्थिरायु शाल्मलौ पुसि योगार्थे तु यथायथम् ।
स्थुल नपुसक दूष्ये स्थु गे गुल्फे पुमा मत ॥६५९९॥
स्थूणा तु गेहस्तम्भेऽपि तथा वातादिषु त्रिषु ।
लोहप्रतिकृतौ त त्रधारिण्यामपि च स्त्रियाम् ॥६६ ॥

स्थूर तु पीवरे त्रि स्यात्स्थूरा तु स्यात्स्त्रियामियम् ।
पश्चाद्भागे च जङ्घाया गोधूमादतुपेषु च ॥६६ १॥
स्थूल क्ली दध्न्यथ त्रि स्याज्जडे बृहति पीवरे ।
स्थूलनासो वराहे द्वे योगार्थे तु यथायथम् ॥६६ २॥
स्थूलाङ्गस्तु द्वयोर्मत्स्ये शालिभदे पुन पुमान् ।
स्थूला चयस्त्वसौ कल्ये नागाना मध्यमे गते ॥६६ ३॥
स्थय क्लीव च स्थात य सद्म च परिकीर्त्तित ।
विवादपदनिर्णेतर्यपि स्थयोऽभधेयवत् ॥५६ ४॥
स्नातकस्तु गृहस्थेऽपि समावृत्ते तथा पुमान् ।
स्नान स्यादाप्लवने क्लीब स्नानीयेऽपि प्रकीर्त्तितम् ॥६६ ५॥
स्नाव कदल्या घूर्णाया स्नायु यप्यास्त्रिया मत ।
नप् शाकटायन आह स्म हषन दी च पुस्यमुम् ॥६६ ६॥
स्निग्धो मतस्स्नेहने त्रि ससौहादवयस्ययो ।
पुमास्तु गुग्गुलो म त्रजने च स्नेहने तु नप् ॥६६ ॥
स्नुषा तु पुत्रपत्न्या च स्नुह्या चैव स्त्रिया मता ।
स्नेहो ना प्रेम्णि सौहार्दे तलाज्यादौ जले तु नप् ॥६६ ८॥
स्नेहवान्स्नेहयुक्ते त्रि स्त्री तु स्याद्वृषजा तरे ।
स्नेहपूर क्षमार्या स्यात्स्नेहस्यापि च पूरणे ॥६६ ९॥
स्नेहा ना त पुमाश्चन्द्रे सरयौ रोगा तरेऽपि च ।
स्नेही स्नेहवति त्रि स्यात्तैलकारे द्वयोर्मत ॥६६१ ॥
स्नेहु पित्ते तथा रोगविशषे सान्निपातिके ।
स्पन्दन चलने किञ्चित्तिमिशाख्यद्रुमे तु ना ॥६६११॥
स्पर्शो ना स्पर्शने तद्वदुपतापप्रदानयो ।
जारे चकादिमान्तेषु वर्णेषु द्वे तु किङ्करे ॥६६१२॥
स्पशस्तु स्रष्टरि तथोपतसर्यभिधेयवत ।
स्पशन तु नपि स्पृष्टो दाने च पवने तु ना ॥६६१३॥
स्पशस्तु सयुगे चारे चापि पुँल्लिङ्ग इष्यते ।
योक्त्रेण यजमानस्य पत्न्या सनहने स्पशा ॥६६१४॥

स्पृहायाम पुन क्लीबे स्यादह सु तृणेषु च ।
स्फार तु मौ र्या चापस्य सहस्फुरण इष्यते ॥६६१५॥
स्फार त्रिषु प्रभूते स्या लाञ्छने स्या नपुसकम् ।
स्फिग्गुदे ना स्त्री वेषा शरीरावयवा तरे ॥६६१६॥
स्फीत वृद्धे प्रभूते च वा यवत्परिकीर्त्तितम् ।
स्फुट विकसिते याते शुक्तविस्पष्टयोरपि ॥६६१ ॥
स्फुटन स्याद्विकसने भङ्गेऽपि च नपुसकम् ।
स्फोटिका पक्षिमदे स्त्री विस्फोटे तु तद्वयोभवेत् ॥६६१८॥
स्मरध्वजो वाद्यभेदे मेढ्रे चापि तथा पुमान् ।
स्मरध्वजा तु योत्स्न्या स्याद्भग तु क्ली स्मरध्वजम् ॥६६१९॥
वस तेऽपि तथा च द्र पुसि स्मरसखो मत ।
स्मारस्तु स्मरणे पुसि स्मरसम्ब ध्विनि त्रिषु ॥६६२ ॥
स्मारिणी तु स्त्रियां ब्राह्म्यां नना स्या स्मारकर्मणि ।
स्मितस्तु त्रिषु फु ले स्यास्मितवत्यप्यथ स्मितम् ॥६६२१॥
अदृष्टदन्तहासे क्ली विकासे कुमुदस्य च ।
स्मृति स्त्री धर्मशास्त्रे स्यादुत्कण्ठाचिन्तयोरपि ॥६६२२॥
स्य स्यात्तदर्थे प्रथमैक वे त्र पुसि शूपके ।
स्यन्दन स्रवणे चा सु स्यन्दनस्तु पुमान्रथे ॥६६२३॥
स्यन्दनी तु स्त्रियामेषा ग्रहभ्रम उदीरिता ।
स्यात्स्यन्दिनी स्त्री लालायां गोमेदे च क्षर स्तने ॥६६२४॥
स्यमीको वृक्षव मीकनृपगोत्रा तरेषु ना ।
काले मेघे स्यमिकव स्यमीका नीलिका मता ॥६६२५॥
स्याल प नीभ्रातरि ना स्याली प न्या स्वसर्यसौ ।
वैजय न्या तु निमूल प या अनुजयोर्द्वयो ॥६६२६॥
स्यालकस्त्वनुजे प त्या स्यालिकाऽस्या यवीयसी ।
स्यूतस्तु प्रसवे पुसि स्यूतमूते त्रिषु स्मृतम् ॥६६२ ॥
स्यूता तु मेखलायां च तथा रश्मौ स्त्रियां मता ।
स्यूमोऽप्सु द्वे पुमांस्त तौ रश्मौ च द्रे च मङ्गले ॥६६२८॥

अथाभिधेयवद्दीर्घे स्यूमोऽस्य परिकीर्त्तितः ।
स्योन सुखे क्ली त्रिस्तत्साधनेथाऽर्केऽर्कदीधितौ ॥६६ १॥
समुद्रे त तुस ताने त तुवायस्य चापि ना ।
स्रज्या तु मालाकारेऽपि मत्स्यघाते तथा त्रिषु ॥६६३ ॥
स्र या तु पदसङ्घाते पुंल्लिङ्ग परिकीर्त्तित ।
स्र वा रज्जौ त तुपटसङ्घात स्त्री प्रजापतौ ॥६६३१॥
स्रवण तु स्रुतौ क्लीब स्रवण कतकद्रुमे ।
स्रव ती तु स्त्रिया नद्या स्रवत्तु स्रावके त्रिषु ॥६६३२॥
स्रष्टा तु सृष्टिकृन्मात्रे त्र्नां हाराविरिञ्चयो ।
स्रावक स्रावणाया वा स्रवणस्य च कर्त्तरि ॥६६३३॥
वा यवत्स्रावक त्वेत मरिच क्लीबमिष्यते ।
स्रुक स्रुवे शोषणे ग याम् [स्त्रीलिङ्ग परिकीर्त्तिता] ॥६६३४॥
स्रुतस्त्रिषु च्युते स्त्री तु हिङ्गुप या स्रुता मता ।
स्रुव आचरणाख्ये स्याद्यज्ञपात्रा तरे पुमान् ॥६६३५॥
अथ स्रुवा स्यात्स लक्यां मूर्वायामपि च स्त्रियाम् ।
स्रोत प्रवाहे सरितां जलेऽपि स्या नपुसकम् ॥६६३६॥
स्रोतस्विनी स्त्रिया नद्या स्रोतस्वति पुनस्त्रिषु ।
स्रोतस्यश्चोरशिवयो स्रोतोयोगिनि तु त्रिषु ॥६६३७॥
जलस्य निर्गमद्वार इन्द्रियेऽपि तथा मतम् ।
स्व धने स्व पुमा ज्ञातौ त्रि त्वात्मात्मीययोरयम् ॥६६३८॥
स्वक्षस्तु त्रिषु यस्याक्षश दाथ शोभनोऽक्षि वा ।
तत्र तत्रापि च स्यर्थे स्वक्षा पूर्वेऽपरत्र तु ॥६६३९॥
स्वक्षी स्याच्छोभने त्वक्षे परवल्लिङ्गतेष्यते ।
स्वगुप्ता कपिकच्छवा च गुल्मे लज्जालुनामनि ॥६६४ ॥
स्वगृह पक्षिभेदे द्वे यौगिके तु यथायथम ।
स्वजस्तु शोभने छागे द्वयोरौरसपुत्रयो ॥६६४१॥
प्राणिजात्य तरे त्रिस्तु स्वश दार्थसमुद्भवे ।
प्रशस्ताऽजार्थयुक्ते च स्यात्प्रशस्ते त्वजे त्रिषु ॥६६४२॥

आस्वादने च स्वदन शोभनेऽप्यदने मतम ।
स्वधितिस्तु पुमा वज्रे कुठारेऽपि प्रकीर्त्तित ॥६६४३॥
स्व न पुनबहुव्रीहौ सुजग्धे रुचिते त्रिषु ।
शोभन वादिसयुक्ते व ने त स्या नपुसकम ॥६६४४॥
स्वप्न सुप्तस्य विज्ञाने स्वापे चापि पुमा मत ।
स्वभूर्ब्रह्मणि विष्णौ च पुलिङ्ग परिकीर्त्तित ॥६६४५॥
स्वयवर पुमानुक्त स्वयवरणकर्मणि ।
पतिवरायां तु स्त्रीत्वे कीर्त्तितैषा स्वयवरा ॥६६४६॥
स्वयम्भूस्तु विरिञ्चे ना क्ली स्वयम्भुविहायसि ।
स्वर षडजाद्युदात्ताद्योर वर्णे कण्ठजस्वने ॥६६४७॥
अरे च शोभने पुसि त्रि तु स्याच्छोभनारके ।
अतिशीघ्रेऽप्यथो सामस्वे यज्ञादिषु षटसु नप ॥६६४८॥
स्वरस तु दिने तद्वद्देहे च क्लीबमिष्यते ।
स्वराडैश्वर्यवद्भेदे स्वस्य राज्ञि त्रि ना हरौ ॥६६४९॥
चतुस्त्रिंशत्स्वरेऽ तथा छन्दोभेदे स्त्रियां स्वराट ।
स्वरित स्वरभेदेऽनुदात्तोदात्तद्वयात्मके ॥६६५ ॥
अथ त स्वरयुक्ते च स्वगतेऽप्यभिधेयवत् ।
स्वरुवज्र तथा यूपशकलेऽपि पुमा मत ॥६६५१॥
स्वर्णस्तु स्याद्रक्तनालिकेरे स्वर्ण तु हेमनि ।
स्ववासिनी चिरण्ट्यां च नववध्वामपि स्त्रियाम ॥६६५२॥
स्वसरो भ्रातरि क्ली तु स्वसर दिवसे गृहे ।
स्वसृश द स्त्रियामुक्तो भगिन्यामङ्गुलावपि ॥६६५३॥
स्वस्तिरस्ति स्तुतौ स्वस्य विक्षिप्ततृणसञ्चये ।
स्वस्तिकस्तु पुमान् गेहवास्तुवि यसना तरे ॥६६५४॥
त्रिकोणसञ्ज्ञके चापि स्त्रीणा स्याद्भूषणान्तरे ।
सुनिषण्णाह्वये शाकस्तम्बे पङ्कसमुद्भवे ॥६६५५॥
द्वयोस्तु स्वस्तिकश्चाषनाम्नि पक्ष्यन्तरे मत ।
उलूलौ स्यात्स्वस्त्ययन क्षेमेण गमनेऽपि च ॥६६५६॥

स्वादुर्मधुरनाम्नि स्याद्रसे त्रिस्तु तदन्विते ।
प्रिये मृष्टे मनोज्ञे च क्ली तु स्वादुजले मतम् ॥६६५७॥
अथ स्वाद्वी स्त्रियामेषा द्राक्षाया परिकीर्त्तिता ।
स्वादुकण्टक उक्तो गोक्षुरे कोन्या त्रिकङ्कते ॥६६५८॥
स्वादुगन्धा मता स्त्रीत्वे मधुशिग्रौ च यौगिके ।
स्त्री तु स्वादुरसा द्राक्षाकाकोलीमदिरासु च ॥६६५९॥
स्वादौ तु स्याद्रसे पुंसि बहुव्रीहौ तु भेद्यवत् ।
स्वाध्यायस्तु भवेद्वेदे वेदस्य च जपे तथा ॥६६६० ॥
स्वामी पुमान्स्कन्ददेवे त्रिषु नाथ प्रकीर्त्तित ।
स्वामिन्यनृपवश्याया नाट्योक्तौ च नृपस्त्रियाम् ॥६६६१॥
स्वाहाऽग्नेर्या च वाचि स्त्री हविर्दाने तदव्ययम् ।
स्वेद स्वेदजले स्विन्तिक्रियास्वेदनयोरपि ॥६६६२॥
स्वेदनी कन्दुभाण्डे स्त्री स्विन्नौ क्ली स्वेदन मतम् ।
स्वेदना तु नना स्वेदयत्यर्थे परिकीर्त्तिता ॥६६६३॥
स्वैरस्तु मन्दे स्वच्छन्देऽप्यभिधेयवदिष्यते ।
स्वैरी स्वतन्त्रे बन्धक्या पुन स्यात्स्वैरिणी स्त्रियाम ॥६६६४॥

ह

ह पादपूर्त्तिसम्बुद्धिनियोगक्षेपनिग्रहे ।
निन्दाया च प्रसिद्धौ चाव्यय सक्रोधवारणे ॥६६६५॥
अथ पुंसि शिवे शून्ये व्योम्नि स्वर्गेऽम्बुधारणे ।
चन्द्रेऽपि पापहरणे त्रि तु स्याद्रक्तशुष्कयो ॥६६६६॥
तथोत्तरपदस्थोऽय घातके त्याजकेऽपि च ।
हा स्त्री वीणासुरतयोर्हि ब्रह्मण्यायुधे मुदि ॥६६६७॥
रत्न योतिषि चाह्वाने भवेद्वीणाध्वनावपि ।
हमव्यय मत क्रोधे विनयामन्त्रणेऽपि च ॥६६६८॥
हस सितच्छदे द्वे स्या महिषेऽप्यश्वभिद्यपि ।
पुमांस्तु विष्णौ परमात्मनि सूर्ये शिवे स्मरे ॥६६६९॥

स्याभिर्लोभनृपे देहवायुभेदे गिरौ गुरौ ।
यतिभेदे मन्त्रभेदे मत्सरे धूवहे वृषे ॥६६ ॥
छ दोभिदोस्तालभद हकारे रजतेऽपि च ।
त्रिस्तु श्रेष्ठऽग्रगे शुद्धे श्वेते हस प्रकीर्त्तित ॥६६ १॥
हसक पादकटके तालभेदे तथा पुमान् ।
लघुगुरुलघुर्यत्र स तालो हसक स्मृत ॥६६ २॥
कषमाने हसपद स्वरभक्त्य तरे पुन ।
हसपदा स्त्रियां हसपदी छन्दोद्रुभेदयो ॥६६ ३॥
हसपादी हसपद्यां क्ली ास दूरेऽपि पारदे ।
हसमालाकृष्णपक्षहस छन्दोभिदोरपि ॥६६ ४॥
हसवा त्रि सहसेऽथ स्त्रिया हसवती मता ।
हसपद्यां वीरसेनघाति यां चक्रग तरे ॥६६ ५॥
दुष्य तभार्याभेदे च स्वर्णभूमिपुरा तरे ।
हसाङ्घ्रि पुसि सि दूरे हसाङ्घ्री स्त्री द्रुमा तरे ॥६६ ६॥
हक्क पुसि गजाह्वाने हक्कोलूकभिदि स्त्रियाम ।
हञ्जिका तु स्त्रिया चेट्या तथा कञ्ज्यामपीष्यते ॥६६ ॥
वेश्याहरिद्राञ्जनकेशीषु हट्टविलासिनी ।
हठ पाष्ण्यां बला कारे वारिपर्णीतृणेऽपि च ॥६६७८॥
हडिर्ना काष्ठनिगडे नीचजातिककिङ्करे ।
हत गते गतवति विषाणे मारिते त्रिषु ॥६६ ९॥
हतस्तु पुसि मार्गे स्या क्लीब तु गतिहिंसयो ।
स्त्री तु कुत्सितक यायां गुणनादौ हतस्त्रिषु ॥६६८ ॥
हतको दुर्भगे नीचे कातरे चापि वा यवत् ।
हतौजा ज्वरभदे ना हतस वे पुनस्त्रिषु ॥६६८१॥
ह नु र्योधावायुधे ना हिंस्रे पुनरय त्रिषु ।
हथः प्रहारेऽपि वधे स्यान्निराशे तु वा यवत् ॥६६८२॥
हनुर्भीमे च मृ यौ च महारु यायुधे पुमान् ।
 याधिभेषजभिद्वेश्यास्वेषा स्त्रीत्वे हनु क्वचित् ॥६६८३॥

हनुर्वैदेहशनकीजे गण्डोर्ध्वांशके द्वयोः ।
भल्लांशे गण्डसदृशे क्लीब शतपथे हनु ॥६६८४॥
हनुषः पुंसि कोपे स्याद्राक्षसे तु द्वयोर्मतः ।
हन्त हर्षत्वराशोकामन्त्रणेष्वव्ययं मतम् ॥६६८५॥
हन्तकारस्तु भिक्षासु षोडशस्वपि योदिता ।
ग्रासमात्रौदनं भिक्षा तत्र हन्तकृतावपि ॥६६८६॥
हयो गतौ धनूराशावि द्रे चन्द्राश्वभिद्यपि ।
कामशास्त्रीयपुंभेदे चतुर्लघुगणेऽप्यथ ॥६६८ ॥
हयी द्व चमरेऽप्यश्वेऽश्वगन्धाया स्त्रिया मता ।
स्त्रीत्वे हया क्वचिवदृष्टा हय प्राजितरि त्रिषु ॥६६८८॥
हयगन्धा ह्यगन्धाऽप्यश्वगन्धाजमोदया ।
हयगन्ध पुन क्लीब कृष्णसौवचले मतम् ॥६६८९॥
हयग्रीवोऽवतारेऽपि विष्णोर्दैत्येऽपि तद्धते ।
हयग्रीवा पुन स्त्रीत्वे दुर्गायां परिकीर्त्तिता ॥६६९ ॥
हयन हायने कर्णीरथेऽपि गमने स्मृतम् ।
हयप्रियाऽश्वगन्धा स्याद्यव तु च हयप्रिय ॥६६९१॥
हयवाहन इत्येष स्याद्रेवन्तकुबेरयो ।
हयग्रीवे हयशिरा क्ली तु स्यादायुधान्तरे ॥६६९२॥
हयारि करवीरे ना महिषे तु द्वयोर्मता ।
हरोऽग्नौ भाजके शम्भौ हारके त्रिर्द्विगर्दभे ॥६६९३॥
हरको भाजके दीर्घासौ ना त्रि शठचौरयो ।
हरण करणाख्ये चेष्टान्तरे नाट्यविश्रुते ॥६६९४॥
दृढदुष्करचित्रेषु योधानामपि कर्मसु ।
अश्वानां देयभेदे च क्वचिद्देशे हि दीयते ॥६६९५॥
योग्याशनादिक तेषां शरीरपरिपुष्टये ।
पश्चाद्बीजनिषेकस्य तथा हरतिकर्मणि ॥६६९६॥
यौतकोष्णाम्बुशुक्रेषु सुवर्णेऽपि नपुसकम् ।
गणितज्ञश्रुते सख्याताडनेऽपि भुजे तथा ॥६६९ ॥

चम्पकप्रसव चाथ चम्पके हरणः पुमान् ।
हरस्य शेखरे नस्त्री गङ्गाया हरशेखरा ॥६६९८॥
हर क्रोधे जले लोके ज्योतिषि वलति स्रजि ।
ग्रहण सा तमग्ने क्ली सामभि सु च पश्वसु ॥६६९९॥
अग्निसामविशेषेषु सा त क्ली पश्वसु स्मृत ।
हराहरस्तु निश्वासे मरणाऽवसरोत्थिते ॥६ ॥
योग्याचारेऽपि च तथा दानवौ तु हराहरौ ।
हरिरर्काग्निवाते दुयमे द्रभगाविष्णुषु ॥६ १॥
सिंहराशौ भत्त हरौ सुपर्णे भ्रक्षशुक्रयो ।
गिरिभिद्वर्षभिच्छन्दोभेदषु हरयो जना ॥६ २॥
बौद्धसरयाविशेषेऽथ हरी स्त्री कपिमातरि ।
अशौ शक्रहये सुद्रे रुक्मे रुक्माभवणके ॥६७ ३॥
श्वतवर्णे हरिद्वर्णे कपिले त्रि तु तैद्युते ।
शू द्रानिषादजे वश्वकपिभेकशुकाहिषु ॥६ ४॥
मयूरे कोकिले हस भृगालेऽपि प्रकीर्त्तित ।
सिंहेऽश्वभेदे हरितपीतवर्णे हरिर्द्वयो ॥६७ ५॥
हरिकेश पाण्डुकेशे त्रिर्ना सवितरीश्वरे ।
क्वचि छिवस्य प्रमथे य क्षेत्रोद्याननायक ॥६ ६॥
हरिचन्दनमस्त्री स्याद्देवाना पादपा तरे ।
चन्दने ताम्रवर्णे च पीतचन्दनसञ्ज्ञवे ॥६ ॥
क्लीब तु कुङ्कुमे पद्मकेसरेऽपि प्रियाङ्गके ।
च द्रातपेऽपि च प्रोक्त हरिचन्दनमि यद ॥६७ ८॥
हरिणो द्वे ताम्रमृगे हसेऽपि नकुलेऽथ ना ।
शिवे विष्णौ प्रमथभि नागभिद्द्वीपभित्स्वपि ॥६ ९॥
मञ्जिष्ठायां पीतयूथीस्वर्णप्रतिमयोरपि ।
चारुनार्यन्तरेऽत्यष्टवृत्तभेदे हरिण्यसौ ॥६७१ ॥
हरिण पाण्डुरे वर्णे पुमांस्तद्वति तु त्रिषु ।
स्वरभक्त्यन्तरे देववनितायक्षिणीभिदो ॥६ ११॥

हरिणाक्षी गन्धवस्तुभिन्नार्योर्ना निशाकरे ।
हरिणिस्तु स्त्रियां मूर्यौ कुल्यायां च प्रकीर्त्तिता ॥६ १२॥
हरि मरकते सूर्ये सूर्याश्वे हरितेऽपि च ।
पिङ्गे वर्णे तद्वति तु वान्यवं स्यान्नन तृण ॥६७१३॥
स्त्री तु नद्यङ्गुलीदिक्षु हरिदेषा प्रकीर्त्तिता ।
हरितो मुद्गऋषिभदयो पालाशवणके ॥६ १४॥
अथवमन्त्रभेदेऽथ हारद्रानीलदूर्वयो ।
पिङ्गद्राक्षाविशेषेऽपि स्वरभक्त्यन्तरेऽपि च ॥६ १५॥
हरित क्ली सुवर्णेऽपि शाके स्थाणयकेऽपि च ।
त्रि तु तद्वणयुक्त स्त्री हरिता हरणीति च ॥६७१६॥
द्वे तु सिहेऽथ हरिता हरे स्याद्भावकर्मणो ।
अस्त्री हरितक शाके तृण तु क्लीबमिष्यते ॥६७१७॥
केचित्पेठुहरीतक्या अर्थे हरितकीं स्त्रियाम ।
हरिताल धातुभेदे दूर्वाया हरिताव्यसौ ॥६७१८॥
भाद्रशुक्लतृतीयायामपि खङ्गदले स्त्रियाम ।
वायौ च व्योमरेखाया हरिताली क्वचिन्मता ॥६७१९॥
हरिताश्म मरकते तुत्थेऽपि च नपुसकम् ।
हरिद्रस्तु कलाप्यन्तेवासिनि प्रथमे पुमान् ॥६ २ ॥
तथा दारुहरिद्रायां वृक्षमात्रेऽपि कीर्त्तित ।
हरिद्रवस्तु सोमेऽपि नागकेसरचूर्णके ॥६ २१॥
हरिद्रा काञ्चनी प्रोक्ता हरिद्रो हरिचन्दनः ।
हरिनामा तु मुद्गे ना क्लीबे स्याद्विष्णुनामनि ॥६७२२॥
हरिनेत्र उलूके द्वे क्ली पद्मे त्रि तु यौगिके ।
अथ मूढोन्मत्तयोस्तु वान्यवत्स्याद्धरिप्रियः ॥६७२३॥
हरिप्रिय कदम्बेऽपि ब धूककरवीरयो ।
विष्णुकन्दे तथा शङ्खे शिवे स्त्री तु हरिप्रिया ॥६ २४॥
लक्ष्म्या सुरायामेकादश्यां तुलस्या तथा क्षितौ ।
हरिप्रिय क्ली मूले वीरणस्य हरिचन्दने ॥६ २५॥

हरिम थ पीतमुद्गऽग्निम थ चणके पुमान् ।
हरिम थज इ येष ना धा ये चणकाह्वये ॥६ २६॥
पठितोऽमरसिंहेन वैजय त्यां त्वपाठि स ।
कृष्णमुद्गेऽथ स त्रि स्याद्धरिम थसमुद्भवे ॥६ २ ॥
हरिरोमा विरिञ्चेऽपि तथा शक्र पुमा मत ।
हरिलोचन इ येष उलूके ककटे द्वयो ॥६ २८॥
जयाया च तुलस्यां च लक्ष्म्या च हरिव लभा ।
हरिवाहन इ द्रेऽपि सूर्येऽपि गरुडेऽपि च ॥६ २९॥
त्रि स्वणस्थ हरिशयो यातेऽग्रे यजुषि स्त्रियाम् ।
हरिश्री पिङ्गशोभेऽपि सोमाश्वादिमति त्रिषु ॥६ ३ ॥
इ द्रे हरिहय स्कन्दगणशरविषु क्वचित् ।
गरुडेऽपि वृषे शम्भोदक्षे हरिहरात्मक ॥६ ३१॥
क्लीब हरिहरक्षेत्रे मत हरिहरा मकम् ।
हरिहेतिस्तु चक्रेऽपि तथैवे द्रायुधे द्वयो ॥६ ३२॥
हरेणुर्भैषजे कौ तीसञ्ज्ञे स्त्री परिकीर्तिता ।
कलायधान्यभेदे तु रङ्कुटीसञ्ज्ञके पुमान् ॥६७३३॥
हर्त्ता नेतरि चोरे च ऋद ता वाच्यव मत ।
हर्म्यं प्रासादपृष्ठेऽपि गृहभेदे गृहेऽपि च ॥६ ३४॥
हर्यक्षो ना कुबेरे द्वे सिंहे त्रि कपिलाक्षके ।
हर्यश्वस्तु भवे पूवराजभेदे पुरन्दरे ॥६ ३५॥
हर्षयित्नु सुवर्णे क्ली हषयि नुस्त्वय त्रिषु ।
प्रियवदे तथा रङ्गोपजीविन्यनुवत्तके ॥६ ३६॥
हर्षुल शि पिमृगयोर्द्वे पुसि तु बुधग्रहे ।
मेघलिङ्गो हासशीले हर्षशीले च कामिनि ॥६ ३ ॥
हलिज शाकवृक्षेऽपि कदम्बे केतकीद्रुमे ।
हलिज प्रसवे तेषा नपुसकमुदीरितम् ॥६ ३८॥
हली तु बलभद्रे ना हलव यभिधेयवत् ।
शक्रपुष्पाह्वयस्तम्बे हलिनीति स्त्रिया मता ॥६ ३९॥

हलिप्रिया सुरायां स्त्री कदम्बन्ना हलिप्रिय ।
हवस्तु यज्ञ आज्ञायामाह्वाने वह्निहोमयो ॥६ ४ ॥
हवनी स्रुचि ना त्वग्नौ होमे क्ली हवन मतम् ।
हविर्घृते जले ह्ये सा त क्लीब प्रकीर्त्तितम् ॥६ ४१॥
हविष्यस्त्रिहवि साधौ तिले पुास प्रकीत्तित ।
अग्नावाहवनीयाग्नौ देवाग्नौ ह यवाहन ॥६७४२॥
हस त्यङ्गारशकटो त्रिस्तु हासिविकासिनो ।
हसित दृष्टद ते क्ली हासे स्याद्धासमात्रके ॥६ ४३॥
अथो हसितवत्येतत्फु लेऽग्रहासते त्रिपु ।
हस्तोऽस्त्री किष्कुमानेऽपि पाणा ग्राण च द तिन ॥६ ४४॥
हस्त नि घातके क्ली तु स निपाते बलाहितो ।
केशार्थात्त पर केशसमूहेऽपि च दृश्यते ॥६ ४५॥
हस्तावाप शरादाने यधनार्थेऽपि पाणिना ।
आवापे धा यवीजादे पु लिङ्ग परिकीर्त्तित ॥६ ४६॥
हस्तिकर्णो रोचकार यकम्बले हस्तिन श्रुतौ ।
निवारणार्थे शस्त्रस्य भटाना फलका तरे ॥६ ४ ॥
हस्तिचारो गजत्रासहतौ शरभस निभे ।
शस्त्रभदऽपि योधाना तथा चारेऽपि हस्तिनाम ॥६ ४८॥
हस्ती द्वयोर्गजे भृङ्गे हस्तिनी तु स्त्रियां मता ।
कामशास्त्रप्रसिद्धे स्त्रीविशेषे हस्तिनापुरे ॥६ ४९॥
पुमान्हस्तिनख पुर्यां द्वारकूटऽथ यौगिके ।
हस्तिमल्लो गणेशेऽप्यैरावतेऽपि पुमा मत ॥६ ५ ॥
हाटको हमनि मत क्लीबपु लिङ्गयोरयम् ।
हाटक क्ली कु तभदे स्यात्त्रिकण्टकसस्थितौ ॥६ ५१॥
हान्त्रो द्वे राक्षसे क्लीव हान्त्र स्यान्मरणे रणे ।
हायन शालिभिच्छित्र्योर्ना न स्त्री वत्सरेऽर्चिषि ॥६७५२॥
हारो मुक्तावलौ देवालयकक्ष्यासु तु स्त्रियाम् ।
हारा हारी तु नाम्नैव दुष्टा कन्या प्रकीत्तिता ॥६७५३॥

अथ च त्रिपु सावर्णे हिमरयमुदीरितम ।
हिरण्य मानभदे त्र धने स्त्रर्णे कपदके ॥ ७ ॥
अक्षये चाप्यकुप्ये च रेतस्यपि नपुसकम ।
हिरण्यकशिपु पुास प्रह्लादपितरि स्मृत ॥ ९॥
हिरण्यचिन्तितकुथ पुन स्या पुनपुसकम ।
हिरण्मयकशिप्नर्थेऽपि तथैव प्रकीात्ततम ॥६ ॥
हिरण्यबाहु शोणारयनदे त्वषमलोत्रने ।
हिर यवर्णा नद्या च श्रिया योगे यथायथम ॥६ १॥
हीनस्त्रिरूने गर्ह्ये च ना तु केसरपादपे ।
हीर शिवे ना द्व सर्पासहया क्ली तु हीरके ॥६७ २॥
हुहुको ना हुडुक्के द्व मत्तदात्यूहपक्षिणि ।
हृच्छयो म मथऽपि स्यात्कुक्ष्यग्नौ च तथा पुमान ॥६ ३॥
हृणि स्त्रिया क्रुधि प्रोक्ता हृणिस्तु वलति त्रिपु ।
हृत् क्लीब चैव चित्त स्याद्वक्षस्यपि तथा मतम ॥६ ४॥
हृदय तूरसि स्वा ते वृकेऽपि परिकीत्तितम ।
हृद्यस्तु ना वशीकारम त्रे स्याद्वदिके द्रुमे ॥६ ५॥
कपित्थारये तत्फले तु क्ली दधत्यनुलेपनम् ।
मधुमद्ये च म०ीकसज्ञे त्रिषु तु हृद्भवे ॥६ ७६॥
हृत्प्रिये हृद्धिते हृज्जे चारौ हृद्या त्विय स्त्रियाम ।
मन शिलाया छाग्यामप्यद्रिसज्ञौषधा तरे ॥६७ ॥
हृद्यग धः पुमानेष सूक्ष्मजीरक इष्यते ।
हृल्लेखस्तु पुमाञ्ज्ञेय औत्कण्ठ्य हृद्रुजा तरे ॥६ ८॥
हृल्लेखा तु स्त्रिया म त्रभेदे तान्त्रिकविश्रुते ।
हृषि स्त्री दीप्तितुष्ट्योर्ना हृषतौ हृष्यतावपि ॥६ ९॥
द्वयोर्धात्वोरथालीकवादि येष हृषिस्त्रिपु ।
हृषितस्तु सरोमाञ्चे विस्मिते च मनोहरे ॥६ ८ ॥
हृष्टे प्रतिहते स्त धे रोमादावपि च त्रिषु ।
हृष्ट हर्षे त्रिस्तु रम्ये विस्मिते हृषवत्यपि ॥६ ८१॥

सरोमाञ्चे प्रतिहते स्तब्धे मेढ्रेऽपि रोम्णि च।
हठा हलाऽनादरे द्वे हेठस्तु कथि पुस्यग्रम् ॥६७८ ॥
हति शस्त्रे द्वयोर्नाग्नि जाले चार्कार्चिषि स्मृत ।
हतु प्रयोजके कत्त स्वतन्त्रस्य तथा पुमान् ॥६७८३॥
उत्पत्तौ कारणे वाद निमित्ते बीजकर्मणि।
हेमा पुमा स्याद्धमते हम क्ली कनके जले ॥६ ८४॥
हम कुब्य पुन क्लीबे द्वीपभेदेऽम्बुधीकृत।
खाते भारतवर्षस्य प्रदशे सगरै स्थिते ॥६ ८५॥
हेमपुष्पी पीतयूथ्या ना तु स्याच्चम्पकद्रुमे ।
हेमलो ना शिलाभेदे द्वयोस्तु कृकलासके ॥६ ८६॥
हेमलस्तु त्रिषु स्वणकृयेष परिकीर्त्तित ।
हेरम्बस्तु द्वयोरेष महिषे कीर्त्तितोऽथ ना ॥६ ८ ॥
प्रमथाना प्रभेदे च हेरम्बो विघ्ननायके।
हेरुको बुद्धभेदे च महाकालाह्वये गणे ॥६ ८८॥
हला विलासप्रस्तावावज्ञासु स्त्री प्रकीर्त्तिता।
हलि पुमा स्या मात्तण्डे तथोक्त उपगूहने ॥६ ८९॥
अथ हैमवती गङ्गापाव योश्च स्त्रिया मता।
स्वणक्षीरीहरीतक्यो शुक्ले चैन वचा तरे ॥६ ९ ॥
क्ली तु हैमवत वर्षे भारते भेधव पुन ।
हिमवद्भिरिदि सम्बन्धिमात्रे हैमवत मतम् ॥६ ९१॥
होता तु ह्रावके त्रि स्यादृत्विग्भदे पुमानयम्।
होत्र क्ली भवने होत्रा वाचि यज्ञेऽथ नार्त्विजि ॥६७९२॥
होत्र स्याधजमानेऽपि समुद्रेऽपि नपुसकम्।
होम हव्येऽग्निहोत्रस्य शालाया च नपुसकम् ॥६ ९३॥
होरा लग्ने च लग्नार्धेऽहोरात्रेऽपि स्त्रिया मता।
ह्रदो मेषे द्वयोरुक्त पुस्यगाधजलाशये ॥६ ९४॥
ह्रस्वोऽल्पे वामने चैकमात्रवर्णे यमे तु ना।
ह्रादिनी तु स्त्रियां वज्र तथा तडिति कीर्त्तिता ॥६ ९५॥

ह्रीकस्त्रिह्लाकरल्ल जाशीलेऽथ नकुले द्वयो ।
ह्रीकुल जानति त्रि स्याद्वनमार्जारके द्वयो ॥६७९६॥
ह्रीरुल जावति त्रि स्यादद्वयोस्तु बक इष्यते ॥६७९६॥

उपसहार

निरमायि महोद्योगैर्मुद्रितश्च बहु यय ।
वाञ्मयाणवनामा श्रीनित्यविद्यापराभिध ॥१॥

शब्दब्रह्मोद्भव श दब्रह्मण्येव समर्पित ।
निघण्टुसम्राट श दार्थमार्मिकैरवलोक्यताम् ॥२॥

अमरहलायुधपुरुषोत्तमयादवहमकेशवादिकृतम् ।
श्रीमङ्खविश्वमेदिनीध व तरिनरहरिग्रथितम् ॥३॥

भगवद्यास्कोपक्रममपि शर्मण्यावसानमिमम् ।
अभिधानमहाणवाब्धि विलोक्य दृष्ट्वाऽऽकरा बहुश ॥४॥

पद्यैर्द्धा घूर्णिभिरलङकृता छात्रकुलतृ यै ।
आयोजनेन महता घटिता श्रीविश्वविद्येयम् ॥५॥

अभिधानकृतामैदम्पर्यम्प्रायो न बुध्यते ।
हेमच द्रो दोषमेत यथासाध्यमशोधयत् ॥

शब्दानुक्रमणिका

शब्दानुक्रमणिका

ऌ

ए

ख

ग

घ

ज

ध

फ

य

ष

स

शुद्धि पत्रम्

पृष्ठसंख्या	श्लोकस	अशुद्धम्	शुद्धम्
१	१	ताया	तापा
१	२	दिप	दि प
१	२	योम	यो म
३	९	अकूपाराङ्गि	(अकपारा आङ्ग)
३	१	दि स	दिस
३	१३	शताङ्गुल	शताङ्गल
५	४	पुरस्तादुरि पलमानयु	पुरस्तादुपरिपलमानषु
६	४२	दिधिषू रूढा	दिधिषरूढा
६	३	ना व	ना व
	६१	वच्याङ्ग	वच्चाङ्ग
	६२	वहस्पतौ	वहस्पतौ
	६	पुस्यङ्गुल	पस्यङ्गुल
८	१	त्रिपुर	त्रिपुरा
८	९	यष्ठा	यष्ठ
९	८६	क्षऽप्याणिवदेवना	क्षऽप्यणिवदेव ना
१	९९	स्व ख्या	स्व वा
१	१ १	मति वष	मति वष
१	१ ६	भद	वेद
१	१	अद शाद	अद शाब्द
११	१ ८	माथ स	माथस
११	१ ९	वि दै	दिद
११	१ ९	स्यात्त्रि व	स्यात् त्रि व
११	११	म्यक्ष	म्य क्ष
११	१११	त्रि वा	त्रि वा
११	११५	रेप्य केपि	रेऽप्य केऽपि
१२	१२२	णप्या लपि	णऽप्या लऽपि
१२	१२३	प्रगलभप्य	प्रग भेऽप्य
१२	१२४	येपि	यऽपि
१२	१२९	नाशि	ना शि

पृष्ठसंख्या	श्लोक	अशुद्ध	शुद्ध
१२	१२९	सा ध ग धव म	गा रग वब
१२	१३१	श्राव	ग वृ
१२	१३	तेनर	तन र
१३	१३९	क्षा वि	क्षांवि
१३	१४	मश	मऽज
१४	१५३	राम्न	रम्न
१४	१६	पुस व	पुर व
१५	१ २	वद्वी	वे द्वी
१५	१ ४	अ तरस्था	अ तस्था
१५	१ ५	दो वि	दोवि
१५	१ ६	णोप	णनोप
१५	१	पि चा	पि च चा
१५	१	दी भु	दीभु
१६	१८३	अ भ्रत्नयन	अ भ्रस्त्यन
१६	१८	वदेन्नाथ पुभू	वदेहनाथ पृ भू
१६	१८४	भवेदद्व	भवेद् द्व
१६	१८६	दाऽत्रा	द ना
१६	१८९	ति स्व	तिस्व
१	१९५	ऋचि	ऋचि स्मृतम्
१८	२ ५	नना	न ना
१९	२२२	त्रित्व	त्रि व
१९	२२२	स्त्रियामषा	स्त्रिया देव्या
१९	२२	भवत्क्लीब	भवेत् क्लीब
१९	२३१	अबधिम	अ ध म
१९	२३१	वब्धिद	स्वधि द
२२	२६५	भि व	भिषव
२२	२६	त्रि व	त्रि व
२३	२ ३	अभीसु	अभीष
२३	२७	धातो द्वित्र	धातोर्द्वि व
२३	२७	स्कीका	स्वीका
२३	२७८	भ प	भ पे
२३	२७९	मभय	मभ्रय
२३	२८	गमने	गगने

पृष्ठसख्य	श्लोक	अशुद्ध	शुद्ध
२३	२८१	भिघाते	मिघातौ
२४	२८९	मागवी प । गडच्या	मागधीपथ्याग या
२	२८९	मिक्ष	भिक्ष
२	२९५	भ्रष्टमहाभ्राष्ट	भ्राष्ट्रमहाभ्राष्ट्र
२५	२९९	मध्यमिकाना	माध्यमिकाना
२५	३ २	वतसेना	वेतसे ना
२५	टिप्पणी	द म द	दम व
२५		क्षु धा	क्षु घ
२५		छ्या त लग्न	छ्वा तलग्न
२१		फाण्टवाढानिम	फाण्टवाढानि म
२५		स्तम	स्तम स
२१		शा्र	भूशाष
२६	३१३	नम	नमे
२६	३१६	ङ्ग	डगल
२	३३३	चि तदिना	चितरि ना
२८	३८२	त्रिप्यग्रे	त्रिष्वग्र
२८	३४६	वतव	क्तौ वे
